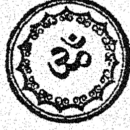
॥ ग्रन्थमालोत्पादकेभ्यः श्रीधर्मविजयगुरुभ्यो नमः ॥

अर्हम्

श्रीजैनयशोविजयग्रन्थमाला [१०]



श्रीगुणरत्नसूरिविरचितः

क्रियारत्नसमुच्चयः।

उद्धृत्य ये व्याकरणाम्बुराशितो विलोड्य बुद्धिप्रसरामराद्रिणा।
शुद्धक्रियारत्नसमुच्चयं सतामाश्चर्यभूतं विबुधालये ददुः॥ १॥

[श्रीमुनिसुन्दरसूरयः]

जैनश्वेताम्बरश्रीसङ्घकलिकाता-
साहाय्येन
काशीस्थन्यायविशारदश्रीयशोविजयनामाङ्कितजैनपाठशालातः
प्राकाश्यं नीतः।

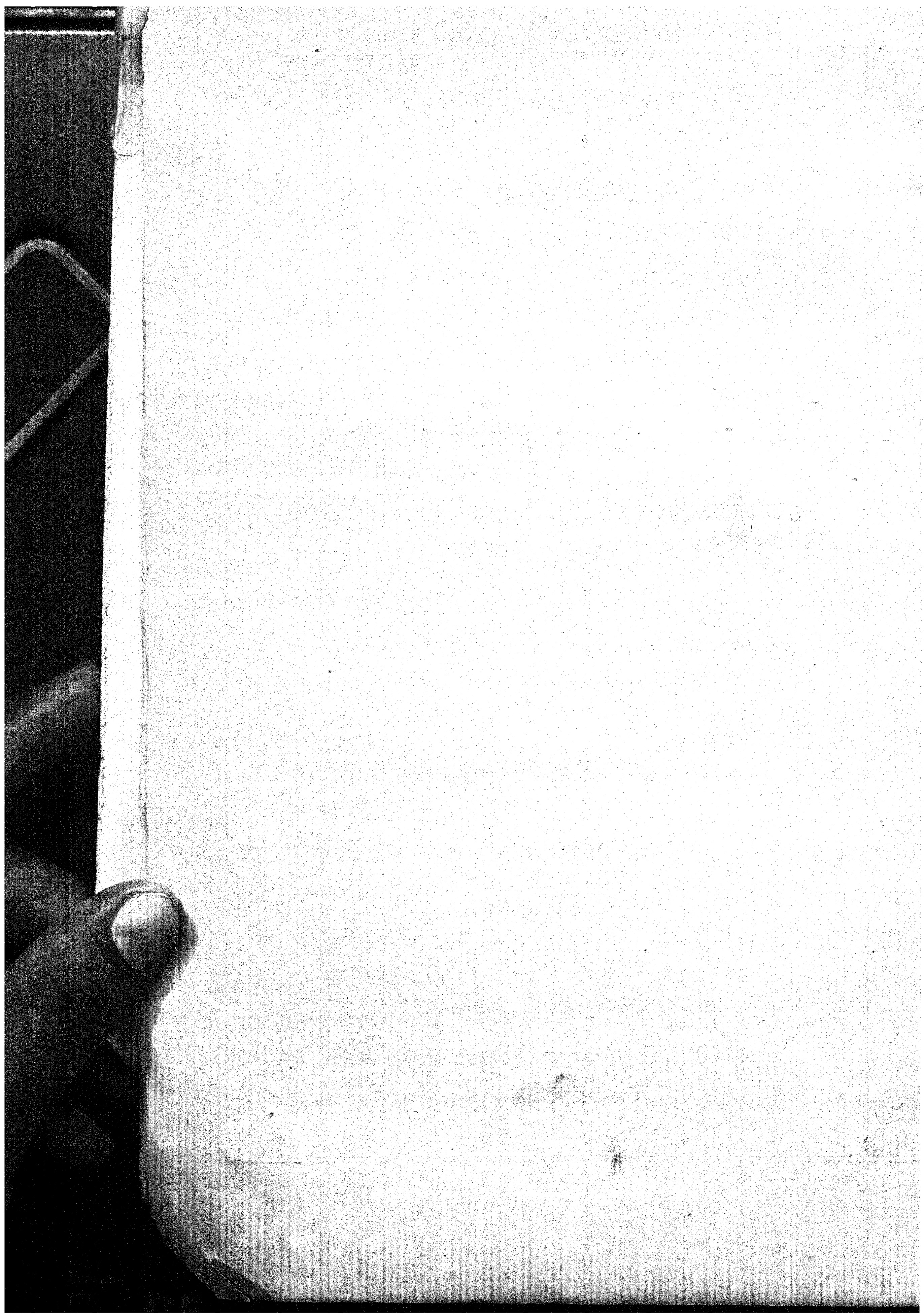
सोऽयं

काश्यां

चन्द्रप्रभायन्त्रालये

मुद्रितः

वीर संवत् २४३४।



॥ अर्हम् ॥

* भूमिका *

प्रियवर !

समय भी क्याही अपूर्व पदार्थ है; देखिये, एक समय वह था जब इसी भारतवर्ष में जैनधर्म, सीमा को उल्लङ्घन कर संपूर्ण देशो में पूर्ण रूप से छाया हुआ था और अनेक जैनाचार्यों ने उद्भट असङ्ख्य ग्रन्थ जैन-दर्शन पर निर्माण किये थे जिनका देखना क्या श्रवणगोचर होना भी इस समय अति दुर्लभ होगया है अब न तो लोगों में विद्यानुरागिता रह गई और न बल बीर्य का उद्भव है तब प्रतिभा जो सार पदार्थ विद्वानों का है कहाँ से आवे। हा! भारतवर्ष की कैसी दुर्दशा होगई कि अब एक भी वैसा विद्वान् नहीं और न होने के लिये कोई प्रयत्न करता है फिर जैनधर्म की वृद्धि का उपाय क्या रह गया? क्योंकि सभी धर्मों की स्थिति शुद्ध विद्याही पर निर्भर है यदि कोई विद्याभ्यास न करे तो वादी के मत का खण्डन कर अपने मत का मण्डन नहीं कर सकता। तथापि "यावद् बुद्धिबलोदयम्" हमलोग अपने कर्तव्य में कटिबद्ध हैं हमलोगों का मुख्य कर्तव्य यही है कि किसी तरह विद्यार्थियों को विद्याभ्यास में सुलभता हो। इसलिये पाठशाला खोलना, प्राचीन पुस्तकों को छपवाकर सुलभ करना, और जैनधर्मानुरागियों को इस विषय में उत्तेजना देना, आये हुए विद्यार्थियों को संमान पूर्वक रखना आदि यथाशक्य किया जाता है। सब से मुख्य कार्य यही समझा गया कि उत्तम २ उपयोगी प्राचीन व्याकरण, न्याय, साहित्य और धर्म आदि सम्बन्धी ग्रन्थ छापे जायँ अतएव श्रीमुनिराज धर्मविजयजी के उपदेश से श्रीजैनयशोविजयग्रन्थमाला कतिपय वर्षों से छपवाकर प्रकाशित की जाती है जिसमें श्रीसिद्धहेमव्याकरण लघुवृत्ति वगैरह सहित, हैमलिङ्गानुशासन, व्याकरणग्रन्थ; प्रमाणनयतत्त्वालोकालङ्कार, रत्नाकरावतारिका टिप्पण पञ्जिका सहित, न्यायग्रन्थ; कुमुदचन्द्रप्रकरण साहित्य ग्रन्थ; स्तोत्रसंग्रह दो

भाग, गुर्वावली वगैरह धर्मग्रन्थ कई एक छपकर निकल चुके हैं; अब यह श्रीगुणरत्नसूरिविरचित क्रियारत्नसमुच्चय व्याकरण का अपूर्व ग्रन्थ छपवाकर निकाला गया है। प्रायः सभी विद्वानों को क्रिया के रूपों में कुछ न कुछ सन्देह बना ही रहता है इस ग्रन्थ के रचने से इस अभाव को श्रीगुणरत्नसूरी जी ने मिटा दिया। यह ग्रन्थ प्रायः सर्वमतानुयायियों को अपने पास रखना चाहिये विशेषकर हैमव्याकरण के पढ़नेवालों को उपयोगी है।

श्रीहैमशब्दागमपाठकानां महोपकारी जयतात् सदैषः।
ग्रन्थः क्रियारत्नसमुच्चयाख्यो विद्वन्मणेः श्रीगुणरत्नसूरेः ॥ १ ॥

श्रीगुणरत्नसूरी जी ने अपने स्थिति का समय स्वयं इसी ग्रन्थ की प्रशस्ति भाग में दिया है—

लिखा है कि श्रीविक्रमादित्य से संवत् १४६६ व्यतीत होने पर गुरूजी के आज्ञावश अपना और संसार का उपकार समझकर बुद्धिहीन भी मैंने इस ग्रन्थ को रचा; विना कारणही उपकार करनेवाले साधु विद्वान जन इस को शुद्ध करलें:—

"काले षड्रसपूर्व १४६६ वत्सरमिते श्रीविक्रमार्काद्गते
गुर्वादेशवशाद्विमृश्य च सदा स्वान्योऽपकारं परम्।
ग्रन्थं श्रीगुणरत्नसूरिरतनोत्प्रज्ञाविहीनोऽप्यमुं
निर्हेतूपकृतिप्रधानजननैः शोध्यस्त्वयं धीधनैः ॥ ६३ ॥"

इनके बनाये हुए क्रियारत्नसमुच्चय, षड्दर्शनसमुच्चय की वृहद्वृत्ति आदि ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं—यह बात कल्पकिरणावली प्रवचनपरीक्षा आदि ग्रन्थ के कर्ता श्रीधर्मसागरोपाध्यायकृत तपागच्छपट्टावली से भी विदित होती है जो कि इस ग्रन्थ की संस्कृतभूमिका में विस्तार पूर्वक लिखी गयी है उसका यहाँ लिखना आवश्यक नहीं है आपलोग उसी में देखलें; और इनके गुणों का भी पूर्णरूप से वर्णन है। लिखा है कि "श्रीगुणरत्नसूरी जी अपूर्व विद्वान् थे और अहङ्कार, क्रोध, विकथादि के नियम अर्थात् दमन करने में उनका लोकोत्तर प्रभाव था, तथा उनके चरित्र आदि के निर्मलता से मुक्तिरूपी लक्ष्मी दासीभूत थी" इत्यादि।

विक्रम संवत् १४६६ में मुनिसुन्दरसूरी की बनाई हुई गुर्वावली से भी श्रीगुणरत्नसूरी जी का पण्डितशिरोमणि, प्राभाविकधुरन्धर आदि होना स्पष्ट निश्चित होता है।

इस परमोपयोगी ग्रन्थ के छपवाकर प्रकाशित करने में पूर्ण सहायता देनेवाले सुकार्यतत्पर परम उदार श्रीजैनश्वेताम्बरकलिकातासङ्घ का धन्यवाद पूर्वक हमलोग परम उपकार मानते हैं।

चार पुस्तकों के आधार पर परम परिश्रम से यह पुस्तक शुद्ध कर छापी गई और पीछे से शुद्धिपत्र भी दिया गया है। यदि अब भी दृष्टिदोष से कहीं कोई अशुद्धि रह गई हो तो आप लोग कृपाकरके शुद्ध करलें।

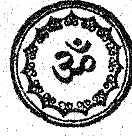
कई कारणों से इस नम्बर के निकलने में विलम्ब हुआ है किन्तु अब शीघ्र २ निकलने का पूरा प्रबन्ध किया गया है।

इस ग्रन्थमाला के उत्पादक श्रीमुनिराज धर्मविजयजी महाराज का चित्र (फोटो) देना उचित है किन्तु वे इस बात को स्वीकार नहीं करते इस लिये उक्त मुनिराज के गुरू परमोपकारी शान्तमूर्ति श्रीवृद्धिचन्द्रजी महाराज का चित्र और उन्हीं का स्तुतिरूप गुर्वष्टक भी दिया गया है।

शास्त्रं नाम समुच्चयान्तमनघं चक्रुः क्रियारत्नमा-
बालं सत्वरबोधकारणमिदं सर्वप्रमोदप्रदम्।
ये बुद्धाखिलशास्त्रसुन्दरकलास्सर्वाक्रियायाः पदं
ते श्रीमद्गुणरत्नसूरिपतयः सन्तु प्रबोधाय वः॥ १॥

निवेदक
श्रीजैनयशोविजयपाठशालाव्यवस्थापक।





श्रीगुणरत्नसूरयः ।

श्रीहैमशब्दागमपाठकानां महोपकारी जयतात्सदैषः ।
ग्रन्थः क्रियारत्नसमुच्चयाख्यो विद्वन्मणेः श्रीगुणरत्नसूरेः ॥ १ ॥

अखण्डितपण्डामण्डनमण्डितपण्डितमण्डलाकाण्डितचण्डाहङ्कारान्धकारवारनिवारणेऽप्रतिमप्रतिभाप्रकर्षप्रखरप्रभप्रभाकरानुकारिणश्चञ्चच्चारुचातुरीचर्च्चितचेतश्चिचेतश्चमत्कारकारिकृतान्तसङ्घाताः श्रीगुणरत्नसूरयः कदा कतमं क्षमामण्डलं मण्डयाम्बभूवुरिति जिज्ञासायामनेकग्रन्थपर्य्यालोचने प्रवृत्ते–

श्रीगुणरत्नसूरीणामसाधारणनियमः । तदुक्तम्—
" जगदुत्तरो हि तेषां नियमोऽवष्टम्भरोषविकथानाम् ।
आसन्नां मुक्तिरमां वदति चरित्रादिनैर्मल्यात् ॥ " इति
तत्कृताश्च ग्रन्थाः क्रियारत्नसमुच्चयषड्दर्शनसमुच्चयबृहद्वृत्त्यादयः

इति कल्पकिरणावलीप्रवचनपरीक्षादिग्रन्थसार्थग्रन्थितृतपागणगगनाङ्गणगगनाध्वगायमानश्रीधर्म्मसागरोपाध्यायविहिततपागच्छपट्टावलीतः–

देवसुन्दरगुरुक्रमपद्मो-
पास्तिविस्तृतसमस्तगुणा ये ।
तद्विनेयवृषभा विजयन्ते
कीर्त्तयामि ततकीर्त्तिततींस्तान् ॥ १ ॥

आद्या जयन्ति गुणरत्नमुनीन्द्रचन्द्राः
सूरीश्वराः सुगुणरत्नविभूषणैर्यैः ।
सा काऽप्यवापि सुभगत्वरमा यया तान्
श्लिष्यन्ति सर्वबुधमानसवृत्तिनार्य्यः ॥ २ ॥

तेषां निर्जितवादिराजिकुयशोजम्बालजालाबिले
भ्रान्त्वा भूवलयेऽखिलेऽथ चलिता खं स्वर्गदण्डाध्वना ।
श्रान्ती श्रान्तिहतीच्छयेन्दुसरासि स्वैरं सुधाशीकरान्
कीर्त्तिर्यान् विकिरत्यमी प्रतिनिशं दृश्या म्रहादिच्छलात् ॥ ३ ॥

यज्जाता हिमभूभृतः पशुपतेः पत्नीति कः प्रत्यय-
स्तत्कीर्त्तिर्जनिताऽमुनेति तु सतां नूनं प्रतीतेः पथः ।
एषा यच्छिशिराऽर्जुनाऽपि जनयेत् म्लानिं जवाद्वादिनां
वक्त्राम्भोजगणेषु निर्दहति च प्रोद्दामदर्प्पद्रुमान् ॥ ४ ॥

ग्रन्थेषु येषु न परस्य धियां प्रवेशो-
ऽप्येतेष्वपि प्रसरतीह तदीयबुद्धिः ।
बेभाययत्यपि तटाश्रितमन्यमब्धि-
र्यः सोऽपि दैत्यरिपुणा किमु नो ममन्थे ॥ ५ ॥

जगदुत्तरो हि तेषां नियमोऽवष्टम्भरोषविकथानाम् ।
आसन्नां मुक्तिरमां वदति चरित्रातिनैर्मल्यात् ॥ ६ ॥

सिद्धत्वात् सार्ववैद्यस्य ते सिद्धपुरुषोत्तमाः ।
तदाप्ततत्कणाः शिष्या यद्वशीकुर्वते जगत् ॥ ७ ॥

सर्वव्याकरणावदातहृदयाः साहित्यसत्यासवो
गम्भीरागमदुग्धसिन्धुलहरीपानैकपीताब्धयः ।
न्यायोज्योतिषनिस्तुषाः प्रदधतस्तर्केषु चाचार्यकं
वादे तेऽत्र जयन्त्यशेषविदुषां त्रैवैद्यदर्प्पोष्मलान् ॥ ८ ॥

उत्कल्लोलं दिशि दिशि बुधाः कर्णपात्रैः पिबन्तः
स्फीतं गीतं सुकृतिततिभिस्तद्यशःक्षीरपूरम् ।
तेषां शुद्धां चरणकमलां बिभ्रतां श्रीगुरूणां
सृष्ट्या स्रष्टा जगदुपकृतं मन्यते साम्प्रतं वै ॥ ९ ॥

परमेष्ठिमन्त्रतत्त्वाम्नायस्मरणेन दैवतादेशैः ।
पारत्रिकैहिकीस्ते प्रायो जानन्ति कार्यगतीः ॥ १० ॥

स्वदर्शने वा परदर्शनेषु वा
ग्रन्थः स विद्यासु चतुर्दशस्वपि ।
समीक्ष्यते नैव सुदुर्गमेऽप्यहो
यत्र प्रगल्भा न तदीयशेमुषी ॥११॥

या ज्ञानाद्युद्यमप्रौढिर्या च नित्याऽप्रमादिता ।
या चैषां स्मरणा शक्तिः साऽन्यत्र श्रूयतेऽपि न ॥१२॥

चक्रुष्टीकाशलाकां ते षड्दर्शनसमुच्चये ।
ज्ञाननेत्राञ्जनायेव सतां तत्त्वार्थदेशिनीम् ॥१३॥

उद्धृत्य ये व्याकरणाम्बुराशितो
विलोड्य बुद्धिप्रसरामराद्रिणा ।

शुद्धक्रियारत्नसमुच्चयं सता-
माश्चर्यभूतं विबुधालये ददुः ॥१४॥
लोकोत्तरां सच्चरणश्रियं मुदा
सदा भजन्तश्च सरस्वतीं प्रियाम् ।
दुष्कर्मदैत्यव्यथका जयन्तु ते
गुरुप्रवेकाः पुरुषोत्तमाश्चिरम् ॥१५॥ (युग्मम्)

इति वादिगोकुलषण्ढकालीसरस्वत्याद्यनेकबिरुदधारकसहस्राभिधानधर्त्तृ-श्रीमुनिसुन्दरसूरिभी रसरसमनुमिते १४६६ विक्रमाब्दे विरचिताद् श्रीगुर्वावली-नामकग्रन्थाच्च सहृदयहृदयहृदयङ्गमग्रन्थितनिर्ग्रन्थागण्यगुणगणाकृष्टोत्कृष्टदुष्टा-निष्टकष्टदारिष्टपटलानामुक्तसूरीणां दृप्यद्दुर्मदवद्यादिवारणनिवारणोल्लसद्द्विरद-कर्द्दनत्वं चातुर्वैद्यवैशारद्यं प्राभाविकधुरन्धरत्वञ्च स्फुटमेव निश्चेचीय्यते ।

पूज्याचार्य्यवर्य्याणां चैतेषां १४६६ वैक्रमिकः सत्तासमय इति ग्रन्थप्र-शस्तिगतश्लोकेन प्रकटमेव प्रतीयते ।

अस्य पुनः सिद्धहेमचन्द्रव्याकरणाध्येतॄणां महोपयोगिनो ग्रन्थस्य सर्व्वतो मुद्रणादिव्ययदातुः सुकार्य्यलीनपरमोदारश्रीकलिकाताजैनश्वेताम्बरसङ्घस्यातीव धन्यवादपुरस्सरं परमोपकारं मन्यामहे ।

पुस्तकचतुष्काधारेणातीवायासतः शोधितमुद्रिते दत्तशुद्धिपत्रेऽप्यस्मिन् ग्रन्थे दृष्टिदोषाद् यत्र क्वचनाशुद्धिः स्थिता जाता वा तां कृपां विधाय सहृदयहृदयाः शोधयिष्यन्तीति–

यतः

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः ।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः ॥ इति

निवेदकाः
श्रीयशोविजयजैनपाठशालाव्यवस्थापकाः ।

॥ भूमिका ॥

जैन–साहित्यनी उन्नति तथा प्रचारना विषयमां काशीस्थ श्रीमद्यशोविजयजी जैन पाठशाला, तथा श्रीजैनयशोविजयग्रन्थमालाअे आपेलो फाळो केवो अपूर्व तथा आनन्दप्रद छे, ते सम्बन्धी अभिप्राय उचारवानो अमोने अधिकार नथी. परन्तु हरकोई व्यक्ति पछी भले ते उक्त संस्थानो शुभेच्छक होय के शत्रु होय, पण जो तेना आंतर् चक्षुओ खुलेला हशे; तो तेने पक्षापक्षना तोफानी प्रवाहमां तणाती आ संस्थानी मुश्केलीनो ख्याल आव्या वगर रहेशे नहीं. पाठशालाना सम्बन्धमां आ स्थाननो उपयोग करवो अे अधर्म्य होवाथी पाठशालाना प्रश्नने अेक बाजु पर राखी, ग्रन्थमालाना विषयमांज अत्र बोलीशुं. पांच वरस दरमीयान प्रस्तुत ग्रन्थमालाने पण अेवा अनेक संकटो नड्या छे! अेम छतां अमारा जैन-साहित्य-प्रिय वांचनाराओना हाथमां दशम रत्न, जरा विलम्बथी पण मुकवा शक्तिवान् नीवड्या छीअे; ते अमारा माटे ओछा सन्तोषनी वात तो नज कहेवाय. उपस्थित दशमरत्न जन समाजने केटलुंबधुं उपयोगी तथा जैनाचार्यनी सरल अने कोमल कृतिनुं आदर्श छे, ते तेना अधिकारी अभ्यासी सिवाय संपूर्णतः समजी शकाय अेम नथी, तदपि ग्रन्थना अन्तिम भागमां स्वयं कर्त्ताअेज आपेली प्रशस्ति उपरथी आ वातता स्पष्ट रीते प्रकाशी नीकळे छे के, ग्रन्थकार-श्रीमद् **गुणरत्नसूरि** महाराजे, श्रीसिद्धहेम-व्याकरणना अभ्यासीओने धातुना तथा कृदंतना प्रयोगो सम्बन्धी अनेकशः नडती मुश्केलीओ दूर करवाना अति उच्च उद्देशथीज आ ग्रन्थनी रचना विक्रम सम्वत् १४६६ मां करीछे. धातुओना कालना अने कृदन्तना विविध रूपाख्यानो के जेमां उद्भट कहेवरावता आधुनिक वैयाकरणो पण घणी वार गोथुं खाइ बेसे छे, तेवा क्लिष्ट रूपाख्यानोनुं स्पष्टीकरण आपवामां उक्त आचार्य महाराज अेटले बधे दरज्जे सफलता पाम्या छे के, अमो अेम खात्री पूर्वक कहेवाने तत्पर थया छीअे के तेओश्रीना गमे

ते स्थले रहेला पवित्रात्माने, **क्रियारत्नसमुच्चयना** अभ्यासको अनन्त आ-शीर्वादथी वधावी लीधा वगर रही शकशे नहीं. आ आचार्य महाराजश्रीअे आ ग्रन्थ उपरान्त पण अन्य अनेक ग्रन्थोनी रचना करी छे. ते उपरथी तेओश्रीनी प्रतिभा किंवा अप्रतिबद्ध बुद्धिनुं सहज अनुमान थइ आवे एम छे. ग्रन्थकारनी स्तुति करता सुप्रसिद्ध आचार्य श्रीमुनिसुन्दरसूरि पण कहेछे के:—

आद्या जयन्ति गुणरत्नमुनीन्द्रचन्द्राः सूरीश्वराः सुगुणरत्नविभूषणैर्यैः ।
सा काऽप्यवापि सुभगत्वरमा यया तान् श्लिष्यन्ति सर्वबुधमानसवृत्तिनार्यः ॥

अर्थात्–मुनीन्द्रोने विषे चन्द्र समान श्रीगुणरत्नसूरीश्वर जयवन्ता वर्त्तेछे. सद्‌गुण रूपी रत्नना आभूषण रूप जे गुरु ते वडे कोइपण अेवी सौभाग्य स्त्री प्राप्त करवामां आवी के जे स्त्रीने लइने सर्व शाणा पुरुषोनी मानसिक वृत्ति रूपी नारीओ तेमने आलिङ्गन करेछे. सारांश के विद्वान् पुरुषोनी मनो-वृत्ति तेमना प्रति आकर्षाया विना रही शकतीज नथी. आ उपरान्त ग्रन्थ-कारना यशोगान अथवा गुणानुरागमां मुनिसुन्दरसूरि अेटला बधा पृष्ठो रोके छे के, ते सर्वनो उल्लेख अत्र अशक्य थइ पडेछे. परन्तु प्रस्तुत ग्रन्थ क्रियारत्न समुच्चयनी अपूर्वता तथा सुन्दरतानुं वर्णन तो आप्या विना आ प्रसंग पसार करी शकीशुं नहीं. तेओश्री लखेछे के:–

उद्धृत्य ये व्याकरणाम्बुराशितो विलोड्य बुद्धिप्रसरामराद्रिणा ।
शुद्ध–" क्रियारत्नसमुच्चयं " सतामाश्चर्यभूतं विबुधालये ददुः ॥

अर्थात्-जेओअे बुद्धिना विस्तार रूपी अमराचल-कनकाद्रि वडे व्याकरण-रूप समुद्रमांथी, चिरान्दोलन करीने सज्जनोने आश्रयभूत अेवा शुद्ध **क्रिया-रत्नसमुच्चयने** करवा साथे तेने पंडितोना आवासमां समर्पण कर्यो! इत्यादि. आ बधा निरूपण पछी अेम समजाववानी कदाचज जरूर पडशे के, संस्कृत विद्यार्थीओना मार्गमां गमे ते प्रकारे सरलता आणवानोज अेकमात्र उद्देश आ ग्रन्थरत्नमां समायेलो छे. मात्र धातुओना रूपाख्यानोज आपीने बेसी नहीं रहेता, नाम तथा सौत्र धातुओना सर्व रूपाख्यानोनी पण विस्तारथी समज

आपवा उपरांत, कयो काल केवे प्रसंगे वापरवो जोइअे ? तेनी अेवी तो असरकारक समज आपी छे के अेकंदर रीते विद्यार्थी-वर्गने आ ग्रन्थ आशीर्वाद रूप थइ पड्या वगर रहे नहीं. जे जे स्थले कांइक कठिन स्थल-विशेष कर्त्ताने मालूम पड्युं छे; त्यां त्यां पोतानी (प्राचीन) गुजराती भाषामां पण समजाववानुं कर्त्तव्य विसरी गया नथी.

सौभाग्यनो विषय छे के आवा अनेक ग्रन्थ रत्नोना प्रतापे श्रीजैनयशोविजय ग्रन्थमाला लोकादर संपादन करवाने दिनानुदिन अधिकतर शक्तिवती थती जाय छे. टुंक समयमांज अनेक सुप्रतिष्ठित नरो तेनी मुक्त कंठथी प्रशंसा करवाने ललचाया छे. खुद हिंदी सरकारे पण आ ग्रन्थमालानुं प्रथम रत्न-**प्रमाणनयतत्त्वालोकालंकार** कलकत्ता युनिवर्सिटीमां M. A. नी परीक्षामां दाखल करी, आपणा जैन-साहित्यने इन्साफ आपी तेना प्रवर्त्तकोने उत्तेजित कर्या छे. तात्पर्य अे छे के आ प्रमाणे ग्रन्थमालानुं भविष्य मूलथीज तेजस्वि छे. तेने वधारे तेजस्वि बनावी साहित्यना प्रचारमां सहायक थवुं अे आपणुं-सर्वनुं कर्त्तव्य छे. आ कर्त्तव्यनो पार पामवा जो अमारा पूज्य मुनिवरो तथा श्रीमानो अमने योग्य सहाय आपी ग्रन्थमालानो पायो सुदृढ करवानी पोतानी फरज विचारशे तो अमने आशा नहीं पण विश्वास छे, के जैनाचार्योनी शब्द-प्राचुर्य किंवा खण्डन-मण्डन रहित, हृदयंगम अने सरल कृति जन समाजने मोहित कर्या वगर रहेशे नहीं ॥

प्रस्तुत ग्रन्थ प्रगट करवामां आर्थिक सहाय अर्पनार श्रीकलकत्ताना संघनो अत्र आभार मानीअे छीअे; अने आवा ज्ञानप्रचारना अनेक कार्योमां पुनः पुनः उजमाल थाय अेम इच्छीअे छीअे ॥

आ नानी भूमिका समाप्त करता अन्ते प्रार्थिशुं के अेक त्यागी, वैरागी अने प्रभाविक मुनिवरना पवित्र अने प्रबल प्रयत्न द्वारा स्थापित थयेली श्री यशोविजय जैनपाठशाला तथा तदन्तर्गत श्रीजैनयशोविजय ग्रन्थमाला, समस्त प्राणीओना समुल्लासने अर्थे "यावच्चन्द्रदिवाकरौ" रहो ?

व्यवस्थापक—श्रीयशोविजयजैनग्रन्थमाला ।

PREFACE.[1]

The 'Kriyāratna-samuccaya' is a very useful supplement to the Sankrit grammar (Siddha Hema-Śabdānuśāsana) of Hema Candra Sūri, containing as it does the paradigms of almost all Sanskrit verbs (roots) arranged under different *gaṇas*, classes, as *Bhvādi*, *Adādi*, etc.[2] Guṇaratna Sūri, who wrote this work, is well known as the author of another work—a commentary on the Ṣaḍdarśana-samuccaya named Ṣaḍdarśana-samuccaya-vṛtti or Tarka-rahasya-dīpikā.[3] In this latter work Guṇaratna has mentioned Śauddhodani, Dharmottarācārya, Dharmakīrti, Prajñākara, Dignāga, and other Buddhist authors, as well as numerous Brāhmaṇa authors such as Akṣapāda, Vātsyāyana, Udyotakara, Vācaspati, Udayana, Śrīkaṇṭha, Abhayatilakopādhyāya and Jayanta.

Guṇaratna belonged to the Tapāgaccha of the Śvetāmbara sect, and was a pupil of Devasundara who attained the exalted position of Sūri in Anahillapattana in Saṃvat 1420 or A.D. 1363, as is evident from Ratnaśekhara Sūri's Śrāddha-pratikramaṇa-sūtra-vṛtti[4] composed in Saṃvat 1496 or A.D. 1439. Devasundara Sūri, teacher of Guṇaratna, was a contemporary of Munisundara Sūri, the famous author of the Gurvāvalī,[5]

---

[1] This preface was written at our request by Mahāmahopādhyāya Dr. Satis Chandra Vidyābhūṣaṇa, M.A., Ph.D., Professor of Sanskrit and Pali, Presidency College, Calcutta, and Jt. Philological Secretary, Asiatic Society of Bengal.—EDITOR.

[2] श्रीहेमचन्द्रसूरीशकृतव्याकरणादिह ।
बहूपयोगिधातूनां क्रियारत्नसमुच्चयम् ॥ २ ॥
श्रीदेवसुन्दराभिख्यसुगुरूणां निदेशतः ।
सूरिः श्रीगुणरत्नोऽयं कुरुते तज्ज्ञतुष्टये ॥ ३ ॥ (क्रियारत्नसमुच्चयः)

[3] The Ṣaḍdarśana-samuccaya-vṛtti has been published by the Asiatic Society of Bengal under the editorship of Dr. Suali of Bologna, Italy.

[4] विख्याततपेत्याख्या जगति जगच्चन्द्रसूरयोऽभूवन् ।
श्रीदेवसुन्दरगुरूत्तमाश्च तदनुक्रमाद्विदिताः ॥
पञ्च च तेषां शिष्यास्तेष्वाद्या ज्ञानसागरा गुरवः ।
कुलमण्डना द्वितीयाः श्रीगुणरत्नास्तृतीयाश्च ॥
षड्दर्शनवृत्तिक्रियारत्नसमुच्चयविचारनिचयस्रजः ।
एषां श्रीसुगुरूणां प्रसादतोऽब्दे षडङ्कविश्वमिते ।
श्रीरत्नशेखरगणिर्वृत्तिमिमामकृत कृतितुष्ट्यै ॥ (श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्रवृत्तिः)

[5] रसरसमनुमितवर्षे १४६६ मुनिसुन्दरसूरिणा कृता पूर्वम्
मध्यस्थैरवधार्या गुर्वालीयं जयश्रीदा ॥ ९३ ॥ (गुर्वावली, पृः १०९)।

composed in Saṃvat 1466 or A.D. 1409. These facts show that Guṇaratna lived between 1363 A.D. and 1439 A.D. Guṇaratna himself says that his Kriyāratna-samuccaya was composed in Saṃvat 1466 or A.D. 1409.[1] This fixes his date with an absolute certainty.

Regarding the merits of the works which are being published in the series called the Jaina-yaśo-vijaya-granthamālā, I need not add any note as they are well known to the scholars of the East and West.

PRESIDENCY COLLEGE,
CALCUTTA:
The 26th May, 1908.

SATIS CHANDRA VIDYABHUSANA.

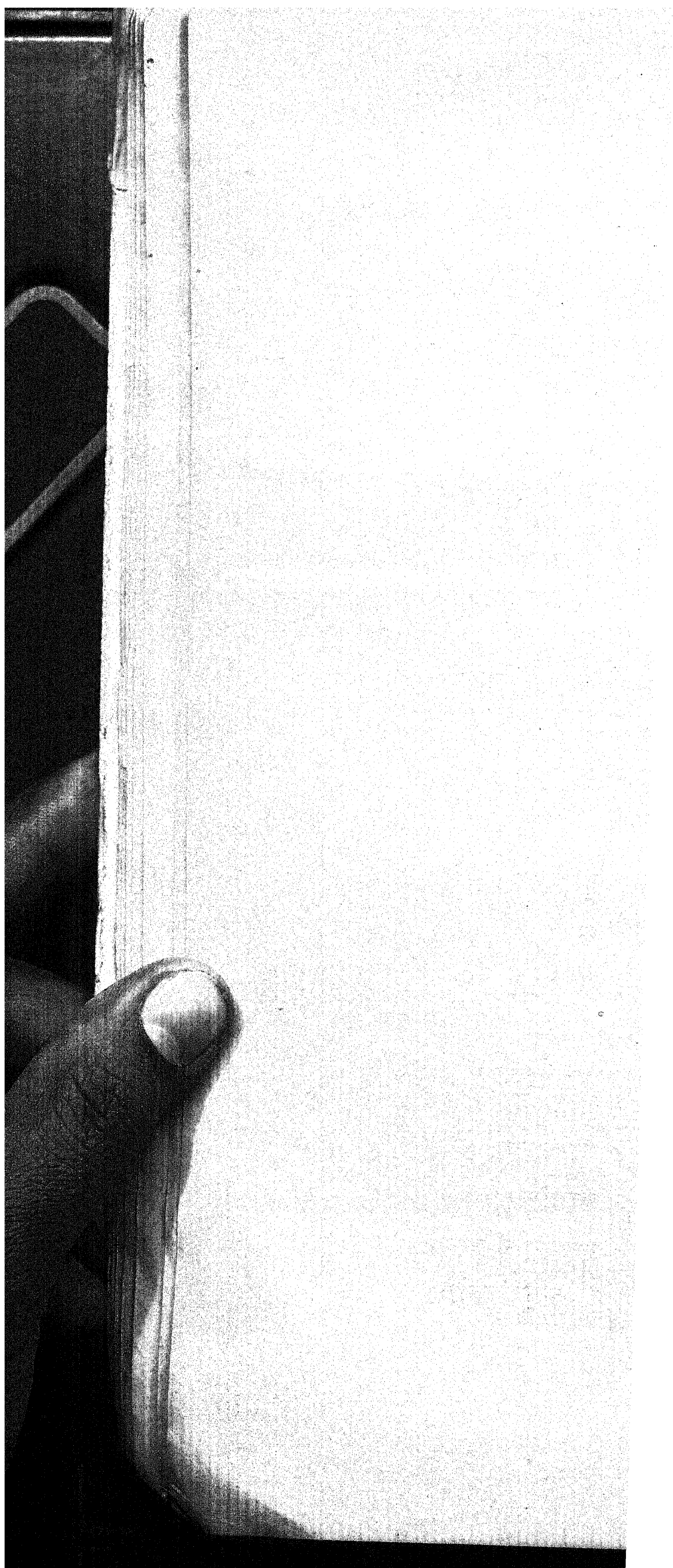
---

[1] काले षड्रसपूर्व १४६६ वत्सरमिते श्रीविक्रमार्काद्गते
गुर्वादेशवशाद्विमृश्य च सदा स्वान्योपकारं परम्।
ग्रन्थं श्रीगुणरत्नसूरिरतनोत् प्रज्ञाविहीनोऽप्यमुम्
निर्हेतूपकृतिप्रधानजननैः शोध्यस्त्वयं धीधनैः ॥ ६३ ॥

(क्रियारत्नसमुच्चयः, पृः ३०९)।

क्रियारत्नसमुच्चयग्रन्थस्य विषयानुक्रमः ।

इति ।



॥ अर्हम् ॥

शिष्टाचरिताचरणविजिताजेयकरणगणस्याद्वादसमुद्रोल्लासनचन्द्रपरमपूज्यशान्तरसैकनिधि शान्तमूर्त्तिश्रीवृद्धिचन्द्रसद्गुर्वष्टकं स्तुतिरूपम् ।

वाचं वाचं प्रभुगुणगणं लब्धकीर्त्तिर्जने यो-
बोधं बोधं विषमविबुधं जातपूज्यप्रभावः ।
वेदं वेदं सकलसमयं प्राप्तशान्तस्वभावः
स्वर्गस्थोऽसौ विलसति सुखं मद्गुरुर्वृद्धिचन्द्रः ॥ १ ॥

स्नायं स्नायं सुपवितवपुः सार्ववाचामृतेन
हायं हायं कुमतकपटं विश्ववन्द्यप्रतापः ।
घातं घातं सुभटपदवीं प्राप दुष्कर्मवृन्दं
स्वर्गस्थोऽसौ विलसति सुखं मद्गुरुर्वृद्धिचन्द्रः ॥ २ ॥

पावं पावं मुनिजनपथं कृत्यकार्येषु लीनः
स्तावं स्तावं गुणिगुणगणं शुद्धसम्यक्त्वधारी ।
नावं नावं जिनवरवरं नीतपुण्यप्रकर्षः
स्वर्गस्थोऽसौ विलसति सुखं मद्गुरुर्वृद्धिचन्द्रः ॥ ३ ॥

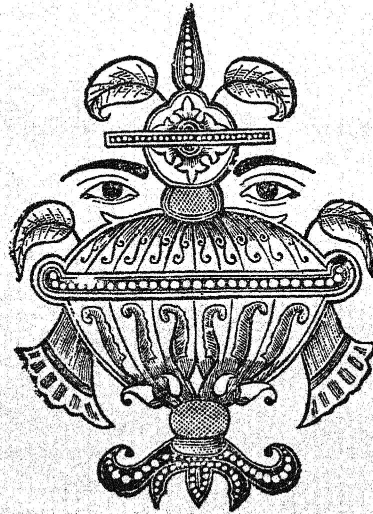
दायं दायं स्वभयमतुलं प्राणिषु प्रीतिपुञ्जं
धायं धायं सुमतिमहिलां क्लृप्तकल्याणपोतः ।
भायं भायं प्रवचनवचो वीरदेवाभिमानः
स्वर्गस्थोऽसौ विलसति सुखं मद्गुरुर्वृद्धिचन्द्रः ॥ ४ ॥

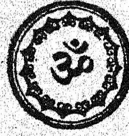
मारं मारं रतिपतिभटं त्यक्तमोहादिदोषो-
धारं धारं यतिपतिपदं कृत्तकर्मादिवर्गः ।
वारं वारं कुपथगमनं जैनगच्छान्तरक्तः
स्वर्गस्थोऽसौ विलसति सुखं मद्गुरुर्वृद्धिचन्द्रः ॥ ५ ॥

द्वेषं द्वेषं कपटपटुकं निह्नवं न्यायमुक्तं
पेषं पेषं कुशलविकलं कर्मवारं प्रभूतम् ।

पोषं पोषं विमलकमलं चित्तरूपं महात्मा
स्वर्गस्थोऽसौ विलसति सुखं मद्गुरुर्वृद्धिचन्द्रः ॥ ६ ॥
शोषं शोषं कलुषजलधिं ध्वस्तपापादिपङ्कः
प्लोषं प्लोषं सकलमशुभं शुद्धधीध्यानमग्नः ।
तोषं तोषं भविजनमनो जैनतत्त्वादिभिर्यः
स्वर्गस्थोऽसौ विलसति सुखं मद्गुरुर्वृद्धिचन्द्रः ॥ ७ ॥
सिद्धान्तोदधिमन्थनोत्थविमलज्ञानादिरत्नव्रजं
शिष्येभ्यो वितरन् समाधिसहितः संप्राप नाकं शुभम् ।
सोऽयं मद्गुरुरन्वहं विजयतां श्रीवृद्धिचन्द्रो मुनि-
स्तस्यैव स्तुतिरूपमष्टकमिदं भव्याः पठन्तु प्रगे ॥ ८ ॥

इति परमपूज्यशान्तमूर्तिश्रीमद्वृद्धिचन्द्रचरणामलकमलचञ्चरीकायमाणश्रीजैनयशोविजयग्रन्थमालोत्पादक-श्रीयशोविजय (बनारस) जैनपाठशालासंस्थापक-योगशास्त्रविवरणसहितसंशोधक-श्रीमुनिराजधर्मविजयविरचितं स्वगुर्वष्टकम् ।





श्रीगुणरत्नसूरि-
विरचितः

क्रियारत्नसमुच्चयः।

जयति जिनवर्द्धमानो नवो रविर्नित्यकेवलालोकः।
अपहृतदोषोत्पत्तिर्गतसर्वतमाः सदाऽभ्युदितः ॥ १॥
श्रीहेमचन्द्रसूरीशकृतव्याकरणादिह।
बहूपयोगिधातूनां क्रियारत्नसमुच्चयम् ॥ २ ॥
श्रीदेवसुन्दराभिख्यसुगुरूणां निदेशतः।
सूरिः श्रीगुणरत्नोऽयं कुरुते तज्ज्ञतुष्टये ॥ ३ ॥ (युग्मम्)

इह सदोपयोगिनां क्रियारत्नानां प्रयोगप्रकारं बुभुत्सूनामुपकाराय वर्त्त-मानादिदशविभक्तीनां सदादिकालत्रयविषयः प्रयोगविभागः पूर्वं तावन्निरूप्यते—

"त्रीणि त्रीण्यन्ययुष्मदस्मदि"।३।३।१७॥ सर्वासां विभक्तीनां त्रीणि २ वचनानि अन्यस्मिन्नर्थे युष्मदर्थेऽस्मदर्थे चाभिधेये क्रमाद्भवन्ति। तत्राप्येकस्मिन्नर्थे एक-वचनम्। द्वयोरर्थयोर्द्विवचनम्। बहुष्वर्थेषु बहुवचनम्। अत्र अन्यत्वं युष्मदस्म-दपेक्षं संनिधानात्। युष्मच्छब्दवाच्योऽर्थो युष्मदर्थः। तेन भवच्छब्देनोच्यमानो न युष्मदर्थः॥ स जयति। तौ जयतः। ते जयन्ति॥ स विजयते। तौ विजयेते। ते विजयन्ते॥ भवान् जयति। भवन्तौ जयतः। भवन्तो जयन्ति इत्यादि॥ युष्मदि; त्वं जयसि। युवां जयथः। यूयं जयथ॥ त्वं विजयसे। युवां विजयेथे। यूयं विजयध्वे॥ अस्मदि; अहं जयामि। आवां जयावः। वयं जयामः॥ अहं विजये। आवां विजयावहे। वयं विजयामहे॥ एवं सर्वासु। द्वययोगे त्रययोगे च शब्द-स्पर्द्धात् पराश्रयमेव वचनं भवति। स च त्वं च जयथः। स चाहं च जयावः।

त्वं चाहं च जयावः । स च त्वं चाहं च जयामः ॥ व्यस्तनिर्देशेऽपि परमेव । अहं च स च जयावः । अहं च त्वं च जयावः । अहं त्वं स च जयामः ।

॥ तदुक्तम् ॥

अन्ययुष्मदस्मदर्थाः सहोक्तौ स्युर्यथापरम् ।
यथा ज्ञौ त्वं स च स्यातं ज्ञाः स्याम त्वमहं स च ॥१॥ इति ॥

अथ वर्त्तमाना ॥ "सति" ।५।२।१९॥ वर्त्तमानकाले वर्त्तमाना ॥ स चतुर्द्धा ।

प्रवृत्तोपरतश्चैव १ वृत्ताविरत एव च २ ।
नित्यप्रवृत्तः ३ सामीप्यो ४ वर्त्तमानश्चतुर्विधः ॥ १ ॥

सम्प्रति जीवघातं न करोति । परमर्माणि न जल्पति । परदारान् परिहरति । सुरापानं वर्जयति । इति प्रवृत्तोपरतो वर्त्तमानः ॥१॥ इह कुमाराः क्रीडन्ति । इह श्राद्धाः पर्वणि पौषधं गृह्णते । इह च्छात्रा अधीयते । अरण्ये किराता वस्त्राण्याददते । इति वृत्ताविरतः २॥ आचन्द्रार्कं नदी वहति । तिष्ठन्ति पर्वताः । तरणिस्तमांसि तिरस्कुरुते । द्वे सागरोपमे शक्रः साम्राज्यं कुरुते । हरिप्रेरणया ब्रह्मा सृष्टिं रचयति । असुराः सदा वेदमार्गं विलुम्पन्ति । इति नित्यप्रवृत्तः॥ कथं तर्हि तस्थुः स्थास्यन्ति गिरय इति । उच्यते । भूतभाविनां भरतकल्किप्रभृतीनां राज्ञां याः क्रियास्तदवच्छेदेन पर्वतादिक्रियाणामप्यतीताऽनागतत्वोपपत्तेर्न भूतभाविप्रत्ययानुपपत्तिदोषः।३॥ कदा मैत्राऽऽगतोऽसि । अयमागच्छामि । कदा मैत्र गमिष्यसि । एष गच्छामि । इति सामीप्यः । अयं च "सत्सामीप्ये सद्वा" इत्यत्र विकल्पेन वक्ष्यते ॥४॥१॥

अथ भूते वर्त्तमानां विवक्षुर्लाघवार्थं ह्यस्तन्यादित्रयं प्राह॥"वाद्यतनी पुरादौ"।५।२।१५॥ पुरादयःपुरा तदा अथ यावद् ह शश्वदादयः प्रयोगतो गम्याः। भूतानद्यतने पुरादियोगेऽद्यतनी वा । पक्षे अपरोक्षे ह्यस्तनी । परोक्षे परोक्षा च । अवात्सुरिह पुरा च्छात्राः। पुराशब्दोऽत्र चिरातीते । अवसन्निह पुरा च्छात्राः । ऊषुरिह पुरा च्छात्राः । तदाऽभाषिष्ट राघवः। तदाऽभाषत राघवः। बभाषे राघवस्तदा।२॥ अथ भूते वर्त्तमाना॥ "स्मे च वर्त्तमाना"।५।२।१६॥ स्मे पुरादौ चोपपदे भूतानद्यतने वर्त्तमाना । इति स्मोपाध्यायः कथयति । पृच्छति स्म पुरोधसम् । स्मशब्दोऽतीतकालद्योतकश्चादिः। वस-

न्तीह पुरा च्छात्राः। भाषते राघवस्तदा। अथाह वर्णी विदितो महेश्वरः। क्रोधं प्रभो-संहर संहरेति यावद्गिरः खे मरुतां चरन्ति ॥ एवं च पुरादियोगेऽद्यतनीह्यस्तनीपरोक्षावर्त्तमानाश्चतस्रो विभक्तयः सिद्धाः। स्मेन सहिते तु पुरादौ परत्वाद् वर्त्तमानैव। नटेन स्म पुराऽधीयते। इतिह स्मोपाध्यायः कथयति। हशब्दोऽत्र स्मृत्यर्थे। इतिह इत्यव्ययसमुदायो वा संप्रदाये। शश्वदधीते स्म बटुः ॥३॥ "ननौ पृष्टोक्तौ सद्वत्"।५।२।१७॥ ननावुपपदे पृष्टस्य प्रतिवचने भूतेऽर्थे सद्वद्भवति। सद्वद्वचनाद्वर्त्तमाना शत्रानशौ च भवन्ति। किमकार्षीश्चैत्र कटम्। ननु करोमि भोः। ननु कुर्वन्तं कुर्वाणं मां पश्य। किमवोचः किंचिच्चैत्र। ननु ब्रवीमि भोः। ननु ब्रुवन्तं ब्रुवाणं मां पश्य ॥ ४ ॥ "नन्वोर्वा"।५।२।१८॥ ननुशब्दयोर्योगे भूतेऽर्थे सद्वत्। किमकार्षीः कटं चैत्र। न करोमि भोः। न कुर्वन्तं न कुर्वाणं मां पश्य। नाकार्षम्। कस्तत्रावोचत्। अहं नु ब्रवीमि। ब्रुवन्तं ब्रुवाणं नु मां पश्य। अहं न्ववोचम् ॥५॥ अथ भविष्यति वर्त्तमाना। "पुरा[1]यावतोर्वर्त्तमाना"।५।३।७॥ पुरायावतोरुपपदयोर्वर्त्स्यति[2] वर्त्तमाना॥ चैत्र शीघ्रं भुङ्क्ष्व पुरा ग्रामं गच्छसि। पश्चाद्गमिष्यसीत्यर्थः। पुराशब्दोऽत्र भविष्यदासन्ने। भोः सत्वरं पुस्तकं गृहाण पुराऽध्यापक आगच्छति। अयं यावद्भुङ्क्ते तावत्प्रतीक्षस्व। कदा राजभवनं प्रयास्यति। मित्र यावद्भोज्यं भवति। अयं कियन्तं कालमध्येष्यते। यावत्पाणिग्रहणं सम्पद्यते। भविष्यदनद्यतनेऽपि परत्वाद्वर्त्तमानैव। पुरा श्वो भुङ्क्ते। यावच्छ्वो व्रजति। यावच्छब्दोऽत्रावध्यर्थः। परिमाणार्थे तु न स्यात्। यावद्दास्यते तावद्भोक्ष्यते। यत्परिमाणमित्यर्थः॥६॥ "कदाकर्ह्योर्नवा"।५।३।८॥ अनयोर्योगे वर्त्स्यति वा वर्त्तमाना। पक्षे भविष्यन्तीश्वस्तन्यावपि। कदा भुङ्क्ते। कदा भोक्ष्यते। कदा भोक्ता। कर्हि भुङ्क्ते। कर्हि भोक्ष्यते। कर्हि भोक्ता। भूते तु नित्यं परोक्षादयः। कदा बुभुजे। कदा भुक्तवान् ॥ कर्हि बुभुजे भुक्तवान् वा ॥७॥ "किंवृत्ते लिप्सायाम्"।५।३।९॥ विभक्त्यन्तस्य डतरडतमान्तस्य च किमो वृत्तं किंवृत्तमिति वैयाकरणसमयस्तेन किंतरां किंतमामिति न किंवृत्तं, तस्मिन्नुपपदे प्रष्टुर्लब्धुमिच्छायां गम्यायां वर्त्स्यति वा वर्त्तमाना। पक्षे भविष्यन्तीश्वस्तन्यावपि।

---

[1] पुरेति क्रियाविशेषणं कालविशेषणे वा सप्तमी, कालाध्व-।२।२।२३॥ इति कर्मसंज्ञायामम् वा, कर्तृविशेषणे प्रथमा वा।

[2] वर्त्स्यतीत्यस्य भविष्यदर्थ इत्यर्थः।

को भवतां भिक्षां ददाति दास्यति दाता वा। कं भवन्तो भोजयन्ति भोजयिष्यन्ति भोजयितारो वा। कतरो भवतोर्भिक्षां ददाति दास्यति दाता वा। कतमो भवतां भिक्षां ददाति दास्यति दाता वा। लिप्साया अभावे तु, कः सिद्धपुरं यास्यति ॥८॥ "लिप्स्यसिद्धौ"।५।३।१०॥ लब्धुमिष्यमाण ओदनादिर्लिप्स्यस्तस्मात्सिद्धौ स्वर्गाधवातिलक्षणायां गम्यायां वर्त्स्यति वा वर्त्तमाना। पक्षे भविष्यन्तीश्वस्तन्यावपि। अकिंवृत्तार्थोऽयमारम्भः । यो भिक्षां ददाति दास्यति दाता वा स स्वर्गं याति यास्यति याता वा। अत्रोभयोर्वाक्ययोर्लिप्स्यसिद्धिरवगम्यते। तेनोभयत्राप्यनेनैव वर्त्तमाना सिद्धा । लिप्स्याद्धक्तात् स्वर्गसिद्धिमाचक्षाणो हि दातारं प्रोत्साहयति ॥९॥ "पञ्चम्यर्थहेतौ"।५।३।११॥ पञ्चम्यर्थः प्रैषानुज्ञाऽवसराः। न्यक्कारपूर्वा प्रेरणा प्रैषः। कामचारानुमतिरनुज्ञा। अवसरः कर्त्तव्यकालप्राप्तिः। तस्य प्रैषादेर्हेतुर्निमित्तमुपाध्यायागमनादि, तस्मिन्नर्थे वर्त्स्यति वा वर्त्तमाना। पक्षे भविष्यन्तीश्वस्तन्यावपि । उपाध्यायश्चेदागच्छति आगमिष्यति आगन्ता वा, अथ त्वं सूत्रमध्वीष्व, अथ त्वमनुयोगमादत्स्व। अत्र भविष्यदुपाध्यायागमनं प्रैषादेर्हेतुर्भवति ॥ १० ॥ "सप्तमी चोर्द्ध्वमौहूर्त्तिके"।५।३।१२॥ ऊर्द्ध्वंमुहूर्त्ताद्भव ऊर्द्ध्वमौहूर्त्तिकः। उत्तरपदवृद्धिरस्मादेव निर्देशात्। पञ्चम्यर्थहेतावूर्द्ध्वमौहूर्त्तिके वर्त्स्यति सप्तमीवर्त्तमाने वा। पक्षे भविष्यन्तीश्वस्तन्यावपि। ऊर्द्ध्वंमुहूर्त्तात्, उपरि मुहूर्त्तस्य, परं मुहूर्त्तादुपाध्यायश्चेदागच्छेत् आगच्छति आगमिष्यति आगन्ता वा, अथ त्वं तर्कमध्वीष्व, अथ त्वं सिद्धान्तमधीष्व ॥ ११ ॥ अथ भूतभविष्यतोर्वर्त्तमाना॥ "सत्सामीप्ये सद्वद्वा"।५।४।१॥ सतो वर्त्तमानस्य सामीप्ये भूते भविष्यति चार्थे सद्वत्प्रत्यया वा भवन्ति। कदा मैत्रागतोऽसि, अयमागच्छामि आगच्छन्तमेव मां विद्धि। वा वचनाद्यथाप्राप्तं च । अयमागमं, एषोऽस्म्यागतः। कदा मैत्र गमिष्यसि, एष गच्छामि गच्छन्तमेव मां विद्धि। पक्षे एष गमिष्यामि गन्तास्मि गमिष्यन्तमेव मां विद्धि। असामीप्ये तु न सद्वत्। परुदगच्छत्। वर्षेण गमिष्यति॥१२॥ अथ पुनर्भविष्यति सा॥ "भूतवच्चाशंस्ये वा"।५।४।२॥ अनागतः प्रियोऽर्थः प्राप्तुमिष्यमाण आशंस्यः, तस्मिन्नर्थे भूतवत्सद्वच्च प्रत्यया वा भवन्ति। आशंस्यस्य भविष्यत्वादयमतिदेशः। वा ग्रहणाद्यथाप्राप्तं च। उपाध्यायश्चेदागमत्

एते तर्कमध्यगीष्महि । अत्र स्थानद्वयेऽप्यनेनैव भूतप्रत्ययः। उभयत्राप्याशंस्यस्य विद्यमानत्वाद्विशेषस्यानातिदेशात् । उपाध्यायश्चेदागतः एतैस्तर्कोऽधीतः । उपाध्यायश्चेदागच्छति एते तर्कमधीमहे । पक्षे । उपाध्यायश्चेदागामिष्यति एते तर्कमध्येतास्महे । सामान्यातिदेशे विशेषस्याऽनतिदेशात् ह्यस्तनीपरोक्षे न भवतः। आशंस्यादन्यत्र, गुरुरागमिष्यति तर्कमध्येष्यते मैत्रः॥ १३ ॥ अथ कालत्रये वर्त्तमाना। "क्षेपेऽपिजात्वोर्वर्त्तमाना"।५।४।१२। क्षेपो गर्हा, तस्मिन् गम्ये वर्त्तमाना सर्वेषु कालेषु। अपि तत्रभवान् जन्तून् हिनास्ति । जातु तत्रभवान् अनृतं भाषते। धिग्गर्हामहे ॥ १४॥ "कथमि सप्तमी च वा"।५।४।१३। क्षेपे गम्ये सर्वेषु कालेषु सप्तमी वर्त्तमाने वा भवतः । कथं नाम तत्र-भवान् मांसं भक्षयेत, मांसं भक्षयति । धिग्गर्हामहे । अन्याय्यमेतत् । पक्षे ह्यस्तन्यादय आशीर्वर्जाः सर्वा अपि। कथं नाम तत्रभवान् मांसमभक्षयत् अबभक्षत् भक्षयांचकार भक्षयिता भक्षयिष्यति अभक्षयिष्यत् वा । अत्र सप्तमीनिमित्तमस्तीति भूते क्रियातिपतने वा क्रियातिपत्तिरप्युदाहारि । भवि-ष्यति तु क्रियातिपतने क्रियातिपत्तिरेवैका नत्वन्याः। कथं नाम तत्रभवान् मांसमभक्षयिष्यत । क्षेपादन्यत्र। कथं नाम तत्रभवान् साधून् अपूपुजत् । एवं यथाप्राप्तं वर्त्तमानादयोऽप्युदाहार्याः ॥ १५ ॥ इति वर्त्तमानाव्याप्तिः ।१।

अथ सप्तमी॥ "विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसंप्रश्नप्रार्थने"।५।४।२८॥ विध्या-दिषु षट्सु सर्वप्रत्ययापवादौ सप्तमीपञ्चम्यौ । विधिरप्राप्ते नियोगः क्रियायां प्रेर-णेत्यर्थः। अज्ञातज्ञापनमित्येके। कटं कुर्यात, करोतु भवान्। प्राणिनो न हिंस्यात्, न हिनस्तु भवान्। प्रेरणायामेव यस्यां प्रत्याख्याने प्रत्यवायस्तन्निमन्त्रणम्। इच्छा-मन्तरेणापि नियोगतः कर्त्तव्यमिति यावत । द्विसन्ध्यमावश्यकं कुर्यात् करोतु भवान् । सामायिकमधीयीत, अधीतां भवान् । यत्र प्रेरणायामेव प्रत्याख्याने कामचारस्तदामन्त्रणम्। इहासीत आस्तां भवान् । इह शयीत शेतां भवान्, यदि रोचते। प्रेरणैव सत्कारपूर्विकाऽधीष्टम् ।अध्येषणं तत्वज्ञानम्। नः प्रसीदेयुः प्रसीदन्तु गुरुपादाः । तत्वज्ञानं कर्मतापन्नं नोऽस्मभ्यं प्रसादपूर्वकं दद्युरित्यर्थः। व्रतं रक्षेत् रक्षतु भवान् ॥ संप्रश्नः संप्रधारणा॥ किं नु खलु भो व्याकरणमधीयीय

अध्ययै, उत सिद्धान्तमधीयीय अध्ययै ॥ प्रार्थनं याच्ञा ॥ प्रार्थना मे व्याकरण-मधीयीय अध्ययै, तेन स्यां नाथवानित्यादि ॥ १६ ॥ "सम्भावने ऽलमर्थे तद-ऽर्थानुक्तौ" ।५।४।२२॥ अलमर्थः सामर्थ्यम् । तद्विषये सम्भावने श्रद्धाने गम्येऽल-मर्थस्यानुक्तौ सप्तमी । सर्वविभक्त्यपवादः । शक्यसम्भावने । अपि मासमुपव-सेत । अपि पुण्डरीकाध्यायमह्ना ऽधीयीत । अशक्यसम्भावने । अपि शिरसा पर्वतं भिन्द्यात् । अपि समुद्रं दोर्भ्यां तरेत् । अलमर्थोक्तौ तु न । वसति चेत्सुराष्ट्रेषु वन्दिष्यतेऽलमुज्जयन्तम् । शक्तश्चैत्रो धर्मं करिष्यति ॥ १७ ॥ "किंवृत्ते सप्तमी-भविष्यन्त्यौ" ।५।४।२४॥ किंवृत्ते उपपदे क्षेपे गम्ये सप्तमीभविष्यन्त्यौ । सर्वविभक्त्य-पवादः । किं तत्रभवाननृतं ब्रूयात् वक्ष्यति वा । को नाम कतरो नाम कतमो नाम यस्मै तत्रभवान् अनृतं ब्रूयात् वक्ष्यति वा ॥१८॥"अश्रद्धाऽमर्षेऽन्यत्रापि"।५।४।१४॥ अन्यत्र अकिंवृत्तेऽपिशब्दात्किंवृत्ते चोपपदेऽश्रद्धाऽमर्षयोर्गम्ययोः सप्तमीभविष्य-न्त्यौ । सर्वविभक्त्यपवादः । अश्रद्धायां । न श्रद्दधे, न सम्भावयामि, नाऽवकल्प-यामि, तत्रभवान्नामादत्तं गृह्णीयात ग्रहीष्यति । किंवृत्तेऽपि । न श्रद्दधे, न सम्भावयामि, किं तत्रभवानदत्तमाददीत, आदास्यते । अमर्षे । न मर्षयामि न क्षमे धिग् मिथ्या नैतदस्ति तत्रभवान्नामादत्तं गृह्णीयात् ग्रहीष्यति । किंवृत्तेऽपि । न क्षमे किं तत्रभवानदत्तं गृह्णीयात, ग्रहीष्यति । अत्राश्रद्धा-मर्षयोर्गम्यत्वं पदैः प्रयोगेणैव ज्ञेयम् । एतच्चास्मिन्नेव सूत्रे ज्ञातव्यं नान्यसूत्रेषु यतः " शेषे भविष्यन्त्ययदौ "। इत्यत्र । चित्रं यदि सोऽधीयीत । अत्राश्रद्धा-प्यस्तीति कथयिष्यति ॥१९॥"जातुयद्यदायदौ सप्तमी"।५।४।१७॥ अश्रद्धामर्षयोर्ग-म्ययोः सप्तमी । पूर्वसूत्रप्राप्ताया भविष्यन्त्या अपवादः । न श्रद्दधे न क्षमे जातु यत् यदा यदि वा तत्रभवान् सुरां पिबेत । न श्रद्दधे यत् तत्रभवानस्मानाक्रोशेत् । एवं जातु यदा यद्युपपदेऽपि ॥२०॥ अथ भविष्यति सप्तमी ॥ "क्षिप्राशंसार्थयो-र्भविष्यन्तीसप्तम्यौ" ।५।४।३॥ क्षिप्रार्थे आशंसार्थे चोपपदे आशंस्येऽर्थे यथासंख्यं भविष्यन्तीसप्तम्यौ । "भूतवच्चाशंस्ये वा" । इत्यस्यापवादः । उपाध्यायश्चेदा-गच्छति आगमत् आगमिष्यति आगन्ता क्षिप्रमाशुत्वरितमरंशीघ्रमेते सिद्धान्त-मध्येष्यामहे । श्वस्तनीविषयेऽप्येतद्वचनबलाद्भविष्यन्त्येव । उपाध्यायश्चेच्छ्वः

शीघ्रमागमिष्यति एते श्वः क्षिप्रमध्येष्यामहे । आशंसार्थे, उपाध्यायश्चेदागच्छति, आगमत् आगमिष्यति आगन्ता आशंसेऽवकल्पये सम्भावये युक्तोऽधीयीय। द्वयोस्तूपपदयोः सप्तम्येव। शब्दतः परत्वात्। आशंसे क्षिप्रमधीयीय॥२१॥
"वर्त्स्यति हेतुफले"।५।४।२५॥ हेतुः कारणम्। फलं कार्यम् । हेतुभूते फलभूते च वर्त्स्यति सप्तमी वा। यदि गुरूनुपासीत शास्त्रान्तं गच्छेत्। यदि गुरूनुपासिष्यते शास्त्रान्तं गमिष्यति। अत्र गुरूपासनं हेतुः। शास्त्रान्तगमनं फलम्। वर्त्स्यतोऽन्यत्र तु न सप्तमी। दक्षिणेन चेद्याति न शकटं पर्याभवति। केचित् तु सर्वेषु कालेषु सर्वविभक्त्यपवादं सप्तमीं वा मन्यन्ते । दक्षिणेन चेद्यायात् याति अयासीत् यास्यति वा न शकटं पर्याभवेत् पर्याभवति पर्याभूत् पर्याभविष्यति वा । क्रियातिपत्तिस्तु स्वस्थाने दर्शयिष्यते । हनिष्यतीति पलायिष्यते । वर्षिष्यतीति धाविष्यतीत्यत्र हेतुफलभावस्येतिशब्देनैव द्योतितत्वात् सप्तमी न भवति ॥ २२ ॥

अथ सति सप्तमी॥"सतीच्छार्थात्"।५।४।२४॥ सति वर्त्तमाने इच्छार्थात् धातोः सप्तमी वा पक्षे तु वर्त्तमानैव। चैत्रः सुखमिच्छेत् इच्छति। उश्यात् वष्टि। कामयेत कामयते । वाञ्छेत्, वाञ्छति। "क्षेपेऽपिजात्वोर्वर्त्तमाना" । इत्यादावपि परत्वादयमेव विकल्पः । अपि संयतः सन्नकल्प्यं सेवितुमिच्छेत् इच्छति धिग्गर्हामहे॥२३॥ "इच्छार्थे सप्तमीपञ्चम्यौ"।५।४।२७॥ इच्छार्थे धातावुपपदे प्रयोक्तुः कामोक्तौ गम्यायां सप्तमीपञ्चम्यौ । सर्वविभक्त्यपवादः। इच्छामि भुञ्जीत भुङ्क्तां वा भवान्। कामये प्रार्थये अभिलषामि वश्मि । अधीयीत भवान् अधीतां वा ॥ २४ ॥
इति सप्तमीव्याप्तिः २ ॥

अथ पञ्चमी । सा च विध्याद्यर्थषट्के प्राग् सप्तम्यासहोदाहारि ॥
"प्रैषानुज्ञावसरे कृत्यपञ्चम्यौ" ।५।४।२९। प्रैषादिषु कृत्याः पञ्चमी च भवन्ति । न्यक्कारपूर्विका प्रेरणा प्रैषः । अनुज्ञा कामचारानुमतिः । अवसरः प्राप्तकालता । भवता खलु कटः कार्यः कर्त्तव्यः करणीयः कृत्यः। भवान् हि प्रैषितोऽनुज्ञातोभवतोऽवसरः कटकरणे । कृत्या हि प्राक्सामान्येन भावकर्मणोर्विहिताः सर्वप्रत्ययापवादभूतया पञ्चम्या बाध्येरन्निति पुनर्विधीयन्ते। पञ्चमी प्रैषे । भवान् कटं करोतु। रे ग्रामं याहि। अनुज्ञायाम्। स्वयं गन्तुमिच्छन्तं गन्तुं प्रवृत्तं वा कश्चिदाह

ग्रामं गच्छ । एवं शास्त्रमधीष्व । क्षुल्लोऽयं पुस्तकान् वाचयतु । राजा भवतु धार्मिकः। अवसरे । काले वर्षतु पर्जन्यः सुप्रभूतेन वारिणा । अथ त्वं कुरु । अथ तव कर्तुमवसर इत्यर्थः । प्रस्तावे भवतु कार्यम् ॥ २५ ॥ आशिषि पञ्चमी आशीःस्थाने वक्ष्यते ॥ कश्चित्तु समर्थनायां पञ्चमीमिच्छति । परैरशक्यस्य वस्तुनोऽध्यवसायः समर्थना । कश्चिदाह, समुद्रः शोषयितुमशक्यः । स प्राह, समुद्रमपि शोषयाणि । पर्वतमप्युत्पाटयानि । सत्पुरुषः पृथ्वीमपि भ्रमितुं नतु क्लेशमाप्नोति। दिनं प्रति ग्रन्थसहस्रं लिखानि । मूर्ध्ना भिन्दानि गिरिम् । पादप्रहारेण भूमिं विदारयाणि । बाहुभ्यामब्धिं तराणि ॥२६॥ "भृशाभीक्ष्ण्ये हिस्वौ यथाविधि तध्वमौ च तद्युष्मदि"।५।४।४२॥ भृशत्वे आभीक्ष्ण्ये च सर्वकाले धातोः सर्वविभक्तिसर्ववचनविषये पञ्चम्या हिस्वौ भवतः यथाविधि धातोः सम्बन्धे । यत एव धातोर्यस्मिन्नेव कारके हिस्वौ विधीयेते तस्यैव धातोस्तत्कारकविशिष्टस्यैव सम्बन्धेऽनुप्रयोगे सति । तथा तध्वमौ । तयोस्तध्वमोः सम्बन्धी बहुत्वविशिष्टो युष्मद्, तस्मिन्नभिधेये भवतः। चकारात् हिस्वौ च यथाविधि धातोः सम्बन्धे । लुनीहि लुनीहीत्येवायं लुनाति । भृशं पुनः पुनर्वा लुनातीत्यर्थः। लुनीहि लुनीहीत्येवेमौ लुनीतः। लुनीहीलुनीहीत्येवेमे लुनन्ति । एवं त्वं लुनासीत्यादीनि सर्वविभक्तीनां सर्वाणि ९० परस्मैपदवचनानि । लुनीष्वलुनीष्वेत्येवायं लुनीते । इमौ लुनाते । इमे लुनते । इत्यादीन्यात्मनेपदवचनानि च ९० अनुप्रयोज्यानि । अनुप्रयोगात्कालवचनभेदोऽभिव्यज्यते । एवं अधीष्वाधीष्वेत्येवायमधीते । इमावधीयाते । इमेऽधीयते इत्यादि यावत् । अधीष्वाधीष्वेत्येवायमध्येष्यामहे । एवं देहिदेहीति ददामि । देहिदेहीत्यदात् । आदत्स्वादत्स्वेत्येवाददीध्वम् । भृशमभीक्ष्णं वा गृह्णीध्वमित्यर्थः॥ इत्यादि ॥ एवं भावकर्मणोरपि । शय्यस्व २ इत्येव शय्यते अशायि शायिष्यते भवता । लूयस्वलूयस्वेत्येव लूयते अलावि लविष्यते केदारः । अधीयस्व २ इत्यधीयते अध्यगायि अध्यगायिष्यते शास्त्रं भवता । हन्यस्व २ इत्येव रिपुर्जघ्ने । अत्यर्थमभीक्ष्णं वा हत इत्यर्थः ॥ तध्वमौ च तद्युष्मदि । लुनीत २ इत्येव यूयं लुनीथ । अधीध्वमधीध्वमित्येव यूयमधीध्वे । हिस्वौ च । लुनीहि लुनीहीति यूयं लुनीथ । अधीष्वाधीष्वेत्येव यूयमधीध्वे । एवं तिष्ठत २ इति स्थेयास्त ।

अधीध्वमधीध्वमित्येव यूयमध्यैढ्वं, अध्यगीढ्वं वा। एवं युष्मदर्थे बहुत्वेऽन्यसर्वविभक्तिष्वप्युदाहार्यम्॥ लुनीहि लुनीहीत्यादौ च भृशाभीक्ष्ण्ये द्विर्वचनम्। इतिशब्दश्च सम्बन्धोपाद्‌गानार्थोऽन्यथाऽसत्त्वभूतार्थवाचिनोराख्यातयोः परस्परेण सम्बन्धो नावगम्यते॥२७॥ "प्रचये नवा सामान्यार्थस्य"।५।४।४३॥ प्रचयः समुच्चयः, स्वतः साधनभेदेन वा भिद्यमानस्य एकत्रानेकस्य धात्वर्थस्याध्यावाप इत्यर्थः, तस्मिन् गम्ये सामान्यार्थस्य धातोः सम्बन्धे सति हिस्वौ तध्वमौ च तद्युष्मदि वा भवतः। व्रीहीन् वप, लुनीहि, पुनीहीत्येव यतते, चेष्टते, समीहते, यत्यते, चेष्ट्यते, समीह्यते। पक्षे, व्रीहीन् वपति, लुनाति, पुनातीत्येव यतते, यत्यते। देवदत्तोऽद्धि, गुरुदत्तोऽद्धि, जिनदत्तोऽद्धीत्येव भुञ्जते, भुज्यते। पक्षे, देवदत्तोऽत्ति, गुरुदत्तोऽत्ति, जिनदत्तोऽत्तीत्येव भुञ्जते, भुज्यते। सूत्रमधीष्व, निर्युक्तिमधीष्व, भाष्यमधीष्वेत्येवाऽधीते, पठति, अधीयते, पठ्यते। पक्षे, सूत्रमधीते, निर्युक्तिमधीते, भाष्यमधीते इत्येवाऽधीते, पठति, अधीयते, पठ्यते। तध्वमौ च तद्युष्मदि, त, व्रीहीन् वपत, लुनीत, पुनीतेत्येव यतध्वे, चेष्टध्वे। हि, व्रीहीन् वप, लुनीहि, पुनीहीत्येव यतध्वे, चेष्टध्वे। पक्षे, व्रीहीन् वप, लुनीथ, पुनीथेत्येव यतध्वे, चेष्टध्वे। ध्वं, सूत्रमधीध्वं, निर्युक्तिमधीध्वं, भाष्यमधीध्वमित्येवाध्वीध्वे, पठथ। स्व, सूत्रमधीष्व, निर्युक्तिमध्वीष्व, भाष्यमधीष्वेत्येवाधीध्वे, पठथ। पक्षे, सूत्रमधीध्वे, निर्युक्तिमधीध्वे, भाष्यमधीध्वे इत्येवाधीध्वे, पठथ। पक्षे, सूत्रमधीध्वे, निर्युक्तिमधीध्वे, भाष्यमधीध्वे इत्येवाधीध्वे, पठथ। एवमन्यविभक्तिष्वपि॥ २८॥ इति पञ्चमी व्याप्तिः॥३॥

अथ ह्यस्तनी॥ "अनद्यतने ह्यस्तनी"।५।२।७॥ आन्याय्यादुत्थानात् आन्याय्याच्च संवेशनादहरुभयतः सार्द्धरात्रं वाऽद्यतनकालः, तस्मिन्नसति भूतेऽर्थे ह्यस्तनी। अकरोत्, अहरत्। अद्य तु, अकार्षीत्॥२९॥ "ख्याते दृश्ये"।५।२।८। लोकविज्ञाते दृश्ये प्रयोक्तुः शक्यदर्शने भूते ऽनद्यतनेऽर्थे ह्यस्तनी। परोक्षापवादः। अरुणत्सिद्धराजोऽवन्तीम्। अख्याते तु, परोक्षा। चकार कटं बटुः। अदृश्येऽपि सा। जघान कंसं किल वासुदेवः। अद्यतने तु, उदगादद्यादित्यः॥३०॥ "हशश्वद्युगान्तःप्रच्छ्ये ह्यस्तनी च"।५।२।१३॥ पञ्चवर्षं युगम्, तस्यान्तर्मध्यं तत्र पृच्छ्यते यः स युगान्तः प्रच्छ्यः;

हशश्वद्योगे युगान्तप्रष्टव्ये च भूतानद्यतने परोक्षेऽर्थे ह्यस्तनी परोक्षा च । इतिह अकरोत् । इतिहशब्दो निपातसमुदायः प्रवादपारंपर्य्ये वर्त्तते । यद्वा । इति एतत्, ह इति वाक्यालङ्कारे । शश्वदकरोत्, चकार वा । प्रच्छ्यें, किमगच्छस्त्वं मथुराम् । किं जगन्थ त्वं मथुराम् ॥३१॥ "अविवक्षिते" ।५।२।१४॥ भूताऽनद्यतने परोक्षे परोक्षत्वेनाविवक्षिते ह्यस्तनी । अभवत्सगरो राजा । अहन् कंसं वासुदेवः ॥३२॥

इति ह्यस्तनी व्याप्तिः ॥ ४ ॥

अथाद्यतनी ॥ "अद्यतनी" ।५।२।४॥ भूतेऽर्थेऽद्यतनी । अकार्षीत् ऋषभो वार्षिकं तपः । अद्य व्यहार्षीत् ॥३३॥ "विशेषाविवक्षाव्यामिश्रे" ।५।२।५॥ अनद्यतनादिविशेषस्याविवक्षायां व्यामिश्रणे च सति भूतेऽर्थे ऽद्यतनी । अगमाम घोषान् । अपाम पयः । अजैषीज्जैत्रोऽयं हूणान् । रामो वनमगमत् । सतोऽप्यत्र विशेषस्याविवक्षा । व्यामिश्रे, अद्य ह्यो वाऽभुक्ष्महि । ततः प्रभृत्यद्य यावद्वयं सुखमेवासिष्महि । विशेषविवक्षायां तु, अगच्छाम घोषान् । अपिबाम पयः । अजयज्जैत्रो हूणान् । रामो वनं जगाम । ह्यस्तन्यादिविषयेऽप्यद्यतन्यर्थं वचनम् ॥३४॥ "रात्रौ वसोऽन्त्ययामास्वप्तर्यद्य" ।५।२।६॥ रात्रौ भूतेऽर्थे वस्धातोर्ह्यस्तन्यपवादोऽद्यतनी, तत्कर्त्ता चेद्रात्रेरन्त्ययामे स्वप्ता न भवति । रात्रावन्त्ययामं यावत् स्वप्ता न भवतीति तु पाणिनीयाः । अद्य अद्यतने चेत्प्रयोगो भवति । रात्रेरन्त्ययामे कंचित्पथिकं कश्चिदाह, क्व भवानुषितः । स आहामुत्रावात्समिति । अन्त्ययामे तु मुहूर्त्तमपि स्वापे ह्यस्तन्येव । अमुत्रावसमिति ॥ ३५ ॥ "माङ्यद्यतनी" ।५।४।३९॥ माङ्युपपदेऽद्यतनी । सर्वविभक्त्यपवादः । मा कार्षीदधर्मम् । मा हार्षीत् परस्वम् । मा दः । मा गमः । अहं मा स्थाम् । कथं मा कुरु, मा कुरुष्व, मा करिष्यासि, मा भवतु, तस्य पापं मा भूयात्, मा भविष्यतीति असाधव एवैते । केचिदाहुः । अङितो माशब्दस्यैते प्रयोगाः । स्वमते ऽप्यङिन्माशब्दस्य प्रयोगोऽस्ति किंतु क्रियायोगे तस्य प्रयोगो नेष्यते अतः केचिदाहुरित्युक्तम् ॥३६॥ "स्मे ह्यस्तनी च" ।५।४।४०॥ स्मसहिते माङ्युपपदे ह्यस्तनी । चकारादद्यतनी च । मास्म करोत् । अत्र माशब्देन निषेध उच्यते स्मशब्देन च स एव द्योत्यते । एवं मास्म कार्षीत् । व्यवधानेऽपि । मा चैत्र स्म हरः परद्रव्यम् । मा चैत्र स्म हार्षीः परद्रव्यम् ॥३७॥ "तौ माङ्याक्रोशेषु" ।५।२।२१॥

माङ्योगे आक्रोशे तौ शत्रानशौ सति स्याताम्, बहुवचनादसत्यपि। तेन ये केचित्सत्यसति वा आक्रोशास्तेषु शत्रानशौ भवतः। मा कुर्वन्, मा कुर्वाणः, मा ददानः, मा पचन् वृषलो ज्ञास्यति। मा पचमानोऽसौ मर्तुकामः॥ तथा च माघः॥ मा जीवन्यः परावज्ञा दुःखदग्धोऽपि जीवति। शत्रानशोरनुवृत्तावपि तौ ग्रहणमवधारणार्थम्। तेनाक्रोशे माङ्योगे ऽद्यतनी न भवतीत्यपि कश्चित्॥ ३८॥

"सम्भावने सिद्धवत्"।५।४।४॥ हेतोः शक्तिः श्रद्धानं सम्भावनं, तस्मिन् विषये ऽसिद्धेऽपि वस्तुनि सिद्धवत्प्रत्यया भवन्ति।

समये चेत्प्रयत्नोऽभूदुदभूवन् विभूतयः।
इषे चेन्माधवोऽवर्षीत् समपत्स्यन्त शालयः॥ १॥
जातश्चायं मुखेन्दुश्चेद् भ्रकुटिप्रणयी ततः।
गतं च वसुदेवस्य कुलं नामावशेषताम्॥ २॥ ३९॥

इत्यद्यतनी व्याप्तिः॥ ५॥

अथ परोक्षा। "परोक्षे"।५।२।१२॥ भूतानद्यतने परोक्षेऽर्थे परोक्षा॥ जघान कंसं कृष्णः। धर्मं दिदेश तीर्थकरः। एवं च परोक्षानद्यतने विवक्षावशात् ह्यस्तन्यद्यतनीपरोक्षास्तिस्रो विभक्तयः सिद्धाः। परोक्षत्वेनानद्यतनत्वेन चाविवक्षिते "विशेषाविवक्ष"-इत्यनेनाद्यतनी। परोक्षत्वेन त्वविवक्षिते "अविवक्षिते" इत्यनेन ह्यस्तनी। उभयसद्भावाविवक्षायां तु "परोक्षे" इत्यनेन परोक्षा॥ तथा च रामायणे॥ न्यक्षिपच्चाङ्गदं तदा। अन्वनैषीत्ततो वाली। सुग्रीवं प्रोचे सद्भावमागतः॥ महाभारते तु॥ सैन्यं समस्तं सोऽयुयुत्सयत्। राक्षसेन्द्रस्ततोऽभैषीत्। स्वयं युयुत्सयांचक्रे॥

॥ तथा॥

अभूवन् तापसाः केचित् पाण्डुपत्रफलाशिनः।
पारिव्रज्यं तदाऽऽदत्त मरीचिश्च तृषार्दितः॥ १॥ ४०॥

"कृतास्मरणातिनिह्नवे परोक्षा"।५।२।११॥ कृतस्यापि व्यापारस्यास्मरणेऽत्यन्तनिह्नवे वा भूते ऽनद्यतनेऽर्थे परोक्षा। अपरोक्षकालार्थ आरम्भः। सुप्तोऽहं किल विललाप। चिन्तयन् किलाहं शिरः कम्पयाम्बभूव। अति-

निह्नवे, कश्चिदाह त्वया कलिङ्गेषु ब्राह्मणो हतः। न कलिङ्गेषु ब्राह्मणमहमहनम्॥ ४१॥ इति परोक्षा व्याप्तिः॥ ६॥

अथाशीः॥ "आशिष्याशीःपञ्चम्यौ" ।५।४।३८॥ शिष्योऽयं सर्वं सिद्धान्तं पठ्यात्, शत्रूणां क्षयं क्रियात्। पुत्रोऽयं विद्यानां पारं यायात्। एते दुष्टा मृषीरन्। लक्ष्मीवानहं भूयासम्॥ उक्तं च॥ श्रुतस्य यायादयमन्तमर्भकस्तथा परेषां युधिचेति पार्थिवः॥ तथा च॥ क्रियादघानां मघवा विघातम्। पञ्चमी॥ एष नन्दतात्। एतौ नन्दताम्॥ एते नन्दन्तु। स श्रियेऽस्तु॥ ४२॥ इत्याशीर्व्याप्तिः॥ ७॥

अथ श्वस्तनी॥ "अनद्यतने श्वस्तनी"।५।३।५॥ न विद्यतेऽद्यतनो यत्र तस्मिन् वर्त्स्यति श्वस्तनी। कर्त्ता, श्वःकर्त्ता। अनद्यतनइति बहुव्रीहितो व्यामिश्रे माभूत्। अद्य श्वो वा गमिष्यति। कथं श्वो गमिष्यति। प्राग्धात्वर्थे भविष्यन्ती पश्चात् श्वःशब्देन योगः॥४३॥ "परिदेवने"।५।३।६॥ परिदेवनमनुशोचनम्, तस्मिन् गम्ये वर्त्स्यति श्वस्तनी। अनद्यतनार्थ आरम्भः। इयं तु कदा गन्ता, यैवं पादौ निदधाति। अयं तु कदाऽध्येता, य एवमनभियुक्तः॥ विशेषविधानात् कदाकर्हियोगलक्षणा विभाषा बाध्यते॥४४॥ "नानद्यतनः प्रबन्धासत्त्योः"।५।४।५॥ प्रबन्धः सातत्यं, आसत्तिः सामीप्यं कालतः, धात्वर्थस्य प्रबन्धे आसत्तौ च गम्यायां नानद्यतनः। न अद्यतनोऽनद्यतनः तद्विहितः प्रत्ययो न स्यादित्यर्थः। भूतानद्यतने ह्यस्तनी, भविष्यदनद्यतने च श्वस्तनी, तयोः प्रतिषेधः। यावज्जीवं भृशमन्नमदात्, ददौ, दत्तवान्। यावज्जीवं भृशमन्नं दास्यति, यावज्जीवं युक्तो ऽध्यापयिष्यति। आसत्तौ, येयं पौर्णमास्यतिक्रान्ता एतस्यां जिनमहः प्रावर्त्तिष्ट, प्रववृते, प्रवृत्तः। येयं पौर्णमास्यागामिनी अस्यां जिनमहः प्रवर्त्तिष्यते। द्वौ प्रतिषेधौ यथाप्राप्तस्याभ्यनुज्ञानाय॥४५॥ "एष्यत्यवधौ देशस्याऽर्वाग्भागे"।५।४।६॥ देशस्यावधावुपपदे देशस्यैवार्वाग्भागे एष्यति नानद्यतनः। एष्यतीति वचनात् श्वस्तन्या एव प्रतिषेधः। योऽयमध्वा गन्तव्य आशत्रुञ्जयात् तस्य यदवरं वलभ्यास्तत्र द्विर्भोक्ष्यामहे॥४६॥ "कालस्यानहोरात्राणाम्"।५।४।७॥ कालस्यावधावुपपदे कालस्यैवार्वाग्भागे एष्यत्यर्थे ऽनद्यतनो न स्यात्, न चेत्सोऽर्वाग्भागोऽहोरात्राणां सम्बन्धी भवति। यत्राहःशब्दो रात्रिशब्दो वा प्रयुज्यते तत्राहोरात्रत्वम्। योऽ-

यमागामी संवत्सरस्तस्य यदवरमाग्रहायण्यास्तत्र जिनपूजां करिष्यामः । अहोरात्रप्रयोगे तु, योऽयं त्रिंशद्रात्रआगामी तस्य योऽवरः पञ्चदशरात्रस्तत्र युक्ता अध्येतास्महे ॥४७॥ "परे वा"।५।४।८॥ कालस्यावधौ कालस्यैव परस्मिन् भागे एष्यति नानद्यतनः स्यात् । आगामिनः संवत्सरस्य आग्रहायण्याः परस्ताद्द्विःसूत्रमध्येष्यामहे, अध्येतास्महे वा । कालादन्यस्य परभागे तु, आशत्रुञ्जयाद्गन्तव्येऽस्मिन्नध्वनि वलभ्याः परस्ताद्द्विरोदनं भोक्तास्महे ॥ ४८ ॥

इति श्वस्तनी व्याप्तिः ॥ ८ ॥

अथ भविष्यन्ती ॥ 'भविष्यन्ती"।५।३।४॥ वत्स्यति भविष्यन्ती । गमिष्यति, स भोक्ष्यते ॥४९॥ क्षिप्राशंसार्थयोर्भविष्यन्ती सप्तमीस्थानेऽभाणि ॥ अथ भूते भविष्यन्ती । "अयदि स्मृत्यर्थे भविष्यन्ती"।५।२।९॥ स्मृत्यर्थे धातावुपपदे भूतेऽर्थे भविष्यन्ती, यच्छब्दश्चेत्क्रियाविशेषणं न प्रयुज्यते । यस्मादर्थे तु भविष्यन्त्येव । स्मरसि भो महापुरुष लघुत्वे बहुमूल्यानि वासांसि परिधास्यामः, अश्वानारोक्ष्यामः, मिष्टान्नं भोजनं भोक्ष्यामहे च। अभिजानासि देवदत्त कश्मीरेषु वत्स्यामः। स्मरसि साधो स्वर्गे स्थास्यामः। एवं बुध्यसे, चेतयसे, अध्येषि, अवगच्छसि चैत्र कलिङ्गेषु गमिष्यामः॥

॥ तथा च माघः ॥

स्मरत्यदो दाशरथिर्भवन् भवानमुं वनान्ताद्वनितापहारिणम् ।
पयोधिमाबद्धचलज्जलाविलं विलङ्घ्य लङ्कां निकषा हनिष्यति ॥१॥

अत्र जघानेत्यस्य स्थाने हनिष्यतीत्युक्तम् ॥ यच्छब्दप्रयोगे तु ह्यस्तनी । अभिजानासि मित्र यत्कलिङ्गेष्ववसाम । यद्वसनं तत्स्मरसीत्यर्थः ॥ ५० ॥ "वा कांक्षायाम्" । ५ । २ । १० ॥ स्मृत्यर्थे धातावुपपदे यद्ययदि वा प्रयुज्यमाने प्रयोक्तुः क्रियान्तराकांक्षायां भूतानद्यतने वा भविष्यन्ती, पक्षे ह्यस्तनी ॥ स्मरसि मित्र काश्मीरेषु वत्स्यामस्तत्रौदनं भोक्ष्यामहे, पास्यामः पयांसि च । स्मरसि मित्र कश्मीरेष्ववसाम, तत्रौदनमभुंज्महि । स्मरसि मित्र यत्कश्मीरेषु वत्स्यामो यत् तत्रौदनं भोक्ष्यामहे । स्मरसि यत्कश्मीरेष्ववसाम। यत्तत्रौदनमभुंज्महि । अत्र वासो लक्षणं, भोजनं पानं च लक्ष्यमिति लक्ष्यलक्षणयोः सम्बन्धे प्रयोक्तुराकांक्षा भवति ॥ ५१ ॥ "शेषे भविष्यन्त्ययदौ" ।

५।४।२०॥ शेषे यच्चयत्राभ्यामन्यस्मिन्नुपपदे चित्रे गम्ये कालस्यानिर्देशात्त्रिषु कालेषु भविष्यन्ती, अयदौ, यदिश्चेन्न प्रयुज्यते । सर्वविभक्त्यपवादः । चित्रमाश्चर्यमद्भुतम्, अन्धो नाम पर्वतमारोक्ष्यति, बधिरो नाम व्याकरणं श्रोष्यति, मूको नाम धर्मं कथयिष्यति । यदि प्रयोगे तु । आश्चर्यं यदि स भुञ्जीत । चित्रं यदि सोऽधीयीत । अत्र श्रद्धाप्यस्ति न केवलं यदिशब्दयोग इति ॥ "जातुयद्यदा"-इत्यनेन सप्तमी ॥ ५२ ॥ "वा हेतुसिद्धौ क्तः" ।५।३।२॥ वर्त्स्यत्यर्थे धात्वर्थस्य हेतुः कारणं, तस्य सिद्धौ सत्यां वा क्तः । किं ब्रवीषि वृष्टो देवः, सम्पन्नास्तर्हि शालयः, संपत्स्यन्ते वा । प्राप्ता नौ,स्तीर्ण्णा तर्हि नदी, तरिष्यते वा ॥५३॥ "किंकिलास्त्यर्थयोर्भविष्यन्ती" ।५।४।१६॥ किंकिलेति शब्देऽस्त्यर्थे चोपपदेऽश्रद्धामर्षयोर्गम्ययोर्भविष्यन्ती । सप्तम्यपवादः । न श्रद्दधे न मर्षयामि, किं किल नाम तत्रभवान् परदारानुपकरिष्यते। "गन्धन"-इति सूत्रेण साहसे आत्मनेपदम् । अस्त्यर्थाः,अस्तिभवतिविद्यतयः। न श्रद्दधे न मर्षयामि, अस्ति नाम, भवति नाम, विद्यते नाम, तत्रभवान् परदारानुपकरिष्यते ॥ ५४ ॥ "धातोः सम्बन्धे प्रत्ययाः" । ५ । ४ । ४१ ॥ धातुशब्देन धात्वर्थउच्यते, धात्वर्थानां सम्बन्धे विशेषणविशेष्यभावे सति अयथाकालमपि कृत्तद्धितादयः प्रत्ययाः साधवो भवन्ति । तत्र स्याद्यन्तो विशेष्यः, कृत्तद्धिताद्यन्तो विशेषणम् । विश्वदृश्वाऽस्य पुत्रो भविता । कृतः कटः श्वो भविता । भाविकृत्यमासीत् । विश्वदृश्वेति भूतकालः प्रत्ययो भवितेति भविष्यत्कालेन प्रत्ययेनाभिसंबध्यमानः साधुर्भवति । एवं कृतः कटः श्वो भवितेति । भाविकृत्यमासीदित्यत्र तु भावीति भविष्यत्कालः प्रत्यय आसीदिति भूतकालेन प्रत्ययेन संबन्ध्यमानः साधुः । एवं तद्धिता अपि । गोमानासीत् । धनवान् भविता ॥ अस्तिविवक्षायां हि मतुरुक्तः स कालान्तरे न स्यादिति । तथा त्याद्यन्तमपि यदा परं त्याद्यन्तं प्रतिविशेषणत्वेनोपादीयते तदा तस्यापि समुदायवाक्यार्थापेक्षया कालान्यत्वं भवत्येव ॥

साटोपमुर्वीमनिशं नदन्तो यैः प्लावयिष्यन्ति समं ततोऽमी ।
तान्येकदेशान्निभृतं पयोधेः सोऽम्भांसि मेघान् पिबतो ददर्श ॥ १ ॥

अत्र प्लावयिष्यन्तीति भविष्यदर्थस्य विशेषणस्य ददर्शेति विशेष्येण सह

संबन्धाद्भूतार्थानुगमः कवेरभिप्रायः। तेन यैः प्लावितवन्त इति गम्यमानोऽर्थः। कृदन्तस्य तु विशेष्यस्यान्यकालभवं त्याद्यन्तं विशेषणं दुष्टमेव ॥ यथा साटोपमित्यत्रैव ददर्शेति स्थाने दृष्टवानिति प्रयोगे प्लावयिष्यन्तीति दुष्टमेव। यतस्त्याद्यन्तं साध्यात् धात्वर्थाद्विधीयमानं प्रधानं। प्रधानं च कथमप्रधानस्य कृतोऽनुयायि स्यात् ॥ ५५ ॥ इतिभविष्यन्ती व्याप्तिः ॥ ९॥

अथ भविष्यति क्रियातिपत्तिः॥ 'सप्तम्यर्थे क्रियातिपत्तौ क्रियातिपत्तिः"।५।४।९॥ सप्तम्या अर्थो निमित्तं हेतुफलकथनादिका सामग्री॥ कुतश्चिद्वैगुण्यात् क्रियाया अतिपतनमनभिनिवृत्तिः क्रियातिपत्तिः, तस्यां सत्यामेष्यत्यर्थे धातोः सप्तम्यर्थे क्रियातिपत्तिः ॥ दक्षिणेन चेदयास्यन्न शकटं पर्याभविष्यत् । यदि कमलकमाह्वास्यन्न शकटं पर्याभविष्यत्। अत्र दक्षिणगमनं कमलकाह्वानं च हेतुः। अपर्याभवनं फलम् । तयोः कुतश्चित्प्रमाणाद्भविष्यन्तीमनभिनिवृत्तिमवगम्यैवं प्रयुङ्क्ते । एवमभोक्ष्यत् भवान् घृतेन यदि मत्समीपमागमिष्यत्। स यदि गुरूनुपासिष्यत् शास्त्रान्तमगमिष्यत् । अत्र "वत्स्यति हेतुफल" इत्यनेन सप्तम्यर्थः ॥ ५६॥ अथ भूते क्रियातिपत्तिः॥ "भूते"।५।४।१०॥ भूतेऽर्थे क्रियातिपत्तौ सत्यां सप्तम्यर्थे क्रियातिपत्तिः। सप्तम्यर्थश्च "विधिनिमन्त्रण"-इत्यादिना प्रागेव भणितोऽस्ति। यद्ययं दानमदास्यत् ततो विश्वेऽपि यशः प्रासरिष्यत्। यदि ग्राममगमिष्यत् तदा चौरा द्रव्यं नाहरिष्यन्। दृष्टो मया भवतः पुत्रोऽन्नार्थी चङ्क्रम्यमाणः अपरश्चातिथ्यर्थी यदि स तेन दृष्टोऽभविष्यत् । उताभोक्ष्यत, अप्यभोक्ष्यत॥ ननु दृष्टोऽन्येन पथा गत इति न भुक्तवान् । अत्र उतापिशब्दौ बाढार्थौ । ननु

पुष्पं प्रवालोपिहितं यदि स्यान् मुक्ताफलं वा स्फुटविद्रुमस्थम् ।
ततोऽनुकुर्याद्विशदस्य तस्य ताम्रौष्ठपर्यस्तरुचः स्मितस्य ॥ १ ॥

तथा। लज्जातिरश्चां यदि चेतसि स्यादसंशयं पर्वतराजपुत्र्याः ॥ इत्यत्र कथं न क्रियातिपत्तिः।सत्यं, क्रियातिपत्तेर्भवने भूतकालो निरीक्ष्यते अत्र तु श्रीकालिदासकविना वर्त्तमानो विवक्षितः । प्राक्तनसूत्रे भविष्यत्काले इह च भूतकाले सप्तम्यर्थे क्रियातिपत्तिराभ्यधायि । वर्त्तमानकाले तु विवक्षिते क्रियातिपत्तिः क्वापि नस्यादिति तात्पर्यम् ॥ ५७ ॥ इति क्रियातिपत्तिव्याप्तिः ॥ १० ॥

अथ बालानामवबोधाय प्राकृतवार्त्ताभिर्विभक्तिविभागो वर्ण्यते ॥ विभक्ति १० ॥ काल ३ ॥ तत्र वर्त्तमानकालिविभक्ति ३, वर्त्तमाना, सप्तमी, पञ्चमी । एउ करइ, लिअइ, दिअइ, जायइ, आवइ, जागइ, सुअइ, ए घणा करइं, लिइं । तूं करँ, लिअँ, दिअँ । तुम्हे करउ, लिअउ, दिअउ । हूं करउं, लिउं, दिउं । अम्हे करउं । इत्यर्थे कर्त्तरि वर्त्तमाना । एष करोति । लाति । ददाति । याति । आपतति । जागर्त्ति । स्वपिति इत्यादि । तथा देवदत्तइं तइं मइं हुईअइ, सुईअइ, बइसीअइ इत्यादि । अकर्मकधातूक्तौ भावे अन्यदर्थीयमात्मनेपदैकवचनम् । देवदत्तेन त्वया मया वा भूयते । शय्यते । आस्यते इत्यादि । कीजइ, लीजइ, दीजइ । कीजइं, लीजइं, दीजइं । तूं कीजं, तुम्हे कीजउ, हूं कीजउं इत्यर्थे कर्मणि वर्त्तमाना । कटः क्रियते, लायते । कटाः क्रियन्ते । त्वं क्रियसे । यूयं क्रियध्वे । अहं क्रिये इत्यादि ॥ तथा स्मयोगेऽतीते वर्त्तमाना ॥ सेहि आवश्यकु पढिउं । शैक्ष आवश्यकं पठतिस्म । पुरायावतोर्यो भविष्यति वर्त्तमानो । देवदत्त वहिलउं जिमि । पाछइ गाम जाइसि । देवदत्त क्षिप्रं भुंक्ष्व, पुरा ग्रामं गच्छसि । कदायं राजभवनं प्रयास्यति, यावन्मित्र भोज्यं भवति । तातो गच्छति । अयं कियन्तं कालमध्येष्यते, यावत्पाणिग्रहणं संपद्यते ॥१॥ वर्त्तमानकाल एव "विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाभीष्टसम्प्रश्नप्रार्थने"।५।४।२८॥ इति वचनात्करेवउं, लेवउं, देवउं तथा करिजो, लेजो, देजो । तूं करिजे, लेजे, देजे । तुम्हे करिजो । हूं अम्हे करिजउं, लेजउं, देजउं । तथा करत, लेअत, देअत इत्यर्थे विध्यादिप्रधानायां उक्तौ कर्त्तरि सप्तमी । श्रावकइं विनउ जिनरहइं करिवउ । जन्मनउं फल लेजउं । देजउं । दानु देवउं । श्राद्धो विनयं जिनस्य कुर्यात् कुर्वीत वा । जन्मनः फलं गृह्णीयात् गृह्णीत वा । दद्यात् ददीत वा दानम् ॥ यदुक्तं योगशास्त्रे । ब्राह्मये मुहूर्त्ते उत्तिष्ठेत् ॥ नाश्नीयात्पिशितं सुधीः ॥ तथा अम्हे भीख जिमवी । जूनउं वस्त्र पहिरवउं । इत्याद्युक्तौ ।

भुञ्जीमहि वयं भैक्षं जीर्णं वासो वसीमहि ।
शयीमहि महीपीठे कुर्वीमहि किमीश्वरैः ॥ १ ॥

गुरि अणुजाणिउ चेलउ व्याकरण पढत । गुरुभिरनुज्ञातः क्षुल्लकोऽपि व्याकरणमधीयीत। त्वमपि सिद्धान्तं वाचयेः । अहमपि अनुयोगं गृह्णीय। एवं लघुरपि वाचनां दद्यात् । सोऽपि तपः कुर्वीत। तूं करिजे, त्वं कुर्याः । हूं करिजउं, अहं कुर्याम् ॥ यदुक्तं ॥ तेन स्यां नाथवांस्तस्मै स्पृहयेयं समाहितः, इत्यादि। कर्मणि, तीणइँ कीजइत, तेन क्रियेत । एवं त्वया क्रियेत, मया क्रियेत इत्यादि। भावे, हुईअत, तेन त्वया मया वा भूयेत॥ २॥ करउ, लिउ, दिउ, हुउ। तूं करि, लइ, दइ, जा, आवि, पढि, गुणि इत्यर्थे अनुमतौ कर्त्तरि पञ्चमी। करोतु, कुरुतां वा । लातु, ददातु, भवतु । त्वं कुरु इत्यादि । कर्मणि तु, कीजउ, लीजउ ॥ क्रियतां, लायतां । तथा आशिषि पञ्चमी । एउ राज्य करउ । अयं राज्यं करोतु। एहना वइरी मरउ। अस्य वैरिणो म्रियन्ताम्। दुःखानि क्षयं यान्तु। जिनः श्रियेऽस्तु ॥ ३॥ अतीतकालिविभाक्तिः ४ । ह्यस्तनी, अद्यतनी, परोक्षा, क्रियातिपत्तिः ॥ अतीतस्त्रिविधः ॥ आजनउ अतीतअद्यतनः १ । कालनउ ह्यस्तनः २ । तेह पहिलउ तत्प्राक्तनः ३। तत्राद्यतने, आजु कीधउं, आजु लीधउं, आजु दीधउं, इत्यर्थे अद्यतनी, अद्याकार्षीत्, अलासीत्, अदासीत्। ह्यस्तने, कालि कीधउं, कालि लीधउं, इत्यर्थे ह्यस्तनी, ह्योऽकरोत्, अलात्। तत्प्राक्तनो द्विधा॥ प्रत्यक्षः १, परोक्षश्च २। प्रत्यक्षे ह्यस्तनी। अयमकरोत्। परोक्षे सामान्यतः परोक्षा। दिदेश धर्मं जिनः। अहं चकर बाल्ये क्रीडाम्। परोक्षेऽपि लोकप्रसिद्धे द्रष्टुं शक्येऽर्थे ह्यस्तन्येव। अभनग् मुद्गलपतिर्योगिनीपुरम्। अरुणत्सिद्धराजोऽवन्तीम्॥ अथवा सामान्यतोऽतीतकाले, आगइ करतउ, आगइ लेतउ, आगइ करता, आगइ लेता, इत्यर्थे कर्त्तरि । आगइ कीधउं, आगइ लीधउं, आगइ दीधउं, इत्यर्थे कर्मणि च ह्यस्तनी, अद्यतनी, परोक्षास्तिस्रोऽपि भवन्ति क्तवत्वादयश्च ॥ तथा हि अतीते कर्त्तरि उक्तौ। लहुड पणि दिहाडी प्रति हूँ बि करस घी जिमतु। एउ पाँच जोअण भूमि चालतउ। तूं दिहाडी प्रति ५० श्लोकव्याख्यानि भणतउ। लघुत्वे दिनं प्रति अहं घृतस्य द्वौ कर्षौ अभुञ्जि, अभुक्षि, बुभुजे, भुक्तवान्, भुक्तो वा । अयं पञ्च योजनानि भूमिमचलत्, अचालीत, चचाल, चलितवान् वा । त्वं दिनम्प्रति ५० श्लोकानभणः, अभाणीः, बभणिथ, भणितवान् वा । आगइ

ए चेला दिहाडी प्रति बि सहस्र सज्झाय गुणता । तुम्हे त्रिन्नि सइं ग्रन्थ लिखता । अह्मे सउ श्लोक पढता । पूर्वमेते क्षुल्ला दिनं प्रति स्वाध्यायस्य द्वे सहस्रे अगुणयन्, अजुगुणन्, गुणयांबभूवुः, गुणितवन्तो वा । यूयं ग्रन्थस्य त्रीणि शतानि अलिखत, अलेखिष्ट, लिलिख, लिखितवन्तो वा । वयं शतं श्लोकान-पठाम, अपठिष्म, पेठिम, पठितवन्तो वा । एउ गामि गिउ । एष ग्राममगच्छत्, अगमत्, जगाम, गतवान् वा । कर्मणि उक्तौ तु, ईणइं धर्मु कीधउं । अनेन धर्मोऽक्रियत, अकारि, चक्रे, कृतो वा । ईणइं पुरुषइं दस ग्राम पाम्यां । अनेन पुरुषेण दश ग्रामाः प्राप्यन्त, प्राप्सत, प्रापिरे, प्राप्ता वा । ईणइं वस्त्र वीक्यां । अनेन वस्त्राणि व्यक्रीयन्त, व्यक्रेषत, विचिक्रियरे वा । एवमन्यत्रापि ज्ञेयम् । तथा स्मरणार्थे धातावुपपदेऽतीतेऽपि भविष्यन्ती । स्मरँ हो सङ्घ साथइ श्रीशत्रुंजइ श्रीगुरु चालिआ । स्मरसि भोः संघेन सह श्रीशत्रुञ्जये श्रीगुरवो विहरिष्यन्ते । जाणँ हो मित्र-अहे दिहाडे आपणि जलकेलि करता । स्मरसि भो मित्र एषु वासरेषु वयं जलक्रीडां विधास्यामः । जाणँ हो आपणि देवपणइ तीणइ विमानि वसता । चेतयसे भो वयं देवत्वे तस्मिन् विमाने वत्स्यामः ॥ तथा मकरे, मकरिजे, मकरिसि, मदिइ, मदेजे, मदेसि । मजा मरहि जिउं । इत्यर्थे माङ्योगेऽद्यतनी । मा कार्षीः । मा दाः । मा गमः । मा स्थामहं । केचित्तु अङिन्माशब्दस्य योगे पञ्चम्याद्यपीच्छन्ति । मा कुरु, मा करिष्यसि, मा कुरुष्वाऽत्र सन्देहमित्यादि ॥ आक्षेपपूर्वमुक्तौ ॥ आक्रोशे गम्ये म कीधु, म लीधु, म दीधु, म जईउ, रखेजीवतउ, रखेजातउ, रखेकरतउ इत्यर्थे माङ्योगे शत्रानशौ । मा कुर्वन्, मा कुर्वाणः । मा ददत्, मा ददानः, इत्यादि ॥ रखे जीवतउ जे परावज्ञाइं छतीइं जीवइ । मा जीवन् यः परावज्ञायामपि सत्यां जीवति ॥ जइ किमइ अमुकं करत, लिअत, दिअत । तउ अमुकं हुयत, इत्यर्थे ऽतीतकाले क्रियातिपतने क्रियातिपत्तिः । यद्यहमकरिष्यं ततः कार्यमभविष्यत् । चेद्ग्राममगमिष्यः तदा भव्यमभविष्यत् । यद्ययं दानमदास्यत्ततः सर्वैः प्रीतिरभविष्यदित्यादि ॥ ४ । ५ । ६ । ७ ॥ भविष्यकालिविभक्तिः ३ । श्वस्तनी, भविष्यन्ती, आशीः ॥ भविष्यंस्त्रिविधः ॥ आजनउ अद्यतनः १, कालनउ श्वस्तनः २, तेहपरहउ तत्परतस्तनश्च ३ । अद्यतने

भविष्यन्ती। अद्य सायं कार्यं भविष्यति। श्वस्तने श्वस्तनी। श्वोभविता। तत्परतस्तने तु करिसिइं, लेसिइं, देसिइं। तूँ करिसिइ, लेसिइ, देसिइ। तुम्हे करिसिउं। हूँ करिसु। अम्हे करिसिउं, इत्यर्थे श्वस्तनी, भविष्यन्ती वा। आश्विन्यां पौर्णमास्यां चन्द्राद‍मृतं स्रोता, स्रोष्यति वा। अथवा सामान्यतो भविष्यत्काले भविष्यन्ती। अयं ग्रामं गामिष्यति ॥ ८। ९ ॥ करिज्यउ, पाढिज्यउ, मरिज्यउ, हुज्यउ इत्यर्थे, आशिषि आशीः, पुत्रोऽयं सङ्घपतीभूय तीर्थयात्रां क्रियात्, पूर्वाणि पठ्यात्, शत्रुर्म्रियात्, भूयाज्जिनः श्रेयसे ॥ १० ॥

इति तपागच्छेशश्रीदेवसुन्दरसूरिशिष्यश्रीगुणरत्नसूरिविरचिते क्रियारत्नसमुच्चये विभक्तिप्रयोगविभागः ॥१॥

भ्वादिगणः ।

भू सत्तायाम्। भू इति निर्विभक्तिको निर्देशः सान्तरान्तशङ्कानिरासार्थः। एवं सर्वत्र। वर्णसमाम्नायक्रमेण स्वरान्तव्यञ्जनान्तधातूपदेशप्रतिज्ञानेऽपि प्रथममस्य पाठो वृद्धसमयानुवर्त्तनार्थं मङ्गलार्थं च। एवमदाद्यादिगणेष्वप्याद्यानां निर्देशे प्रयोजनमभ्यूह्यम्॥ आदौ वर्त्तमाना॥ शेषात्कर्तरि परस्मैपदे शवि गुणे च। भवति, भवतः, भवन्ति, भवसि, भवथः, भवथ, भवामि, भवावः, भवामः। "क्रियाव्यतिहारेऽगति-"।३।३।२३॥ इत्यात्मनेपदे व्यतिभवते। व्यतिभवेते। व्यतिभवन्ते॥ अत्र "स्वरस्य परे-"।७।४।११०॥ इति प्राचः परस्मिन्नपि विधौ कर्त्तव्ये "लुगस्य-"।२।१।११३॥ इत्यल्लुकः स्थानित्वात् "अनतोऽन्त-"।४।२।११४॥ इत्यन्न भवति। व्यतिभवसे, व्यतिभवेथे, व्यतिभवध्वे, व्यतिभवे, व्यतिभवावहे, व्यातिभवामहे। भावे औत्सर्गिकमेकवचनमेव। भूयते, व्यतिभूयते। कर्मणि तु सर्वाण्यपि। केवलस्य कर्माभावादनुपूर्वकोऽयं दर्श्यते॥ अनुभूयते सुखम्, अनुभूयेते, अनुभू७यन्ते, यसे, येथे, यध्वे, ये, यावहे, यामहे। अत्राऽनुभू इति पदं यन्ते इत्यादिषु सप्तसु स्थानेषु योज्यम्। कथम्। अनुभूयन्ते, अनुभूयसे,

अनुभूयेथे इत्यादि । एवमन्यत्रापि पूर्वखण्डं अङ्कतुल्यैरुत्तरखण्डैः संयोज्यम् ॥ सप्तमी ॥ भवेत्, भवेतां, भवेयुः, भवेः, भवेतं, भवेत, भवेयं, भवेव, भवेम। व्यतिभवेत, व्यतिभवे ८ यातां, रन्, थाः, याथां, ध्वं, य, वहि, महि। भावे, भूयेत, व्यतिभूयेत । कर्मणि, अनुभूयेत, अनुभूये ८ यातां, रन्, थाः, याथां, ध्वं, य, वहि, महि ॥ पञ्चमी ॥ भवतु, भवतात्, भवताम्, भवन्तु, भव, भवतात्, भवतं, भवत, भवानि, भवाव, भवाम । व्यतिभवताम्, व्यतिभवेतां, व्यतिभ ७ वन्तां, वस्व, वेथां, वध्वं, वै, वावहै, वामहै । भावे, भूयतां, व्यतिभूयतां । कर्मणि तु । अनुभूयताम्, अनुभूयेताम्, अनुभूयन्ताम्, अनुभू ६ यस्व, येथां, यध्वं, यै, यावहै, यामहै ॥ ह्यस्तनी ॥ अभवत्, अभवताम्, अभवन्, अभवः, अभवतम्, अभवत, अभवं, अभवाव, अभवाम । व्यत्यभवत, व्यत्यभवेताम्, व्यत्यभ ७ वन्त, वथाः, वेथां, वध्वं, वे, वावहि, वामहि । भावे । अभूयत, व्यत्यभूयत ॥ कर्मणि तु ॥ अन्वभूयत, अन्वभू ८ येताम्, यन्त, यथाः, येथां, यध्वं, ये, यावहि, यामहि ॥ ४ ॥ अद्यतनी ॥ "पिबैति-" । ४ । ३ । ६६ ॥ इति सिचोलुपि न चेटि "भवतेः सिज्लुपि" ।४।३।१२॥ इति न गुणे च । अभूत्, अभूताम्, अभूवन् । अत्र "सिज्विदोऽभुव" । ४ । ३ । ९२ ॥ इति अनः पुसादेशाभावे उवि "भुवो व-" । ४ । २ । ४३ ॥ इत्युपान्त्ये ऊत् । अभूः, अभूतम्, अभूत, अभूवं, अभूव, अभूम। व्यत्यभविष्ट, व्यत्यभविषातां, व्यत्यभविषत, व्यत्यभविष्ठाः, व्यत्यभविषाथां, ध्वमि । "सो धि वा" । ४ । ३ । ७२ ॥ इति वा सिचोलुकि व्यत्यभविध्वम् । "हान्तस्थाञ्जी-" । २ । १ । ८१ ॥ इति वा धस्य ढत्वे । व्यत्यभविढ्वम् । सिचोलोपाभावपक्षे "नाम्यन्तस्थ-"।२।३।१५॥ इति सः षत्वे "तृतीस्तृतीय-" । १ । ३ । ४९ ॥ इति डत्वे "तवर्गस्य-" । १ । ३ । ६०॥ इति धो ढत्वे च । व्यत्यभविड्ढ्वं । अन्यत्रापि ध्वमोरूपत्रयं यत्र स्यात्तत्रैवमेव साध्यम् । व्यत्यभविषि, व्यत्यभविष्वहि, व्यत्यभविष्महि ॥ भावे ञिचि ।अभावि। कर्मणि ञिचि। अन्वभावि । "स्वरग्रह-"।३।४।६९॥ इति वा ञिटि । अन्वभाविषाताम् । पक्षे इटि । अन्वभविषातां, अन्वभाविषत, अन्वभविषत, अन्वभाविष्ठाः, अन्वभविष्ठाः, अन्वभाविषाथां, अन्वभविषाथां, अन्वभाविध्वं, अन्वभाविढ्वं, अन्वभाविड्ढ्वं,

अन्वभाविध्वम्, अन्वभविढ्वं, अन्वभविड्ढ्वम्, अन्वभाविषि, अन्वभविषि, अन्वभाविष्वहि, अन्वभविष्वहि, अन्वभाविष्महि, अन्वभाविष्महि ॥ परोक्षा ॥ बभूव, द्वित्वे वृद्धौ आवि "भुवो व-"।४।२।४३॥ इत्युपान्त्य ऊति "भूस्वपो-"।४।१।७०॥ इति पूर्वस्य अः सर्वत्र। बभूवतुः, बभूवुः। "स्क्रसृवृ-"।४।४।८१॥ इति व्यञ्जने इटि बभूविथ, बभूवथुः, बभूव, णवो वा णित्वे आवि अवि च कृते उपान्त्य ऊति एकमेव रूपम्। बभूव, बभूविव, बभूविम। व्यतिबभूवे, व्यतिबभूवाते, व्यतिबभू८विरे, विषे, वाथे, विध्वे, विढ्वे, वे, विवहे, विमहे॥ भावे॥ बभूवे ॥ कर्मणि ॥ अनुबभूवे। अनुबभू९वाते, विरे, विषे, वाथे, विध्वे, विड्ढ्वे, वे, विवहे, विमहे, केचित्तु कर्त्तर्येव भुवो द्वित्वे पूर्वस्याकारमिच्छन्ति, न भावकर्मणोः, तन्मते बुभूवे, अनुबुभूवे इत्याद्येव भवति॥ आशीः ॥ भूयात्, भूयास्तां, भूयासुः, भूयाः, भूयास्तं, भूयास्त, भूयासं, भूयास्व, भूयास्म। व्यतिभविषीष्ट, व्यतिभवि९षीयास्तां, षीरन्, षीष्ठाः, षीयास्थां, षीध्वम्, षीड्ढ्वम्, षीय, षीवहि, षीमहि ॥ भावे वा ञिटि भाविषीष्ट, भविषीष्ट, कर्मणि ञिटि अनुभावि१०षीष्ट, षीयास्ताम्, षीरन्, षीष्ठाः, षीयास्थाम्, षीध्वम्, षीढ्वम्, षीय, षीवहि, षीमहि ॥ इटि तु अनुभवि१०षीष्ट, षीयास्ताम्, षीरन्, षीष्ठाः, षीयास्थाम्, षीध्वम्, षीढ्वम्, षीय, षीवहि, षीमहि॥ श्वस्तनी॥ भविता, भवितारौ, भवितारः, भवितासि, भवितास्थः, भवितास्थ, भवितास्मि, भवितास्वः, भवितास्मः। व्यतिभविता, व्यतिभवि८तारौ, तारः, तासे, तासाथे, ताध्वे, ताहे, तास्वहे, तास्महे। ॥ भावे ॥ भविता, भाविता। कर्मणि इटि अनुभवि९ता, तारौ, तारः, तासे, तासाथे, ताध्वे, ताहे, तास्वहे, तास्महे। ञिटि अनुभावि९ता, तारौ, तारः, तासे, तासाथे, ताध्वे, ताहे, तास्वहे, तास्महे॥ भविष्यन्ती॥ भविष्यति, भविष्यतः, भविष्यन्ति, भविष्यसि, भविष्यथः, भविष्यथ, भविष्यामि, भविष्यावः, भविष्यामः। व्यतिभविष्यते, व्यतिभवि८ष्येते, ष्यन्ते, ष्यसे, ष्येथे, ष्यध्वे, ष्ये, ष्यावहे, ष्यामहे॥ भावे॥ भविष्यते, भाविष्यते। कर्मणि इटि अनुभविष्यते, अनुभवि८ष्येते, ष्यन्ते, ष्यसे, ष्येथे, ष्यध्वे, ष्ये, ष्यावहे, ष्यामहे। ञिटि तु अनुभावि९ष्यते, ष्येते, ष्यन्ते, ष्यसे, ष्येथे, ष्यध्वे, ष्ये, ष्यावहे, ष्यामहे॥

क्रियातिपत्तिः ॥ अभविष्यत्, अभविष्यताम्, अभविष्यन्, अभविष्यः, अभविष्यतम्, अभविष्यत, अभविष्यम्, अभविष्याव, अभविष्याम । व्यत्यभविष्यत, व्यत्यभवि८ष्येताम्, ष्यन्त, ष्यथाः, ष्येथाम्, ष्यध्वम्, ष्ये, ष्यावहि, ष्यामहि ॥ भावे ॥ अभविष्यत, अभाविष्यत ॥ कर्मणि ॥ अन्वभाविष्यत, अन्वभविष्येताम्, अन्वभवि७ष्यन्त, ष्यथाः, ष्येथाम्, ष्यध्वं, ष्ये, ष्यावहि, ष्यामहि । अन्वभावि९ष्यत, ष्येताम्, ष्यन्त, ष्यथाः, ष्येथाम्, ष्यध्वम्, ष्ये, ष्यावहि, ष्यामहि ॥१०॥ एवं प्राद्युपसर्गपूर्वकोऽपि भूः सर्वविभक्तिषूदाहार्य्यः ॥ तत्र, प्रभवतीति स्वाम्यर्थः प्रथमत उपलम्भश्च । पराभवति, परिभवति, अभिभवतीति तिरस्कारः । पर्याभवतीति स्वयंभङ्गः । सम्भवतीति जन्यार्थः प्रमाणानतिरेकेण धारणं च । अनुभवतीति संवेदनम् । विभवतीति व्याप्तिः । आभवतीति भागागतिः । उद्भवतीत्युद्भेदः । प्रतिभवतीति लग्नकत्वमिति । एवमुपसर्गवशाद् यथास्वमन्यस्यापि धातोरनेकोऽर्थः प्रकाशते इति ज्ञानीयम् ॥ अत्र कर्त्तरि शवप्रत्ययान्तो भावकर्मणोः क्यप्रत्ययान्तश्च भूधातुर्यथा वर्त्तमानादिविभक्तिचतुष्टये न्यदार्शी, तथैवान्येऽपि शवन्ताः क्यप्रत्ययान्ताश्च सर्वे धातव-उदाहरणीयाः, अतएवाग्रे तेषां शवक्यान्तानां रूपमात्रमेव दर्शयिष्यते नतु विभक्तिचतुष्टयवचनविस्तरः, तथा सर्वस्मात्सकर्मकाद्धातोः "एकधातौ-"॥३।४।८६॥ इति सूत्रेण ञिक्यात्मनेपदविधानात् वर्त्तमानादिदशविभक्तिषु कर्मण्युक्तानि सर्वाणि वचनानि कर्मकर्त्तर्य्यपि भवन्ति यथाऽत्रैव । अभिभवति शत्रुश्चैत्रः । पुनः शत्रोः सुजेयत्वेन कर्तृत्वे अभिभूयते; अभिभूयेत; अभिभूयताम्; अभ्यभूयत; "स्वरदुहो वा"॥३।४।९०॥ इति वा ञिचि अभ्यभावि; पक्षे इटि अभ्यभविष्ट; अभिबभूवे । इटि अभिभविता । ञिटि अभिभाविता; अभिभविषीष्ट, अभिभाविषीष्ट । अभिभविष्यते, अभिभाविष्यते, वा शत्रुः स्वयमेव । क्रियातिपत्तिरल्पविषयत्वान्नादर्शी ॥ एवं विभक्तीनां कर्मगतानि द्वित्वबहुत्वविषयाण्यपि वचनानि कर्मकर्त्तरि दर्शनीयानि; एवं सकर्मस्वन्यधातुष्वपि; विशेषस्तु स्वस्वस्थाने वक्ष्यते ॥ अथ प्रत्ययाः ॥ भवन् । व्यतिभवमानः । "श्यशवः"॥२।१।११६॥ इति अन्ति, भवन्ती; भवत्; भाविष्यन् । भविष्यन्ती । भविष्यती । अत्र "अवर्णादश्न-"।२।१।११५। इति वा अन्त् ।

एवं नवस्वप्यादिषु सर्वधातुषु स्त्रियां स्ये प्रत्यये सति शतुर्वाऽन्त् वाच्यः भाविष्यत्॥ अनुभूयमानम्। "न ख्याग्"।२।३।९०॥ इति णत्वाभावे प्रभूयमानम्। एवं परिपरा-पूर्वोऽपि । इटि अनुभविष्यमाणम्। ञिटि अनुभाविष्यमाणम् । अनुबभूवानम् । बभूवान्, बभूवांसौ । शसि बभूवुषः। टायां बभूवुषा। भ्यामि "स्रंस्ध्वंस्-"।२।१।६८। इति द्ले बभूवद्भ्याम्। सुपि बभूवत्सु। स्त्रियां तु बभूवुषी। नपुंसके बभूवत्, बभू-वुषी, बभूवांसि ॥ भूतः; भूतवान् । अत्र किति "उवर्णात्"।४।४।५८। इति नेट् ॥ भावे तु अनुभूतमनेन। एवमन्यत्रापि भावे क्तः परिभाव्यः॥ भूतिः; भूत्वा; अनु-भूय । "स्वाङ्गतश्च्व्यर्थनानाविनाधार्थेन भुवश्च" ॥५।४।८६॥ इति भुवः कृगश्च क्त्वाणमौ ॥ पार्श्वतोभूय, पार्श्वतोभूत्वा, पार्श्वतोभावमास्ते । "तृतीयोक्तं वा" ॥३।१।५०॥ इति तत्पुरुषविकल्पनात् पक्षे क्त्वो यप्नभवति । एवं पार्श्वतः कृत्य, पार्श्वतः कृत्वा, पार्श्वतःकारं शेते । अनाना नानाभूत्वा नानाभूय, नानाभूत्वा, नानाभावम् । विनाभूय, विनाभूत्वा, विनाभावम् । द्विधाभूय, द्विधाभूत्वा, द्विधाभावमास्ते। "तूष्णीमा"।५।४।८७॥ तूष्णींभूय, तूष्णींभूत्वा, तूष्णींभावमास्ते । तूष्णींशब्दो मौने तद्वति च वर्त्तते ॥ "आनुलोम्येऽन्वचा"॥ ५। ४। ८८ ॥ अन्व-ग्भूय, अन्वग्भूत्वा, अन्वग्भावमास्ते । भविता; भवितुं; भवितव्यं; भव-नीयं। भावे ये भव्यमनेन । आवश्यके घ्यणि भाव्यम्। अवश्यभाव्यमनेन "कृत्येऽवश्यम-"।३।२।१३८॥ इति मो लुक्। "भुवो वा" (उणादि-९२२) इति णिनि भावी । णित्वाभावे भवी वर्त्स्यति साधू ॥ "कृभ्वस्तिभ्यां कर्मकर्तृभ्यां प्रागतत्तत्त्वे च्विः" ॥ ७। २। १२६ ॥ इति कृगा योगे कर्मतश्च्विः। भ्वस्तिना च कर्तृतः। अशुक्लं शुक्लं करोति शुक्लीकरोति पटम् । शुक्लीक्रियते पटः। शुक्ल्यकार्षीत् । शुक्लीचकार । शुक्लीचक्रे । शुक्लीकरिष्यति। शुक्लीकृत्येत्यादि । अशुक्लः शुक्लः सम्पद्यते शुक्लीभवति। शुक्लीभूयते । शुक्ल्यभवत्। शुक्ल्य-भूत् । शुक्लीबभूव । शुक्लीभविता । शुक्लीभविष्यति । क्त्वि शुक्लीभूयेत्यादि । एवं शुक्लीस्यात्; शुक्ल्यभूदित्यादि। एवं कारकीकरोति चैत्रम्, कारकीभवति, कारकीस्याच्चैत्रः । सङ्घीकरोति गाः, सङ्घीभवन्ति, सङ्घीस्युर्गावः। घटीकरोति मृदं, घटीभवति, घटीस्यान्मृत् । "नोऽपदस्य-"॥७।४।६१॥ इति नलुकि, मसी-

करोति, भस्मीभवति, भस्मीस्यात् । मालीकरोति, मालीभवति, मालीस्यात् । एषु "ईश्च्वाववर्ण-"।४।३।१११॥ इति ईः, अव्ययस्य तु न ईः । दिवाभूता रात्रिः । दोषाभूतमहः । शुचीकरोति, शुचीभवति, शुचीस्यात् । पटूकरोति, पटूभवति, पटूस्यात् । बहूकरोति, बहूभवति, बहूस्यात् । एषु "दीर्घश्च्वि-" ॥ ४ । ३ । १०८ ॥ इति दीर्घः । पित्रीकरोति, पित्रीभवति, पित्रीस्यात् । मात्रीकरोति, मात्रीभवति, मात्रीस्यात् । एषु "ऋतो रीः" ॥ ४ । ३ । १०९ ॥ इति रीः । कर्मकर्तृभ्यामन्यत्र तु न च्विः । प्रागगृहे इदानीं गृहे करोति भवति वा । कथं समीपीभवति दूरीभवति अभ्याशीभवति, अत्राप्युपचारात्तत्स्थे द्रव्ये वर्त्तमानात्समीपादीनां कर्तृत्वम् । अनरुः अरुःकरोति अरूकरोति, अरूभवति, अरूस्यात् । मनीकरोति, मनीभवति, मनीस्यात् । एवमुन्मनः सुमनः शब्दावपि । मा उन्मनीभूः । चक्षूकरोति, चक्षूभवति, चक्षूस्यात् । चेतीकरोति, चेतीभवति, चेतीस्यात् । विचेतीकरोति, विचेतीभवति, विचेतीस्यात् । रहीकरोति, रहीभवति, रहीस्यात् । रजीकरोति, रजीभवति, रजीस्यात् । विरजीकरोति, विरजीभवति, विरजीस्यात् । एषु, "अरुर्मनश्चक्षुश्चेतोरहोरजसां लुक्च्वौ" ॥७।२।१२७॥ इति सोलुक् । "इसुसोर्बहुलम्"॥७।२।१२८॥ इति सोलुकि, सर्पीकरोति नवनीतम्, सर्पिर्भवति, धनूभवति वंशः, धनुर्भवति । बहुलग्रहणं प्रयोगानुसरणार्थम्॥ बहुलं व्यञ्जनान्तस्य ईः । दृषदीभवति शिला, दृषद्भवति । समिधीभवति काष्ठम्, समिद्भवति । अत्र भूप्रसङ्गेन कृग् अस्तिश्च लाघवार्थमवक्षाताम्॥ "भूङः प्राप्तौ-" ।३।४।१९॥ इति वा णिङि भावयते प्राप्नोतीत्यर्थः । पक्षे भवते, एवं भावयेते; भवेते, भावयन्ते; भवन्ते । भावयसे; भवसे०॥ भावे ॥ भाव्यते; भूयते ॥ कर्मणि ॥ भाव्यते; भूयते । भाव्येते; भूयेते । भाव्यन्ते; भूयन्ते । इत्यादिना सर्वविभक्तिषु द्वे द्वे रूपे वाच्ये । नवरं णिङन्तो वक्ष्यमाणणिगन्तभूवत् आत्मनेपदे वाच्यः । केवलस्तु व्यतिपूर्वकभूवत् । भूङ् इति ङ्निर्देशो णिङभावेऽप्यात्मनेपदार्थः । प्राप्त्यभावेऽपि क्वचिदात्मनेपदमिष्यते ॥ यथा ॥ याचितारश्च नः सन्तु दातारश्च भवामहे । आक्रोष्टारश्च नः सन्तु क्षन्तारश्च भवामहे इति ॥ प्राप्तावपि परस्मैपदमित्यन्ये । सर्वं भवति, प्राप्नोतीत्यर्थः ॥ अथ सन् ॥ वर्त्तमाना ॥ भवितु-

मिच्छति बुभूषति। अत्र "ग्रहगुहश्च-"।४।४।५९॥ इति उवर्णान्तान्नेट् । "नामिनोऽनिट्"४।३।३३।इति सन् कित्, तेन न गुणः। बुभूषतः, बुभूषन्ति, बुभूषसि, बुभूषथः, बुभूषथ, बुभूषामि, बुभूषावः, बुभूषामः। व्यतिबुभूषते,व्यतिबुभूषेते, व्यतिबुभूषन्ते, व्यतिबुभू६षसे, षेथे, षध्वे, षे, षावहे, षामहे ॥ भावे बुभूष्यते । कर्मणि तु अनुबुभूष्यते, अनुबुभूष्येते, अनुबुभूष्यन्ते, अनुबुभू६ष्यसे, ष्येथे, ष्यध्वे, ष्ये, ष्यावहे, ष्यामहे ॥ सप्तमी ॥ बुभूषेत् , बुभू८षेताम्, षेयुः, षेः, षेतम्, षेत, षेयम्, षेव, षेम ॥ व्यतिबुभूषेत, व्यतिबुभू८षेयाताम्, षेरन्, षेथाः, षेयाथाम्, षेध्वम्, षेय, षेवहि, षेमहि ॥ भावे बुभूष्येत ॥ कर्मणि तु अनुबुभूष्येत, अनुबुभू८ष्येयाताम्, ष्येरन्, ष्येथाः, ष्येयाथाम्, ष्येध्वम्, ष्येय, ष्येवहि, ष्येमहि ॥ पञ्चमी ॥ बुभूषतु, बुभूषतात्, बुभूषताम्, बुभू८षन्तु, ष, षतात्, षतम्, षत, षाणि, षाव, षाम। व्यतिबुभूषताम्, व्यतिबुभू८षेताम्, षन्ताम्, षस्व, षेथाम्, षध्वम्, षै, षावहै, षामहै ॥ भावे बुभूष्यताम् । कर्मणि अनुबुभूष्यताम्, अनुबुभू८ ष्येताम्, ष्यन्ताम्, ष्यस्व, ष्येथाम्, ष्यध्वम्, ष्यै, ष्यावहै, ष्यामहै॥ ह्यस्तनी ॥ अबुभूषत्, अबुभू८ षताम्, षन्, षः, षतम्, षत, षम्, षाव, षाम । व्यत्यबुभूषत, व्यत्यबुभू८षेताम्, षन्त, षथाः, षेथाम्, षध्वम्, षे, षावहि, षामहि॥ भावे अबुभूष्यत ॥ कर्मणि अन्वबुभूष्यत, अन्वबुभू८ष्येताम्, ष्यन्त, ष्यथाः, ष्येथाम्, ष्यध्वम्, ष्ये, ष्यावहि, ष्यामहि ॥ अद्यतनी ॥ अबुभूषीत्, इटि ईति सिचोलुक् । अबुभू८षिष्टाम्, षिषुः, षीः, षिष्टम्, षिष्ट, षिषम्, षिष्व, षिष्म। व्यत्यबुभूषिष्ट, व्यत्यबुभूषि४षाताम्, षत, ष्ठाः, षाथाम्, "सो धि वा"॥४।३।७२॥ इति वा सिच्लुकि, व्यत्यबुभूषिध्वम्, पक्षे सिचो "नाम्यन्त-"॥२।३।१५॥ इति षत्वे डत्वे "तवर्ग-"॥ १ ।३।६०॥ इति धो ढे व्यत्यबुभूषिड्ढ्वम्, व्यत्यबुभूषि३षि, ष्वहि, ष्महि । सर्वत्र इटि, "अतः"॥४।३।८२॥ इति सनोऽल्लुक् ॥ भावे अबुभूषि ॥ कर्मणि अन्वबुभूषि, इटि ञिटि वा सद्दशारूपले, अन्वबुभूषि९षाताम्, षत, ष्ठाः, षाथाम्, ध्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि॥ परोक्षा॥ बुभूषांचकार, बुभूषां ९ चक्रतुः, चक्रुः, चकर्थ, चक्रथुः, चक्र, चकर, चकार, चकृव, चकृम। व्यतिबुभूषांचक्रे, व्यतिबुभूषांचक्राते, चक्रिरे, चकृषे, चक्राथे, चकृढ्वे, "नाम्यन्त-"

॥२।१।८०॥ इति ढः । चक्रे, चकृवहे, चकृमहे॥ बुभूषांबभूव, बुभूषांबभू८वतुः, वुः, विथ, वथुः, व, व, विव, विम । व्यतिबुभूषांबभूव, व्यतिबुभूषांबभू८वतुः, वुः, विथ, वथुः, व, व, विव, विम ॥ बुभूषामास, बुभूषामा८सतुः, सुः, सिथ, सथुः, स, स, सिव, सिम। "धातोरनेकस्वर-"॥३।४।४६॥ इत्यत्राऽस्तेर्विधानबलादेवास्तेर्भूर्न भवति । एवमन्यत्रापि । व्यतिबुभूषामास, व्यतिबुभूषामासतुः, व्यतिबुभूषामा-७सुः, सिथ, सथुः, स, स, सिव, सिम । अत्र व्यतिबुभूषांबभूवेत्यादौ, व्यति-बुभूषामासेत्यादौ च, सन्नन्तधातोरात्मनेपदेऽपि भ्वस्तिधात्वोर्यत् परस्मैपदमभ्य-धायि तदा "आमः कृगः" ॥ ३ । ३ । ७५ ॥ इत्यत्र कर्त्तरि कृग एव धातुसदृशं पदं, भ्वस्त्योस्तु परस्मैपदमेवेति भणनात् ॥ भावे बुभूषांचक्रे । बुभूषांबभूवे । बुभूषामाहे । परोक्षाया एकारे हकारं नेच्छन्त्येके । बुभूषामासे । एवमग्रेऽपि परमतं सर्वत्र । कर्मणि अनुबुभूषांचक्रे, अनुबुभूषांच८क्राते, क्रिरे, कृषे, क्राथे, कृढ्वे, क्रे, कृवहे, कृमहे। अनुबुभूषांबभूवे, अनुबुभूषांबभू९वाते, विरे, विषे, वाथे, विढ्वे, विध्वे, वे, विवहे, विमहे । अनुबुभूषामाहे । अनुबुभूषामा८साते, सिरे, सिषे, साथे, सिध्वे, हे, सिवहे, सिमहे ॥ आशीः ॥ बुभूष्यात्, बुभू८ ष्यास्ताम्, ष्यासुः, ष्याः, ष्यास्तम्, ष्यास्त, ष्यासम्, ष्यास्व, ष्यास्म। व्यतिबुभूषि-षीष्ट । व्यतिबुभूषि८षीयास्ताम्, षीरन्, षीष्ठाः, षीयास्थाम्, षीध्वम्, षीय,-षीवहि, षीमहि ॥ भावे बुभूषिषीष्ट॥ कर्मणि अनुबुभूषिषीष्ट, अनुबुभूषि८षीयास्तां, इत्यादि कर्तृवत् ॥ श्वस्तनी ॥ बुभूषिता, बुभूषि८तारौ, तारः, तासि, तास्थः, तास्थ, तास्मि, तास्वः, तास्मः । व्यतिबुभूषिता, व्यतिबुभूषि८तारौ, तारः, तासे, तासाथे, ताध्वे, ताहे, तास्वहे, तास्महे॥ भावे बुभूषिता ॥ कर्मणि अनुबुभूषिता, अनुबुभूषि८तारौ, तारः, तासे, तासाथे, ताध्वे, ताहे, तास्वहे, तास्महे ॥ भविष्यन्ती॥ बुभूषिष्यति, बुभूषि ८ ष्यतः, ष्यन्ति, ष्यसि, ष्यथः, ष्यथ, ष्यामि, ष्यावः, ष्यामः ॥ व्यतिबुभूषिष्यते, व्यतिबुभूषि ८ ष्येते, ष्यन्ते, ष्यसे, ष्येथे, ष्यध्वे, ष्ये, ष्यावहे, ष्यामहे ॥ भावे बुभूषिष्यते ॥ कर्मणि अनुबुभूषिष्यते, अनुबुभूषि८ ष्येते, ष्यन्ते, ष्यसे, ष्येथे, ष्यध्वे, ष्ये, ष्यावहे, ष्यामहे ॥ क्रियातिपत्तिः ॥ अबुभूषिष्यत्, अबुभूषि८ष्यताम्, ष्यन्, ष्यः, ष्यतम्, ष्यत, ष्यम्, ष्याव, ष्याम,

व्यत्यबुभूषिष्यत, व्यत्यबुभूषि८ष्येतां, ष्यन्त, ष्यथाः, ष्येथाम्, ष्यध्वम्, ष्ये, ष्यावहि, ष्यामहि ॥ भावे अबुभूषिष्यत ॥ कर्मणि अन्वबुभूषिष्यत, अन्वबुभूषि८ष्येताम्, ष्यन्त, ष्यथाः, ष्येथाम्, ष्यध्वम्, ष्ये, ष्यावहि, ष्यामहि ॥ कर्मकर्त्तरि सर्वस्मात्सन्नन्ताद्धातोः "एकधातौ कर्म-"॥३।४।८६॥ इति ञिक्यात्मनेपदेषु प्राप्तेषु "भूषार्थसन्-"॥३।४।९३॥ इति ञिक्यानिषेधात् केवलमात्मनेपदमेव भवति। अनुबुभूषति विषयसुखं चैत्रः। स एवं विवक्षिते, नाहमनुबुभूषामि। किंतु अनुबुभूषते, अनुबुभूषेत, अनुबुभूषताम्, अन्वबुभूषत, अन्वबुभूषिष्ट, अनुबुभूषांचक्रे, अनुबुभूषांबभूवे, अनुबुभूषामाहे, अनुबुभूषिषीष्ट, अनुबुभूषिता, अनुबुभूषिष्यते, वा विषयसुखं स्वयमेव। एवमात्मनेपदीयानि द्विवचनादीन्यपि कर्मकर्त्तर्युदाहार्याणि ॥ बुभूषन्। बुभूषिष्यन्। व्यतिबुभूषमाणः, व्यातिबुभूषिष्यमाणः । अनुबुभूष्यमाणम्, अनुबुभूषिष्यमाणम् । बुभूषां३चकृवान्, बभूवान्, आसिवान् वा। व्यतिबुभूषां३चक्राणः, बभूवान्, आसिवान् वा । भावकर्मणोः । अनुबुभूषां३चक्राणम्, बभूवानम्, आसानं वा। बुभूषि२तः, वान् । बुभूषित्वा। अनुबुभूष्य। अनुबुभूषि२ता, तुम् । सेटामनिटां वा स्वरान्तानां व्यञ्जनान्तानां च सर्वेषां धातूनां सनि यानि रूपाणि भवेयुस्तानि सर्वविभक्त्यादिषु सन्नन्तभूवज्ज्ञातव्यानि । अतएवाग्रे सनि धातूना रूपमात्रं प्रकटयिष्यते न पुनर्विभक्तिविस्तरः। परं स्वरादिसन्नन्तधातूनां ह्यस्तन्यद्यतनीक्रियातिपत्तिषु वृद्धिरादौ वाच्या ॥ यथा; ईक्षि, ऐचिक्षिषत। ऐचिक्षिषिष्ट। ऐचिक्षिषिष्यत। एवमन्यत्रापि ॥ अथ यङ् । "व्यञ्जनादेरेकस्वर-"॥३।४।९॥ इति वा याङि बोभूयते, पक्षे भृशं पुनः २ वा भवतीति वाक्यम् । भव भवेत्येवायं भवतीत्यादिकं वा स्यात्। एवमग्रतोऽपि सर्वत्र ज्ञेयम् । बोभूयेते, बोभूयन्ते, बोभूयसे, बोभू५येथे, यध्वे, ये, यावहे, यामहे ॥ भाक ॥ अत्र ग्रन्थे भावकर्मणोर्भाकेति संज्ञा ॥ अनुबोभूय्यते "अतः"॥४।३।८२॥ इति यङोऽल्लुक्। अनुबोभूय्येते, अनुबोभूय्यन्ते, य्यसे, य्येथे, य्यध्वे, य्ये, य्यावहे, य्यामहे ॥ सप्तमी ॥ बोभूयेत, बोभू८येयाताम् । येरन्, येथाः, येयाथाम्, येध्वम्, येय, येवहि, येमहि ॥ भाक ॥ अनुबोभूय्येत । अनुबोभू८य्येयाताम्, य्येरन्, य्येथाः, य्येयाथाम्, य्येध्वम्, य्येय, य्येवहि, य्येमहि ॥ पञ्चमी ॥ बोभूयताम्, बोभू८येताम्, यन्ताम्,

यस्व, येथाम्, यध्वम्, यै, यावहै, यामहै ॥ भाक ॥ अनुबोभूय्यताम्, अनु-बोभू८य्येताम्, य्यन्ताम्, य्यस्व, य्येथाम्, य्यध्वम्, य्यै, य्यावहै, य्यामहै ॥ ह्यस्तनी ॥ अबोभूयत, अबोभू८येताम्, यन्त, यथाः, येथाम्, यध्वम्, ये, यावहि, यामहि ॥ भाक ॥ अन्वबोभूय्यत, अन्वबोभू८य्येताम्, य्यन्त, य्यथाः, य्येथाम्, य्यध्वम्, य्ये, य्यावहि, य्यामहि ॥ अद्यतनी ॥ सिचि इटि च परे यङोऽल्लोपः सर्वत्र ॥ अबोभूयिष्ट, अबोभूयिषाताम्, अबोभूयिषत, अबोभूयि८ष्ठाः, षाथाम्, ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि ॥ भाक ॥ ञिचि अन्व-बोभूयि, अन्वबोभूयिषाताम्, अन्वबोभूयि९षत, ष्ठाः, षाथाम्, ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि ॥ परोक्षा ॥ बोभूयांचक्रे, बोभूयांच८क्राते, क्रिरे, कृषे, क्राथे, कृढ्वे, क्रे, कृवहे, कृमहे ॥ बोभूयांबभूव, बोभूयांबभू८वतुः, वुः, विथ, वथुः व, व, विव, विम । बोभूयामास, बोभूयामा८सतुः, सुः, सिथ, सथुः, स, स, सिव, सिम । बोभूयांचक्रे इत्यादौ "आमः कृगः" ॥३।३।७५॥ इति नियमादामः परात् कृग एव कर्त्तर्यात्मनेपदं न भ्वस्तिभ्याम् ॥ भावे बोभूयांचक्रे, बोभूयांबभूवे, बोभूयामाहे । कर्मणि अनुबोभूयांचक्रे, अनुबोभूयांच८क्राते, क्रिरे, कृषे, क्राथे, कृढ्वे, क्रे, कृवहे, कृमहे ॥ अनुबोभूयांबभूवे, अनुबोभूयांबभू९वाते, विरे, विषे, वाथे, विढ्वे, विध्वे, वे, विवहे, विमहे ॥ अनुबोभूयामाहे, अनुबोभूयामा८साते, सिरे, सिषे, साथे, सिध्वे, हे, सिवहे, सिमहे ॥ आशीः ॥ बोभूयिषीष्ट, बोभूयि९षीयास्ताम्, षीरन्, षीष्ठाः, षीयास्थाम्, षीढ्वम्, षीध्वम्, षीय, षीवहि, षीमहि ॥ भाक ॥ अनुबोभूयिषीष्ट, अनुबोभूयिषीयास्तामित्यादि ॥ एतत्कर्तृवत् ॥ श्वस्तनी ॥ बोभूयिता, बोभूयि८तारौ, तारः, तासे, तासाथे, ताध्वे, ताहे, तास्वहे, तास्महे ॥ भाक ॥ अनुबोभूयिता, अनुबोभूयि८तारौ, तारः, तासे, तासाथे, ताध्वे, ताहे, तास्वहे, तास्महे ॥ भविष्यन्ती ॥ बोभूयिष्यते, बोभूयि८ष्येते, ष्यन्ते, ष्यसे, ष्येथे, ष्यध्वे, ष्ये, ष्यावहे, ष्यामहे ॥ भाक ॥ अनुबोभूयि९ष्यते, ष्येते, इत्यादि कर्तृ-वत् ॥ क्रियातिपत्तिः ॥ अबोभूयिष्यत, अबोभूयि८ष्येताम्, ष्यन्त, ष्यथाः, ष्येथाम्, ष्यध्वम्, ष्ये, ष्यावहि, ष्यामहि ॥ भाक ॥ अन्वबोभूयिष्यत, अन्व-बोभूयि८ष्येताम्, ष्यन्त, ष्यथाः, ष्येथाम्, ष्यध्वम्, ष्ये, ष्यावहि, ष्यामहि ॥

अत्राशीःप्रभृतिषु ४ विभक्तिषु कर्त्तरि कर्मणि च रूपाणि सदृशान्येव भवन्ति॥ कर्मकर्त्तरि "एकधातौ-"॥३।४।८६॥ इत्यनेन स्वयमेव सुखमनुबोभूय्यते इत्यादिना दशविभक्तीनां कर्मवचनानि सर्वाणि वाच्यानि । बोभूयमानः; बोभूयिष्यमाणः ॥ भाक ॥ अनुबोभूय्यमानम्; अनुबोभूयिष्यमाणम् । बोभूयां३चक्राणः, बभूवान्, आसिवान् वा ॥ भाक ॥ अनुबोभूयां३ चक्राणम्, बभूवानम्, आसानम्, वा। बोभू-यि२तः, वान्। बोभूयित्वा, अनुबोभूय्य। बोभूयि२ता, तुम्। एवं सर्वेषां स्वरान्तानां धातूनां यङि स्वानि २ यानि रूपाणि जायन्ते तानि यङन्तभूवन्निर्विशेषमभ्यूह्यानि॥ अथ यङ्लुप् ॥ बोभवीति, बोभोति, बोभूतः, बोभुवति, बोभवीषि, बोभोषि, बोभूथः, बोभूथ, बोभवीमि, बोभोमि, बोभूवः, बोभूमः ॥ भाक ॥ क्ये; अनु-बोभूयते, अनुबोभूयेते, अनुबोभूयन्ते, अनुबोभूद्ध्यसे, येथे, यध्वे, ये, यावहे, यामहे ॥ सप्तमी ॥ बोभूयात्, बोभूयाताम्, बोभूयुः, बोभूद्ध्याः, यातम्, यात, याम्, याव, याम ॥ भाक ॥ अनुबोभूयेत, अनुबोभू८येयाताम्, येरन्, येथाः, येयाथाम्, येध्वम्, येय, येवहि, येमहि ॥ पञ्चमी ॥ बोभवीतु, बोभोतु, बोभूतात् । ङित्त्वेन वित्त्वस्य बाधनान्नात्र गुणः । बोभूताम्, बोभुवतु, बोभूहि, बोभूतात्, बोभूतम्, बोभूत, बोभवानि, बोभवाव, बोभवाम ॥ भाक ॥ अनु-बोभूयताम्, अनुबोभू८येताम्, यन्ताम्, यस्व, येथाम्, यध्वम्, यै, यावहै, यामहै ॥ ह्यस्तनी ॥ अबोभवीत्, अबोभोत्, अबोभूताम्, अबोभवुः । अत्र "द्व्युक्तजक्ष-"॥ ४ । २ । ९३ ॥ इति अनः पुस् "पुस्पौ"॥४।३।३॥ इति गुणः। अबोभवीः, अबोभोः, अबोभूतम्, अबोभूत, अबोभवम्, अबोभूव, अबोभूम ॥ भाक ॥ अन्वबोभूयत, अन्वबोभू८येताम्, यन्त, यथाः, येथाम्, यध्वम्, ये, यावहि, यामहि ॥ अद्यतनी ॥ प्रकृतिग्रहणे यङ्लुबन्तस्यापि ग्रहणमिति न्यायात् "पिबैति-"॥४।३।६६॥ इति सिचोलुप्, नचेट्, सिचोलुब्विधानाच्च न वृद्धिः, किन्तु "भवतेः सिज्लुपि"॥४।३।१२॥ इत्यत्र तिव्निर्देशाद् यङ्लुपि गुणः। अबोभोत, अबोभोताम्, अबोभूवन्। अत्र "सिज्विदोऽभुवः"॥४।२।९२॥ इति निषे-धान्न पुस्। गुणेऽवादेशे च "भुवो व-"॥४।२।४३॥ इति ऊत्। अबोभोः, अबोभोतम्, अबोभोत, अबोभूवम्, अबोभोव, अबोभोम ॥ भाक ॥ ञिचि अन्वबोभावि ।

ञिटि, अन्वबोभाविषाताम्, अन्वबोभावि९षत, ष्ठाः, षाथाम्, ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि । इटि तु अन्वबोभविषाताम्, अन्वबोभवि९षत, ष्ठाः, षाथाम्, ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि ॥ परोक्षा॥ "वेत्तेः कित्"॥३।४।५१॥ इत्यत्र आमः परोक्षावद्भावनिषेधाद् "भुवो वः प-"॥४।२।४३॥ इति न ऊः। बोभवाञ्चकार, बोभवाञ्च ९क्रतुः, क्रुः, कर्थ, क्रथुः, क्र, कर, कार, कृव, कृम । बोभवांबभूव, बोभवांबभू ८ वतुः, वुः, विथ, वथुः, व, व, विव, विम । बोभवामास, बोभवामा८सतुः, सुः, सिथ, सथुः, स, स, सिव, सिम ॥ भावे बोभवांचक्रे, बोभवांबभूवे, बोभवामाहे ॥ कर्मणि अनुबोभवांचक्रे, अनुबोभवां८चक्राते, चक्रिरे इत्यादि ॥ अनुबोभवां ९ बभूवे, बभूवाते इत्यादि ॥ अनुबोभवा९माहे, मासाते इत्यादि ॥ आशीःप्रभृतिषु ४ विभक्तिषु कर्त्तरि परस्मैपदे भावकर्मणोश्चात्मनेपदे भूधातोः केवलस्य यानि रूपाणि तान्येवात्रापि, तथापि तद्दिग्मात्रमुच्यते ॥ आशीः ॥ बोभूयात्, बोभूयास्तां० ॥ भाक ॥ ञिटि अनुबोभाविषीष्ट । इटि अनुबोभविषीष्ट० ॥ श्वस्तनी ॥ बोभविता, बोभवितारौ० ॥ भाक ॥ ञिटि अनुबोभावि९ता, तारौ, तारः० ॥ इटि अनुबोभवि९ता, तारौ, तारः० ॥ भविष्यन्ती ॥ बोभविष्यति, बोभवि८ष्यतः० ॥ भाक ॥ अनुबोभावि९ष्यते, ष्येते० ॥ अन्वबोभवि९ष्यते, ष्येते, ष्यन्ते० ॥ क्रियातिपत्तिः ॥ अबोभवि९ष्यत्, ष्यताम्०॥ भाक॥ अन्वबोभावि९ष्यत, ष्येताम्० ॥ अन्वबोभवि९ष्यत, ष्येताम्, ष्यन्त, ष्यथाः०॥ अत्रापि कर्मकर्त्तरि सुखं स्वयमेवानुबोभूयते इत्यादिना सर्वविभक्तीनां सर्वकर्मवचनानि दर्शनीयानि । बोभुवत्, अत्र द्व्युक्तात्परस्यान्तो नस्य लुक् । स्यप्रत्ययेन व्यवहितस्य तु न । बोभविष्यन् । अनुबोभूयमानम्, अनुबोभविष्यमाणम्, अनुबोभाविष्यमाणम्। बोभवां३चकृवान्, बभूवान्, आसिवान् ॥ भाक॥ अनुबोभवां३चक्राणम्, बभूवानम्, आसानम्। "क्त्वा"॥४।३।२९॥ इति सेट् क्त्वा न कित् बोभवित्वा, अनुबोभूय। बोभुवि३तः, वान्। बोभवि३ता, तुम्, तव्यम्, एवमन्येऽपि उदूदन्ताः । स्तु, पूङ्प्रभृतयो धातवः सर्वेऽपि यङ्लुबन्तभूवद् अद्यतनीकर्तृवर्जं विज्ञातव्याः ॥ उच्चारस्त्वेवम्:—तोष्टवीति, तोष्टोति, तोष्टुत इत्यादि । पोपवीति, पोपोति, पोपूत इत्यादि ॥ अद्यतन्यां कर्त्तरि पुनरेवम्:-अतोष्टावीत्, अतोष्टावि-

ष्टाम्, अतोष्टाविषुः, अतोष्टावीः, अतोष्टाविष्टम्, अतोष्टाविष्ट, अतोष्टाविषम्, अतोष्टाविष्व, अतोष्टाविष्म। एवं अपोपावीत्, अपोपाविष्टामित्याद्यपि। अत्र सर्वत्र सिचि इटि, "सिचि परस्मै-"॥४।३।४४॥ इति वृद्धिः ॥ एवमुदूदन्तान्यधातुष्वपि ॥ किञ्च अनुस्वारेतोऽननुस्वारेतो वा धातवः सनि यङि यङ्लुपि णिगि च सति बहुस्वरत्वेन सर्वेऽपि सेट एव जायन्ते, "एकस्वरात्-"॥४।४।५६॥ इत्यनेन इटो निषेधाभावात्। नवरं कृतै नृतै चृतै प्रभृतीनां अल्पीयसां यङ्लुप्यपि क्तादौ यदनिट्त्वं सम्भवि तत् स्वस्थाने वक्ष्यते॥ अथ णिगन्तः॥ भवन्तं प्रयुङ्क्ते भावयति, करोतीत्यर्थः। भावयत्यनित्यतां ध्यायतीत्यर्थः। भावयतः, भावयन्ति, भावयसि, भाव५ यथः, यथ, यामि, यावः, यामः । गित्त्वादात्मनेपदमपि । भावयते, भाव८येते, यन्ते, यसे, येथे, यध्वे, ये, यावहे यामहे ॥ भाक ॥ भावकर्मणोर्दर्श्यत इत्यर्थः। भाव्यते, भाव्येते, भा ७ व्यन्ते, व्यसे, व्येथे, व्यध्वे, व्ये, व्यावहे, व्यामहे ॥ सप्तमी ॥ भावयेत्, भाव८येताम्, येयुः, येः, येतम्, येत, येयम्, येव, येम । भाव९येत, येयाताम्, येरन्, येथाः, येयाथाम्, येध्वम्, येय, येवहि येमहि ॥ भाक ॥ भाव्येत, भाव्ये८याताम्, रन्, थाः, याथाम्, ध्वम्, य, वहि, महि ॥ पञ्चमी ॥ भाव १८ यतु, यताम्, यन्तु, य, यतम्, यत, यानि, याव, याम । यताम्, येताम्, यन्ताम्, यस्व, येथाम्, यध्वम्, यै, यावहै, यामहै ॥ भाक ॥ भा९व्यताम्, व्येताम्, व्यन्ताम्, व्यस्व, व्येथाम्, व्यध्वम्, व्यै, व्यावहै, व्यामहै ॥ ह्यस्तनी ॥ अभावयत्, अभाव८यताम्, यन्, यः, यतम्, यत, यम्, याव, याम॥ अभाव९यत, येताम्, यन्त, यथाः, येथाम्, यध्वम्, ये, यावहि, यामहि ॥ भाक॥ अभाव्यत, अभा८व्येताम्, व्यन्त, व्यथाः, व्येथाम्, व्यध्वम्, व्ये, व्यावहि, व्यामहि॥ अद्यतनी॥ भूणिग् भावि, दि ङे णौ यत्कृतं तत्सर्व॰ इति न्यायात् भूद्वित्वं ह्रस्वः "उपान्त्यस्यास-"॥४।२।३५॥ ह्रस्वः। "असमानलोप-"॥४।१।६३॥ इति सन्वद्भावात् "ओर्जान्तस्था-"॥४।१।६०॥ ओः इः, "लघोर्दी-"॥४।१।६४॥ अबीभवत्, अबीभवताम्, अबीभवन्, अबीभवः, अबीभवतम्, अबीभवत, अबीभवम्, अबीभवाव, अबीभवाम ॥ अबीभवत, अबीभवेताम्, अबीभवन्त, अबीभवथाः, अबीभवेथाम्, अबीभवध्वम्, अबीभवे, अबीभवावहि, अबीभवा-

महि ॥ भाक ॥ ञिचि अभावि, ञिटि णेर्लुकि अभाविषाताम्, अभावि ९ षत, ष्ठाः, षाथाम्, ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि ॥ इटि अभावयि१०षाताम्, षत, ष्ठाः, षाथाम्, ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि ॥परोक्षा॥ "आमन्ताल्व-" ॥४।३।८५॥ इति अयि भावयाञ्चकार, भावयाञ्चक्रतुः, भावयाञ्च-८क्रुः,कर्थ, क्रथुः, क्र, कर, कार, कृव, कृम। आत्मनेपदे भावयाञ्चक्रे, भावयाञ्च-८क्राते, क्रिरे, कृषे, क्राथे, कृढ्वे, क्रे, कृवहे, कृमहे ॥ भावयाम्बभूव, भावयांब-भू८वतुः, वुः, विथ, वथुः, व, व, विव, विम । णिगन्ताद्भूधातोरात्मनेपदेऽनु-प्रयुज्यमानाच्च परस्मैपदे भावयांबभू९व, वतुः, वुः, विथ, वथुः, व, व, विव, विम। भावयामास, भावयामा७सतुः, सुः, सिथः, सथुः, स, स, सिव, सिम ॥ भाक ॥ भावयाञ्चक्रे, भावयाञ्च८क्राते, क्रिरे, कृषे, क्राथे, कृढ्वे, क्रे, कृवहे, कृमहे ॥ भायवांबभूवे, भावयांबभू९वाते, विरे, विषे, वाथे, विध्वे, विढ्वे, वे, विवहे, विमहे । भावयामाहे, भावयामा८साते, सिरे, सिषे, साथे, सिध्वे, हे, सिवहे, सिमहे ॥ आशीः ॥ भाव्यात्, भा८व्यास्ताम्, व्यासुः, व्याः, व्यास्तम्, व्यास्त, व्यासम्, व्यास्व, व्यास्म ॥ भावयिषीष्ट, भावयि९षीयास्ताम्, षीरन्, षीष्ठाः, षीयास्थाम्, षीध्वम्, षीढ्वम्, षीय, षीवहि, षीमहि ॥ भाक ॥ ञिटि णेर्लुकि भाविषीष्ट, भावि९षीयास्ताम्, षीरन्, षीष्ठाः, षीयास्थाम्, षीध्वम्, षीढ्वम्, षीय, षीवहि, षीमहि। इटि भावयिषीष्ट, भावयि९षीयास्ताम्, इत्यादि ॥ श्वस्तनी ॥ भावयिता, भावयि८तारौ, तारः, तासि, तास्थः, तास्थ, तास्मि, तास्वः, तास्मः ॥ भावयि९ता, तारौ, तारः, तासे, तासाथे, ताध्वे, ताहे, तास्वहे, तास्महे ॥ भाक ॥ ञिटि भाविता, भावि८तारौ, तारः, तासे, तासाथे, ताध्वे, ताहे, तास्वहे, तास्महे । इटि भावयिता, भावयि८तारौ इत्यादि ॥ भविष्यन्ती ॥ भावयिष्यति, भावयिष्यतः, भावयि१६ष्यन्ति, ष्यसि, ष्यथः, ष्यथ, ष्यामि, ष्यावः, ष्यामः । ष्यते, ष्येते, ष्यन्ते, ष्यसे, ष्येथे, ष्यध्वे, ष्ये, ष्यावहे, ष्यामहे ॥ भाक ॥ भाविष्यते, भावि८ष्येते, ष्यन्ते, ष्यसे, ष्येथे, ष्यध्वे, ष्ये, ष्यावहे, ष्यामहे ॥ भावयिष्यते, भावयि८ष्येते इत्यादि ॥ क्रियातिपत्तिः ॥ अभावयिष्यत्, अभा-वयि १६ ष्यताम्, ष्यन्, ष्यः, ष्यतम्, ष्यत, ष्यम्, ष्याव, ष्याम । ष्यत,

ष्येताम्, ष्यन्त, ष्यथाः, ष्येथाम्, ष्यध्वम्, ष्ये, ष्यावहि, ष्यामहि ॥ भाक ॥ ञिटि अभाविष्यत, अभावि८ष्येताम्, ष्यन्त, ष्यथाः, ष्येथाम्, ष्यध्वम्, ष्ये, ष्यावहि, ष्यामहि । इटि अभावयिष्यत, अभावयि८ष्येताम्, ष्यन्त, ष्यथाः, ष्येथाम्, ष्यध्वम् इत्यादि । कर्मकर्त्तरि सर्वस्मात् ण्यन्ताद्धातोः "एकधातौ कर्म-" ॥३।४।८६॥ इति ञिच्ञिट्क्यात्मनेपदेषु प्राप्तेषु "णिस्नुश्र्य-" ॥३।४।९२॥ इति ञिचो निषेधनेन ञिटो विधानात्, "भूषार्थसन्-" ॥ ३ । ४ । ९३ ॥ इति क्यस्य निषेधाच्च, ञिट् आत्मनेपदं च स्याताम्। अनुभवति विषयसुखं चैत्रः तं मैत्रः प्रयुङ्क्ते अनुभावयति विषयसुखं चैत्रेण मैत्रः । स एवं विवक्षते नाहमनुभावयामि किन्तु अनुभावयते विषयसुखं स्वयमेव । यदि वा स्वयमनुभूयमानं विषयसुखं स्वं प्रयुङ्क्ते अनुभावयते विषयसुखं स्वयमेव। एवमनुभावयेत, अनुभावयताम्। अन्वभावयत। अन्वबीभवत। इटि अनुभावयिषीष्ट। ञिटि अनुभाविषीष्ट। अनुभावयिता, अनुभाविता। अनुभावयिष्यते, अनुभाविष्यते, वा विषयसुखं स्वयमेव। एवं द्विवचनादीन्यपि निदर्शनीयानि । भावयन् । भावयन्ती । भावयत् । भावयिष्यन् । भावयिष्यन्ती । भावयिष्यती । भावयिष्यत् । भावयमानः । भावयिष्यमाणः ॥ भाक ॥ भाव्यमानम् । इटि भावयिष्यमाणम् । ञिटि भाविष्यमाणम् । भावयांचक्राणः । भावयां३चकृवान्, बभूवान्, आसिवान् ॥ भाक ॥ भावयां३चक्राणम्, बभूवानम्, आसानं वा । भावयि३ता, त्वा, तुम् । यपि अनुभाव्य । "सेट्क्तयोः" ॥४।३।८४॥ इति णेर्लुकि भावितः, २ वान् । एवं सर्वे णिगन्ताः णिजन्ताश्च चौरादिका नामधातवोऽपि च सर्वे सर्वविभक्तिषु कर्मकर्त्तरि शत्रादिप्रत्ययेषु च णिगन्तभूवन्निर्विशेषं निरूपणीयाः । नवरमद्यतन्यां कर्त्तरि ङे क्वचन यो विशेषः सम्भवी सोऽग्रे वक्ष्यते । अत एवाग्रे णिगूणिजन्तधातूनां यथा स्वस्थानं रूपमात्रम्, ङप्रत्यये रूपविशेषश्चाविष्करिष्यते न पुनः शेषविभक्तिविस्तर इति ज्ञेयम् । यङन्तात् सनि बोभूयिषते। "पुनरेकेषाम्"॥४।१।१०॥ इति पुनर्द्वित्वे बुबोभूयिषते। यङ्लुबन्तात्सनि बोभविषति। अनेकस्वरत्वात् "ग्रहगुहश्च-" ॥४।४।५९॥ इति इट्निषेधो न भवति णिगन्तात्सनि बिभावयिषति, ते । अत्र णौ यत्कृतम्

इति भूद्वित्वे "ओर्जान्तस्थ-" ॥ ४ । १ । ६० ॥ इति इः । सन्नन्ताण्णिगि बुभूषयति, ते । यङन्ताण्णिगि बोभूययति, ते । यङ्लुबन्ताण् णिगि बोभुवतं प्रयुङ्क्ते बोभावयति, ते । णिगन्ताण् णिगि, भावयति, ते । अत्र "णेरनिटि"॥४।३।८३॥ इति आद्यणिग्लुक् । अतत्सन इति वचनादिच्छासन्नन्तात् सन्नास्ति, यङ् च सन्यङ्यङ्लुबन्तेभ्यो बहुस्वरत्वेन नागच्छति, "व्यञ्जनादेरेकस्वरात्-"॥३।४।९॥ इति भणनात् । एवं सर्वधातुषु सन्णिगादिसंयोगाः स्वयं वेदितव्याः ॥ १ ॥

अथ तृवर्जाः २४ अनिटोऽनुस्वारेत्त्वात् ॥ पां पाने ॥ वर्त्तमाना ॥ पिबति, पिबतः, पिबन्ति । "श्रौति-"॥४।२।१०८॥ इति पिबादेशस्यादन्तत्वान्न शवि गुणः ॥ व्यतिपि९बते, बेते, बन्ते० ॥ भाक ॥ "ईर्व्यञ्ज-"॥४।३।९७॥ ईः ॥ पीयते, पीयेते, पीयन्ते इत्यादि ॥ सप्तमी ॥ पिबेत, पि८बेताम्, बेयुः, बेः, बेतम्, बेत, बेयं, बेव, बेम । व्यतिपिबेत० ॥ भाक ॥ पीयेत, पीये८याताम्, रन्, थाः, याथाम्, ध्वम्, य, वहि, महि ॥ पञ्चमी ॥ पिबतु, पिबतात्, पिबताम्, पिबन्तु, पिब, पिबतात्, पिबतम्, पिबत, पिबानि, पिबाव, पिबाम । व्यतिपिबताम् ॥ भाक ॥ पीयताम्, पीयेताम्, पीयन्ताम् ॥ ह्यस्तनी ॥ अपिबत्, अपि८बताम्, बन्, बः, बतम्, बत, बम्, बाव, बाम ॥ व्यत्यपिबत ॥ भाक ॥ अपी ९ यत, येताम्, यन्त, यथाः, येथाम्० ॥ अद्यतनी ॥ "पिबैति-"॥४।३।६६॥ इति सिचो लुप् । अपात्, अपाताम्; "सिज्विद-" ॥ ४ ।२। ९२ ॥ इति पुसि अपुः, अपाः, अपातम्, अपात, अपाम्, अपाव, अपाम । व्यत्यपा५स्त, साताम्, सत, स्थाः, साथाम् । "सो धि वा"॥४।३।७२॥ इति वा सो लुकि, पक्षे "तृतीयस्तृतीय-"॥१।३।४९॥ इति सो दत्वे व्यत्यपा५ध्वम्, ड्ढ्वम्, सि, स्वहि, स्महि ॥ भाक ॥ "आत ऐः-"॥४।३।५३॥ अपायि । वा ञिटि अपायिषाताम्, अपायि ९ षत, ष्ठाः, षाथाम्, ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि । पक्षे अपासाताम्, अपा ८ सत, स्थाः, साथाम्, द्ध्वम्, ध्वम्, सि, स्वहि, स्महि ॥ परोक्षा ॥ पपौ, "इडेत्पुसि च-"॥४।३।९४॥ इति आल्लुकि, पपतुः, पपुः, पपाथ, पपिथ, "सृजिदृशी-"॥४।४।७८॥ इति वेट्, पपथुः, पप, पपौ, पपिव, पपिम ॥ भाक ॥ पपे, पपाते, पपिरे, पपिषे, पपाथे, पपिध्वे,

पपे, पपिवहे, पपिमहे ॥ आशीः ॥ पेयात्, पेयास्ताम्, पेयासुः, पेयाः, पेयास्तम्, पेयास्त, पेयासम्, पेयास्व, पेयास्म ॥ भाक ॥ पायि १० षीष्ट, षीयास्ताम्, षीरन्, षीष्ठाः, षीयास्थाम्, षीध्वम्, षीढ्वम्, षीय, षीवहि, षीमहि ॥ पक्षे, पा९सीष्ट, सीयास्ताम्, सीरन्, इत्यादि ॥ श्वस्तनी ॥ पाता, पातारौ, पातारः, पातासि० ॥ भाक ॥ पाता, पायिता, पातारौ, पायितारौ० ॥ भविष्यन्ती ॥ पास्यति, पास्यतः, पास्यन्ति, पास्यसि० ॥ भाक ॥ पास्यते, पायिष्यते, पास्येते, पायिष्येते, पास्यन्ते, पायिष्यन्ते० ॥ क्रियातिपत्तिः ॥ अपा९स्यत्, स्यताम्, स्यन्, स्यः, स्यतम्० ॥ भाक ॥ अपा१८स्यत, यिष्यत, स्येताम्, यिष्येताम्, स्यन्त, यिष्यन्त० ॥ आशीरादिषु ४ भावकर्मणोर्ञिट् सर्वत्र विकल्प्यः ॥ सनि, पिपासति ॥ भाक ॥ पिपास्यते। यङि पेपीयते, अत्र प्राक् तु स्वरे इत्यधिकारात् "ईर्व्यञ्जन-"॥४।३।९७॥ इति प्राग् ईः पश्चात्तु द्वित्वम्, यङोऽव्यञ्जनादित्वात्, एवमग्रेऽपि ॥ भाक ॥ पिपीय्यते। शेषं सन्यङ्ङन्तभूवदित्युक्तं पुराऽपि लुपि पापेति, पापाति। "श्रौति-"॥४।२।१०८॥ इति प्रकृतिग्रहणेन प्राप्तोऽपि अत्यादावित्यधिकारान्न पिबादेशः। शतरि तु पापेतीति वाक्ये द्वित्वापन्नस्य पिबादेशे पिबत् इति स्यात्। एवं घ्राध्मोरपि। क्ते, पापि२तः, वान्। पापि३त्वा, तुम्, ता, लुपि शेषं स्थास्थाने ऽतिदेक्ष्यते, णिगि, "पाशा-"॥४।२।२०॥ इति ये, पाययति। फलवति "चल्याहार-"॥३।३।१०८॥ इति परस्मैपदे प्राप्तेऽपि "परिमुह-"॥३।३।९४॥ इत्यात्मनेपदे, पाययते बटुम्॥ अद्यतनी ॥ "ङे पिबः पीप्य्"॥४।१।३३॥ इति पीप्यः। अपीप्यत्, अपी८प्यताम्, प्यन्, प्यः, प्यतम्, प्यत, प्यम्, प्याव, प्याम। अपी९प्यत, प्येताम्, प्यन्त०॥ भाक॥ अपायि, अपायिषाताम्, अपाययिषाताम्, अपायिषत, अपाययिषत०॥ "ङे पिबः-"॥४।१।३३॥ इत्यत्र लुप्ततिव्निर्देशात् यङ्लुपि न पीप्यः। अपापयत्, शेषं भूवत्। पिबन्। पीयमानम्। पास्यन्। पास्यमानम्, पायिष्यमाणम्। पपिवान्। पपानम्। पी२तः, वान्। पीत्वा। निपाय। निपीय इति तु पीङो भविष्यति। पातुम्। पाता। पेयम्। पातव्यम्। पानीयम्॥ २ ॥

घ्रां गन्धोपादाने॥ "श्रौति-"॥४।२।१०८॥ इति जिघ्रः। जिघ्रति, जिघ्रतः०॥ भाक॥ घ्रायते, घ्रायेते॥ अद्यतनी ॥ "ट्वेघ्राश-"॥४।३।६७॥ इति वा सिच्लुप्। अ-

लोपे च "यमिरमिनम्यातः-"॥४।४।८६॥ इति इट् सोऽन्तश्च, अघ्रात्, अघ्रासीत्, अघ्राताम्, अघ्रासिष्टाम्, अघ्रुः, अघ्रासिषुः, अघ्राम, अघ्रासिष्म ॥ भाक ॥ अघ्रायि, अघ्रासाताम्, अघ्रायिषाताम्० ॥ परोक्षा ॥ जघ्रौ, जघ्रिथ, जघ्राथ, जघ्रिम ॥ भाक ॥ जघ्रे० ॥ आशीः ॥ "संयोगादेर्वाशिष्येः"॥४।३।९५॥ इति वा एः घ्रेयात्, घ्रायात्, घ्रेयास्म, घ्रायास्म । शेषासु पांवत् । सनि जिघ्रासति । यङि व्यञ्जनादित्वेन "घ्राध्मोः-"॥४।३।९८॥ इति द्वित्वात् प्राग् ईः, जेघ्रीयते। लुपि तु न ईः, जाघ्रेति, जाघ्राति, जाघ्रीतः । अत्र "एषामीः-" ॥४।२।९७॥ इति ईः ॥ अन्ये तु यङ्लुप्यपि "घ्राध्मोः" ॥ ४ । ३ । ९८ ॥ इति ईत्वमिच्छन्ति । जेघ्रीतः । एवं ध्मोऽपि, देध्मीतः। शतरि तु जिघ्रत्, धमत् । शेषं यङ्लुपि त्रैङ्वत् । णौ विशेषबोधार्थत्वात् "गतिबोध-"॥२।२।५॥ इत्यणिक्कर्तुः कर्मत्वे चैत्रो मैत्रं गन्धं घ्रापयति। ये तु दृशेरन्यस्य विशेषबोधार्थस्य नेच्छन्ति तन्मते घ्रापयति मैत्रेण चैत्रः ॥ भाक ॥ घ्राप्यते। ङे, "जिघ्रतेरिः"॥४।२।३८॥ इति उपान्त्यस्य वा इः, अजिघ्रपत्, अजिघ्रिपत् ।"जिघ्रतेः-"॥४।२।३८॥ इति तिव्निर्देशात् यङ्लुपि णौ न इः अजाघ्रपत् । जिघ्रन् । घ्रास्यन् । घ्रायमाणम् । "ऋह्री-"॥४।२।७६॥ इति वा नत्वे, घ्रा२णः, वान्, घ्रा२तः, वान्, घ्रा३ता, तुम्, त्वा । आघ्राय । घ्रातव्यम् । घ्रेयम् ॥ ३ ॥

ध्मां शब्दाग्निसंयोगयोः । शब्दे मुखादिना चाऽग्निसंयोगे "श्रौति-"॥४।२।१०८॥ इति धमादेशे, शङ्खमङ्गारान् वा धमति ॥ भाक ॥ ध्मायते। अद्यतनी ॥ अध्मा९सीत्, सिष्टाम्, सिषुः० ॥ भाक ॥ अध्मायि, अध्मासाताम्, अध्मायिषाताम्॥ सनि दिध्मासति। यङि देध्मीयते। णौ ध्मापयति । ङे, अदिध्मपत् । ध्मातः२, वान् । शेषं घ्रांवत् ॥ ४ ॥

ष्ठां गतिनिवृत्तौ॥ वर्त्तमाना ॥ "श्रौति-"॥४।२।१०८॥ इति तिष्ठादेशे, तिष्ठति । "अधेः शीङ्स्थास-"॥२।२।२०॥ इत्याधारस्य कर्मत्वे, गृहमधितिष्ठति; प्रतितिष्ठति; अनुतिष्ठति ॥ तिष्ठतः, तिष्ठन्ति, तिष्ठसि०, तिष्ठामः । "देवार्चामैत्री-"॥३।३।६०॥ इत्यनेनोपात्कर्त्तर्यात्मनेपदे जिनेन्द्रमुपतिष्ठते, रथिकानुपतिष्ठते, गङ्गा यमुनामुपतिष्ठते, अयं पन्थाः स्रुघ्नमुपतिष्ठते, ऐन्द्र्या गार्हपत्यमुपतिष्ठते । "वा लिप्सायाम्" ॥३।३।६१॥ भिक्षुर्दातृकुलमुपतिष्ठ२ते, ति वा । "उदोऽनूर्द्ध्वेहे" ॥ ३ । ३ । ६२ ॥

मुक्तावुत्तिष्ठते । "संविप्रावात्"॥३।३।६३॥ संतिष्ठते, प्रतिष्ठते इत्यादि ॥ "ज्ञीप्सा-स्थेये"॥३।३।६४॥ तिष्ठते कन्या च्छात्रेभ्यः, "श्लाघह्नुस्था-"॥२।२।६०॥ इति चतुर्थी । संशय्य कर्णादिषु तिष्ठते यः । "प्रतिज्ञायाम्"॥३।३।६५॥ तदतदात्मकं तत्त्व-मातिष्ठते । "उपात्स्थः"॥३।३।८३॥ इति कर्मण्यसति, भोजने उपतिष्ठते, प्रतिष्ठते, प्रतिष्ठेते, प्रतिष्ठन्ते० ॥ भावे, "ईर्व्यञ्ज-"॥४।३।९७॥ ईः, स्थीयते, उत्थीयते । कर्मणि, केवलस्य कर्माभावत् अनुपूर्वो दर्श्यते । "स्थासेनि-"॥ २ । ३ । ४० ॥ इति षत्वे अनुष्ठी९यते, येते, यन्ते, यसे० ॥ सप्तमी ॥ तिष्ठेत्, तिष्ठेताम्, तिष्ठेयुः, तिष्ठेः० ॥ प्रतिष्ठेत, प्रतिष्ठेयाताम्, प्रतिष्ठेरन्० ॥ भावे, स्थीयेत ॥ कर्मणि, अनुष्ठी९येत, येयाताम्, येरन्० ॥ पञ्चमी ॥ तिष्ठतु, तिष्ठताम्, तिष्ठन्तु, तिष्ठ, तिष्ठानि । प्रति९ष्ठताम्, ष्ठेताम्, ष्ठन्ताम्, ष्ठस्व, ष्ठेथाम्० ॥ भावे, स्थीयताम् । कर्मणि, अनुष्ठी९यताम्, येताम्, यन्ताम् ॥ ह्यस्तनी ॥ अति-९ष्ठत्, ष्ठताम्, ष्ठन्० ॥ प्रातिष्ठत, प्राति८ष्ठेताम्, ष्ठन्त, ष्ठथाः० ॥ भावे, अस्थीयत ॥ कर्मणि अन्वष्ठी९यत, येताम्, यन्त, यथाः, येथाम्, यध्वम्, ये० ॥ अद्यतनी ॥ "पिबैति-"॥४।३।६६॥ इति सिचो लुप्, अस्थात् । "स्थासेनि" ॥२।३।४०॥ इति अड्व्यवधानेऽपि षत्वे अध्यष्ठात्, प्रत्यष्ठात्, अस्थाताम्, अस्थुः, "सिज्विदो-"॥४।२।९२॥ इति पुस् । अस्थाः, अस्थातम्, अस्थात, अस्थाम्, अस्थाव, अस्थाम । प्रास्थित, "इश्च स्थादः"॥ ४ । ३ । ४१ ॥ इति इः, सिच् किच्च, "धुट्ह्रस्व-"॥ ४ । ३ । ७० ॥ इति सिच्लुक् । प्रास्थिषाताम्, प्रास्थिषत, प्रास्थि७थाः, षाथाम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि ॥ भावे, अस्थायि । कर्मणि ञिचि, अन्वष्ठायि । "स्वरग्रह-"॥३।४।६९॥ इति वा ञिटि, अन्वष्ठायि-षाताम्, अन्वष्ठिषाताम्, अन्वष्ठायिषत, अन्वष्ठिषत, अन्वष्ठायिष्ठाः, अन्वष्ठि-थाः, अन्वष्ठायिषाथाम्, अन्वष्ठिषाथाम्, अन्वष्ठायि३ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम् । अत्र "सो धि-"॥४।३।७२॥ इति वा सिच्लुक् "हान्त-"॥२।१।८१॥ इति वा ढश्च, पक्षे सिचः षत्वडत्वे धो ढः, अन्वष्ठि२ढ्वम्, ड्ढ्वम् । "इश्च-"॥४।३।४१॥ इति षत्वे, "सो धि"॥४।३।७२॥ इति वा सिच्लुकि, "नाम्यन्त-"॥२।१।८०॥ इति नित्यं ढः । पक्षे सिचो "नाम्यन्त-"॥२।३।१५॥ इति षत्वे "तृतीय-"॥१।३।४९॥

इति डत्वे "तवर्गस्य-"॥१।३।६०॥ इति धो ढः। अन्वष्ठायिषि, अन्वष्ठिषि, अन्वष्ठायिष्वहि, अन्वष्ठिष्वहि, अन्वष्ठायिष्महि, अन्वष्ठिष्महि ॥ परोक्षा ॥ तस्थौ। "स्थासेनि-"॥२।३।४०॥ इति द्वित्वेऽपि षत्वे, अधितष्ठौ, तस्थतुः, तस्थुः। "सृजिदृशि-" ॥४।४।७८॥ इति वेटि, तस्थिथ, तस्थाथ, तस्थथुः, तस्थ, तस्थौ, तस्थिव, तस्थिम। प्रत९स्थे, स्थाते, स्थिरे, स्थिषे, स्थाथे, स्थिध्वे, स्थे, स्थिवहे, स्थिमहे ॥ भावे तस्थे। कर्मणि अनुत९ष्ठे, ष्ठाते, ष्ठिरे, ष्ठिषे, ष्ठाथे, ष्ठिध्वे, ष्ठे, ष्ठिवहे, ष्ठिमहे ॥ आशीः ॥ स्थेयात्, स्थेयास्ताम्, स्थेयासुः, स्थेयाः, स्थेयास्तम्, स्थेयास्त, स्थेयासम्, स्थेयास्व, स्थेयास्म ॥ प्रस्था९सीष्ट, सीयास्ताम्, सीरन्, सीष्ठाः, सीयास्थाम्, सीध्वम्, सीय, सीवहि, सीमहि ॥ भावे ॥ स्थायिषीष्ट, स्थासीष्ट ॥ कर्मणि वा ञिटि अनुष्ठायि१०षीष्ट, षीयास्ताम्, षीरन्, षीष्ठाः, षीयास्थाम्, षीध्वम्, षीढ्वम्, षीय, षीवहि, षीमहि ॥ पक्षे, अनुष्ठा९सीष्ट, सीयास्ताम्, सीरन् इत्यादि ॥ श्वस्तनी ॥ स्थाता, स्थातारौ, स्थातारः० ॥ प्रस्थाता, प्रस्थातारौ, प्रस्थातारः, प्रस्थातासे० ॥ भावे स्थायिता, स्थाता । कर्मणि अनुष्ठा९ता, तारौ, तारः, तासे इत्यादि । अनुष्ठायि९ता, तारौ, तारः, तासे इत्यादि ॥ भविष्यन्ती ॥ स्थास्यति, अधिष्ठास्यति, प्रतिष्ठास्यति, स्थास्यतः० ॥ प्रस्थास्यते, प्रस्थास्येते, प्रस्थास्यन्ते० ॥ भावे स्थायिष्यते, स्थास्यते ॥ कर्मणि अनुष्ठायिष्यते, अनुष्ठास्यते, अनुष्ठायिष्येते, अनुष्ठास्येते, अनुष्ठायिष्यन्ते, अनुष्ठास्यन्ते०॥ क्रियातिपत्तिः॥ अस्थास्यत्, अध्यष्ठास्यत्। अस्था८स्यताम्, स्यन्, स्यः०॥ प्रास्था९स्यत, स्येताम्, स्यन्त, स्यथाः०॥ भावे अस्थायिष्यत, अस्थास्यत। कर्मणि वा ञिटि, अन्वष्ठायि९ष्यत, ष्येताम्, ष्यन्त०॥ पक्षे अन्वष्ठा९स्यत, स्येताम्, स्यन्त इत्यादि। सनि, तिष्ठासति; संतिष्ठासते; अवतिष्ठासते। यङि, तेष्ठीयते। यङ्लुपि, तास्थेति। "श्रौति-"॥४।२।१०८॥ इत्यत्रात्यादावित्यधिकारान्न तिष्ठः; तास्थाति, तास्थीतः, एषाम् "ईर्व्यञ्ज-" ॥४।३।९७॥ ईः। तास्थति, "श्नश्चातः"॥४।२।९६॥ इति आलोपः। तास्थेषि, तास्थासि, तास्थीथः, तास्थीथ, तास्थेमि, तास्थामि, तास्थीवः, तास्थीमः॥ भाक ॥ क्ये, अनुताष्ठीयते, अनुताष्ठी८येते, यन्ते, यसे, येथे, यध्वे, ये, यावहे, यामहे॥ सप्तमी ॥ तास्थी९यात्, याताम्, युः, याः, यातम्, यात, याम्, याव, याम ॥ भाक ॥

अनुताष्ठी९येत, येयाताम्, येरन्, येथाः, येयाथाम्, येध्वम्, येय, येवहि, येमहि ॥ पञ्चमी ॥ तास्थेतु, तास्थातु, तास्थीतात्, तास्थीताम्, तास्थतु, तास्थीहि, तास्थीतात्, तास्थीतम्, तास्थीत, तास्थानि, तास्थीव, तास्थीम ॥ भाक ॥ अनुताष्ठी-९यताम्, येताम्, यन्ताम्, यस्व, येथाम्, यध्वम्, यै, यावहै, यामहै ॥ ह्यस्तनी ॥ अतास्थेत्, अतास्थात्, अतास्थीताम्, अतास्थुः, अतास्थेः, अतास्थाः, अतास्थीतम्, अतास्थीत, अतास्थाम्, अतास्थीव, अतास्थीम ॥ भाक ॥ अन्वताष्ठीयत, अन्वताष्ठी८येताम्, यन्त, यथाः, येथाम्, यध्वम्, ये, यावहि, यामहि। अद्यतनी ॥ अतास्थात्, "पिबैति-"॥४।३।६६॥ इति सिच्लुप् नेट् च। अतास्थीताम्, अतास्थुः, अता६स्थाः, स्थातम्, स्थात, स्थाम्, स्थाव, स्थाम ॥ भाक॥ अन्वताष्ठायि। ञिटि अन्वताष्ठायि १० षाताम्, षत, ष्ठाः, षाथाम्, ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि ॥ परोक्षा ॥ तास्थांचकारेत्यादि९। तास्थांबभूवेत्यादि९। तास्थामासेत्यादि ९॥ भाक ॥ अनुताष्ठांचक्रे ९। अनुताष्ठांबभूवे ९। अनुताष्ठामाहे ९, मासाते, मासिरे ९॥ आशीः ॥ तास्थे९यात्, यास्ताम्, यासुः, याः, यास्तम्, यास्त, यासम्, यास्व, यास्म। "गापास्थासा-"॥४।३।९६॥ इति एः॥ भाक॥ अनुताष्ठायि १० षीष्ट, षीयास्ताम्, षीरन्, षीष्ठाः, षीयास्थाम्, षीढ्वम्, षीध्वम्, षीय, षीवहि, षीमहि। अनुताष्ठि९षीष्ट, षीयास्ताम्, षीरन्, षीष्ठाः, षीयास्थाम्, षीध्वम्० ॥ श्वस्तनी। इटि तास्थि९ता, तारौ, तारः, तासि० ॥ भाक॥ अनुताष्ठायि९ता, तारौ, तारः, तासे, तासाथे० ॥ अनुताष्ठि९ता, तारौ, तारः, तासे, तासाथे० ॥ भविष्यन्ती ॥ तास्थि९ष्यति, ष्यतः, ष्यन्ति० ॥ भाक ॥ अनुताष्ठायि ९ष्यते, ष्येते, ष्यन्ते, ष्यसे०॥ अनुताष्ठि ९ष्यते, ष्येते, ष्यन्ते ॥ क्रियातिपत्तिः ॥ अतास्थि९ष्यत्, ष्यताम्, ष्यन्, ष्यः, ष्यतम्० ॥ भाक ॥ अन्वताष्ठायि ९ष्यत, ष्येताम्, ष्यन्त, ष्यथाः०। अन्वताष्ठिष्यत, ष्येताम्० ॥ क्ते, तास्थितः, २ वान्। तास्थित्वा। प्रतास्थाय। तास्थितुम्। शतरि तु "श्रौतिकृवु-"॥४।२।१०८॥ इत्यत्र प्रकृतिग्रहणात्तिष्ठादेशे तिष्ठत्। यङ्लुबन्तात् सनि तास्थिषति। "पुनरेकेषाम्"॥४।१।१०॥ इति पुनर्द्वित्वे तितास्थिषति। एवं "गापास्थासा-"॥४।३।९६॥ इति सूत्रोक्ता हांक् वर्जाः पञ्चदश धातवो यङ्लुपि

स्थावदभ्यूहनीयाः ॥ तत्र पिबतेः सर्वं स्थातुल्यम् । दासंज्ञानां तु षण्णां यः शिति विशेषः सम्भवी स स्वस्थानेऽग्रे वक्ष्यते । गादीनां तु पुनरष्टानां स्थासकाशादयं विशेषः यदुताद्यतनी पदस्मैपदे सिचि "यमिरमिनम्यातः-" ॥४।४।८६॥ इत्यनेन इट् सोन्तश्च स्यात् नतु सिचो लुप्, गाङ् गैं वा ॥ अजागासीत्, अजागासिष्टाम्, अजागासिषुः, अजागासीः, अजागासिषम्, अजागासिष्म। एवं पैं, अपापासीत् । सों सैं वा; अवासासीत् । मांक् मांङ् मेङ् वा; अमामासीत्, अमामासिष्टामित्यादि। तथा शतरि "श्वश्च-"॥४।२।९६॥ इति आ लुकि जागत्, पापत्, अवसासत्, मामत्, इति स्यात्; शेषं त्वेषां स्थातुल्यम् । उक्तेभ्योऽन्ये तु सर्वेऽप्याकारान्ताः त्रैङः स्थाने वक्ष्यन्ते । अथ णिग् । स्थापयति, स्थापयतः० ॥ भाक ॥ स्थाप्यते, स्थाप्येते० ॥ अद्यतनी ॥ अतिष्ठिपत्, अतिष्ठिपताम्, अतिष्ठिपन्०, "तिष्ठतेः" ॥ ४ । २ । ३९ ॥ इत्युपान्त्यस्य इः । तिव्निर्देशात् यङ्लुपि णौ न इः, अतास्थपत् । णिगन्तात्सनि, तिष्ठापयिषति । णिगन्ताण्णिगि, स्थापयति द्रव्यं सत्येन । तिष्ठन् । तिष्ठन्ती । प्रतिष्ठमानः। स्थास्यन् । प्रस्थास्यमानः। स्थीयमानम्, प्रस्थीयमानम्। स्थास्यमानम्, स्थायिष्यमाणम् । तस्थिवान्, तस्थुषी, तस्थिवत् । प्रतस्थानः । स्थित्वा । प्रस्थाय । उत्थाय । स्थितः, २ वान् । उत्थितः,२ वान् । "श्लिष्शीङ्-"॥५।१।९॥ इति वा कर्त्तरि क्ते, उपस्थितो गुरुं शिष्यः । पक्षे कर्माणि, उपस्थितो गुरुः शिष्येण ॥ भावे उपस्थितं शिष्येण, अत्र "दोसोमा-" ॥४।४।११॥ इति इः । अनुष्ठितः, अत्र "स्थासेनि-"॥२।३।४०॥ इति षत्वम्। सुस्थितो दुस्थित इत्यादौ तु उपसर्गप्रतिरूपका निपाता एते, इत्युपसर्गाभावान्न षत्वम् । स्था३ता, तुम्, तव्यम् । स्थेयम् । स्थानीयम् । "प्रात्स्थः" (उणादि–९२४) इति णिनि प्रस्थास्यते, प्रस्थायी भविष्यति साधुः । "ग्रहादिभ्यो णिन्"॥५।१।५३॥ स्थायी ॥५॥

म्नां अभ्यासे । "श्रौति-" ॥४।२।१०८॥ इति मनः, आमनति, आमनतः, आमनन्ति०॥ भाक ॥ आम्ना९यते, येते, यन्ते०; शेषं ध्मांवत्। यङि तु विशेषः, आमाम्नायते ॥ ६ ॥

दाम् दाने। "श्रौति-"॥४।२।१०८॥ इति यच्छः, यच्छति धनम्; प्रयच्छति,

यच्छतः, यच्छन्ति०॥ भाक ॥ "ईर्व्यञ्जने-"॥४।३।९७॥ ईः, दीयते, दीयेते, दीयन्ते०॥ सप्तमी ॥ यच्छेत्, यच्छेताम्०॥ भाक ॥ दीयेत०॥ पञ्चमी ॥ यच्छतु, यच्छताम्०॥ भाक ॥ दीयताम्० ॥ ह्यस्तनी ॥ अयच्छत्० ॥ भाक ॥ अदीयत० ॥ डुदांग्क्, धातोरद्यतन्यादिषु सन्यङ्णिगादिषु च यानि रूपाणि वक्ष्यन्ते तान्येवास्यापि वक्तव्यानि । नवरं परस्मैपदमेव कर्त्तरि वाच्यमत्राव्यतिपूर्वं चात्मनेपदमपि । दास्या संप्रयच्छते । "दामः संप्रदानेऽधर्म्ये आत्मने च"॥२।२।५२॥ इति सम्प्रदानात्तृतीया आत्मनेपदं च ॥ ७ ॥

जिं ञ्जि अभिभवे । अयं जिर्द्वेधा । जयति जिन इति अकर्मकः; जयति शत्रूनिति सकर्मकः ॥ वर्त्तमाना ॥ जयति, जयतः, जयन्ति० ॥ "परावेर्जेः" ॥३।३।२८॥ इत्यात्मनेपदे, पराजयते, विजयते, विजयेते, विजयन्ते० ॥ भाक ॥ जीयते, जीयेते, जीयन्ते, जीयसे० एवं सप्तम्यादिषु ॥ अद्यतनी ॥ "सिचि परस्मै-" ॥४।३।४४॥ इति वृद्धिः, "सः सिज-"॥४।३।६५॥ इति ईत्त्व, अजैषीत्, अजैष्टाम, अजैषुः, अजैषीः, अजैष्टम्, अजैष्ट, अजैषम्, अजैष्व, अजैष्म । सिचो लुकः परत्वेऽपि नित्यत्वात् प्रागेव गुणे व्यजेष्ट, व्यजेषाताम्, व्यजे८षत, ष्ठाः, षाथाम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि ॥ भाक ॥ अजायि, अजायि१०षाताम्, षत, ष्ठाः, षाथाम्, ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि ॥ अजे९षाताम्, षत, ष्ठाः, षाथाम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि ॥ परोक्षा ॥ "जेर्गिः सन्-" ॥४।१।३५॥ इति गिः, जिगाय, जिग्यतुः, जिग्युः, "योऽनेकस्वरस्य"॥२।१।५६॥ इति यत्वम् । जिगयिथ, जिगेथ, "सृजि-"॥४।४।७८॥ इति वेट् । जिग्यथुः, जिग्य, जिगय, जिगाय, जिग्यिव, जिग्यिम ॥ विजिग्ये, विजिग्याते, विजिग्यिरे । "हान्तस्थ-"॥२।१।८१॥ इति वा ढे विजिगिढ्वे, ध्वे० ॥ भाक ॥ जिग्ये, जिग्याते, जिग्यिरे, जिग्यिषे, "स्क्रसृ-" ॥४।४।८१॥ इतीट् । जिग्याथे, जिग्यिढ्वे, जिग्यिध्वे, जिग्ये, जिग्यिवहे, जिग्यिमहे ॥ आशीः ॥ जीयात्, जीयास्ताम्, जीयासुः, जीयाः० ॥ विजे९षीष्ट, षीयास्ताम्, षीरन्, षीष्ठाः० ॥ भाक ॥ जायिषीष्ट, जेषीष्ट, जायिषीयास्ताम्, जेषीयास्ताम्० ॥ श्वस्तनी ॥ जेता, जेतारौ, जेतारः० ॥ विजेता९, तारौ, तारः० ॥ भाक ॥ जायिता, जेता,

जायितारौ, जेतारौ० ॥ भविष्यन्ती ॥ जेष्यति, जेष्यतः, जेष्यन्ति० ॥ विजे९-ष्यते, ष्येते, ष्यन्ते० ॥ भाक ॥ जायिष्यते, जेष्यते, इत्यादि ॥ क्रियातिपत्तिः ॥ अजे९ष्यत् , ष्यताम् , ष्यन्० । व्यजे९ष्यत, ष्येताम्, ष्यन्त०॥ भाक ॥ अजा-यिष्यत, अजेष्यत, अजायिष्येताम्, अजेष्येताम्० ॥ सनि, जिगीषति; विजि-गीषते । यङि, जेजीयते ॥ भाक ॥ जेजीय्यते० । यङ्लुपि जेजयीति, जेजेति, जेजितः, जेज्यति, "योऽनेकस्वरस्य"॥२।१।५६॥ इति यत्वम्, जेजयीषि, जेजेषि, जेजिथः० ॥ "परावेर्जेः"॥३।३।२८॥ इत्यत्र प्रकृतिग्रहणे यङ्लुबन्तस्यापीति न्याया-दात्मनेपदे, विजेजिते, विजेज्याते, विजेज्यते० ॥ भाक ॥ जेजीयते, जेजयिते० ॥ सप्तमी ॥ जेजियात्० । विजेज्यीत० ॥ भाक ॥ जेजीयेत० ॥ पञ्चमी ॥ जेज-यीतु, जेजेतु, जेजितात्, जेजिताम् , जेज्यतु० ॥ विजेजिताम्०॥ भाक ॥ जेजी-यताम्०॥ ह्यस्तनी ॥ अजेजयीत्, अजेजेत्, अजेजिताम् , अजेजयुः, "द्व्युक्त-" ॥४।२।९३॥ इति पुस् "पुस्पौ" ॥ ४ । ३ । ३ ॥ गुणः । व्यजेजित० ॥ भाक ॥ अजेजीयत० ॥ अद्यतनी ॥ "सिचि परस्मै-" ॥ ४ । ३ । ४४ ॥ वृद्धौ, अजेजा-यीत्, अजेजायिष्टाम्, अजेजायिषुः, अजेजायीः, अजेजायिषम्० ॥ व्यजे-जयिष्ट० ॥ भाक ॥ अजेजायि, अजेजायिषाताम्, अजेजयिषातामित्यादि ॥ परोक्षा ॥ जेजयांचकार, जेजयांबभूव, जेजयामासेत्यादि २७ । विजेजयां३चक्रे, बभूव, आस इत्यादि २७ ॥ भाक ॥ जेजयांचक्रे इत्यादि २७ ॥ आशीः ॥ जेजीयात्, जेजीयास्ताम्० ॥ भाक ॥ जेजायिषीष्ट, जेजयिषीष्टेत्यादि ॥ श्वस्तनी ॥ जेजयिता० ॥ भाक ॥ जेजायिता, जेजयिता० ॥ भविष्यन्ती ॥ जेजयिष्यति० । विजेजयिष्यते० ॥ भाक ॥ जेजायिष्यते, जेजयिष्यते० ॥ क्रियातिपत्तिः ॥ अजेजयिष्यत्० ॥ भाक ॥ अजेजायिष्यत, अजेजयिष्यते-त्यादि, भावकर्मणोर्ञिटिटौ सर्वत्र विकल्प्यौ । जेज्यितः । जेजयित्वा । जेज-यितुम् । जेज्यत् । एवं चि, नी प्रभृतय इदीदन्ताः सर्वेऽपि यङ्लुपि जिवदवगन्तव्याः। नवरं श्रि क्षि प्रभृतयो ये संयोगाक्षरपूर्वा इदीदन्ताः स्युस्तेषां अविति शिति स्वरे "संयोगात्" ॥ २ । १ । ५२ ॥ इत्यनेन इय् आदेशः कार्यः, नतु यत्वम्। यथा—शेश्रियति, शेश्रियतु। चेक्षियति। चेक्षियतु। शेषं जितुल्यम्।

एवमन्यधातुष्वपि। णिगि "णौ क्रीजीङः"॥४।२।१०॥ इत्यात्वे जापयति०। ङे, अजीजपत्। शेषं भूवत्॥ णिगन्तात्सनि, जिजापयिषति। यङन्ताण्णिगि जेजीययति, ते। यङ्लुबन्ताण्णिगि जेजापयति, ते। ङे, अजेजपत्। यङ्लुबन्तात्सनि जेजयिषति। णिगि सनि च जिजापयिषति। जयन्। जयन्ती। विजयमानः। जेष्यन्। जेष्यन्ती। विजेष्यमाणः॥ भाक॥ जीयमानम्। जेष्यमाणम्। ञिटि जायिष्यमाणम्। जिगिवान्। विजिग्यानः। जितः२, वान्। जित्वा। विजित्य। जेता। जेतुम्। जेतव्यम्। "क्षय्यजय्य-"॥४।३।९०॥ इति निपातनाज्जेतुं शक्यो जय्यः शत्रुः। शक्यं जेतुं जय्यं राज्ञा। शक्तेरन्यत्रार्हे जेयोऽन्यः। जयनीयम्॥ अत्र ञिस्त्यक्तः। अन्ये तु ञिस्थाने जॄं इति ऋकारान्तं पठन्ति। जरति। ञियते। अजार्षीत्। जजार। जज्रे। जर्त्ता। जरिष्यति। जरन्। शेषं कृग्वत्॥८॥

क्षि क्षये॥ क्षयति। कर्मकर्त्तरि तु क्षीयते। कथं क्षयति देवदत्तः पदार्थं, स एवं विवक्षते नाहं क्षयामि, स्वयमेव क्षीयते। अपक्षीयते। उपक्षीयते॥ परोक्षा॥ चिक्षाय, चिक्षियतुः, चिक्षियुः, चिक्षयिथ, चिक्षेथ, चिक्षियिम०, शेषं जिवत्, परं गिरादेशो न कार्यः। तथा कर्त्तरि क्ते "क्षेः क्षीच-"॥४।२।७४॥ इति क्तस्य नः, क्षीश्च, क्षीणः२, वान् मैत्रः। अधिकरणे, इदमेषां क्षीणम्॥ भावे क्ते तु, क्षितमनेन। क्त्वि, क्षित्वा। "क्षेः क्षीः"॥४।३।८९॥ इति क्षीः, प्रक्षीय, उपक्षीय। "क्षय्यजय्यौ-"॥४।३।९०॥ इति निपातनात् शक्यः क्षेतुम् क्षय्यो व्याधिः। शक्यं क्षेतुं क्षय्यं बटुना। शक्तेरन्यत्र त्वर्हे क्षेयम्॥९॥

इं दुं द्रुं शुं स्रुं गतौ। इं। अयति, उदयति०॥ भाक॥ ईयते॥ ह्यस्तनी॥ आयत्, आयताम्, आयन्०॥ भाक॥ ऐयत, ऐयेताम्०॥ अद्यतनी॥ ऐषीत्, ऐष्टाम्, ऐषुः०॥ भाक॥ आयि, आयिषाताम्, ऐषाताम्०। ध्वमि, ऐड्ढ्वम्, ऐढ्वम्, आयिध्वम्, आयिढ्वम्, आयिड्ढ्वम्। सर्वत्र "स्वरादेस्तासु"॥४।४।३१॥ इति वृद्धिः॥ परोक्षा॥ इयाय, इयतुः, अत्र "योऽनेकस्वरस्य"॥२।१।५६॥ इति द्वित्वे सति यत्वम्, इयुः, इययिथ, इयेथ, इयथुः, इय; इयाय, इयय, इयिव, इयिम॥ भाक॥ इये०॥ आशीः॥ ईयात्०॥ भाक॥ आयिषीष्ट, एषीष्ट०॥ श्वस्तनी॥ एता॥ भाक॥ आयिता, एता॥ भविष्यन्ती॥ एष्यति, आ एष्यति "उपसर्गस्यानिणे-"

॥१।२।१९॥ इति आङ्लोपे, एष्यति, समेष्यति ॥ भाक ॥ आयिष्यते, एष्यते ॥ क्रियातिपत्तिः ॥ ऐष्यत ॥ भाक ॥ आयिष्यत, ऐष्यतेत्यादि । "नामिनोऽनिट्" ॥४।३।३३॥ इति सनः कित्त्वे "स्वरहन-"॥४।१।१०४॥ इति दीर्घे "स्वरादेः-" ॥४।१।४॥ इति षस्य द्वित्वे "सन्यस्य"॥४।१।५९॥ इति ईः । उदीषिषति । णौ, आययति । ङे, आयियत् । उदयन् । ईयिवान् । इत्वा । आ इत्वा, एत्य । उदित्य । उदितः२, वान् । एता । आ एता एता । एतुम्, एतव्यम् । एयम् । अयनीयम् ॥ दुशू त्यक्तौ । द्रु । द्रवति, विद्रवति, उपद्रवति० ॥ भाक ॥ द्रूयते० ॥ अद्यतनी ॥ "णिश्रि-"॥३।४।५८॥ इति ङे, अदुद्रुवत, अदुद्रु८वताम्, वन्० ॥ वाम ॥ भाक ॥ अद्रावि, अद्राविषाताम्, अद्रोषाताम्० ॥ परोक्षा ॥ दुद्राव, दुद्रुवतुः । "स्क्रसृ-"॥४।४।८१॥ इत्यत्र द्रुवर्जनान्नेट्, दुद्रोथ, दुद्रुव, दुद्रुम ॥ भाक ॥ दुद्रुवे । द्रोता । द्रोष्यति । दुद्रूषति । दोद्रूयते । दोद्रवीति, दोद्रोति, अग्रे भूवत् । अद्यतन्यां तु प्रकृतिग्रहणाण् "णिश्रि-" ॥ ३ । ४ । ५८ ॥ इति ङे, अदोद्रुवत् । णौ "चल्याहारार्थ-"॥३।३।१०८॥ इति फलवत्कर्त्तर्यपि परस्मैपदे द्रावयत्ययः। णौ ङे, "असमानलोपे-"॥४।१।६३॥ इति सन्वद्भावात् "श्रुस्रुद्रु-"॥४। १।६१॥ इति सनीव वा इः, अदिद्रवत्, अदुद्रवत्। णौ सनि "श्रुस्रु-"॥४।१।६१॥ इति पूर्वस्योतो वा इः, दिद्रावयिषति, दुद्रावयिषति । द्रुतः । द्रुत्वा । उपद्रुत्य । द्रोता । द्रोतुम् । एवं स्रुरपि साध्यः । स्रवति, प्रस्रवति ॥ भाक ॥ स्रूयते ॥ अद्यतनी ॥ "णिश्रि-"॥३।४।५८॥ इति ङे, असुस्रुवत् ॥ भाक ॥ अस्रावि ॥ परोक्षा ॥ सुस्राव, सुस्रुवतुः, सुस्रोथ, सुस्रुव, सुस्रुम ॥ भाक ॥ सुस्रुवे । स्रोता । स्रोष्यति । सनि, सुस्रूषति । कुटिलार्थेति यङि, सोस्रूयते । सोस्रवीति, सोस्रोति । यङ्लुपि सनि, सोस्रविषति । णौ "चल्य-"॥३।३।१०८॥ इति परस्मैपदे, स्रावयति तैलं चैत्रः । णौ ङे वा इः, असिस्रवत्, असुस्रवत् । णौ सनि "श्रुस्रु-"॥४।१।६१॥ इति वा इः, सिस्रावयिषति, सुस्रावयिषति ॥१०॥११॥१२॥

सुं प्रसवैश्वर्ययोः । गतावप्येके । सवति । सूयते । असौषीत् । अषोपदेशान्न षत्वं, सुसाव । सोता । सोष्यति। शेषं षुंवत्, परं न षत्वम् ॥ १३ ॥

स्मृं चिन्तायाम् । "स्मृत्यर्थ-"॥२।२।११॥ इति वा कर्मत्वे मातुर्मातरं वा

स्मरति, स्मरतः। वि, सु, अप, अनु, सं, पूर्वोऽप्येवम् ॥ भाक ॥ क्ये, "क्ययङा-शीर्ये "॥४।३।१०॥ इति गुणः, स्मर्यते, स्मर्येते० ॥ ह्यस्तनी ॥ अस्मरत् ॥ भाक ॥ अस्मर्यत ॥ अद्यतनी ॥ अस्मार्षीत्, अस्मार्ष्टाम्, अस्मार्षुः ॥ भाक ॥ अस्मारि, ञिटि अस्मारिषाताम्, "संयोगादृतः" ॥४।४।३७॥ इति वेटि अस्मरिषाताम्, अस्मृषाताम्, अत्र "ऋवर्णाद्"॥४।३।३६॥ इति अनिट् सिच् कित्। अस्मारिषत, अस्मरिषत, अस्मृषत, अस्मारिष्ठाः, अस्मरिष्ठाः, अस्मृथाः०, अस्मारिध्वम्, अस्मा-रिढ्वम्, अस्मारिड्ढ्वम्, अस्मरि३ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्। अस्मृ२ढ्वम्, ड्ढ्वम्, ॥ परोक्षा ॥ सस्मार । "संयोगादृदर्त्तेः"॥४।३।९॥ इति गुणे, सस्मरतुः, सस्मरुः, सस्मर्थ, "ऋतः"॥४।४।७९॥ इति थवि नेट्, सस्मरथुः,सस्मर, सस्मार, सस्मर, सस्मरिव, सस्म-रिम । सस्म१०रे, राते, रिरे, रिषे, रिढ्वे, रिध्वे०॥ आशीः ॥ स्मर्यात्, ९ स्ताम्, सुः०॥ भाक ॥ स्मारिषीष्ट । "संयोगादृतः"॥४।४।३७॥ इति वेटि, स्मरिषीष्ट । "ऋवर्णाद्"॥४।३।३६॥ इति कित्त्वे, स्मृषीष्ट । एवं षीयास्तामित्यादावपि त्रीणि२ रूपाणि॥ श्वस्तनी॥ स्मर्त्ता, स्मर्त्तारौ०॥ भाक॥ स्मारिता, स्मर्त्ता०॥ भविष्यन्ती । "हनृत-"॥४।४।४९॥ इति इटि, स्मरिष्यति०॥ भाक॥ स्मारिष्यते, स्मरिष्यते०॥ क्रियातिपत्तिः॥ अस्मरिष्यत्॥ भाक॥ वा ञिटि, अस्मारिष्यत, अस्मरिष्यत०॥ सनि, "स्मृदृशः"॥३।३।७२॥ इत्या-त्मनेपदे, सुस्मूर्षते। यङि, सास्मर्यते। सरी, रि, र्३, स्मरीति, अत्र रीरिरां३पृथक्-योजनेनोदाहरणत्रयं ज्ञातव्यम्, एवमग्रेऽन्यत्र च। सरी, रि, र्३, स्मर्त्ति। शेषं यङ्लुबन्तकृग्वत्। परं "क्ययङाशीर्ये"॥४।३।१०॥ इत्यनेन क्ये, आशीर्येव गुणः सरीस्मर्यते । सरीस्मर्यादित्यादि । तथा "संयोगादृतः"॥४।४।३७॥ इत्यनेन वा इट् भणनादद्यतन्याशिषोरात्मनेपदे यथा ऽयं स्मृधातुरभिहितस्तथैव यङ्लुबन्तो ऽप्ययं भणितव्यः ॥ णौ, स्मारयति, विस्मारयति । आध्याने घटादित्वात् ह्रस्वे, स्मरयति । ङे, "स्मृदृत्वर-"॥४।१।६५॥ इति पूर्वस्य अः, असस्मरत् । णौ सनि सिस्मारयिषति । अषपाठान्न षः। स्मरति कोकिलो वनगुल्मम्। स्मरयत्येनं वनगुल्मः। "अणिक्कर्मणिक्कर्तृकाण्णिगो-"॥३।३।८८॥ इति स्मृत्यर्थवर्जनान्नात्मने-पदम् । स्मरन् । स्मर्यमाणम् । स्मरिष्यन् । स्मरिष्यमाणम् । स्मारिष्यमाणम् । सस्मृवान्। सस्मुषी। सस्माणम्। स्मृतः२, वान् । स्मृत्वा । विस्मृत्य। स्मर्त्ता । स्मर्त्तुम् । स्मर्त्तव्यम्। स्मरणीयम्। स्मारणीयम्। स्मार्य्यम् ॥ १४ ॥

सृं गतौ । सरति, प्रसरति, अनुसरति, उपसरति, अपसरति, संसरति, निःसरति, अभिसरति । अत्यादौ शिति "वेगे सर्त्तेर्धाव्"॥४।२।१०७॥ धावति ॥ भाक॥ क्ये, स्रियते । अद्यतनी ॥ "सर्त्त्यर्त्तेर्वा"॥३।४।६१॥ इति वा अङ्, असरत्, रताम्, रन्० ॥ पक्षे असार्षीत्, असार्ष्टाम्० ॥ भाक॥ असारि, असारिषाताम्, असृषाताम्० ॥ परोक्षा ॥ ससार, सस्रतुः । "स्क्रसृ-"॥४।४।८१॥ इत्यत्र सृवर्जनान्नेट्, ससर्थ, सस्रृव, सस्रृम ॥ भाक ॥ सस्रे । सर्त्ता । सरिष्यति । सनि, सिसीर्षति । यङि, सेस्रीयते । सरी, रि, र्३, सरीति, सरी, रि, र्३, सर्त्ति० ॥अद्यतनी ॥ असरिसारीत्। शतरि, सरी, रि, र्३, स्रत्। णौ, सारयति । णौ, सनि, सिसारयिषति, षोपदेशाभावान्न षः । अद्यतनीशित्कर्तृवर्जं सर्वः सृः कृग्वत् । परं शतरि, सरन् । सरन्ती ॥ १५ ॥

ऋं प्रापणे च, चात् गतौ च। "श्रौति-"॥४।२।१०८॥ इति ऋच्छः, ऋच्छति, ऋच्छतः, ऋच्छन्ति० ॥ "समोगमि-"॥३।३।८४॥ इति कर्मण्यसत्यात्मनेपदे, समृच्छते, च्छेते, च्छन्ते ॥ भाक ॥ "क्ययङा-"॥४।३।१०॥ इति गुणः, अर्यते, अर्येते, अर्यन्ते० ॥ ह्यस्तनी ॥ "स्वरादेस्तासु"॥४।४।३१॥ इति वृद्धिः, आर्च्छत्, आर्च्छताम्, आर्च्छन्०॥ समार्च्छत, समार्च्छेताम्० ॥ भाक ॥ क्ये, आर्यत, आर्येताम्, आर्यन्त०॥ अद्यतनी ॥ "सर्त्त्यर्त्तेर्वा"॥३।४।६१॥ इति वा अङि, "ऋवर्णदृशोऽङि"॥४।३।७॥ इति गुणे "स्वरादेः-"॥४।४।३१॥ इति वृद्धिः आर्। आरत्, निरारत्, आरताम्, आरन्०॥ पक्षे, आर्षीत्, आर्ष्टाम्, आर्षुः० ॥ समारत, समार्ष्ट०, सिच्लोपात् प्रागेव नित्यत्वाद् वृद्धिः ॥ भाक ॥ आरि, आरिषाताम्, आर्षाताम्, आरिषत, आर्षत, आरिष्ठाः, आर्ष्ठाः०॥ परोक्षा ॥ द्वित्वे वृद्धौ च आर। "संयोगाद्दृदर्त्तेः"॥४।३।९॥ इति गुणे, आरतुः, आरुः । "ऋवृव्ये-"॥४।४।८०॥ इति इटि, आरिथ, आरथुः, आर२, आरिव, आरिम। समारे, समाराते०॥ भाक ॥ आरे, आराते, आरिरे०॥ आशीः ॥ अर्यात्, अर्यास्ताम्, अर्यासुः०। समृषीष्ट०॥ भाक ॥ ऋषीष्ट, "ऋवर्णात्"॥४।३।३६॥ इति कित्त्वम् ।आरिषीष्ट । ऋषीयास्ताम्, आरिषयास्ताम्० ॥ श्वस्तनी ॥ अर्त्ता, अर्त्तारौ० ॥ समर्त्ता, समर्त्तारौ० ॥ भाक ॥ अर्त्ता, आरिता, अर्त्तारौ, आरितारौ० ॥ भविष्यन्ती ॥ अरिष्यति, "हनृतः-"॥४।४।४९॥

इतीट्। अरिष्यतः। समरिष्यते० ॥ भाक ॥ आरिष्यते, अरिष्यते, आरिष्येते, अरिष्येते० ॥ क्रियातिपत्तिः ॥ आरिष्यत्, आरिष्यताम्०। समारिष्यत० ॥ भाक ॥ आरिष्यत, आरिष्येताम्०, अत्र ञिटिटोर्वृध्या रूपसादृश्यम्। सनि, "ऋस्मि-" ॥४।४।४८॥ इति इटि, अरिरिषति। ननु अत्र प्राक्तुस्वरे इति वचनात्कथं न गुणात्प्राग् द्वित्वम्, उच्यते। स्वरादित्वाद्धातोर्द्वितीयांशस्येटो द्वित्वे कर्त्तव्ये द्वित्वनिमित्तस्य स्वरस्याभावात् द्वित्वात् प्राग् गुण एव। भृशं पुनः२ वा ऋच्छति, "अट्यर्त्ति-"॥३।४।१०॥ इति यङि, "क्ययङ-"॥४।३।१०॥ इति गुणे "स्वरादेर्द्वि- तीयः"॥४।१।४॥ इति यस्य द्वित्वे व्यञ्जनस्यानादेर्लुकि, "आ गुणा-"॥४।१।४८॥ इति आत्वे, अरार्यते। अर्त्तेर्यङ्लुपि द्वित्वे ऋतोऽति "रिरौ च लुपि"॥४।१।५६॥ इति रागमे अरृ इति रूपं स्यात्। रि री आगमे तु "पूर्वस्यास्वे-"॥४।१।३७॥ इति इयि, अरियृ इति रूपं स्यात्। एके वियादेशं नेच्छन्ति, तन्मते "इवर्णादेरस्व-"॥१। २।२१॥ इति यत्वे अर्यृ इति रूपं स्यात्। तदेवं अरृ१ अरियृ२ अर्यृ ३ इति ऋधातो रूपत्रयं जातम्। आद्यं रूपं विभक्तिषु प्रथमं संचार्य्यते, अररीति, अरर्ति, अरृतः, "इवर्णादेः"॥१।२।२१॥ इति रत्वे रोरे लुकि पूर्वस्य दीर्घत्वे च आरति, अररीषि, अरर्षि, अरृथः, अरृथ, अररीमि, अरर्मि, अरृवः, अरृमः॥ भाक॥ क्ये "संयोगादृदर्त्तेः"॥४।३।९॥ इत्यत्र तिव्निर्देशात् "क्ययङ-"॥४।३।१०॥ इति गुणाभावे "रिः शक्या-"॥४।३।११०॥ इति रि आदेशे रोरे लुकि, पूर्वस्य दीर्घत्वे, आरियते, आरियेते, आरियन्ते० २१॥ सप्तमी॥ अरृयात्, अरृयाताम्, अरृयुः०॥ भाक॥ क्ये रित्वादौ, आरियेत, आरियेयाताम्, आरियेरन्० १८॥ पञ्चमी॥ अररीतु, अरर्तु, अरृतात्, अरृताम्। रत्वे, रोरेलुक्दीर्घयोः। आरतु, अरृहि, अरृतात्, अरृतम्, अरृत, अरराणि०॥ भाक॥ आरियताम्, आरियेताम्०२१॥ ह्यस्तनी॥ "स्वरादेस्तासु"॥४।४।३१॥ इति वृद्धौ, आररीत्। गुणे "व्यञ्जनादेः-" ॥४।३।७८॥ इति दिव्लोपे, आरः, आरृताम्, "ह्युक्त-"॥४।२।९३॥ इति पुसि "पुस्पौ"॥४।३।३॥ इति गुणे आररुः, आररीः, आरः। "सेः सृद्धाम्"॥४।३।७९॥ इति सिव्लुक्। आरृतम्, आरृत, आररम्, आरृव, आरृम॥ भाक॥ आरियत, आरि- येताम्० २०॥ अद्यतनी॥ सिचि इटि ईति "सिचि परस्मै-"॥४।३।४४॥ इति वृद्धौ

इट् इति सिचोलुपि आरारीत्, आरारिष्टाम्, आरा७रिषुः, रीः, रिष्टम्, रिष्ट, रिषम्, रिष्व, रिष्म ॥ भाक ॥ ञिचि आरारि । ञिटिटोः आरारिषाताम्, आररिषाताम्, आरारिषत, आररिषत, आरारि३ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, आररि३ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्,० ३० ॥ परोक्षा ॥ आमि परोक्षाकार्याभावात् गुणे, अरराञ्चकारेत्यादि १० । अररांबभूवेत्यादि ९ । अररामासेत्यादि ९ ॥ भाक ॥ अररांचक्रे इत्यादि ९ । अररांबभूवे इत्यादि ९ । अररामाहे इत्यादि ९ । एवं ५५ ॥ आशीः ॥ रिः शक्य इति रिः, रेरे लुक्दीर्घौ, आरियात्, आरियास्ताम्० ॥ भाक ॥ वा ञिटि अरारिषीष्ट । इटि अररिषीष्ट, अरारिषीयास्ताम्, अररिषीयास्ताम् । अरारि२षीध्वम्, षीढ्वम् ० २९ ॥ श्वस्तनी ॥ अररि९ता, तारौ, तारः० ॥ भाक ॥ अरारिता, अररिता इत्यादि २७ ॥ भविष्यन्ती ॥ अररि९ ष्यति, ष्यतः, ष्यन्ति०॥ भाक ॥ अरारिष्यते, अररिष्यते० २७ ॥ क्रियातिपत्तिः॥ आररिष्यत्० ॥ भाक ॥ आरारिष्यत, आररिष्यतेत्यादि २७ ॥ एवं अर् इत्यस्य रूपाणि २७५॥ एवं तदपररूपयोरपि, तदेवं यङ्लुपि ऋरूपाणि ८२५ स्युः॥ अथ द्वितीयं रूपं दर्श्यते। अरियरीति, अरियर्त्ति, अरियृतः, अरियृति इत्यादि॥ भाक॥ क्ये रिः । अरिय्रियते, अरिय्रियेते० ॥ ह्यस्तनी ॥ आरियरीत्, आरियः, आरियृताम्० ॥ भाक ॥ आरिय्रियत० ॥ अद्यतनी ॥ आरियारीत्, आरियारिष्टाम्०॥ भाक ॥ आरियारि, आरियारिषाताम्, आरियरिषाताम्० ॥ परोक्षा ॥ अरियरांचकारेत्यादि ५५ ॥ आशीः ॥ अरिय्रियात् ० ॥ भाक ॥ अरियारिषीष्ट, अरियरिषीष्ट०, शेषं प्रागुक्तानुसारेण २ ॥ अथ अर्यृरूपमुच्यते ॥ अर्यरीति, अर्यर्त्ति, अर्यृतः, अर्यृति० ॥ भाक ॥ अर्य्रियते० ॥ पञ्चमी ॥ अन्तु, अर्यृतु० ॥ भाक ॥ अर्य्रियताम्० ॥ ह्यस्तनी ॥ आर्यरीत्, आर्यः० ॥ भाक ॥ आर्य्रियत०॥ अद्यतनी ॥ आर्यारीत्, आर्यारिष्टाम्० ॥ भाक ॥ आर्यारि, आर्यारिषाताम्, आर्यरिषाताम्० ॥ परोक्षा ॥ अर्यरांचकारेत्यादि॥ आशीः ॥ अर्य्रियात्०, शेषं सुगमम्॥"समोगमृच्छि-"॥३।३।८४॥ इत्यत्रार्त्तेस्तिवृनिर्देशाद्यङ्लुपि नात्मनेपदम्। समरर्त्ति, समररीति१। समरियर्त्ति, समरियरीति २। समर्यर्त्ति, समर्यरीति ३॥ अर्त्तेर्यङ्लुपि अरर्त्तीति वाक्ये शतरि द्वित्वे पूर्वस्यात्वे रागमे धातोश्च रत्वे "रो रे लुग्-"

॥१।३।४१॥ इति रलोपे पूर्वदीर्घत्वे च । आरत्, अरियृत्, अर्यृत् । णिगि, "अर्त्तिरी-"॥४।२।२१॥ इति पौ "पुस्पौ"॥४।३।३॥ इति गुणे, अर्पयति ॥भाक॥ अर्प्यते, अर्प्येते० ॥ अद्यतनी ॥ ङे रं पश्चाद्विश्लेष्य "स्वरादेः-"॥४।१।४॥ इति पिद्वित्वे णेर्लुकि, आर्पिपत्, आर्पिपताम्, आर्पिपन्० ॥ भाक ॥ आर्प्पि, आर्पिषाताम्, आर्पयिषाताम्०।"स्वरग्रह-"॥३।४।६९॥ इति वा ञिटि, "अर्त्तिरी-"॥४।२।२१॥ इत्यत्र तिवृनिर्देशाद्यङ्लुपि णौ न पुः । अरारयति, अरियारयति, अर्यारयति । ऋच्छन् । समृच्छमानः। अर्यमाणम् । अरिष्यन् । आरिष्यमाणम्, अरिष्यमाणम् । क्सौ एकस्वरत्वमन्ते भावि इति कृत्वा द्वित्वात्प्रागेव परत्वेन "घसेकस्वर-"॥४।४।८२॥ इति इटि पश्चाद्वित्वे, "ऋतोऽत्" ॥४।१।३८॥ इत्यत्वे "अस्यादेः-" ॥४।१।६८॥ इत्यात्वे एकस्य स्थाने भवन् अल्पाश्रितो रत्वादेश इति "अवर्णस्ये-"॥१।२।६॥ इत्यरं बाधित्वा "इवर्णादेः-" ॥ १ । २ । २१ ॥ इति रत्वे आरिवान् । आराणम् । क्ते, "ऋह्री- "॥४।२।७६॥ इति वा नत्वे, ऋणं अधमर्णदेयम् । ऋतं सत्यम् । ऋत्वा । अर्त्ता । अर्तुम् ॥ १६ ॥

तॄ प्लवनतरणयोः। तरति; वितरति; अवतरति; उत्तरति; निस्तरति; तरतः, तरन्ति०॥ भाक ॥ तीर्यते, तीर्येते, तीर्यन्ते०॥ सप्तमी ॥ तरेत्, तरेताम्, तरेयुः, तरेः०॥ भाक ॥ तीर्येत, तीर्येयाताम्०॥ पञ्चमी ॥ तरतु, तरतात्, तरताम्, तरन्तु, तर, तरतात्, तरतम्, तरत, तराणि०॥ भाक ॥ तीर्यताम्, तीर्येताम् ० ॥ ह्यस्तनी ॥ अतरत्, अतरताम्, अतरन्, अतरः० ॥ भाक ॥ अतीर्यत, अतीर्येताम्०॥ अद्यतनी॥ अतारीत्, अतारिष्टाम्, अतारिषुः, अता१रीः, रिष्टम्, रिष्ट, रिषम्, रिष्व, रिष्म ॥ भाक ॥ अतारि, "स्वरग्रह-"॥ ३ । ४ । ६९ ॥ इति वा ञिटि, "इट्सिजाशिषोरा-"॥ ४ । ४ । ३६ ॥ इति वेटि "वृतो नवा-" ॥ ४ । ४ । ३५ ॥ इति इटो वा दीर्घत्वे "ऋवर्णात्" ॥ ४ । ३ । ३६ ॥ इत्यनिटोः सिजाशिषोः किन्त्वे च चातूरूप्यम् । अतारिषाताम्, अतरिषाताम्, अतरीषाताम्, अतीर्षाताम् ४ । अतारिषत, अतरिषत, अतरीषत, अतीर्षत ४ । अतारिष्ठाः, अतरिष्ठाः, अतरीष्ठाः, अतीर्ष्ठाः ४ । अतारिषाथाम्, अतरिषाथाम्, अतरीषाथाम्, अतीर्षाथाम् ४ । अतारिध्वम्, ढ्वम्, इढ्वम्; अतरिध्वम्, ढ्वम्, इढ्वम्; अतरीध्वम्,

ढ्वम् , ड्ढ्वम् ; अतीर्ढ्वम् , ड्ढ्वम् , ४ इत्यादि ॥ परोक्षा ॥ ततार, प्राक्कुस्वरे इति भणनात्पूर्वं द्वित्वे "स्कृच्छृतोऽकि-"॥४।३।८॥ इति गुणे "तॄत्रप-" ॥४।१।२५॥ इति अत एत्वे न च द्विः इति वचनात् कृतमपि द्वित्वं निवर्त्तते । तेरतुः, तेरुः, तेरिथ, तेरथुः, तेर, ततर, ततार, तेरिव, तेरिम ॥ भाक ॥ तेरे, तेराते, तेरिरे, तेरिषे, तेराथे, तेरिध्वे, ढ्वे, तेरे, तेरिवहे, तेरिमहे ॥ आशीः ॥ तीर्यात् , तीर्यास्ताम्० ॥ भाक ॥ "वृतो नवा-" ॥४।४।३५॥ इत्यत्राशिषि इटो दीर्घत्वनिषेधात् , तारिषीष्ट, तरिषीष्ट, तीर्षीष्ट इत्यादि ३।३। तारिषीध्वम्, तारिषीढ्वम्, तरिषी २ ढ्वम्, ध्वम्, तीर्षीढ्वम् ॥ श्वस्तनी ॥ तरिता, तरीता, तरितारौ, तरीतारौ०॥ भाक ॥ तारिता, तरीता, तरितेत्यादि ३।३॥ भवि० ॥ तरिष्यति, तरीष्यति० ॥ भाक ॥ तारिष्यते, इटो वा दीर्घे, तरीष्यते, तरिष्यते०। एवं क्रियातिपत्तावपि । अत्र सर्वविभक्तिषु यान्येव कर्माणि रूपाणि तान्येव कर्मकर्त्तर्यपि, नवरमद्यतन्यां कर्मकर्त्तरि ते "स्वरदुहो वा"॥३।४।९०॥ इति वा ञिचि, पक्षे वा ञिटि, तत्पक्षे वेटि, इटो वा दीर्घत्वे च पाञ्चरूप्यम्। अतारि, अतारिष्ट, अतरिष्ट, अतरीष्ट, अतीर्ष्ट ५। अतारिषातामित्यादि तु, शेषं सर्वं कर्मवत् । सनि, "इवृध-" ॥४।४।४७॥ इति वेटि "वृतो नवा-" ॥४।४।३५॥ इति वा दीर्घत्वे च, तितरिषति, तितरीषति, तितीर्षति०, अत्र "नामिनोऽनिट्"॥४।३।३३॥ इति सनः कित्त्वाद् इर् ॥ यङि, तेतीर्यते, तेतीर्येते, तेतीर्यन्ते० ॥ भाक ॥ क्ये "अतः"॥४।३।८२॥ इति यङोऽल्लोपे "योऽशिति" ॥४।३।८०॥ इति यूलोपे च, तेतीर्यते, तेतीर्येते० ॥ अद्यतनी ॥ अतेतीरिष्ट । सिचि इटि च सति, अतो यश्च लोपौ प्राग्वत् । अतेतीरिषाताम्, अतेतीरिषत०॥ भाक॥ अतेतीरि । अतेतीरिषाताम् । अतेतीरिषत० ॥ परोक्षा ॥ तेतीराञ्चक्रे, तेतीराञ्चक्राते । इत्यादि २७ ॥ भाक ॥ तेतीराञ्चक्रे इत्यादि २७ ॥ आशीः ॥ तेतीरिषीष्ट० ॥ श्वस्तनी ॥ तेतीरिता०॥ भवि०॥ तेतीरिष्यते०॥ क्रियाति०॥ अतेतीरिष्यत०। तेतीरित्वा। अवतेतीर्य। तेतीरितः। तेतीरितुम्। तेतीर्यमाणः। यङ्लुपि, तातर्त्ति, तातरीति। "ऋतां क्ङितीर्"॥४।४।११६॥ इतीर् तातीर्त्तः, तातिरति, तातरीषि, तातर्षि, तातीर्थः, तातीर्थ, तातरीमि, तातर्मि, तातीर्वः, तातीर्मः॥ भाक॥ क्ये, तातर्यिते,

तातीर्येते०॥ सप्तमी ॥ तातीर्यात्०॥ भाक ॥ तातीर्येत०॥ पञ्च०॥ तातरीतु । तातर्त्तु०॥ भाक ॥ तातीर्यताम्० ॥ ह्यस्तनी ॥ अतातरीत्, अतातः० ॥ भाक ॥ अतातीर्यत० ॥ अद्यतन्यामाशीःप्रभृतिषु विभक्तिषु च यथाऽस्यैव केवलस्य तॄधातो रूपाणि प्रोक्तानि तथैवात्रापि ज्ञेयानि; उच्चारस्त्वेवम् । अतातारीत्, अतातारिष्टाम्, अतातारिषुरित्यादि ॥ परोक्षा ॥ तातरांचकार ९ । बभूव ९ । आस ९ ॥ भाक ॥ तातरांचक्रे ९ । बभूवे ९। आहे ९ ॥ आशीः॥ तातीर्यात्०॥ भवि०॥ तात १८ रिष्यति, रीष्यति० ॥ क्रियातिपत्तिः ॥ अतात १८ रिष्यत्, रीष्यत्० ॥ तात २ रित्वा, रीत्वा। अवतातीर्य । अनेकस्वरात्, क्तस्य विहितत्वेन "ऋवर्ण-श्र्यू-" ॥ ४ । ४ । ५ ७ ॥ इति इड्निषेधाभावे, इरि वा दीर्घे च, तात २ रितः, रीतः । तात २ रितुम्, रीतुम्। तातिरत् ॥ एवं कॄ पॄ मॄ शॄ स्तॄ प्रभृतयोऽपि सर्वे ॠदन्ता यङ्लुपि ज्ञातव्याः, नवरं पॄ मॄ प्रभृतीनां क्ङिति परे "ओष्ठ्यादुर्" ॥ ४ । ४ । ११७ ॥ इति उरादेशः कार्यः । यथा तसि, पापूर्त्तः । अन्ति, पापुरति । क्ये, पापूर्यते । आशीर्ये, पापूर्यादित्यादि । णिगि, तारयति, प्रतारयति, तारयतः० ॥ भाक ॥ तार्यते, विप्रतार्यते, तार्येते० ॥ अद्यतनी ॥ ङे, अतीतरत्, अतीतरताम्, अतीतरन्० ॥ भाक ॥ अतारि, अतारिषाताम्, अतारयिषातामित्यादि भूवत् ॥ तरन् । तीर्यमाणम् । तरिष्यन्, तरीष्यन् । तरिष्यमाणम्, तरीष्यमाणम्, तारिष्यमाणम् । वितितीर्वान् । वितलिराणम् । काने पूर्वं द्विलं पश्चात् इरादेशः, स्वरविधित्वात् । "ऋवर्णश्र्यू-"॥४।४।५७॥ इति किति नेट्, तीर्त्वा । "ॠल्वादेः-" ॥४।२।६८॥ इति तो नः । तीर्णः २ वान् । तरि २, ता, तुम् । तरी २ ता, तुम् । तार्यम् ॥ १७ ॥

ट्धें पाने । धयति, धयतः, धयन्ति०॥ भाक॥ "ईर्व्यञ्जने-"॥४।३।९७॥ ईः । धीयते, धीयेते०॥ अद्यतनी॥ "ट्धिश्वेर्वा"॥३।४।५९॥ इति ङे, अदधत्, अदधताम् । अदधन्०॥ पक्षे "ट्धाशा-"॥४।३।६७॥ इति वा सिच्लुक् । अधात्, अधाताम्, अधुः, अधाः, अधातम्०॥ सिचोऽलोपे च "यमिरमिनम्यातः-"॥४।४।८६॥ इति इट् सोऽन्तश्च । अधासीत्, अधासिष्टाम्, अधासिषुः, अधासीः, अधासिष्टम्०॥ भाक ॥ अधायि, अधायिषाताम्, अधिषाताम्, अत्र इश्वस्थाद इः । अधायिषत,

अधिषत, अधायिष्ठाः, अधिष्ठाः, अधायिषाथाम्, अधिषाथाम्, अधायि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्; अधिढ्वम्० । परोक्षादिषु दधावित्यादि सर्वं पानार्थपाधातुवत् । परं, सनि, "मिमी-" ॥४।१।२०॥ इति इत् । धित्सति । यङि, देधीयते । लुपि, दाधेति । दाधाति । "श्नश्च-" ॥४।२।९६॥ इति आलुकि, "अधश्चतुर्थ-"॥२।१।७९॥ इत्यत्र धावर्जेनेनास्यापि बर्जनात् तथोर्धत्वाभावे, दात्तः । दाधति । शेषं यङ्लुबन्तधांग्वत् । णिगि, धापयति, धापयतः०॥ भाक ॥ धाप्यते । ङे, अदीधपत् । "चल्याहार-" ॥ ३ । ३ । १०८ ॥ इत्यनेन फलवत्यपि परस्मैपदे प्राप्ते "परिमुह-" ॥३।३।९४॥ इत्यात्मनेपदे, धापयते शिशुं माता ॥ १८ ॥

दैंव् शोधने । वकारो "अवौ दाधौ दा"॥३।३।४॥ इति दासंज्ञानिषेधार्थः। दायति । गुणइति सान्वयसंज्ञासमाश्रयणादत्र न गुण ऐकारादेकारस्य हीनत्वात् । एवमग्रेऽपि । क्ये, निदायन्ते भाजनानि । अदासीत् । ददौ । ददे । दाता । दास्यति । दिदासति । दादायते । दादेति, दादाति, दादीतः । "एषाम्"॥४।२।९७॥ इति ईः । दादति । दात्वा । अवदाय । अवदातं मुखम् । अशिति शेषं यांक्वत् ॥ १९ ॥

ध्यैं चिन्तायाम् । मातुर्ध्यायति, मातरं ध्यायति । "स्मृत्यर्थ-"॥२।२।११॥ इति वा कर्म । निध्यायति; विध्यायति; अनुध्यायति ॥ भाक ॥ अनुध्यायते०॥ सप्तमी ॥ ध्यायेत् ॥ भाक ॥ ध्यायेत० ॥ अद्यतनी ॥ अध्यासीत्, अध्यासिष्टाम्, अध्यासिषुः० ॥ भाक ॥ अध्यायि, अध्यायिषाताम्, अध्यासाताम्० ॥ ध्वमि, अध्या २ द्ध्वम्, ध्वम्, अध्यायि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम् ॥ परोक्षा ॥ दध्यौ, दध्यतुः, दध्याथ दध्यिथ, दध्यिम ॥ भाक ॥ दध्ये, दध्याते०॥ आशीः ॥ "संयोगादेर्वा-" ॥४।३।९५॥ इति वा एः । ध्येयात्, ध्यायात्, ध्येयास्ताम्, ध्यायास्ताम्०॥ भाक॥ ध्यायिषीष्ट । ध्यासीष्ट० ॥ श्वस्तनी ॥ ध्याता, ध्यातारौ० ॥ भाक ॥ ध्यायिता, ध्याता, ध्यायितारौ, ध्यातारौ० ॥ भविष्यन्ती ॥ ध्यास्यति० । भाक । ध्यायिष्यते, ध्यास्यते०॥ क्रियातिपत्तिः ॥ अध्यास्यत्०॥ भाक ॥ अध्यायिष्यत, अध्यास्यत० ॥ सनि, दिध्यासति ॥ यङि, दाध्यायते, दाध्येति, दाध्याति० । णौ, ध्यापयति० । ङे, अदिध्यपत् । ध्यायति वनगुल्मं कोकिलः । ध्यापयत्येनं वनगुल्मः । अत्र "अणिक्कर्म-"॥३।३।८८॥ इति स्मृत्यर्थवर्जनान्नात्मनेपदम् । "व्यञ्जनान्तस्थ-"॥४।२।७१॥

इति ध्याबर्जनाक्तयोर्न नः। ध्यातः २ वान्। ध्यात्वा। ध्यातुम्। ध्याता। ध्येयम्। दध्यिवान् ॥ २० ॥

ग्लै हर्षक्षये । हर्षक्षयो धात्वपचयः। म्लै गात्रविनामे। विनामः कान्तिक्षयः। द्रै स्वप्ने। ध्रै तृप्तौ। एते ध्यैवत् । णिगक्तेषु तु विशेषोऽपि। ग्लै। ग्लायति। सनि, जिग्लासति। यङि, जाग्लायते। णौ, "ज्वलह्वल-"॥४।२।३२॥ इत्यनुपसर्गस्य वा ह्रस्वे ग्लपयति, ग्लापयति। सोपसर्गस्य तु न ह्रस्वः। प्रग्लापयति। अग्लपि। अग्लापि। प्राग्लापि। "व्यञ्जनान्तस्थ-"॥४।२।७१॥ इति क्तयोर्नः। ग्लानः,२ वान्। म्लै। म्लायति। सनि, मिम्लासति। यङि, माम्लायते। म्लानः। द्रै। निद्रायति; विद्रायति। निद्राणः २ वान्। निदद्रिवान्। ध्रै। ध्रायति "ऋह्रीघ्रा-"॥४।२।७६॥ इति क्तयोर्वा नः। ध्राणः२, वान्। ध्रातः २, वान्। दध्रिवान् ॥२१॥२२॥२३॥२४॥

कै गै रै शब्दे ॥ गै, गायति, गायतः०। भाक ॥ "ईर्व्यञ्ज-"॥४।३।९७॥ ईः। गीयते, गीयेते इत्यादि॥ सप्त०॥ गायेत्, गायेताम्०॥ भाक॥ गीयेत, गीयेताम्०॥ पञ्चमी ॥ गायतु० ॥भाक॥ गीयताम्०॥ ह्यस्त०॥ अगायत्०॥ भाक॥ अगीयत०॥ अद्यतनी॥."यमिरमिनम्यातः-"॥४।४।८६॥ इति इटि सेऽन्ते च। अगासीत्, अगासिष्टाम्, अगासिषुः०॥ भाक॥ अगायि, अगायिषाताम्, अगासाताम्, अगायिषत, अगासत०, अगा २ ध्वम्, ढ्ध्वम्; अगायि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्। परोक्षा ॥ जगौ, जगतुः, जगुः, जगिथ, जगाथ, जगथुः, जग, जगौ, जगिव, जगिम ॥ भाक ॥ जगे, जगाते, जगिरे०॥ आशीः ॥ गापा इति एः। गेयात्०। भाक॥ गायिषीष्ट, गासीष्ट०॥ गायि २ षीध्वम्, षीढ्वम्, गासीध्वम्०। श्वस्तनी। गाता, गातारौ०॥ भाक॥ गायिता, गाता०, ॥ भविष्यन्ती ॥ गास्यति० ॥ भाक ॥ गायिष्यते, गास्यते० ॥ क्रिया० ॥ अगास्यत् अगास्यताम्० ॥भाक॥ अगायिष्यत, अगास्यत० ॥ सनि, जिगासति। यङि, जेगीयते०। लुपि, जागेति, जागाति। शेषं स्थास्थाने। णौ, गापयति। ङे, अजीगपत्, अजीगपताम्। गायन्। गास्यन्। गीयमानम्। गास्यमानम्, गायिष्यमाणम्। जगिवान्। गीतः २ वान्॥ गा २ ता, तुम्। गीत्वा, प्रगाय। गेयम्। गातव्यम् ॥ २५ ॥

पैं शोषणे । अयं गैंवत् । णिगि तु पाययति केशान्, शोषयतीत्यर्थः । ङे, अपीपयत् ॥ २६ ॥

अथ यत्रानिट्त्वं वेट्त्वं वा न वक्ष्यते ते सर्वेऽपि सेट एव ज्ञेयाः । उखेति दण्डके, रिखु इखु वल्ग रिगु तगु लिगु गतौ, वल्गवर्जा उदितः । उदनुबन्धस्तु "उदितः स्वर-" ॥४।४।९८॥ इति नागमार्थः। एवमन्यत्रापि ज्ञेयम् । रिङ्खति । अरिङ्खीत् । रिरिङ्ख । रिङ्खिता । रिङ्खन् ॥ इङ्खति । प्रेङ्खति । प्रेङ्खाञ्चकार, प्रेङ्खन्, शाने "स्वरात्" ॥ २ । ३ । ८५ ॥ इति णे, प्रेङ्खमाणः । वल्गति० । अवल्गीत्, अवल्गिष्टाम्० । ववल्ग० । ववल्गे० । वल्गिष्यति० । वल्गन् । रङ्गति । रङ्गन् । तगुः स्खलने रूढः । लिङ्गति । आलिङ्गति, आलिङ्ग्यते । आलिङ्गीत्, आलिङ्गिष्टाम्०। आलिङ्गि, आलिङ्गिषाताम्० । आलिलिङ्ग । आलिलिङ्गिमहे ॥ आलिङ्ग्यात्० । आलिङ्गिषीष्ट० । आलिङ्गिता० । आलिङ्गिष्यति० । आलिलिङ्गिषति०। आलेलिङ्ग्यते०। आलेलिङ्गीति, आलेलिङ्क्ति । आलिङ्गयति । उल्लिङ्गयति । ङे, आलिलिङ्गत् । आलिङ्गन् । आलि ५ ङ्गिता; तुम्, तः, २ वान्, तव्यम् । आलिङ्ग्य ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

शिघु आघ्राणे, गन्धोपादाने, नेऽन्ते । शिङ्घति; निशिङ्घति । यङ्लुपि, शेशिङ्क्ति । शेषं णिदु कुत्सायामित्यस्येव ॥ ३२ ॥

लघु शोषणे, नेऽन्ते । लङ्घति०। लङ्घ्यते०। अलङ्घीत्०। ललङ्घ०। लङ्घिता०। लालङ्क्ति । लङ्घि २ त्वा, तः २, वान्, शेषं टुनदुवत् ॥ ३४ ॥

शुच शोके । शोचति । क्ये, शुच्यते । सप्तमी । शोचेत्० क्ये, शुच्येत०॥ ह्यस्तनी ॥ अशोचत्०॥ भाक ॥ अशुच्यत ॥ अद्यतनी ॥ अशोचीत्, अशोचिष्टाम्०। भाक ॥ अशोचि, अशोचिषातामित्यादि ॥ परोक्षा ॥ शुशोच, शुशुचतुः, शुशोचिथ, शुशुचिम ॥ भाक ॥ शुशुचे, शुशुचाते० ॥ आशीः ॥ शुच्यात्० ॥ भाक ॥ शोचिषीष्ट० ॥ श्वस्तनी ॥ शोचिता० ॥ भाक ॥ शोचिता, शोचितारौ० ॥ भवि० ॥ शोचिष्यति०॥ भाक ॥ शोचिष्यते० ॥ क्रियातिपत्तिः॥ अशोचिष्यत्०॥ भाक ॥ अशोचिष्यत०॥ "वौ व्यञ्ज-"॥४।३।२५॥ क्त्वासनोर्वा कित्त्वे, शुशुचिषति ।

शोशुच्यते, शोशोक्ति । णौ, शोचयति । ङे, अशूशुचत् । शुचितः । शुचित्वा, शोचित्वा । शोचि २ ता, तुम् । शोचितव्यम् ॥ ३५ ॥

कुञ्च कौटिल्याल्पीभावयोः । सङ्कुञ्चति; आकुञ्चति । कुच्यते । अकुञ्चीत्० । चुकुञ्च०। चुकुञ्चे०। सङ्कुच्यात्०। कुञ्चिष्यति०। सङ्कुचितः। "नो व्यञ्जन-"॥४।२।४५॥ इति न लुक्। सङ्कुच्य । सङ्कुञ्चि३ता, तुम्, तव्यम् ॥ ३६ ॥

लुञ्च अपनयने । अनुपयुक्तापासने । लुञ्चति, लुच्यते। अलुञ्चीत्, अलुञ्चिष्टाम्०। अलुञ्चि०। लुलुञ्च०। लुच्यात्०। लुञ्चिषीष्ट०। लुञ्चिष्यति० । लुलुञ्चिषति० । लोलुच्यते०। लोलुञ्चीति, लोलुङ्क्ति, लोलुक्तः, लोलुचति०। लुञ्चयति। अलुलुञ्चत्। लुञ्चन्। लुञ्चिष्यन्, लुच्यमानम् । किस्वान्न लुकि, लुलुच्वान् । लुलुचानम्। "ऋत्तृष-"॥४।३।२४॥ इति वा कित्त्वे, लुञ्चित्वा लुचित्वा। लुञ्चि२ता, तुम्, तव्यम्। लुचितः, २ वान्। लुञ्चित इत्यप्यन्ये ॥ ३७ ॥

अर्च पूजायाम् ॥ अर्चति; अभ्यर्चति०॥ क्ये, अर्च्यते ॥ ह्यस्तनी। आर्चत्०। भाक ॥ आर्च्यत० ॥ अद्यतनी ॥ आर्चीत्, आर्चिष्टाम्, आर्चिषुः, आर्चीः, आर्चिष्टम्, आर्चिष्ट, आर्चिषम्, आर्चिष्व, आर्चिष्म ॥ भाक ॥ आर्चि, आर्चिषाताम्, आर्चिषत, आर्चिष्ठाः, आर्चिषाथाम्, आर्चिड्ढ्वम्, आर्चिध्वम्, आर्चिषि, आर्चिष्वहि, आर्चिष्महि॥ परोक्षा॥"अनातो नश्चान्त-"॥४।१।६९॥ इति पूर्वस्य आ, नोऽन्तश्च। आनर्च, आनर्चतुः आनर्चुः "स्क्रसृ-"॥४।४।८१॥ इति इटि, आनर्चिथ, आनर्चथुः आनर्च, आनर्च, आनर्चिव, आनर्चिम ॥ भाक॥ आनर्चे, आनर्चाते, आनर्चिरे, आनर्चिषे०॥ आशीः॥ अर्च्यात्, अर्च्यास्ताम्०॥ भाक॥ अर्चिषीष्ट, अर्चिषीयास्ताम्०॥ श्वस्तनी ॥ अर्चिता, अर्चितारौ०॥ भाक ॥ अर्चिता, अर्चितारौ० ॥ भविष्यन्ती ॥ अर्चिष्यति० ॥ भाक ॥ अर्चि९ष्यते, ष्येते, ष्यन्ते० ॥ क्रियातिपत्तिः ॥ आर्चिष्यत्०॥ भाक ॥ आर्चिष्यत०, आर्चिष्यन्त ॥ सनि, अर्चिचिषति० । णिगि, अर्चयति । ङे, आर्चिचत्। णौ सनि, अर्चिचयिषति ॥ आनर्च्वान् । आनर्चानम् । अर्चितः, २ वान् । अर्चित्वा ॥ ३८ ॥

अञ्चू गतौ च, चात्पूजायाम्। अञ्चति, अञ्चतः, अञ्चन्ति ॥ क्ये, अञ्च्यते, इत्यादि। सर्वं पूजायां नलोपाभावादर्चवद्वक्तव्यम्। नवरं क्तक्तवतुक्त्वासु,"लुभ्यञ्चेः-"

॥४।४।४४॥ इतीटि, अञ्चिता अस्य गुरवः। अञ्चितवान् गुरून्। शिरोऽञ्चित्वेव संवहन्॥ गतौ त्वेवम्-अञ्चति; उदञ्चति; अन्वञ्चति; अञ्चतः०॥ क्ये, अच्यते०॥ "अञ्चोऽनर्चे-"॥४।२।४६॥ इति क्ङिति न लुक्॥ अद्यतनी॥ आञ्चीत्, आञ्चिष्टाम्०॥ परोक्षा॥ आनञ्च।"इन्ध्यसंयोग-"॥४।३।२१॥ इति कित्त्वाभावे, आनञ्चतुः०, आनञ्चिम॥ भाक॥ आनञ्चे॥ आशीः॥ अच्यात्, अच्यास्ताम्०॥ भाक॥ अञ्चिषीष्ट०॥ श्वस्तनी॥ अञ्चिता०॥ भविष्यन्ती। अञ्चिष्यति०। क्रियातिपत्तिः। आञ्चिष्यत्०। सनि, अञ्चिचिषति। णौ, अञ्चयति। ङे, आञ्चिचत्। क्तसौ कित्त्वान्न लुकि, आचिवान्। "ऊदितो वा"॥४।४।४२॥ इति क्त्वायां वेटि, अक्त्वा, अञ्चित्वा। उदक्तमुदकं कूपात्॥ ३९॥

वञ्चू चञ्चू गतौ॥ वञ्चति, वञ्चतः०॥ क्ये॥ वच्यते॥ अद्यतनी॥ अवञ्चीत्, अवञ्चिष्टाम्०॥ परोक्षा॥ ववञ्च, ववञ्चिरथ, म॥ वच्यात्०। वञ्चिष्यति०। विवञ्चिषति०। यङि, "वञ्चस्रंस-"॥४।१।५०॥ इति न्यागमे वनीवच्यते। यङ्लुपि, वनीवञ्चीति०, वनीव[illegible], वनीवक्तः, वनीवचति। णौ, "चल्याहारार्थ-" ॥३।३।१०८॥ इति परस्मैपदे, अहिं वञ्चयति, गमयतीत्यर्थः। णिगन्तात्तु प्रलम्भेन वर्त्तमानात् "प्रलम्भे गृधिवञ्चेः"॥ ३।३।८९॥ इत्यात्मनेपदम्, बालं वञ्चयते॥ उदित्वात् क्त्वायां वेट्, वक्त्वा। इटि "ऋत्तृष-"॥४।३।२४॥ इति क्त्वो वा कित्त्वे, वचित्त्वा, वञ्चित्त्वा। वेट्त्वात् क्तयोर्नेट्, वक्तः। वक्तवान्। वञ्चित इति तु वञ्चिण् प्रलम्भने इत्यस्य॥ ४०॥

लाछु लक्षणे। लाञ्छति। लक्षयतीत्यर्थः, अङ्कयतीति वा। अलाञ्छीत्०। ललाञ्छ०। यङ्लुपि, लालांष्टि०। शेषं वाछुवत्॥ ४१॥

वाछु इच्छायाम्। वाञ्छति। क्ये, वाञ्छ्यते। अद्यतनी। अवाञ्छीत्, अवाञ्छिष्टाम्०॥ भाक॥ अवाञ्छि, अवाञ्छिषाताम्०॥ परोक्षा॥ ववाञ्छ, ववाञ्छतुः, ववाञ्छि २ थ, म॥ भाक॥ ववाञ्छे, ववाञ्छाते०॥ आशीः॥ वाञ्छ्यात्०॥ भाक॥ वाञ्छिषीष्टेत्यादि। विवाञ्छिषति। वावाञ्छ्यते। वावाञ्छीति। छस्य शत्वे "यज-" ॥२।१।८७॥ इति षत्वे, वावांष्टि, वावांष्टः, वावाञ्छति, छीषि, ष्ठः, छीमि, श्मि। वस्य विकल्पेनानुनासिकत्वात् "अनुनासिके चच्छ्वः-"॥४।१।१०८॥ इति छः शत्वे

वावाँश्त्रः । पक्षे, वावांच्छ्त्रः। वावांश्मः ॥ भाक ॥ वावाञ्छ्यते । हौ छस्य शत्वे षत्वे "हुधुट-" ॥४।२।८३॥ इति हेर्धौ "तृतीय-" ॥१।३।४९॥ इति षस्य डत्वे "तवर्गस्य-"॥१।३।६०॥ इति ढिः । वावांढि० ॥ ह्यस्तनी ॥ अवावाञ्छीत्। छस्य शत्वे "व्यञ्जनाद्देः-"॥४।३।७८॥ इति दिवः "पदस्य"॥ २ । १ । ८९ ॥ इति शस्य च लुकि। अवावान्, अवावांष्टाम्, अवावाञ्छुः, अवावाञ्छीः, अवावान् ॥ भाक ॥ अवावाञ्छ्यत०॥ अद्यतनी ॥ अवावाञ्छीत्, अवावाञ्छिष्टाम्० ॥ भाक ॥अवावाञ्छि, अवावाञ्छिषाताम्०॥ परोक्षा ॥ वावाञ्छांचकारेत्यादि ॥ आशीः ॥ वावाञ्छ्यात्०॥ भाक ॥ वावाञ्छिषीष्ट०॥ भविष्यन्ती ॥ वावाञ्छिष्यति०। णौ, वाञ्छयति । ङे, अववाञ्छत् ॥ ४२ ॥

मुर्छा मोहसमुच्छ्राययोः । मूर्छति । मूर्छ्यते ॥ अद्यतनी ॥ अमूर्छीत्, अमूर्छिष्टाम्० ॥ भाक ॥ अमूर्छि, अमूर्छिषाताम्०॥ परोक्षा ॥ मुमूर्छ, मुमूर्छतुः, मुमूर्छिर थ, व ॥ भाक ॥ मुमूर्छे०॥ आशीः॥ मूर्छ्यात्०। मूर्छिषीष्टेत्यादि। मुमूर्छिषति०। मोमूर्छ्यते०। मोमूर्छीति । "राल्लुक्" ॥४।१।११०॥ इति धुडादौ छस्य लुकि "लघोः-" ॥४।३।४॥ इति गुणे, मोमोर्त्ति, मोमूर्त्तः, मोमूर्छति ॥ क्ये, मोमूर्छ्यते ॥ ह्यस्तनी ॥ अमोमूर्छीत् । "राल्लुक्" ॥ ४ । १ । ११० ॥ इति छस्य लुकि "व्यञ्जनाद्देः-" ॥ ४ । ३ । ७८ ॥ इति दिव्लुकि उपान्त्यगुणे च, अमोमोः, अमोमूर्त्ताम्०॥ अद्यतनी ॥ अमोमूर्छीत्, अमोमूर्छिष्टाम्०॥ भावे ॥ अमोमूर्छि० । णौ, मूर्छयति । ङे, अमुमूर्छत्। आदित्त्वात् क्तयोरिडभावे मूर्त्तः, २ वान्। मूर्छेति तु भिदादित्वादङि, मूर्च्छा सञ्जाताऽस्येति तारकादित्वात् इते, मूर्छितः । "नवा भावारम्भे" ॥४।४।७२॥ इति वेडभावे मूर्च्छितं मूर्त्तमनेन, प्रमूर्त्तः । प्रमूर्छितः ॥ ४३ ॥

व्रज गतौ। व्रजति; प्रव्रजति । प्रव्रज्यते ॥ अद्यतनी ॥ प्राव्राजीत्, अत्र "वदव्रज-"॥४।३।४८॥ इति वृद्धिः।प्राव्राजिष्टाम्, प्राव्राजिषुः॥भावे॥ प्राव्राजि ॥ परोक्षा ॥ प्रवव्राज। "स्क्रसृ-"॥४।४।८१॥ इतीटि, प्रवव्रजिरथ, म। व्रज्यात्। व्रजिता। व्रजिष्यति। अव्रजिष्यत् । प्रविव्राजिषति। वाव्रज्यते। वाव्र २ जीति, क्ति, वाव्रक्तः, वाव्रजति । वाव्र८जीषि, क्षि, क्थः, क्थ। जीमि, ज्मि, ज्वः, ज्मः। क्ये, वाव्रज्यते

॥ सप्तमी ॥ वाव्रज्यात्० ॥ पञ्चमी ॥ हौ, वाव्रग्धि ॥ ह्यस्तनी ॥ अवाव्रजीत्, अवाव्रक्, अवाव्रक्ताम्, अवाव्रजुः ॥ अद्यतनी ॥ अवाव्राजीत्, अवाव्राजिष्टाम्, अवाव्राजिषुः ॥ परोक्षा ॥ वाव्रजाञ्चकार३ । वाव्रज्यात् । वाव्रजिष्यति । णौ, प्रव्राजयति । प्रव्राज्यते । ङे, प्राविव्रजत् । व्रजन् । व्रजिष्यन् । वव्रज्वान् । वव्रजानम् । व्रजितः, २ वान् । व्रजित्वा । व्रजितुम् ॥ ४४ ॥

अज क्षेपणे च । चाद्गतौ । अजति । "क्रियाव्यति-" ॥ ३ । ३ । २३ ॥ इति गत्यर्थवर्जनाद्गतौ नात्मनेपदम्, व्यत्यजन्ति ग्रामम् । क्षेपणे त्वात्मनेपदमेव, व्यत्यजन्ते । आशिति, "अघञ्क्यप्-" ॥ ४ । ४ । २ ॥ इति वीं, प्रवीयते । अवैषीत् । विवाय । वीयात् । प्रविवीषति । वेवीयते । वीत्वा । प्रवीय । प्रवीतः । "त्रने वा" ॥ ४ । ४ । ३ ॥ इति वा वीं प्रवेता, प्राजिता । शेषं अशिति णींग्वत् । अयू्व्यञ्जने वा वीमिच्छन्त्यन्ये, तन्मते. प्राजिता । प्राजिष्यति । प्राजिजिषति । प्राजित इत्याद्यपि भवति ॥ ४५ ॥

अर्ज अर्जने । अर्जति, । अर्ज्यते । आर्जीत् । "अनात-" ॥ ४ । १ । ६९ ॥ इति पूर्वस्यात्वे नागमे च, आनर्ज । आनर्जे । अर्ज्यात् । अर्जिष्यति, "अयिरः" ॥ ४ । १ । ६ ॥ इति रस्य द्वित्वाभावे, अर्जिजिषति । अर्जयति । ङे, आर्जिजत् । अर्जितः । आर्जि३ ता, तुम्, तव्यम् ॥ ४६ ॥

एजृ कम्पने । एजति । ऐजीत् । आमि, एजाञ्चकार । ऋदित्वात् "उपान्त्यस्य-" ॥ ४ । २ । ३५ ॥ इति ह्रस्वाभावे, माभवानेजिजत् । शेषं ओणृवत् ॥ ४७ ॥

ट्वोस्फूर्जा वज्रनिर्घोषे । स्फूर्जति । क्ये, स्फूर्ज्यते ॥ अद्यतनी ॥ अस्फूर्जीत् ॥ परोक्षा ॥ पुस्फूर्ज ॥ आशीः ॥ स्फूर्ज्यात् ॥ भवि० ॥ स्फूर्जिष्यति । यङि, पोस्फूर्ज्यते । लुपि, पोस्फूर्जीति, पोस्फूर्क्ति । पोस्फू१०र्क्तः, र्जति, र्जीषि, र्क्षि, र्क्थः, र्क्थ, र्जीमि, र्ज्मि, र्ज्वः, र्ज्मः ॥ ह्यस्त० ॥ दिवि "रात्सः" ॥ २ । १ । ९० ॥ इति नियमात् संयोगान्तलुगभावे, अपोस्फू११र्क्, र्जीत, र्क्ताम्० ॥ अद्य० ॥ अपोस्फूर्जीत्, अपोस्फूर्जिष्टामित्यादि । स्फूर्जि ३ त्वा, ता, तुम् । उदित्वात् क्तयोस्तस्य नत्वे आदित्त्वाच्चेडभावे णत्वे च स्फूर्ग्णः, स्फूर्ग्णवान् । "नवा भावारम्भे" ॥ ४ । ४ । ७२ ॥

इति वेडभावे, स्फूर्णम्, स्फूर्जितमनेन । प्रस्फूर्णः, प्रस्फूर्जितः । "भ्वादेर्नामिन-"॥२।१।६३॥ इति दीर्घे सिद्धे दीर्घोच्चारणं भ्वादेरिति दीर्घत्वस्यानित्यत्वज्ञापनार्थम्, तेन कुर्दते, कुर्दनः इत्यपि सिद्धम् ॥ ४८ ॥

कूज गुजु अव्यक्ते शब्दे। कूजति पक्षी।अकूजीत् । चुकूज। कूजितम् । गुजु । गुञ्जति सिंहः । जुगुञ्ज । गुञ्जितम् । शेषं द्वयोः स्फूर्जावत् ॥४९॥५०॥

तर्ज भर्त्सने । तर्जति । अतर्जीत् । ततर्ज । शेषं गर्जवत् ॥ ५१ ॥

गर्ज शब्दे । गर्जति। गर्ज्यते। अगर्जीत् । जगर्ज; जगर्जिम । जगर्जे। गर्जिष्यति । जिगर्जिषति । जागर्ज्यते। बहुलमेतन्निदर्शनमिति वचनात् चुरादित्वात् णिचि, गर्जयति । अजगर्जत् । क्ते, गर्जितम् ॥ ५२ ॥

ड्वावनिटौ। त्यजं हानौ, त्यागे। त्यजति; परित्यजति। क्ये, त्यज्यते॥ अद्यतनी॥ "व्यञ्जनानामनिटि"॥४।३।४५॥ इति वृद्धौ, अत्याक्षीत्। "धुट्ह्रस्वात्-"॥४।३।७०॥ इति सिज्लुकि, अत्याक्ताम्, अत्याक्षुः, अत्या ६ क्षीः, क्तम्, क्त, क्षम्, क्ष्व, क्ष्म ॥ भाक ॥ अत्याजि, अत्यक्षाताम्, अत्यक्षत, अत्यक्थाः० ॥ परोक्षा ॥ तत्याज, तत्यजतुः, तत्यजुः । "सृजि-"॥४।४।७८॥ इति वेटि, तत्यजिथ, तत्यक्थ, तत्यजथुः, तत्यज२, तत्याज, "स्क्रसृ-"॥४।४।८१॥ इतीटि तत्यजि २ व, म ॥ भाक॥ तत्यजे । त्यज्यात्। त्यक्षीष्ट। त्यक्ता। त्यक्ष्यति, ते। सनि, तित्यक्षति । यङि, तात्यज्यते। लुपि, तात्यजीति, तात्य११क्ति, जति०, ॥ ह्यस्तनी ॥ अतात्यजीत्, अतात्य१०क्, क्ताम्, जुः, जीः, क्०॥ अद्यतनी॥ "व्यञ्जनादेर्वोपान्त्य-"॥ ४ । ३ । ४७ ॥ इति वा वृद्धौ, अतात्यजीत्, अतात्याजीत् । तात्यजांचकार । तात्याजिष्यति । क्ते, तात्यजितः । णौ, त्याजयति । ङे, अतित्यजत्। त्यजन् । त्यक्ष्यन् । तत्यज्वान् । तत्यजानम् । त्यक्त २, वान्। त्यक्त्वा। सन्त्यज्य। त्यक्ता। त्यक्तुम्। घ्यणि, "त्यज्यज-"॥४।१।११८॥ इति गत्वनिषेधे, त्याज्यम्॥ ५३॥

षञ्जं सङ्गे। "दंशसञ्जः शवि"॥४।२।४९॥ इति न लोपे, सजति; प्रसजति; व्यासजति; "स्थासेनि"॥२।३।४०॥ इति षे, अभिषजति। क्ये, सज्यते ॥ ह्यस्तनी ॥ अभ्यषजत्॥ अद्यत०॥ "व्यञ्जनानामनिटि"॥४।३।४५॥ इति

वृद्धौ, असांक्षीत्, असां८क्ताम्, क्षुः, क्षीः, क्तम्, क्त, क्षम्, क्ष्व, क्ष्म ॥ भाक ॥ असञ्जि, असङ्क्षाताम्, असङ्क्थाः० ॥ परोक्षा ॥ ससञ्ज । अभिषषञ्ज । "इन्ध्यसंयोग-"॥४।३।२१॥ इति किस्त्वाभावान्नस्यालोपे, ससञ्जतुः, ससञ्जिथ, ससङ्क्थ, ससञ्जिम ॥ भाक ॥ ससञ्जे ॥ आशीः ॥ सज्यात् । सङ्क्षीष्ट ॥ श्वस्तनी ॥ सङ्क्ता ॥ भविष्य० ॥ सङ्क्ष्यति, ते ॥ क्रिया० ॥ असङ्क्ष्यत् । षणि, "णिस्तोरेव-"॥२।३।३७॥ इति नियमान्न षत्वे, सिसङ्क्षति । "स्थासेनि"॥२।३।४०॥ इति उपसर्गात् द्वित्वेऽपि, अट्यपि षत्वे, अभिषिषङ्क्षति । अभ्यषिषङ्क्षत् । यङि, सासज्यते । अनुषाषज्यते । असासाजिष्ट । लुपि, सासञ्जीति, सासङ्क्ति, सासक्तः, सासजति । हौ, सासग्धि । सासञ्जाञ्चकार । णौ, सञ्जयति । ङे, असस९ ञ्जत्, ञ्जताम्, ञ्जन्० ॥ सञ्जयाञ्चकार । षोपदेशाण्णौ सनि "सञ्जेर्वा" ॥२।३।३८॥ इति वा षत्वे, सिषञ्जयिषति, सिसञ्जयिषति । सजन् । सजन्ती । सङ्क्ष्यन् । क्वसुकानयोः परोक्षावद्भावादेव किस्त्वे सिद्धे कित्करणं संयोगान्तधात्वर्थम्, तेन संयोगान्तात् परोक्षायाः किस्त्वनिषेधेऽपि अनयोः किस्त्वान्न लुकि "अनादे-"॥४।१।२४॥ इत्येत्त्वे, सेजिवान् । सेजानम् । सङ्क्ता । सङ्क्तुम् । प्रसक्तः, २ वान् । प्रसक्तव्यम् । क्ते ऽनिट्त्वाद् घ्यणि गत्वे, प्रसङ्ग्यः । "जनशोनि"॥४।३।२३॥ इति क्त्वो वा किस्त्वे, सक्त्वा, सङ्क्त्वा । यादेः क्त्वो नित्यं किस्त्वे, आसज्य; प्रसज्य ॥ ५४ ॥

कटे वर्षावर्णयोः । वृष्टौ आवरणे चार्थे । कटति । प्रकटति । एदित्वाद् "नश्वि-" ॥४।३।४९॥ इति न वृद्धौ, अकटीत् । चकाट, चकटुः । ण्यन्तस्य त्वस्य अद्यतन्यामेव प्रयोगो दृश्यते, तेन णौ ङे, प्राचीकटत् ॥ ५५ ॥

शट रुजाविशरणगत्यवसादनेषु । चतुर्ष्वर्थेषु । शटति । शट्यते ॥ शटेत् । शटतु । अशटत् ॥ अद्य० ॥ "व्यञ्जनादेर्वोपा-"॥४।३।४७॥ इति वा वृद्धौ, अशाटीत्, अशटीत्, अशाटिष्टाम्, अशाटिष्टाम्० ॥ भाक ॥ अशटि, अशाटिषाताम्० ॥ परोक्षा ॥ शशाट, शेटतुः, शेटिथ, म । शेटे ॥ आशीः ॥ शट्यात् । शटिष्यति । अश-टिष्यत् । शिशटिषति । शाशट्यते । णौ, शाटयति । ङे, अशीशटत् ॥५६॥

खिट उत्त्रासे । उत्त्रासो भयोद्गतिः उत्त्रासन च । गाः खेटति । खिट्यते । अखेटीत् । चिखेट । णौ, खेटयति । अचीखिटत् ॥ ५७ ॥

णट नृत्तौ । नताविलन्ये । हिंसायामप्येके । नटति । णपाठात् "अदुरुप-"॥२।३।७७॥इति णत्वे, प्रणटति । नायं णोपदेश इत्येके । प्रनटति । नेटतुः, नेटुः । णौ नतौ घटादित्वात् ह्रस्वे, नटयति शाखाम् । नृत्तौ हिंसायां च न ह्रस्वः, नटं नाटयति; प्रणाटयति, नर्त्तयतीत्यर्थः । चौरस्य चौरं वा उन्नाटयति । अत्र हिंसार्थत्वात्परमतेन "जासनाट-"॥ २।२।१४॥ इति कर्मणो वा कर्मत्वम् । शेषं सर्वं पठिवत् ॥ ५८ ॥

लुट विलोटने । लोटति । अलोटीत् । लुलोट । लोटिष्यति । "वौ व्यञ्ज-" ॥४।३।२५॥ इति वा कित्त्वे, लुलोटिषति, लुलुटिषति । लोलुट्यते । लोलुटीति, अत्र "इ्युक्तोपान्त्य-"॥४।३।१४॥ इति न गुणः । लोलोट्टि । "भ्राजभास-"॥ ४।२।३६॥ इति ङे वा ह्रस्वे, अलूलुटत्, अलुलोटत् । लुटिला, लोटिला । लोटि३ता, तुम्, तः ॥ ५९ ॥

अट पट कट गतौ । अटति; पर्यटति । अट्यते । आटत् ॥ अद्यतनी ॥ आटीत्, आटिष्टाम्०॥ भाक ॥ आटि, आटिषाताम् ॥ परोक्षा ॥ द्वित्वे पूर्वस्य अस्य "अस्यादेः-"॥ ४।१।६८॥ इति आः, आट, आटतुः, आटिम । आटे । अट्यात् । अटिष्यति । आटिष्यत् । सनि, अटिटिषति । "अट्यर्ति-"॥ ३।४।१०॥ इति यङि, अटाट्यते । णौ, आटयति । ङे, प्राक्स्वरे स्वरविधेः इत्यधिकारात् प्रागेव टेर्द्वित्वे पश्चाण्णेर्लुकि, आटिटत् । ओणेऋदित्करणज्ञापकात् "उपान्त्यस्य-"॥४।२।३५॥ इति ह्रस्वे कृते द्वित्वे च, माभवानटिटत् । पट । पटति । शेषं पठवत् । णौ, पाटयति । ङे, अपीपटत् । कट । कटति । "व्यञ्जनादेर्वो"॥४।३।४७॥ इति वा वृद्धौ प्राकाटीत्, प्राकटीत् । ण्यन्तस्य तु प्रपूर्वस्य प्रयोगोऽद्यतन्यामेव दृश्यते, प्राचीकटत् ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥

लुट्ठ स्तेये । नेऽन्ते । लुण्टति । अलुण्टीत् । लुलुण्ट, लुलुण्टतुः । लुण्टितः ॥ ६३ ॥

स्फट स्फुट्ट विशरणे । स्फटति वस्त्रम् । अस्फाटीत्, अस्फटीत् । भावे । अस्फाटि । पस्फाट, पस्फटतुः । णौ, स्फाटयति । ङे, अपिस्फटत् । क्ते, स्फटितम् । स्फुट्ट । स्फोटति । क्ये, स्फुट्यते । "ऋदिच्छ्वि-"॥३।४।६५॥ इति वा अङ्, अस्फुटत् ।

अस्फोटीत् ॥ परोक्षा ॥ पुस्फोट, पुस्फुटतुः स्फुट्यात् । स्फोटिष्यति । अस्फोटिष्यत् । सनि "वौ व्यञ्जनादेः-" ॥ ४ । ३ । २५ ॥ इति वा किस्त्वे, पुस्फोटिषति, पुस्फुटिषति । यङि, पोस्फुट्यते । णौ, स्फोटयति । अपुस्फुटत् । स्फुटित्वा, स्फोटित्वा । स्फुटितः ॥ ६४ ॥ ६५ ॥

रट परिभाषणे । अयं शटवत् । यङ्लुपि, रारटीति, "तवर्गस्य"॥१।३।६०॥ इति तस्य टत्वे रारट्टि, रारट्टः, रारटति, रारटीषि, "सस्य शषौ"॥१।३।६१॥ इति षे रारट्षि, रारट्ठः, रारट्ठ, रारटीमि, रारट्मि, रारट्वः, रारट्मः । क्ये, रारट्यते ॥ सप्तमी ॥ रारट्यात् ॥ पञ्चमी ॥ हौ, रारड्ढि, अत्र "हुधुटो-"॥४।२।८३॥ इति धिः; "तवर्गस्य" ॥१।३।६०॥ इति ढिः; "तृतीयस्तृतीय-"॥१।३।४९॥ इति टस्य डः ॥ ६६ ॥

पठ व्यक्तायां वाचि ॥ पठति, पठतः । शब्दार्थनिषेधात् क्रियाव्यतिहारेऽप्यनात्मनेपदे, व्यतिपठन्ति । पठ्यते । पठेत् । पठतु, पठतात् । अपठत् ॥ अद्यतनी ॥ "व्यञ्जनादेर्वो-"४।३।४७॥ इति वा वृद्धौ, अपाठीत्, अपा०ठिष्टाम्, ठिषुः, ठीः, ठिष्टम्, ठिष्ट, ठिषम्, ठिष्व, ठिष्म । पक्षे, अपठीत्, अपठिष्टां इत्यादि । अपाठि, अपाठि०षाताम्, षत, ष्ठाः, षाथाम्, ध्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि ॥ परोक्षा ॥ पपाठ, क्रियाव्यतिहारे, व्यतिपपाठ, पेठतुः, पेठुः, पेठिथ, पेठथुः, पेठ, अहं पपाठ, पपठ, पेठिव, पेठिम । पेठे । पठ्यात् । पठिषीष्ट । पठिता २ ॥ पठिष्यति । अपठिष्यत् । सनि, पिपठिषति । अपिपठि०षीत्, षिष्टाम्, षिषुः०॥ क्विपि, पिपठीः। अत्र "णषम्-"॥२।१।६०॥ इति षस्यासत्त्वात् सौ रुर्भवति "पदान्ते"॥२।१।६४॥ इति दीर्घश्च ॥ यङि, पापठ्यते । अपापठिष्ट । पापठांचक्रे३ । लुपि, पापठीति, पापट्टि, पापट्टः, पापठति, पापठीषि, पापट्षि, पापट्ठः, पापट्ठ, पापठीमि, पापट्मि, पापट्वः, पापट्मः ॥ हौ पापड्ढि ॥ ह्यस्त० । अपापठीत्, अपापट् । अद्यतनी ॥ अपापठीत्, अपापाठीत्, अपापठिष्टाम्, अपापाठिष्टाम् । पापठाञ्चकार ३ ॥ पापठ्यात् । पापठिता । णौ, पाठयति ॥ क्ये, पाठ्यते । अपीपठत् । पाठयांचकार३ । णिगन्तात् णिगि, अपीपठत् माणवकमुपाध्यायेन । पठन् । पठिष्यन् । पेठिवान् । पेठानम् । पठितः । पठितवान् । पठि ३ त्वा, तुम्, तव्यम् ॥ ६७ ॥

हठ बलात्कारे । हठति । जहाठ, जहठतुः । शेषं पठवत् ॥ ६८ ॥

क्रीडृ विहारे। क्रीडति, "क्रीडोऽकूजने"॥३।३।३३॥ इत्यात्मनेपदे, संक्रीडान्ति शकटानि।"अन्वाङ्परेः"॥३।३।३४॥ अनुक्रीडते; आक्रीडते, परिक्रीडते॥ अद्यतनी॥ अक्रीडीत्,अक्रीडिष्टाम्॥ परोक्षा॥ चिक्रीड। सनि, चिक्रीडिषति। चेक्रीड्यते। लुपि, चेक्रीडीति, चेक्रीट्टि, चेक्रीट्टः, चेक्रीडति, चेक्रीडीषि, चेक्रीट्षि, चेक्रीड्ठः, चेक्रीड्ठ, चेक्रीडीमि, चेक्रीड्मि, अत्र लघोरभावान्न गुणः। चेक्रीड्वः, चेक्रीड्मः। क्ये, चेक्रीड्यते। हौ, चेक्रीड्ढि॥ ह्यस्तनी॥ अचेक्रीडीत्, अचेक्रीट्, अचेक्रीट्टाम्, अचेक्रीडुः, अचेक्रीडीः, अचेक्रीट्। शेषं पठवत्। णौ, क्रीडयति। ऋदित्त्वान् ङे न ह्रस्वः, अचिक्रीडत्। क्ते, क्रीडितम्॥ ६९॥

लड विलासे। लडति। लत्वे, ललति; उल्ललति। लड्यते। "वदव्रज-" ॥४।३।४८॥ इति वृद्धौ, अलालीत्। ललाड; लेलुः। ललिता। णौ, लाडयति चित्रम्। लालयति बालम्। अलीललत्। लालितः॥ ७०॥

अद्ड् अभियोगे। दोपान्त्यः।"तवर्गस्य-"॥१।३।६०॥ इति दस्य डत्वे, अड्डति, अभ्यड्डति। आड्डीत्, आड्डिष्टाम्०॥ "अना-"॥४।१।६९॥ इति इत्वात्वे ने च, आनड्ड, आनड्डतुः। अड्डिष्यति। सनि, "न बदनम्-"॥४।१।५॥ इति दस्य द्वित्वाभावे, अड्डिडिषति। अन्ये तु डोपान्त्यं मन्यन्ते, "न बदनम्-"॥४।१।५॥ इति प्रतिषेधाभावात् डि इत्यस्य द्वित्वे, अडिड्डिषति। णौ, अड्डयति। ङे, आड्डिडत्। अड्डितः॥ ७१॥

रण भण कण क्वण शब्दे। शब्दः शब्दक्रिया। रणति नूपुरम्। रराण, रेणतुः, रेणुः। णौ, राणयति। "भ्राज-"॥४।२।३६॥ इति ङे वा ह्रस्वे, अरराणत, अरीरणत्। शेषं भणवत्। भण। भणति। क्ये, भण्यते। अभणीत्, अभाणीत्। अभाणि, अभणिषाताम्०। बभाण, बभणतुः, बभणुः, बभणिथ, बभणथुः, बभण, बभाण, बभण, बभणिव, बभणिम। भण्यात्। भणिषीष्ट। भणिता। भणिष्यति। अभणिष्यत्। बिभणिषति। बिभणिष्यते। यङि, बम्भण्यते। अबम्भणिष्ट। बम्भणाञ्चक्रे। लुपि, बम्भणीति, बम्भण्टि। "अहन्पञ्चम-"॥४।१।१०७॥ इति दीर्घत्वे, बम्भाण्टः, बम्भणति, बम्भणीषि, बम्भाण्षि, बम्भाण्ठः, बम्भाण्ठ, बम्भणीमि, बम्भण्मि, बम्भण्वः, बम्भण्मः। क्ये, बम्भण्यते। हौ, बम्भाण्हि॥ णौ, भाणयति। भाण्यते। "भ्राजभास-"॥४।२।३६॥ इति ङे वा ह्रस्वे, अबभाणत्, अबीभणत्।

भाणयाञ्चकार । भणन् । भाणिष्यन् । भण्यमानम् । भणिष्यमाणम् । बभण्वान् । बभणानम् । भणितः, २ वान् । भणि३त्वा, तुम्, तव्यम् । भणनीयम् । भाण्यम् । कण । कणत्यार्त्तः । चकाण । क्कण । क्कणति वीणा । चक्काण । क्काणयति । अचिक्कणत् । शेषं कणक्कणयोर्भणवत् ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥

ओणृ अपनयने । ओणति । ओण्यते । औणीत्, औणिष्टाम् । औणि । "गुरुनाम्य-" ॥३।४।४८॥ इति आमि, ओणांचकार । ओणिणिषति । ओणयति । ङे, ऋदित्वात् "उपान्त्यस्य-" ॥४।२।३५॥ इति ह्रस्वाभावे, माभवानोणिणत् । ननु नित्यत्वादन्तरङ्गत्वाच्च द्वित्वे कृते उपान्त्याभावादेव ह्रस्वो न प्राप्नोति किं ऋदित्करणेन, सत्यम्, इदमेव ऋदित्करणं ज्ञापकम्, द्वित्वं उपान्त्यह्रस्वो बाधते, तेनान्यत्रापि पूर्वं ह्रस्वे कृते पश्चाद्द्वित्वम्, माभवानशिशत् । माभवानटिटत् । ओणित्वा, ओणिता, ओणि२ तः, तवान् । ओणितुम् ॥ ७६ ॥

चितै संज्ञाने । चेतति । अचेतीत् । चिचेत । "वौ व्यञ्जन-" ॥४।३।२५॥ इति क्त्वासनोर्वा कित्त्वे, चिचितिषति, चिचेतिषति । चितित्वा, चेतित्वा । ऐदित्त्वाद् "डीयश्वै-" ॥४।४।६१॥ इति क्तयोर्नेट् । चित्तः२ वान् ॥ ७७ ॥

अत सातत्यगमने । अतति । अयं अटवत् । नवरं न यङ् ॥ ७८ ॥

च्युतृ आसेचने । आसेचनमीषत्सेकः । चुतृ स्चुतृ स्च्युतृ क्षरणे । क्षरणं स्रवणम् । एते चत्वारोऽपि सदृशसाधनका एव, नवरमन्त्ययोः "सस्य शषौ" ॥ १।३।६१॥ इति सस्य शः । च्योतति । चोतति । श्चोतति । श्च्योतति । अन्तिमो दृश्यते, निःश्च्योतति । "ऋदित्वादृदिच्छ्वि-" ॥ ३।४।६५॥ इति वाऽङि, अश्च्युतत्, अश्च्योतीत्, अश्च्युतताम्, अश्च्योतिष्टाम् । "अघोषे शिटः" ॥४।१।४५॥ इति द्वित्वे पूर्वस्य शोलुकि, चुश्च्योत, चुश्च्युततुः, चुश्च्युतुः । श्च्युत्यात् । श्च्योतिषीष्ट । श्च्योतिता । श्च्योतिष्यति । "वौ व्यञ्जनादेः" ॥४।३।२५॥ इति क्त्वासनोर्वा कित्त्वे चुश्च्युतिषति, चुश्च्योतिषति । चोश्च्युत्यते । चोश्च्युतीति, चोश्च्योत्ति । णौ, श्च्योतयति । अचुश्च्युतत् । श्च्युतित्वा, श्च्योतित्वा । "उतिशवर्ह-" ॥४।३।२९॥ इति क्तयोर्वा कित्त्वे श्च्युतितम्, श्च्योतितम् । एवमन्ये त्रयोऽपि, नवरं चुतो ङे, अचूचुतत् ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥

अतु बन्धने । नेऽन्ते । अन्तति । अन्त्यते । आन्तीत् । आनन्त । अन्तिता । अन्तिष्यति । अन्तितिषति । अन्तयति । आन्तितत् । अन्ति२त्वा, तः, ॥८३॥

कित निवासे । धातूनामनेकार्थत्वात् "कितः संशयप्रती-"॥३।४।६॥ इति स्वार्थे सनि, विचिकित्सति मे मनः, संशेत इत्यर्थः ॥ चिकित्सति आतुरं वैद्यः, प्रतिकरोतीत्यर्थः । क्ये, चिकित्स्यते इत्यादि सन्नन्तभूवत् । इच्छासनि तु चिकित्सिषति । निग्रहविनाशौ प्रतीकारस्यैव भेदौ, तेनात्रापि भवति । क्षेत्रे चिकित्स्यः पारदारिकः, निग्राह्य इत्यर्थः । चिकित्स्यानि क्षेत्रे तृणानि, विनाशयितव्यानीत्यर्थः ॥ ८४ ॥

खादृ भक्षणे । खादति । क्ये, खाद्यते । अखादीत् । चखाद । सनि, चिखादिषति । चाखाद्यते । चाखादीति; चाखात्ति । णौ, खादयत्योदनं मैत्रेण चैत्रः, अत्र "गतिबोध-"॥२।२।५॥ इति खादिवर्जनादणिक्कर्तुर्न कर्मत्वम्, "चल्याहार-" ॥३।३।१०८॥ इति फलवत्यपि परस्मैपदं च । ऋदित्त्वात् ह्रस्वाभावे, अचखादत् । णौ सनि, चिखादयिषति । खादितः ॥ ८५ ॥

गद व्यक्तायां वाचि । गदति । निगदति । "नेर्ङ्गादा-"॥२।३।७९॥ इति नेर्णत्वे, प्रणिगदति । प्रण्यगदत् । प्रण्यागदत् । "पदेऽन्तर-"॥२।३।९३॥ इत्यत्राङोवर्जनादाङ्व्यवायेऽपि णः । क्ये, गद्यते । अगादीत्, अगदीत् । जगाद, जगदतुः, जगदुः । जिगदिषति । जागद्यते । जागदीति, जागत्ति । शेषं पठवत् ॥ ८६ ॥

अदु बन्धने । नेऽन्ते । अन्दति । आनन्द । अतुवत् ॥ ८७ ॥

इदु परमैश्वर्ये । परमेशनाक्रियायाम् । नेऽन्ते । इन्दति । ऐन्दीत् । आमि, इन्दांचकार । इन्दिदिषति । इन्दितः ॥ ८८ ॥

णिदु कुत्सायाम् । नेऽन्ते; निन्दति । णोपदेशाण्णत्वे, प्रणिन्दति । परिणिन्दति । अग्रे वाछुवत् । निनिन्दिषति । नेनिन्द्यते । नेनिन्दीति, नेनिन्तः । दिवि, अनेनिन्दीत्, अनेनिन्, अत्र परे गुणे दलोपस्यासत्त्वादुपान्त्याभावान्न गुणः ॥ अद्यतनी ॥ अनेनिन्दीत्, अनेनिन्दिष्टाम् । णौ, निन्दयति । ङे, अनिनिन्दत् । निन्दि२तः, त्वा, तुम् । "निंसनिक्षनिन्दः कृति वा"॥२।३।८४॥ इति वा णत्वे, प्रणिन्दनीयम्, प्रनिन्दनीयम् ॥ ८९ ॥

टुनदु समृद्धौ । नेऽन्ते । नन्दति । नोपदेशात्त्र णः, प्रनन्दति । क्ये, नन्द्यते । नन्दतु, नन्दतात्०॥ अद्यतनी ॥ अनन्दीत्, अनन्दिष्टाम्, अनन्दिषुः०। भाक । अनन्दि । नन्द्यात् । नन्दिष्यति । निनन्दिषति । नानन्द्यते । नान १२ न्दीति, न्ति, न्तः, दति० ॥ ह्यस्तनी ॥ अना११नन्, नन्दीत्, नन्ताम्, नन्दुः०॥ अद्यतनी ॥ अनानन्दीत् । णौ, नन्दयति । ङे, अननन्दत् । नन्दितः, २ वान् ॥ ९० ॥

क्रदु रोदनाऽऽह्वानयोः । नेऽन्ते । क्रन्दति, आक्रन्दति । चक्रन्द । शेषं नन्दतिवत् ॥ ९१ ॥

स्कन्दृं गतिशोषणयोः । अनिट् । स्कन्दति । "वेः स्कन्दोऽक्तयोः"॥२।३।५१॥ इति वा षत्वे; विष्कन्दति; विस्कन्दति । "परेः"॥२।३।५२॥ इति वा षे, परिष्कन्दति; परिस्कन्दति । आस्कन्दति । क्ये, स्कद्यते । ऋदित्वाद्वाऽङि "नो व्यञ्जन-"॥४।२।४५॥ इति नलुकि, अस्कदत्, अस्कदतामित्यादि । पक्षे, अस्कान्त्सीत्, अस्कान्ताम्, अस्कां ७ त्सुः, त्सीः, त्तम्, त्त, त्सम्, त्स्व, त्स्म ॥ भाक ॥ अस्कन्दि, अस्कं ९ त्साताम्, त्सत, त्थाः, त्साथाम्, द्ध्वम, द्ध्वम्, त्सि, त्स्वहि, त्स्महि । चस्कन्द, चस्कन्दतुः, चस्कन्दुः, चस्कंत्थ, चस्कन्दिथ । स्कन्ता । स्कन्त्स्यति । चिस्कन्त्साति । याङि, "वञ्चस्रंस-"॥४।१।५०॥ इति न्यागमे, चनीस्कद्यते । चनीस्कन्दीति, चनीस्कन्ति, चनीस्कन्तः, चनीस्कन्दति । स्कन्दयति । अचस्कन्दत् । स्कन्दत् । चस्कद्वान् । स्कन्नः । स्कन्नवान् । क्तयोर्न षः, विस्कन्नः, २ वान् । "परेः" ॥२।३।५२॥ इति क्तयोरपि वा षत्वे, परिस्कन्नः, परिष्कण्णः । "स्कन्दस्यन्दः"॥४।३।३०॥ इति क्त्वः कित्त्वाभावे, स्कन्त्वा । प्रस्कन्द्य । यपः कित्त्वमित्यन्ये, प्रस्कद्य । स्कन्त्ता । स्कन्तुम् । सर्वधातूनां बहुलं वेडित्यन्ये । आस्कन्दिषम्, आस्कांत्सम् । आस्कन्त्तव्यम, आस्कन्दितव्यमित्यादि । एवमन्यधातुष्वपि । पक्त्वा, पचिता । पट्टा, पटिता इत्यादि । इदं च मतं "धूगौदितः" ॥४।४।३८॥ इत्यत्र व्यवस्थितविभाषाविज्ञानादागमशास्त्रमनित्यमिति न्यायाच्च स्वमतेऽपि संगृहीतं द्रष्टव्यम् ॥ ९२ ॥

षिधू गत्याम् । सेधति । "गतौ सेधः"॥२।३।६१॥ इति न षत्वे, अभिसेधति । अनुसेधति गाः । अभिगच्छति, अनुगच्छतीत्यर्थः । असेधीत् । सिषेध । सेधि-

ष्यति । "णिस्तोरेव-"॥२।३।३७॥ इति नियमेन षत्वाभाव; सिसिधिषति, सिसेधिषति । सेषिध्यते । सेधयति । असीषिधत् । सिषेधयिषति । "ऊदितो वा"॥४।४।४२॥ इति क्त्वि वेटि, "वौ व्यञ्जन-"॥ ४ । ३ । २५ ॥ इति वा कित्त्वे च । सिद्धा, सेधित्वा, सिधित्वा । क्त्वि वेड्त्वात् क्तयोर्नेट् । सिद्धः । सिद्धवान् । एवमभ्यनुपूर्वोऽपि । अनेकार्थत्वेन गतेरन्यत्र तु, "स्थासेनि-"॥२।३।४०॥ इति अट्यपि द्वित्वेऽपि, उपसर्गात्परस्य सस्य षत्वे, निषेधति । प्रनिषेधति । न्यषेधत् । न्यषेधीत् । "नाम्यन्तस्थ-"॥२।३।१५॥ इति षत्वे, निषिषेध, निषिषिधिम । निषेधिष्यति । निषिषिधिषति, निषिषेधिषति । प्रत्यषिषिधिषत्, प्रत्यषिषेधिषत् । निषेषिध्यते । निषेषिधीति । निषेषिधयति । न्यषीषिधत् । निषिषेधयिषति । निषिध्य । निषिद्धः ॥ ९३ ॥

ध्वन स्वन शब्दे ॥ ध्वनति, प्रतिध्वनति । अध्वनीत्, अध्वानीत् । दध्वान । ध्वनिता । ध्वनिष्यति । दन्ध्वन्यते । दन्ध्वनीति, दन्ध्वन्ति । शब्दे घटादित्वाण् णौ ह्रस्वे, ध्वनयति । अन्यत्र ध्वानयति । ङे, अदिध्वनत् । ध्वनितः, २ वान् ॥ स्वन । स्वनति । अस्वानीत्, अस्वनीत् । सस्वान । "जृभ्रम-"॥४।१।२६॥ इति वा एत्वे, स्वेनुः सस्वनुः । स्वनिता । स्वनितो मृदङ्गः । "व्यवात्स्वनोऽशने"॥ २ । ३ । ४३ ॥ इति द्वित्वेऽपि अट्यपि षत्वे, विष्वणति; अवष्वणति । व्यष्वणत् । अवाष्वणत् । व्यष्वाणीत्, व्यष्वणीत् । अवाष्वाणीत्, अवाष्वणीत् । विषष्वाण । अवषष्वाण । विषष्वणतुः । विष्वणिता । विषिष्वणिषति । अवषिष्वणिषति । विषंष्वण्यते । अवषंष्वण्यते । विष्वाणयति । व्यषिष्वणत् । अवाषिष्वणत् । विष्वाणितः । अशनादन्यत्र तु न षत्वम्, अवास्वनत् गजः । विसस्वान मेघः ॥ ९४ ॥ ९५ ॥

गुपौ रक्षणे । "गुपौधूप-"॥ ३ । ४ । १ ॥ इति स्वार्थे आयः । गोपायति । "अशवि ते वा"॥३।४।४॥ इति वाऽऽये, गोपाय्यते, गुप्यते । अद्यतनी ॥ अगोपायीत् । औदित्वात् । "धूगौदितः"॥४।४।३८॥ इति वेटि, "व्यञ्जनानामनिटि"॥४।३।४५॥ इति वृद्धौ, अगौप्सीत् । अगोपीत् । अगोपायि, अगोपि, अगोपायिषाताम् । "सिजाशिष-"॥४।३।३५॥ इति कित्त्वे, अगुप्साताम्, अगोपि-

षाताम्। ध्वमि, अगोपायि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्; अगुब्द्ध्वम्, अगुब्ध्वम्, अगोपि २ ध्वम्, ड्ढ्वम्। गोपायांचकार, जुगोप। गोपायांचक्रतुः, जुगुपतुः। गोपाय्यात्, गुप्यात्। गोपायिषीष्ट, गुप्सीष्ट, गोपिषीष्ट। गोपायिता, गोप्ता, गोपिता। एवमन्यत्रापि। जुगोपायिषति। "उपान्त्ये"॥४।३।३४॥ इति कित्त्वे, जुगुप्सति। "वौ व्यञ्जन-"॥४।३।२५॥ इति वा कित्त्वे, जुगोपिषति, जुगुपिषति। जोगुप्यते। जोगुपीति, जोगोप्ति। औनिर्देशात् यङ्लुपि न आयः। गोपाययति, गोपयति। आयस्यादन्तत्वेन "उपान्त्य-"॥ ४।२।३५॥ इति ह्रस्वाभावे, अजुगोपायत्, अजूगुपत्। गोपायन्। गोपायिष्यन्। गोपायितः, २ वान्। वेट्त्वात्, "वेटोऽपतः"॥४।४।६२॥ इति नेटि, गुप्तः, २ वान्। गोपायित्वा, गुप्त्वा, गोपित्वा, गुपित्वा। गोपायिता, गोप्ता, गोपिता। गोप्यम्॥ ९६॥

तपं धूप सन्तापे। आद्योऽनिट्। तपति। "निसस्तप-"॥२।३।३५॥ इति षत्वे, निष्टपति स्वर्णम्, सकृदग्निं स्पर्शयतीत्यर्थः। आसेवायां तु न षः। पुनः २ करणमासेवा। निस्तपति, पुनः २ तपतीत्यर्थः। "व्युदस्तपः"॥३।३।८७॥ इत्यात्मनेपदेऽकर्मणि, वितपते; उत्तपते रविः, दीप्यते इत्यर्थः। स्वाङ्गे कर्मणि, वितपते; उत्तपते पृष्ठम्, तापयतीत्यर्थः। क्ये, तप्यते। अताप्सीत्, अताप्ताम्, अताप्सुः। अतापि, अतप्साताम्, अतप्सत, अत ७ प्थाः, प्साथाम्, ब्ध्वम्, ब्द्ध्वम्, प्सि, प्स्वहि, प्स्महि। तताप, तेपतुः, तेपुः, तेपिथ, ततप्थ, तेपथुः, तेप, तताप, ततप, तेपिव, तेपिम। तेपे, तेपाते, तेपिरे, तेपिषे। तप्यात्। तप्सीष्ट। तप्ता, २। तप्स्यति। "तपेस्तपः कर्मकात्"॥३।४।८५॥ इति कर्त्तर्यात्मनेपदम्, क्यश्च। तप्यते तपः साधुः। तेपे तपांसि साधुः। तपिरत्र करोत्यर्थः। "तपः कर्त्रनु-"॥३।४।९१॥ इति न ञिच्। तेन कर्मकर्त्तरि, अन्ववातप्त कितवः स्वयमेव। कर्त्तरि, अतप्त तपांसि साधुः। अनुतापग्रहणाद्भावे कर्मणि च अन्वतप्त चैत्रेण, पश्चात्तापः कृत इत्यर्थः। अन्ववातप्त पापः पापेन, पश्चात्तापं कारित इत्यर्थः। तितप्सति। तातप्यते। तात१२पीति, प्ति, प्तः, पति०॥ शब्निर्देशात् यङ्लुपि न षः, निस्तात २ प्ति, पीति। तातपत्। तातपती। तातपितः। तातपित्वा। तापयति। अतीतपत्। तपन्, तप्यमानम्। तप्स्यन्। तप्स्यमानम्। तेपिवान्। तेपानम्। तप्तः। निष्टप्ता अरातय

इत्यत्र सदप्यासेवनं न विवक्ष्यते, तेन षत्वं सिद्धम् । तप्ता । तप्त्वा । तप्तुम् । धूप । धूपायति । धूपाय्यते । धूप्यते । अधूपायीत्, अधूपीत्, अधूपायिष्टाम्, अधूपिष्टाम्, अधूपायि, अधूपि । धूपयांचकार । दुधूप, दुधूपतुः, दुधूपुः । धूपाय्यात्, धूप्यात् । धूपायिता, धूपिता । धूपायिष्यति, धूपिष्यति । दुधूपायिषति, दुधूपिषति । दोधूप्यते । दोधूपीति, दोधूप्ति । धूपाययति, धूपयति । आयस्याऽऽदन्तत्वेन, अदुधूपायत्, अदूधुपत । धूप्यमानम्, धूपाय्यमानम् । धूपायाञ्चकृवान्, दुधूप्वान् । धूपायाञ्चक्राणम् । दुधूपानम् ॥ ९७ ॥ ९८ ॥

लप जल्प व्यक्ते वचने । लपति । आ, प्र, वि, सम्, उद्, अप, अभिपूर्वोऽपि । अयं सर्वः पठिवत्, परं यङ्लुपि, लालपीति, लालप्ति, लालप्तः, लाल ९ पति, पीषि, प्सि, प्थः, प्थ, पीमि, प्मि, प्वः, प्मः । "हुधुटो-" ॥४।२।८३॥ इति धिः, "तृतीयस्तृ-" ॥१।३।४९॥ इति बः । लालब्धि । दिवि, अलाल ३ पीत्, प्, ब् । "भ्राजभास-" ॥ ४ । २ । ३६ ॥ इति ङे, वा ह्रस्वे । अलीलपत्, अललापत् । "भ्राज-" ॥ ४ । २ । ३६ ॥ इति सूत्रे लपामिति बहुवचनं शिष्टप्रयोगानुसारेणान्येषामपि णौ ङे वा ह्रस्वार्थं, तेन अबिभ्रसत्, अबभ्रासदित्यादिसिद्धम् । जल्प । जल्पति । "क्रियाव्यतिहारेऽगति-" ॥३।३।२३॥ इत्यत्र शब्दार्थवर्जनान्नात्मनेपदम्, व्यतिजल्पति । अजल्पीत् । जजल्प । यङि, जाजल्प्यते । शेषं वांछतिवत् ॥ ९९ ॥ १०० ॥

जप मानसे च । मनोनिर्वर्त्त्ये वचने । चाद्व्यक्ते वचने । जपति । जजाप, जेपतुः, जेपुः, जेपिथ । जपिता । जपिष्यति । यङि, गर्हितं जपति जञ्जप्यते, अत्र "जपजभ-" ॥ ४ । १ । ५२ ॥ इति मुरन्तः । भृशाभीक्ष्ण्ययोस्तु वाक्यमेव । "श्वसजप-" ॥४।४।७५॥ इति क्तयोर्वा नेट् । जप्तः, २ वान् । जपितः, जपितवान् । जप्यम् । जाप्यम् । शेषं पठिवत् ॥ १०१ ॥

सृप्लृं गतौ । अनिट् । सर्पति; उपसर्पति; उत्सर्पति । क्रियाव्यतिहारे गत्यर्थवर्जनादात्मनेपदाभावे, व्यतिसर्पन्ति । क्ये, सृप्यते । लृदित्त्वादङि, असृपत् । असर्पि, असृप्साताम्, असृब्ध्वम्, असृब्द्ध्वम् । ससर्प, ससृपतुः, ससृपुः । सृप्यात् । सृप्सीष्ट । सर्प्स्यति । सिसृप्सति । कुटिलं सर्पति, सरीसृप्यते । सर्पयति ।

"ऋद्दवर्णस्य"॥४।२।३७॥ इति वा ऋः। असीसृपत्, अससर्पत्। णौ सनि, सिसर्पयिषति । सर्प्ता । सृप्त्वा । सर्प्तुम् । सृप्तः ॥ १०२ ॥

चुप मन्दायाम्। गतावित्यनुवर्त्तते, चोपति, किंचिच्चलतीत्यर्थः। अचोपीत्। चुचोप। चोपिता। णौ चल्यर्थत्वात्परस्मैपदे, चोपयति शाखाम्। अचूचुपत्॥१०३॥

चुबु वक्रसंयोगे । नेऽन्ते । चुम्बति; विचुम्बति । अचुम्बीत् । चुचुम्ब । चुम्बितुम् ॥ १०४ ॥

चमू जिमू अदने । चमति; विचमति । आङ्पूर्वस्य "ष्ठिवूक्लम्व-"॥ ४।२। १०९॥ इति शिति दीर्घत्वे, आचामति। क्ये, आचम्यते । "नश्वि-"॥४।३।४९॥ इति वृद्ध्यभावे, आचमीत् । "मोऽकमि-"॥ ४ । ३ । ५५॥ इति चमो न वृद्धिः। अचमि । आचमेस्तु स्यात् । आचामि, आचामिषाताम्। आचचाम, आचेमतुः, आचेमुः, आचेमिथ । आचेमे । आचम्यात् । आचमिष्यति । आचिचमिषति । आचञ्चम्यते । चञ्चमीति, चञ्चन्ति, चञ्चान्तः, चञ्चमति, चञ्चमीषि, चञ्चंसि । "शिड्हे-"॥१।३।४०॥ इत्यनुस्वारः; चञ्चा २ न्थः, न्थ, चञ्च ४ मीमि, न्मि, न्वः, न्मः । अत्र "मो नो म्वोश्च"॥ २ । १ । ६७॥ इति मस्य नः ॥ हौ "अहन्-पञ्चम-"॥४।१।१०७॥ इति दीर्घे "शिड्हे-"॥१।३।४०॥ इत्यनुस्वारे च, आचञ्चांहि ॥ अद्यतनी ॥ "नश्वि-"॥४।३।४९॥ इति न वृद्धौ, अचञ्चमीत्। शेषं यङ्लुबन्तपच्चिवत्। "अमोऽकम्य-"॥४।२।२६॥ इति णौ ह्रस्वाभावे, आचामयति । आचीचमत्। आचामि । आचामन् । आचमिष्यन्। आचेमिवान्। आचेमानम्। ऊदित्त्वात् क्त्वि वेट्, चान्त्वा, चमित्त्वा। आचम्य। वेट्त्वात् क्तयोर्नेट्। आचान्तः,२ वान् । आचमितुम् । आचामिता । जिम । जेमति । क्ये, जिम्यते । अजेमीत्, अजेमिष्टाम्। अजेमि, अजेमिषाताम्। जिजेम, जिजिमतुः, जिजिमुः, जिजेमिथ, जिजिमथुः, जिजिम, जिजिमिम। जिम्यात्। जेमिता । जेमिष्यति । जिजिमिषति, जिजेमिषति। जेजिम्यते । जेजिमीति, जेजेन्ति, जेजीन्तः, जेजिमति, जेजिन्वः, जेजिन्मः, हौ, जेजींहि ॥ ह्यस्तनी ॥ अजेजिमीत् । "मो नो-"॥२।१।६७॥ इति पदान्ते नः ॥ अजेजेन्, अजेजीन्ताम्, अजेजिमुः ॥ अद्यतनी ॥ अजेजेमीत् । जेजेमामास । जेजिम्यात् । जेजेमिष्यति। जेजिमितः। जेजेमित्वा, जेजिमित्वा ।

जेजेमितुम्। जेमयति। अजीजिमत्। जेमितः। जेमन्। जेमिष्यन्। जिम्यमानम्। जिजिन्वान्, अत्र "मो नो-"॥२।१।६७॥ इति नः। जिजिमानम्। जेमिता। जेमि २ तुम्, तव्यम्। ऊदित्वाद्वेटि "अहन्पञ्चम-"॥४।१।१०७॥ इति दीर्घे, जीन्त्वा। पक्षे, "वौ व्यञ्जन-"॥४।३।२५॥ इति वा कित्त्वे, जिमित्वा, जेमित्वा। वेट्त्वान्नेटि, जीन्तः, २ वान् ॥१०५॥१०६॥

क्रमू पादविक्षेपे। पदन्यासे। "क्रमो दीर्घः-"॥४।२।१०९॥ इति दीर्घे, क्रामति; "भ्रासभ्लास-"॥३।४।७३॥ इति कर्त्तरि, वा श्ये, क्राम्यति, "क्रमोऽनुपसर्गात्" ॥३।३।४७॥ इत्यात्मनेपदे, वा श्ये च, क्रमते, क्रम्यते। एवं ४ रूपाणि। उपसर्गात्तु परस्मैपदे, प्रतिक्रामति, प्रतिक्राम्यति। एवं, सम् निरति अभिपूर्वोऽपि। "वृत्तिसर्ग-" ॥३।३।४८॥ इत्यात्मनेपदे, ऋज्वस्य क्रमते बुद्धिः, न प्रतिहन्यत इत्यर्थः। युद्धाय क्रमते, उत्सहत इत्यर्थः। प्राज्ञे शास्त्राणि क्रमन्ते, स्फीतीभवन्ति। "परोपात्" ॥३।३।४९॥ पराक्रमते, परावृत्त्या क्रामति, शौर्यं वा कुरुते इत्यर्थः। उपक्रमते, समीपे गच्छतीत्यर्थः। वा श्ये। पराक्रम्यते। उपक्रम्यते। एवमन्यत्रापि॥ "वेः स्वार्थे"॥३।३।५०॥ पादन्यासे। साधु विक्रमते हंसः। स्वार्थादन्यत्र तु, विक्रामति, उत्सहत इत्यर्थः। "प्रोपादारम्भे"॥३।३।५१॥ प्रक्रमते; उपक्रमते भोक्तुम्। "आङो ज्योतिरुद्गमे"॥ ३। ३। ५२॥ आक्रमते नभोऽर्कः। ज्योतिरुद्गमादन्यत्र तु आक्रामति धूमो नभः। क्ये, क्रम्यते। हौ, क्राम। क्राम्य। सङ्क्राम। सङ्क्राम्य॥ अद्य०॥ "नश्वि-"॥४।३।४९॥ इति वृद्ध्यभावे, अक्रमीत्, मिष्टाम्, मिषुः०॥ "क्रमः"॥४।४।५३॥ इत्यात्मनेपदे नेट्। अक्रंस्त, प्राक्रंस्त, उपाक्रंस्त, अक्रंसाताम्०॥ भाक॥ "मोऽकमि-"॥४।३।५५॥ इति न ञिचि वृद्धिः, अक्रमि। आत्मने नेटि; अक्रंसाताम्, अक्रंसत, अक्रंस्थाः, अक्रंध्वम्. अक्रंद्ध्वम्०॥ परोक्षा॥ चक्राम, चक्रमतुः, चक्रमि २ थ, म। चक्रमे, चक्रमिध्वे। क्रम्यात्। क्रंसीष्ट; प्रक्रंसीष्ट; उपक्रंसीष्ट। क्रमिता। क्रन्तासे। क्रमिष्यति। क्रंस्यते। अक्रमिष्यत्, अक्रंस्यत्। प्राक्रंस्यत, उपाक्रंस्यत। सनि, चिक्रमिषति। अनुपसर्गस्य चात्मने चिक्रंसते। प्रचिक्रंसते, उपचिक्रंसते, आचिक्रंसते। अचिक्रंसिष्ट। प्राचिक्रंसिष्ट। प्रचिक्रंसिष्यते। उपचिक्रंसिष्यते। कुटिलं क्रामति चङ्क्रम्यते। "अतः"॥४।३।८२॥ इति अल्लुकि "योऽशिति"॥४।

३।८०॥ इति यलुकि, अचङ्क्रमि ९ ष्ट, षाताम्०॥ चङ्क्रमां चक्रे३ । चङ्क्रमिषीष्ट। चङ्क्रमिष्यते। लुपि, चङ्क्र २ मीति, न्ति, चङ्क्रान्तः, चङ्क्रमति॥ अद्यतनी ॥ अचङ्क्रमीत्। चङ्क्रमामास ३। भृशाभीक्ष्ण्ये तु वाक्यमेव, न तु यङ्। भृशमभीक्ष्णं वा क्रामतीति, गत्यर्थाद्भृशाभीक्ष्ण्ये कुटिलयुक्त एव यङ्, न केवले, इति केचित् । एवं "गृलुप-"॥३।४।१२॥ इति सूत्रोक्तेष्वपि परमतम्॥ णौ, "अमोऽकम्यमि-"॥४।२। २६॥ इति ह्रस्वे, क्रमयति। अचिक्रमत्। ञिणम् परे तु वा ह्रस्वे, अक्रामि, अक्रमि। क्रमयाञ्चकार। क्रामन्। क्रममाणः । आक्रामन् धूमः। कथं जगदाक्रममाणस्येति, शानेन भविष्यति । क्रस्यमाणम् । क्रंस्यमाणम्। चक्रन्वान् । "क्रमोऽनुप-"॥३।३। ४७॥ इति वात्मनेपदे विषयत्वे "तुः"॥४।४।५४॥ इत्यनेनात्मनेपदविषयत्वान्नेट् । क्रन्ता; प्रक्रन्ता; उपक्रन्ता; आक्रन्ता । अनात्मने विषयत्वे तु, क्रमिता, निष्क्रमिता। ऊदित्वात् क्त्वि वेटि "क्रमः क्त्विवा"॥४।१।१०६॥ इति वा दीर्घे, क्रन्त्वा, क्रान्त्वा, क्रमित्वा। वेट्त्वान्नेट्, क्रान्तः । क्रान्तवान् । क्रमितुम् । क्रमितव्यम् ॥ १०७ ॥

अथ द्वावनिटौ । यमूं उपरमे । यच्छति । "यमः स्वीकारे" ॥३।३।५९॥ इत्युपादात्मनेपदम्; उपयच्छते कन्याम्। "आङोयमहनः स्वेऽङ्गे च"॥३।३।८६॥ आयच्छते पाणिम्, दीर्घीकरोतीत्यर्थः । "समुदाङो यमेः-"॥३।३।९७॥ संयच्छते व्रीहीन् । उद्यच्छते भारम् । आयच्छते वस्त्रम् । "पदान्तरगम्ये वा"॥३।३।९९॥ स्वान् व्रीहीन् संयच्छते, संयच्छति वा। क्ये, यम्यते ॥ अद्यतनी ॥ "यमिरमिनम्य-" ॥४।४।८६॥ इति सोऽन्तः, इट् च । अयंसीत्, अयंसिष्टाम्, अयंसिषुः । आयंस्त कूपाद्रज्जुम्, उद्धृतवानित्यर्थः । "यमः सूचने"॥४।३।३९॥ इति सिचः कित्त्वे, "यमिरमि-"॥४।२।५५॥ इति मलुकि, उदायत, उदायसाताम्, उदायसत । "वा स्वीकृतौ" ॥४।३।४०॥ उपायत, उपायंस्त महास्त्राणि, कन्यां वा । मोपयध्वं भयम् । उपा २ यंध्वम्, यंद्ध्वम् ॥ भाक ॥ "मोऽकमि-"॥४।३।५५॥ इति अनिषेधाद् वृद्धिः। अयामि, अयंसाताम्। ध्वमि, अयन्ध्वम्, अयन्द्ध्वम्॥ परोक्षा ॥ ययाम, येमतुः, येमुः, येमिथ, ययन्थ, येमिम । येमे । यम्यात् । यंसीष्ट । यियंसति । यंयम्यते । यंयमित्वा । यंयमितः । यंयम्यमानः। लुपि, यंय २ मीति, न्ति । "यमिरमिनामि-"॥४।४।८६॥ इति मलुकि । यंयतः,

यंयमति । हौ, यंयहि ॥ ह्यस्तनी ॥ अयंयन् । अयंय १० मीत्, ताम्, मुः, न्, मीः० ॥ अद्य० ॥ अयंयंसीत् । शतरि तु, यंयच्छत् । णौ, "यमोऽपरि-"॥४।२।२९॥ इति ह्रस्वे यमयति केशान् । परिवेषणे तु, यामयत्यतिथीन् । "अणिगि प्राणि-"॥३। ३।१०७॥ इत्यस्यापवादः, "परिमुह-"॥३।३।९४॥ इत्यात्मनेपदम्, आयामयते सर्पम् । परमतेनात्र न ह्रस्वः । स्वमतेन तु भवत्येव । आयमयते । अयीयमत् । अयामि । अयमि । परिवेषणे तु, अयामि । यच्छन् । यंस्यन् । येमिवान् । यतः, २ वान् । यन्ता । ऊदित्वात् क्त्वि वेटि, यत्वा, यमित्वा । यपि "वामः" ॥४।२।५७॥ इति वाऽन्तलोपे, प्रयम्य, प्रयत्य ॥ १०८ ॥

णमं प्रह्वत्वे; नम्रत्वे । नमति । णपाठात् "अदुरुपसर्ग-"॥२।३।७७॥ इति णः, प्रणमति । परिणमति । क्ये, नम्यते । अनंसीत्, "यमिरमिनम्यात-" ॥४।४।८६॥ इति सोऽन्तः इट् च । अनंसिष्टाम्, अनंसिषुः । "मोऽकमि-"॥४। ३।५५॥ इति अनिषेधाद् वृद्धौ, अनामि, अनंसाताम्; अनंस्थाः; अनंध्वम्, अनंद्ध्वम् ॥ परोक्षा ॥ ननाम । प्रणनाम । अत्र परे द्वित्वे कार्ये णत्वशास्त्र-स्यासत्त्वात् द्वित्वे कृते णत्वम् । एवमन्यत्रापि । नेमतुः, नेमुः, नेमिथ, ननन्थ, नेमथुः, नेम, ननाम, ननम, नेमिव, नेमिम । नेमे; नेमिध्वे । नम्यात् । नंसीष्ट । नंस्यति ॥ कर्मकर्त्तरि "एकधातौ-"॥ ३ । ४ । ८६ ॥ इत्यात्मनेपदे अनंसीद्दण्डं दण्डी । अनंस्त नमते वा दण्डः स्वयमेव । परिणमति मृदं कुलालः । परि-णमते मृत् स्वयमेव । अत्र "भूषार्थ-"॥३।४।९३॥ इति निषेधात् क्यो ञिश्च न भवतः। ननु नम् अकर्मकस्तत्कथमस्य कर्मस्थक्रियत्वम् । उच्यते । अन्तर्भूतण्य-र्थत्वेन सकर्मकत्वाद्दण्डस्य कर्मकर्तृत्वम् । यत्र तु ण्यर्थो नास्ति तत्र कर्तृतैव, यथा नमति पल्लवो वातेन । एवमन्यत्रापि । निनंसति । प्राग् णत्वे पश्चात् द्वित्वे, प्रणिणंसति । नंनम्यते । नंनमीति, न्ति । "यमिरमिनमि"॥४।२।५५॥ इति मस्य लुकि, नंनतः, नंनमति, नंनमीषि, नंनंसि, नंनथः, थ, मीमि, न्मि, न्वः, न्मः, "मो नो-"॥२।१।६७॥ इति मस्य न् । हौ, नंनहि । अद्य० ॥ अनंनं-सीत् । शेषं पठिवत् । क्ते, नंनमितः । "ज्वलह्वल-"॥४।२।३२॥ इत्यनुपसर्गस्य णौ वा ह्रस्वे, नमयति, नामयति । सोपसर्गस्य तु, "अमोऽकम्यमि-"॥४।२।२६॥

इति नित्यं ह्रस्वे, प्रणमयति । उन्नमयति । अनीनमत् । प्राणीनमत् । "ज्वलह्वल-" ॥४।२।३२॥ इत्यनेन वा ह्रस्वविधानात्, ञिणम्परे इति नानूद्यते, ततो "अमोऽकम्य-"॥४।२।२६॥ इत्यनेनैव निरुपसर्गस्य सोपसर्गस्य वा ञिणम्परे णौ वा दीर्घः सिद्ध एव । अनामि, अनमि । प्राणामि, प्राणमि । नमन् । नंस्यन् । नम्यमानम् । नंस्यमानम् । नेमिवान् । नतः । नत्वा । यपि "वाम-"॥४।२।५७॥ इति वाऽन्तलुपि, प्रणत्य, प्रणम्य । नन्तुम् । नन्ता । नन्तव्यम् ॥ १०९ ॥

अम शब्दभक्त्योः; भक्तिर्भजनम् । अमति । प्रपूर्वोऽयं प्राप्तावपि, प्रामति । अम्यते । "नश्वि-"॥४।३।४९॥ इति वृद्धिनिषेधेऽपि "स्वरादेस्तासु"॥४।४।३१॥ इति वृद्धौ, आमीत्, आमिष्टाम् । "मोऽकमि-"॥४।३।५५॥ इति वृद्धिनिषेधेऽपि "स्वरादेः-"॥४।४।३१॥ इति वृद्धौ, आमि, आमिषाताम् । आम, आमतुः, आमुः । अमिता । अमिष्यति । अमिमिषति । "अमोऽकमि-"॥४।२।२६॥ इत्यत्र वर्जनान्न ह्रस्वे, आमयति । आमिमत् । आमि । आमं २ । प्रामम् २ । अमन् । अमिष्यन् । "श्वसजप-"॥४।४।७५॥ इति क्तयोर्वा नेटि, अम्यान्तः, अम्यमितः । अमि३ता, तुम्, त्वा । प्राम्य ॥ ११० ॥

अम, गम्लृं गतौ । अमिरुदाहृत एव, अर्थभेदार्थं तु पुनः पाठः । गम् । अनिट् । गच्छति । "क्रियाव्यतिहार-"॥३।३।२३॥ इति गत्यर्थनिषेधान्नात्मनेपदे, व्यतिगच्छति मिथुनम् । अकर्मणि "समो गमृच्छि-"॥३।३।८४॥ इत्यात्मनेपदे, सङ्गच्छते । कर्मणि तु सति, सङ्गच्छति सुहृदम् । क्ये, गम्यते । सङ्गम्यते ॥ ह्यस्तनी ॥ अगच्छत् । समगच्छत ॥ अद्यतनी ॥ "लृदिद्द्युतादि-"॥३।४।६४॥ इत्यङि, अगमत्, अग८मताम्, मन्, मः, मतम्, मत, मम्, माव, माम । "गमो वा"॥४।३।३७॥ इति सिजाशिषोरात्मने वा कित्त्वे "यमिरमि-"॥४।४।८६॥ इत्यन्तलोपे, "धुड्ह्रस्व-"॥४।३।७०॥ इति सिच्लुकि च, समगत, समगंस्त, समगसाताम्, समगंसाताम्०॥ भाक ॥ "मोऽकमि-"॥४।३।५५॥ इति अनिषेधाद्वृद्धौ, अगामि । समगामि । अगसाताम्, अगंसाताम्, अगसत, अगंसत, अगथाः, अगंस्थाः, अगसाथाम्, अगंसाथाम् । सिचो वा कित्वे मस्य लुकि, "सो धि-"॥४।३।७१॥ इति सिचो वा लुकि च, अगध्वम्, अगद्ध्वम्,

अगन्ध्वम्, अगन्द्ध्वम्, अगासि, अगंसि, अगस्वहि, अगंस्वहि, अगस्महि, अगंस्महि ॥ परोक्षा ॥ जगाम "गमहन-"॥४।२।४४॥ इत्युपान्त्यलुकि, जग्मतुः, जग्मुः । "सृजृदृशि-"॥४।४।७८॥ इति थवि वेट्, जगमिथ, जगन्थ, जग्मथुः, जग्म, जगाम, जगम । "स्क्रसृ-"॥४।४।८१॥ इतीटि, जग्मिव, जग्मिम । सञ्जग्मे, सञ्जग्माते, सञ्जग्मिरे, सञ्जग्मिषे ॥ भाक ॥ जग्मे; जग्मिध्वे । गम्यात् । सङ्गसीष्ट, सङ्गंसीष्ट, चैत्रः ॥ भाक ॥ गसीष्ट, गंसीष्ट । गन्ता । सङ्गन्तासे । "गमोनात्मने"॥४।४।५१॥ इतीटि, गमिष्यति । आत्मनेपदे तु नेटि, सङ्गंस्यते वत्सो मात्रा ॥ भाक ॥ गंस्यते ग्रामः । अगमिष्यत् । समगंस्यत । अगंस्यत । जिगमिषति । जिगमिषिष्यति । जिगमिषि ३ ता, तुम्, तः । आत्मनेपदविषयस्यात्मनेपदाभावे इटि, सञ्जिगमिषि ३, ता, तः, तव्यम् । आत्मनेपदे तु नेटि, जिगंस्यते ग्रामः । "स्वरहन्गमोः"॥४।१।१०४॥ इत्यत्र गमुग्रहणाद्गमो न दीर्घः। सञ्जिगंसते वत्सो मात्रा । सञ्जिगं३ स्यते, सिष्यते, समानः। जङ्गम्यते । अजङ्गमि ९ ष्ट, षाताम्, षत० ॥ जङ्गमांचक्रे । जङ्गमिष्यते । जङ्गमिता। जङ्गमितः । यङोऽल्लुकः स्थानित्वाद् "गमहन-"॥४।२।४४॥ इत्युपान्त्यलोपो न स्यात् । लुपि, जङ्गमीति । त्यादौ तु, न छः । जङ्गन्ति, जङ्गतः, जङ्ग्मति, जङ्गमीषि, जङ्गंसि, जङ्ग २ थः, थ. जङ्ग ३ न्मि, न्वः, न्मः ॥ "समो गमृच्छ-"॥३।३।८४॥ इत्यत्र प्रकृतिग्रहणात् यङ्लुप्यात्मनेपदमेव, संजङ्गते, सञ्जङ्ग्माते, सञ्जग्मते । हौ, जङ्गहि ॥ ह्यस्तनी ॥ "मो नो म्वोश्च"॥२।१।६७॥ इति पदान्ते नः, अजङ्ग ९ न्, मीत्, ताम्, मुः, न्, मीः० ॥ अद्यतनी ॥ "लृदिद्द्युतादि-"॥३।४।६४॥ इत्यत्र लृदनुबन्धनिर्देशाद्यङ्लुपि नाऽङ्; अजङ्ग ३ मीत्, मिष्टाम्, मिषुः । अजङ्गामि, अजङ्गसाताम्, अजङ्गंसाताम् । आत्मनेपदे नेट् । "गमोऽनात्मने"॥४।४।५१॥ इत्यत्र प्रकृतेर्ग्रहणात्, जङ्गमाञ्चकारेत्यादि । आशीःप्रभृतिषु प्राग्वत् । शतरि तु "गमहन-"॥४।२।४४॥ इत्युपान्त्यलोपे "गामिषद्-"॥४।२।१०६॥ इति मश्छत्वे "अघोषे-"॥१।३।५०॥ इति गस्य कत्वे, जंक्छत् । णिगि "अमोऽकम्यमि-"॥४।२।२६॥ इति ह्रस्वे, गमयति मैत्रम्, अत्र फलवत्कर्त्तर्यपि "अणिगि प्राणि-"॥३।३।१०७॥ इति परस्मैपदम् । सकर्मकत्वविवक्षायां तु, गमयति; गमयते वा मैत्रं ग्रामम् । अत्र गतिः पादविहरणं, चलनं तु

स्थितस्यैव पदार्थस्येति "चल्याहारार्थ-"॥३।३।१०८॥ इति न परस्मैपदमेवैकम्, अवगमयति, गुरुः शिष्यं धर्मम् । त्रिष्वपि "गतिबोध-"॥२।२।५॥ इत्यणिक्कर्तुः कर्मत्वं, णिगि कर्त्ता तु न कर्म, गमयति चैत्रो मैत्रम्, तं परः प्रयुङ्क्ते, गमयति चैत्रेण मैत्रं जिनदत्तः । "गमेः क्षान्तौ"॥३।३ ५५॥ इत्यात्मनेपदे, आगमयते गुरून्; किञ्चित्कालं प्रतीक्षत इत्यर्थः । आगमयस्व तावत्, किञ्चित्कालं सहस्वेत्यर्थः । क्षान्तेरन्यत्र तु, आगमयति विद्याः, गृह्णातीत्यर्थः । ङे, अजीगमत्, त ॥भाक्॥ ञिणम्परे तु वा दीर्घः, अगामि, अगमि । अवागामि, अवागमि । गामं २, गमं २ । गच्छन् । गमिष्यन् । सङ्गच्छमानः । संगंस्यमानः । गम्यमानम् । गंस्यमानम् । "गमहन-"॥४।४।८३॥ इति क्वसौ वेटि, जग्मिवान्, जगन्वान् । "गत्यर्थ-"॥५।१।११॥ इति वा कर्त्तरि क्ते, गतो ग्रामं चैत्रः । पक्षे, कर्मणि, गतो ग्रामश्चैत्रेण । भावे, गतमनेन । "अद्यर्थाच्चाधारे"॥५।१।१२॥ इदमहेर्गतम् । "क्तयोरसद-"॥२।२।९१॥ इत्याधारवर्जनात् कर्तरि षष्ठी । क्तौ, गतिः । गत्वा । आगत्य, आगम्य । गन्तुम् । गन्ता । गन्तव्यम् । गमनीयम् ॥ १११ ॥

ईर्ष्य ईर्ष्यार्थः । ईर्ष्यति । छात्रायेर्ष्यते, अत्र कर्माभावाद्भावे आत्मनेपदम् । ऐर्ष्यीत् । ईर्ष्याञ्चकार । ईर्ष्यात् । "यिः सन्वेर्ष्यः"॥४।१।११॥ इति येः सनो वा द्वित्वे, ईर्ष्यियिषति, ईर्ष्यिषिषति । णौ ङे, येर्द्वित्वे, ऐर्ष्यियत् । ईर्ष्यितः ॥११२॥

चर भक्षणे च; चाद्गतौ । चरति, आचरति । एवं प्र, सम्, वि, परि, उप, अति, व्यभि, अभ्यनु पूर्वोऽपि क्रियाव्यतिहारे गतिनिषेधाद्गतौ नात्मनेपदम्, व्यतिचरन्ति ग्रामम् । भक्षणे तु स्यात्, व्यतिचरन्ते चारिम् । "उदश्चर-"॥३।३।३१॥ इत्यात्मनेपदे, गुरुवच उच्चरते, अनुवर्त्तीत्यर्थः । गेहमुच्चरते, उल्लङ्घयतीत्यर्थः । साप्यादित्येव, धूम उच्चरति । "समस्तृतीयया"॥३।३।३२॥ अश्वेन सञ्चरते । क्ये, चर्यते । "वदव्रजलृ-"॥४।३।४८॥ इति वृद्धौ, अचारीत्, अचारिष्टाम् । अचारि, अचरिषाताम् । चचार; चेरुः; चेरि २ थ; म । चर्यात् । चरिता । चरिष्यति । चिचरिषति । अश्वेन सञ्चिचरिषते । "गृलुप-"॥३।४।१२॥ इति यङि, गर्हितं चरति चञ्चूर्यते । अत्र "तिचोपान्त्य-"॥४।१।५४॥ इत्यत उः । द्वित्वे सतीत्याधिकारान्न पूर्वमुत्वम् । "चरफलाम्"॥४।१।५३॥ इति

मुरन्तः । गर्ह्यादन्यत्र तु न यङ्; भृशं कुटिलं वा चरति ॥ ह्यस्तनी ॥ अचञ्चूर्यत ॥ अद्यतनी ॥ अतो यश्च लुकि, अचञ्चूरिष्ट । लुपि, चञ्चूर्त्ति, चञ्चुरीति, चञ्चूर्तः, चञ्चुरति, चञ्चुरीषि, चञ्चूर्षि, चञ्चूर्थः, चञ्चूर्थ, चञ्चुरीमि, चञ्चूर्मि, चञ्चूर्वः, चञ्चूर्मः । आच ४ ञ्चूः, चुरीत्, चूर्त्ताम्, चुरुः । आचञ्चु ३ रीत, रिष्टाम्, रिषुः । णौ, विचारयति । उच्चारयति । व्यचीचरत् । चेरिवान् । चरि ३ ता, त्वा, तुम् । आचर्य । चरितः, २ वान् । कथं, चीर्णः, २ वान् इति । चॄ इति धात्वन्तरं चरति समानार्थम्, क्तक्तवतुविषयमामनन्ति ॥ ११३ ॥

दल, ञिफला विशरणे । दलति । अदालीत् । ददाल, देलतुः, देलुः । णौ; उद्दालयति । केचिदेनं घटादौ मन्यन्ते; दलयति । दलिता । दलितुम् । ञिफला । फलति । प्रतिफलति । शेषं फलनिष्पत्तावित्यस्येव, परम् "अनुपसर्गाः क्षीबोल्लाघ-"॥४।२।८०॥ इति क्ते निपातनात्, फुल्लः। फुल्लमनेन। उत्फुल्लः; संफुल्लः॥ सोपसर्गस्य तु प्रफुल्ला लता। अत्र ञीत्त्वाद् "ज्ञानेच्छा-"॥५।२।९२॥ इति सति क्तः, क्तवतौ निपातनाभावात्, प्रफुल्तवान्। उत्फुल्तवान्। संफुल्तवान् । अन्येतु क्तवतावपीच्छन्ति, फुल्लवानित्यादि । आदित्त्वात् "नवा भावारम्भे"॥४।४।७२॥ इति क्तयोर्वा नेटि, प्रफुलितमनेन । प्रफुल्लमनेन । प्रफुलितः । प्रफुल्तः ॥ ११४ ॥ ११५ ॥

मील निमेषणे; सङ्कोचे । मीलति । उन्मीलति । प्रनिसम्पूर्वोऽपि । अमीलीत्। मिमील। मीलिष्यति। मिमीलिषति। मेमील्यते, मेमी१२ ल्ति, लीति, ल्तः, लति०॥ णौ ङे, "भ्राजभास-"॥४।२।३६॥ इति वा ह्रस्वे, अमीमिलत् । अमिमीलत् । णौ क्ते, मीलितः। मीलित्वा। मीलयित्वा। निमील्य ॥११६॥

मूल प्रतिष्ठायाम् । मूलति। अमूलीत्। मुमूल । णौ उन्मूलयति केशान्। उदमूमुलत् । मूलयांचकार । क्ते, उन्मूलितः ॥ ११७ ॥

फल निष्पत्तौ; सिद्धौ । फलति । प्रतिफलति। "वदव्रज-"॥४।३।४८॥ इति वृद्धौ, अफालीत् । पफाल । "तॄत्रप-"॥४।१।२५॥ इत्येत्वे, फेलतुः, फेलुः, फेलिथ । फलिता । फलिष्यति । पिफलिषति। "तिचोपान्त्य-"॥४।१।५४॥ इत्यत उः, पंफुल्यते । "द्व्युक्तोपान्त्य-"॥४।३।१४॥ इति न गुणे, पंफुलीति । "तिचो-

पान्त्य-"॥४।१।५४॥ इत्यत्र अनोदिति वचनाद्गुणाभावे, पंफु ११ ल्लित, ल्तः, ल़ति, ल़ीषि, ल्षि ० । णौ, फालयति । अपीफलत् । फलितः, २ वान् ॥ ञिफलेत्यस्य तु, फुल्लः ॥ ११८ ॥

फुल्ल विकसने । फुल्लति । अफुल्लीत् । पुफुल्ल, पुफुल्लतुः, पुफुल्लुः । फुल्लिता। फुल्लितः, २ वान् ॥ ११९ ॥

वेल़, खेल़, स्खल, चलने। वेलति। उद्वेलति। विवेल। वेलिता। णौ, उद्वेलयति। ङे, ऋदित्त्वाद् "उपान्त्य-"॥४।२।३५॥ इति ह्रस्वाभावे, अविवेलत्। खेलति। अखेलीत्। चिखेल। चिखेलिषति। चेखेल्यते। ऋदित्त्वात्, अचिखेलत् । स्खलति । चस्खाल । णौ सनि, चिस्खालयिषति। स्खलिता ॥ १२० ॥ १२१ ॥ १२२ ॥

गल, चर्ब अदने। गलति । "वदव्रज-"॥४।३।४८॥ इति वृद्धौ, अगालीत् । जगाल। गलिष्यति। स्रवणेऽप्ययमनेकार्थत्वात्; गलत्युदकं कुण्डिकायाः॥ चर्बति। "बहुलमेतन्निदर्शनम्" इति चुरादित्वे । चर्बयति ॥ १२३ ॥ १२४ ॥

गर्व दर्पे । गर्वति । अगर्वीत् । जगर्व । गर्वितः ॥ १२५ ॥

ष्ठिवू निरसने । "षः सो-"॥ २।३।९८॥ इत्यत्र ष्ठिवो वर्जनान्न षः सः। "ष्ठिवूक्लम्व-"॥४।२।११०॥ इति दीर्घे, ष्ठीवति । निष्ठीवति। क्ये, "भ्वादेः-"॥२।१।६३॥ इति दीर्घे, ष्ठीव्यते। अष्ठेवीत्, अष्ठेविष्टाम्, "तिर्वा ष्ठिवः"॥४।१।४३॥ इति पूर्वस्य वा तित्वे, तिष्ठेव, टिष्ठेव । "इवृध-"॥४।४।४७॥ इति सनि वेटि, तिष्ठेविषति । टिष्ठेविषति । पक्षे, "उपान्त्ये"॥४।३।३४॥ इति सनः कित्त्वे ऊटि द्वित्वे "तिर्वा ष्ठिवः"४।१।४३॥ इत्यत्र तेरिकारस्योच्चारणार्थत्वात् वा ठस्य तत्वे च, तुष्ठ्यूषति, टुष्ठ्यूषति । तेष्ठीव्यते, टेष्ठीव्यते । "ष्ठिवूक्लम्व-"॥४।२।११०॥ इत्यत्र अत्यादावधिकाराद्यङ्लुपि त्यादौ न दीर्घः। तेष्ठेति, अत्र "य्वोः-"॥४।४।१२१॥ इति व्लुक् । तेष्ठिवीति, तेष्ठ्यूतः, तेष्ठिवति । एवं टेष्ठेतीत्याद्यपि । शतरि तु, "ष्ठिवू-"॥४।२।११०॥ इति ऊदिन्निर्देशाद्यङ्लुपि न दीर्घः, तेष्ठिवत् । टेष्ठिवत्। ष्ठेवि २, ता, तुम्। ऊदित्त्वात् क्त्वि वेट्, ष्ठ्यूत्वा, ष्ठेवित्वा। निष्ठीव्य। वेट्त्वान्नेट्, निष्ठ्यूतः, २ वान् । "ष्ठिवूसिवोऽनटि वा"॥४।२।११२॥ इति वा दीर्घे, निष्ठीवनम्, निष्ठेवनम् ॥ १२६ ॥

जीव प्राणधारणे । जीवति । उपजीवति । जीवतु, जीवतात्; जीव, जीवतात् । अजीवीत्, अजीविष्टाम् । अजीवि । उपाजीविषाताम्, उपाजीवि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम् । जिजीव, जिजीवतुः; जिजीविथ । जिजीवे । उपजिजीविध्वे, ढ्वे । जीव्यात् । उपजीवि १० षीष्ट । षीढ्वम्, षीध्वम् ० ॥ जीविता । जीविष्यति । जिजीविषति । जेजीव्यते । जेजीवीति । जेज्योति । द्वित्वे कृते "अनुनासिके च-"॥४।१।१०८॥ इति ऊट्, जेज्यूतः, जेजीवति, जेजीवीषि, जेज्योषि, जेज्यूथः, जेज्यूथ, जेजीवीमि, जेज्योमि । वस्य विकल्पेनानुनासिकत्वाद् "अनुनासिके चच्छ्व-"॥४।१।१०८॥ इत्यूटि, जेज्यूवः । निरनुनासिकत्वे तु, "य्वोः प्वय्-"॥४।४।१२१॥ इति वृलुकि, जेजीवः, जेज्यूमः। क्ये, जेजीव्यते । हौ, जेज्यूहि । ह्यस्तनी ॥ वे । अजेज्यूव, अजेजीव । जेजीवि ३ त्वा, ता, तः। जीवयति । "भ्राजभास-"॥४।२।३६॥ इति ङे, वा ह्रस्वे, अजीजिवत्; अजिजीवत् । "य्वोः-"॥४।४।१२१॥ इति वृलुकि, जिजीवान् । जिजीवानम् । जीवि ३ त्वा, तुम्, तः । सञ्जीव्य ॥ १२७ ॥

अव रक्षणगतिकान्तिप्रीतितृप्त्यवगमनप्रवेशश्रवणस्वाम्यर्थयाचनक्रियेच्छादीप्त्यवाप्त्यालिङ्गनहिंसादहनभाववृद्धिषु, १९ अर्थेषु । अवति । आव, आवतुः, आवुः । अविता । शेषं यङ्वर्जम्, अटवत् ॥ १२८ ॥

अथ द्वावनिटौ । दृशूं, प्रेक्षणे । पश्यति । कर्माभावे, "समो गम्-"॥३।३।८४॥ इत्यात्मनेपदे, संपश्यते । व्यतिपश्यते । क्ये, दृश्यते ॥ अद्य० ॥ ऋदित्वाद्वाङि, "ऋवर्णे-"॥४।३।७॥ इति गुणे च, अदर्शत्, अदर्शताम्, अदर्शन्; अदर्शाम ॥ पक्षे सिचि, "अः सृजि-"॥४।४।१११॥ इति अः, "व्यञ्जनानामनिटि"॥४।३। ४५॥ इति तद्वृद्धिश्च, अद्राक्षीत्, अद्राष्टाम्; "धुट्ह्रस्व-"॥४।३।७०॥ इति सिच्लुकि, अद्राक्षुः, अद्राक्षीः, अद्राष्टम्, अद्राष्ट, अद्राक्षम्, अद्राक्ष्व, अद्राक्ष्म । "सिजाशिष-"॥४।३।३५॥ इति सिचः कित्त्वे, समदृष्ट, समदृ३क्षाताम्, क्षत, ष्ठाः ॥ भाक ॥ अदर्शि; "स्वरग्रह-"॥३।४।६९॥ इति वा ञिटि, अदर्शिषाताम्, अदृक्षाताम्, अदर्शिष्ठाः, अदृष्ठाः, अदर्शिध्वम्, अदर्शिड्ढ्वम् । "यज-"॥२।१।८७॥ इति शः षे, "सो धि-"॥४।३।७२॥ इति वा सिच्लुकि, "तृतीय-"॥१।३।४९॥ इति डे, धो ढे च, अदृड्ढ्वम् । "यज-"॥२।१।८७॥ इति शः

षे, "षढोः-"॥२।१।६२॥ इति षः के, "नाम्यन्त-"॥२।३।१५॥ इति सः षे, डत्वे, घो ढत्वे च, अदृग्ड्ढ्वम्, अदर्शिषि, अदृक्षि; अदर्शिष्वहि, अदृक्ष्वहि, अदर्शिष्महि, अदृक्ष्महि ॥ परोक्षा ॥ ददर्श, ददृशतुः, ददृशुः । "सृजिदृशि-" ॥४।४।७८॥ इति वा नेटि, दद्रष्ठ, ददर्शिथ, ददृशथुः, ददृश, ददर्श । "स्क्रसृ-" ॥४।४।८१॥ इति इटि, ददृशिव, ददृशिम । ददृशे, ददृशाते; ददृशि २ षे, ध्वे । दृश्यात् । "सिजाशिष-"॥४।३।३५॥ इति कित्त्वान्न अः, दृक्षीष्ट । दर्शिषीष्ट । द्रष्टा२। दर्शिता । द्रक्ष्य२ति, ते, दर्शिष्यते । अद्रक्ष्य २ त, त; अदर्शिष्यत । "उपान्त्ये-" ॥४।३।३४॥ इति सनः कित्त्वाद्गुणाभावे, "स्मृदृशः-"॥३।३।७२॥ इत्यात्मनेपदे, दिदृक्षते । दरीदृश्यते । शेषं पचिवत् । लुपि, "ह्युक्तो"॥४।३।१४॥ इति न गुणे, दरी, रि, र् ३ दृशीति । धुडादौ अकिति अदागमे । दरी, रि, र् ३द्रष्टि, दर्दृष्टः, दर्दृशाति, दर्दृशीषि, दर्द्रक्षि, दर्दृष्ठः, दर्दृष्ठ, दर्दृशीमि, दर्दर्श्मि, दर्दृश्वः, दर्दृश्मः।"समो गम्-" ॥३।३।८४॥ इत्यत्र प्रकृतिग्रहणेन यङ्लुबन्तस्यापि ग्रहणादात्मनेपदे, सन्दरीद्रष्टे, सन्दरीदृशाते ॥ ह्यस्तनी ॥ अदर्दृशीत्, अदर्द्रग् । आदेशादागम इति न्यायेन दिवो-लोपात् प्रागेवादागमः, "ऋत्विज्-"॥२।१।६९॥ इति शो गः । अदर्द्रष्टाम्, अदर्दृशुः, अद ७ दृशीः, र्द्रग्, र्द्रष्टम्, र्द्रष्ट, र्दृशम्, र्दृश्व, र्दृश्म ॥ अद्यतनी ॥ ऋदि-त्त्वनिर्देशात् यङ्लुपि नाऽङ्, अदरिद ९ र्शीत्, र्शिष्टाम्, र्शिषुः ०॥ ददर्शाचकार । दर्दृश्यात् । दर्दर्शिष्यति । दर्दृशत् । "शौ वा"॥४।२।९५॥ इति वाऽन्तोऽत; दरिदृशाति, दरिदृशन्ति, वा कुलानि । दरिदृशितः, "क्त्वा"॥४।३।२९॥ इति सेट्क्त्वा न कित, दरिदर्शि ३ त्वा, ता, तव्यम् । णौ, दर्शयति । ङे, "ऋदृव-र्णस्य"॥४।२।३७॥ इति वा ऋत, अदीदृशत् । पक्षे गुणः, अददर्शत् । "अणि-कर्म-"॥३।३।८८॥ इत्यात्मनेपदे, पश्यन्ति राजानं भृत्याः, दर्शयते राजा भृत्यान्, भृत्यैर्वा । अत्र "दृश्यभिवदोः-"॥२।२।९॥ इति वाऽणिकर्त्तुर्णिगि कर्मत्वम् । पश्यन् । द्रक्ष्यन् । दृश्यमानं; द्रक्ष्यमाणम् । "गमहन-"॥४।४।८३॥ इति वेटि, ददृशिवान्, ददृश्वान् । ददृशानम् । द्रष्टा । "दृशः क्वनिप्"॥५।१।१६६॥ मेरुदृश्वा । स्त्रियां "णस्वराघोषाद्-"॥२।४।४॥ इति नस्य रे, तत्वदृश्वरी । दृष्टः, २ वान् । दृष्ट्वा । संदृश्य । द्रष्टुम् । द्रष्टव्यम् ॥ १२९ ॥

दंशं दशने। "दंशसञ्जः-"॥४।२।४९॥ इति नलुकि, दशति । क्ये, दश्यते । अद्यतनी ॥ "यजसृज-"॥२।१।८७॥ इति षः, "षढोः-" ॥२।१।६२॥ इति कः, "नाम्यन्त-"॥२।३।१५॥ इति षः । अदाङ्क्षीत्, अदांष्टाम्, अदाङ्क्षुः, अदाङ् ६ क्षीः, ष्टम्, ष्ट, क्षम्, क्ष्व, क्ष्म ॥ अदंशि, अदं ९ क्षाताम्, क्षत, ष्ठाः, ड्ढ्वम्, ग्ड्ढ्वम्, क्षि० ॥ ददंश, ददं ९ शतुः, शुः, शिथ, ष्ठ, शथुः, श, श, शिव, शिम। दंदशे। दश्यात्। दङ्क्षीष्ट। दंष्टा। दङ्क्ष्यति। दिदङ्क्षति। गर्हितं दशति "गॄलुप-"॥३।४।१२॥ इति याङि, दन्दश्यते। लुपि, "गॄलुप-"॥३।४।१२॥ इति कृतनलोपस्य निर्देशान्नो लुकि, दन्दशीति; दन्दष्टि, दन्द १० ष्टः, शति, शीषि, क्षि, ष्ठः, ष्ठ, शीमि, श्मि, श्वः, श्मः ॥ ह्यस्तनी ॥ अदन्द ११ शीत्, ट्, ष्टाम्, शुः, शीः, ट्, ष्टम्, ष्ट, शम्, श्व, श्म । दंशयति । अददंशत् । दशन् । दशन्ती । दष्टः, २ वान् । दष्ट्वा । प्रदश्य । दंष्टा । दंष्टुम् ॥ १३० ॥

घुषृ शब्दे । घोषति; उद्घोषति । ऋदित्वाद्वाऽङि, अघुषत्, अघोषीत् । जुघोष । घोषिता । घोषिष्यति । जुघोषिषति; जुघुषिषति । जोघुष्यते । घोषयति । अजूघुषत् । घोषित्वा, घुषित्वा । घोषितुम् । "घुषेरविशब्दे"॥४।४।६८॥ इतीट्निषेधात्; घुष्टा रज्जुः, सम्बद्धावयवेत्यर्थः । विशब्दने तु, घुषितं वाक्यम्, नानाशब्दैर्भाषितमित्यर्थः ॥ १३१ ॥

तूष तुष्टौ । तूषति । अतूषीत् । तुतूष । तूषिता । तूषितुम् ॥ १३२ ॥

लुष स्तेये । लोषति । अलोषीत् । लुलोष । लोषिता । लुषितः ॥१३३॥

कृषं विलेखने, हलोत्कर्षणे, अनिट् । कर्षति । आङ्प्रापोदाविपूर्वोऽपि । कृष्यते । "स्पृशमृश-"॥३।४।५४॥ इति वा सिचि, अकार्षीत्, अकार्ष्टाम्, अकार्क्षुः। "स्पृशादि-"॥४।४।११२॥ इति वा अकारागमे, अक्राक्षीत्, अक्राष्टाम्, अक्राक्षुः । पक्षे, अनिट्त्वात्, "हशिट-"॥३।४।५५॥ इति सकि, अकृक्षत, अकृक्षताम्, अकृक्षन्, अकृक्षम्, अकृक्षाम ॥ भाक ॥ अकर्षि । सिचि "सिजाशिष-"॥४।३।२५॥ इति कित्त्वान्न अः, अकृक्षाताम्, अकृक्षत, अकृष्ठाः, अकृक्षाथाम्, अकृड्ढ्वम्, अकृग्ड्ढ्वम्, अकृ ३ क्षि, क्ष्वहि, क्ष्महि । सकि तु "स्वरेत-"॥४।३।७५॥ इत्यल्लुकि, अकृक्षाताम् । अल्लुकः स्थानित्वात् अन्तो-

ऽद्भावे, अकृ ७ क्षन्त, क्षथाः, क्षाथाम्, क्षध्वम्, क्षि, क्षावहि, क्षामहि ॥ परोक्षा ॥ चकर्ष, चकृषुः, चकर्षिथ, चकृषिम । चकृषे । कृष्यात् । कृक्षीष्ट । कर्ष्टा, क्रष्टा । कर्क्ष्यति, क्रक्ष्यति । चिकृक्षति । चरीकृष्यते । चरी, रि, र् २ कृषीति । चरि, री, र् ३ कर्ष्टि । चरि, री, र् ३ क्रष्टि । चरि १४ कृष्टः, क्रष्टः, कृषति, कृषीषि, कर्क्षि, क्रक्षि, कृष्ठः, क्रष्ठः, कृष्ठ, क्रष्ठ, कृषीमि, कर्ष्मि, कृष्वः, कृष्मः । हौ, चरिकृड्ढि, चरिक्रड्ढि ॥ ह्यस्तनी ॥ अचरि १६ कृषीत्, कर्ट्, क्रट्, कृष्टाम्, क्रष्टाम्, कृषुः, कृषीः, कर्ट्, क्रट्० ॥ अद्य० ॥ अचरिकर्षीत् । णौ, कर्षयति; उत्कर्षयति । "ऋद्दवर्णस्य"॥४।२।३७॥ इति ङे वा ऋत्, अचीकृषत्, अचकर्षत् । चकृष्वान् । कृष्ट्वा । कृष्टः, २ वान् । क्रष्टुम् । कर्ष्टुम् ॥१३४॥

भष भर्त्सने, कुत्सितशब्दकरणे । भषति श्वा, बुक्कतीत्यर्थः । भषति भषकः, पैशुन्येम वक्तीत्यर्थः । भष्यते । अभाषीत्, अभषीत् । बभाष । भषिता । भषिष्यति । भषितः । भषित्वा ॥ १३५ ॥

विषू, वृषू सेचने । वेषति; परिवेषति । अवेषीत् । विवेष । वेषिता । वेषिष्यति । "वौ व्यञ्जन-"॥४।३।२५॥ इति क्त्वासनोर्वा कित्त्वे, परिविवेषिषति, परिविविषिषति । ऊदित्वात् क्त्वि वेट्, विषित्वा, वेषित्वा, विष्ट्वा । विष्टः । वृषू । वर्षति मेघः । वृष्यते । अवर्षीत् । अवर्षि । ववर्ष, ववृषुः । वृष्यात् । वर्षिषीष्ट । वर्षिता २ । वर्षिष्यति । विवर्षिषति । वरीवृष्यते । वरि, री, र् ३ वृषीति । वरि, र्, री ३ वर्ष्टि । वरि २ वृष्टः, वृषति । वर्वृषत् । वर्वर्षित्वा । वर्षयति । ङे, अवीवृषत्, अववर्षत् । ववृष्वान् । वृष्ट्वा, वर्षित्वा । ऊदित्वात् क्त्वि वेट्; वेट्त्वात् क्तयोर्नेटि, वृष्टः, २ वान् । वर्षिता ॥ १३६ ॥ १३७ ॥

मृषू सहने च; चात् सेचने । मर्षति । अमर्षीत् । ममर्ष; ममृषुः । मर्षिता । ऊदित्वात् क्त्व वेटि, "ऋत्तृष-"॥४।३।२४॥ इति वा कित्वम्, मृष्ट्वा, मृषित्वा, मर्षित्वा । मृष्टः, २ वान् ॥ १३८ ॥

उषू, प्लुषू दाहे । ओषति । औषीत्, औषिष्टाम् । "जागुष-"॥३।४।४९॥ इति वा आमादेशे, ओषांचकार, चक्रतुः, चक्रुः० । उवोष, ऊषतुः, ऊषुः० ॥ ओषिता । ओषिषिषति । ऊदित्वात् वेटि, ओषित्वा, उष्ट्वा । उष्टः, २ वान् । ओषिता ।

प्लुष् । प्लोषति । अप्लोषीत् । पुप्लोष, पुप्लुषुः । प्लोषिता । पुप्लुषिषति । पुप्लोषिषति । वेट्त्वात् नेट्, प्लुष्टः २ वान् । प्लोषि २ ता, तुम् । प्लुष्ट्वा, प्लोषित्वा, प्लुषित्वा ॥ १३९ ॥ १४० ॥

घृषू संघर्षे । घर्षति । अघर्षीत् । जघर्ष । घर्षिता । ऊदित्वात्, घृष्ट्वा, घर्षित्वा । वेट्त्वात्, घृष्टः, २ वान् ॥ १४१ ॥

पुष पुष्टौ । पोषति । पुष्यते । पोषेत् । पोषतु । अपोषत् । अपोषीत् । पुपोष; पुपुषुः । पोषिता । शेषं पुषश्च वत् ॥ १४२ ॥

भूष अलङ्कारे । भूषति । अभूषीत् । बुभूष । भूषिता । भूषितः ॥१४३॥

रस शब्दे । रसति । अरसीत्, अरासीत् । ररास, रेसतुः, रेसुः । रेसे । रसिता । रसितुम् ॥ १४४ ॥

लस श्लेषणक्रीडनयोः । लसति; उल्लसति; अभ्युल्लसति; विलसति । लस्यते । व्यलसीत्, व्यलासीत् । विललास, लेसतुः, लेसुः । लसिता । विलिलसिषति । लालस्यते । व्यलीलसत्; त । लसित्वा । विलस्य । लसितम् ॥ १४५ ॥

हसे हसने । हसति; प्रहसति; विहसति; उपहसति । क्रियाव्यतिहारे हस वर्जनान्नात्मनेपदे; व्यतिहसन्ति । "नश्वि-"॥४।३।४९॥ इति वृद्धिनिषेधे, अहसीत्, अहसिष्टाम् । जहास, जहसतुः, जहसुः । हसिता । जिहसिषति । जाहस्यते । जाह १२ सीति, स्ति, स्तः, सति, सीषि, स्सि० । हौ, जाह २ धि, द्धि । "सोधि-"॥४। ३।७२॥ इति वा सलुक् दिवि "धुटस्तृती-"॥२।१।७६॥ इति द्, अजाह ३ द्, त्, सीत् ॥ अद्य० ॥ अजाहासीत्, अजाहसीत् । "नश्वि-"॥४।३।४९॥ इत्यत्रैदितां यङ्लुपि न वृद्धिनिषेधः, हासयति । अजीहसत् । हसिता ॥१४६॥

शंसू स्तुतौ च; चाद्धिंसायाम् । प्रशंसति । क्ये, प्रशस्यते । अशंसीत् । शशंस, शशंसतुः, शशंसुः । शंसिता । ऊदित्वात्, शस्त्वा, शंसित्वा । प्रशस्य । शस्तः; २ वान् । "कृवृषि-"॥५।१।४२॥ इति वा क्यपि, प्रशस्यम् । पक्षे, घ्यणि प्रशंस्यम् । शेषं सञ्जवत् ॥ १४७ ॥

दहं भस्मीकरणे । अनिट् । दहति । दह्यते । अधाक्षीत् । अत्र "व्यञ्जनानाम्-"॥४।३।४५॥ इति वृद्धौ, "भ्वादेः-"॥२।१।६३॥ इति घे "गडदबा-"॥२।१।७७॥ इति आदेर्धे "अघोषे प्र-"॥१।३।५०॥ इति कि "नाम्यन्त-"॥२।३।१५॥ इति षः । अदाग्धाम् । अत्र "धुड्ह्रस्व-"॥४।३।७०॥ इति सिच्लुकस्थानित्वेन वृद्धिः । "अधश्च-"॥२।१।७९॥ इति धः । "तृतीय-"॥१।३।४९॥ इति गः । अत्र हि सकारे परे आदेश्चतुर्थे धे कर्त्तव्ये वर्णविधित्वेन सिचो न स्थानित्वम्; तेन आदेर्दस्य न धः । ननु तर्हि वृद्धौ कार्यायां कथं सिचः स्थानित्वमिति चेत्, उच्यते । "धुड्ह्रस्व-"॥४।३।७०॥ इत्यत्र लुबधिकारेऽपि लुग्ग्रहणं वृद्धौ कर्त्तव्यायां सिचः स्थानित्वार्थम्, तेन सा भवति । एवमन्यत्रापि । अधाक्षुः, अधाक्षीः, अदाग्धम्, अदाग्ध, अधाक्षम्, अधाक्ष्व, अधाक्ष्म । अदाहि, अध २ क्षातां, क्षत, अदग्धाः, अध ६ क्षाथाम्, ग्ध्वम्, ग्ड्ढ्वम्, क्षि, क्ष्वहि, क्ष्महि । ददाह, देहतुः, देहुः, देहिथ, ददग्ध, देहथुः, देह, ददाह, ददह, देहिव, देहिम। देहे । "हान्त-"॥२।१।८१॥ इति वा ढे, देहि २ ध्वे, ढ्वे। दह्यात्। धक्षीष्ट; धक्षीध्वम् । दग्धा । धक्ष्यति । दिधक्षति । दन्दह्यते । दन्द ५ हीति, ग्धि, ग्धः, हति, हीषि । दन्धक्षि, दन्द ६ ग्धः, ग्ध, ह्मि, हीमि, ह्वः, ह्मः । हौ, दन्दग्धि । दाहयति । अदीदहत् । दहन् । धक्ष्यन् । देहिवान् । दग्धः, २ वान् । दग्ध्वा । अत्र धत्वस्यासत्वाद् "गडदबा-"॥२।१।७७॥ इति आदेर्न चतुर्थः। दग्धुम्। दग्धा। दग्धव्यम् ॥१४८॥

बृहु शब्दे च; चाद् वृद्धौ; नेऽन्ते। बृंहति गजः। उद्बृंहति। क्ये, बृंह्यते। अबृंहीत्, अबृंहिष्टाम्। बबृंह। बबृंहे। बृंहिता। बिबृंहिषति। बरीबृंह्यते। उपबृंहयति। उपाबबृंहत्। बृंहन्। बृंहिता। बृंहितं गजस्य ॥ १४९ ॥

अर्ह, मह पूजायाम् । अर्हति । आनर्ह । शेषं अर्चवत् । अयं पूजायां चुरादिरपि । अर्हयति, पूजायाम् । अन्यत्र तु योग्यत्वादौ न णिच्, अर्हति । अर्जिहिषति । णिगि, अर्हयति । ङे, आर्जिहत् ॥ मह । महति । क्ये, मह्यते । "नश्वि-"॥४।३।४९॥ इति न वृद्धिः, अमहीत् । ममाह । मेहे ।महितः॥१५०॥१५१॥

उक्ष सेचने। उक्षति। उक्ष्यते। औक्षत् ॥ अद्यतनी ॥ औक्षीत्, औक्षिष्टाम्।

उक्षाञ्चकार । उपसर्गस्य क्रियाविशेषकत्वादव्यवधायकत्वे; उक्षांप्रचक्रुरित्यादि भवत्येव । एवमन्यत्राप्यामुपसर्गे सति भवति । उक्ष्यात् । उक्षिता । औक्षिष्यत् । उचिक्षिषति । उक्षयति । औचिक्षत् । उक्षाञ्चकृवान् । उक्षि ३ तः, त्वा, तुम् ॥ १५२ ॥

रक्ष पालने, चौराद्रक्षति । अरक्षीत् । ररक्ष । रक्षिता । णौ , रक्षयति । अररक्षत् । रिरक्षयिषति । रक्षितः ॥ १५३ ॥

तक्षौ तनूकरणे; कार्श्ये । "तक्षः स्वार्थे वा"॥३।४।७७॥ इति वा श्नुः, तक्ष्णोति । तक्षति । स्वार्थग्रहणं ज्ञापकं धातवोऽनेकार्था इति; तेन स्वार्थादन्यत्र, तक्षति वाग्भिः शिष्यम्, निर्भर्त्सयतीत्यर्थः । औदित्वात् "धूगौदितः"॥४।४।३८॥ इति वेटि, अतक्षीत् । इडभावे तु सिचि ईति, "व्यञ्जनानामनिटि-"॥४।३।४५॥ इति वृद्धौ "संयोगस्यादौ-"॥२।१।८८॥ इति क् लुकि, "षढोः कः-"॥२।१।६२॥ इति षस्य कत्वे सिचः षत्वे च, अताक्षीत् । ततक्ष । तष्टा; तक्षिता । तक्ष्यति, तक्षिष्यति । तितक्षिषति । तातक्ष्यते, क्षीति, ष्टि । णौ ङे, अततक्षत् । तष्ट्वा, तक्षित्वा । तष्टुम्, तक्षितुम् । वेट्त्वान्नेट्, तष्टः, २ वान् ॥ १५४ ॥

काक्षु काङ्क्षायाम्, नेऽन्ते । काङ्क्षति; आकाङ्क्षति । अकाङ्क्षीत् । चकाङ्क्ष । चिकाङ्क्षिषति । चाकाङ्क्ष्यते । ङे, अचकाङ्क्षत् ॥ १५५ ॥

इति परस्मैपदिनः ।

अथात्मनेपदिनो वर्णक्रमेण वक्ष्यन्ते ।

तत्र, डीङ्, पूङ् वर्जा नवाऽनिटः । गाङ्तौ । "इङितः-"॥३।३।२२॥ इत्यात्मनेपदम्; गाते, गाते, गाते, गासे, गाथे, गाध्वे । "इडेत्-"॥४।३।९४॥ इति आलुकि, गे, गावहे, गामहे । क्ये, "ईर्व्यञ्जने-"॥४।३।९७॥ इति ईत्वे, गीयते ॥ सप्तमी ॥ गेत, गेयाताम्, गेरन् ॥ पञ्चमी ॥ गाताम्, गाताम्, गाताम्, गास्व, गाथाम्, गाध्वम्, गै, गावहै, गामहै ॥ ह्यस्तनी ॥ अगात, अगाताम्, अगात ॥ अद्यतनी ॥ अगास्त, अगासाताम्, अगाध्वम्, अगाड्ढ्वम् ॥ भाक ॥ अगायि । "स्वरग्रह-"॥३।४।६९॥ इति वा ञिटि, अगा-

यिषाताम्, अगासाताम् । जगे, जगाते, जगिरे, जगिषे । गासीष्ट ॥ भाक ॥ गायिषीष्ट, गासीष्ट । गास्यते ॥ भाक ॥ गास्यते, गायिष्यते । जिगासते । जेगीयते । जागेति, जागाति । शेषं स्थास्थाने । गापयति । अजीगपत् । आनाशि, गानः । जगानः । गीतः, २ वान् । गीत्वा । गाता, गातुम् ॥ १५६ ॥

ष्मिङ् ईषद्धसने । विस्मयते । क्ये, स्मीयते । स्मयेत । स्मयताम् । अस्मयत । अस्मेष्ट, अस्मेषाताम् ॥ भाक ॥ अस्मायि, अस्मायिषाताम्, अस्मेषाताम् । षपाठात् "नाम्यन्त-" ॥२।३।१५॥ इति षः । सिष्मिये, सिष्मियाते, सिष्मियिरे, सिष्मियिषे, सिष्मियिढ्वे, ध्वे ॥ भाक, कर्तृवदेव ॥ स्मेषीष्ट २, स्मायिषीष्ट । स्मेता २, स्मायिता । स्मेष्यते २, स्मायिष्यते । "ऋस्मि-" ॥४।४।४८॥ इतीटि, सिस्मयिषते । सेष्मीयते । सेष्मयीति, सेष्मेति । शेषं जिवत् । णौ "स्मिङः प्रयोक्तुः-" ॥३।३।९१॥ इत्यात्वम्, आत्मने च । मुण्डो विस्मापयते । ङे, व्यसिष्मपत । व्यस्मापि । करणेन तु विस्मयभावे, रूपेणैनं विस्माययति । ङे, असिष्मयत् । णौ सनि, सिष्माययिषति । "स्मिङः-" ॥ ३।३।९१॥ इत्यत्र ङिन्निर्देशाद्यङ्लुपि णौ, नात्मनेपदम्, सेष्माययति । स्मयमानः । स्मेष्यमाणः । स्मीयमानम् । सिष्मियाणः । स्मितः, २ वान् । स्मित्वा । स्मेता । स्मेतुम् ॥ १५७ ॥

डीङ् विहायसाङ्गतौ । डयते; उड्डयते । क्ये, डीयते । अडयिष्ट, अडयिषाताम्, अडायिषाताम् । डिड्ये, डिड्याते, निडिड्यिरे । डयिता । डयिष्यते । डिडयिषते । डेडीयते । डेडयीति, डेडेति, डेडीतः, डेड्यति । "न डीङ्-" ॥४।३।२७॥ इत्यत्र ङिन्निर्देशाद्यङ्लुपि क्तयोः कित्त्वमेव । डेड्यितः, २ वान् । उड्डाययति । उदडीडयत् । "न डीङ्शी-" ॥४।३।२७॥ इति क्ते कित्वनिषेधात्, डयितः २ वान् । डीङ् च गतावित्यस्य तु, डीनः, २ वान्, डयि ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥ १५८॥

कुंङ् शब्दे । कवते । कूयते । अकोष्ट, अकोषाताम् । अकावि । चुकुवे । कोता । चुकूषति । "न कवतेर्यङः-" ॥४।१।४७॥ इति कस्य न चः, कोकूयते खरः । लुपि तु तिव्निर्देशाच्चः स्यात्, चोकवीति, चोकोति, चोकु २ तः, वति, कोतुम् ॥ १५९॥

च्युंङ्, पुंङ्, प्लुंङ् गतौ । च्यवते । च्यूयते । नित्यत्वात् सिचो लोपात् प्रागेव

गुणे, अच्योष्ट । अच्यावि, अच्योषाताम्, अच्याविषाताम् । च्योषीष्ट २, च्याविषीष्ट । चुच्यूषते । चोच्यूयते । चोच्यवीति, चोच्योति, चोच्यु २ तः, वति चोच्यविला, चोच्युवितः । णौ, च्यावयति । णौ सनि, "श्रुस्रु-"॥४।१।६१॥ इति वा उः इः; चिच्यावयिषति, चुच्यावयिषति । ङे सन्वद्भावात्, अचिच्यवत्, अचुच्यवत् । च्युतः । प्रच्युत्य । च्योता । च्योतुम् । एवं प्रुप्लृ अपि । पुप्लूषते । पोप्लूयते । पोप्लवीति, पोप्लोति । पिप्लावयिषति, पुप्लावयिषति । ङे, अपिप्लवत्, अपुप्लवत् ॥ १६० ॥ १६१ ॥ १६२ ॥

पूङ् पवने । पवते । पूयते । अपविष्ट । अपावि, अपाविषाताम् । अपविषाताम् । पुपुवे । पाविषीष्ट २ । पाविषीष्ट । पविता २ । पाविता । पविष्यते २ । पाविष्यते । अपविष्यत २ । अपाविष्यत । "ऋस्मि-"॥४।४।४८॥ इतीटि, "ओर्जे-" ॥४।१।६०॥ इति उः इः । पिपविषते । पोपूयते । पोपोति, पोपवीति । शेषं भूवत् । परं " न डीङ्शीङ्पूङ्-"॥४।३।२७॥ इत्यत्र ङिन्निर्देशात् क्तयोर्यङ्लुपि किले, पोपुवितः, २ वान् । अत्रानेकस्वरत्वात् "उवर्णात्"॥४।४।५८॥ इति नेट्निषेधः । "पूङ्क्लिशि-"॥४।४।४५॥ इति विकल्पोऽपि न, तिवाशवेति न्यायात् । पावयति । अपीपवत् । "ओर्जे-"॥४।१।६०॥ इति उः इः, पिपावयिषति । पवमानः । पूयमानम् । " पूङ्क्लिशि-"॥४।४।४५॥ इति क्तक्त्वामादौ वेटि "न डीङ्"॥४।३।२७॥ इति क्तयोः "क्त्वा-"॥४।३।२९॥ इति क्त्वायाश्च किलाभावाद्गुणः । पवितः, २ वान् । पूतः, २ वान् । पविला, पूला । प्रपूय । पवितुम् ॥ १६३ ॥

मेंङ् प्रातिदाने; प्रत्यर्पणे । मयते । "नेर्ङ्मादा-"॥२।३।७९॥ इति णले, प्रणिमयते । "ईर्व्यञ्जन-"॥४।३।९७॥ इतीत्वे, मीयते । अमास्त । अमायि । ममे । "गापास्था-"॥४।३।९६॥ इति एः, मेयात् । माता । मास्यते । "मिमीमादा-"॥४।१।२०॥ इति इद् नच द्विः, मित्सते । मेमीयते । मामेति, मामाति, माता । मातुम् । "दोसोमास्थ इः"॥४।४।११॥ मितः, २ वान् । मिला । यपि, "मेङो वा मित्"॥४।३।८८॥ अपमित्य, अपमाय वा याचते ॥१६४॥

देंङ्, त्रैंङ् पालने । दयते पुत्रम् । " ईर्व्यं०-"॥४।३।९७॥ ईः, दीयते । अदित, अदिषाताम् । अदायि, अदायिषाताम्, अदिषाताम् । "देर्दिगिः"॥४।१।३२॥

दिग्ये, दिग्याते, दिग्यिषे । दासीष्ट २ । दायिषीष्ट ।एवं स्यते इत्यादावपि । दित्सते। देदीयते । दादेति। दापयति । अदीदपत् । "नेर्ङ्गादा-"॥२।३।७९॥ इति णिः, प्रणिदातुम् । दत्तः, २ वान् । दत्वा । दाता ॥ त्रैङ् । त्रायते; परित्रायते । क्ये, त्रायते। अत्रास्त; अत्रासाताम् । अत्रायि; अत्रायिषाताम् , अत्रासाताम्। "सोधि-" ॥४।३।७२॥ इति त्रा सलुकि, अत्रा २ ध्वम्, द्ध्वम् । "हान्त-" ॥२।१।८१॥ इति वा ढे, अत्रायिध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम् । तत्रे, तत्राते, तत्रिरे, तत्रि२, षे; ध्वे, अत्र "स्कसृ-"॥४।४।८१॥ इति इटि "इडेत्पुसि-"॥४।३।९४॥ इति आलुक् । त्रासीष्ट २। त्रायिषीष्ट । त्राता २ । त्रायिता । त्रास्यते २ । त्रायिष्यते । तित्रासते । तित्रास्यते। सर्वे णिगन्ताः सन्नन्ता यङन्ताश्च स्वरान्ता धातवस्तत्तदन्तभूवद्वाच्या इत्युक्तं प्रागपि, तथाऽप्ययं यङन्त उक्तस्मृतये दर्श्यते । तात्रायते । क्ये, तात्राय्यते। तात्रायेते। क्ये, तात्राय्येते। तात्रायताम् ॥ भाक ॥ तात्राय्यताम् । अतात्रायत ॥ भाक ॥ अतात्राय्यत ॥ अद्यतनी ॥ अतात्रायिष्ट, अतात्रायिषातां, अतात्रायिषत ॥ भाक ॥ अतात्रायि, अतात्रायिषातामित्यादि ॥ परोक्षा ॥ तात्रायां ३ चक्रे, बभूव, आस ।अत्र धातोरात्मनेपदेऽपि "आमः कृग–"॥३।३।७५॥ इत्यत्र कृग्ग्रहणादस्तिभुवोः परस्मैपदमेव ॥ भाक ॥ तात्रायां ३ चक्रे; आहे; बभूवे । तात्रायिषीष्ट ॥ भाक ॥ तात्रायिषीष्ट । एवं तात्रायिष्यते २ । अतात्रायिष्यत । तात्रायमाणः । तात्रायिष्यमाणः ॥ भाक ॥ तात्राय्यमाणम् । तात्रायिष्यमाणम्। तात्रायां ३ चक्राणः, बभूवान् , आसिवान्। "आमः कृग-"॥३।३।७५॥ इत्यत्र भ्वस्तिभ्यां परस्मैपदस्याभिधानादत्र क्वसुः ॥ भाक ॥ तात्रायां३ चक्राणम, बभूवानम्, आसानम् । तात्रायि ५ त्वा, ता, तुम्, तः, २ वान् ॥ एवं सर्वेऽपि स्वरान्ता यङि, त्रैङ्वदवगन्तव्याः ॥ यङ्लुपि तु, तात्रेति, तात्राति । "एषाम्-"॥४।२।९७॥ इति ईः, तात्रीतः । "श्नश्च-"॥४।२।९६॥ इति आलुकि, तात्रति, तात्रेषि, तात्रासि, तात्रीथः, तात्रीथ, तात्रेमि, तात्रामि, तात्रीवः, तात्रीमः। क्ये, तात्रायते। तात्रायात्॥ भाक ॥ तात्रायेत । तात्रेतु, तात्रातु, तात्रीताम्, तात्रतु, तात्रीहि ॥ भाक ॥ तात्रायताम् ॥ ह्यस्तनी ॥ अतात्रेत्, अतात्रात्, अतात्रीताम्, अतात्रुः, अता ७- त्रेः, त्राः, त्रीतम्, त्रीत, त्राम्, त्रीव, त्रीम ॥ भाक ॥ अतात्रा ९ यत, येतां०॥

अद्यतनी ॥ सिचि "यमिरमिनम्य-"॥४।४।८६॥ इति इट् सोऽन्तश्च, अतात्रा९ सीत्, सिष्टाम्, सिषुः, सीः०, सिष्म ॥ भाक ॥ अतात्रायि । ञिटि इटि च, अतात्रायिषाताम्, अतात्रिषाताम्, अतात्रायिषत, अतात्रिषत ॥ परोक्षा ॥ तात्रांचकारेत्यादि ॥ भाक ॥ तात्राञ्चक्रे इत्यादि ॥ आ० ॥ "संयोगादेर्वाशिष्येः"॥४।३।९५॥ इति वा एः, तात्रेयात्, तात्रायात्, तात्रेयास्ताम्, तात्रायास्ताम्० ॥ भाक, ञिटिटोः॥ तात्रायिषीष्ट, तात्रिषीष्ट ॥ श्वस्तनी ॥ तात्रिता ॥ भाक ॥ तात्रायिता, तात्रिता० ॥ भविष्य०॥ तात्रिष्यति॥ भाक ॥ तात्रायिष्यते, तात्रिष्यते ॥ क्रिया० ॥ अतात्रिष्यत् ॥ भाक ॥ अतात्रायिष्यत, अतात्रिष्यत । तात्रत् । तात्रिष्यन्॥ भाक॥ तात्रायमाणम् । तात्रिष्यमाणम् । ञिटि, तात्रायिष्यमाणम् । तात्रां३ चकृवान्, बभूवान्, आसिवान् वा ॥ भाक ॥ तात्रां ३ चक्राणम्, बभूवानम्, आसानम् वा । तात्रि ५ त्वा, ता, तुम्, तः २, वान् । अस्य स्थाधातोश्च यङ्लुबन्तस्य क्ये, परस्मै सिचि आशीर्ये च स्थानत्रय एव विशेषोऽस्ति नान्यत्र । यथैवायं त्रैङभिहितस्तथैव घ्रां, ध्मां, म्नां, ग्लैं, म्लैं, स्नांकादयः संयोगादिकाः, हांक्, हांङ्, पांक्, यां, लां, वां, रां, छों, शोंच् दांब्, दैंबादयश्चासंयोगादिकाः सर्वेऽप्याकारान्ता यङ्लुपि त्रैङ्वत् ज्ञातव्याः । नवरं; हांक्, हांङादीनामसंयुक्तादिकानामाशीर्यकारे एकारो न स्यात् । हांक् । जहायात्, जहायास्ताम् ॥ हांङ् । जाहायात्, जाहायास्ताम् । पांक् । पापायात्, पापायास्ताम् । एवं यांकादिष्वपि । "गापास्थासा-"॥४।३।९६॥ इति सूत्रोक्तास्त्वादन्ता हांक्वर्जाः १५ स्थास्थाने ऽभिहिताः सन्ति । णिगि, त्रापयति । ङे, अतित्रपत् । त्रायमाणः । त्रास्यमानः। तत्राणम्। "ऋह्री-"॥४।२।७६॥ इति वा नः, त्राणः, २ वान् । त्रातः, २ वान् । व्यवस्थितविभाषेयम्, तेन संज्ञायां न नत्वम्, त्रातः । देवत्रातः । अन्यत्र तु नत्वम्, त्राणः । उभयमित्येके । त्राता । त्रात्वा । परित्राय ॥ १६५ ॥ १६६ ॥

लोकृङ् दर्शने । लोकते । एवं वि, आङ्, अव पूर्वोऽपि । लोक्यते । अलोकिष्ट, अलोकिषाताम् । ध्वमि, अलोकिध्वम्, ड्ढ्वम् । अलोकि । लुलोके । लोकिषीष्ट । लोकिता । लोकिष्यते । लुलोकिषते । लोलोक्यते । लोलो ४ कीति, क्ति, क्तः, कति । लोकयति । ऋदित्वात् "उपान्त्य-"॥४।२।३५॥ इति ह्रस्वाभावे, अलु-

लोकत् । लोकमानः । लोक्यमानम् । लुलोकानम् । लोकितः,२ वान् । लोकित्वा । विलोक्य । लोकि २ ता, तुम् ॥ १६७ ॥

रेकृङ्, शकुङ् शङ्कायाम् । शङ्का सन्देहः, पूर्वस्याऽर्थः; द्वितीयस्य त्रासश्च । आरेकते । आरेकिष्ट । आरेकि । आरिरेके । आरेकिता । आरेकिष्यते । ऋदित्वात् ङे न ह्रस्वः, आरिरेकत् । शकु । नेऽन्ते । शङ्कते । आशङ्क्यते । अशङ्किष्ट, अशङ्किषाताम् । अशङ्कि । शशङ्के, शशङ्काते । शङ्किता । शिशङ्किषते । शाशङ्क्यते । शाशङ् १२ क्ति, कीति० । शङ्कि ३ त्वा, ता, तुम् ॥ १६८ ॥१६९॥

चकि तृप्तिप्रतिघातयोः । चकते । चक्यते । अचकिष्ट, अचकिषाताम् । अचाकि । चेके, चेकाते । चकिष्यते । उक्तार्थयोर्घटादित्वात् णौ ह्रस्वे, चकयति । अचीचकत् । ञिणम् परे तु वा दीर्घः; अचाकि, अचकि । चाकं २, चकं २ । चकितः २, वान् । चकि ३ त्वा, ता, तुम् ॥ १७० ॥

ढौकृङ्, त्रौकृङ्, टीकृङ्, लघुङ्, गतौ । ढौकते । ढौक्यते । अढौकिष्ट । अढौकि, अढौकिषाताम् । डुढौके; डुढौकिरे । ढौकिता २ । डुढौकिषते । डोढौक्यते । डोढौ १२ कीति, क्ति, क्तः, कति० । ढौकयति । ऋदित्वात् ङे न ह्रस्वः, अडुढौकत् ॥ त्रौकृङ् । त्रौकते । तुत्रौके । त्रौकिता ॥ टीकृङ् । आटीकते । आटिटीके । टीकिता । ऋदित्वात् ङे, न ह्रस्वः, अतुत्रौकत् । अटिटीकत् । लघुङ् । नेऽन्ते । लङ्घते, उल्लङ्घते । अलङ्घिष्ट, अलङ्घिषाताम् । अलङ्घि । ललङ्घे, ललङ्घाते । लङ्घिता । लिलङ्घिषते । लालङ्घ्यते । लाल २ ङ्घीति, ग्धि । उल्लङ्घ्य । लङ्घि ४ त्वा, ता, तुम्, तः । लङ्घिर्भोजननिवृत्त्यर्थोऽपि । नवज्वरो लङ्घनीयः ॥ १७१ ॥ १७२ ॥ १७३ ॥ १७४ ॥

श्लाघृङ् कत्थने, उत्कर्षाऽऽख्याने । "श्लाघह्नुस्था-"॥२।२।६०॥ इति चतुर्थी, मैत्राय श्लाघते । श्लाघ्यते । अश्लाघिष्ट, अश्लाघिषाताम् । अश्लाघि । शश्लाघे, शश्लाघाते, शश्लाघिरे, शश्लाघिषे । श्लाघिषीष्ट । श्लाघिता । श्लाघिष्यते । शिश्लाघिषते । शाश्लाघ्यते । शाश्ला १२ घीति, ग्धि० । श्लाघयति । अशश्लाघत् । श्लाघमानः । श्लाघ्यमानम् । श्लाघि ४ त्वा, तः, ता, तुम् ॥ १७५ ॥

लोचृङ् दर्शने । आलोचते । लुलोचे । ङे, अलुलोचत् । शेषं लोकृङ्वत् ॥ १७६ ॥

पचुङ् व्यक्तीकरणे । नेऽन्ते । प्रपञ्चते । पञ्च्यते । अपञ्चिष्ट, अपञ्चिषाताम् । अपञ्चि । पपञ्चे, पपञ्चाते, पपञ्चिरे । पञ्चिष्यते । पिपञ्चिषते । ङे, अपपञ्चत् । पञ्चि ३ ता, तुम्, तः । प्रपञ्च्य । पचुण् विस्तारे इत्यस्य तु, पञ्चयति ॥ १७७ ॥

भ्राजि दीप्तौ । भ्राजते । अभ्राजिष्ट । बभ्राजे । भ्राजिता । बिभ्राजिषते । बाभ्राज्यते । "यजसृज-"॥२।१।८७॥ इत्यत्र राजिसहचरितस्यैव भ्राजेर्ग्रहणादस्य षत्वाभावे यङ्लुपि, बाभ्राक्ति । तस्य तु बाभ्राष्टि इति स्यात् । बाभ्राक्तः, बाभ्राजति । णौ ङे, "भ्राजभास-"॥४।२।३६॥ इति वा ह्रस्वे, अबिभ्रजत्, अबभ्राजत् ॥ १७८ ॥

ऋजि गतिस्थानार्जनोर्जनेषु । ऊर्जनम्, प्राणनम् । अर्जते । "ऋत्यारुपसर्गस्य"॥१।२।९॥ इत्यारि, उपार्ज्यते । आर्जिष्ट, आर्जिषाताम् । आर्जि । "अनात-"॥४।१।६९॥ इति पूर्वस्याले ने च, आनृजे । अर्जिता । अर्जिष्यते । सनि, इट् द्वित्वं प्रति न निमित्तम्, तेन द्वित्वात् प्रागेव स्वरस्य गुणे "अयिर-"॥४।१।६॥ इति रनिषेधनेन जिरेव द्विः, अर्जिजिषते । णौ, अर्जयति । ङे, आर्जिजत् । ऋजितः । अर्जि ३ त्वा, ता, तुम् ॥ १७९ ॥

भृजैङ् भर्जने; पाकप्रकारे । भर्जते । अभर्जिष्ट, अभर्जि । बभृजे । बिभर्जिषते । णौ, भर्जयति । ङे, "ऋद्दवर्णस्य"॥४।२।३७॥ इति वा ऋः, अबीभृजत्, अबभर्जत् । ऐदित्वात् क्तयोर्नेट्, भृक्तः २, वान् । भर्जित्वा ॥१८०॥

तिजि क्षमानिशानयोः; निशानं, तीक्ष्णीकरणम् । "गुप्तिज-"॥३।४।५॥ इति क्षान्तौ, स्वार्थे सनि "स्वार्थे"॥४।४।६०॥ इति नेटि, तितिक्षते कोपम्; तिति ८ क्षेते, क्षन्ते० ॥ भाक ॥ तितिक्ष्यते । अतितिक्षिष्ट । तितिक्षांचक्रे । तितिक्षि ३ षीष्ट; तासे; ष्यते । अतितिक्षिष्यत । तितिक्षमाणः । तितिक्ष्यमाणम् । तितिक्षांचक्राणः । तेजने तु, णिगादिप्रत्ययान्तरमेवाभिधीयते, न तु प्रायेण त्यादयः । णौ, तेजयति । अतीतिजत् । एवं "गुप्तिजो-"३।४।५॥ इत्यादि

सूत्रत्रयोक्तानां गुपादीनामपि सूत्रोक्तार्थाभावे ज्ञेयं, प्रायोग्रहणात्। गोपमानम्, तेजमानम्, केतन्तं वा प्रयुङ्क्ते इत्यादि णिगि वाक्यम्। गोपते, तेजते, केतति, वधते, इत्याद्यपि च क्वचन भवति ॥ १८१ ॥

चेष्टि चेष्टायाम्; चेष्टा, ईहा। आचेष्टते। चेष्ट्यते। अचेष्टिष्ट, अचेष्टिषाताम्। अचेष्टि। चिचेष्टे, चिचेष्टाते। चेष्टिता। चेष्टिष्यते। चिचेष्टिषते। चेचेष्ट्यते। चेचेष्टीति। "धुटो धुटि-"॥१।३।४८॥ इति वा ट्लुकि, चेचे ४ ष्टि, ष्टि, ष्टः, ष्टः। हौ, "हुधुट्-"॥४।२।८३॥ इति धिः, "तवर्गस्य-"॥१।३।६०॥ इति ढिः, "धुटो धुटि-"॥१।३।४८॥ इति वा ट्लुकि, "तृतीय-"॥१।३।४९॥ इति षो डः, चेचे २ ड्ढि, ड्ड्ढि। दिवि, अचेचे २ ट्, ष्टीत्। चेष्टयति। ङे, "वा वेष्टचेष्टः"॥४।१।६६॥ इति पूर्वस्य वा अः, अचचेष्टत्, अचिचेष्टत्। चेष्टमानः। चेष्ट्यमानम्। चेष्टि ४ तः, ता, त्वा, तुम् ॥ १८२ ॥

वेष्टि वेष्टने; वेष्टनम्; ग्रन्थनम्, लोटनम्, परिहाणिश्च। आवेष्टते। सर्वं चेष्टिवत् ॥ १८३ ॥

अथ चत्वार उदितः। कठुङ् शोके; शोकोऽत्राध्यानम्। उत्कण्ठते। उत्कण्ठ्यते। उदकण्ठिष्ट, अकण्ठिषाताम्। अकण्ठि। उच्चकण्ठे। उत्कण्ठिष्यते। उच्चाकण्ठ्यते। उत्कण्ठि ३ तः, ता, तुम् ॥ १८४ ॥

पिडुङ् सङ्घाते। पिण्डते। अपिण्डिष्ट। अपिण्डि, अपिण्डिषाताम्। पिपिण्डे। पिण्डिता। पिण्डिष्यते। पिपिण्डिषते। पिण्डि ४ त्वा, ता, तुम्, तः। पिडुण् सङ्घाते। पिण्डयति ॥ १८५ ॥

खडुङ् मन्थे। खण्डते। अखण्डिष्ट। चखण्डे। खण्डिता। खडुण् भेदे। खण्डयति ॥ १८६ ॥

भडुङ् परिभाषणे। भण्डते। बभण्डे। भण्डिता ॥ १८७ ॥

हेडृङ् अनादरे। हेडते। लत्वे, अवहेलते। अहेलिष्ट। जिहेले। हेलिता। जिहेलिषते। णौ, अवहेलयति, ते। ऋदित्वान्न ह्रस्वः, अवाजिहेलत्। अवहेलि ५ तः, त्वा, ता, तुम्, तव्यम् ॥ १८८ ॥

हिडुङ् गतौ च, चादनादरे । नेऽन्ते; हिण्डते । अहिण्डिष्ट । अहिण्डि । जिहिण्डे । हिण्डिता । जेहिण्ड्यते । जेहिण्डीति । "तवर्गस्य-"॥१।३।६०॥ इति तः टः, "धुटो धुटि-"॥१।३।४८॥ इति वा ड् लुकि, जेहिं २ टि; ट्टि । हिण्डिला । हिण्डितः ॥ १८९ ॥

घुणि, घूर्णि भ्रमणे । घोणते । अघोणिष्ट । जुघुणे । घोणिता ॥ घूर्णते । अघूर्णिष्ट । जुघूर्णे । घूर्णिता ॥ १९० ॥ १९१ ॥

पणि व्यवहारस्तुत्योः । "गुपौधूप-"॥३।४।१॥ इत्याये, आयान्तस्य इङित्त्वाभावात् परस्मै, पणायति । "विनिमेयद्यूत-"॥२।२।१६॥ इति वा कर्मत्वे शेषे षष्ठ्यां च, शतं शतस्य वा पणायति, "अशवित्ते वा"॥ ३। ४।४॥ इति वा आये, अपणायीत् । अपणिष्ट । पणायांचकार । पेणे । पणायिता, पणिता । पम्पण्यते । शेषं पनिवत् ॥ १९२ ॥

यतैङ् प्रयत्ने । यतते । अयतिष्ट, अयतिषाताम् । अयाति । येते । यतिष्यते । यियतिषते । ऐदित्त्वात् क्तयोर्नेट्, यत्तः, २ वान् । आयत्तः । यत्यम् ॥१९३॥

नाथृङ् उपतापैश्वर्याशीःषु च, चाद्याचने; उपताप उपघातः । सर्पिषो नाथते, सर्पिर्नाथते, सर्पिर्मे भूयादित्याशास्ते । "नाथः"॥२।२।१०॥ इति वा अकर्मत्वम् । "आशिषि नाथः"॥३।३।३६॥ इति आशिष्येवात्मनेपदनियमात्, अर्थान्तरे परस्मैपदमेव; रिपुं नाथति, उपतपति । स्वामी नाथति ईष्टे । नृपं नाथति याचते, एष्वात्मनेपदाभावात्, "नाथः"॥२।२।१०॥ इति वा अकर्मकत्वाभावात् "कर्मणि"॥२।२।४०॥ इति द्वितीयैव । नाथ्यते । अनाथीत् । अनाथिष्ट । अनाथि । ननाथ, ननाथतुः । ननाथे, ननाथाते । नाथ्यात् । नाथिषीष्ट । नाथिता २ । नाथिष्य, २ ति, ते । निनाथिषति, ते । नानाथ्यते । नाना २ थीति, त्ति । द्धौ, नानाद्धि । नाथयति । ऋदित्वान्न ह्रस्वे, अननाथत् । नाथन् । नाथमानः । नाथि २ ष्यन्, ष्यमाणः । नाथितः, २ वान् । नाथि २ त्वा, तुम् ॥ १९४ ॥

अथ त्रय उदितः ॥ ग्रथुङ् कौटिल्ये, कौटिल्यं कुसृतिः, बन्धश्च । ग्रन्थते । ग्रन्थ्यते । शेषं सर्वं ग्रन्थश् वत् । परं क्ङिति न नस्य लुक् ॥ १९५ ॥

वदुङ् स्तुत्यभिवादनयोः, स्तुतिर्गुणैः प्रशंसा; अभिवादनं पादयोः प्रणिपातः । वन्दते देवान्, स्तौतीत्यर्थः। वन्दते गुरून्, अभिवादयत इत्यर्थः। क्ये, वन्द्यते। अवन्दिष्ट, अवन्दि९ षाताम्, षत, ष्ठाः, षाथाम्, ध्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि। अवन्दि। ववन्दे, ववदान्ते, ववन्दिषे। वन्दिषीष्ट। वन्दिता। वन्दिष्यते। अवन्दिष्यत । विवन्दिषते। "सन्भिक्षाशंसेरुः"॥५।२।३३॥ इति उः, विवन्दिषुः। क्विपि परे रत्वे षत्वस्यासत्त्वात् "सो रुः"॥२।१।७२॥ इति रत्वे, "पदान्ते"॥२।१।६४॥ इति दीर्घे, विवन्दीः, विवन्दिषौ, विवन्दिषः; विवन्दीर्भिः । एवं सन्नन्तेऽन्यत्रापि ज्ञेयम् ।वावन्द्यते । वाव १२ न्दीति, न्ति, न्तः, दति, दीषि, त्सि, त्थः, त्थ, दीमि, द्मि, द्वः, द्मः। द्धि, वावन्द्धि ॥ ह्यस्तनी ॥ अवाव११न्दीत्, न्, न्ताम्, न्दुः, न्दीः, न्०॥ अद्यतनी ॥ अवाव ९ न्दीत, दिष्टां०। वन्दयति । अववन्दत् । अवन्दि । ञिटि, अवन्दिषाताम्, इटि, अवन्दयिषाताम्, अवन्दिध्वम्, ड्ढ्वम्, अवन्दयिध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्। वन्दमानः । वन्द्यमानः । वन्दिष्यमाणः । ववन्दानः । वन्दि ३ त्वा, तः, तुम्॥ १९६ ॥

स्पदुङ् किञ्चिच्चलने । स्पन्दते, परिस्पन्दते । स्पन्द्यते। अस्पन्दिष्ट । अस्पन्दि । पस्पन्दे , पस्पन्दाते । स्पन्दिष्यते । पिस्पन्दिषते। पास्पन्द्यते । स्पन्दयति । अत्र "चल्याहार-"॥३।३।१०८॥ इति फलवत्यपि परस्मैपदम् । ङे, अपस्पन्दत्। स्पन्दमानः । पस्पन्दानः । स्पन्दि २ त्वा, तः। प्रस्पन्द्य ॥१९७॥

मुदि हर्षे। अकर्मकोऽयम् । मोदते । मुद्यते । अमोदिष्ट, अमोदि१० षातां०, ष्महि। अमोदि, अमोदिषाताम्। मुमुदे, मुमुदाते। मोदिषीष्ट। मोदिता। मोदिष्यते। अमोदिष्यत । "वौ व्यञ्जन-"॥४।३।२५॥ इति वा किल्वे; मुमुदिषते। मुमोदिषते । मोमुद्यते। "ह्रयुक्तोपान्त्य-"॥४।३।१४॥ इति गुणाभावे, मोमुदीति, मोमोत्ति, मोमुत्तः, मोमुदति। अम्वि, अमोमुदम्। णौ, प्रमोदयति चैत्रम्; अत्र "आणिगि-"॥३।३।१०७॥ इति फलवत्यपि परस्मैपदम्; "गतिबोध-"॥२।२।५॥ इत्यणिक्कर्तुः कर्मत्वं च। अनुमोदयामि। ङे, अमूमुदत। अमोदि। इटि, अमोदयि१०षाताम, षत, ष्ठाः, षाथाम्, ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि । ञिटि, अमोदि ९ षाताम्, षत, ष्ठाः, षाथाम, ध्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि।

शेषं णिगन्तभूवत् । मोदमानः । मुद्यमानम् । मुमुदानः । मुदित्वा, मोदित्वा । मुदितः, २ वान् । "उतिशव-"॥४।३।२६॥ इति भावे, आरम्भे च वा क्त्वे, मुदितम्, मोदितमनेन । प्रमुदितः २, वान् । प्रमोदितः, २ वान् ॥ १९८ ॥

ददि दाने । ददते, ददेते, ददन्ते । दद्यते । अददिष्ट, अददिषाताम्, अदादि । "न शसदद" ॥ ४ । १ । ३० ॥ इत्येत्त्वनिषेधात् । ददे । ददिता । दिददिषते । दादद्यते ॥ १९९ ॥

हदि पुरीषोत्सर्गे । अनिट् । हदते । "धुड्ह्रस्व-"॥४।३।७०॥ इति सिच्-लुक्; अहत्त, अहत्साताम्, अह२द्ध्वम्, द्ध्वम् । अहादि । जहदे । हत्स्यते । जिहत्सते । हत्त्वा । हत्ता । हन्नः । हत्तुम् ॥ २०० ॥

ष्वदि, स्वादि आस्वादने; जिह्वया लेहे । चैत्राय स्वदते । स्वद्यते । अस्वदिष्ट । अस्वादि । सस्वदे । स्वदिता । स्वदिष्यते । "णिस्तोरेव"॥२।३।३७॥ इति नियमात् षत्वाभावे, सिस्वदिषते । णौ, स्वादयति । षपाठात्षः, असिष्वदत् । णिस्तोरेवेत्यत्र वर्जनात् ण्यन्तस्य षत्वाभावे, सिस्वादयिषति । स्वादि । स्वादते । सस्वादे । स्वादिता । अषपाठान्न षः । सिस्वादिषते । असिस्वदत् ॥२०१॥२०२॥

कुर्दि क्रीडायाम् । "भ्वादेः-"॥२।१।६३॥ इति दीर्घे, कूर्दते । अकूर्दिष्ट । चुकूर्दे । कूर्दिता । यङ्लुपि दिवि, अचोकू २ र्दीत्, र्द् । सिवि, अचो ३ कूः, कूर्द्, कूर्दीः ॥ २०३ ॥

ह्लादैङ् सुखे च, चाच्छब्दे । आह्लादते । आह्लादिष्ट । आह्लादि । जह्लादे । ह्लादिषीष्ट । ह्लादिता । ह्लादिष्यते । जिह्लादिषते । जाह्लाद्यते । जाह्ला२दीति, त्ति । आह्लादयति । अजिह्लदत् । क्ते, आह्लादितः । ऐदित्वान्नेट् । "ह्लादो ह्लद्"॥४।२।६७॥ इति ह्लद्, तो नश्च, प्रह्लन्नः २, वान् । ह्लादि ३ त्वा, ता, तुम् ॥ २०४ ॥

पर्दि कुत्सिते शब्दे, पायुध्वनौ । अन्ये त्वशब्देऽधोवाते इत्याहुः । पर्दते । पर्द्यते । अपर्दिष्ट । अपर्दि । पपर्दे । पर्दिता । पर्दिष्यते । पिपर्दिषते । यङ्-लुपि, दिवि, अपाप २ र्दीत्, र्द् । सिवि, अपापाः, अपाप३र्दीः, र्द्, र्त् ॥२०५॥

एधि वृद्धौ । अकर्मकः, सोपसर्गस्तु साप्योऽपि । एधते । "उपसर्गस्याऽनि-

ण्"॥१।२।१९॥ इत्यत्रैधिवर्जनान्नालुक् । प्रैधते । एध्यते । ऐधिष्ट, ऐधिषाताम् । ऐधि । एधांचक्रे । एधिषीष्ट । एधिता । एधिष्यते । ऐधिष्यत । एदिधिषते । एधयति। ऐदिधत् । ओणेर्ऋदित्करणान्नित्यमपि द्वित्वं ह्रस्वो बाधते, तेन ह्रस्वे द्वित्वे च, मा भवानिदिधत् । एधमानः । एधि ३ तः, त्वा, तुम् ॥ २०६ ॥

स्पर्द्धि सङ्घर्षे; सङ्घर्षः पराभिभवेच्छा । अकर्मकोऽयम् । स्पर्द्धते । अस्पर्धिष्ट, अस्पर्द्धिषाताम् । अस्पर्धि । पस्पर्धे, पस्पर्द्धाते, पस्पर्धिरे । स्पर्द्धिषीष्ट । स्पर्द्धिता । स्पर्द्धिष्यते । पिस्पर्धिषते । पास्पर्ध्यते । पास्प १२ र्द्धीति, र्द्धि, र्द्धः, र्द्धति, र्द्धीषि, त्सि० । हौ, पास्पर्द्धि ॥ ह्यस्तनी ॥ अपास्प ३र्त्, र्द्, र्द्धीत्, अपास्पर्द्धाम्, अपास्पर्द्धुः, "सेः स्द्धाम्"॥४।३।७९॥ इति सिब्लुकि, धस्य रुत्वे, "रोरे-"॥१।३।४१॥ लुकि, दीर्घे च । अपास्पाः, अपास्प ३ र्त्, र्द्, र्द्धीः, अपास्प५ र्द्धम्, र्द्ध, र्धम्, ध्व, ध्म ॥ अद्यतनी ॥ अपास्प २ र्द्धीत्, र्द्धिष्टाम् । स्पर्द्धयति मैत्रमित्यत्र "अणिगि-"॥३।३।१०७॥ इति फलवत्यपि परस्मै, "गतिबोध-"॥२।२।५॥ इत्यणिक्कर्तुः कर्मत्वं च । ङे, अपस्पर्द्धत् । स्पर्द्धमानः स्पर्द्धिष्यमाणः । स्पर्द्धि ५ त्वा, ता, तुम्, तः २ वान् ॥ २०७ ॥

बाधृङ् रोटने, प्रातिघाते । बाधते । अबाधिष्ट, अबाधिषाताम् । अबाधि । बबाधे, बबाधाते । बाधिषीष्ट । बाधिता । बाधिष्यते । बाबाध्यते । बाबा ५ ५ धीति, द्धि, द्धः, धति, धीषि । "गडद-"॥२।१।७७॥ इति बो भत्वे, बाभात्सि । हौ, बाभाद्धि ॥ ह्यस्तनी ॥ पदान्ते भत्वे, अबाभा २ द्, त्, अबाबा ३ धीत्, द्धां, धुः । अबा ३ भाः, भात्, भाद् । अबाबा ६ धीः, द्धम्, द्ध, धम्, ध्व, ध्म । बाधयति । ऋदित्वाद् ङे न ह्रस्वः, अबबाधत् । बाध्यमानम् । बाधि ३ त्वा, तः, तुम् ॥ २०८ ॥

दधि धारणे । दधते । अदधिष्ट । अदाधि । देधे । दधिता । दादध्यते । दाद २ धीति, द्धि । णौ ङे, अदीदधत् ॥ २०९ ॥

बधि बन्धने । "शान्दान्-"॥३।४।७॥ इति वैरूप्ये सनीतो दीर्घे च, बीभत्सते । "स्वार्थे"॥४।४।६०॥ इति नेट्, अबीभत्सिष्ट, अबीभत्सिषाताम् । अबीभत्सि । बीभत्सांचक्रे । बीभत्सिषीष्ट । बीभत्सिता । बीभत्सिष्यते । इच्छा सनि तु, बीभत्सिषते । बीभत्समानः । बीभत्स्यमानम् । बीभत्सांचक्राणः । अर्थान्तरे

तु प्रत्ययान्तरं स्यान्नतु प्रायेण त्यादयः प्रायोग्रहणात्, बधते । “न जनबधः”॥ ॥४।३।५४॥ इति वृद्ध्यभावे, अवधि; हिंसित इत्यर्थः ॥ २१० ॥

पनि स्तुतौ । जिनं पनायति । अत्रायान्तस्येङित्त्वाभावात्परस्मैपदम् । पनेरिदित्त्वादात्मनेपदमित्यन्ये; पनायते जिनम् । एवं पणेरपि । पणायते । “अशविते वा”॥३।४।४॥ इति वा आये, पनाय्यते । पन्यते । अपनायीत् । अपनिष्ट । पनायांचकार । पेने, पेनाते । पनायिष्यति । पनिष्यते । पिपनायिषति । पिपनिषते । पम्पन्यते । पम्प २ नीति, न्ति; पम्पान्तः, पम्पनति । पनाययति । पानयति । आयस्यादन्तत्वे, अपपनायत् । अपीपनत् । पनायि, २ त्वा, तः । पनि २ त्वा, तः ॥ २११ ॥

मानि पूजायां विचारे । “शान्दान्मान्-”॥३।४।७॥ इति सनीतौ दीर्घे च, मीमांसते धर्मम् । शेषं गर्हासन्नन्तगुपिवत् । अर्थान्तरे तु त्यादिवर्जं प्रत्ययान्तरमेव स्यात् । यङि, मामान्यते; अत्रातः परस्यानुनासिकस्याभावात् “मुरत-”॥४।१।५१॥ इति पूर्वस्य मुरन्तो न भवति । येत्वत इति पूर्वस्य विशेषणं प्रतिपन्नास्तन्मते मौ, मंमान्यते । णिगि, मानयति । अमीमनत् । मानि ३ तः, तुम्, तव्यम् ॥ २१२ ॥

टुवेपृङ्, कपुङ् चलने । वेपते; प्रवेपते । अवेपिष्ट । अवेपि । विवेपे, विवेपाते । वेपिता । वेवेप्यते । वेवे १२ सि, पीति, सः, पति० । वेपयति । ऋदित्वाद् ङे, अविवेपत् । कपुङ् । नेऽन्ते । कम्पते । अकम्पिष्ट, अकम्पिषाताम् । अकम्पि । चकम्पे । कम्पिता । कम्पिष्यते । “चल्याहार-”॥३।३।१०८॥ इति फलवत्यपि परस्मैपदे, “गतिबोध-”॥२।२।५॥ इत्यणिक्कर्तुः कर्मत्वे च, कम्पयति शाखाम् । अचकम्पत् । “लङ्गिकम्प्योः-”॥४।२।४७॥ इति नलुकि, विकपितः । अङ्गविकृतेरन्यत्र तु, कम्पितः ॥ २१३ ॥ २१४ ॥

त्रपौषि लज्जायाम् । त्रपते । अत्रपिष्ट । औदित्त्वाद्वेट्; अत्रप्त, अत्रपिषाताम्, अत्रप्साताम् । अत्रापि । “तॄत्रप-”॥४।१।२५॥ इत्येत्त्वे; त्रेपे । त्रप्ता, त्रपिता । त्रप्स्यते, त्रपिष्यते । तित्रपिषते । तित्रप्सते । वेट्त्वान्नेट्; त्रप्तः, २ वान् ॥ २१५ ॥

गुपि गोपनकुत्सनयोः । गर्हायां सनि, "स्वार्थे"॥४।४।६०॥ इति नेटि, जुगुप्सते, जुगुप्सेते । क्ये, जुगुप्स्यते । अजुगुप्सिष्ट ॥ भाक ॥ अजुगुप्सि, अजुगुप्सिषाताम् ॥ परोक्षा ॥ जुगुप्सां ३ चक्रे, बभूव, आस वा ॥ भाक ॥ जुगुप्सां ३ चक्रे, बभूवे, आहे वा । आ० ॥ जुगुप्सिषीष्ट ॥ भाक ॥ जुगुप्सिषीष्ट । श्वस्तनी ॥ जुगुप्सिता ॥ भाक ॥ जुगुप्सिता ॥ भविष्यन्ती । जुगुप्सिष्यते ॥ क्रिया० ॥ अजुगुप्सिष्यत ॥ भाक ॥ अजुगुप्सिष्यत । जुगुप्सितुमिच्छति इतीच्छा सनि, जुगुप्सिषते । गर्हाया अन्यत्र तु प्रायेण त्यादयो नाभिधीयन्ते, तेनार्थान्तरे णौ, गोपयति । अजूगुपत् । क्तौ, गुप्तिः ॥ ननु तितिक्षते, मीमांसते, जुगुप्सते, इत्यादौ कथं सन्व्यवधानेऽप्यात्मनेपदम् । उच्यते, तिजादीनामर्थविशेषेषु केवलानामप्रयोगात्सन्नन्तसमुदायार्थमेवानुबन्धाविधानम्, तेन सन्व्यवधानेऽपि आत्मनेपदम् ॥ २१६ ॥

लबुङ् अवस्रंसने च, चाच्छब्दे । नेऽन्ते । लम्बते; प्रलम्बते; अवलम्बते; आलम्बते; उल्लम्बते; विलम्बते; इत्यनेकार्थत्वमुपसर्गद्योतितमन्यत्राप्युदाहार्यम् । अलम्बिष्ट, अलम्बिषाताम्। अलम्बि । ललम्बे । लम्बिषीष्ट । लम्बिता । लिलम्बिषते । लम्बयति । अललम्बत् ॥ २१७ ॥

कवृङ् वर्णे । वर्णो वर्णनम्; शुक्लादिश्च । कवते । अकविष्ट । अकावि। चकवे । कविता । ऋदित्त्वाद् ङे, अचकावत्, अयं वान्तोऽपि वृद्धोक्तत्वाद्वान्तेषु प्रोक्तः ॥ २१८ ॥

अथ त्रय उदितः । लभुङ् शब्दे । उपालम्भते । अलम्भिष्ट । ललम्भे । लम्भिता । णौ, लम्भयति । अललम्भत् । क्ते, लम्भितः ॥ २१९ ॥

ष्टभुङ् स्तम्भे; क्रियानिरोधे। स्तम्भते । "अवाच्चाश्रय-"॥२।३।४२॥ इति षत्वे, अवष्टम्भते दण्डम् । अवष्टम्भते शूरः । "उदः स्था-"॥१।३।४५॥ इति स्लुकि, उत्तम्भते पताकाम् । स्तम्भ्यते । अस्तम्भिष्ट । तस्तम्भे । स्तम्भिता । तिष्टम्भिषते । तास्तम्भ्यते । स्तम्भयति । अतस्तम्भत् । णौ सनि षत्वे, तिष्टम्भयिषते । ठपरः षकारोऽयमित्येके तन्मते, टाष्ठम्भ्यते । टिष्ठम्भायिषते ॥ २२० ॥

जृभुङ् गात्रविनामे । जृम्भते; विजृम्भते । जृम्म्यते । अजृम्भिष्ट, अजृम्भिषाताम् । अजृम्भि । जजृम्भे । जृम्भिता । जृम्भिष्यते । जृम्भितः २, वान् । जृम्भित्वा ॥ २२१ ॥

अथ द्वावनिटौ, रभिं राभस्ये, कार्योद्यमे । आरभते; संरभते; परिरभते । आरभ्यते । आरब्ध, आर ९ प्साताम्, प्सत, ब्धाः, प्साथाम्, ब्ध्वम्, ब्द्ध्वम्, प्सि, प्स्वहि, प्स्महि। "रभोऽपरोक्षा-"॥४।४।१०२॥ इति स्वरे ने, आरम्भि, आरप्साताम् । आरेभे, आरेभाते । आर २ प्सीष्ट । आरब्धासे । आरप्स्यते । सनि, आरिप्सते । "रभलभ-"॥४।१।२१॥ इति इर्नच द्विः, रार ३ भ्यते, म्भीति, ब्धि । "रभोऽपरोक्षा-"॥४।४।१०२॥ इति स्वरे ने, आरम्भयति । आरम्भ्यते । आररम्भत् । आरभमाणः । आरभ्यमाणम् । आरेभाणः । आरब्धः, २ वान् । रब्ध्वा। आरभ्य । आर २ ब्धा, ब्धुम् । आरम्भणीयम् । आरभ्यम् । "ख्णम्चाभीक्ष्ण्ये" ॥५।४।४८॥ इति ख्णमि, आरम्भमारम्भं याति ॥ २२२ ॥

डुलभिंष् प्राप्तौ । लभते; आलभते; उपालभते । लभ्यते । अलब्ध, अलप्साताम्, अल ८ प्सत, ब्धाः, प्साथाम्; ब्ध्वम्, ब्द्ध्वम्, प्सि, प्स्वहि, प्स्महि। "ञिख्णमोर्वा"॥४।४।१०६॥ इति वा ने, अलाभि, अलम्भि। "उपसर्गात्खल्-" ॥४।४।१०७॥ इति ने, उपालम्भि; प्रालम्भि, अवाञ्चि इत्यर्थः । लेभे, लेभाते, लेभिरे, लेभिषे । लप्सीष्ट । लब्धा । लप्स्यते । सनि "रभ-"॥४।१।२१॥ इति इर्नच द्विः, लिप्सते । लालभ्यते। "लभः"॥४।४।१०३॥ इति शव्परोक्षावर्जे स्वरे ने, लाल१२म्भीति, ब्धि, ब्धः, म्भति, म्भीषि, प्सि, ब्धः, ब्ध, म्भीमि, म्भि, म्वः, म्मः । प्रतिलम्भयति । लम्म्यते । अललम्भत् । लभमानः । लभ्यमानम् । लप्स्यमानः। लेभानः । लब्धः २, वान् । आलब्धा । लब्धा । लब्धुम्। ख्णमि, लाभं २, लम्भं २ । "आङो यि"॥४।४।१०४॥ इति नेऽन्ते, आलम्भ्या गौः । आङोऽन्यत्र, लभ्यः। "उपात् स्तुतौ"॥४।४।१०५॥ इति नेऽन्ते, उपलम्भ्या विद्या भवता । स्तुतेरन्यत्र उपलभ्या वार्त्ता । उपलभ्यमस्मात् ॥ २२३ ॥

क्षमौषि सहने । क्षमते, क्षमेते । क्षमताम्। अक्षमत । क्षम्यते। औदित्वाद् "धूगौदितः"॥४।४।३८॥ इति वेटि, अक्षमिष्ट; अक्षंस्त, अक्षमिषाताम्, अक्षं-

सातम् । "मोऽकमियमि-"॥४।३।५५॥ इति न वृद्धिः, अक्षमि । चक्षमे, चक्षमाते, चक्षमिरे । क्षमिषीष्ट, क्षंसीष्ट । क्षमिता, क्षन्ता । क्षमिष्यते, क्षंस्यते । चिक्षमिषते, चिक्षंसते । चङ्क्षम्यते । अचङ्क्षमिष्ट । लुपि, चङ्क्ष २ मीति, न्ति, चङ्क्षान्तः, चङ्क्षमति, चङ्क्षमीषि, चङ्क्षंसि, चङ्क्षान् २ थः, थ । चङ्क्ष ४ न्मि, मीमि, न्वः, न्मः । क्ये, चङ्क्षम्यते । चङ्क्षम्यात् । चङ्क्षांहि, अत्र "शिड्हे-"॥१।३।४०॥ इत्यनुस्वारः॥ ह्यस्तनी॥अचङ् १ १क्षत्, क्षमीत्, क्षान्ताम्, क्षमुः, क्षन्, क्षमीः, क्षान्तं, क्षान्त, क्षमम्, क्षन्वः, क्षन्मः ॥ अद्य०॥ "नाश्वि-"॥ ॥४।३।४९॥ इति न वृद्धौ, अचङ्क्षमीत् । शेषं पचिवत् । यत औदित्त्वेन यङ्लुपि न वेट्त्वं किंतु सेट्त्वं नित्यं, औदित इत्यनुबन्धनिर्दिष्टस्य यङ्लुप्यप्राप्तेः । एवमन्यत्रापि । क्षमयति । अचिक्षमत् । अक्षामि, अक्षमि । क्षममाणः । क्षम्यमाणः । क्षम्यमाणम् । चक्षमाणः । वेट्त्वान्नेट्, क्षान्तः, २ वान्, क्षान्त्वा, क्षमित्वा । क्षमि २ ता, तुम् । क्ष २ न्ता, न्तुम् ॥ २२४ ॥

कमूङ् कान्तौ । कान्तिरभिलाषः । "कमेर्णिङ्"॥३।४।२॥ कामयते । अकामयत । "अशविते वा"॥३।४।४॥ इति वा णिङि, कम्यते, काम्यते । णिङभावे "णिश्रि-"॥३।४।५८॥ इति ङे, अचकमत । णिङि, अचीकमत । "मोऽकमियमि-"॥४।३।५५॥ इति अनिषेधाद् वृद्धौ, अकामि । णिङ्यपि, अकामि, अकमिषाताम् । "अमोऽकम्य-"॥४।२।२६॥ इति न ह्रस्वः, अकामयिषाताम् । चकमे । कामयांचक्रे । कमिषीष्ट, कामयिषीष्ट । कमिता, कामयिता । कमिष्यते, कामयिष्यते । अकमिष्यत, अकामयिष्यत । चिकमिषते । चिकामयिषते । चङ्कम्यते । लुपि चमूवत् । णिङन्तस्य तु वाक्यमेव न यङ् । णिगि, "अमो-"॥४।२।२६॥ इति न ह्रस्वे, कामयति । अचीकमत् । अकामि । कामयमानः । कम्यमानम् । काम्यमानम् । चकमानः । कामयाञ्चक्राणः । "ऊदितो वा" ॥४।४।४२॥ इति वेट्, कान्त्वा; कमित्वा । कामयित्वा । वेट्त्वान्नेट्, कान्तः । णिङि, कामितः । कमि २ ता, तुम् । कामयि २ ता, तुम् । कम्यम्, काम्यम् ॥२२५॥

अयि गतौ । अयते । "उपसर्गस्यायौ"॥२।३।१००॥ इति लः, पलायते;

पल्ययते; प्लययते। पलाय्यते। पलायिष्ट, पलायिषाताम्, पलायि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्। पलायि। "दयायास्-"॥३।४।४७॥ इत्यामि, अयां ३ चक्रे, बभूव, आस वा। पलायां ३ चक्रे । ३ । पलायि ३ षीष्ट, षीढ्वम्, षीध्वम् । पलायिष्यते । पलायिष्यत । पलायियिषते । णौ, पलाययति । पलायियत् । पलायमानः । पलाय्यमानम् । पलायाञ्चक्राणः । पलायि ४ ता, तुम्, तः, वान् । पलाय्य ॥ २२६ ॥

दयि दानगतिहिंसादहनेषु च । चाद्रक्षणे । "स्मृत्यर्थदयेशः"॥२।२।११॥ इति वा कर्मत्वे, दानस्य दानं वा दयते । क्ये, दय्यते । अदयिष्ट । "दयाय-" ॥३।४।४७॥ इत्यामि, "वेत्तेः कित्"॥३।४।५१॥ इत्यत्र कित्त्वभणनेन आमः परोक्षात्वाभावाद् "अनादेशादेः-"॥४।१।२४॥ इति न एः, दयाञ्चक्रे । दयिता । दिदयिषते।यलवानां वाऽनुनासिकत्वे, दन्दय्यँते। दादय्यते। दन्दयीँति।दादयीति । "य्वोः-"॥४।४।१२१॥ इति यूलुकि, दादति, दादतः, दादयति, दादयीषि, दादसि, दाद २ थः, थ । यो लुकि, "मव्यस्याः" ॥४।२।११३॥ इत्याकारे च, दादामि, दादावः, दादामः ॥ अद्य० ॥ "नश्वि-"॥४।३।४९॥ इति न वृद्धौ, अदादयीत् । एवं दन्दयूँरूपाण्यपि । दाययति । अदीदयत् । दयि ३ तः, त्वा, तुम् ॥२२७॥

ऊयैङ् तन्तुसन्ताने। ऊयते; प्रोयते; व्यूयते। क्ये, व्यूय्यते। औयिष्ट। औयि, औयिषाताम्। "गुरुनाम्य-"॥३।४।४८॥ इत्यामि, ऊयाञ्चक्रे । ऊयिता । ऊयिष्यते। औयिष्यत, ऊयियिषते । ऊययति । ऐदित्त्वात् क्तयोर्नेट्, "य्वोः-"॥४।४।१२१॥ इति यूलुक् च, ऊतः २, वान् । ऊयित्वा ॥ २२८ ॥

स्फायैङ्, ओप्यायैङ् वृद्धौ। स्फायते । स्फायताम् । अस्फायत । अस्फायिष्ट ॥ परोक्षा ॥ पस्फाये । स्फायिता । पिस्फायिषते । पास्फाय्यते । पास्फायीति; पास्फाति। "य्वोः-"॥४।४।१२१॥ इति यूलुक्, पास्फातः, पास्फायति। णौ, स्फायः स्फाव्; स्फावयति। पारायणिकानां तु, स्फाययतीत्यपि । ङे, अपिस्फवत्, अपिस्फयत् । ऐदित्त्वान्नेट् क्तयोः, स्फातः २, वान् । "स्फायः स्फीर्वा"॥४।१।९४॥ स्फीतः२, वान् । प्यायैङ् । आप्यायते। प्याय्यते । "दीपजन-"॥३।४।६७॥ इति कर्त्तरि वा ञिचि तलुकि, अप्यायि, अप्यायिष्ट, अप्यायिषाताम्, अप्यायि॥ परोक्षायङोः "प्यायः पीः"॥४।१।९१॥ आपिप्ये, आपिप्याते। प्यायिता। पिप्यायिषते ।

आपेपीयते । "प्यायः पीः"॥४।१।९१॥ इति दीर्घनिर्देशाद्यङ्लुप्यपि पीः, आपेपेति, आपेपयीति । आपेपीतः, आपेप्यति । क्ते, पेप्यितः । प्याययति । अपिप्ययत् । "क्तयोरनुप-"॥४।१।९२॥ इति पीः, "सूयत्य-"॥४।२।७०॥ इति नः, पीनम् २, वन्मुखम् । "आङोऽन्धूध-"॥४।१।९३॥ इति पीः, आपीनमूधः । अर्थान्तरे तु आप्यानश्चन्द्रः, "व्यञ्जनान्तस्थ-"॥४।२।७१॥ इति नः ॥ २२९ ॥ २३० ॥

तायृङ् सन्तानपालनयोः । सन्तानः, प्रबन्धः । तायते । ताय्यते । "दीप-जन-"॥३।४।६७॥ इति वा ञिचि, अतायि, अतायिष्ट । अतायि । तताये । तायिता । ताताय्यते । तातायीति, तातति । ऋदित्वान् ङे न ह्रस्वः, अततायत् । तृनि, तायनशीलः तायिता । "णिन्चावश्यक-"॥५।४।३६॥ इति णिनि, तायी ॥ २३१ ॥

वलि संवरणे । वलते, निर्वलते, अववलते । वल्यते । अवलिष्ट । अवालि । "न शस-"॥४।१।३०॥ इत्येत्वनिषेधात्, ववले । वलिषीष्ट । वलिता । विवलिषते । लान्तस्य वाऽनुनासिकान्तत्वे, वंवल्यँते, वावल्यते । वालयति । अवीवलत् । वलमानः । वल्यमानम् । ववलानः । वलि ५ ता, तुम्, त्वा, तः, २ वान् ॥२३२॥

कलि शब्दसङ्ख्यानयोः । कलते; आकलते; सङ्कलते; प्रत्याकलते; विकलते । अकलिष्ट । अकालि । चकले । कलिषीष्ट । कालयति । अचीकलत् । कलमानः । कलि ५ ता, त्वा, तुम्, तः २, वान् ॥ २३३ ॥

तेवृङ्, देवृङ् देवने । तेवते । तितेवे । तेविता । ऋदित्त्वान् ङे, अतितेवत् । देवृङ् । देवते, परिदेवते । दिदेवे । देविता । देदेव्यते । देदेवीति, देदयोति, देदेति, देदयूतः, देदेवति । ऋदित्त्वान् ङे न ह्रस्वः, अदिदेवत् । द्वयोः शेषं षेवृङ्वत् ॥ २३४ ॥ २३५ ॥

षेवृङ्, सेवृङ् सेवने । सेवते; आसेवते । "परिनिवेः सेवः"॥२।३।४६॥ इति षः, परिषेवते; निषेवते; विषेवते । अन्योपसर्गे तु न षत्वम्, अनुसेवते; प्रतिसेवते । सेव्यते । अड्व्यवायेऽपि षः; पर्यषेवत; न्यषेवत । असेविष्ट, असेविषाताम् । असेवि । षपाठात् "नाम्यन्तस्था-"॥२।३।१५॥ इति षः, सिषेवे; परिषिषेवे । सेविषीष्ट । सेविता । सेविष्यते । सिषेविषते । परिषिषेविषते, अत्र

"णिस्तोरेव-"॥२।३।३७॥ इति नियमेन बाधितमपि "परिनि-"॥२।३।४६॥ इत्यनेन षत्वम्। सेषेव्यते । परिषेषेव्यते । प्रतिसेषेव्यते । सेषेवीति। "अनुनासिके च-"॥ ४।१।१०८॥ इति वस्योटि गुणे च, सेषयोति। क्ङित्येवोडिति मते तु "य्वोः-"॥४। ४।१२१॥ इति वलुकि, सेषेति, सेषयूतः सेषेवति, सेषेवीषि, सेषयोषि, सेषेषि, सेषयूथः, सेषयूथ, सेषेवीमि, सेषयोमि, वस्य वाऽनुनासिकत्वे, सेषयूवः, सेषेवः, सेषयूमः, सेषेमः । सेवयति। ऋदित्त्वान् ङे न ह्रस्वः, असिषेवत्; पर्यषिषेवत्; प्रत्यसिषेवत्, अत्रोपसर्गाश्रितं न षत्वम्, धातोस्तु द्वित्वाश्रितं स्यादेव। सेवि ५ त्वा, ता, तुम्, तः २, वान्। सेवृङप्येवम्, परं अषपाठान्न षत्वम्, सेवते; परिसेवते। पर्यसेवत । असेविष्ट । सिसेवे। परिसिसेविषते । सेसेव्यते । सेसेवीति । सेस- योति । सेसेति । णौ ङे, असिसेवत् ॥ २३६ ॥ २३७ ॥

काशृङ् दीप्तौ । प्रकाशते । अकाशिष्ट। अकाशि । चकाशे । काशिता। णौ, प्रकाशयति। प्रकाश्यते । ऋदित्वान्न ह्रस्वः, अचकाशत् ॥ २३८ ॥

भाषि व्यक्तायां वाचि। भाषते; परिभाषते; सम्भाषते । भाष्यते। अभा- षिष्ट, अभाषिषाताम् । अभाषि। बभाषे ।भाषिषीष्ट । भाषिता । बिभाषि- षते । बाभाष्यते । भाषयति । ङे, "भ्राज-"॥४।२।३६॥ इति वा ह्रस्वः, अबी- भषत् । अबभाषत् । भाषि ५ ता, त्वा, तुम्, तः, २ वान् ॥२३९॥

एषृङ्गतौ । एषते; अन्वेषते । अन्वैषिष्ट, अन्वैषिषाताम् । अन्वैषि, "गुरु- नाम्य-"॥३।४।४८॥ इत्यामि, एषांचक्रे । एषिता । अन्वेषिषषते, "स्वरादेर्द्वि-" ॥४।१।४॥ इति षिर्द्विः, ऋदित्त्वान् ङे न ह्रस्वः, माभवानेषिषत्। अन्वेषि ४ ता, तुम्, तः, २ वान् । अन्वेष्य ॥ २४० ॥

हेषृङ् अव्यक्ते शब्दे। हेषते। अहेषिष्ट। जिहेषे । हेषिता। ऋदित्वान् ङे, अजिहेषत् । हेषितम् ॥ २४१ ॥

कासृङ् शब्दकुत्सायाम् । शब्दस्य कुत्सारोपः । कासते । अकासिष्ट । "दयाय-"॥३।४।४७॥ इत्यामि, कासाञ्चक्रे। कासिता, कासयति । ऋदित्त्वान्न ह्रस्वः, अचकासत् । कासि ३ त्वा, तुम्, तम् ॥ २४२ ॥

भासि दीप्तौ । अवभासते; बिभासते; प्रतिभासते; प्रभासते । भास्यते ।

अभासिष्ट । अभासि । बभा २ से, साते । भासिता । बिभासिषते । बाभास्यते । बाभासीति, बाभास्ति । हौ, बाभाद्धि । "भ्राज-"॥४।२।३६॥ इति वा ह्रस्वे, अबीभसत्; अबभासत् । भासि ५ ता, त्वा, तुम्, तः, २ वान् ॥२४३॥

आङः शसुङ् इच्छायाम् । आङः पर एवायं प्रयुज्यते, नान्योपसर्गात्, नापि केवलः । नेऽन्ते । आशंसते । आशंस्यते । आशंसिष्ट । आशशंसे । आशंसिषीष्ट । आशंसिता । आशंसिष्यते । आशिशंसिषते । आशाशं३स्यते, सीति, स्ति । आशंसयति । आशशंसत् । आशंसि ३ तुम्, तः, २ वान् । आशंस्य ॥ २४४ ॥

ग्रसूङ् अदने । ग्रसते । ग्रस्यते । अग्रसिष्ट । अग्रासि । जग्रसे । ग्रसिता । ग्रसिष्यते । जिग्रसिषते । जाग्रस्यते । जाग्र२सीति, स्ति । ग्रासयति । अजिग्रसत् । ऊदित्वात्, ग्रस्त्वा, ग्रसित्वा । ग्रसितुम् । वेट्त्वान्नेट्, ग्रस्तः २, वान् ॥ २४५ ॥

ईहि चेष्टायाम्, ईहते । ईह्यते । ऐहिष्ट । ईहाञ्चक्रे । अत्र कृग उभयपदित्वेऽपि "आमः कृगः"॥३।३।७५॥ इत्यात्मनेपदमेव न परस्मै । ईहाम्बभूव; ईहामास; भ्वस्तिभ्यां परस्मैपदमेव । एवमन्यत्रापि । ईजिहिषते । ईहयति । ऐजिहत् । ईहमानः ईहाञ्चक्राणः । ईहि ४ ता, त्वा, तः २, वान् ॥२४६॥

गर्हि कुत्सने । गर्हते । गर्ह्यते । अगर्हिष्ट । जगर्हे । गर्हिता । जिगर्हिषते । जागर्ह्यते । जाग ४ र्हीति, र्ढि, र्ढः, र्हति । र्क्व, जागर्हितः । गर्हयति । अजगर्हत् । गर्हमाणः । गर्ह्यमाणम् । गर्हि ५ त्वा, ता, तुम्, तः, २ वान् । क्विपि, सुघर्ट् ॥ २४७ ॥

द्राहङ् निक्षेपे । निद्राक्षेप इत्येके । द्राहते । अद्राहिष्ट । दद्राहे । द्राहिता । ऋदित्वान् ङे, अदद्राहत् ॥ २४८ ॥

ऊहि तर्के । तर्क, उत्प्रेक्षा । ऊहते । "उपसर्गादस्य-" ॥३।३।२६॥ इति वाऽऽत्मनेपदे, समूहति २, ते; अपोहति, ते; व्यपोहति, ते । ऊह्यते । "उपसर्गोदूह-"॥४।३।१०६॥ इति क्ङिति यहूस्वे, अभ्युह्यते; समुह्यते । ऊऊह इति ऊकारप्रश्लेषात् आ उह्यते, ओह्यते । समोह्यत इत्यत्र न ह्रस्वः। अपोह २ त, त।

समौह्यत, अत्र प्राग्वन्न ह्रस्वः। औहिष्ट। समौहीत्। समौहिष्ट। ऊहाञ्चक्रे। संमूह्या २ ञ्चकार, चक्रे वा। समुह्यात्। समूहिषीष्ट। ऊजिहिषते। ऊहयति। औजिहत्। ऊहि ४ ता, त्वा, तुम्, तः। समुह्य ॥ २४९ ॥

गाहौङ् विलोडने; परिमलने। गाहते, अवगाहते। औदित्त्वाद्वेट्, अगाढ, अगाहिष्ट, अघा २ क्षाताम्, क्षत; अगाहि २ षातां, षत; अगाढाः, अगाहिष्ठाः, अघाक्षाथाम्, अगाहिषाथाम्, अघा २ ग्ड्ढम्, ढ्वम्, अगाहि ३ ड्ढम्, ढ्वम्, ध्वम्, अघाक्षि, अगाहिषि, अघाक्ष्वहि, अगाहिष्वहि, अघाक्ष्महि, अगाहिष्महि ॥ भाक ॥ अगाहि। शेषं कर्तृवत् ॥ परोक्षा ॥ जगाहे; जगाहि ३ षे, ध्वे, ढ्वे। घाक्षीष्ट; गाहिषीष्ट। गाढा; गाहिता। घाक्ष्यते; गाहिष्यते। जिघाक्षते; जिगाहिषते। जागाह्यते। जागाहीति, जागाढि, जागाढः, जागाहति, जागाहीषि, जाघाक्षि, जागाढः, जागाढ, जागा २हीमि, ह्मि। गाहयति। अजीगहत्। वेट्त्वान्नेट्, गाढः २, वान्। गाढ्वा, गाहित्वा। अवगाह्य। गा २ ढा, ढुम्। गाहि २ ता, तुम् ॥ २५० ॥

धुक्षि सन्दीपनक्लेशनजीवनेषु। धुक्षते; सन्धुक्षते। अधुक्षिष्ट। दुधुक्षे। धुक्षिता। क्ते, सन्धुक्षितः। क्विपि, सुधुट्। "संयोगस्यादौ-"॥२।१।८८॥ इति क्लुक् ॥२५१॥

शिक्षि विद्योपादाने। शिक्षते। शिक्ष्यते। अशिक्षिष्ट। शिशिक्षे। शिक्षिता। शिशिक्षिषते। शेशिक्ष्यते। शेशिक्षीति, शेशिष्टि। गुणे कर्त्तव्ये क्लुकोऽसत्त्वान्न गुणः। क्ते, शेशिक्षितः। शिक्षयति। अशिशिक्षत्। णौ सनि, शिशिक्षयिषति। शिक्षमाणः। शिक्ष्यमाणम्। शिक्षि ३ त्वा, तुम्, तः ॥२५२॥

भिक्षि याच्ञायाम्। भिक्षते गां राजानम्। बिभिक्षे। शेषं शिक्षिवत् ॥२५३॥

दीक्षि मौण्ड्येज्योपनयननियमव्रतादेशेषु। मौण्ड्यं वपनम्। इज्या यजनम्। उपनयनं मौञ्जीबन्धः। नियमः संयमः। व्रतादेशः संस्कारादेशः। दीक्षते। दिदीक्षे। शेषं शिक्षिवत् ॥ २५४ ॥

ईक्षि दर्शने। ईक्षते। उप, प्रति, परि, प्र, अप, सम्, वि, निः पूर्वोऽपि। ईक्ष्यते। ऐक्षत। ऐक्ष्यत ॥ अद्य० ॥ ऐक्षि १० ष्ट, षाताम्, षत, ष्ठाः,

षाथाम्, ध्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि । ऐक्षि । ईक्षाञ्चक्रे । ईक्षामास । ईक्षाम्बभूव । "आमः कृगः" ॥३।३।७५॥ इत्यत्र कृग्ग्रहणादस्तिभुवोः परस्मैपदमेव । ईक्षि २ षीष्ट; षीध्वम् । ईक्षिता । ईक्षिष्यते । ऐक्षिष्यत । "यद्वीक्ष्ये-राधीक्षी" ॥२।२।५८॥ इति चतुर्थ्यां, मैत्रायेक्षते । ईक्षितव्यं परस्त्रीभ्यः । ईचिक्षिषते । क्ते, ईचिक्षिषितः। ईक्षयति। ऐचिक्षत्; त । ईक्षमाणः । ईक्ष्यमाणम् । ईक्षां ३ चक्राणः, बभूवान्, आसिवान् वा । ईक्षि ४ त्वा, ता, तुम्, तः । वीक्ष्य ॥ २५५ ॥

इत्यात्मनेभाषा ।

अथोभयपदिनः ।

श्रिग् सेवायाम् । श्रय२ ति, ते; आश्रय २ ति, ते । "अघोषे-" ॥१।३।५०॥ इति दस्ते "तवर्ग-" ॥१।३।६०॥ इति तश्चे "प्रथमादधुटि-" ॥१।३।४॥ इति वा शश्छे उच्छ्रयति, ते; उच्छ्रयति, ते । एवं समुच्छ्रयति, ते; समुच्श्रयति, ते। अत्युच्छ्रयति, ते; अत्युच्श्रयति, ते; निश्रयति, ते । क्ये, श्रीयते ॥ अद्य० ॥ "णिश्रि-" ॥३।४।५८॥ इति ङे, द्वित्वे "संयोगात्-" ॥२।१।५२॥ इति इयि च, अशिश्रि १८ यत्, यताम्, यन्, यः, यतम्, यत, यम्, याव, याम । यत, येताम्, यन्त, यथाः, येथाम्, यध्वम्, ये, यावहि, यामहि ॥ भाक ॥ अश्रायि । ञिटि, अश्रायि १० षाताम्, षत, ष्ठाः, षाथाम्, ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि । एवं इट्यपि, अश्रयिषातामित्यादि १० ॥ परोक्षा ॥ शिश्राय, शिश्रियतुः, शिश्रियुः, शिश्रयिथ०। शिश्रिये, शिश्रियाते० ॥ भाक ॥ शिश्रिये०। ॥ आशीः ॥ श्रीयात् । श्रयिषीष्ट ॥ भाक॥ इट्ञिटोः, श्रयिषीष्ट; श्रायिषीष्ट । एवमग्रेऽपि। श्रयिता २ । श्रायिता। श्रयिष्यति, ते । श्रायिष्यते । अश्रयिष्यत्, त । अश्रायिष्यत । "णिस्नुश्र्या-" ॥३।४।९२॥ इति ञिचो "भूषार्थ-" ॥३।४।९३॥ इति क्यस्य च निषेधात् कर्मकर्त्तरि, उच्छ्रयति दण्डं दण्डी; उच्छ्रयते। उदशिश्रियत। उच्छ्रयिता। उच्छ्रयिष्यते दण्डः स्वयमेव । ञिच्निषेधात् ञिट् तु स्यादेव। उच्छ्रायिता। उच्छ्रायिष्यते दण्डः स्वयमेव। "इवृध-" ॥४।४।४७॥ इति वेटि, शिश्रीष२ति, ते। शिश्रयिष २ ति, ते। शेश्रीयते। शेश्रयीति, शेश्रेति, शेश्रितः, शेश्रियति। क्तयो-

रनेकस्वराद्विहितत्वेन "ऋवर्णश्र्यूर्णुगः"॥४।४।५७॥ इति इड्निषेधाभावे, "संयोगात्-"॥२।१।५२॥ इति इयि च, शेश्रियितः२ वान्। क्त्वोऽकित्त्वाद्गुणे, शेश्रयि ४त्वा, तुम्, ता, तव्यम्। श्राययति। अशिश्रयत्, अत्रोपान्त्यह्रस्वे कृते पश्चाद्द्वित्वे पूर्वस्य सन्वद्भावः। आश्राययाञ्चकार। श्रयन्। श्रयिष्यन्। श्रयमाणः। श्रयिष्यमाणः। श्रीयमाणम्। श्रयिष्यमाणम्। शिश्रिवान्। शिश्रियाणः। "ऋवर्णश्र्यूर्णुगः कितः"॥४।४।५७॥ इति इडभावे, श्रित्वा। आश्रित्य। श्रितः २, वान्। श्रयि २ ता, तुम ॥ २५६ ॥

अथ पञ्चानिटः। णींग् प्रापणे। अजां नयति, नयते वा ग्रामम्, प्रापयतीत्यर्थः॥ एवं अनु, अप, आङ्, अभि, पूर्वोऽपि। णपाठाद् "अदुरुपसर्ग"-॥२।३।७७॥ इति णः, परिणयति, ते। पराणयति, ते। प्रणयति, ते। निर्णयति, ते। "पूजाचार्यक-"॥३।३।३९॥ इत्यात्मनेपदे, नयते विद्वान् स्याद्वादे; युक्तिभिः स्थिरीकृत्य प्रज्ञापयतीत्यर्थः। बटुमुपनयते; अध्ययनाय स्वान्तिकं नयतीत्यर्थः। कर्मकरानुपनयते; वेतनेनात्मसमीपं प्रापयतीत्यर्थः। शिशुमुदानयते; उत्क्षिपतीत्यर्थः। नयते तत्वार्थे; तत्र प्रमेयं निश्चिनोतीत्यर्थः। ऋणं विनयन्ते; दानेन शोधयन्तीत्यर्थः। शतं विनयते; व्ययते इत्यर्थः। "कर्तृस्था-"॥३।३।४०॥ इत्यात्मनेपदे, क्रोधं विनयते। अकर्तृस्थमूर्त्तयोस्त्वाप्ययोः परस्मैपदमेव; चैत्रो-मैत्रस्य क्रोधं विनयति। गडुं विनयति। अत्र च सूत्रे शमयत्यर्थादेव नयतेरात्मनेपदं दृश्यते न प्रापणार्थात्; तेन कोपं शमं नयति, प्रज्ञां वृद्धिं नयतीत्यादौ परस्मैपदमेव। क्ये, नीयतेऽजा ग्रामम्॥ अद्य०॥ अनैषीत्, अनैष्टां, अनैषुः, अनैषीः। अनेष्ट, अनेषाताम्, अनेषत, अने ७ ष्ठाः, षाथाम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि॥ भाक॥ अनायि, अनेषाताम्, अनायिषाताम्०; अने २ ढ्वम, ड्ढ्वम्; अनायि ३ ध्वम्, ढ्वम, ड्ढ्वम्॥ परोक्षा॥ निनाय, निन्यतुः, निन्युः, निनयिथ, निनेथ, निन्यथुः, निन्य, निनाय, निनय, निन्यि २ व, म। निन्ये, निन्याते, निन्यिरे, निन्यिषे; निन्यि ३ ढ्वे, ध्वे; महे॥ भाक॥ निन्ये इत्यादि तदेव। नीयात्। नेषी २ ष्ट; ढ्वम्; नायिषी ३ ष्ट; ढ्वम्, ध्वम्। नेता २। नायिता। नेष्यति, ते। नायिष्यते। सनि, निनीषति, ते। प्रणि-

नीषति, ते । पूर्वं धातोरुपसर्गयोगे तु, णत्वे कृते पश्चाद्द्वित्वे, प्रणिणीषति, ते । नेनीयते । नेनयीति, नेनेति, नेनीतः, नेन्यति । शेषं जिवत्, परं नेनीथेत्यादौ नीर्वाच्यो नतु निः ॥ क्ते, नेन्यितः । नेनयि ३ त्वा, ता, तुम् । "गतिबोध-" ॥२।२।५॥ इत्यत्र नीवर्जनादणिक्कर्तुः कर्मत्वाभावे, नाययति भारं ग्रामं मैत्रेण । अनीनयत् । णौ सनि, निनाययिषति । नयन् । नयमानः । नीयमानम् । नेष्यमाणम् । नी ३ त्वा, तः, वान् । आनीय । ने २ ता, तुम् । नेतव्यम् । नेयम् । आनेयम् ॥ २५७ ॥

हंग् हरणे । हरति, ते । अयं अभ्यव, व्यव, सम्प्र, व्याङ्, आङ्, प्र, उद् पूर्वोऽपि । प्रादीनां चापञ्चभ्यः प्रायेण प्रयोगो भवति । आहरति; व्याहरति; अभिव्याहरति; समभिव्याहरति; प्रसमभिव्याहरति; ते । "विनिमेय- ॥२।२।१६॥ इति वा अकर्मत्वे, शतस्य शतं वा व्यवहरते । "हृगोगत- ॥३।३।३८॥ इत्यात्मनेपदे, पैतृकमश्वा अनुहरन्ते; पितुरागतं गुणविषयं क्रियाविषयं वा सादृश्यमविकलं शीलयन्तीत्यर्थः । अथवा पितुरागतं गमनमविच्छेदेन शीलयन्तीत्यर्थः; यतो गतं सादृश्यमनुकरणमिति यावत् । अथवा गतं गमनं तयोस्ताच्छील्यम्, उत्पत्तितो नाशं यावत् तत्स्वभावता । एवं पितुः पितरं वाऽनुहरते । गत-ताच्छील्यादन्यत्र रूपेण पितरमनुहरति ॥ क्ये, ह्रियते । अहार्षीत्, अहार्ष्टाम्, अहार्षुः, अहार्षीः । अहृत, अहृषाताम्, अहृषत ॥ भाक ॥ अहारि, अहृषाताम्; अहारिषाताम्० ॥ जहार, जह्रतुः, जह्रुः; "ऋतः"॥४।४।७९॥ इति नेटि, जहर्थ, जह्रथुः, जह्र, जहार, जहर, जह्रिव, जह्रिम । जह्रे, जह्राते । एवं कर्मण्यपि । ह्रियात् । हृषीष्ट । हारिषीष्ट । हर्त्ता २ । हारिता । हरिष्यति, ते । हारिष्यते । जिहीर्षति, ते । जेह्रीयते । जरि री र् ३ हरीति; जरि री र् ३ हर्त्ति । णौ, "हृक्रोर्नवा"॥२।२।८॥ इत्याणिक्कर्तुर्वा कर्मत्वम् । अकर्मकत्वे; हरति मैत्रः; हारयति मैत्रं मैत्रेण वा चैत्रः। अभ्यवहरति मैत्रः; अभ्यवहारयति मैत्रं मैत्रेण वा चैत्रः । सकर्मकत्वे तु, हरति द्रव्यं चौरः; हारयति द्रव्यं चौरं चौरेण वा चैत्रः । हरति भारं चैत्रः; हारयति भारं चैत्रं चैत्रेण वा मैत्रः । ङे, अजीहरत् । सनि, जिहारयिषति । हरन् । हरिष्यन् । हरमाणः । ह्रियमाणम् ।

हरिष्यमाणम् । जहृवान् । जह्राणः । हृतः, २ वान् । हृत्वा । हर्त्तुम् । संहृत्य । हार्यम् । शेषमद्यतन्यादौ स्सट्वर्जं कृग्वत् ॥ २५८ ॥

भृंग् भरणे । भरति, ते । भ्रियते । अभार्षीत् । अभृत । अभारि । बभार; "स्क्रसृवृभृ-"॥४।४।८१॥ इति भृनिषेधाद् इडभावे, बभर्थ; बभृ-२ व, म । बभ्रे; बभृषे । भरिष्यति; भारिष्यते । सनि, "इवृध-"॥४।४।४७॥ इति वेटि "नामिनोऽनिट्" ॥४।३।३३॥ इति कित्त्वं, बुभूर्षति, ते । बिभरिषति, ते । बिभ्रीयते । बरी, रि, र् ३ भरीति। बरि, री, र् ३ भर्ति । "इवृध-"॥४।४।४७॥ इत्यत्र भर इति शवा निर्देशो यङ्लुपो निवृत्यर्थः; तेन यङ्लुबन्तात्सनि नित्यमिट् नतु वेट् । बर्भरिषति । भारयति । अबीभरत् । शेषं, अशिति कृग्वत् ॥ २५९ ॥

धृंग् धरणे । धरति, ते । दधार । दध्रे । उद्दिधीर्षति, ते । देध्रीयते । ङे, अदीधरत् । अयं सर्वो हृंग्वत् । ॥ २६० ॥

डुकृंग् करणे । "कृगृतनादेरुः ॥३।४।८३॥ करोति । "अतः शित्युत्" ॥४।२।८९॥ इति पूर्वस्य उः, कुरुतः, कुर्वन्ति, करोषि, कुरु २ थः, थ, करोमि, "कृगो यि च" ॥४।२।८८॥ इत्युलोपे कुर्वः, कुर्मः । कुरुते, कुर्व्वाते, कुर्व्वते, "अनतोऽन्तोऽद्-"॥४।२।११४॥ कुरुषे, कुर्वाथे, कुरुध्वे, कुर्वे, कुर्वहे, कुर्महे । "कृगो यि च "॥४।२।८८॥ इत्युलुक्, कुर्यात्, कुर्याताम्० । कुर्वीत, कुर्वीयाताम्, कुर्व्वीरन्० ॥ करोतु, कुरु २ तात्, ताम्, कुर्वन्तु, कुरु, कुरु ३ तात्, तम्, त, करवा ३ णि, व, म । कुरुताम्, कुर्वाताम्, कुर्वताम्, कुरुष्व, कुर्वाथाम्, कुरुध्वम्, करवै, करवा २ वहै, महै । अकरोत्, अकुरुताम्, अकुर्वन्, अकरोः, अकुरु २ तम्, त, अकरवम्, अकुर्व, अकुर्म । अकुरुत, अकुर्वाताम्, अकुर्वत, अकुरुथाः, अकुर्वाथाम्, अकुरुध्वम्, अकुर्वि, अकुर्वहि, अकुर्महि। क्ये, क्रियते । क्रियेत । क्रियताम् । अक्रियतेत्यादि । "सिचि परस्मै-"॥४।३।४४॥ इति वृद्धौ, "सः सिज-"॥४।३।६५॥ इति ईति, अकार्षीत्, अकार्ष्टाम्, अकार्षुः, अकार्षीः, अकार्ष्टम्, अकार्ष्ट, अकार्षम्, अकार्ष्व, अकार्ष्म । अकृत; "धुट्ह्रस्व-"॥४।३।७०॥ इति सिच्लुक्, अकृषाताम्, अकृथाः,

मा त्वं कृथाः, अकृषाथाम्; "सोधि-"॥४।३।७२॥ इति वा सिच्लुकि, "नाम्यन्त-"॥२।१।८०॥ इति ढे, अकृढ्वम्, अकृड्ढ्वम्, अत्र "नाम्यन्त-" ॥२।३।१५॥ इति स्षः, तस्य डः। अकृषि, अकृष्वहि, अकृष्महि ॥ भाक ॥ अकारि, अकृषाताम्, इत्यादि कर्तृवत्। वा ञिटि तु, अकारिषाताम्, अकारिषत; "हान्त-"॥२।१।८१॥ इति वा ढे, अकारि३ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम् ॥ परो०॥ चकार, चक्रतुः, चक्रुः, चकर्थ, चक्रथुः, चक्र, चकार, चकर, चकृव, चकृम। चक्रे, चक्राते, चक्रिरे, चकृषे, चक्राथे, चकृढ्वे, चक्रे, चकृवहे, चकृमहे। "स्क्रसृ-" ॥४।४।८१॥ इत्यत्र सस्सट् कृग्ग्रहणान्नात्र थवादौ इट् ॥ भाक ॥ चक्रे इत्यादि तदेव ॥ आशीः ॥ क्रियात्। कृषीष्ट; कृषीढ्वम्॥ भाक ॥ कृषीष्ट। कारिषीष्ट; कारिषीध्वम्, कारिषीढ्वम्। कर्त्ता २ ॥ भाक ॥ कर्त्ता, कारिता। "हनृतः स्यस्य"॥४।४।४९॥ इतीटि, करिष्यति, ते ॥ भाक ॥ करिष्यते, कारिष्यते। अकरिष्यत्, त ॥ भाक ॥ अकरिष्यत, अकारिष्यत० ॥ तनादिषु पाठमकृत्वाऽस्यात्र पाठः, "तन्भ्यो वा-" ॥४।३।६८॥ इति विकल्पनिषेधाद् "धुट्ह्रस्व-"॥४।३।७०॥ इति सिच्लुगर्थः, शवर्थश्च। तेन करति, करते इत्यादौ शवपि भवति। एवं व्या, प्रत्युप, निरा अपा, प्रति प्र, अप, अनु, उपादि पूर्वोऽपि वाच्यः॥ "परानोः कृगः"॥३।३।१०१॥ इति फलवत्यपि परस्मैपदे, पराकरोति; अनुकरोति। "गन्धन-"॥३।३।७६॥ इत्यात्मनेपदे, उत्कुरुते, द्रोहाभिप्रायेण सदोषं प्रतिपादयतीत्यर्थः। अवचक्रे; कुत्सितवान्, निर्भर्त्सितवान्वेत्यर्थः। उपचक्रे, सिषेवे इत्यर्थः। परदारान् प्रचक्रिरे; अभिजग्मुरित्यर्थः। एधोदकस्योपस्कुरुते, तत्र गुणान्तरमादधातीत्यर्थः। "अधेः प्रसहने ॥३।३।७७॥ अधिकुरुते शत्रुम्; अभिभवतीत्यर्थः ॥ "वेः कृगः-"॥३।३।८५॥ क्रोष्टा विकुरुते स्वरान्। विकुर्वते सैन्धवाः। "तीयशम्ब-"॥७।२।१३५॥ इति कृषौ डाच् कृगा योगे, द्वितीयाकरोति क्षेत्रं; द्वितीयं वारं कृषतीत्यर्थः। एवं तृतीया करोति क्षेत्रम्। "सङ्ख्यादेर्गुणात्"॥७।२।१३६॥ डाच्, द्विगुणं कर्षणं करोति क्षेत्रस्य; द्विगुणाकरोति क्षेत्रम्। त्रिगुणाकरोति क्षेत्रम्। "समयाद्यापनायाम्"॥ ७।२।१३७॥ समयाकरोति। अद्य श्वो वा दास्ये, इति कालक्षेपं करोतीत्यर्थः ॥ "सपत्रनिष्पत्रादतिव्यथने"॥७।२।१३८॥ सपत्राकरोति वृक्षं वायुः; पत्रशातने-

नातिव्यथयतीत्यर्थः । एवं निष्पत्राकरोति वृक्षं वायुः । "निष्कुलान्निष्कोषणे"॥ ७।२।१३९॥ निष्कुलङ्करोति, निष्कुलाकरोति दाडिमम्; निष्कुष्णातीत्यर्थः । एवं निष्कुलाकरोति पशुं चण्डालः॥ "प्रियसुखादानुकूल्ये"॥७।२।१४०॥ प्रियाकरोति गुरुम्, सुखाकरोति गुरुम्, आनुकूल्यकरणादाराधयतीत्यर्थः॥ "दुःखात्प्रातिकूल्ये"॥७।२।१४१॥ दुःखाकरोति शत्रुं, प्रातिकूल्येन पीडयतीत्यर्थः । "शूलात्पाके"॥७।२।१४२॥ शूलाकरोति मांसं, शूले पचतीत्यर्थः । "सत्यादशपथे ॥७।२।१४३॥ सत्याकरोति वणिग् भाण्डम्; स्वयमेव क्रयणाय द्रव्यदानेन निर्णयति। शपथे तु, सत्यंकरोति; शपथेन प्रत्याययतीत्यर्थः । "मद्रभद्राद्वपने"॥७।२।१४४॥ मद्राकरोति शिरः । एवं भद्राकरोति; उभयत्र मुण्डयतीत्यर्थः । च्विस्तु भूस्थानेऽवाचि ॥ सनि, "नामिनोऽनिट्"॥४।३।३३॥ इति किच्वे "स्वरहन्-"॥४।१।१०४॥ इति दीर्घे इरि द्वित्वे च, चिकीर्षति, ते । चिकीर्षा । चिकीर्षुः । चिकीः, चिकीर्षौ। शेषं सन्नन्तभूवत् । यङो व्यञ्जनादित्वेन प्राक् तु स्वरे स्वर इत्याधिकारात् "ऋतोरीः"॥४।३।१०९॥ इति रीभावे कृते पश्चाद्द्वित्वम्, तेन ऋमत्त्वाभावान्न "ऋमता रीः"॥४।१।५५॥ चेक्रीयते। क्ये, चेक्रीय्यते। अग्रतो यङन्तं त्रैङ्वङ्गूवद्वा। अन्तरङ्गानपि विधीन् बहिरङ्गोऽपि लुब्बाधत इति न्यायात् प्राग् यङो लुपि द्वित्वे, चरी रि र् ३ करीति; चरी रि र् ३ कर्त्ति । एवमग्रेऽपि री रि र् त्रयम्। चर्कृतः, चर्क्रति, चर्करीषि, चर्कर्षि, चर्कृथः, चर्कृथ। बहुलवचनान्न ईति, चर्कर्मि, चर्करीमीत्यप्यन्ये। चर्कृवः, चर्कृमः। क्ये, चर्क्रियते, चरिक्रियेते। सप्त०। चर्कृयात्। हौ, चरिकृहि॥ ह्यस्त०॥ अचर्करीत्, अचर्कः, अचर्कृताम्, अचर्करुः, अचर्करीः, अचर्कः ॥ अद्य० ॥ अचरिकारीत्, अचरिकारिष्टाम्, अचरिकारिषुः ॥ भाक ॥ अचर्कारि । ञिटिटोः, अचर्कारिषाताम्, अचर्करिषाताम्०॥ परो०॥ चर्करांचकार, चर्करांबभूव, चर्करामास ॥ भाक ॥ चर्करां ३ चक्रे, बभूवे, आहे ॥ आशीः ॥ चार्क्रियात् ॥ भाक ॥ चर्कारिषीष्ट, चर्करिषीष्ट ॥ श्वस्तनी ॥ चर्करिता ॥ भाक ॥ चर्कारिता, चर्करिता ॥ भवि० ॥ चर्करिष्यति ॥ भाक ॥ चर्कारिष्यते । चर्करिष्यते ॥ क्रिया० । अचर्करिष्यत् ॥ भाक ॥ अचर्कारिष्यत, अचर्करिष्यत । चर्कत् । चरिकरिष्यन् । चरिक्रियमाणम् । इटि, चरिकरिष्यमाणम् । ञिटि,

चरिकारिष्यमाणम् । चरिकराञ्चकृवान् । च० बभूवान् । च० आसिवान् ॥ भाक ॥ चरिकरां ३ चक्राणम्, बभूवानम्, आसानम्, वा । एवं यङ्लुपि स्तृ, हृ, भृ, धृ, मृ, पृ, प्रभृतयः ऋदन्ताः सर्वेऽपि ज्ञेयाः ॥ णौ, कारयति । "हृक्रोर्नवा"॥२।२।८॥ इत्यणिकर्तुर्वा अकर्मत्वे, करोति कटं चैत्रः; कारयति कटं चैत्रं चैत्रेण वा मैत्रः । "मिथ्याकृग-"॥३।३।९३॥ इत्यात्मनेपदे, पदं मिथ्या कारयते; अत्र मिथ्येति पदसमानाधिकरणं मिथ्याभूतं पदं करोति; उच्चरति कश्चित्तमन्यः प्रयुङ्क्ते, णिग्, स्वरादिदोषदुष्टमसकृदुच्चारयतीत्यर्थः । कार्यते । अचीकरत् । अकारि । ञिटिटोः, अकारिषाताम्, अकारयिषाताम् । कारयाञ्चकारेत्यादि णिगन्तभूवत् । कर्मकर्त्तरि ञिटि, अकारिषातां कटौ स्वयमेव । कारिष्यते कटः स्वयमेव । क्रियते, क्रियमाणो वा कटः स्वयमेव । चक्रे, करिष्यते वा कटः स्वयमेव । भावविवक्षायां च, क्रियते कटेन । एषु "एकधातौ-"॥३।४।८६॥ इति ञिट्क्यात्मनेपदानि । अकृत, अकारि कटः स्वयमेवेत्यत्र तु, "स्वरदुहो वा"॥३।४।९०॥ इति वा न ञिच् । भूषार्थे, अलमकार्षीत्, कन्यां चैत्रः । अलमकृत कन्या स्वयमेव । एवमलंकुरुते, अलङ्करिष्यते कन्या स्वयमेव । सन्नन्त, अचिकीर्षीत् कटं चैत्रः । अचिकीर्षिष्ट, चिकीर्षते कटः स्वयमेव । एषु "भूषार्थ-"॥३।४।९३॥ इति न ञिच्ञिट्क्याः । ण्यन्त, कारयति कटं चैत्रेण मैत्रः । कटस्य सुकरत्वेन कर्तृत्वे; कारयते कटः स्वयमेव; अत्र "भूषार्थ-"॥३।४।९३॥ इति न क्यः । अचीकरत् कटं चैत्रेण मैत्रः । अचीकरत कटः स्वयमेव; अत्र "णिस्नुश्र्य-"॥३।४।९२॥ इति न ञिच् । णिस्न्विति पृथग् योगकरणेन ञिच् एव निषेधाद् ञिट् भवत्येव । कारिता, कारिषीष्ट कटः स्वयमेव । कुर्वन् । कुर्वाणः । क्रियमाणम् । करिष्यमाणम् । ञिटि, कारिष्यमाणम् । चकृवान् । चक्राणः । कृत्वा । उपकृत्य । "कृगो नवा"॥३।१।१०॥ इति वा गतिसंज्ञायां "तिरसो वा"॥२।३।२॥ इति वा रस्य सत्वे, तिरस्कृत्य, तिरःकृत्य । गतित्वाभावे च "गतिक-"॥३।१।४२॥ इति समासाभावान्न यप्, तिरः कृत्वा । कृतः, २ वान् । कर्त्ता । कर्तुम् । कर्त्तव्यम् । करणीयम् । कृत्यम् । कार्यम् । "सम्परेः कृगः-"॥४।४।९१॥ इति स्सटि, संस्करोति; परिष्करोति । "स्सटि समः"॥१।३।१२॥ इति मस्य सत्वेऽनुस्वारानुनासिकयोश्च

पूर्वस्य, संस्स्क्रियते; सँस्स्क्रियते । कस्यादिरिति व्याख्यानेऽनुस्वारस्य व्यञ्जनत्वाद् "धुटो धुटि-"॥१।३।४८॥ इत्येकस्य सस्य वा लुकि तु, संस्क्रियते । "लुक्" ॥१।३।१३॥ इति मस्य लुकि, सस्क्रियते । एवं रूपचतुष्टयं सम्योगे सर्वत्र ज्ञेयम् । परिष्क्रियते । समस्करोत् । "स्तुस्वञ्जश्चाटि- ॥२।३।४९॥ इति वा अटि षत्वम्; पर्यष्करोत्; पर्यस्करोत् । समस्कार्षीत् । पर्यष्कार्षीत्; पर्यस्कार्षीत् । समस्कृतेत्यादि सर्वं प्रागुक्तकृग्वत् । परोक्षायां तु विशेषः; सञ्चस्कार । परिचस्कार । "स्कृच्छृत-"॥४।३।८॥ इति गुणे सञ्चस्करतुः, सञ्चस्करुः; "सृजि दृशि-"॥४।४।७८॥ इति वेटि, सञ्चस्करिथ, सञ्चस्कर्थ० । "स्कसृ-"॥४।४।८१॥ इतीटि, सञ्चस्करिव, सञ्चस्करिम । सञ्चस्करे इत्यादि । पर्यस्कार्षीत् कन्यां चैत्रः; पर्यस्कृत । परिष्करिष्यते, परिष्कुरुते कन्या स्वयमेव । अत्र "भूषार्थ-"॥ ३।४।९३॥ इति ञिक्यनिषेधादात्मने; "उपाद्भूषा-"॥४।४।९२॥ इति स्सटि, कन्यामुपस्करोति; भूषयतीत्यर्थः । तत्र २ न उपस्कृतम्; समुदितमित्यर्थः । एधोदकस्योपस्कुरुते; तत्र प्रतियतत इत्यर्थः । उपस्कृतं भुङ्के, संसक्तं धान्यं भुङ्क्त इत्यर्थः । उपस्कृतं जल्पति, अधीते वा; सवाक्याध्याहारमित्यर्थः । सञ्चिस्कीर्षति; ते । परिचिस्कीर्षति, ते । उपचिस्कीर्षति, ते । सञ्चेस्क्रीयते । परिचेष्क्रीयते । उपचेस्क्रीयते । ङे स्सटि च, समचिस्करत् । पर्यचिस्करत् । "संपरेः कृग-"॥४।४।९१॥ इत्यत्र स्सडिति द्विसकारनिर्देशात् सञ्चिस्कीर्षतीत्यादौ समचिस्करदित्यादौ च षो न भवति । परिपूर्वस्य तु परिष्करोतीत्यादौ ङवर्जं "असोङसिवू-"॥२।३।४८॥ इति वचनाद्भवति । परिचस्कारेत्यादौ तु स्सटो व्यवहितत्वान्न षो, द्वित्वेऽपीत्यधिकारस्य निवृत्तत्वात् । सञ्चस्कृवान् । सञ्चस्क्राणः ॥ २६१ ॥

डुयाचृग्याच्ञायाम् । याचति, ते । अयाचीत्, अयाचिष्ट । ययाच । ययाचे । याचिता । ऋदित्त्वान् ङे न ह्रस्वः, अययाचत् । याच २ न्, मानः । क्ते, याचितः । याचि ३ ता, त्वा, तुम् ॥ २६२ ॥

डुपचींष् पाके । अनिट् । पचति । पचते । "नेर्ङ्गादा-"॥२।३।७९॥ इति सूत्रोक्तधातून् कखादि षान्तं च धातुं वर्जयित्वा ऽन्यसर्वधातूनां सर्वेषु शव् सिच्सन्नादिप्रत्ययेषु परेषु; "अकखाद्य-"॥२।३।८०॥ इति नेर्वा णत्वे, प्रणि-

पचति, ते। प्रनिपचति, ते। एवमन्यधातुष्वपि नेर्णत्वं द्रष्टव्यम्। पच्यते। अपाक्षीत्, अपाक्ताम्, अपाक्षुः, अपाक्षीः, अपाक्तम, अपाक्त, अपाक्षम्, अपाक्ष्व, अपाक्ष्म। अपक्त, अपक्षाताम्, अपक्षत, अपक्थाः, अपक्षाथाम्। "सो धि-" ॥४।३।७२॥ इति वा सिच्लुकि, अपग्ध्वम्। पक्षे "चजः-"॥२।१।८६॥ इति के, "नाम्यन्त"॥२।३।१५॥ इति षे, "तृतीयस्तृतीय-"॥१।३।४९॥ इति डे, "तवर्गस्य-" ॥१।३।६०॥ इति ढे, अपग्ड्ढ्वम्, अपक्षि, अपक्ष्वहि, अपक्ष्महि ॥ भाक ॥ अपाचि, अपक्षातामित्यादि ॥ परोक्षा ॥ पपाच, पेचतुः, पेचुः, पेचिथ, पपक्थ, पेचथुः, पेच, पपाच, पपच, पेचिव, पेचिम। पेचे; पेचिषे; पेचिध्वे; पेचिमहे। पच्यात्। पक्षीष्ट। पक्ता २। पक्ष्यति, ते। अपक्ष्यत्, त। पिपक्ष २ ति, ते। पिपक्षा। क्विपि, पिपक् ॥ यङि, पापच्यते। क्ये, "अतः"॥४।३।८२॥ इत्यल्लुकि "योऽशिति"॥४।३।८०॥ इति य्लुकि च, पापच्यते। सप्त० ॥ पापच्येत। क्ये, पापच्येत ॥ पञ्च० ॥ पापच्यताम्। क्ये, पापच्यताम् ॥ ह्य० ॥ अपापच्यत। क्ये, अपापच्यत ॥ अद्य० ॥ प्राग्वद्यलोपे; अपापचिष्ट, अपापचिषाताम् ॥ भाक ॥ यङोऽल्लुकः स्थानित्वान्न वृद्धिः, अपापचि ॥ परोक्षा ॥ पापचा ३ ञ्चक्रे, बभूव, आस वा ॥ भाक ॥ पापचा ३ ञ्चक्रे, बभूवे, आहे वा ॥ आशीः ॥ पापचिषीष्ट ॥ श्वस्तनी ॥ पापचिता ॥ भवि० ॥ पापचिष्यते ॥ क्रिया० ॥ अपापचिष्यत ॥ आशीःप्रभृतिषु भावकर्मणोरपि कर्तृसदृशमेव। पापच्यमानः। पापचिष्यमाणः ॥ भाक ॥ पापच्यमानम्। पापचिष्यमाणम्। पापचां ३ चक्राणः, बभूवान्, आसिवान् वा ॥ भाक ॥ पापचा ३ ञ्चक्राणम्, बभूवानम्, आसानं वा। पापचि ५ त्वा, ता, तुम्, तः, २ वान्। एवं सर्वे व्यञ्जनान्ता यङि ज्ञातव्याः; तत्र इत् उत ऋत् उपान्त्यानामद्यतन्यादौ यङो यलुकि उपान्त्ये गुणो न कार्यो यङोऽल्लुकः स्थानित्वेनाप्राप्तेः। जिमूः। अजेजिमिष्ट ॥ भाक। अजेजिमि। एवं मुदिः। अमोमु २ दिष्ट, दि। वृषू। अवरीवृ २ षिष्ट, षि, इत्यादिवत्। यङ्लुपि, पाप १२ चीति, क्ति, क्तः, चति, चीषि, क्षि, क्थः, क्थ, चीमि, च्मि, च्वः, च्मः। क्ये, पापच्यते। सप्त० ॥ पापच्यात्। क्ये; पापच्येत। ॥ पञ्च० ॥ पाप १० चीतु, क्तु, क्ताम्, चतु, ग्धि, क्तम्, क्त, चानि, चाव, चाम। क्ये, पापच्यताम् ॥ ह्य० ॥ अपाप ११ चीत्, क्, क्ताम्, चुः; चीः, क्, क्तम्, क्त,

चम्, च्व, च्म । क्ये; अपापच्यत॥ अद्य०॥ अपाप ३ चीत्, चिष्टाम्, चिषुः । भाक ॥ अपापाचि, अपापचिषाताम् ॥ परोक्षा॥ पापचा ३ ञ्चकार, बभूव, आस वा । भाक ॥ पापचा ३ ञ्चक्रे, बभूवे, आहे वा ॥ आशीः ॥ पापच्यात् ॥ भाक ॥ पापचिषीष्ट । श्व० ॥ पापचिता ॥ भाक ॥ पापचिता ॥ भवि० ॥ पापचिष्यति ॥ भाक ॥ पापचिष्यते ॥ क्रिया० ॥ अपापचिष्यत् ॥ भाक ॥ अपापचिष्यत । अन्तोनोलुकि, पापचत्। पापचती । पापचिष्यन् । भाक ॥ पापच्यमानम् । पापचिष्यमाणम् । पापचाञ्च ३ कृवान्, कृवत्, कुषी । पापचां बभू-३ वान्, वत्, वुषी । पापचामा ३ सिवान्, सिवत्, सुषी । एते त्रयः शब्दास्त्रिषु लिङ्गेषु विद्वच्छब्दवत्सर्वविभक्तिषु स्वयमभ्यूह्याः ॥ भाक ॥ पापचां ३ चक्राणम्, बभूवानम्, आसानं वा । पापचि ५ त्वा, ता, तुम्, तः, २ वान् । पाप ३ चितव्यम्, चनीयम्, च्यम् । एवं सर्वेऽपि व्यञ्जनान्ता धातवो यङ्-लुप्यभिधानीयाः; नवरमद्यतन्यादिषु इत् उत् ऋदुपान्त्यानां धातूनामाशीर्यवर्जे सर्वत्रोपान्त्ये गुण एत् ओत् अर् लक्षणो वाच्यः; सचैवम्। जिम्। अजेजेमीत्, अजेजेमिष्टाम्। अजेजेमि, अजेजेमिषाताम्। जेजेमांचकार; आमोऽकित्त्वाद्गुणः। जेजिम्यात्। जेजेमिषीष्ट। जेजेमिष्यति, ते। मुद्। अमोमोदीत्, अमोमोदिष्टाम् । अमोमोदि, अमोमोदिषाताम्। मोमोदाञ्चकार । मोमुद्यात्। मोमोदिषीष्ट । मोमोदिष्यति, ते । वृषू । अवरिव ४ र्षीत्, र्षिष्टाम्; र्षि, र्षिषाताम् । वरिवर्षाञ्चकार वरिवृष्यात् । वरिवर्षिषीष्ट । वरिवर्षिष्यति, ते । तथा इत् उत् ऋदुपान्त्यानां क्त्वादिप्रत्ययेषु शतृक्यक्तवर्जेषु गुणः कार्यः । जेजेमि३त्वा, ता, तुम् । जेजेमांचकृवान् । जेजेमाञ्चक्राणम् । मोमोदि ३ त्वा, ता, तुम् । मोमोदाञ्चकृवान् । मोमोदाञ्चक्राणम् । वरिवर्षि ३ त्वा, ता, तुम् । वरिवर्षाञ्चकृवान् । वरिवर्षाञ्चक्राणम् । शत्रादौ तु न गुणः । जेजिमत्। जेजिम्यमानम्। जेजिमितः। जेजिमितवान्। मोमुदत्। मोमुद्यमानम्। मोमुदितः । वरिवृषत । वरिवृष्यमाणम्। वरिवृषितः। सस्ये तु शतरि गुणः स्यात्, जेजेमिष्यन् इत्यादि। ईत् ऊत् ऋदुपान्त्यानां तु न गुणः; उपान्त्ये लघोरभावेन गुणाप्राप्तेः । अमेमीलीत् । अदोधूपीत् इत्यादि। एवमन्यत्रापि। शिति तु येषां यो विशेषः सम्भवी स स्वस्वस्थाने

वक्ष्यते । णिगि पाचयति, ते । अपीपचत्, त । पाचया २ ञ्चकार, चक्रे । णिगन्ताण्णिगि; अपीपचत्, त । अथ कर्मकर्त्तरि, अपाच्योदनः स्वयमेव । पच्यते ओदनः स्वयमेव । अपक्त ओदनः स्वयमेव । पक्ष्यते ओदनः स्वयमेव । अत्र "पचिदुहेः"॥३।४।८७॥ इति ञिच्क्यात्मनेपदानि । उदुम्बरः फलमपाक्षीद्वायुः । उदुम्बरः फलं पच्यते, पक्ष्यते वा स्वयमेव; अत्र कर्मणा योगे "न कर्मणा-"॥ ३।४।८८॥ इति न ञिच्; क्यात्मनेपदे तु भवत एव । उदुम्बरं फलं पचति, पक्ष्यति वा वायुः । उदुम्बरः फलं पच्यते पक्ष्यते वा स्वयमेव । णिगि, अपीपचत् ओदनं चैत्रेण मैत्रः । तस्य सौकर्येण कर्तृत्वे; अपीपचतौदनः स्वयमेव । "णिस्नु-"॥३।४।९२॥ इति न ञिच् । ञिच्निषेधात् ञिट् भवत्येव, पाचिता, पाचिषीष्टौदनः स्वयमेव । पाचयतेऽन्नं स्वयमेव । अत्र "भूषार्थ-"॥३।४।९३॥ इति आत्मने नतु क्यः, ञिट् पुनरनेन निषिद्धोऽपि णिस्नु इति पृथग्योगाद्भवत्येव; ञिच एव तत्र निषेधात्, तच्च प्रागेवादर्शि । पचन् । पक्ष्यन् । पचमानः । पक्ष्यमाणः । पेचिवान् । पेचुषी । पेचानम् । पक्त्वा, पक्ता, पक्तुम् । "क्षैशुषि-"॥४।२।७८॥ इति तो वः; पक्वः, २ वान् । घ्यणि "क्तेऽनिट्-"॥४।१।१११॥ इति कत्वे, पाक्यम् ॥ २६३ ॥

राजृग्, टुभ्राजि दीप्तौ । राजति, ते । राज्यते । अराजीत्, अराजिष्टाम् । अराजिष्ट, अराजिषाताम्, अराजि २ ध्वम्, ढ्ढ्वम् । अराजि । रराज । "जॄभ्रम-"॥ ४।१।२६॥ इति वैत्वे, रेजतुः, रराजतुः, रेजुः, रराजुः, रेजिथ, रराजिथ० । रराजे, रेजे । राज्यात् । राजिषीष्ट । राजिता २ । राजिष्यति, ते । रिराजिषते । राराज्यते । राराजीति, राराष्टि । राजयति, ते । ऋदित्त्वान् ङे, अरराजत् । राजन् । राजिष्यन् । राजमानः । राजिष्यमाणः । रराज्वान् । रेजिवान् । रराजानः, रेजानः । विराजितः । राजि ४ ता, तुम्, त्वा, तव्यम् । भ्राज् । भ्राजते । भ्राज्यते । अभ्राजिष्ट । अभ्राजि । "जॄभ्रम-"॥४।१।२६॥ इति वैत्वे, भ्रेजे, बभ्राजे । भ्राजिषीष्ट । भ्राजिता । भ्राजिष्यते । बिभ्राजिषते । बाभ्राज्यते । बाभ्राजीति; भ्राजेरात्मनेपदिनोऽपि पुनरिहपाठो राजसाहचर्यप्रदर्शनार्थः, तेन "यजसृज-"॥२।१।८७॥ इत्यत्रास्यैव ग्रहणात्षत्वे; बाभ्राष्टि, बाभ्राष्टः, बाभ्राजति, बाभ्रा २ जीषि, क्षि । पूर्वस्य तु

भ्राजेर्बाभ्राक्ति इति स्यात् । यद्येवं षत्वमेव विकल्प्यतां किं पुनः पाठेन । सत्यम् । अस्यात्मनेपदाव्यभिचारोपदर्शनद्वाराऽन्येषां यथादर्शनमात्मनेपदानित्यत्वज्ञापनार्थः पुनः पाठः, तेन लभते, लभति; सेवते, सेवति; श्रोतारमुपलभति न प्रशंसितारम्; 'स्वाधीने विभवेऽप्यहो नरपतिं सेवन्ति किं मानिनः' इत्यादयः प्रयोगाः साधवः । भ्राजयति । "भ्राजभास-"॥४।२।३६॥ इति ङे वा ह्रस्वे, अबिभ्रजत्, अबभ्राजत् । भ्राजि ५ ता, त्वा, तुम्, तः २ वान् ॥२६४॥२६५॥

अथानिटौ द्वौ । भजीं सेवायाम् । भजति, ते । संविभजति, ते । भज्यते । अभाक्षीत्, अभाक्ताम्; अभक्त, अभक्षाताम्, अभक्षत, अभक्थाः । अभाजि । बभाज । "तॄत्रप-"॥४।१।२५॥ इत्येत्वे, भेजतुः, भेजुः भेजिथ, बभक्थ, भेजथुः, भेज, बभाज, बभज, भेजिव, भेजिम । भेजे । भज्यात् । भक्षीष्ट । भक्ता २ । भक्ष्यति, ते । बिभक्षति, ते । बाभज्यते । बाभ २ जीति, क्ति । शेषं पचिवत् ॥ २६६ ॥

रञ्जीं रागे । "अकट्घिनोश्च-"॥४।२।५०॥ इति नलुकि; रजति, ते । क्ये, रज्यते । अराङ्क्षीत्, अराङ्काम, अराङ्क्षुः, अराङ्क्षीः; अराङ्क्षम् । अरङ्क, अरङ्क्षाताम् । अरञ्जि । ररञ्ज । "इन्ध्य-"॥४।३।२१॥ इति न कित्त्वे, ररञ्जतुः, ररञ्जुः, ररञ्जिथ, ररङ्क्थ, ररञ्जिम । ररञ्जे । रज्यात् । रङ्क्षीष्ट । रङ्क्ता, २ । रङ्क्ष्यति, ते । "कुषिरञ्जेः-"॥३।४।७४॥ इति कर्मकर्त्तरि शिद्विषये वा परस्मैपदं तद्योगे श्यश्च । रजति वस्त्रं रजकः; रज्यति, रज्यते वा वस्त्रं स्वयमेव । विरज्यति, विरज्यते वा भव्यो भोगेभ्यः स्वयमेव । शितोऽन्यत्र तु; अरञ्जि, रङ्क्षीष्ट, रङ्क्ष्यते वा वस्त्रं स्वयमेव । रिरङ्क्षति, ते । रारज्यते । रार ४ ञ्जीति, ङ्क्ति, क्तः जति ॥ ह्यस्त० ॥ अरारञ्जीत् । अरारन् । रारजत् । "णौ मृग-"॥४।२।५१॥ इति नलुकि, "कगेवनू-"॥४।२।२५॥ इति ह्रस्वे, रजयति मृगं व्याधः । ङे, अरीरजत् । ञिपरे तु वा दीर्घः, अराजि, अरजि । मृगरमणादन्यत्र नस्यालोपे; रञ्जयति नटः सभाम् । रञ्जयति रजको वस्त्रम् । अररञ्जत् । अरञ्जि । क्ते, रञ्जितः । रञ्जयित्वा । रजन् । रजमानः । रङ्क्ष्यन् । रङ्क्ष्यमाणः । कित्त्वान्नलुकि एत्वे च, रेजिवान् । रेजानः । "जनशो-"॥४।३।२३॥

इति वा कित्त्वे, रक्त्वा, रङ्क्त्वा । विरज्य । रक्तः । रङ्क्ता । रङ्क्तुम् । रङ्क्तव्यम् । रञ्जनीयम् । रङ्ग्यम् ॥ २६७ ॥

बुधृग् बोधने । बोधति, ते । बुध्यते । ऋदित्वाद्वाऽङि, अबुधत् । अबोधीत्, अबोधिष्टाम्, अबोधिषुः । आत्मनेपदेऽलङोऽसत्त्वे, अबोधिष्ट, अबोधिषाताम् ॥ भाक ॥ अबोधि । बुबोध; बुबुधुः; बुबोधिथ । बुबुधे । बुध्यात् । बोधिषीष्ट । बोधिता २ । बोधिष्यति, ते । "वौ व्यञ्जनादेः"॥४।३।२५॥ इति क्त्वासनोः सेटोर्वा कित्त्वे, बुबुधिषति, ते । बुबोधिषति, ते । बोबुध्यते । बोबोधीति, बोबोद्धि, बोबु २ द्धः, धति, बोबुधीषि, बोभोत्सि । शेषं बुधिञ्चूवत् । बोधयति । बोध्यते । अबूबुधत् । बोधयां २ चकार, चक्रे वा । बोधित्वा, बुधित्वा । बुधितः, २ वान् । बोधि २ ता, तुम् ॥ २६८ ॥

खनूग्, अवदारणे । खनति, ते । "ये नवा-"॥४।२।६२॥ इति वा आत्वे, खायते, खन्यते । अखनीत्, अखानीत्; अखनिष्टाम्, अखानिष्टाम्० । अखनिष्ट, अखनिषाताम् । अखानि । चखान । "गमहन-"॥४।२।४४॥ इत्यल्लुकि, चख्नतुः, चख्नुः, चखनिथ, चख्नथुः, चख्न, चखान, चखन, चख्निव, चख्निम । चख्ने, चख्नाते । "ये नवा-"॥४।२।६२॥ इत्यत्र अकारान्तस्य यस्य ग्रहणान्नात्वम्, खन्यात्, खायादित्यन्ये । खनिषीष्ट । खनिता २ । खनिष्यति, ते । चिखनिषति, ते । प्रतिचिखनिषत् । चाखायते, चङ्खन्यते । लुपि, चङ्खनीति, चङ्खन्ति । "आः खनि-"॥४।२।६०॥ इत्यात्वे; चङ्खातः, चङ्ख्नति । चङ्ख्नत् । खानयति, ते । अचीखनत् । खनन् । खनिष्यन् । खनमानः । खायमानम्, खन्यमानम् । खनिष्यमाणम् । चखन्वान् । चख्नानः । ऊदित्त्वाद्वेटि, खात्वा, "आः खनि-"॥४।२।६०॥ इति आत्वम् । खनित्वा । उत्खाय, उत्खन्य । खनि २ ता, तुम् । वेट्त्वान्नेटि, खातः, २ वान् । "खेय-"॥५।१।३८॥ इति क्यपि, खेयम् ॥२६९॥

दानी अवखण्डने । शानी तेजने; आर्जवे । "शान्दान्-"॥३।४।७॥ इति सनि, "स्वार्थे"॥४।४।६०॥ इति नेटि, दीदांसति, ते । निशाने सनि, शीशांसति, ते । शेषं सन्नन्तभूवत् । इच्छासनि, दीदांसिषति, ते । शीशांसिषति, ते । अर्थान्तरे तु सनोऽभावेन प्रायो न विभक्तयः, प्रत्ययान्तराणि तु भवन्ति ॥२७०॥२७१॥

शपीं आक्रोशे, विरुद्धानुध्याने । अनिट् । शपति, ते । अनेकार्थत्वादुपालम्भनेऽपि । "शप उपलम्भने"॥३।३।३५॥ इत्यात्मनेपदे, चैत्राय शपते । "श्लाघह्नुस्था-"॥२।२।६०॥ इति चतुर्थी; चैत्रं कञ्चिदर्थं बोधयतीत्यर्थः । अथवा वाचा शपथं कुर्वन् चैत्रं प्रत्याययतीत्यर्थः । अशाप्सीत्, अशाप्ताम्, अशाप्सुः । अशप्त, अशप्साताम् । शशाप, शेपतुः, शेपुः, शेपिथ, शशप्थ; शेपिम । शेपे, शेपाते । शप्यात् । शप्सीष्ट, शप्ता २ । शप्स्यति, ते । शिशप्सति, ते । शाश ३ प्यते, पीति, प्ति । शेषं पचिवत् । शापयति । अशीशपत् । शप्त्वा । शप्ता । शप्तुम् । शप्तः, २ वान् ॥ २७२ ॥

धावूग् गतिशुद्ध्योः । धावति, ते । धाव्यते । अधावीत्, अधाविष्टाम् । अधाविष्ट, अधाविषाताम् । अधावि । दधाव, दधावतुः । दधावे, दधावाते । धाव्यात् । धाविषीष्ट । धाविता २ । धाविष्यति, ते । दिधाविषति, ते । दाधाव्यते । दाधावीति । "अनुनासिके च-"॥४।१।१०८॥ इति वस्योटि, "ऊटा-"॥१।२।१३॥ इत्यौत्वे, दाधौ २ ति, तः, दाधावति । धावयति । अदीधवत् । ऊदित्त्वात् क्त्वि वेटि; धौत्वा, धावित्वा । प्रधाव्य । वेट्त्वात् क्तयोर्नेट्, धौतः, २ वान् पादौ । कथं धावितः, २ वान्; सत्यपि वेट्त्वे गतौ क्तयोरिट्प्रतिषेधस्यानित्यत्वात् । धावि ३ ता, त्वा, तुम् । धौतिः ॥ २७३ ॥

लषी कान्तौ, कान्तिरिच्छा । "भ्रासभ्लास-"॥३।४।७३॥ इति वा श्ये; लष्यति, लषति, इच्छतीत्यर्थः । अभिलष्यति, ते; अभिलषति, ते । क्ये, अभिलष्यते । अभ्यलषीत्, अभ्यलाषीत्; अभ्यलषिष्टाम्, अभ्यलाषिष्टाम् ० । अभ्यल २ षिष्ट, षिषाताम् । अभ्यलाषि । अभिललाष, अभिलेषतुः । अभिलेषे । अभिलष्यात् । अभिलषि ४ षीष्ट, ता, ष्यति, ष्यते । अभिलिलषिषति, ते । अभिलाल ३ ष्यते, षीति, ष्टि । अभिलाषयति । अभ्यलीलषत् । अभिलषि ५ ता, त्वा, तुम्, तः २ वान् । अभिलष्य ॥ २७४ ॥

चषी भक्षणे । चषति, ते । अचाषीत्, अचषीत् । चचाष । चेषे । चषिता । क्ते, चषितम् । शेषं लषीवत् ॥ २७५ ॥

गुहौग् संवरणे । "गोहः स्वरे"॥४।२।४२॥ इत्यूत्वे; गूहति, ते । गुह्यते ।

औदित्वाद्वेटि गुणे सत्यूकारे कृते, अगूहीत्, अगूहि २ ष्टाम्, षुः। पक्षे "हशिट-" ॥३।४।५५॥ इति सकि, अघुक्ष ३ त्, ताम्, न्। अत्र "हो धुट्-"॥२।१।८२॥ इति ढः, "षढोः-"॥२।१।६२॥ इति कः, "गडद-"॥२।१।७७॥ इति घः। "नाम्यन्त-" ॥२।३।१५॥ इति षः। अत्र ढस्थानस्य कस्यासत्वात् चतुर्थान्तलक्षणो घो भवति। "हशिट"॥३।४।५५॥ इति सकि, तथधदेषु परेषु; "दुहदिह-"॥४।३।७४॥ इति वा सको लुकि वेटि च, अघुक्षत। अगूढ। अगूहिष्ट "स्वरेतः"॥४।३।७५॥ इति सकोऽल्लुकि, अघुक्षाताम्, अगूहिषाताम्, अघुक्षन्त। अत्राल्लुकः स्थानित्वाद् "अनतोऽन्त- ॥४।२।११४॥ इत्यत् न भवति। अगूहिषत, अघुक्षथाः, अगूढाः, अगूहिष्ठाः, अघुक्षाथाम्, अगूहिषाथाम्, अघुक्षध्वम्, अघूढ्वम्, अगूहि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, अघुक्षि, अगूहिषि, अघुक्षावहि, अगुह्वहि, अगूहिष्वहि, अघुक्षामहि, अगूहिष्महि। अगूहि। जुगूह, जुगुहतुः। "गोह-"॥ ४।२।४२॥ इति गुणनिर्देशान्नात्र ऊत्; जुगुहुः, जुगूहिथ। जुगुहे, जुगुहाते। गुह्यात्। गूहिषीष्ट। "सिजाशिष-"॥४।३।३५॥ इति कित्त्वे, घुक्षीष्ट। गूहिता २। गोढा २। गूहिष्यति, ते। घोक्ष्यति, ते। एवं अव, नि पूर्वोऽपि। "ग्रहगुहश्च-"॥४।४।५९॥ इतीट्निषेधात्, "उपान्त्ये"॥४।३।३४॥ इति सनः कित्त्वे, जुघुक्षति, ते। जोगुह्यते। जोगुहीति, जोगोढि, जोगूढः, जोगुहति, जोगुहीषि, जोघोक्षि ॥ ह्य० ॥ अजोगुहीत्। पदान्ते गो घत्वे, अजोघोट्, ड्, अजोगूढाम्, अजोगुहुः, अजोगुहीः, अजोघोट्, ड्, अजोगूढम्, अजोगूढ, अजोगुहम्, अजोगुह्व, अजोगुह्म। निगूहयति। ङे, न्यजूगुहत्। ह्रस्वाभावमते तु, अजुगूहत्। निगूहन्। निगूहमानः। निगुह्यमानम्। "वेटो-"॥४।४।६२॥ इति नेटि, गूढः, २ वान्। गूढिः। गूढ्वा; गूहित्वा। गोढा, गूहिता। गोढुम्, गूहितुम्। गूहनीयम्। "कृवृषि-"॥५।१।४२॥ इति वा क्यपि, गुह्यम्। पक्षे घ्यणि, गोह्यम्, गूहनम् ॥ २७६ ॥

भ्लक्षी भक्षणे। अयं भक्षीत्यन्ये। भक्षति, ते। अभक्षीत्। अभाक्षिष्ट। बभक्ष। बभक्षे। भाक्षि ४ त्वा, ता, तुम्, तम् ॥ २७७ ॥

इत्युभयपदिनः ।

अथ द्युतादय आत्मनेपदिनः ।

द्युति दीप्तौ । द्योतते; विद्योतते । द्युत्यते ॥ अद्य० ॥ "द्युद्भ्योऽद्यतन्याम्"॥ ३।३।४४॥ इति वाऽऽत्मनेपदे; पक्षे, "लृदिद्द्युता-"३।४।६४॥ इत्यङि, अद्युतत्, अद्युतताम्, अद्युतन्, अद्यु ६ तः, ततम्, तत, तम्, ताव, ताम । अद्योतिष्ट, अद्योतिषाताम्; अद्योतिध्वम् । अद्योतिढ्ढ्वम् ॥ भाक ॥ अद्योति । "द्युतेरिः"॥४। १।४१॥ इति पूर्वस्येत्वे; दिद्युते, दिद्युताते, दिद्युतिरे, दिद्युतिषे। द्योतिषीष्ट । द्योतिता। द्योतिष्यते। अद्योतिष्यत । दिद्युतिषते; दिद्योतिषते। देद्युत्यते। देद्युतीति, देद्योत्ति, देद्युत्तः, देद्युतति । द्योतयति। अदिद्युतत् । सनि, दिद्योतयिषति । द्योतमानः। द्योतिष्यमाणः । दिद्युतानः । द्योति २ ता, तुम् । द्युतितः २ वान् । "उति-शवर्हा-"॥४।३।२६॥ इति भावारम्भे वा क्त्वे; द्युतितम्; द्योतितमनेन । प्रद्यु-तितः २, वान् । प्रद्योतितः २, वान् । एवमन्यत्रापि । "वौ व्यञ्जन-"॥४।३।२५॥ इति क्त्वासनोर्वा कित्त्वे; द्युतित्वा, द्योतित्वा । प्रद्युत्य ॥ २७८ ॥

रुचि अभिप्रीत्यां च; चाद्दीप्तौ । अभिप्रीतिरभिलाषः । "रुचिक्लृप्य-"॥२।२। ५५॥ इति चतुर्थ्यां; मैत्राय रोचते दधि । रुच्यते । द्युतादित्वादङि, अरुचत् । अरोचिष्ट, अरोचिषाताम्; अरोचि २ ध्वम्, ढ्वम् । अरोचि । रुरुचे, रुरुचाते, रुरुचिरे, रुरुचिषे । रोचिषीष्ट । रोचिता २ । रोचिष्यते। अरोचिष्यत । "वौ व्य-ञ्जन-"॥४।३।२५॥ इति वा कित्; रुरुचिषते, रुरोचिषते। "न गृणा-"॥३।४।१३॥ इति न यङ्; भृशं रोचते। "अणिगि प्राणि-"॥३।३।१०७॥ इति फलवति परस्मै प्राप्तावपि, "परिमुह-"॥३।३।९४॥ इत्यात्मनेपदे, चैत्राय मैत्रं परिरोचयते । अरूरु-चत । रोचमानः । रोचिष्यमाणः । रुरुचानः । रुचितः २, वान् । "उतिशव-" ॥४।३।२६॥ इति भावारम्भे वा क्त्वे; रुचितम्, रोचितम् । प्ररुचितः, प्ररोचितः । रोचित्वा, रुचित्वा । रोचि ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥ २७९ ॥

शुभि दीप्तौ। शोभते । शुभ्यते। अशुभत् । अशोभिष्ट, अशोभिषाताम्। अशोभि । शुशुभे, शुशुभाते । शोभि ३ षीष्ट, ता, ष्यते । शुशुभिषते, शुशो-भिषते । भृशं शोभत इति वाक्यम् । शेषं रुचिवत् ॥ २८० ॥

क्षुभि सञ्चलने । रूपान्यथात्वे । क्षोभते । अक्षुभत् । अक्षोभिष्ट, अक्षोभिषाताम् । अक्षोभि । चुक्षुभे । क्षोभि ३ षीष्ट, ता, ष्यते । चोक्षुभ्यते । चोक्षुभीति, चोक्षोब्धि । क्षोभयति । अचुक्षुभत् । "क्षुब्ध-"॥४।४।७०॥ इति निपातनात् क्षुब्धो मन्थः । क्षुभितोऽन्यः । अयमर्थः । मन्थस्यानेकार्थत्वात् मन्थे, मथिते, मध्यमानक्षोभिते वा । क्षुब्धः समुद्रः, मथित इत्यर्थः; मध्यमानः सन् क्षोभङ्गमित इति वाऽर्थः । मन्थने । क्षुब्धं वल्लवेन, विलोडनं कृतमित्यर्थः । मन्थादन्यत्र तु, क्षुभितं समुद्रेण, सञ्चलितमित्यर्थः । एवं क्षुभितं मन्थानकेन । क्षुभितः समुद्रो-वातेन । शेषं रुचिरिव ॥ २८१ ॥

स्रम्भूङ् विश्वासे । दन्त्यादिः । विस्रम्भते । द्युताद्यङि, नलुकि च; अस्रभत् । अस्रम्भिष्ट । सस्रम्भे । विस्रम्भिषीष्ट । विस्रम्भिष्यते । विसिस्रम्भिषते । विसास्रभ्यते । विसास्रं २ म्भीति, ब्धि । विस्रम्भयति । व्यसस्रम्भत् । ऊदित्त्वाद्वेट्; स्रब्ध्वा, स्रम्भित्वा । "क्त्वा"॥४।३।२९॥ इति सेट्क्त्वा न कित्, तेन नलुक् न स्यात् । वेट्त्वान्नेटि, विस्रब्धः, २ वान् । विस्रम्भि ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥ २८२ ॥

भ्रंशूङ्, स्रंसूङ् अवस्रंसने । आद्यस्तालव्यान्तः, परो दन्त्यादिः । "शिड्हे" ॥१।३।४०॥ इत्यनुस्वारः । भ्रंशते । भ्रश्यते । अङि, अभ्रशत् । अभ्रंशिष्ट, अभ्रंशिषाताम् । अभ्रंशि । बभ्रंशे, बभ्रंशाते । "इन्ध्य-"॥४।३।२१॥ इति परोक्षा न कित् । भ्रंशि ३ षीष्ट, ता, ष्यते ॥ अभ्रंशिष्यत । बिभ्रंशिषते । बनीभ्रश्यते । बनी १२ भ्रंशीति, भ्रष्टि, भ्रष्टः, भ्रशति, भ्रंशीषि, भ्रंक्षि, भ्रष्ठः, भ्रष्ठ, भ्रंशीमि, भ्रंश्मि, भ्रश्वः, भ्रश्मः । भ्रंशयति । अबभ्रंशत् । भ्रंशमानः । भ्रंशिष्यमाणः । भ्रश्यमानम् । बभ्रशानः । ऊदित्त्वाद्वेट्, भ्रष्ट्वा, भ्रंशित्वा । प्रभ्रश्य । वेट्त्वात्, भ्रष्टः २, वान् । भ्रंशि २ ता, तुम् । भ्रंशनीयम् । भ्रंश्यम् ॥ स्रंसूङ् । स्रंसते । स्रस्यते । अस्रसत् । अस्रंसिष्ट । अस्रंसि । सस्रंसे । स्रंसि ३ षीष्ट, ता, ष्यते । अस्रंसिष्यत । सिस्रंसिषते । सनीस्रस्यते । सनी ४ स्रंसीति, स्रंस्ति, स्रस्तः, स्रसति । स्रंसयति । अससस्रंसत् । स्रस्त्वा; स्रंसित्वा । प्रस्रस्य । स्रस्तः, २ वान् स्रंसि २ ता, तुम् ॥ २८३ ॥ २८४ ॥

ध्वंसूङ् गतौ च; चादवस्रंसने। ध्वंसते; अवध्वंसते; विध्वंसते । ध्वस्यते । अङि, अध्वसत् । अध्वंसिष्ट, अध्वंसिषाताम् । अध्वंसि । दध्वंसे । ध्वंसि ३ षीष्ट, ता, ष्यते । दिध्वंसिषते । दनीध्वस्यते । दनी ४ ध्वंसीति, ध्वंस्ति, ध्वस्तः, ध्वसति । ध्वंसयति । अदध्वंसत् । ध्वंसयांचकार । दध्वसानः । ध्वस्त्वा, ध्वंसित्वा । प्रध्वस्य । ध्वस्तः, २ वान् । ध्वंसि २ ता, तुम् । ध्वंसनीयम् । ध्वंस्यम् ॥ २८५ ॥

द्युताद्यन्तर्गणो वृतादिः पञ्चकः । वृतूङ् वर्त्तने । स्थितौ वर्त्तते । प्रवर्त्तते । अनु, वि, परि, नि, व्या, परा, आङ्, निर्, पूर्वोऽपि वाच्यः। वृत्यते। प्रावर्त्तत। द्युताद्यङि, अवृतत् । अवर्त्तिष्ट, अवर्त्तिषाताम्; अवर्त्तिष्ठाः; अवर्त्ति २ ध्वम्, ड्ढ्वम् । अवर्त्ति । ववृते, ववृताते । वर्त्तिषीष्ट । वर्त्तिता । "वृद्भ्य-"॥३।३।४५॥ इति स्यसनोर्विषये वाऽत्मनेपदम्। आत्मनेपदाभावे च,"न वृद्भ्यः"॥४।४।५५॥ इति नेट्, वर्त्स्यति; वर्त्तिष्यते । अवर्त्स्यत्; अवर्त्तिष्यत । विवृत्सति; विवर्त्तिषते । अविवृत्सीत्, अविवर्त्तिषीष्ट । विवृत्साञ्चकार । ३ । विवर्त्तिषाञ्चक्रे । ३ । विवृत्सिष्यति । विवर्त्तिषिष्यते । स्यसनि वृतादीनां श्वस्तन्यां च क्लृपेर्विकल्पसद्भावात्परस्मैपदनिमित्तत्वमात्मनेपदनिमित्तत्वं चोभयमप्यस्ति; तेन सन्नन्तानां क्तादावपि उभयपदनिमित्तत्वात् इडभाव इट् चोभयमपि भवति ॥ विवृत्सि ५ तः, त्वा, ता, तुम्, तव्यम् । विवर्त्तिषि ५ तः, त्वा, ता, तुम्, तव्यम् । प्रविवृत्स्य । प्रविवर्त्तिष्य । एवं स्यन्दादिष्वपि । वरीवृत्यते । लुपि, वरीवृतीति, वरिवृतीति । रागमे बहुलवचनान्न ईत्, तेनात्र तृतीयो र् आगमो नोक्तः। वरीरि र् ३ वर्त्ति । वरी रि र् ३ वृत्तः । वरी रि र् ३ वृतति । वरि ८ वृतीषि, वर्त्सि, वृत्थः, वृत्थ, वर्त्मि, वृतीमि, वृत्वः, वृत्मः । हौ, वरिवृद्धि ॥ ह्य० ॥ अवरि ११ वर्त्, वृतीत्, वृत्ताम्, वृतुः, वृतीः, वर्त्, वृत्तम्, वृत्त, वृतम्, वृत्व, वृत्म । शेषं पाचिस्थानोक्तम् । वर्त्तयति । "ऋदवर्णस्य"॥४।२।३७॥ इति गुणापवादो वा ऋः; अवीवृतत्, अववर्त्तत् । वर्त्तयाञ्चकार । "वृत्तेर्वृत्तम्"॥४।४।६५॥ इति निपातनात्; णौ क्ते, वृत्तस्तर्कः, अभ्यासित इत्यर्थः । ग्रन्थादन्यत्र तु, वर्त्तितं कुङ्कुमम् । अन्ये तु ग्रन्थेऽपि वर्त्तितमिति प्रयोगमाद्रियन्ते । वर्त्तमानः । वर्त्स्यन्।

वर्त्तिष्यमाणः । वृत्स्यमानम् । वर्त्तिष्यमाणम् । ववृतानः । ऊदित्त्वात्; वृत्त्वा, वर्त्तित्वा । प्रवृत्य । वेट्त्वात्, वृत्तः, २ वान् । वृत्तिः । वर्त्ति २ ता, तुम् ॥२८६॥

स्यन्दौङ् स्रवणे । स्यन्दते । "निरभ्यनोश्च स्यन्दस्याप्राणिनि" ॥२।३।५०॥ इति वा षत्वे, निःष्यन्दते, निस्स्यन्दते तैलम् । अभिष्यन्दते, अभिस्यन्दते । एवम् अनु, परि, नि, वि, पूर्वस्यापि वा षत्वं वाच्यम् । प्राणिनि तु कर्त्तरि, परिस्यन्दते मत्स्य उदके । पर्युदासेन प्राणिन एव केवलस्य निषेधात्प्राण्यप्राणि-द्वयप्रयोगे तु षत्वविकल्प एव; अनुष्यन्देते मत्स्योदके, अनुस्यन्देते वा । स्य-द्यते । अङि, अस्यदत् । पर्यष्यदत्, पर्यस्यदत् । अस्यंदिष्ट । औदित्त्वाद्वेट्, अस्यन्त, अस्यन्दि ९ षाताम्, षत, ष्ठाः, षाथाम्, ध्वम्, ड्ढ्वम्, षि० । अस्य ९ न्त्साताम्, न्त्सत, न्त्थाः, न्त्साथाम्, द्ध्वम्, द्ध्वम्, त्सि० । अस्य-न्दि । सस्यन्दे । स्यन्दिषीष्ट; स्यन्त्सीष्ट । स्यन्दिता, स्यन्ता । "वृद्भ्यः स्यसनोः" ॥३।३।४५॥ इति वाऽत्मने । आत्मनेपदाभावे "न वृद्भ्यः" ॥४।४।५५॥ इति नेट् । आत्मनेपदे चौदित्त्वाद्वेट् । स्यन्त्स्यति; स्यन्दिष्यते, स्यन्त्स्यते । अस्यन्त्स्यत्; अस्यन्दिष्यत, अस्यन्त्स्यत । सिस्यन्त्सति, ते । सिस्यन्दिषते । सास्यद्यते । सास्य-४ न्दीति, न्त्ति, न्त्तः, दति । स्यन्दस्येति शब्निर्देशाद्यङ्लुपि न षत्वम् । अभिसा-स्यन्दीति तैलम् । स्यन्दयति । असस्यन्दत् । सिस्यन्दयिषति । स्यन्दमानः । स्यन्त्स्यन् । स्यन्दिष्यमाणः । सन्त्स्यमानः । सस्यदानः । इडभावे "स्कन्दस्यन्दः" ॥४।३।३०॥ इति न क्त्वा कित् । इटि तु "क्त्वा" ॥४।३।२९॥ इति न कित्, स्यन्त्वा, स्यन्दित्वा । यपि, प्रस्यन्द्य । तादिरेव न किदिति मते तु, प्रस्यद्य । वेट्त्वान्नेट्; स्यन्नः, २ वान् । स्यन्दिता, स्यन्त्ता । स्यन्दितुम्, स्यन्तुम् । स्यन्द-नीयम् । स्यन्द्यम् ॥ २८७ ॥

वृधूङ् वृद्धौ । वर्धते । वृध्यते । अवृधत् । अवर्धिष्ट, अवर्द्धिषाताम् । अवर्द्धि । ववृधे, ववृधाते । वर्धिषीष्ट । वर्धिता । "वृद्भ्यः-" ॥३।३।४५॥ इति वाऽऽ-त्मनेपदाभावे "न वृद्भ्यः" ॥४।४।५५॥ इति नेट्; वर्त्स्यति । वर्धिष्यते । अवर्त्स्यत् । अवर्धिष्यत । विवृत्सति । विवर्धिषते । वरीवृध्यते । वरी रि र्, ३ वृधीति, वरी रि र्,३ वर्द्धि । वरी रि र्, ३ वृद्धः, वरीरि र् ३ वृधति । वरि ८ वृधीषि,

वार्त्सि, वृद्धः, वृद्ध, वृधीमि, वर्ध्मि, वृध्वः, वृध्मः । हौ वरिवृद्धि। वरिवृधानि ॥ ह्य० ॥ अवरि १२ वर्त्, वृधीत्, वृद्धाम्, वृधुः, वृधीः, वाः, वर्त्, वृद्धम्, वृद्ध, वृधम्, वृध्व, वृध्म । णौ, वर्धयति । अवीवृधत्; अववर्धत् । वर्धमानः । वृध्यमानम् । वर्त्स्यन् । वर्धिष्यमाणः । ववृधानः । ऊदित्त्वात्, वृध्वा, वर्धित्वा । वेट्त्वात्, वृद्धः, २ वान् । वृद्धिः । वर्धिता । वर्धितुम् ॥ २८८ ॥

शृधूङ् शब्दकुत्सायाम् । तालव्यादिः। शब्दकुत्सा पायुशब्दत्वात् । शर्धते । अशृधत् । अशर्धिष्ट । शशृधे । शर्त्स्यति । शर्धिष्यते । शिशृत्सति । शिशर्धिषते । शृध्वा; शर्धित्वा । शृद्धः, २ वान् । सर्वं वृधूङ्वत् ॥ २८९ ॥

कृपौङ् सामर्थ्ये । "ऋर-"॥२।३।९९॥ इति लत्वे, कल्पते; प्रकल्पते; विकल्पते; सङ्कल्पते । लृत्वे, क्लृप्यते । अङि, अक्लृपत् । औदित्वाद्वेटि, अकल्पि २ ष्ट, षाताम्। अक्लृप्त, अक्लृप्साताम्, अत्र "सिजाशिष-"॥४।३।३५॥ इति कित्त्वम्। अकल्पि। चक्लृपे, चक्लृपाते । कल्पिषीष्ट । "सिजा-"॥४।३।३५॥ इति कित्त्वे, क्लृप्सीष्ट। "कृपः श्वस्तन्याम्"॥३।३।४६॥ इति "वृद्भ्यः स्यसनोः"॥ ३।३।४५॥ इति च वाऽऽत्मनेपदम् । पक्षे "न वृद्भ्यः"॥४।४।५५॥ इति नेट् । आत्मनेपदेत्वौदित्त्वाद्वेट्, कल्प्तासि । कल्प्तासे, कल्पितासे। कल्प्स्यति । कल्पिष्यते, कल्प्स्यते । अकल्प्स्यत्, त । अकल्पिष्यत । "उपान्त्ये" ॥४।३।३४॥ इत्यनिट् सन् कित्; चिक्लृप्सति, ते। अत्र ऋवर्णोपादिष्टं कार्यं लृवर्णस्यापीति लृतोऽपि "ऋतोऽत्"॥४।१।३८॥ चिकल्पिषते । चलीक्लृप्यते । चलि ली ल् ३ क्लृपीति, चलि ली ल् ३ कल्प्ति, क्लृप्तः, क्लृपति। कल्पयति। कल्प्यते। अचकल्पत्। अचीक्लृपत्; "ऋदृवर्णस्य"॥४।२।३७॥ इति वा ऋः। "ऋर-"॥२।३।९९॥ इति लः। कल्पमानः। प्रक्लृप्यमानम्, अत्र लृमध्ये लकारस्य सद्भावात् "स्वरात्" ॥२।३।८५॥ इति न णः; अलचटेत्यधिकारात्। कल्प्स्यन्। कल्पिष्यमाणः, कल्प्स्यमानः। कल्पिता, कल्प्ता । कल्पितुम्, कल्प्तुम् । कल्पित्वा, क्लृप्त्वा । वेट्त्वाभेट्, क्लृप्तः, २ वान् । कल्पनीयम्। कल्प्यम्॥ वृत्। वर्त्तनं वृत्। द्युतादिर्वृतादिश्चान्तर्गणौ वर्त्तितौ, समाप्ताविसर्थः। वृधेः क्विपि, वृत्वर्धितौ पूर्णाविसके॥२९०॥

इति द्युतादिः ।

अथ ज्वलादिः ।

ज्वल दीप्तौ । ज्वलति । ज्वल्यते । "वदव्रज-"॥४।३।४८॥ इति वृद्धौ, अज्वालीत्; अज्वालिष्टाम् । अज्वालि, अज्वालिषाताम् । जज्वाल, जज्वलतुः; जज्वलिथ । जज्वले । ज्वल्यात् । ज्वलिषीष्ट । ज्वलिता २ । ज्वलिष्यति, ते । अज्वलिष्यत्, त । जिज्वलिषति । यवलानां वाऽनुनासिकत्वे, जञ्ज्वल्यँते; जाज्वल्यँते । जञ्ज्व २ लीँति, ल्तिँ । जाज्व २ लीति, ल्ति । णौ, घटादित्वात् ह्रस्वे, प्रज्वलयति । "ज्वलह्वल-"॥४।२।३२॥ इत्यनुपसर्गस्य वा ह्रस्वे; ज्वलयति, ज्वालयति । अजिज्वलत् । "ज्वलह्वल-"॥४।२।३२॥ इत्यत्र वा ह्रस्वविधानात्, "घटादेः-"॥४।२।२४॥ इत्यनेनैव ञो वा दीर्घे; प्राज्वालि, प्राज्वलि । अज्वालि, अज्वलि । ज्वलन् । ज्वलिष्यन् । ज्वल्यमानम् । ज्वलिष्यमाणम् । जज्वल्वान् । ज्वलि ५ ता, त्वा, तुम्, तः, २ वान् । प्रज्वल्य ॥ २९१ ॥

कुच सम्पर्चनकौटिल्यप्रतिष्टम्भविलेखनेषु । सम्पर्चनं मिश्रता । प्रतिष्टम्भो रोधनम् । विलेखनं कर्षणम् । सङ्कोचति । सङ्कुच्यते । अकोचीत् । अकोचि, अकोचिषाताम् । चुकोच । चुकुचे । कुच्यात् । कोचिषीष्ट । कोचिता । कोचिष्यति । चुकुचिषति, चुकोचिषति । चोकुच्यते । चोकोक्ति । चोकु ३ चीति, क्तः, चति । सङ्कोचयति । अचूकुचत् । सङ्कोचन् । सङ्कुच्यमानम् । सङ्कुचितः, २ वान् । कुचित्वा, कोचित्वा । सङ्कुच्य । कोचि २ ता, तुम् ॥२९२॥

पत्लृ, पथे गतौ । पतति । "नेर्ङ्गादा-"॥२।३।७९॥ इति णत्वे, प्रणिपतति । प्र, उद्, आ, नि, अनु पूर्वोपि वाच्यः । पत्यते । प्रण्यपतत् । अटो धात्वादित्वान्न व्यवधानम् । लृदित्त्वादङि, "श्वयत्य-"॥४।३।१०३ ॥ इति पप्तादेशे, अपप्त ३ त्, ताम्, न् । अपाति, अपतिषाताम् । पपात, पेततुः, पेतुः, पेतिथ, पेतथुः । पेते, पेताते, पेतिरे, पेतिषे । पत्यात् । पतिषीष्ट । पतिता २ । पतिष्यति, ते । अपतिष्यत्, त । "इवृध-"॥४।४।४७॥ इति वेटि, पिपतिषति । पक्षे "रभलभ-"॥४।१।२१॥ इति इः; पित्सति । "वञ्च-"॥४।१।५०॥ इति नीः; पनीपत्यते । पनीप ४ तीति, त्ति, त्तः, तति । अद्य० ॥ लृदनुबन्धात्प्राप्तस्य अङो, यङ्लुप्यप्राप्तेः,

अपनीपतीत्। पातयति । अपीपतत् । णिगन्ताण्णिगि, पातयत्याम्रं चैत्रेण। पतन्। पतिष्यन् । पत्यमानम् । पतिष्यमाणम् । पेतिवान् । पेतानम्। पति ३ ता, त्वा, तुम्। उत्पत्य, "वेटोऽपतः"॥४।४।६२॥ इति पतो वर्जनात् इट्, पतितः,२ वान्। पथे धातुस्त्यक्तः ॥ २९३ ॥

मथे विलोडने । मथति । मथ्यते। एदित्त्वात् "नश्वि-"॥४।३।४९॥ इति न वृद्धिः, अमथीत्, अमथिष्टाम्। अमाथि, अमाथिषाताम्। ममाथ, मेथतुः, मेथुः, मेथिथ । मेथे । मथ्यात् । मथि ३ षीष्ट, ता, ष्यति । मिमथिषति । मामथ्यते । माम ३ थीति, त्ति, त्तः, इत्यादि सर्वं पचिवत् । यतोऽद्यतन्यां एदितां यङ्-लुपि, " नश्वि- "॥४।३।४९॥ इति न वृद्धिप्रतिषेधः, अमामाथीत्, अमाम-थीत्, इति स्यात् । प्रमाथयति । प्रामीमथत् । मथन् । मथिष्यन् । मथ्यमा-नम् । मथिष्यमाणम् । मेथिवान् । मेथानम् । मथि ५ ता, त्वा, तुम्, तः, २ वान् ॥ २९४ ॥

अथानिटौ द्वौ॥ षद्लृं विशरणगत्यवसादनेषु। विशरणं शटनम्। अवसा-दोऽनुत्साहः । "श्रौति-"॥४।२।१०८॥ इति सीदः, सीदति; प्रसीदति; उत्सीदति। "सदोऽप्रतेः-"॥२।३।४४॥ इति द्वित्वेऽपि अट्यपि षत्वे; निषीदति; विषीदति । प्रतेस्तु न षः, प्रतिसीदति । क्ये, सद्यते। न्यषीदत्; व्यषीदत् । लृदित्त्वादङि, आसद ३ त्, ताम्, न् । आसादि, आसत्साताम्। ससाद । परोक्षायां त्वादेरेव षः; निषसाद; विषसाद। आससाद, सेदतुः, सेदुः, सेदिथ, ससत्थ । सेदे, सेदाते, सेदिरे, सेदिषे। सद्यात् । निषत्सीष्ट। निषत्ता २। विषत्स्यति, ते। "नाम्य-न्तस्था-"॥२।३।१५॥ इति षे, सिषत्सति; निषिषत्सति; विषिषत्सति; प्रतिसिषत्सति, उपविविक्षतीत्यर्थः। "गॄलुप-"॥३।४।१२॥ इति गर्ह्यार्थे यङि, सासद्यते; निषास-द्यते। सादयति; निषादयति। असीषदत्; न्यषीषदत्; व्यषीषदत्; प्रत्यसीषदत्, अत्राद्यस्य सस्य न षत्वम्, द्वितीयस्य तु "नाम्यन्तस्था-"॥२।३।१५॥ इति षत्वम्। विषीदन् । विषीदन्ती। विषत्स्यन्। विषद्यमानम्। विषत्स्यमानम् । निषेदिवान्; आसेदिवान्; अस्य बहुलाधिकारात्कानो न स्यात् । सन्नः, २ वान् । निषण्णः, २ वान् । सत्त्वा। निषद्य । सत्ता । सत्तुम् । आसत्तव्यम् । षद्लृंत अवसा-

दने इत्यस्य तु शतरि अयं विशेषः; सीदती, सीदन्ती स्त्री कुले वा । शेषं तुल्यम् ॥ २९५ ॥

शद्लृं शातने । तनूकरणे । "शदेः शिति"॥३।३।४१॥ इत्यात्मनेपदं, "श्रौति-"॥४।२।१०८॥ इति शीयः, शीयते, शीयेते । क्ये, शद्यते । शीयेत । शीयताम् । अशीयत । शितोऽन्यत्र परस्मैपदे, लृदित्त्वादङि, अशदत् । अशादि, अशत्साताम् । शशाद, शेदतुः । शेदे । शद्यात् । शत्सीष्ट। शत्ता २। शत्स्यति, ते । शिशत्सति । "शदेः शिति"॥३।३।४१॥ इत्यात्मनेपदं शिन्निमित्तं, नतु धातुनिमित्तम्, तेनात्र "प्राग्वत्"॥३।३।७४॥ इत्यात्मनेपदं न भवति । एवं मुमूर्षतीत्यादावपि ज्ञेयम् । शाशद्यते । णौ "शदिरगतौ शात्"॥४।२।२३॥ पुष्पाणि शातयति । गतौ तु गाः शादयति । शीयमानः । शद्यमानम् । शन्नः । शत्त्वा। शत्ता ॥ २९६ ॥

बुध अवगमने। ज्ञापने । प्रतिबोधति । बुध्यते। अबोधीत्, अबोधिष्टाम्, अबोधिषुः। अबोधि, अबोधिषाताम्। बुबोध, बुबुधतुः। बोधिता २। अनुस्वारेदयमित्येके तन्मते, अभौत्सीत् । बोद्धा। बुबुधिषति, बुबोधिषति । बोबुध्यते। लुपि, बुधिंचूवत् । णौ "गतिबोध-"॥२।२।५॥ इत्यणिक्कर्तुः कर्मत्वे, बोधयति शिष्यं धर्म्मम् । बुधित्वा, बोधित्वा ॥ २९७ ॥

टुवमू उद्गरणे । भुक्तस्योर्द्ध्वगतौ । वमति; उद्वमति । वमेत । वमतु । अवमत् । वम्यते । "नश्वि-"॥४।३।४९॥ इति न वृद्धिः; अवमीत्, अव २ मिष्टाम, षुः । "मोऽकमि-"॥४।३।५५॥ इति अनिषेधाद्वृद्धिः, अवामि, अवमिषाताम् । ववाम, "न शम-"॥४।१।३०॥ इत्यप्राप्तावपि, "जॄभ्रम-"॥४।१।२६॥ इति वा एः; वेमतुः ववमतुः, वेमुः, ववमुः, वेमिथ, ववमिथ । वेमे, ववमे। वम्यात् । वमिषीष्ट । वमिता २ । वमिष्यति, ते । अवमिष्यत्, त। विवमिषति। "तौ मुमो-"॥१।३।१४॥ इति स्वोऽनुनासिकः, वव्वँम्यते। अनुस्वारेतु, वंवम्यते। वंवमीति, वंवन्ति, वंवान्तः, वंवमति, वंवमीषि, वंवंसि, वंवान्थः, वंवान्थ, वंव ४ मीमि, न्मि; न्वः, न्मः, "मो नो-"॥२।१।६७॥ इति नः ॥ अद्य० ॥ "नश्वि-"॥४।३।४९॥ इति यङ्लुप्यपि वृद्धिनिषेधात, अवंवमीत् । णौ,

"अमोऽकमि-"॥४।२।२६॥ इति ह्रस्वे, उद्वमयति । उदवीवमत् । ञिणम्परे तु वा दीर्घः; उदवामि, उदवमि । अवामि, अवमि । वामं २, वमं २ । "ज्वलह्वल-"॥४।२।३२॥ इत्यनुपसर्गस्य वा ह्रस्वे; वमयति, वामयति । अवीवमत्; "ज्वलह्वल-"॥४।२।३२॥ इत्यनेन वा ह्रस्व एव विधीयते, न पुनर्ञिणम्परे वा दीर्घः, अतः स प्रागुदाहारि। वमन् । वमिष्यन्।वम्यमानम्। वमिष्यमाणम् । ववन्वान् । वेमिवान् । वेमानम् । ववमानम् । वमि २ ता, तुम् । ऊदित्त्वात् क्त्वि वेट्, वान्त्वा, वमित्वा । वेट्त्वादप्राप्तौ, "श्वसजप-"॥४।४।७५॥ इति वेटि; वान्तः, २ वान्; वमितः, २ वान् ॥ २९८ ॥

भ्रमू चलने । भ्रमति । "भ्रासभ्लास-"॥३।४।७३॥ इति वा श्ये, भ्रम्यति । क्ये, भ्रम्यते । "न श्वि"॥४।३।४९॥ इति न वृद्धिः; अभ्रमीत्, अभ्रमिष्टाम् । "मोऽकमि-"॥४।३।५५॥ इति न वृद्धिः; अभ्रमि, अभ्रमिषाताम् । बभ्राम । शेषं सर्वं भ्रमूच्वत् । शतरि तु; भ्रमन्, भ्रम्यन् ॥ २९९ ॥

क्षर सञ्चलने । सकर्माऽकर्मा चायम् । क्षरति गौः; पयो मुञ्चतीत्यर्थः । क्षरति जलं; स्रवतीत्यर्थः । क्षर्यते । "वद-"॥४।३।४८॥ इति वृद्धौ; अक्षारीत्, अक्षारिष्टाम् । अक्षारि, अक्षरिषाताम् । चक्षार; चक्षरिम। चक्षरे । क्षर्यात्। क्षरिषीष्ट । क्षरिता २ । क्षरिष्यति, ते । चिक्षरिषति । चाक्षर्यते । क्षारयति । अचिक्षरत् । क्षरि ५ ता, त्वा, तुम्, तः २, वान् ॥ ३०० ॥

चल कम्पने। चलति। चल्यते । "वदव्रज-"॥४।३।४८॥ इति वृद्धौ; अचालीत्, अचालिष्टाम्। अचालि, अचलिषाताम्। चचाल, चेलतुः; चेलिम। चेले। चल्यात्। चलिषीष्ट। चलिता २ । चलिष्यति, ते । चिचलिषति । यलवानां वाऽनुनासिकत्वे मुरन्तोऽपि वा; चञ्चल्यँते, चाचल्यते । कम्पने घटादित्वाण् णौ ह्रस्वे, "चल्याहार-"॥३।३।१०८॥ इति फलवत्यपि परस्मैपदे च; चलयति शाखाम्। अन्यत्र, चालयति सूत्रं सार्थं वा । चल्यते, चाल्यते । अचीचलत् । चलन् । चलिष्यन्। चेलिवान् । चेलानम् । चलि ५ ता, त्वा, तुम्, तः, २ वान् ॥३०१॥

शल गतौ । तालव्यादिः । शलति; उच्छलति । उच्छल्यते । "वदव्रज-"॥ ४।३।४८॥ इति वृद्धौ, उदशालीत् । शशाल, शेलतुः । शलिता । शलिष्यति ।

उच्छिशलिषति । उच्छालयति । उदशीशलत् । शलन् । उच्छलि ३तः, तुम्, ता । उच्छल्य । शलि चलने च; चात्संवरणे । शलते ॥ ३०२ ॥

क्रुशं आह्वानरोदनयोः । अनिट् । आक्रोशति । आक्रुश्यते । "हशिट-"॥ ३।४।५५॥ इति सकि; अक्रुक्ष ३ त्, ताम्, न् । अक्रोशि । "स्वरेऽतः" ॥ ४।३।७५॥ इति सकोऽल्लुकि; अक्रुक्षाताम्, अक्रु ७ क्षन्त०; क्षध्वम्०; क्षामहि । चुक्रोश, चुक्रुशतुः; चुक्रोशिथ; चुक्रुशिम । चुक्रुशे । क्रुश्यात् । क्रुक्षीष्ट । क्रोष्टा २ । क्रोक्ष्यति, ते । चुक्रुक्षति । चोक्रुश्यते । चोक्रुशीति, चोक्रोष्टि, चोक्रुष्टः, चोक्रुशति । हौ, चोक्रुड्ढि ॥ ह्य० ॥ अचोक्रोट्, ड्, अचोक्रु ३ शीत्, ष्टाम्, शुः, अचोक्रोट्, ड्, अचोक्रु ६ शीः, ष्टम्, ष्ट, शम्, श्व, श्म । आक्रोशयति । आचुकुशत् । आक्रोशन् । क्रुश्यमानम्, क्रोक्ष्यमाणम् । आक्रुष्टः, २ वान् । क्रुष्टिः । क्रुष्ट्वा । आक्रुश्य । आक्रो २ ष्टा, ष्टुम् ॥ ३०३ ॥

कस गतौ । विकसति । कस्यते । अकासीत्; अकसीत्, अकासिष्टाम्, अकसिष्टाम् । अकासि, अकसिषाताम् । चकास, चकसतुः । चकसे । कस्यात् । कसिषीष्ट । कसिता २ । विचिकसिषति । "वञ्च-"॥४।१।५०॥ इति नीः; चनीकस्यते । चनीकसीति । णौ, निष्कासयति । निरचीकसत् । कसि ५ ता, त्वा, तुम्, तः, २ वान् । विकस्य ॥ ३०४ ॥

अथ द्वावनिटौ । रुहं जन्मनि । बीजजन्मनीत्यन्ये । रोहति । अकर्मका अप्युपसर्गसम्बन्धात्सकर्मका भवन्ति । वृक्षमारोहति । सं, प्र, अधि, अव, अभि पूर्वोऽप्येवम् । क्ये, रुह्यते । सकि, अरुक्ष २ त्, ताम् । अरोहि, अरुक्षाताम्, अरुक्षन्त । रुरोह, रुरुहतुः; रुरोहिथ; रुरुहिम । रुरुहे । रुह्यात् । रुक्षीष्ट । रोढा २ । रोक्ष्यति, ते । अरोक्ष्यत्, त । रुरुक्षति । रोरुह्यते । रोरोढि, रोरुहीति, रोरूढः, रोरुहति, रोरोक्षि, रोरुहीषि, रोरूढः, रोरूढ, रोरुहीमि, रोरोह्मि, रोरु २ ह्वः, ह्मः ॥ ह्यस्त० ॥ अरोरुहीत्, अरोरोट्, ड्, अरोरूढाम्, अरोरुहुः, अरोरुहीः, अरोरोट्, ड् । रोहयति, ते; रोपयति, ते वा वृक्षान् । आरोहयति, ते; आरोपयति, ते वा शकटे भारम् । "रुहः पः"॥४।२।१४॥ इति वा पः । अरूरुहत्, त; अरूरुपत्, त । कर्मकर्त्तरि, "अणिक्कर्म-"॥३।३।८८॥ इत्यात्मनेपदे, आरोहयते । ङे,

आरुरुहत। इटि, आरोहयिष्यते; ञिटि, आरोहिष्यते वा हस्ती स्वयमेव; एषु ण्यन्तात् "णिस्नु-" ॥३।४।९२॥ इति ञिचो "भूषार्थ-"॥३।४।९३॥ इति क्यस्य च निषेधात् ञिट् आत्मने च भवतः; आरोहन्। आरोक्ष्यन्। रुह्यमाणम्। रोक्ष्यमाणम्। रुरुह्वान्। रुरुहाणम्। रूढः, २ वान्। रूढिः। रूढ्वा। आरुह्य। रोढा। रोढुम्। रोढव्यम्। रोहणीयम् ॥ ३०५ ॥

रमिं क्रीडायाम्। रमते। "व्याङ्परे रमः"॥३।३।१०५॥ इति परस्मैपदे, विरमति; आरमति; परिरमति। "वोपात्"॥३।३।१०६॥ उपरमति, उपरमते वा सन्तापः। मैत्रं उपरमति, ते वा। अन्तर्भूतण्यर्थोऽयं सकर्मकः। रम्यते। "यमिरमि-"॥४।४।८६॥ इतीटि सेऽन्ते च; व्यरं ९ सीत्, सिष्टाम्, सिषुः, सीः, सिष्टम्, सिष्ट, सिषम्, सिष्व, सिष्म। अरंस्त, अरंसाताम्, अरंसत; अरंद्ध्वम्, अरंध्वम्। "मोऽकमि-" ॥४।३।५५॥ इति अनिषेधात् वृद्धिः; अरामि, अरंसाताम्। विरराम, विरेमतुः, विरेमुः, विरेमिथ, विररन्थ; विरेमिव। रेमे, रेमाते, रेमिरे, रेमिषे। विरम्यात्। रंसीष्ट। विरन्ता; रन्ता। विरंस्यति; रंस्यते। व्यरंस्यत्; अरंस्यत। विरिरंसति; रिरंसते। रंरम्यते। रंर २ मीति, न्ति। "यमिरमि-"॥४।२।५५॥ इति म्लुकि, रंरतः, रंरमति, रंरंसि, रंर ७ मीषि, थः, थ, मीमि, न्मि, न्वः, न्मः। हौ, रंरहि ॥ अद्य० ॥ अरंरंसीत्। रमयति। अरीरमत्। अरमि, अरामि, अरमयिषाताम्। सनि, रिरमयिषति। विरमन्। विरंस्यन्। रममाणः। रंस्यमानः। रम्यमाणम्। रंस्यमानम्। रेमाणः। रतः, २ वान्। विरतिः। रत्वा; एषु "यमि-"॥ ४।२।५५॥ इति म्लुक्। ऊदिदयमित्येके; तन्मते; रत्वा, रमित्वा। "वामः"॥ ४।२।५७॥ इति वाम्लुकि; विरत्य, विरम्य। रन्ता। रन्तुम्। रन्तव्यम् ॥३०६॥

षहि मर्षणे। क्षमायाम्। सहते; उत्सहते; संसहते। सहेत। सहताम्। असहत। सह्यते। असहिष्ट, असहिषाताम्। ध्वमि, "हान्त-"॥२।१।८१॥ इति वा ढः; असहि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्। असाहि। सेहे, सेहाते, सेहिरे, सेहिषे। सहिषीष्ट। सोढा। सहिष्यते। असहिष्यत। "असोङ-"॥२।३।४८॥ इति षत्वे, परिषहते; विषहते; निषहते। "स्तुस्वञ्जश्चाटि नवा"॥२।३।४९॥ पर्यषहत, पर्यसहत; व्यषहत, व्यसहत। न्यषहिष्ट, न्यसहिष्ट। षट्स्वपि असहिष्टेत्यर्थः। सनि षत्वा-

पक्षे, "णिस्तोरेव-"॥२।३।३७॥ इति नियमात्षत्वाभावे, सिसहिषते । सासह्यते । सासहीति । "साहिवहेः-"॥१।३।४३॥ इति ढ्लुक् ओच्च; सासो २ ढिः, ढः, सासहति, सासहीषि, सासक्षि, सासो २ ढः, ढ; सास ४ हीमि, ह्मि, ह्वः, ह्मः ॥ अद्य० ॥ "न श्वि-"॥४।३।४९॥ इति न वृद्धिः; असासहीत् । साहयति । "नाम्यन्तस्था-"॥२।३।१५॥ इति षत्वे, असीषहत्; पर्यसीषहत् । मा विषीसहः; अत्र "असोङ-"॥२।३।४८॥ इति वर्जनात्पूर्वस्य न षः; उत्तरस्य तु, "नाम्यन्त-"॥२।३।१५॥ इति स्यादेव । "णिस्तोरेव-"॥२।३।३७॥ इत्यत्र ण्यन्तस्यापि सहेर्वर्जनान्न षत्वम्; उत्सिसाहयिषति । सहमानः । सह्यमानम् । सेहानः । "दाश्वत्साह्वद्-"॥४।१।१५॥ इति निपातनात्परस्मैपदे क्वसौ; साह्वान्, साह्वांसौ । "सहलुभ-"॥४।४।४६॥ इति तादावशिति वेटि; सोढा, सहिता । सोढ्वा, सहित्वा । सोढुम्, सहितुम् । वेट्त्वात्, सोढः, २ वान् । "असोङ-"॥२।३।४८॥ इति सो वर्जनात्षत्वाभावे; परिसोढः; निसोढः । सोढव्यम्, सहितव्यम् । परिसोढव्यः; निसोढव्यः; विसोढव्यः । सह्यम् ॥ ३०७ ॥

इति ज्वलादिः ।

अथ यजादयो नव श्वि,वदवर्जा अनिटश्च ।

यजीं देवपूजासङ्गतिकरणदानेषु । यजति, ते । यजेत्, त । यजतु, ताम् । अयजत्, त । "यजादिवचेः-"॥४।१।७९॥ इति य्वृति; इज्यते । अयाक्षीत्, अयाष्टाम्, अयाक्षुः, अया ६ क्षीः, ष्टम, ष्ट, क्षम्, क्ष्व, क्ष्म । अयष्ट, अय ९ क्षाताम्, क्षत, ष्ठाः, क्षाथाम्, ड्ढ्वम्, ग्ड्ढ्वम्, क्षि, क्ष्वहि, क्ष्महि । अयाजि, अयक्षाताम्० । "यजादिवश-"॥४।१।७२॥ इति द्वित्वे कृते पूर्वस्य य्वृति, इयाज; "यजादिवचेः-"॥४।१।७९॥ इति य्वृति, पश्चात् द्वित्वे समानदीर्घत्वे च; ईजतुः, ईजुः, इयजिथ, इयष्ठ, ईजथुः, ईज, इयाज, इयज, ईजिव, ईजिम । ईजे, ईजाते, ईजिरे, ईजिषे, ईयाथे, ईजिध्वे, ईजे, ईजि २ वहे, महे । इज्यात् । यक्षीष्ट । यष्टा २ । यक्ष्यति, ते । अयक्ष्यत्, त । यियक्षति, ते । यायज्यते । याय १२ जीति,

ष्टि, ष्टः, जति, जीषि, क्षि, ष्ठः, ष्ठ, जीमि, ज्मि, ज्वः, ज्मः । याजयति । अयी-यजत । यजन् । यजमानः । यक्ष्यन् । यक्ष्यमाणः । इज्यमानम् । ईजिवान् । ईजानः । यष्टा । यष्टुम् । इष्टः, २ वान् । इष्ट्वा । यष्टव्यम् । यज्यम् । "त्यज्यज-"॥४।१।११८॥ इति गत्वाभावे; याज्यम् ॥ ३०८ ॥

वेंग् तन्तुसन्ताने । वयति, ते । वयेत्, त । वयतु, ताम् । अवयत्, त । क्ये, य्वृति "दीर्घश्च्वि-"॥४।३।१०८॥ इति दीर्घे; ऊयते । "यमिरमि-॥४।४।८६॥ इति सेऽन्ते, अवासीत्, अवा ८ सिष्टाम्, सिषुः, सीः सिष्टम्, सिष्ट, सिषम्, सिष्व, सिष्म । अवा १० स्त, साताम्, सत, स्थाः, साथाम्, ध्वम्, द्ध्वम्, सि, स्वहि, स्महि ॥ भाक ॥ अवायि, अवासाताम्; अवायि-षातामित्यादि । "वेर्वय्"॥४।४।१९॥ इति वा वय् । पक्षे वे इति धातुरेव । वय् इत्यस्य; विति परोक्षायां; "यजादिवश्-"॥४।१।७२॥ इति पूर्वस्य य्वृति; उवाय । "न वयोय्"॥४।१।७३॥ इति यं निषिध्य, "यजादिवचेः-"॥४।१।७९॥ इति वस्य य्वृति, ततो द्वित्वे; ऊयतुः, ऊयुः । थवीव वयादेशस्य तृच्यभावात्; "सृजि-"॥४।४।७८॥॥ इत्यप्राप्तेः; "स्क्रसृ-"॥४।४।८१॥ इति नित्यमिटि, उव-यिथ, ऊयथुः, ऊय, उवाय, उवय, ऊयिव, ऊयिम । ऊये, ऊयाते; ऊयिढ्वे, ध्वे । वे इत्यस्य तु, "वेरयः"॥४।१।७४॥ इति न य्वृत् । ववौ, ववतुः ववुः; "सृजि-दृशि-"॥४।४।७८॥ इति वा नेटि, वविथ, ववाथ, ववथुः, वव, ववौ, वविव, वविम । ववे, ववाते, वविरे, वविषे । वे इत्यस्यैव च; "अविति वा"॥४।१।७५॥ इति वा य्वृति द्वित्वे, "वार्णात्प्राकृतं बलीयः" इति पूर्वमुवादेशे, समानदीर्घे च; ऊवतुः; अत्र "य्वृत्सकृत्"॥४।१।१०२॥ इति न्यायात्पश्चाद्वकारस्य न य्वृत्, ऊवुः, ऊवथुः, ऊव, ऊविव, ऊविम । ऊवे, ऊवाते इत्यादि । ऊयात् । वासीष्ट; वायिषीष्ट । वाता २; वायिता । वास्यति, ते; वायिष्यते । अवास्यत्, त; अवायिष्यत । विवासति । वावायते । वावेति, वावाति, वावीतः, वावति । णौ, "पाशाच्छा-"॥४।२।२०॥ इति ये; वाययति । अवीवयत् । वाययिष्यति । वयन् । वयमानः । वास्यन् । वास्यमानः । ऊयमानम् । ऊयिवान् । वविवान् । ऊविवान् । ऊयानः । ववानः । ऊवानः । ऊतः, २ वान् । "दीर्घमवो-"॥

४।१।१०३॥ इत्यत्र वा वर्जनान्न दीर्घः; उत्वा । "ज्यश्च यपि"॥४।१।७६॥ न य्वृत्; प्रवाय; उपवाय । वाता । वातुम् । वेयम् ॥ ३०९ ॥

व्येंग् संवरणे । आच्छादने । संव्ययति, ते । "यजादिवचेः-"॥४।१।७९॥ इति य्वृति, दीर्घे च; संवीयते । समव्यासीत्, समव्यासिष्टाम्, समव्यासिषुः । समव्यास्त, समव्यासाताम् । समव्यायि, समव्यासाताम्; समव्यायिषाताम्० । "व्यस्थव्णवि"॥४।२।३॥ इति न आः । द्वित्वे, "यजादिवश्-"॥४।१।७२॥ इति य्वृद्बाधनार्थं "जाव्ये-"॥४।१।७१॥ इति इकारस्यापि इः; अयादेशे उपान्त्यवृद्धिश्च; संविव्याय । "यजादिवचेः-"॥४।१।७९॥ इति य्वृति, "योऽनेकस्वरस्य"॥२।१।५६॥ इति यत्वे च; संविव्यतुः, संविव्युः । "ऋवृ-"॥४।४।८०॥ इतीटि; संविव्ययिथ, संविव्यथुः, संवि ५ व्य, व्याय, व्यय, वियिव, वियिम । संविव्ये, संविव्याते; संविव्यिषे । संवीयात् । व्यासीष्ट; व्यायिषीष्ट । व्याता २; व्यायिता । व्यास्यति, ते; व्यायिष्यते । अव्यास्यत्, त; अव्यायिष्यत । सम्विव्यासति । "व्येस्यमो-"॥४।१।८५॥ इति य्वृति; सम्वेवीयते । सम्वेवयीति, सम्वे ३ वेति, वीतः, व्यति । "पाशा-"॥४।२।२०॥ इति ये, सम्व्याययति । समविव्ययत् । सम्व्ययन् । व्यास्यन् । सम्व्ययमानः । व्यास्यमानः सम्वीयमानम् । सम्विवीवान् । सम्विव्यानः । वीतः, २ वान् । वीत्वा । " व्यः " ॥४।१।७७॥ इति न य्वृत्, उपव्याय । "सम्परेर्वा"॥४।१।७८॥ सम्व्याय; सम्वीय । सम्व्या ४ ता, तुम्, तव्यम्, नीयम् । सम्व्येयम् ॥ ३१० ॥

ह्वेंग् स्पर्द्धाशब्दयोः । आह्वयति, ते । "ह्वः स्पर्द्धे"॥३।३।५६॥ इत्यात्मनेपदे; मल्लो मल्लमाह्वयते । "सान्निवेः"॥३।३।५७॥ संह्वयते; निह्वयते; विह्वयते । "उपात्" ॥३।३।५८॥ उपह्वयते । क्ये, "यजादिवचेः-"॥४।१।७९॥ इति य्वृति, आहूयते । "ह्वालिप्-"॥३।४।६२॥ इत्यङि; आह्व ३ त्, ताम्, न् । " वाऽत्मने "॥३।४।६३॥ आह्वत । आह्वास्त । आह्वायि, आह्वासाताम्, आह्वायिषाताम् ॥ "द्वित्वे ह्वः" ॥४।१।८७॥ इति य्वृति; जुहाव, जुहुवतुः, जुहुवुः । "सृजिदृशि-"॥४।४।७८॥ इति वा नेटि; जुहोथ, जुहविथ, जुहुवथुः, जुहुव, जुहाव, जुहव, जुहुविव, जुहुविम । जुहुवे, जुहुवाते० । आहूयात् । ह्वासीष्ट; ह्वायिषीष्ट ।

ह्वाता २; ह्वायिता। ह्वास्यति, ते; ह्वायिष्यते। आह्वास्यत्, त; आह्वायिष्यत। जुहूषति, ते। जोहूयते। आजो १२ हवीति, होति, हूतः, हुवति, हवीषि, होषि, हूथः, हूथ, हवीमि, होमि, हूवः, हूमः॥ ह्य०॥ आजो ६ होत्, हवीत्, हूताम्, हवुः, होः, हवीः॥ अद्य०॥ "ह्वालिप्-"॥३।४।६२॥ इत्यत्र प्रकृतिग्रहणादङि; आजोहुवत्॥ परोक्षा॥ आजोहवाञ्चकारेत्यादि। "पाशा-"॥४।२।२०॥ इति ये, आह्वाययति। क्ये, आह्वाय्यते। "णौ ङसनि"॥४।१।८८॥ इति णिविषयेऽपि य्वृति, "भ्राजभास-"॥४।२।३६॥ इति वा ह्रस्वे; आजुहावत्, आजूहवत्। आह्वाय्य। आजुहावयिषति। आह्वयन्। आह्वास्यन्। आह्वयमानः। ह्वास्यमानः। आहूयमानम्। आह्वास्यमानम्। जुहूवान्। जुहुवानः। आहूतः, २ वान्। आहूतिः। हूत्वा। आहूय। आह्वा ४ ता, तुम्, नीयम्, तव्यम्। आह्वेयम्॥ ३११॥

टुवपीं बीजसन्ताने। बीजानां क्षेत्रे विस्तारणे। वपति, ते। "नेर्ङ्गादा-"॥२।३।७९॥ इति णत्वे, प्रणिवपते। वपेत्, त। वपतु, ताम्। अवपत्, त। "यजादिवचेः-"॥४।१।७९॥ इति य्वृति; उप्यते। उप्येत। उप्यताम्। औप्यत। "व्यञ्जनानामनिटि"॥४।३।४५॥ इति वृद्धौ, अवाप्सीत्, अवा ८ प्ताम्, प्सुः, प्सीः, प्तम्, प्त, प्सम्, प्स्व, प्स्म। अवप्त, अव ९ प्साताम्, प्सत, प्थाः, प्साथाम्, ब्ध्वम्, ब्द्ध्वम्, प्सि०। अत्रापि, अवप्साताम्। "यजादिवश्-"॥४।१।७२॥ इति य्वृति, उवाप। "यजादिवचेः-"॥४।१।७९॥ इति य्वृति पश्चाद्द्वित्वे च; ऊपतुः, ऊपुः, उवपिथ, उवप्थ, ऊपथुः, ऊप, उवाप, उवप, ऊपिव, ऊपिम। ऊपे, ऊपाते, ऊपिरे, ऊपिषे। उप्यात्। वप्सीष्ट। वप्ता २। वप्स्यति, ते। अवप्स्यत्, त। विवप्सति, ते। वावप्यते। वाव १२ पीति, प्ति०॥ वापयति। अवीवपत्। विवापयिषति। वपन्। वप्स्यन्। वपमानः। वप्स्यमानः। उप्यमानम्। ऊपिवान्। ऊपानः। उप्तः, २ वान्। उप्तिः। उप्त्वा। वप्ता। वप्तुम्। वप्तव्यम्। वाप्यम्॥ ३१२॥

वहीं प्रापणे। भारं वहति, ते। सकर्मापि धातुरर्थान्तरे वर्त्तनादकर्मा भवति। यथाऽत्र नदी वहति, स्रवतीत्यर्थः। एवमन्यत्रापि। उद्वहति, ते।

निः, प्र, परि, सम्, आङ्, पूर्वोऽपि वाच्यः । "नेर्ङ्गदा-"॥२।३।७९॥ इति णिः, प्रणिवहति । "प्राद्वहः"॥३।३।१०३॥ "परेर्मृषश्च"॥३।३।१०४॥ इति फलवत्यपि परस्मैपदे; प्रवहति, परिवहति । उह्यते । वहेत्, त । उह्येत । वहतु, ताम् । उह्यताम् । अवहत्, त । औह्यत । अवाक्षीत् । पूर्वं वृद्धौ, एकदेशेति न्याया-द्धहेरोत्वे; अवोढाम्, अवाक्षुः, अवाक्षीः, अवोढम्, अवोढ, अवा ३ क्षम्, क्ष्व, क्ष्म । अवोढ, अवक्षाताम्, अवक्षत, अवोढाः, अवक्षाथाम्, अवोढ्वम् । अत्र "सोधि-"॥४।३।७२॥ इति वा सिच्लुकि, "हो धुट्-"॥२।१।८२॥ इति हो ढे; "तवर्गस्य-"॥१।३।६०॥ इति धो ढे; "सहिवहेः-"॥१।३।४३॥ इति ढ्लुक् ओच्च । पक्षे सिजलुकि, "हो-"॥२।१।८२॥ इति ढे; "षढोः-"॥२।१।६२॥ इति के, "नाम्यन्त-"॥२।३।१५॥ इति षे, "तृतीयस्तृ-"॥१।३।४९॥ इति डे, गे च; "तवर्ग-"॥१।३।६०॥ इति धो ढे च; अवग्ड्ढ्वम्; अव ३ क्षि, क्ष्वहि, क्ष्महि । अवाहि, अवक्षाताम्० ॥ वपींवत् य्वृति । उवाह, ऊहतुः, ऊहुः, "सृजि-"॥४।४।७८॥ इति वेटि, उवहिथ, उवोढ, ऊहथुः, ऊह, उवाह, उवह, ऊहिव, ऊहिम । ऊहे, ऊहाते, ऊहिरे, ऊहिषे; ऊहि २ ध्वे, ढ्वे । उह्यात् । वक्षीष्ट । वोढा, २ । वक्ष्यति, ते । अवक्ष्यत्, त । विवक्षति, ते । वावह्यते । वावहीति, वावोढि, वावोढः, वावहति, वाव २ क्षि, हीषि, वावो २ ढः, ढ, वाव ४ ह्मि, हीमि, ह्वः, ह्मः । "यजादि-"॥४।१।७९॥ इति गणनिर्देशान्न य्वृति, क्ये, वावह्यते । वावह्यात् । वावो २ ढु, ढाम्; वावहतु, वावोढि । अवाव ३ ट्, ड्, हीत् ॥ अद्य० ॥ "न श्वि-"॥४।३।४९॥ इति न वृद्धौ, अवावहीत् । शेषं पचिवत् । वाहयति वाहम् । अवीवहत् । वहन् । वक्ष्यन् । वहमानः । वक्ष्यमाणः । उह्यमानम् । ऊहिवान् । ऊहानः । ऊढः, २ वान् । ऊढिः । ऊढ्वा । समुह्य । वोढा । वोढुम् । वोढव्यम् । वह्यम् । वाह्यम् ॥ ३१३ ॥

ट्वोश्वि गतिवृद्ध्योः । श्वयति । श्वयेत् । श्वयतु । अश्वयत् । क्ये, "यजादि-वचेः-"॥४।१।७९॥ इति य्वृति, शूयते । शूयेत । शूयताम् । अशूयत ॥ अद्य० ॥ अङ्ङसिचोऽत्र भवन्ति । "ऋदिच्छ्वि-"॥३।४।६५॥ इति वा अङि, "श्वयत्यसू-"॥

४।३।१०३॥ इति श्वादेशे; अश्वत्, अश्व २ ताम्, न्, अश्वः, अश्व २ तम्, त, अश्वम्, अश्वा २ व, म । "ट्वेश्वेर्वा" ॥३।४।५९॥ इति वा ङे, अशिश्वि ९ यत्, यताम्, यन्, यः, यतम्, यत, यम्, याव, याम । पक्षे सिचि, "न श्वि-"॥ ४।३।४९॥ इति वृद्धिनिषेधाद्गुणे; अश्वयीत्, अश्व ८ यिष्टाम्, यिषुः, यीः, यिष्टम्, यिष्ट, यिषम्, यिष्व, यिष्म ॥ भाक ॥ अश्वायि । जिटिटोः, अश्वायिषाताम्, अश्वयिषातामित्यादि । "वा परोक्षायङि" ॥४।१।९०॥ इति वा य्वृति; शुशाव, शिश्वाय, शुशुवतुः, शिश्वियतुः, शुशुवुः, शिश्वियुः, शुशविथ, शिश्वयिथ; शुशुविम, शिश्वियिम । शुशुवे, शिश्वियेः । शूयात् । श्वयिषीष्ट; श्वायिषीष्ट । श्वयिता २; श्वायिता । श्वयिष्यति, ते; श्वायिष्यते । शिश्वयिषति । शोशूयते, शेश्वीयते । लुपि, शोशवीति, शोशोति; शेश्वयीति, शेश्वेति । "दीर्घमवो-"॥ ४।१।१०३॥ इति दीर्घे, शोशूतः, शेश्वितः । शोशुवति, शेश्वियति । अग्रतस्तु य्वृति दीर्घे शूरूपं श्विरूपञ्च यङ्लुबन्तभूजिस्थानोक्तपूङ्श्रिवद्वक्तव्ये । अद्यतन्यां तु, "श्वयत्यसू-"॥४।३।१०३॥ इत्यत्र तिव्निर्देशाद्यङ्लुपि न श्वः । अङ् तु, "ऋदिच्छ्वि-" ॥३।४।६५॥ इत्यत्र प्रकृतिग्रहणाद्वा स्यादेव । अशोशुवत्, अशेश्वियत् । पक्षे "ट्वे-श्वेर्वा"॥३।४।५९॥ इति वा ङे, अशोशुवत्; अशेश्वियत् । तत्पक्षे सिचि, अशो-शवीत्, अशेश्वयीत्; अत्र "न श्वि-"॥४।३।४९॥ इति यङ्लुप्यपि न वृद्धिः । श्वाय-यति । श्वाय्यते । णौ ङसन्परे; "श्वेर्वा"॥४।१।८९॥ इति वा य्वृति; अशूशवत्, अत्र विषयविज्ञानात्प्राग् य्वृति पश्चाद् वृद्धौ, आवादेशे उपान्त्यह्रस्वे णिकृतस्य स्थानित्वेन शुद्वित्वे प्राग्दीर्घः । य्वृदभावे श्विद्वित्वे तु; अशिश्वयत् । शुशावयि-षति; शिश्वावयिषति । श्वयन् । श्वायिष्यन् । शूयमानम् । श्वयिष्यमाणम् । शि-श्विवान्, शुशूवान् । शिश्वियानम्, शुशुवानम् । ओदित्त्वात् "सूयत्यादि-"॥४। २।७०॥ इति नः; "डीयश्वि-"॥४।४।६१॥ इति नेट्; शूनः, २ वान् । शूतिः । "क्त्वा"॥४।३।२९॥ इति क्त्वा न कित्; श्वयित्वा । प्रशूय । श्वयि ३ ता, तुम्, तव्यम् । श्वेयम् ॥ ३१४ ॥

वद व्यक्तायां वाचि । वदति । "दीप्तिज्ञान-"॥३।३।७८॥ इत्यात्मनेपदे; वदते विद्वान् स्याद्वादे । वदन्; दीप्यत इत्यर्थः । "व्यक्तवाचां सहोक्तौ"॥३।३।७९॥

सम्प्रवदन्ते द्विजाः । "विवादे वा"॥३।३।८०॥ विप्रवदन्ते, ति वा मौहूर्त्तिकाः । "अनोः कर्मण्यसति"॥३।३।८१॥ अनुवदते कठः कलापस्य । "वदोऽपात्"॥३।३।९७॥ फलवति; एकान्तमपवदते । अन्यत्र तु, अपवदति । "यजादिवचेः-"॥४।१।७९॥ इति य्वृति क्ये; उद्यते । वदेत् । उद्येत । वदतु । वदताम् । उद्यताम् ॥ ह्य० ॥ अवदत् । अवदत । औद्यत ॥ अद्य० ॥ "वदव्रज-"॥४।३।४८॥ इति वृद्धौ; अवादीत्, अवादिष्टाम् । आत्मने, अवदिष्ट । अवादि, अवदिषाताम्०; अवदि २ ध्वम्, ड्ढ्वम्, अवदिषि । उवाद, "क्रियाव्यतिहार-"॥३।३।२३॥ इति परस्मैपदे; व्यत्युवाद, ऊदतुः, ऊदुः; "स्क्रसृ-"॥४।४।८१॥ इतीटि, उवदिथ; ऊदिम । ऊदे, ऊदाते, ऊदिरे, ऊदिषे । उद्यात् । वदिषीष्ट । वदिता २ । वदिष्यति, ते । अवदिष्यत्, त । विवादिषति । वावद्यते । वाव १२ दीति, त्ति, त्तः, दति, दीषि, त्सि, त्थः, त्थ, दीमि, द्मि, द्वः, द्मः । णौ, "अणिगि प्राणि-"॥३।३।१०७॥ इत्यप्राप्तेऽपि; "परिमुह-"॥३।३।९४॥ इत्यात्मनेपदे; वदति चैत्रः, वादयते चैत्रं मैत्रः; "गतिबोध-"॥२।२।५॥ इत्यणिक्कर्तुः कर्मत्वम् । फलवतोऽन्यत्र तु परस्मै, वादयति चैत्रं मैत्रः । विसंवादयति । अवीवदत् । णिगन्तात्णिगि; वदति वीणा, तां परिवादकः प्रायुङ्क्त, तमप्यन्यः अवीवदत् वीणां परिवादकेन । यद्यप्यत्र णौ णेर्लोपोऽभूत्तथाऽपि न समानलोपः; यतो णाविति जात्या एकवचनम् । ततश्च यः कश्चित् णिग् सर्वोऽपि निमित्ततयोपात्तः, अतः स लुप्तोऽपि निमित्त एव । एवमपीपठदित्यादावपि । विवादयिषति, ते । वदन् । वदिष्यन् । सम्प्रवदमानः । उद्यमानम् । वदिष्यमाणम् । ऊदिवान् । ऊदानम् । उदितः, २ वान् । उदितिः । उदित्वा । अनूद्य । वदि ३ ता, तुम्, तव्यम् । वाद्यम् ॥ ३१५ ॥

वसं निवासे । वसति; निवसति । "उपान्वध्याङ्वसः"॥२।२।२१॥ इत्याधारस्य कर्मत्वे; ग्राममुपवसति । अनु, अधि, आङ् पूर्वोऽप्येवम् । एषूपादयो वासार्थः त्रिरात्रमुपवसति; अत्र भोजननिवृत्त्यर्थस्योपस्याधारस्त्रिरात्रं कर्म । क्ये य्वृति; "घस्वसः"॥२।३।३६॥ इति षत्वे; उष्यते । "सस्तः सि"॥४।३।९२॥ इति तः; अवात्सीत् । विषयसप्तमीविज्ञानात्सिजुत्पत्तेः प्रागेव सस्य तत्वे सिचो लुकि स्थानिलेन

वृद्धौ च; अवात्ताम्। "धुट्ह्रस्व-"॥४।३।७०॥ इत्यत्र हि लुबधिकारे लुग्ग्रहणं सिज्-लुक्यपि स्थानित्वेन तत्कार्यप्रतिपत्त्यर्थम्; तेनात्र वृद्धिः सिजभावेऽपि सिद्धा । अवात्सुः, अवा ६ त्सीः, त्तम्, त्त, त्सम्, त्स्व, त्स्म । अवात्सि, अवत्साताम्, अवत्सत, अवत्थाः, अवत्साथाम्, अवद्ध्वम्, अवद्ध्वम्, अव ३ त्सि, त्स्वहि, त्स्महि । "यजादिवश्-"॥४।१।७२॥ इति पूर्वस्य य्वृति; उवास, "यजादिवचेः-"॥४।१।७९॥ इति य्वृति, "घस्वसः"॥२।३।३६॥ इति षत्वे; ऊषतुः, ऊषुः, "सृजिदृशि-"॥४।४।७८॥ इति वा नेटि; उवस्थ, उवसिथ; ऊषथुः, ऊष, उवास, उवस, ऊषिव, ऊषिम । ऊषे, ऊषाते; ऊषिध्वे । उष्यात् । वत्सीष्ट । वस्ता २ । वत्स्यति, ते । अवत्स्यत्, त । विवत्सति । वावस्यते । वाव ४ सीति, स्ति, स्तः, सति । वावसि ३ त्वा, तः, २ वान् । अत्र गणानिर्देशाद् "यजादिवचेः-"॥४।१।७९॥ इति न य्वृत् । यङ्लुपि क्त्वादौ नास्येडित्यन्ये । वाव ३ स्त्वा, स्तः, २ वान् । णिगि, निवासयति; उद्वासयति; प्रवासयति । फलवति तु, "अणिगि प्राणि-"॥३।३।१०७॥ इति परस्मैपदप्राप्तावपि; "परिमुह-"॥३।३।९४॥ इत्यात्मनेपदे, वासयते चैत्रं मैत्रः; "गतिबोध-"॥२।२।५॥ इत्यणिक्कर्तुः कर्मता । अवीवसत्, त । विवासयिषति, ते । वसन् । वत्स्यन् । उष्यमाणम् । वत्स्यमाणम् । "घसेक-"॥४।४।८२॥ इतीटि, अनूषिवान् गुरुं शिष्यः । अध्यूषिवान्; बहुलाधिकारात्कानोऽस्मान्न भवति । "क्षुधवस-"॥४।४।४३॥ इतीटि, उषितः, २ वान् । उषित्वा । उपोष्य । वस्ता । वस्तुम् । वास्यम् ॥३१६॥

इति यजादिः ।

अथ घटादिः ।

घटिष् चेष्टायाम्। ईहायाम्। घटते । घटेत । घटताम् । अघटत । घट्यते । अघटिष्ट, अघटिषाताम् ॥ भाक ॥ अघाटि । जघटे, जघटाते, जघटिरे । घटि-३ षीष्ट, ता, ष्यते । अघटिष्यत । जिघटिषते । जाघट्यते । जाघ ४ टीति, ट्टि, ट्टः, टति । णौ, "घटादेर्ह्रस्व-"॥४।२।२४॥ इति ह्रस्वे, घटयति । अजीघटत् ॥ भाक ॥ दीर्घस्तु वा ञिणम्परे ञिचि; अघाटि, अघटि । ञिटि; अघाटि-

षातां, अघटिषाताम् । इटि तु, अघटयिषाताम । एवं घाटिष्यते, घटिष्यते; घटयिष्यते । घाटं घाटम्; घटं घटम् । घटादीनां पठितार्थेष्वेव घटादिकार्यविज्ञानम् । तेनार्थान्तरे तु, उद्घाटयति; प्रविघाटयति; उद्घाटितः कपाट इत्यादौ ह्रस्वो न भवति । विघटयतीति तु, अजन्तस्यादन्तस्य वा; "णिज् बहुलं नाम्नः" ॥३।४।४२॥ इति करोत्यर्थे णिचि रूपम् । घटमानः । घटिष्यमाणः । घट्यमानम् । जघटानः । घटितम् । घटित्वा । विघट्य । घटि २ ता, तुम् । घाट्यम् ॥३१७॥

व्यथिष् भयचलनयोः । दुःखेऽप्यन्ये । व्यथते । व्यथ्यते । अव्यथिष्ट, अव्यथिषाताम्० ॥ अव्याथि । "ज्याव्येव्यधि-"॥४।१।७१॥ इति पूर्वस्येत्वे; विव्यथे, विव्यथाते; विव्यथिषे । व्यथिषीष्ट । व्यथिता । व्यथिष्यते । अव्यथिष्यत । विव्यथिषते । वाव्यथ्यते । वाव्य २ थीति, त्ति । व्यथयति । अविव्यथत् । अव्याथि, अव्यथि । व्यथमानः । विव्यथानः । व्यथि ५ ता, त्वा, तुम्, तः, २ वान् ॥ ३१८ ॥

प्रथिष् प्रख्याने; प्रसिद्धौ । प्रथते । प्रथ्यते । अप्रथिष्ट, अप्रथिषाताम्, अप्रथिषत० । अप्राथि । पप्रथे, पप्रथाते, पप्रथिरे, पप्रथिषे । प्रथि ३ षीष्ट, ता, ष्यते । अप्रथिष्यत । पिप्रथिषते । पाप्रथ्यते । णौ, प्रथयति । ङे, "स्मृदृत्वर-" ॥४।१।६५॥ इति पूर्वस्य अः, अपप्रथत् । अप्राथि, अप्रथि । प्राथम् २, प्रथम् २। प्रथमानः । प्रथिष्यमाणः । प्रथ्यमानम् । पप्रथानः । प्रथितः, २ वान् । प्रथि ३ ता, त्वा, तुम् ॥ ३१९ ॥

क्रदुङ् वैक्लव्ये । विक्लवः कातरस्तस्य भावः कर्म वा वैक्लव्यम् । नेऽन्ते; आक्रन्दते । क्रन्द्यते । अक्रन्दिष्ट, अक्रन्दिषाताम् । अक्रन्दि । चक्रन्दे, चक्रन्दाते । क्रन्दि ३ षीष्ट, ता, ष्यते । चिक्रन्दिषते । चाक्रन्द्यते । चाक्र ४ न्दीति, न्ति, न्तः, न्दति । क्रन्दयति । अचक्रन्दत् । ञिणम्परे तु वा दीर्घः; अक्रान्दि, अक्रन्दि । क्रान्दम् २; क्रन्दम् २ । क्रन्दि ४ ता, तुम्, त्वा, तः ॥ ३२० ॥

ञित्वरिष् सम्भ्रमे; सम्भ्रमोऽत्राशुकारिता । त्वरते । त्वरेत । त्वरताम् । अत्वरत । त्वर्यते । अत्वरिष्ट, अत्वरिषाताम्० । अत्वारि, अत्वरिषाताम्० । तत्वरे,

तत्वराते, तत्वरिरे, तत्वरिषे० । त्वरि ३ षीष्ट, ता, ष्यते । अत्वरिष्यत । तित्वरिषते । तात्वर्यते । तात्वरीति; "मव्य-"॥४।१।१०९॥ इति वस्योपान्त्येन सहोटि, तातूर्त्ति, तातूर्त्तः, तात्वरति, तात्वरीषि, तातूर्षि, तातूर्थः, तातूर्थ, तात्वरीमि, तातूर्मि, वस्य वाऽनुनासिकत्वे; तातूर्वः, तात्वर्वः, तातूर्मः । णौ, त्वरयति । "स्मृदृत्वर-"॥४।१।६५॥ इति पूर्वस्यात्वे, अतत्वरत् । अत्वारि, अत्वरि । त्वारम् २; त्वरम् २ । त्वरमाणः । त्वरिष्यमाणः । त्वर्यमाणम् । तत्वराणः । ञीत्त्वात्, "ज्ञानेच्छा-"॥५।२।९२॥ इति सति क्ते, "श्वसजप-"॥४।४।७५॥ इति वा नेटि, "रदा-" ॥४।२।६९॥ इति तो नत्वे, "मव्यवि-"॥४।१।१०९॥ इति सस्वरस्य वस्योटि च; तूर्णः, २ वान् । त्वरितः, २ वान् । त्वरि ३ त्वा, ता, तुम् ॥ ३२१ ॥

स्मृं आध्याने; उत्कण्ठायाम् । स्मरति । णौ घटादित्वात् ह्रस्वे, स्मरयति । आध्यानादन्यत्र, चित्तं स्मारयति; विस्मारयति । उक्तस्याप्याधाने घटादिकार्यार्थमिह पाठः ॥ ३२२ ॥

दॄ भये । दरति । दीर्यते । णौ घटादित्वाद् ह्रस्वे; दरयति बालम् । भयादन्यत्र, काष्ठं दारयति । शेषं दॄश् विदारणे इत्यस्येव ॥ ३२३ ॥

लगे सङ्गे । लगति; विलगति । लग्यते । एदित्वात् "न श्वि-"॥४।३।४९॥ इति न वृद्धिः; अलगीत्, अलगिष्टाम् । अलागि । ललाग, लेगतुः । लेगे । लग्यात् । लगिषीष्ट । लगि, २ ता, ष्यति । लिलगिषति । लालग्यते । लुपि तु पचिवत् । णौ, लगयति । अलीलगत् । अलागि, अलगि । लागम् २; लगम् २ । लगन् । लगिष्यन् । विलेगिवान् । लेगानम् । "क्षुब्ध-"॥४।४।७०॥ इति निपातनात्; लग्नः सक्तः । लगितोऽन्यः । लगि ३ ता, त्वा, तुम् ॥ ३२४ ॥

ष्ठगे, स्थगे संवरणे; आच्छादने । ष्ठगे । स्थगति । स्थग्यते । एदित्त्वात्, "न श्वि-"॥४।३।४९॥ इति न वृद्धिः; अस्थगीत्, अस्थगिष्टाम् । अस्थागि । तस्थाग, तस्थगतुः । तस्थगे । स्थग्यात् । स्थगिता । णौ, स्थगयति । षोपदेशत्वात्षत्वे, अतिष्ठगत् । तिष्ठगयिषति । स्थगे । स्थगति । अस्थगीत् । तस्थाग । स्थगयति । षत्वाभावे, अतिस्थगत् । तिस्थगयिषति । यङ्तल्लुपोः पचिवत् ॥ ३२५ ॥ ३२६ ॥

णट नतौ । नटति । णौ, नटयति शाखाम् । नृत्तौ तु, नाटयति ॥३२७॥

मदैं हर्षग्लपनयोः । णौ, मदयति गुरुं शिष्यः; हर्षयतीत्यर्थः । विमदयति शत्रुम्; ग्लपयतीत्यर्थः । अन्यत्र तून्मादयति; प्रमादयति । मदैच् हर्ष इत्ययमनयोरर्थयोर्घटादिकार्यार्थमिह पठितः ॥ ३२८ ॥

ध्वन शब्दे । णौ, ध्वनयति । शब्दादन्यत्र तु, ध्वानयति । शेषं प्रागूपठितवत् ॥ ३२९ ॥

चल कम्पने । णौ, चलयति । कम्पादन्यत्र, चालयति । शेषं ज्वलादिपठितचलवत् ॥ ३३० ॥

ह्वल चलने । ह्वलति । ह्वलिता । णौ ह्रस्वे; विह्वलयति ॥ ३३१ ॥

ज्वल दीप्तौ च; चाच्चलने । प्रज्वलयति; संज्वलयति । "ज्वलह्वल-"॥४।२।३२॥ इत्यनुपसर्गस्य वा ह्रस्वे; ज्वलयति, ज्वालयति । चलज्वलौ ज्वलादौ पठितावप्येतौ घटादिकार्यार्थमिहाधीतौ । केचित्तु दलि, वलि, स्खलि, क्षपि, त्रपीणामपि घटादित्वमिच्छन्ति । तन्मते, दलयति; वलयति; स्खलयति; क्षपयति; त्रपयतीत्यपि भवति ॥ ३३२ ॥

इति घटादयः ।

इति तपाचार्यश्रीदेवसुन्दरसूरिशिष्यश्रीगुणरत्नसूरिविरचिते क्रियारत्नसमुच्चये भ्वादिगणः ।

अथादादिगणः ।

तत्रादौ १७ अनिटः । अदं, प्सांक् भक्षणे । "कर्त्तर्यनद्भ्यः-"॥३।४।७१॥ इत्यदादिवर्जनाच्छवभावे; अत्ति, अत्तः, अदन्ति, अत्सि, अत्थः, अत्थ, अद्मि, अद्वः, अद्मः । "क्रियाव्यतिहार-"॥३।३।२३॥ इत्यात्मनेपदे; व्यत्यत्ते, व्यत्यदाते ॥ भाक ॥ अद्यते, अद्येते० । अद्यात् । व्यत्यदीत । क्ये, अद्येत । अत्तु, अत्ताम्, अदन्तु, अद्धि, अत्तम्, अत्त, अदानि० । व्यत्यत्ताम्० । क्ये,

अद्यताम्० । "अदश्चाट्"॥४।४।९०॥ इति दिस्योरादिरट्; आदत्, आत्ताम्, आदन्, आदः आत्तम्० । व्यत्यात्त । क्ये ॥ आद्यत० ॥ "घस्लृसन्-"॥४।४।१७॥ इति घस्लादेशे, लृदित्त्वादङि; अघस ३ त्, ताम्, न् । व्यत्यघत्त, व्यत्यघत्साताम् ॥ भाक ॥ अघासि, अघत्साताम्, अघत्सत, अघत्थाः, अघत्साथाम्, "सो धि-"॥४।३।७२॥ इति वा सिच्लुकि, अघद्ध्वम्, अघद्द्ध्वम्, अघत्सि, अघत्स्वहि, अघत्स्महि । "परोक्षायां नवा"॥४।४।१८॥ घस्लृ; जघास, "गमहन-"॥४।२।४४॥ इत्युपान्त्यलुकि, "अघोषे-"॥१।३।५०॥ इति घके; "नाम्यन्त-"॥२।३।१५॥ इति षत्वे, जक्षतुः, जक्षुः । थवीव घसादेशस्य तृच्यभावात् "सृजि-"॥४।४।७८॥ इत्यप्राप्तौ नित्यम् । "स्क्रसृ-"॥४।४।८१॥ इतीटि, जघसिथ, जक्षथुः, जक्ष, जघास, जघस, जक्षिव, जक्षिम। जक्षे, जक्षाते०; जक्षिमहे। पक्षे, आद, आदतुः, आदुः, "ऋवृ-"॥४।४।८०॥ इतीटि, आदिथ, आदथुः, आद, आद, आदिव, आदिम । आदे, आदाते, आदिरे, आदिषे० । अद्यात् । अत्सीष्ट । अत्ता, २। अत्स्यति, ते । आत्स्यत्, त । जिघत्सति । णौ, "गतिबोध-"॥२।२।५॥ इत्यत्र वर्जनादणिक्कर्तुः कर्मत्त्वाभावे; आदयते पिण्डीं चैत्रेण; अत्र "चल्याहार-"॥३।३।१०८॥ इति परस्मैपदप्राप्तावपि, "परिमुह-"॥३।३।९४॥ इत्यात्मनेपदम् । क्ये, आद्यते । आदिदत् । अदन् । अदती । अत्स्यन् । अत्स्यन्ती, अत्स्यती । अद्यमानम् । अत्स्यमानम् । जक्षिवान् । आदिवान् । जक्षाणम् । आदानम् । "यपि चाद-"॥४।४।१६॥ इति जग्धादेशे; जग्धः, २ वान् । "धुटो धुटि-"॥१।३।४८॥ इति धलुकि तु, जग्धः, २ वान् । जग्धिः । जग्ध्वा । प्रजग्ध्य । एकपदाश्रयत्वेनान्तरङ्गत्वाद्यबादेशात् प्रागेव जग्धादेशे सिद्धेऽपि, "यपि चाद-"॥४।४।१६॥ इत्यत्र यब्ग्रहणं तादौ क्त्वि यत्कार्यं तद् यपि न भवतीति ज्ञापनार्थम् । तेन प्रशम्य, पपृच्छ्य, प्रदीव्य, प्रखन्य, प्रस्थाय, प्रपाय, प्रदाय, प्रधाय, प्रपठ्येत्यादौ, दीर्घत्वं शत्वमूलमात्वमित्वमीत्वं तूत्वं हित्वमिट् च यपि न भवति । अनुबन्धकार्यन्तु भवत्येव । प्रतीर्य; अत्र किन्त्वाद् इर् । अत्ता । अत्तुम् । अत्तव्यम् । आद्यम् । प्सा । प्साति । प्सायात्; प्सेयात् । "संयोगादेर्वा-"॥४।३।९५॥ इति एः । शेषं ख्यांकृवत्॥ १ ॥ २ ॥

भांक् दीप्तौ । भाति; आभाति; विभाति; प्रतिभाति; भातः, भान्ति । व्यति ९ भाते, भाते, भाते, भासे, भाथे, भाध्वे, भे, भावहे, भामहे । क्ये, भायते । भायात् । व्यति २ भेत, भातु । व्यति ९ भाताम्, भाताम्, भाताम्, भास्व० । अभात्, अभाताम्, अभान्। अभुः, अभाः । व्यत्य ९ भात, भातां, भात; भाथाः० । अभासीत् । अभासिष्टाम्० । व्यत्यभा ९ स्त, साताम्, सत०, ॥ भाक ॥ अभायि, अभासाताम्; अभायिषाताम् । अभा २ ध्वम्, ढ्ध्वम्, अभायि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्० । बभौ, बभतुः, बभुः, बभाथ, बभिथ; बभिम । बभे; बभिध्वे; बभिमहे । भायात् । भासीष्ट, भायिषीष्ट; भासीध्वम्; भायि २ षीध्वम्, षीढ्वम् । भाता २; भायिता । भास्यति, ते; भायिष्यते । अभास्यत्, त; अभायिष्यत । बिभासति । बाभायते । बाभाति; बाभेति । भापयति । अबीभपत् । भा ३ ता, त्वा, तुम्। प्रतिभाय । भातः, २ वान् । भेयम्। भातव्यम् ॥ ३ ॥

यांक् प्रापणे । याति; प्रयाति; उपयाति; प्रणियाति, यातः, यान्ति, यासि, याथः, याथ, यामि, यावः, यामः । क्ये, यायते । यायात् । यातु । “अदुरुपसर्ग-”॥२।३।७७॥ इति णत्वे, प्रयाणि । अयात्, अयातां । “वा द्विष-”४।२।९१॥ इति वा पुसि; अयान्, अयुः; अयाः । अयास्यत । “यमिरमि-”॥४।४।८६॥ इतीटि सेऽन्ते च; अयासीत्, अयासिष्टाम्, अयासिषुः । अयायि, अयासाताम् । ञिटि, अयायिषाताम्; अयासत; अयायिषत; अया २ ढ्ध्वम्, ध्वम्; अयायि ३ ध्वम्, ड्ढ्वम्, ढ्वम् । ययौ, ययतुः; “इडेत्-”॥४।३।९४॥ इति आलुक्, ययुः; “सृजि-”॥४।४।७८॥ इति वेटि; ययाथ, ययिथ, ययथुः, यय, ययौ, ययिव, “स्क्रसृ-”॥४।४।८१॥ इतीट्, ययिम । यये, ययाते, ययिरे, ययिषे, ययाथे, ययि ४ ध्वे, ढ्वे; वहे, महे । यायात् । यासीष्ट; यायिषीष्ट । याता २; यायिता । यास्यति, ते; यायिष्यते । अयास्यत्, त; अयायिष्यत । यियासति । यायायते । यायेति, यायाति । यायन् । यायितः । शेषं त्रैङ्वत् । यापयति; “अर्त्तिरी-”॥४।२।२१॥ इति पुः । याप्यते । अयीयपत्, यान् । “अवर्णादश्नः-”॥ २।१।११५॥ इति वाऽन्त; यान्ती, याती । यायमानम् । “स्वरात्”॥२।३।८५॥ इति

णत्वे, प्रयायमाणम्; परियायमाणम् । यास्यन् । यास्यन्ती, यास्यती । यास्यमानम् । यायिष्यमाणम् । ययिवान् । ययुषी । ययानम् । यातः २, वान् । प्रयाय । या ३ त्वा, ता, तुम् । येयम् । प्रयाणीयम् । परियाणीयम् । आदादिका आदन्ता अनुस्वारेतः सर्वेऽपि यांकवद्वक्तव्या विशेषवचनं विना ॥ ४ ॥

वांक् गतिगन्धनयोः । वाति; निर्वाति । अवासीत् । ववौ । वाता । यांक्वत्; परं णौ, "वो विधूनने-"॥४।२।१९॥ इति जे; पक्षकेणोपवाजयति । विधूननादन्यत्र, "अर्त्ति-"॥४।२।२१॥ इति पौ; वापयति केशान्; शोषयतीत्यर्थः । ङे, अवीवजत्; अवीवपत् । "निर्वाणमवाते"॥४।२।७९॥ इति निपातनात्तो नः; निर्वाणो भिक्षुः । निर्वाणो दीपः । वाते तु कर्त्तरि; निर्वातो वातः । निर्वातं वातेन ॥५॥

ष्णांक् शौचे । स्नाति । स्नायते । अस्नासीत् । सस्नौ । स्नाता । स्नात् । सर्वं यांक्वत्; परं आशीर्ये वा एः; स्नायात्, स्नेयात् । षोपदेशात् "नाम्यन्त-"॥२।३।१५॥ इति षत्वे; सिष्णासति । णौ, "ज्वलह्वल-"॥४।२।३२॥ इत्यनुपसर्गस्य वा ह्रस्वे; स्नपयति, स्नापयति । सोपसर्गस्य तु न ह्रस्वः; प्रस्नापयति । असिष्णपत् । अस्नपि, अस्नापि; प्रास्नापि । सिष्णपयिषति, सिष्णापयिषति ॥ ६ ॥

द्रांक् कुत्सितगतौ । कुत्सिता गतिः पलायनम्, स्वप्नश्च । द्राति; निद्राति; विद्राति । द्रायते । अद्रासीत् । दद्रौ । द्राता । निदिद्रासति । दाद्रायते । द्रापयति । द्रातुम् । द्रात्वा । निद्राय । "व्यञ्जनान्तस्था-"॥४।२।७१॥ इति नत्वे; द्राणः २, वान् । तृनि, द्राणशीलो द्राता ॥ ७ ॥

पांक् रक्षणे । पाति । "ईर्व्यञ्जने-"॥४।३।९७॥ इत्यत्र गास्थासहचरितस्य पिबतेर्ग्रहणात् क्ये ईर्न; पायते । अपासीत् । पपौ । पपे । पायात् । पाता । पिपासति । पापायते । एवं यांक्वत्; परं णौ, "पातेः"॥४।२।१७॥ इति ले; पालयति । अपीपलत् । "पातेः"॥४।२।१७॥ इत्यत्र तिवृनिर्देशाद्यङ्लुपि योऽन्त एव; पापाययति ॥ ८ ॥

लांक् आदाने । लाति, लातः, लान्ति । क्ये, लायते । लायात् । लातु । अलात्, अलाताम्, अलान्, अलुः, अलाः । व्यत्यलात् । व्यत्यले । क्ये, अलायत । अलासीत्, अलासिष्टाम्, अलासिषुः । अलायि, अलासाताम्, अला-

यिषाताम् । ललौ, ललतुः, ललुः; ललाथ, ललिथ; ललिम । लले; ललिमहे । लायात् । लासीष्ट; लायिषीष्ट । लाता, २; लायिता । लास्यति, ते । अलास्यत्, त । लिलासति । लालायते । लालेति, लालाति, लालीतः, लालति । णौ, "लो लः" ॥४।२।१६॥ इति वा ले; घृतं विलालयति । पक्षे पौ, घृतं विलापयति । ङे, व्यलीललत्; व्यलीलपत् । लातः । ला ३ त्वा, ता, तुम् । लेयम् ॥ ९ ॥

रांक् दाने । आदानेऽपीति कश्चित् । राति । रायते । रातु । अरासीत् । ररौ । राता । रारायते । रातुम् । एवं यांक्वत् ॥ १० ॥

दांब्क् लवने । बित्त्वान्न दासंज्ञा । दाति क्षेत्रम् । दायन्ते व्रीहयः । अदासीत् । व्यत्यदास्त, व्यत्यदा २ साताम्, सत । ददौ । दाता । दिदासति । दादायते । दादेति, दादाति, दादीतः, दादति०; दादीथः । सर्वो यांक्वत् ॥ ११ ॥

ख्यांक् प्रकथने । प्रकटन इत्यन्ये । ख्याति; आख्याति; व्याख्याति । ख्यायते । ख्यायात् । ख्यातु । अख्यात्, अख्याताम्, अख्यान्, अख्युः, अख्याः । अद्य० ॥ "शास्त्यसू-"॥३।४।६०॥ इत्यङि, आख्य ६ त्, ताम्, न्, :, तम्, त; आख्यम्, आख्या २ व, म । आख्यायि, आख्यासाताम्, आख्यायिषाताम्० । चख्यौ, चख्यतुः, चख्युः, चख्याथ, चख्यिथ; चख्यिम । चख्ये, चख्याते । वा एः; ख्यायात्, ख्येयात् । ख्यासीष्ट, ख्यायिषीष्ट । ख्याता २; ख्यायिता । ख्यास्यति, ते; ख्यायिष्यते । व्याचिख्यासति । ख्यापयति । अचिख्यपत् । शेषं यांक्वत् ॥१२॥

मांक् माने; मानं वर्त्तनम् । माति पात्रम् । क्ये, मायते । अमात्, अमाताम्, अमान्, अमुः ॥ अद्य० ॥ अमासीत् । ममौ । मायात् । मिमासति । प्रमिमासति । मामायते । मातः २,वान्; इत्यादिः सर्वः परमते यांक्वद्वाच्यः । स्वमते त्वेवम्; माति; निर्माति; प्रमाति; अनुमाति, मातः, संमान्ति । क्ये, मीयते, "ईर्व्यञ्जने-"॥४।३।९७॥ इति ईः । मायात् । मीयेत । मातु । मीयताम् । ह्य० ॥ अमात्, अमाताम्, अमान्, अमुः, अमाः; अमाम् । अमीयत । अमासीत्, अमासिष्टाम् । अमायि, अमासाताम्, अमायिषाताम् । ममौ, ममतुः, ममुः, ममाथ, ममिथ, ममथुः, मम, ममौ, ममि २ व, म । ममे; ममिमहे "गापा-" ॥४।३।९६॥ इति एः, मेयात्, मेयास्ताम् । मासीष्ट, मायिषीष्ट । माता २; मायिता ।

मास्यति, ते; मायिष्यते। "मिमी-"॥४।१।२०॥ इति इत्, मित्सति। "ईर्व्यञ्जने-" ॥४।३।९७॥ ईः; मेमीयते। लुपि तु, साक्षात् क्ङिद्व्यञ्जनाभावात् न ईः; मामाति, मामेति। शेषं त्रैङ्वत्। मापयति। अमीमपत्। मिमापयिषति। मान्। मान्ती, माती। मास्यन्। मास्यन्ती, मास्यती। मीयमानम्। "स्वरात्"॥२।३।८५॥ इति णत्वे, निर्मीयमाणम्। मास्यमानम्। ममिवान्। ममानम्। "दोसो-"॥४।४।११॥ इति इः; मितः, २ वान्। प्रस्थः स्थाल्यां मित्वा। प्रमाय। मितिः। माता। मातुम्। निर्माणीयम् ॥१३॥

इंक् स्मरणे। इङिकावधिनैव प्रयुज्येते। "स्मृत्यर्थ-"॥२।२।११॥ इति वा कर्मणः कर्मत्वे; मातुर्मातरं वाऽध्येति, अधीतः; "इको वा"॥४।३।१६॥ इति वा यत्वे; अधियन्ति। पक्षे इयादेशे; अधीयन्ति, अध्येषि, अधी २ थः, थ, अध्येमि, अधी- २ वः, मः। क्ये, अधीयत। अधीयात्॥ पं० ॥ अध्येतु, अधीताम्, अधि- यन्तु, अधीयन्तु; अधी २ तम्, त, अध्यया ३ नि, व, म ॥ ह्य० ॥ अध्यैत्, अध्यैताम्। "इको वा"॥४।३।१६॥ इत्यनेन वा यत्वे, पक्षे इयि च प्राप्ते सति, यत्वं बाधित्वा "एत्यस्तेः-"॥४।४।३०॥ इति वृद्धौ; अध्यायन्। पक्षे इया- देशे सति, "स्वरादेः-"॥४।४।३१॥ इति वृद्धौ; अध्यैयन्, अध्यैः, अध्यै २ तम्, त, अध्यायम्, अध्यैव, अध्यैम। क्ये, अध्यैयत। अद्य० ॥ "इणिको- र्गा"॥४।४।२३॥ इति गा; "पिबैति-"॥४।३।६६॥ इति सिज्लुप् च; अध्य३ गात्, गातां, गुः। व्यत्यध्यगा ३ स्त, साताम्, सत ॥ भाक ॥ अध्यगायि, अध्यगा २ साताम्, यिषाताम्। अधी ११ याय, यतुः, युः, येथ, ययिथ, यथुः, य, याय, यय, यिव, यिम। अधीये, अधी ३ याते, यिरे, यिषे। अधीयात्। "आशिषीणः"॥४।३।१०७॥ इत्यत्रेकोऽपि ग्रहणात् ह्रस्वे, अधियादित्यप्यन्ये। अध्येषीष्ट, अध्यायिषीष्ट। अध्येता २; अध्यायिता। अध्येष्य २ ति, ते; अध्या- यिष्यते। अध्यैष्य २ त्, त; अध्यायिष्यत। "सनीङश्च"॥४।४।२५॥ इति गमुः; "गमोऽनात्मने"॥४।४।५१॥ इतीट्, अधिजिगमिषति मातुः। आत्मनेपदे पुनर्नेट्, अधिजिगांस्यते माता। अधिजिगांसिष्यते। अत्र "स्वरहन्-"॥४।१।१०४॥ इति दीर्घः; "णावज्ञाने गमुः"॥४।४।२४॥ अधिगमयति प्रियम्। अध्यजीगमत्।

अधि २ यन्, यती। अधी २ यन्, यती। अध्येष्यन् । अधीयानम्। अध्येष्यमाणम् । अधीतः, २ वान् । अधीत्य । अध्ये २ ता, तुम् ॥ १४ ॥

इण्क् गतौ। एति; उदेति; प्रत्येति; अत्येति। "उपसर्गस्यानिण-"॥१।२।१९॥ इत्यत्रेणवर्जनान्नावर्णलुक्; ऐति; उपैति; परैति, इतः; उपेतः। "ह्विणोः-"॥४।३।१५॥ इति यत्वे, यन्ति; उपयन्ति, एषि, इथः, इथ, एमि, इवः, इमः। क्रियाव्यतिहारे गत्यर्थवर्जनात्परस्मै, व्यतियन्ति। ज्ञानार्थत्वात्मनेपदमेव; व्यतिप्र ३ तीते, तियाते, तियते। क्ये, "दीर्घश्च्वि-"॥४।३।१०८॥ इति दीर्घे, ईयते॥ स०॥ इयात्। व्यतिप्रति ३ यीत, यीयाताम्, यीरन्। ईयेत। एतु, इतात्, इताम्, यन्तु, इहि, इतात्, इतम्, इत, अया ३ नि, व, म। ईयताम्। ऐत्, ऐताम्, आयन्, ऐः, ऐतम्, ऐत, आयम्, ऐव, ऐम। ऐयत। अद्य०॥ "इणिकोर्गा"॥४।४।२३॥ इति गा; "पिबैति-"॥४।३।६६॥ इति सिज्लुप्; अगात्, अगाताम्, अगुः, अगाः, अगातम्, त, म्, व, म। अगायि, अगासाताम्, अगायिषाताम्०, अगा २ ध्वम्, द्ध्वम्; अगायि, ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्। "नामिनोऽकलि-"॥४।३।५१॥ इति वृद्धौ, "पूर्वस्यास्वे-"॥४।१।३७॥ इति पूर्वस्य इयादेशे; इयाय। द्वित्वे, "योऽनेक-"॥२।१।५६॥ इति यत्वापवादे "इणः-"॥२।१।५१॥ इति इयि; ईयतुः, ईयुः, इयेथ, इययिथ, ईयथुः, ईय, इयाय, इयय, ईयिव, ईयिम। ईये, ईयाते; ईयि २ ध्वे, ढ्वे। "दीर्घश्च्वि-"॥४।३।१०८॥ इति दीर्घे, ईयात्। "आशिषीणः"॥४।३।१०७॥ इति ह्रस्वे, समियात्। ई इण इति ईकारप्रश्लेषात्, आ ईयात्, एयात्। समेयादित्यत्र न ह्रस्वः। प्रतीयादित्यत्र तु समानदीर्घत्वे कृते सति उपसर्गात्परस्येणोऽभावात् न ह्रस्वः। केचिदत्रापीच्छन्ति; प्रतियात्। एषीष्ट; आयिषीष्ट; एषीध्वम्; आयि २ षीध्वम्, षीढ्वम्। एता २; आयिता। एष्यति। "उपसर्गस्यानिण-"॥१।२।१९॥ इति आलुगभावे आ एष्यति, ऐष्यति। समैष्यति। एष्यते; आयिष्यते। ऐष्यत्, त; आयिष्यत। "सनीङश्च"॥४।४।२५॥ इति गमुः, "गमोऽनात्मने"॥४।४।५१॥ इतीट्; जिगमिषति ग्रामम्। कर्मण्यात्मनेपदे तु नेट्; "स्वरहन्-"॥४।१।१०४॥ इति दीर्घश्च; जिगांस्यते ग्रामः। "समो गम-"॥३।३।८४॥ इति कर्त्तर्यात्मनेपदेऽपि नेट्; सञ्जिगांसते चैत्रः। ज्ञानेतु न गमुः; अर्थान् प्रतीषिषति, अत्र सनोऽकार-

करणात्, "स्वरादेर्द्वितीयः"॥४।१।४॥ इति सस्वरस्य सस्य द्वित्वं षत्वं पश्चात् सन्यस्य इः । अधिपूर्वस्तु स्मरणे । अधीषिषति; स्मर्तुमिच्छतीत्यर्थः । "णिस्तोरेव-"॥२।३।३७॥ इत्यत्र षणि निमित्ते णिस्तुवर्जधातोरेव षत्वं निषिद्धं न तु सनः, तेनेह सनो द्वित्वे षत्वं सिद्धम् । "णावज्ञाने गमुः"॥४।४।२४॥ गमयति ग्रामम् । अजीगमत् । ज्ञाने तु, शब्दोऽर्थं प्रत्याययति । प्रत्यायियत् । प्रत्यायि । इटि, प्रत्याययिषाताम् । ञिटि, प्रत्यायिषाताम् । प्रत्याययांचकार ३ । यन् । यती । एष्यन् । एष्यन्ती, एष्यती स्त्री कुले वा । ईयमानम् । एष्यमाणम् । "वेयिवद्-"॥५।२।३॥ इति भूतमात्रे वा क्वसौ निपातनात्, ईयिवान् । समीयिवान् । उपेयिवान् । पक्षेऽद्यतन्यादयोऽपि । ईयानम् । इतः, २ वान् । इत्वा । उपेत्य । इतिः । एता । एतुम् । एतव्यम् । अयनीयम् । इत्यम् । एयम् ॥ १५ ॥

षुंक् प्रसवैश्वर्ययोः । "उत औः-"॥४।३।५९॥ सौति, सुतः, सुवन्ति, सौषि । सूयते । सूयात् । सौतु; सुहि; सवानि । असौत्, असुताम्, असुवन् । असौषीत्, असौष्टाम् । असावि, असोषाताम्, असाविषाताम् । एवमिहाग्रेऽपि ञिट् । "नाम्यन्त-"॥२।३।१५॥ इति षः; सुषाव, सुषुवतुः, सुषुवुः, सुषविथ, सुषोथ; सुषुविम । सुषुवे । सूयात् । सोषीष्ट । सोता । सोष्यति । सुसूषति । सोषूयते । सावयति । असूषवत् । सुत्वा । सुतः । सोता । सोतुम् ॥ १६ ॥

तुंक् वृत्तिहिंसापूरणेषु । तौति । विति व्यञ्जने, "यङ्तु-"॥४।३।६४॥ इति ईति; तवीति । शेषं षुंक्वत् ॥ १७ ॥

युक् मिश्रणे । अयुतसिद्धानामित्यादिदर्शनादमिश्रणेऽप्यन्ये । "उतऔर्वि-"॥४।३।५९॥ इति; यौति, युतः, युवन्ति, यौषि, युथः । यूयते । युयात् । यौतु, युतात् । ङित्त्वात्, "उतऔर्विति-"॥४।३।५९॥ इति न औः; ङित्त्वेन वित्त्वस्य बाधनात्; युहि; यवानि । अयौत्, अयुताम्, अयुवन्, अयौः । अयावीत्, अयाविष्टाम्, अयाविषुः । अयावि, अयविषाताम्, अयाविषाताम्; अयवि ३ ध्वम्, ढ्वम्, इढ्वम्; अयावि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम् । युयाव, युयुवतुः, युयुवुः, युयविथ; युयुविम । युयुवे; युयुवि २ ध्वे, ढ्वे; युयुविमहे । यूयात् । यविषीष्ट, याविषीष्ट; यवि २ षीध्वम्, षीढ्वम्; यावि २ षीध्वम्, षीढ्वम् । यविता २, याविता ।

यविष्य २ ति, ते; याविष्यते । "इवृध-"॥४।४।४७॥ इति वेटि, "ओर्जान्त-"॥४।१। ६०॥ इति पूर्वस्य इः; यियविषति; युयूषति । योयूयते । योयवीति । अद्वेरिति निषेधान्न औः; योयोति । यङ्लुबन्तस्यापि औरित्यन्ये; योयौति । यावयति । "असमान-"॥४।१।६३॥ इति इः, अयीयवत् । "ओर्जान्त-"॥४।१।६०॥ इति इः, यियावयिषति । युवन् । युवती । यूयमानम् । यविष्यन् । यविष्यमाणम् । युयुवान् । युयुवानम् । "उवर्णात्"॥४।४।५८॥ इति नेटि, युतः, २ वान् । युत्वा । यवि २ ता, तुम् ॥ १८ ॥

णुक् स्तुतौ । नौति । अन्ये तु युक्णुक्भ्यां व्यञ्जनादौ विति शिति, ईतमपीच्छन्ति । यवीति; नवीति । "अदुरुपसर्ग-"॥२।३।७७॥ इति णः, प्रणौति; परिणौति, नुतः, नुवन्ति । "नुप्रच्छः"॥३।३।५४॥ इत्याङ्पूर्वादात्मनेपदे, आनुते सृगालः; आनु २ वाते, वते । क्ये, नूयते; प्रणूयते । शेषं युक्त् । "ग्रह-गुहश्च-"॥४।४।५९॥ इति नेट्, नुनूषति । नोनूयते । नोनवीति, नोनोति । नावयति । अनूनवत् । नुवन् । नुवती । नविष्य २ न्, माणम् । नुनुवान् । नुनुवानम् । "उवर्णात्"॥४।४।५८॥ इति नेट्, नुतः, २ वान् । नुत्वा । प्रणुत्य । नुतिः ॥ १९ ॥

क्ष्णुक् तेजने । क्ष्णौति, क्ष्णुतः, क्ष्णुवन्ति । "समः क्ष्णोः"॥३।३।२९॥ इत्यात्मनेपदे; संक्ष्णुते शस्त्रम् । चुक्ष्णूषति । चोक्ष्णूयते । चोक्ष्णोति । शेषं युक्त् ॥ २० ॥

स्नुक् प्रस्रवणे; क्षरणे । स्नौति, स्नुतः, स्नुवन्ति । क्ये, स्नूयते । प्रास्नावीत् । प्रसुस्नाव । प्रस्नविता । प्रस्नविष्यति । एवं सर्वो युक्वत्; परं "स्नोः"॥४।४।५२॥ इत्यात्मनेपदाभाव एवेट्विधानादात्मनेपदे नेट् । प्रास्नोषाताम् । प्रस्नोषीष्ट । प्रस्नोतासे । प्रस्नोष्यते । कर्मकर्त्तरि, "एकधातौ-"॥३।४।८६॥ इति ञिक्या-त्मनेपदेषु प्राप्तेषु, "भूषार्थ-"॥३।४।९३॥ इति ञिक्ययोः प्रतिषेधात्; प्रस्नुते । प्रास्नोष्ट गौः स्वयमेव । अन्तर्भूतण्यर्थत्वेन सकर्मकत्वाद् गोः कर्मकर्तृत्वम् । यत्र तु ण्यर्थो नास्ति तत्र कर्तृतैव । यथा, प्रस्नौति गौर्दोग्धुः कौशलेन । एवमन्यत्रापि । "ग्रहगुहश्च-"॥४।४।५९॥ इति इट्प्रतिषेधे; सुस्नूषति । सोस्नूयते । सोस्नोति, सोस्नवीति ॥ २१ ॥

टुक्षु, रु, कुंक्, शब्दे। क्षौति, क्षुतः, क्षुवन्ति। चुक्षाव। क्षविता। चुक्षूषति। चोक्षूयते। चोक्षोति; चोक्षवीति। क्षावयति। णौ यत्कृतमिति न्यायात् क्षाद्वित्वे; अचुक्षवत्। चुक्षावयिषति। "उवर्णात्"॥४।४।५८॥ इति नेटि, क्षुत्वा। क्षुतम्। क्षुतः, २ वान्। क्षवि २ ता, तुम्। "य एच्च-"॥५।१।२८॥ इति ये; क्षव्यम्। "उवर्णादावश्यके"॥५।१।१९॥ इति घ्यणि; क्षाव्यमवश्यम्। रु। रौति; "यङ्तुरुस्तोः-"॥४।३।६४॥ इति ईति; रवीति, रुतः, रुवन्ति। रुराव। रविता। रुरूषति। रोरूयते। रोरोति, रोरवीति। लुप्यपि "उत औः-"॥४।३।५९॥ इति औरित्यन्ये; रोरौति। रावयति। "असमान-"॥४।१।६३॥ इति इः; अरीरवत् "ओर्जान्त-"॥४।१।६०॥ इति इः; रिरावयिषति। शेषं द्वयोर्युकूवत्। कुंक्। अनिट्। कौति। चुकाव। कोता। चुकूषति। "न कवतेः-"॥४।१।४७॥ इति भ्वादेरेव प्रतिषेधात् "कङश्च-"॥४।१।४६॥ इति पूर्वस्य चः; चोकूयते। चोकोति; चोकवीति। कावयति। अचूकवत्। शेषं षुक्वत्। कुंङ्, कुंक्, कुंङ्त् इत्येतेषां शब्दार्थत्वेऽप्यर्थभेदोऽस्ति। कुंङ् अव्यक्ते शब्दे ज्ञेयः, कुंक् शब्दमात्रे, कुंङ्त् आर्त्तस्वरे ॥२२॥२३॥२४॥

अथान्तर्गणो रुदादिः पञ्चकः।

रुदृक् अश्रुविमोचने। "रुत्पञ्चकात्-"॥४।४।८८॥ इतीटि; रोदिति, रुदितः, रुदन्ति, रोदिषि, रुदिथः, रुदिथ, रोदिमि, रुदिवः, रुदिमः। रुद्यते। रुद्यात्। रुद्याताम्। रुद्येत। रोदितु, रुदिताम्, रुदन्तु, रुदि ३ हि, तम्, त, रोदा ३ नि, व, म। रुद्यताम्। "दिस्योरीट्"॥४।४।८९॥ अरोदीत्। "अदश्चाट्"॥ ४।४।९०॥ अरोदत्, अरुदिताम्, अरुदन्, अरोदीः, अरोदः, अरुदि २ तं, त, अरोदम्, अरुदि २ व, म। अरुद्यत। अद्य०॥ "ऋदिच्छ्वि-"॥३।४।६५॥ इति वाऽङि; अरुद ३ त्, ताम्, न्। पक्षे, अरो ३ दीत्, दिष्टाम्, दिषुः अरोदि, अरोदिषाताम्; अरोदि २ ध्वम्, ढ्वम्, अरोदिषि। रुरोद, रुरुदतुः; रुरुदि २ व, म। रुरुदि २ ध्वे, महे। रुद्यात्। रोदिषीष्ट। रोदिता २। रोदिष्यति, ते। अरोदिष्यत्, त। "रुदविद-"॥४।३।३२॥ इति क्त्वासनोः कित्त्वे, रुरुदिषति। रोरुद्यते। रोरुदीति, रोरोत्ति, रोरुत्तः, रोरुदति। हौ, रोरुद्धि।

यविष्य २ ति, ते; याविष्यते । "इवृध-"॥४।४।४७॥ इति वेटि, "ओर्जान्त-"॥४।१।६०॥ इति पूर्वस्य इः; यियविषति; युयूषति । योयूयते । योयवीति । अद्वेरिति निषेधान्न औः; योयोति । यङ्लुबन्तस्यापि औरित्यन्ये; योयौति । यावयति । "असमान-"॥४।१।६३॥ इति इः, अयीयवत् । "ओर्जान्त-"॥४।१।६०॥ इति इः, यियावयिषति । युवन् । युवती । यूयमानम् । यविष्यन् । यविष्यमाणम् । युयुवान् । युयुवानम् । "उवर्णात्"॥४।४।५८॥ इति नेटि, युतः, २ वान् । युत्वा । यवि २ ता, तुम् ॥ १८ ॥

णुक् स्तुतौ । नौति । अन्ये तु युक्णुक्भ्यां व्यञ्जनादौ विति शिति, ईतमपीच्छन्ति । यवीति; नवीति । "अदुरुपसर्ग-"॥२।३।७७॥ इति णः, प्रणौति; परिणौति, नुतः, नुवन्ति । "नुप्रच्छः"॥३।३।५४॥ इत्याङ्पूर्वादात्मनेपदे, आनुते सृगालः; आनु २ वाते, वते । क्ये, नूयते; प्रणूयते । शेषं युक्त् । "ग्रह-गुहश्च-"॥४।४।५९॥ इति नेट्, नुनूषति । नोनूयते । नोनवीति, नोनोति । नावयति । अनूनवत् । नुवन् । नुवती । नविष्य २ न्, माणम् । नुनुवान् । नुनुवानम् । "उवर्णात्"॥४।४।५८॥ इति नेट्, नुतः, २ वान् । नुत्वा । प्रणुत्य । नुतिः ॥ १९ ॥

क्ष्णुक् तेजने । क्ष्णौति, क्ष्णुतः, क्ष्णुवन्ति । "समः क्ष्णोः"॥३।३।२९॥ इत्यात्मनेपदे; संक्ष्णुते शस्त्रम् । चुक्ष्णूषति । चोक्ष्णूयते । चोक्ष्णोति । शेषं युक्त् ॥ २० ॥

स्नुक् प्रस्रवणे; क्षरणे । स्नौति, स्नुतः, स्नुवन्ति । क्ये, स्नूयते । प्रास्नावीत् । प्रसुस्नाव । प्रस्नविता । प्रस्नविष्यति । एवं सर्वो युक्वत्; परं "स्नोः"॥४।४।५२॥ इत्यात्मनेपदाभाव एवेट्विधानादात्मनेपदे नेट् । प्रास्नोषाताम् । प्रस्नोषीष्ट । प्रस्नोतासे । प्रस्नोष्यते । कर्मकर्त्तरि, "एकधातौ-"॥३।४।८६॥ इति ञिक्यात्मनेपदेषु प्राप्तेषु, "भूषार्थ-"॥३।४।९३॥ इति ञिक्ययोः प्रतिषेधात्; प्रस्नुते । प्रास्नोष्ट गौः स्वयमेव । अन्तर्भूतण्यर्थत्वेन सकर्मकत्वाद् गोः कर्मकर्तृत्वम् । यत्र तु ण्यर्थो नास्ति तत्र कर्तृत्वैव । यथा, प्रस्नौति गौर्दोग्धुः कौशलेन । एवमन्यत्रापि । "ग्रहगुहश्च-"॥४।४।५९॥ इति इट्प्रतिषेधे; सुस्नूषति । सोस्नूयते । सोस्नोति, सोस्नवीति ॥ २१ ॥

टुक्षु, रु, कुंक्, शब्दे। क्षौति, क्षुतः, क्षुवन्ति। चुक्षाव। क्षविता। चुक्षूषति। चोक्षूयते। चोक्षोति; चोक्षवीति। क्षावयति। णौ यत्कृतमिति न्यायात् क्षुद्वित्वे; अचुक्षवत्। चुक्षावयिषति। "उवर्णात्"॥४।४।५८॥ इति नेटि, क्षुत्वा। क्षुतम्। क्षुतः, २ वान्। क्षवि २ ता, तुम्। "य एच्च-"॥५।१।२८॥ इति ये; क्षव्यम्। "उवर्णादावश्यके"॥५।१।१९॥ इति घ्यणि; क्षाव्यमवश्यम्। रु। रौति; "यङ्तुरुस्तोः-"॥४।३।६४॥ इति ईति; रवीति, रुतः, रुवन्ति। रुराव। रविता। रुरूषति। रोरूयते। रोरोति, रोरवीति। लुप्यपि "उत औः-"॥४।३।५९॥ इति औरित्यन्ये; रोरौति। रावयति। "असमान-"॥४।१।६३॥ इति इः; अरीरवत् "ओर्जान्त-"॥४।१।६०॥ इति इः; रिरावयिषति। शेषं द्वयोर्युक्वत्। कुंक्। अनिट्। कौति। चुकाव। कोता। चुकूषति। "न कवतेः-"॥४।१।४७॥ इति श्वादेरेव प्रतिषेधात् "कङश्च-"॥४।१।४६॥ इति पूर्वस्य चः; चोकूयते। चोकोति; चोकवीति। कावयति। अचूकवत्। शेषं षुंक्वत्। कुंङ्, कुंक्, कुंङ्त् इत्येतेषां शब्दार्थत्वेऽप्यर्थभेदोऽस्ति। कुंङ् अव्यक्ते शब्दे ज्ञेयः, कुंक् शब्दमात्रे, कुंङ्त् आर्त्तस्वरे ॥२२॥२३॥२४॥

अथान्तर्गणो रुदादिः पञ्चकः।

रुदृक् अश्रुविमोचने। "रुत्पञ्चकात्-"॥४।४।८८॥ इतीटि; रोदिति, रुदितः, रुदन्ति, रोदिषि, रुदिथः, रुदिथ, रोदिमि, रुदिवः, रुदिमः। रुद्यते। रुद्यात्। रुद्याताम्। रुद्येत। रोदितु, रुदिताम्, रुदन्तु, रुदि ३ हि, तम्, त, रोदा ३ नि, व, म। रुद्यताम्। "दिस्योरीट्"॥४।४।८९॥ अरोदीत्। "अदश्चाट्"॥ ४।४।९०॥ अरोदत्, अरुदिताम्, अरुदन्, अरोदीः, अरोदः, अरुदि २ तं, त, अरोदम्, अरुदि २ व, म। अरुद्यत। अद्य०॥ "ऋदिच्छ्वि-"॥३।४।६५॥ इति वाऽङि; अरुद ३ त्, ताम्, न्। पक्षे, अरो ३ दीत्, दिष्टाम्, दिषुः अरोदि, अरोदिषाताम्; अरोदि २ ध्वम्, ड्ढ्वम्, अरोदिषि। रुरोद, रुरुदतुः; रुरुदि २ व, म। रुरुदि २ ध्वे, महे। रुद्यात्। रोदिषीष्ट। रोदिता २। रोदिष्यति, ते। अरोदिष्यत्, त। "रुदविद-"॥४।३।३२॥ इति क्त्वासनोः कित्त्वे, रुरुदिषति। रोरुद्यते। रोरुदीति, रोरोत्ति, रोरुत्तः, रोरुदति। हौ, रोरुद्धि।

ह्य० ॥ अरोरु २ दीत्, द् । अरोरु २ त्ताम्, दुः, अरोरोः, अरोरोत्, अरोरुत्तम् । अद्य० ॥ ऋदनुबन्धनिर्दिष्टत्वेन यङ्लुपि अङभावे, अरोरोदीत् । शेषं पचि-स्थानोक्तवत् । रोदयति । अरूरुदत् । रुदन् । रुदती । रोदि ३ ष्यन्, ष्यन्ती, ष्यती । रुद्यमानम् । रोदिष्यमाणम् । रुरुद्वान् । रुरुदानम् । रुदितः २, वान् । "उतिशवर्हाञ्च्यः-"॥४।३।२६॥ इति भावारम्भयोर्वा कित्त्वे; रुदितम्, रोदित-मनेन । प्ररुदितः २, वान्; प्ररोदितः २, वान् । रुदित्वा, रोदित्वा । रोदि २ ता, तुम् । रोद्यम् ॥ २५ ॥

ञिष्वपंक् शये । अकर्मोऽनिट् च । शिति व्यञ्जनादौ इटि; स्वपिति, स्वपितः, स्वपन्ति । "स्वपेर्यङ्ङे च"॥४।१।८०॥ इति य्वृति, सुप्यते । स्वप्यात् । स्वपि २ तु, ताम् ॥ ह्य० ॥ अस्वपत्; अस्वपीत्; अस्व ९ पिताम्, पन्, पः, पीः, पितम्, पित, पम्, पिव, पिम ॥ अद्य०॥ अस्वा ९ प्सीत्, प्ताम्, प्सुः, प्सीः, प्तम्, प्त, प्सम्, प्स्व, प्स्म । अस्वापि । "भूस्वपोः–"॥४।१।७०॥ इति पूर्वस्य उः, "नाम्यन्त-"॥२।३।१५॥ इति षश्च, सुष्वाप; "स्वपेर्यङ्-"॥४।१।८०॥ इति य्वृति, सुषुपतुः । निर्दुः सुविपूर्वस्य; "अवः स्वपः"॥२।३।५७॥ इति षत्वे, निःषुषुपतुः; दुःषुषुपतुः, सुषु-षुपतुः; विषुषुपतुः; सुषुपुः, सुष्वपिथ, सुष्वप्थ, सुषुपथुः, सुषुप, सुष्वाप, सुष्वप, सुषुपि २ व, म । सुषुपे; सुषुपिमहे । सुप्यात् । स्वप्सीष्ट । स्वप्ता २ । स्वप्स्यति, ते । अस्वप्स्यत्, त । "रुद-"॥४।३।३२॥ इति सन् कित्, सुषुप्सति । सोषुप्यते । यङन्तात् सनि, सोषुपिषते । "अतः"॥४।३।८२॥ इत्यनेन विषयेऽप्यतोलोपात् "स्वरस्य परे-"॥७।४।११०॥ इति स्थानित्वाभावे, "योऽशिति"॥४।३।८०॥ इति यूलुक् सिद्धः । पुनर्द्वित्वमते तु, सुसोषुपिषते; अत्र षणि "णिस्तोरेव-"॥२।३।३७॥ इति नियमात् सुपरस्य सस्य न षः । यङ्लुप्यपि य्वृति, सोषुपीति, सोषोप्ति, सोषु २ प्तः, पति । यङ्लुपि न य्वृदित्यन्ये, सास्वप्ति । प्रकृतिग्रहणात् यङ्लुप्यपि सनः कित्त्वे; सोषुपिषति । सोषोपयति । सोषोपयिषति । स्वापयति । "स्वपेर्यङ्ङेच"॥४।१।८०॥ इति य्वृति गुणे ह्रस्वत्वे द्वित्वे पूर्वदीर्घत्वे च, असूषुपत् । णौ सनि, "स्वपो णावुः" ॥४।१।६२॥ इति पूर्वस्य उत्वे; सुष्वापयिषति । स्वपन् । स्वपती । स्वप्स्यन् । स्वप्स्यन्ती, स्वप्स्यती । सुप्यमानम् । स्वप्स्यमानम् । सुषुप्वान् । सुषुपानम् ।

सुप्तः २, वान् । सुप्त्वा । प्रसुप्य । दुःषुप्तः । सुषुप्तः । सुप्तिः । स्वप्ता । स्वप्तुम् ॥ २६ ॥

अन, श्वसक् प्राणने; जीवने । अनिति; "द्वित्वेऽप्यन्तेऽपि-"॥२।३।८१॥ इति णत्वे, प्राणिति; पराणिति; अनितः, अनन्ति । क्ये, अन्यते; प्राण्यते । प्राण्यात् । प्राणितु । प्राणत्, प्राणीत्, प्राणिताम्, प्राणन्, प्राणः, प्राणीः । प्राण्यत । प्राणीत्, प्राणि २ ष्टाम्, षुः । प्राणि, प्राणिषाताम् । "अस्यादेः-"॥४।१।६८॥ इति पूर्वस्य आः, आन; आनतुः; प्राण, प्राणतुः, प्राणुः, प्राणिथ; प्राणिम । प्राणे, प्राणाते; प्राणिषे । प्राण्यात् । प्राणिषीष्ट । प्राणिता २। प्राणिष्यति । प्राणिष्यत् । अनिनिषति । द्वित्वे कर्त्तव्ये णत्वशास्त्रस्यासत्त्वाद् द्वित्वे कृते पश्चाद्द्वयोर्णत्वे, प्राणिणिषति । परेस्तु वा णः, पर्याणिणिषति, पर्यनिनिषति । सन्नन्ताण्णौ ङे; "पुनरेकेषाम्"॥४।१।१०॥ इति पुनर्द्वित्वे; प्राणिणिनिषत्; अत्र "द्वित्व-"॥२।३।८१॥ इति वचनाद्; द्वित्वे कृते पश्चाद् द्वयोरेवाद्ययोर्णत्वं न तृतीयस्य; आनयति; प्राणयति । आनिनत्; प्राणिणत् । पर्याणिणत्, पर्यानिनत् । प्राणिणयिषति । प्राणन् । प्राणती । प्राणिष्यन् । प्राण्यमानम् । प्राणिवान् । प्राणानम् । प्राणि ४ ता, तुम्, तः, तवान् । अनित्वा । प्राण्य ॥ श्वस् ॥ तालव्यादिः । श्वसिति; विश्वसिति; आश्वासिति; निश्वसिति; श्वसितः, श्वसन्ति । श्वस्यते । श्वस्यात् । न स्वपेदिति, न विश्वसेदमित्रस्य मित्रस्यापि न विश्वसेदिति च दर्शनाददादिभ्योऽपि क्वचित् शवित्यन्ये । श्वसितु; श्वसिहि ॥ ह्य० ॥ अश्व ११ सत्, सीत्, सिताम्, सन्, सः, सीः, सितम्, सित, सं, सिव, सिम । अश्वस्यत ॥ अद्य० ॥ अश्व २ सीत्, सिष्टाम् । अश्वा २ सीत्, सिष्टाम् । अश्वासि, अश्वसिषाताम् । शश्वास, शश्वसतुः; शश्वसिथ । शश्वसे; शश्वसिमहे । श्वस्यात् । श्वसिषीष्ट । श्वसिता । श्वसिष्यति । शिश्वसिषति । शाश्वस्यते । शाश्व २ सीति, स्ति । आश्वासयति । अशिश्वसत् । व्यशिश्वसत् । श्वस २ न्, ती । श्वसिष्य ३ न्, न्ती, ती । श्वस्यमानम् । शश्वस्वान् । शश्वसानम् । श्वसि ३ त्वा, ता, तुम् । "श्वसजप-"॥४।४।७५॥ इति वा नेटि; आश्वस्तः, २ वान् ॥ २७ ॥ २८ ॥

जक्षक् भक्षहसनयोः । अयं रुत् पञ्चकस्य पञ्चमो जक्षपञ्चकस्य लाद्य इत्युभय-

कार्यभाक् । जक्षिति, जक्षितः; "अन्तो नो लुक्"॥४।२।९४॥ जक्षति । जक्षतु । "द्व्युक्तजक्ष-"॥४।२।९३॥ इति शिदनः पुसि, अजक्षुः । जजक्ष । शतरि, जक्षत्; "शौ वा"॥४।२।९५॥ जक्षति, जक्षन्ति, कुलानि । जक्षि ३ ता, तुम्, तः । शेषं श्वस्वत् ॥ २९ ॥

दरिद्राक् दुर्गतौ । दरिद्राति । "इर्दरिद्रः"॥४।२।९८॥ दरिद्रितः, अन्तो नो लुकि, "श्नश्चातः"॥४।२।९६॥ लुकि च; दरिद्रति, दरि ६ द्रासि, द्रिथः, द्रिथ, द्रामि, द्रिवः, द्रिमः । क्ये, "अशित्यस्सन्-"॥४।३।७७॥ इत्यालुकि, दरिद्र्यते । सप्त० ॥ दरिद्रियात् । दरि ४ द्रातु, द्रितां, द्रतु, द्रिहि । अदरि ३ द्रात्, द्रि-ताम्, द्रुः; अत्र "द्व्युक्त-"॥४।२।९३॥ इति पुसि, "इडेत्-"॥४।३।९४॥ इत्यालुकि, अदरि ६ द्राः, द्रितम्, द्रित, द्राम्, द्रिव, द्रिम ॥ अद्य० ॥ "दरिद्रोऽद्यतन्यां वा" ॥४।३।७६॥ आलुक्; अदरि ३ द्रीत्, द्रिष्टाम्, द्रिषुः । पक्षे; अदरिद्रा २ सीत्, सिष्टाम् ॥ भाक ॥ अदरि २ द्रि, द्रायि । इटि ञिटि च, अदरिद्रिषाताम् । दरिद्रां ३ चकार, बभूव, आसेत्यादि । "आतो णव"॥४।२।१२०॥ इत्यत्र ओकारे-णैव पपावित्यादिसिद्धौ औविधानं दरिद्रातेर्णव आमादेशानित्यत्वार्थम्, ददरिद्रौ । अन्यथा "अशित्यस्सन्-"॥४।३।७७॥ इति आलोपे, इदं रूपं न सिध्येत् ॥ भाक ॥ दरिद्रां ३ चक्रे, बभूवे, आहे । दरिद्र्यात् । दरिद्रिषीष्ट । दरिद्रिता २ । दरिद्रिष्यति, ते । अदरिद्रिष्यत्, त । "इवृध-"॥४।४।४७॥ इति वेटि, दिद-रिद्रासति; दिदरिद्रिषति । दरिद्रयति । अददरिद्रत् । णौ आलुकं नेच्छन्त्यन्ये; दरिद्रापयति । अददरिद्रपत्; अत्र लघोः परेण वर्णसमुदायेन णेर्व्यवधेति पूर्वस्य सन्वद्भावात् इर्न भवति । अन्तो नो लुकि, दरिद्र ५ त्, तौ, ती, ति, न्ति, कुलानि । दरिद्रिष्य २ न्, माणम् । दरिद्र्यमाणम् । दरिद्राञ्चकृवान् । शिवस्तु णवोऽन्यस्याप्यामादेशमनित्यमिच्छति । तन्मते, ददरिद्र्वानित्यपि । षष्ठ्यां तु ददरिद्रुष इति भवति । केचित् क्वसौ आलोपं नेच्छन्ति, ददरिद्रा-वान् । दरिद्रि ५ त्वा, ता, तुम्, तः, वान् । दरिद्रणीयम् ॥३०॥

जागृक् निद्राक्षये । अकर्मा । जागर्त्ति । सकर्मा च । प्रतिजागर्त्ति । जागृतः; अन्तो नो लुकि, जाग्रति, जागर्षि, जागृथः, जागृथ, जागर्मि, जागृ २ वः,

मः । क्ये, "जागुः क्विति"॥४।३।६॥ इति गुणे, जागर्यते । जागृयात् । जागर्तु; जाग्रतु ॥ ह्य० ॥ अजागः; नानिष्टार्थ इति न्यायात् सन्निपातन्यायोऽत्र न प्रवृत्तस्तेन गुणे कृते देर्लुक् सिद्धः; अजागृताम् । "द्व्युक्त-"॥४।२।९३॥ इति पुसि, अजागरुः, अजा ६ गः, गृतम्, गृत, गरम्, गृव, गृम । अजागर्यत ॥ अद्य०॥ "न श्विजागृ-"॥४।३।४९॥ इति न वृद्धिः, अजाग ९ रीत्, रिष्टाम्, रिषुः०। "जागुर्ञिणवि"॥४।३।५२॥ इति वृद्धौ, अजागारि । प्रत्यजागरि १० षाताम्, षत, ष्ठाः, षाथाम्, ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि ष्महि । एवं प्रत्यजागारिषाताामित्याद्यपि ॥ परो० ॥ "जाग्रुष-"॥३।४।४९॥ इति वा आमि, जागरां ३ चकार, बभूव, आसेत्यादि । ९ । आमः परोक्षात्वाभावाण्णवि न वृद्धिः ॥ भाक ॥ जागरां ३ चक्रे, बभूवे, आहे । पक्षे; जजागार; "जागुः-"॥४।३।६॥ इति गुणे, जजागरतुः, जजागरुः । अनेकस्वरत्वात् "ऋतः"॥४।४।७९॥ इतीट् निषेधाभावे, जजागरिथ । णवि, जजागर, जजागार; जजागरिम । जजागरे; प्रतिजजागरे, प्रतिजजागरिढ्वे, ध्वे । जागर्यात् । जागरिषी ३ ष्ट; ढ्वम्, ध्वम् । जागारिषीष्ट । जागरिता २; जागारिता । जागरिष्यति, ते; जागारिष्यते । जिजागरिषति । अनेकस्वरत्वान्न यङ् । अस्यापि यङित्यपरे; जाजाग्रीयते । जरिजागर्त्ति ॥ अद्य०॥ "न श्वि-"॥४।३।४९॥ इति यङ्लुप्यपि न वृद्धौ, अजर्जागरीत् । सर्वस्माद्धातोः आयादिप्रत्ययरहितात् केचिद्यङमिच्छन्ति । अव् । अवाव्यते । इं, इण् वा । "स्वरादेर्द्वितीयः"॥४।१।४॥ इति यद्वित्वे; "आगुण-"॥४।१।४८॥ इति आत्वे; इयायते । इंक्, इंङ्क् वा । अधीयायते । ईङ्च । ईयायते । दादरिद्र्यते । एवमन्यसर्वधातुष्वपि "जागुर्ञिणवि"॥४।३।५२॥ इति ञिणवोरेव वृद्धिनियमात् णौ गुणे, जागरयति । अजजागरत् । जाग्र ५ त्, तौ, ती, ति, न्ति, कुलानि । जागर्यमाणम् । जागरि २ ष्यन्, माणम् । अस्य क्वसुर्नास्तीत्येके । गुण एवेत्यन्ये । जजागर्वान् । जजागराणम् । क्वसुकानयोर्न गुण इत्यपरे । जजागृवान् । व्यतिजजाग्राणः । जागरि ५ त्वा, ता, तुम्, तः २ वान् । जागर्यम् ॥ ३१ ॥

चकासृक् दीप्तौ । चकास्ति, चकास्तः । न्लुकि, चकासति, चका ३ स्सि, स्थः; स्थि । क्ये, चकास्यते । चकास्यात् । चकास्तु, चका २ स्ताम्, सतु; "सोधि-"॥

४।३।७२॥ इति वा सो लुकि; चका ३ द्धि, धि, स्तम्०। "व्यञ्जनाद्देः-"॥४।३।७८॥ लुकि स्दः; अचकात्, अचकास्ताम्, अचकासुः, "सेः स्द्धाम्-"॥४।३।७९॥ इति सेर्लुकि स् वा रुः, अचकाः। पक्षे "धुट्-"॥२।१।७६॥ इति स् द्, अचकात्, अचका ५ स्तम्, स्त, सम्, स्व, स्म। अचका २ सीत्, सिष्टाम्। अचकासि, अचकासिषाताम्। "धातोरनेक-"॥३।४।४६॥ इत्यामि, चकासां २ चकार, चक्रतुः। चकासाञ्चक्रे। चकास्यात्। चकासिषीष्ट। चकासिता २। चकासिष्यति, ते। चिचकासिषति। चकासयति। ऋदित्त्वाद् ङे न ह्रस्वः; अचचकासत्। चका ५ सत्, सतौ, सती, सति, सन्ति कुलानि। चकास्यमानम्। चकासिष्य-४ न्, न्ती, ती, माणम्। चकासां २ चकृवान्, चक्राणम्। चकासि ५ त्वा, ता, तुम्, तः २, वान्॥ ३२॥

शासूक् अनुशिष्टौ; नियोगे। शास्ति; अनुशास्ति। "इसासः-"॥४।४।११८॥ इति आस इस्, "नाम्यत-"॥२।३।१५॥ इति षः, शिष्टः शासति, शास्सि, शिष्ठः, शिष्ठ, शास्मि, शिष्वः, शिष्मः। व्यतिशि ३ ष्टे, क्षे, ड्ढ्वे। शिष्यते। शिष्यात्। व्यतिशासीत। शास्तु, शिष्टाम्; शासतु। "शास-"॥४।२।८४॥ इति शाधौ; शाधि, शिष्टम्, शिष्ट, शासा ३ नि, व, म। व्यतिशिष्टाम। "व्यञ्जनाद्देः-"॥४।३।७८॥ इति दिव्लुक् सो दश्च; अशात्, अशिष्टाम्, अशासुः, अशाः, अशात्, अशिष्टम्। व्यतिशिष्ट। "शास्त्यसू-"॥३।४।६०॥ इति अङि, अशिष ३ त्, ताम्, न्; अशिषाम। अङि, व्यत्यशि २ षत, षेताम्। अन्वशिषत स्वयमेव। नात्मनेपदेऽङित्येके। व्यत्यशासिष्ट॥ भाक॥ अशासि, अशासिषाताम्; अशासि २ ध्वम्, ड्ढ्वम्। शशास, शशासतुः; शशासि २ थ; म। शशासिमहे। शिष्यात्। शासिषीष्ट। शासिता। शासिष्यति। अशासिष्यत्। शिशासिषति। शेशिष्यते। शाशा २ सीति, स्ति, शाशिष्टः, शाशासति, शाशा २ सीषि, स्सि, शासि ४ ष्टः, ष्ट; ष्वः, ष्मः। शाशिष्यते। हौ, शाधि॥ अद्य०॥ अशाशा २ सीत्, सिष्टाम्। शासयति। "उपान्त्यस्य-"॥४।२।३५॥ इत्यत्र वर्जनान्न ह्रस्वः, अशशासत्। "उपान्त्यस्य-"॥४।२।३५॥ इत्यत्र शासेरूदित्करणं यङ्लुपि णौ ङे ह्रस्वार्थम्, अशाशसत्। अशाशासदित्यप्यन्ये। शास ५ त्, तौ, ती, ति,

न्ति कुलानि । शासिष्य ४ न्, ती, न्ती, माणम् । शिशिष्वान् । शशासानम् । ऊदित्त्वात् क्त्वि वेट्, शिष्ट्वा, शासित्वा । अनुशिष्य । वेट्त्वान्नेट्; शिष्टः, २ वान् । शिष्टिः । इकिस्ति०, शास्तिः । शासि ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥ ३३ ॥

वचंक् भाषणे । अनिट् । वक्ति, वक्तः, वचन्ति; अन्तौ वचेः प्रयोगं नेच्छन्त्येके; वक्षि, वक्थः, वक्थ, वच्मि, च्वः, च्मः । "यजादिवचेः-" ॥ ४ । १ । ७९ ॥ इति य्वृति, उच्यते । वच्यात् । वक्तु, वक्तात्, वक्ताम्, वचन्तु, बग्धि; वचानि । अवक्, अवक्ताम्, अवचन्, अवक्, अवक्तम्, अव ४ क्त, चं, च्व, च्म । "शास्त्यसू-" ॥ ३ । ४ । ६० ॥ इत्यङि, "श्वयति-" ॥ ४ । ३ । १०३ ॥ इति वोचः, अवोच ३ त्, ताम्, न्, अवोचः; अवोचाम । अवाचि, अव ९ क्षाताम्, क्षत, क्थाः, क्षाथाम्, ग्ध्वम्, ग्ड्ढ्वम्, क्षि, क्ष्वहि, क्ष्महि । "यजादिवश्-" ॥ ४ । १ । ७२ ॥ इति पूर्वस्य य्वृति, उवाच; "यजादिवचेः-" ॥ ४ । १ । ७९ ॥ इति य्वृति, पश्चात् द्वित्वे च, ऊचतुः, ऊचुः, उवचिथ, उवक्थ, ऊचथुः, ऊच, उवाच, उवच, ऊचि २ व, म । ऊचे; ऊचि २ षे, ध्वे, ऊचिमहे । उच्यात् । वक्षीष्ट । वक्ता । वक्ष्यति । अवक्ष्यत् । विवक्षति । वावच्यते । वाव १२ चीति, क्ति, क्तः, चति, चीषि, क्षि०; हौ, वावग्धि ॥ अद्य० ॥ "शास्त्यसू-" ॥ ३ । ४ । ६० ॥ इत्यत्र तिव्निर्देशान्न अङ्, अवावचीदित्यादि । शेषं पाचिवत् । वाचयति । अवीवचत् । विवाचयिषति । वचन् । वचती । उच्यमानम् । वक्ष्य २ न्, माणम् । ऊचिवान् । ऊचानम् । उक्तः, २ वान् । उक्तिः । उक्त्वा । प्रोच्य । वक्ता । वक्तुम् । घ्याणि, वाक्यम् । वाच्यमिति तु वचण् भाषणे इत्यस्य रूपम् ॥ ३४ ॥

मृजौक् शुद्धौ । "लघोः" ॥ ४ । ३ । ४ ॥ इति गुणे, पश्चात् "मृजोऽस्य-" ॥ ४ । ३ । ४२ ॥ इति वृद्धौ; "यजसृज-" ॥ २ । १ । ८७ ॥ इति षे, मार्ष्टि; संमार्ष्टि । एवं नि, प्र, परि, पूर्वोऽपि । मृष्टः; "ऋतः स्वरे वा" ॥ ४ । ३ । ४३ ॥ इति वा वृद्धौ; परिमार्जन्ति, परिमृजन्ति, मार्क्षि, मृष्टः, मृष्ट, मार्ज्मि, मृज्वः, मृज्मः । व्यतिमृष्टे । मृज्यते । मृज्यात् । व्यतिमार्जीत, व्यतिमृजीत । मार्ष्टु, मृष्टाम्, मार्जन्तु, मृजन्तु, मृड्ढि, मृष्टं, मृष्ट, मार्जानि । व्यतिमृष्टाम् । अमार्ट्, अमृष्टाम्, अमार्जन्, अमार्ट्, अमृ २ ष्टम्, ष्ट, अमार्जम्, अमृ २ ज्व, ज्म । व्यत्यमृष्ट । औदि-

त्वाद्वेटि, अमा ९ क्षींत, र्ष्टाम्, क्षुः, क्षीः, र्ष्टम्, र्ष्ट, क्षम्, क्ष्व, क्ष्म । पक्षे; अमा ९ र्जीत्, र्जिष्टाम्, र्जिषुः, र्जीः, र्जिष्टम्, र्जिष्ट, र्जिषम्, र्जिष्व, र्जिष्म। व्यत्यमृष्ट; व्यत्यमार्जिष्ट । अमार्जि; "सिजाशिष-"॥४।३।३५॥ इति किन्त्वे, अमृक्षाताम्; अमार्जिषाताम्; अमृष्ठाः अमार्जिष्ठाः; अमृ २ ड्ढ्वम्, ग्ड्ढवम्; अमार्जि २ ध्वम्, ड्ढवम्, अमृक्षि, अमार्जिषि। ममार्ज, ममृजतुः, ममार्जतुः, ममृजुः, ममार्जुः, ममार्जिथ; ममृजिम, ममार्जिम । ममृजे, ममार्जे, ममृजाते, ममार्जाते; ममृजिमहे, ममार्जिमहे। मृज्यात् । मृक्षीष्ट; मार्जिषीष्ट। मार्ष्टा, मार्जिता। मार्क्ष्यति, मार्जिष्यति । मिमार्जिषति, मिमृक्षति । मरीमृज्यते । मरी रि र् ३ मृजीति, मरी, रि, र् ३ मार्जीति, मर्, रि, री ३ मार्ष्टि । एवं तिवि ९ रूपाणि । मरि री र् ३ मृष्टः, मरि री र् ३ मृजति, मरि र् री ३ मार्जति । प्रमार्जयति । "ऋद्द-"॥४।२।३७॥ इति वा ऋः, प्रामीमृजत्; प्राममार्जत् । प्रमृज २ न्, ती । प्रमार्जन्, ती । प्रमृज्यमानम् । मार्क्ष्यन् । मार्क्ष्यमाणम्। मार्जिष्य २ न्, माणम् । वेट्त्वान्नेट्, मृष्टः २, वान् । मृष्ट्वा, मार्जित्वा । प्रमार्ज्य । मार्ष्टा, मार्जिता । मार्ष्टुम्, मार्जितुम् । मार्ष्टव्यम्, मार्जितव्यम् । मार्जनीयम् । क्यपि; मृज्यम्। घ्यणि, मार्ग्यम् ॥ ३५ ॥

विदक् ज्ञाने । "तिवां णवः-"॥४।२।११७॥ इति वा णवाद्याः, वेद, विदतुः, विदुः, वेत्थ, विदथुः, विद, वेद, विद्व, विद्म । पक्षे वेत्ति, वित्तः, विदन्ति, वेत्सि, वित्थः, वित्थ, वेद्मि, विद्वः, विद्मः । "समो गम्-"॥३।३।८४॥ इति कर्मण्यसत्यात्मनेपदे । "तौ मुमो-"॥१।३।१४॥ इत्यनुस्वारानुनासिकौ; संवित्ते, संवित्ते, संविदाते; "वेत्तेर्नवा"॥४।२।११९॥ इति अन्तो वा रतिः; संविद्रते । पक्षे; "अनतोऽन्त-"॥४।२।११४॥ इत्यति, संविदते, संवित्से, दाथे, द्ध्वे, दे, द्वहे, द्महे। साप्ये तु परस्मैपदम्, संवेत्ति शास्त्रम् । क्ये, विद्यते । विद्यात् । संविदीत । "पञ्चम्याः कृग्"॥३।४।५२॥ इति वा आमि, विदाङ्करोतु; कित्त्वान्न गुणः, विदाङ्कु ५ रुताम्, र्वन्तु, रु, रुतम्, रुत, विदाङ्करवा ३ णि, व, म । संविदाङ्कु ६ रुताम्, र्वाताम्, र्वताम्, रुष्व, र्वाथाम्, रुध्वम्, संविदाङ्कर ३ वै, वावहै, वामहै । पक्षे । वेत्तु, वित्ताम्, विदन्तु, विद्धि, वित्तम्, वित्त, वेदा ३ नि, व, म ।

संवित्ताम्, संविदाताम् । वा रतिः; संविद्रताम्, संविदताम्, संवित्स्व, संवि २ दाथाम्, दूध्वम्, संवे ३ दै, दावहै, दामहै । ह्य० ॥ अवेत् । अवित्ताम्, "सिज्बिद-"॥४।२।९२॥ इति पुसि; अविदुः । अविदन्, इत्यपि कश्चित् । "सेः सुद्धाम्-"॥४।३।७९॥ इति सिवूलुक् दो वा रुश्च । अवेत्; अवेः, अवित्तम, अवेदम् । समवि ५ त्त, दाताम्, द्रत, दत, त्थाः ॥ अद्य० ॥ अवेदीत् । अवे ३ दिष्टाम्, दिषुः, दीः । समवेदिष्ट, समवेदिषाताम् । अवेदि, अवेदि ३ षाताम्; ध्वम्, ड्ढम् । "वेत्तेः कित्"॥३।४।५१॥ इति वा आमि; विदाञ्च १० कार, क्रतुः, क्रुः, कर्थ, क्रथुः, क्र, कर, कार, कृव, कृम । विदाम्बभू ९ व, वतुः, वुः, विथ, वथुः, व, व, विव, विम । विदामा ९ स, सतुः, सुः, सिथ, सथुः, स, स, सिव, सिम । संविदाञ्च ९ क्रे, क्राते इत्यादि । संविदांबभूव, आस वेत्यादि च । पक्षे; विवेद, विविदतुः, विविदुः, विवेदिथ, विवि २ दथुः, द, विवेद, विवि-दि २ व, म । संविविदे; संविविदिमहे ॥ भाक ॥ विदांच ९ क्रे, क्राते, क्रिरे, कृषे, क्राथे, कृढ्वे, क्रे, कृवहे, कृमहे । विदांबभू १० वे, वाते, विरे, विषे, वाथे, विध्वे, विढ्वे, वे, विवहे, विमहे । विदामा ९ हे, साते, सिरे, सिषे, साथे, सिध्वे, से, सिवहे, सिमहे । संविदां ३ चक्रे, बभूवे, आहे इत्यादि । पक्षे, वि-विदे, विविदाते; विविदिध्वे । विद्यात् । वेदि २ षीष्ट; षीध्वम् । वेदिता । वेदि-ष्यति । "रुदविद-"॥४।३।३२॥ इति क्त्वासनोः कित्त्वे; विविदिषति । वेविद्यते । वेविदीति, वेवेत्ति, वेवित्तः, वेविदति; "वेत्तेर्नवा"॥४।२।११६॥ इत्यत्र तिवूनिर्देशाद्यङ्लुपि न रत् । व्यतिवेविदते । "समो गमृ-"॥३।३।८४॥ इत्यात्मने-पदे, संवेवित्ते, संवेविदाते० ॥ क्ये, वेविद्यते । ह्य० ॥ अवे ७ विदीत्, वेत्, वित्ताम्, विदुः, विदीः, वेः, विदम् । अद्य० ॥ अवेवे २ दीत्, दिष्टाम् । "वेत्तेः कित्"॥३।४।५१॥ इत्यत्र तिवूनिर्देशाद्यङ्लुपि आम् वा न, किन्तु "धातोरनेक-"॥३।४।४६॥ इति नित्यं आम्; वेवेदांचकार । वेदयति; निवेदयति । अवीविदत् । विवेदयिषति । सति "वा वेत्तेः क्सुः"॥५।२।२२॥ विद्वान् । विदुषी । पक्षे, विदन् । विदती । वेदिष्य ३ न्, न्ती, ती । संविदानः । विद्यमानम् । वेदिष्यमाणम् । विविद्वान् । संविविदानः । विदितः २, वान् । भावे तु; विदितमनेन । वेदि २, ता, तुम् । विदित्वा । संविद्य ॥ ३६ ॥

हनंक् हिंसागत्योः । अनिट् । हन्ति; प्रतिहन्ति; प्रहन्ति; निहन्ति; "नेर्ङ्मा-दा-"॥२।३।७९॥ इति णिः, प्रणिहन्ति । "यमिरमि-"॥४।२।५५॥ इति नलुकि; हतः, "गमहन-"॥४।२।४४॥ इत्युपान्त्यलुकि, "हनो घ्न-"॥२।१।११२॥ इति घ्नि, घ्नन्ति; "हनो घि"॥२।३।९४॥ इति णत्वनिषेधे; प्रघ्नन्ति । "क्रियाव्यतिहार-"॥३।३।२३॥ इत्यत्र हिंसार्थवर्जनात्परस्मै, व्यतिघ्नन्ति; हंसि, हथः, हथ, हन्मि, हन्वः, हन्मः । "वमि वा"॥२।३।८३॥ इति वा णत्वे; प्रहण्मि, प्रहन्मि, प्रहण्वः, प्रहन्वः, प्रहण्मः, प्रहन्मः; अन्तर्हण्मः, अन्तर्हन्मः । "आङो यम-"॥३।३।८६॥ इत्यात्मनेपदे कर्मण्यसति; आहते । स्वाङ्गे कर्मणि; आहते शिरः । नेह, आहन्ति शिरः शत्रोः । आघ्नाते, आघ्नते, आहसे, आघ्नाथे, आहध्वे, आघ्ने, आह २ न्वहे, न्महे; प्राहण्वहे, प्राहण्महे । क्ये, हन्यते । "हनः"॥२।३।८२॥ इति णत्वे, प्रहण्यते; पराहण्यते; निर्हण्यते; अन्तर्हण्यते । हन्यात् । आघ्नीत । हन्तु, हतात्, द्, हताम्, घ्नन्तु, "शास-"॥४।२।८४॥ इति जहौ; जहि, हतात् हतम्, हत, हना ३ नि, व, म । आहताम्, आघ्नाताम्; आहस्व ॥ ह्य०॥ अहन्, अहताम्, अघ्नन्, अहन्, अहतम्, अहत ॥ अद्य०॥ "अद्यतन्यां वा त्व-"॥४।४।२२॥ इति वधेऽनुस्वारेत्त्वेऽप्यनेकस्वरत्वादिटि, अल्लुकः स्थानित्वेन "व्यञ्जनादेः-"॥४।३।४७॥ इति न वृद्धिः; अवधीत्, अवधिष्टाम्, अवधिषुः । "वात्मने"॥३।४।६३॥ आवधिष्ट, आवधि ८ षाताम्, षत; षाथाम्, ध्वम्, ड्ढ्वम्, षि० । पक्षे, "हनः सिच्"॥४।३।३८॥ इति सिचः कित्त्वान्नलुक्, "धुड्ह्रस्व-"॥४।३।७०॥ इति सिच् लुक् च, आहत, आहसाताम्, आह ८ सत, थाः, साथाम्, द्ध्वम्, ध्वम्, सि, स्वहि, स्महि ॥ भाक ॥ वा वधादेशो ञिचि; अवधि; इटि, अवधिषाताम्०॥ पक्षे ञिचि, "ञिणवि घन्"॥४।३।१०१॥ अघानि, "स्वरग्रह-"॥३।४।६९॥ इति वा ञिटि, अघानि ९ षाताम्, षत, ष्ठाः, षाथाम्, ध्वम्, ड्ढवम्, षि, ष्वहि, ष्महि। तत्पक्षे; अह ९ साताम्, सत इत्यादि । जघान, जघ्नतुः, जघ्नुः; "अङे हि-"॥४।१।३४॥ इति हो घः, जघनिथ, जघन्थ, जघ्नथुः, जघ्न, जघान, जघन, जघ्निव, जघ्निम । आजघ्ने; आजघ्निमहे । आशीर्विषये, "हनो वध-"॥४।४।२१॥ इति वधे, वध्यात्, वध्यास्ताम् । आवधिषीष्ट, आवधिषीयास्ताम्०। अत्र विषय-

विज्ञानात् पूर्वमेव वधादेशे इट् सिद्धः; अन्यथा तु विहितव्याख्याने एकस्वरत्वात् इट् न स्यात् । भाक । अत्रावितिं निषेधात् ञिविषये न वधः, घानिषीष्ट । हन्ता; आहन्ता; घानिता । "हनृतः-"॥४।४।४९॥ इतीटि; हनिष्यति, ते; घानिष्यते । अहनिष्यत्, त; अघानिष्यत । कर्मकर्त्तरि ञिक्यात्मनेषु प्राप्तेषु "णिस्नु-"॥३।४।९२॥ इति आत्मनेपदाऽकर्मकत्वाञ्जिचो "भूषार्थ-"॥३।४।९३॥ इति क्यस्य च निषेधात् आत्मनेपदे; आहते । आवधिष्ट । आहत । आहन्ता । आहनिष्यते वा गौः स्वयमेव; "णिस्नु-"॥३।४।९२॥ इत्यत्र ञिच्निषेधात् "भूषार्थ-" ॥३।४।९३॥ इति ञिट्निषेधो न भवति पृथग्योगात् । आघानिष्ट । आघानिता । आघानिषीष्ट गौः स्वयमेव । "स्वरहन्-"॥४।१।१०४॥ इति दीर्घे, जिघांसति । "हनो घ्नीर्वधे"॥४।३।९९॥ जेघ्नीयते । वधेऽपि विकल्पेन घ्नीत्यन्ये; त्वं जेघ्नीयसे, जङ्घन्यसे । घ्नि इत्यकृत्वा घ्नी इति निर्देशाद्यङ्लुप्यपि घ्नी; जेघ्नेति, जेघ्नयीति, जेघ्नीतः, जेघ्नियति । क्ये, जेघ्नीयते । हौ, जेघ्नीहि । शेषं ञिस्थानोक्तवत् । अन्येतु यङ्लुपि घ्नीं नेच्छन्ति । वधादन्यत्र तु, गतौ; जङ्घन्यते । जङ्घनीति, जङ्घन्ति । "यमिरमि-"॥४।२।५५॥ इति न्लुकि; "अङे हि-"॥४।१।३४॥ इति घे, जङ्घतः, जङ्घ्नति, जङ्घनीषि, जङ्घंसि, जङ्घथः, जङ्घथ, जङ्घ ४ नीमि, न्मि, न्वः, न्मः । क्ये, जङ्घन्यते । हौ, "शासस्-"॥४।२।८४॥ इति जहौ, जहि; नेच्छन्त्यन्ये; जङ्घहि ॥ ह्य० ॥ अजङ्घन्, अजङ्घनीत्, अजङ्घताम्, अजङ्घ्नुः, अजङ्घन्; अजङ्घत० । अद्यतन्यादौ तु पाचिवत् । येतु "यमिरमि-"॥४।२।५५॥ इति लुगभावं क्ङिति "अहन्पञ्चम-"॥४।१।१०७॥ इति हन्तेरपि दीर्घत्वं चेच्छन्ति तन्मते तसि; जङ्घान्तः । थसि, जङ्घान्थः । हौ, जङ्घांहि इत्याद्यपि भवति । "ञ्णिति घात्"॥४।३।१००॥ घातयति । अजीघतत्, अजीघतताम् । घ्नन्, "हनो घि"॥२।३।९४॥ इति न णः, प्रघ्नन् । घ्नती । आघ्नानः । हन्यमानम् । हनिष्य ४ न्, ती, न्ती, माणम् । "गमहन-"॥४।४।८३॥ इति वेटि, जघ्निवान्, जघन्वान् । आजघ्नानः । हतः, २ वान् । हत्वा । "यपि"॥४।२।५६॥ इति न्लुकि, प्रहत्य । हन्ता । हन्तुम् । हननीयम् । हन्तव्यम् । घ्यणि, घात्यम् ॥ ३७ ॥

वशक् कान्तौ; इच्छायाम् । "यज-"॥२।१।८७॥ इति षः, वष्टि; "वशेर-

यङि"॥४।१।८३॥ इति य्वृति; उष्टः, उशन्ति, वक्षि, उष्ठः, उष्ठ, वश्मि, उश्वः, उश्मः । उश्यते । उश्यात् । वष्टु, उष्टात्, उष्टाम्, उशन्तु । "हो धुट्-"॥२।१।८२॥ इति धिः, "यज-"॥२।१।८७॥ इति षः, "तवर्गस्य-"॥१।३।६०॥ इति ढः, "तृतीयस्तृ-"॥१।३।४९॥ इति डः, उड्ढि, वशानि । अवट्, ड्, औष्टाम्, औशन्, अवट्, ड्, औष्टम्, औष्ट, अवशम्, औश्व, औश्म । औश्यत । अवाशीत्, अवशीत्, अवाशि, अवशिषाताम् । "यजादिवश्-"॥४।१।७२॥ इति पूर्वस्य य्वृति; उवाश, ऊशतुः, ऊशुः, उवशिथ, ऊशथुः, ऊश, उवाश, उवश, ऊशि २ व, म । ऊशे; ऊशिमहे । उश्यात् । वशिषीष्ट । वशिता २ । वशिष्यति । विवशिषति । वावश्यते । वाव १२ शीति, ष्टि, ष्टः, शति, शीषि, क्षि, ष्ठः, ष्ठ, शीमि, श्मि, श्वः, श्मः, यङ्लुप्यपि क्ङिति परे य्वृदित्यन्ये, वावष्टि, वोष्टः, वोशति । वाशयति । अवीवशत् । उशन् । उशती । वशिष्यन् । ऊशिवान् । ऊशानम् । उशितः, २ वान् । "क्त्वा"॥४।३।२९॥ इति न कित्, वशित्वा । प्रोश्य । वशि २ ता, तुम् ॥ ३८ ॥

असक् भुवि; भूः सत्ता । अस्ति; प्रादुरस्ति । "श्नास्त्योः-"॥४।२।९०॥ इत्यलुकि; स्तः; प्रादुःस्तः; अनुस्तः; निस्तः; सन्ति; "प्रादुरुपसर्ग-"॥२।३।५८॥ इति षे, प्रादुःषन्ति; अभिषन्ति; निषन्ति; विषन्ति । शिड् नान्तरेऽपि; निःषन्ति, असि, "अस्तेः सि-"॥४।३।७३॥ इति सो लुक्; स्थः, स्थ; अस्मि, स्वः, स्मः, प्रादुःस्मः; अनुस्मः । व्यतिस्ते; "प्रादुः-"॥२।३।५८॥ इति षे, व्यति २ षाते, षते; "अस्तेः सि-"॥४।३।७३॥ इति सो लुकि; व्यतिसे, व्यति ३ षाथे, द्ध्वे, ध्वे । ह्रस्वेति, व्यति ३ हे, स्वहे, स्महे । स्यात् । षत्वे, प्रादुःष्यात्; अभिष्यात्; निःष्यात्, स्याताम्, स्युः, स्याः, स्यातम्, स्यात, स्याम्, स्याव, स्याम । व्यतिषीत । अस्तु, स्तात्, स्ताम्, सन्तु, "शाससूहनः-"॥४।२।८४॥ एधि, स्तम्, स्त, असा ३ नि, व, म । व्यति ७ स्ताम्, षाताम्, षताम्, स्व, षाथाम्, ध्वम्, द्ध्वम्, व्यत्य ३ सै, सावहै, सामहै । "सः सिज-"॥४।३।६५॥ इति ईति, आसीत्, "एत्यस्तेः-"॥४।४।३०॥ इति वृद्धिः; आस्ताम्, आसन् । माङा योगे तु न वृद्धिरल्लुक् तु भवेत्; मास्म भवन्तः सन् । आसीः, आस्तम्,

आस्त, आसम्, आस्व, आस्म । व्यत्या १० स्त, साताम्, सत, स्थाः, साथाम्, ध्वम्, द्ध्वम्, सि, स्वहि, स्महि । "अस्तिब्रुवोः-"॥४।४।१॥ इति भ्वादेशे; भूयते । अभूत् । बभूव । भूयात् । भविता । भविष्यति । बुभूषति । बोभूयते । एवमशिति भूवत् । सन् । सती । विषन् ॥ ३९ ॥

यङ्लुक्च । सर्वे धातवो यङ्लुबन्ताः कित्करणाददादौ शव्प्रत्ययानर्हाः परस्मैपदिनश्च । बोभवीति, बोभोति इत्यादि । "क्रियाव्यतिहारे-"॥३।३।२३॥ इत्यात्मनेपदे "शीङोरत्"॥४।२।११५॥ इत्यत्र ङिन्निर्देशेन यङ्लुबन्तस्याग्रहणाद्न्तोरदभावे "अनतोऽन्त-"॥४।२।११४॥ इत्यति; "योऽनेक-"॥२।१।५६॥ इति यत्वे च; व्यतिशेश्यते । "शीङ एः-"॥४।३।१०४॥ इत्यत्रापि ङित्त्वात्; तिवाशवा इति यङ्लुबन्तस्याग्रहणम् तेन न एः; व्यतिशेशीते । यङ्लुबन्तमात्मनेपदे न प्रयुज्यते इत्येके । भावकर्मणोरात्मनेपदे न प्रयुज्यते इत्यन्ये । यङ्लुबन्तस्य चर्करीतं, चर्करीतिश्च पूर्वेषां संज्ञा । यङ्लुबन्तं छन्दस्येवेति केचित् ॥ ४० ॥

अथात्मनेपदिनः ।

इंङ्क् अध्ययने । अनिट् । अधीते, अधीयाते, अत्र इय्; अधीयते, अधीषे, अधीयाथे, अधी ४ ध्वे, ये, वहे, महे । क्ये, अधीयते । अधीयीत । अधीयेत । अधीताम् । ऐवि, अध्ययै । अधीयताम् । अध्यैत, अध्यैयाताम्; इयादेशे वृद्धिः; अध्यैयत, अध्यैथाः, अध्यैयाथाम्, अध्यैध्वम्, अध्यैयि, अध्यैवहि, अध्यैमहि । क्ये, अध्यैयत । "वाद्यतनीक्रिया-"॥४।४।२८॥ इति वा गीङ्; अध्यगीष्ट, अध्यगी ५ षाताम्, षत, ष्ठाः; ड्ढ्वम्, ढ्वम् । पक्षे वृद्धौ, अध्यैष्ट, अध्यै ५ षाताम्, षत, ष्ठाः; ड्ढ्वम्, ढ्वम् । भाक । अध्यगायि, अध्यायि, अध्यगीषाताम्, अध्यैषाताम्, शेषं कर्तृवत् । ञिटि, अध्यगायिषाताम्, अध्यायिषाताम्, अध्यगायि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम् । अध्यायि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम् । "गाः परोक्षायाम्"॥४।४।२६॥ अधिजगे, अधिज ३ गाते, गिरे, गिषे । अध्ये २ षीष्ट; षीढ्वम् । अध्यायि ३ षीष्ट; षीढ्वम्, षीध्वम् । अध्येता २; अध्यायिता । अध्येष्यते २; अध्यायिष्यते । वा गीङि, अध्यगीष्यत; अध्यैष्यत । ञिटि,

अध्यगायिष्यत, अध्यायिष्यत । "सनीङश्च" ॥४।४।२५॥ इति गमुः; "गमोऽनात्मने" ॥४।४।५१॥ इत्यत्र निषेधात्, आत्मनेपदे नेट् । "स्वरहन्-" ॥४।१।१०४॥ इति दीर्घश्च; अधिजिगांसते विद्याम् । अधिजिगां ४ स्यते, सिष्यते, समानः, सिष्यमाणः । आत्मनेपदाभावे तु इटि; अधिजिगमिषिता शास्त्रस्य । अधिजिगमिषुः । अधिजिगमिषि २ तः, तव्यम् । इह इटं नेच्छन्त्येके तन्मते; अधिजिगांसते । अधिजिगांसिष्यते । अधिजिगांसिता । अधिजिगांसुः । अधिजिगांसितव्यमित्याद्येव भवति । "णौ क्रीजीङः" ॥४।२।१०॥ इत्यात्त्वे, "अर्त्ति-" ॥४।२।२१॥ इति पौ, "चल्याहारार्थेङ्-" ॥३।३।१०८॥ इति परस्मैपदे च; सूत्रमध्यापयति शिष्यम् । "णौ सन्ङे वा" ॥४।४।२७॥ गाः ङे, अध्यजीगपत्; अध्यापिपत् । सनि, अधिजिगापयिषति, अध्यापिपयिषति । अधीयानः । अध्येष्यमाणः । अधीयमानम् । अधिजगानः । अधीतः, २ वान् । अधीतिः । अधीत्य । अध्ये २ ता, तुम् । अध्येयम् । क्विपि, अधीत् । "धारीङोऽकृच्छ्रेऽतृश्" ॥५।२।२५॥ अधीयन् सिद्धान्तम् । "तृन्नुदन्त-" ॥२।२।९०॥ इति न षष्ठी । "इष्टादेः" ॥७।१।१६८॥ इति क्तान्ताद् इनि, अधीती शास्त्रे, अत्र "व्याप्ये क्तेनः" ॥ २।२।९९ ॥ इति सप्तमी ॥ ४१ ॥

शीङ्क् स्वप्ने । सेट् । "शीङ एः शिति" ॥४।३।१०४॥ शेते; संशेते; अनुशेते; अतिशेते; "अधेः शीङ्-" ॥२।२।२०॥ इत्याधारस्य कर्मत्वे, ग्राममधिशेते, शयाते, "शीङोरत्" ॥४।२।११५॥ इत्यन्तो रति; शेरते, शेषे, शयाथे, शेध्वे, शये, शेवहे, शेमहे । "क्ङिति यि शय्" ॥४।३।१०५॥ शय्यते । शयीत । शेताम्, शयाताम्, शेरताम्, शेष्व, शयाथाम् । अशेत, अशयाताम्, अशेरत । इ, अशयि; अशयिष्ट, अशयिषाताम् । अशायि, अशयिषाताम्, अशायिषाताम्, अशयिध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्; अशायि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, अशयिषि; अशायिषि । शिश्ये, शिश्याते; शिश्यि २ ढ्वे, ध्वे; शिश्यिमहे । शयिषीष्ट २, शायिषीष्ट; शयि २ षीढ्वम्, षीध्वम्, शायि २ षीढ्वम्, ध्वम् । शयिता २, शायिता । शयिष्यते २; शायिष्यते । शिशयिषते । "क्ङिति यि शय्" ॥४।३।१०५॥ शाशय्यते । शेषं शयादेशे व्यञ्जनान्तत्वाद् यङन्तमचवत् । "अतः" ॥४।३।८२॥ इति अल्लुकि, 'योऽ-

शिति"॥४।३।८०॥ इति यूलुकि च; शाशायिता। अन्येतु लाक्षणिकव्यञ्जनाद् यलोपं नेच्छन्ति; शाशय्यिता। शेशेति, शेशयीति, शेशीतः, शेश्यति, शेशेषि। व्यतिशे ३ शीते, श्याते, श्यते । श्येश्यत् । "न डीङ्शीङ्-"॥४।३।२७॥ इत्यत्र ङिन्निर्देशाद्यङ्लुपि क्तयोः कित्त्वमेव; शेश्यितः, २ वान् । यपि; संशेशीय । शेषं लुपि जिवत् ।"अणिगि प्राणि-"॥३।३।१०७॥ इति परस्मैपदे, मैत्रं शाययति । अशीशयत् । शयानः । शयिष्यमाणः । शय्यमानम् । शिश्यानः । "न डीङ्-"॥४।३।२७॥ इति कित्त्वाभावे, शयितः, २ वान् । "श्लिषशीङ्-"॥५।१।९॥ इति साप्यादपि वा कर्त्तरि क्ते; अतिशयितो गुरुं शिष्यः । पक्षे कर्मणि क्ते; अतिशायितो गुरुः शिष्येण । शयित्वा । उपशय्य । शयि २ ता, तुम्। शेयम् ॥४२॥

ह्नुङ्क् अपनयने; अपलापे । अनिट् । "मनयवल-"॥१।३।१५॥ इति मोऽनुनासिकानुस्वारौ, किन्ह्नुते; किंह्नुते; अपह्नुते; "श्लाघह्नु-"॥२।२।६०॥ इति चतुर्थ्याम्, चैत्राय निह्नुते, ह्नुवाते, ह्नुवते, ह्नुषे। ह्नूयते। ह्नुवीत। ह्नुताम्। अह्नुत, अह्नुवाताम्, अह्नुवत । अह्नोष्ट, अह्नोषाताम् । अह्नावि, अह्नोषाताम्, अह्नाविषाताम् । जुह्नुवे, जुह्नुवाते । ह्नोषीष्ट, ह्नाविषीष्ट । ह्नोता, ह्नाविता । ह्नोष्यते; ह्नाविष्यते । अपजुह्नूषते । जोह्नूयते । ह्नावयति । अजुह्नुवत् । ह्नुवानः । ह्नूयमानम् । ह्नोष्यमाणः । ह्नुतः, २ वान्। ह्नुत्वा । अपह्नुत्य । ह्नो २ ता, तुम् । ह्नव्यम्। ह्नाव्यम् ॥ ४३ ॥

षूङौक् प्राणिगर्भविमोचने । सूते, सुवाते, सुवते, सूषे, सुवाथे, सूध्वे, सुवे, सूवहे, सूमहे। सूयते । सुवीत। सूताम्, सुवाताम, सुवताम्, सूष्व, सुवाथाम्, सूध्वम् । "सूतेः पञ्चम्याम्"॥४।३।१३॥ इति गुणाभावे, उवि च; सुवै, सुवावहै, सुवामहै । असूत । औदित्वाद्वेटि, असोष्ट, असविष्ट, असावि, असोषाताम्, असविषाताम् । ञिटि, असाविषाताम् । सुषुवे, "नाम्यन्त-"॥२।३।१५॥ इति षः; सुषुवाते; सुषुविषे । सोषीष्ट, सविषीष्ट; साविषीष्ट । सोता, सविता; साविता । सोष्यते, सविष्यते; साविष्यते । "ग्रहगुहश्च-"॥४।४।५९॥ इति नेटि, "णिस्तोरेव-"॥२।३।३७॥ इति नियमेन न षत्वे, सुसूषते । सोषूयते । सोषोति, सोषवीति, सोषूतः, सोषुवति । शेषं भूवत् । सोषवाणि, सोषवा २ व, म ।

"सूतेः पञ्चम्याम्"॥४।३।१३॥ इत्यत्र तिव्निर्देशाद्गुणनिषेधो न भवति । सावयति । असूषवत् । णौ सनि, सुषावयिषति । सुवानः । सविष्यमाणः । सूयमानम् । सुषुवाणः । "उवर्णाद्"॥४।४।५८॥ इति किति नेट्; सूतः, २ वान् । सूतिः । "निर्दुःसुवेः-"॥२।३।५६॥ षः, निःषूतिः । दुःषूतिः । सूत्वा । प्रसूय । सो २ ता, तुम् । सवि २ ता, तुम् ॥ ४४ ॥

पृचैङ्क् सम्पर्चने; मिश्रणे । पृक्ते; संपृक्ते, पृचाते, पृचते, पृक्षे, पृचाथे, पृग्ध्वे; "तृतीय-"॥१।३।४९॥ इति गः, पृचे, पृच्वहे, पृच्महे । पृच्यते । अपर्चिष्ट । पपृचे । पृचिता । सम्पर्चिष्यते । संपिपर्चिषते । परीपृच्यते । पर्पर्क्ति; पर्षृचीति । सम्पर्चयति । अपीपृचत्; अपपर्चत् । पृचानः । पर्चिष्यमाणः । पार्चि २ ता, तुम् । पर्चित्वा । संपृच्य । ऐदित्त्वात् क्तयोर्नेट्; संपृक्तः, २ वान् । "ऋदुपान्त्य-" ॥५।१।४१॥ इति क्यपि; संपृच्यः ॥ ४५ ॥

ईडिक् स्तुतौ । ईट्टे, ईडाते, ईडते । "ईशीडः"॥४।४।८७॥ इतीटि; ईडिषे, ईडाथे, ईडिध्वे, ईडे, ईड्वहे, ईड्महे । ईड्यते । ईडीत । ईट्टाम्, ईडाताम्, ईडताम्, ईडिष्व, ईडाथाम्, ईडिध्वम्, ईडै, ईडावहै, इडामहै । ऐट्ट, ऐडाताम्, ऐडत, ऐट्ठाः, ऐडाथाम्, ऐड्ढ्वम्, ऐडि, ऐड्वहि, ऐड्महि । ऐडिष्ट, ऐडिषाताम्०। ऐडि । ईडां ३ चक्रे, बभूव, आस । ईडिषीष्ट । ईडिता । ईडिष्यते । ऐडिष्यत । ईडिडिषते । ईडयति । ऐडिडत् । ईडानः । ईडिष्यमाणः । ईडाञ्चक्राणः । ईडि ५ ता, तुम्, त्वा, तः, २ वान् । घ्यणि, ईड्यः ॥ ४६ ॥

ईरिक् गतिकम्पनयोः । ईर्त्ते, ईराते, ईरते, ईर्षे, ईराथे, ईर्ध्वे । ईर्यते । ईरीत । ईर्त्ताम्, ईराताम्, ईरताम्, ईर्ष्व, ईराथाम्, ईर्ध्वम्, ईरै । ऐर्त्त, ऐराताम्, ऐरत, ऐर्थाः । ऐरिष्ट, ऐरिषाताम् । ऐरि । ईराञ्चक्रे । ईरिषीष्ट । ईरिता । ईरिष्यते । ऐरिष्यत । ईरिरिषते । ईरयति, ते । ऐरिरत् । ईराणः । ईरि ५ ता, त्वा, तुम्, तः, २ वान् । घ्यणि, ईर्यः ॥ ४७ ॥

ईशिक् ऐश्वर्ये । "स्मृत्यर्थ-"॥२।२।११॥ इति वा कर्मणः कर्मत्वे "शेषे"॥ २।२।८१॥ इति षष्ठ्याम्; भुव ईष्टे; भुवमीष्टे, ईशाते, ईशते; "ईशीडः-"॥४।४।८७॥ इतीटि; ईशिषे, ईशाथे, ईशिध्वे । ईश्यते । ईशीत । ईष्टाम्, ईशाताम्, ईशताम्

ईशिष्व; ईशिध्वम्, ईशै। ऐष्ट, ऐशाताम्, ऐशताम्, ऐष्ठाः, ऐशाथाम्। "यज-" ॥२।१।८७॥ इति षे, "तवर्ग-"॥१।३।६०॥ इति धो ढे, "तृतीय-"॥१।३।४९॥ इति डे; ऐड्ढ्वम्, ऐशि, ऐश्वहि । ऐशिष्ट, ऐशिषाताम्। ऐशि। ईशां ३ चक्रे, बभूव, आस । ईशिषीष्ट। ईशिता । ईशिष्यते । ऐशिष्यत। ईशिशिषते। ईशयति । ऐशिशत् । ईशानः। ईशिष्यमाणः। ईशाञ्चक्राणः। ईशि ५ ता, तुम्, त्वा, तः, २ वान् ॥ ४८ ॥

वसिक् आच्छादने। वस्ते पटम्; वसाते, वसते, वस्से; "सो धि-"॥४।३।७२॥ इति वा स्लुकि, वध्वे, वद्ध्वे। वस्यते। वसीत। वस्ताम, वसाताम्, वसताम्। अवस्त, अवसाताम, अवसत, अवस्थाः; अव २ ध्वम्, द्ध्वम्। अवसिष्ट । अवासि, अवसिषाताम् । "न शस-"॥४।१।३०॥ इति न एः, ववसे, ववसाते । वसिषीष्ट। वसिष्यते । वसानः। वसिष्यमाणः। ववसानः। वसि ५ ता, तुम्, त्वा, तः, २ वान् ॥ ४९ ॥

आङः शासूकि इच्छायाम् । "क्कौ"॥४।४।११९॥ इत्येव सिद्धे; "आङः"॥ ४।४।१२०॥ इति वचनम, आङः परस्य क्काबेवेति नियमार्थम्; तेन शास्तेरासो न इस्; आयुराशास्ते, आशा ९ साते, सते, स्से, साथे, ध्वे, द्ध्वे, से, स्वहे, स्महे । आशास्यते । आशासीत। आशास्ताम्; आशास्व; आशाध्वम्, आशाद्ध्वम् । आशास्त; आशासि २ ष्ट, षाताम् । आशासि। आशशासे; आशशासिषे । आशासि ३ षीष्ट, ता, ष्यते । आशिशासिषते । आशाशास्यते । आशाशा २ सीति, स्ति । अशासयति । "उपान्त्यस्य-"॥४।२।३५॥ इत्यत्र शास्तेरेव निषेधात् ह्रस्वे; आशीशसत् । अस्यापि ह्रस्वनिषेध इत्यन्ये; आशशासत्। आशासानः । आशासिष्यमाणः । आशासि २ ता, तुम् । ऊदित्वात् क्त्वि वेट्; अत एवोत्तरपदान्तस्यापि क्त्वो न यब्, यपि हि इट्प्राप्तिरेव नास्ति । आशास्त्वा; आशासित्वा । यपमिच्छन्त्येके; आशास्य । वेट्त्वात् क्तयोर्नेट्; आशास्तः, २ वान् । मतेनेटि; आशासितः, २ वान् ॥५०॥

आसिक् उपवेशने । आस्ते; उदास्ते; उपास्ते । "कालाध्व-"॥२।२।२३॥ इति कर्मत्वे; मासमास्ते । "अधेः शीङ्-"॥२।२।२०॥ इत्याधारस्य कर्मत्वे, ग्राम-

मध्यास्ते, आसाते, आसते, आस्से, आसाथे, आद्ध्वे, आध्वे; "सो धि-"॥४।३।७२॥ इति वा सलुक्, आसे, आस्वहे, आस्महे । आस्यते । आसीत, आसीयाताम्, आसीरन् । आस्ताम्, आसाताम्, आसताम् । आस्त, आसाताम्, आसत । आसिष्ट, आसिषाताम्, आसिषत । आसि । "दयाय-"॥३।४।४७॥ इत्यामि; आसां ३ चक्रे, बभूव, आस। पर्युपासां ३ चक्रे । आसि ३ षीष्ट, ता, ष्यते। अध्यासिसिषते। "अणिगि प्राणि-"॥३।३।१०७॥ इति परस्मैपदे, आसयत्यन्यम्। आसिसत् । आनशि, "आसीनः"॥४।४।११५॥ इति निपातनादासीनः; उदासीनः; उपासीनः; अध्यासीनः । आसिष्यमाणः । आस्यमानम् । आसाञ्चक्राणः । आसितः, २ वान् । आसि ३ ता, तुम्, त्वा । उपास्य ॥ ५१ ॥

णिसुकिं चुम्बने । निंस्ते; णपाठात् "अदुरुपसर्ग-"॥२।३।७७॥ इति णत्वे, प्रणिंस्ते; परिणिंस्ते । वा णत्वमित्यन्ये । प्रणिंस्ते, प्रनिंस्ते, निंसाते; निंसते; "नाम्यन्तस्था-"॥२।३।१५॥ इत्यत्र शिटा नकारेण चान्तरेपीति प्रत्येकं वाक्यपरिसमाप्तेरुभयव्यवधाने न षत्वम्; निंस्से, निंसाथे । "सो धि-"॥४।३।७२॥ इति वा सोलुकि, निंध्वे, निंद्ध्वे, निंसे, निंस्वहे, निंस्महे । निंस्यते । अनिंसिष्ट, अनिंसिषाताम् । निनिंसे; प्रणिनिंसे । निंसिष्यते । निनिंसिषते । नेनिंस्यते । नेनिंसीति । निंसयति । अनिनिंसत् । निंसितः । निंसि ३ त्वा, तुम्, तव्यम् । घ्यणि, निंस्यम् । "निंसनिक्ष-"॥२।३।८४॥ इति कृति वा णत्वे; प्रणिंसनम्, प्रनिंसनम् ॥ ५२ ॥

चक्षिक् व्यक्तायां वाचि । "संयोगस्यादौ-"॥२।१।८८॥ इति क्लुकि, आचष्टे; व्याचष्टे; प्रत्याचष्टे; आच ४ क्षाते, क्षते, क्षे, क्षाथे । क्लुकि, "तृतीय"॥१।३।४९॥ इति षस्य डत्वे, आच ४ ड्ढ्वे, क्षे, क्ष्वहे, क्ष्महे । अशिति; "चक्षो-वाचि-"॥४।४।४॥ इति क्शांग्ख्यांगौ । आक्शायते । "शिट्याद्यस्य-"॥१।३।५९॥ इति कः खत्वे, आख्शायते। आख्यायते। एवमग्रेऽपि सर्वत्र त्रीणि २ रूपाणि । आचक्षी ३ त, याताम्, रन्। आचष्टाम्, आच ७ क्षाताम्; क्ष्व, क्षाथाम्, ड्ढ्वम्, क्षै० । आचष्ट, आचक्षाताम्, आचक्षत, आच ६ ष्ठाः, क्षाथाम्, ड्ढ्वम्, क्षि० । ञित्वादुभयपदे; आक्शा ९ सीत्, सिष्टाम्, सिषुः०। "शास्त्यसू-"॥३।४।६०॥ इत्य-

ङिः आख्यत, आख्यताम् । आक्शास्त; आख्यत, आक्शासाताम्; आख्येताम्, आक्शासत; आख्यन्त । आक्शायि; आख्यायि, आक्शासाताम्; कः ख्ले, आ-ख्शासाताम्; ञिटि, आक्शायिषाताम्; आख्शायिषाताम्, आख्यासाताम्; आख्यायिषाताम् । एवमग्रेऽपि कर्मणि आशीःप्रभृतौ षाड्रूप्यमवगन्तव्यम् । आक्शा २ ध्वम्, द्ध्वम्; आक्शायि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्; आख्या २ ध्वम्, द्ध्वम्; आख्यायि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम् । "नवा परोक्षायाम्" ॥४।४।५॥ क्शांग्ख्यांगौ; आचक्शौ; आचख्शौ; आचख्यौ । आचक्शे; आच-ख्शे; आचख्ये । पक्षे, आचचक्षे, आचच ३ क्षाते, क्षिरे, क्षिषे । वा एः; आक्शेयात्, आक्शायात्, आख्येयात्, आख्यात् । आक्शासीष्ट, आक्शायिषीष्ट; आख्या-सीष्ट, आख्यायिषीष्ट । आक्शाता; आख्याता । आक्शास्यति, ते; आख्या-स्यति, ते । आचिक्शासति, ते; आचिख्यासति, ते । आचाक्शायते; आचा-ख्यायते । आच २ क्शेति, क्शाति; आचा २ ख्येति, ख्याति । शेषं त्रैङ्वत् । आक्शापयति; आख्यापयति । आचिक्शपत्; आचिख्यपत् । आचक्षाणः । आचक्शिवान्; आचख्यिवान् । आचक्शानः; आचख्यानः; आचचक्षाणः । क्शा ४ ता, तुम्, तः, २ वान् । ख्या ४ ता, तुम्, तः, २ वान् । क्शात्वा, ख्यात्वा । आक्शाय; आख्याय । आक्शातव्यम्; आख्यातव्यम् । आक्शेयम्; आख्येयम् । उभयत्र विषयसप्तमीविज्ञानात् प्रागादेशो ततो यः । वागर्थस्यैव क्शांग्ख्यांगौ, तेन वर्जनार्थाद् घ्यणि संचक्ष्या दुर्जनाः; वर्जनीया इत्यर्थः । परिसञ्चक्ष्याः । क्त्वि, सञ्चक्ष्य गतः । भक्षणार्थात्तु क्त्वादौ, चाक्षि ३ त्वा, ता, तः । चक्ष्यम् ॥ ५३ ॥

अथोभयपदिनः ।

ऊर्णुग्क् आच्छादने । "वोर्णोः" ॥४।३।६०॥ इति औत्त्वे, प्रोर्णौति, प्रोर्णोति, प्रोर्णुतः, प्रोर्णुवति, प्रोर्णौषि, प्रोर्णोषि, प्रोर्णुथः । प्रोर्णुते, प्रोर्णुवाते । प्रोर्णूयते । "न दिस्योः" ॥४।३।६१॥ इति न औत्त्वम्; प्रौर्णोत्; प्रौर्णोः; प्रौर्णु-तम्, "वोर्णुगः-" ॥४।३।४६॥ इति वा वृद्धौ, "वोर्णोः" ॥४।३।१९॥ इतीटो वा ङित्त्वे च; प्रौर्णावीत्, प्रौर्णवीत्, प्रौर्णुवीत् । प्रौर्णविष्ट, प्रौर्णुविष्ट । प्रौर्णावि । "गुरुना-

म्य-"॥३।४।४८॥ इत्यत्रोर्णोर्वर्जनात् आमभावे, प्रोर्णुनाव; प्रोर्णुनविथ, प्रोर्णुनुविथ; इटो वा ङित्त्वेऽपि अवित्परोक्षायाः कित्त्वाद्गुणाभावे, प्रोर्णुनुविम । प्रोर्णुनुवे । प्रोर्णूयात् । प्रोर्णाविषीष्ट; प्रोर्णुविषीष्ट; प्रोर्णाविषीष्ट । एवमग्रेऽपि भावकर्मणोः ३३ । "इवृध-"॥४।४।४७॥ इति वेटि वा ङित्त्वे; प्रोर्णुनविष २ ति, ते; प्रोर्णुनुविष २ ति, ते; पक्षे, प्रोर्णुनूषति, ते । एवं ६ ॥ "अटयर्त्ति-"॥३।४।१०॥ इति यङि, प्रोर्णोनूयते । प्रौर्णोनोति, अद्वेरिति निषेधान्न औः । अन्येत्विच्छन्ति, प्रोर्णोनौति, प्रौर्णोनवीति, प्रोर्णोनुतः, प्रोर्णोनुवति, इत्यादिमूलप्रकृतिवत् । अद्यतन्यां तु "वोर्णुगः सेटि" ॥४।३।४६॥ इत्यत्र गिन्निर्देशाद् यङ्लुपि न विकल्पेन वृद्धिः, किन्तु अङित्त्वपक्षे "सिचि परस्मै-"॥४।३।४४॥ इत्यनेन नित्यं वृद्धिः, प्रौर्णोनावीत् । ङित्त्वेतु, प्रौर्णोनुवीत् । "वोर्णोः"॥४।३।१९॥ इत्यत्र हि अनुबन्धाभावाद्यङ्लुबन्तस्यापि ग्रहणम् । "ऋवर्णश्र्यू-"॥४।४।५७॥ इत्यत्र गित्वाद्यङ्लुपि इट् स्यादेव, ऊर्णोनुवितः । ऊर्णोनावि ३ त्वा, ता, तुम्; ऊर्णोनुवि ३ त्वा, ता, तुम् । प्रोर्णावयति । प्रोर्णुनवत्, अत्र स्वरादित्वाद् द्वित्वे पूर्वस्य "लघोः-"॥४।१।६४॥ इति न दीर्घः । प्रोर्णुनावयिषति । "ऋवर्णश्र्यू-"॥४।४।५७॥ इति नेटि, प्रोर्णुतः, २ वान् । ऊर्णुत्वा । प्रोर्णुत्य । प्रोर्णवि २ ता, तुम् । प्रोर्णुवि २ ता, तुम् ॥ ५४ ॥

अथ २० अनिटः ।

ष्टुंग्क् स्तुतौ । स्तौति; "उपसर्गात्सुग्-"॥२।३।३९॥ इति षत्वे, अभिष्टौति; "यङ्तुरु-"॥४।३।६४॥ इतीति, स्तवीति, स्तुतः, स्तुवन्ति, स्तौषि, स्तवीषि, स्तुथः, स्तुथ, स्तौमि, स्तवीमि, स्तुवः, स्तुमः । स्तुते, स्तुवाते, स्तुवते, स्तुषे, स्तुवाथे, स्तुध्वे, स्तुवे, स्तुवहे, स्तुमहे । स्तूयते । स्तूयात् । स्तुवीत । स्तौतु, स्तवीतु । स्तुताम् । अस्तौत्, अस्तवीत्; अभ्यष्टौत, अभ्यष्टवीत् । परिपूर्वस्य, "स्तुस्वञ्जश्च-"॥२।३।४९॥ इत्यड्व्यवाये वा षत्वे, पर्यष्टौत्, पर्यस्तौत् । पर्यष्टवीत्, पर्यस्तवीत्; अस्तुताम्, अस्तुवन्; अभ्यष्टुवन्, अस्तौः, अस्तवीः । अस्तुत, अस्तुवाताम्, अस्तुवत; अस्तुध्वे । "धूग्सुस्तोः-"॥४।४।८५॥ इतीटि,

अस्तावीत्, अस्ताविषाताम्। अस्तोष्ट, अस्तोषाताम् । अस्तावि, अस्तोषाताम्, अस्ताविषाताम् । "नाम्यन्त-"॥२।३।१५॥ इति षे, तुष्टाव, तुष्टुवतुः, तुष्टुवुः; "स्क्रसृ-"॥४।४।८१॥ इत्यत्र स्तोर्वर्जनान्नेट्; तुष्टोथ, तुष्टुवथुः, तुष्टुव, तुष्टाव, तुष्टव, तुष्टुव, तुष्टुम । तुष्टुवे; तुष्टुध्वे; तुष्टुमहे । स्तूयात् । स्तोषीष्ट; स्ताविषीष्ट। स्तोता २; स्ताविता । स्तोष्यति, ते; स्ताविष्यते । तुष्टूषति, ते। अभितोष्टूयते। तोष्टवीति, तोष्टोति । स्तावयति । अभ्यतुष्टवत् । तुष्टावयिषति । अन्ये सन्वर्जे द्वित्वे सति उत्तरस्यापि षत्वं नेच्छन्ति, अभितुस्ताव। णौ ङे, अभ्यतुस्तुवत् । अभितोस्तूयते इत्यादि। स्तुवन् । स्तुवती । स्तोष्य २ न्, माणः। स्तूयमानम् । स्तुतः, २ वान् । स्तुत्वा । अभिष्टुत्य। स्तो २ ता, तुम् । तादौ वेडित्यन्ये तन्मते, स्तवि ३ ता, तुम्, तव्यम् इत्यपि । क्यपि, स्तुत्यः; अभिष्टुत्यः ॥ ५५ ॥

ब्रूंग्क् व्यक्तायां वाचि । "ब्रूगः पञ्चानाम्-"॥४।२।११८॥ इति ब्रूग आह, तिवां णवादयश्च; आह, आहतुः, आहुः; "नहाहोर्द्धतौ"॥२।१।८५॥ इति ते; आत्थ, आहथुः। पक्षे, "ब्रूतः परादिः"-॥४।३।६३॥ इतीति, ब्रवीति, ब्रूतः, ब्रुवन्ति, ब्रवीषि, ब्रूथः, ब्रूथ, ब्रवीमि, ब्रूवः, ब्रूमः। ब्रूते, ब्रुवाते, ब्रुवते। ब्रूयात्। ब्रवीत्। ब्रवीतु; ब्रवाणि। ब्रूताम् । अब्रवीत् । अब्रूत । "अस्तिब्रुवोः-"॥४।४।१॥ इत्यशिति वच्, "यजादिवचेः-"॥४।१।७९॥ इति य्वृत्; उच्यते । "शास्त्यसू-"॥३।४।६०॥ इति अङि, "श्वयत्यसू-"॥४।३।१०३॥ इति वोचः; अवोचत् । अवोचत, अवोचेताम्। अवाचि, अवक्षातामित्यादि पचिवत् । "यजादिवश्-"॥४।१।७२॥ इति पूर्वस्य य्वृति, उवाच; "यजादिवचेः-"॥४।१।७९॥ इति य्वृति द्वित्वे च, ऊचतुः; उवचिथ, उवक्थ; ऊचिम । ऊचे; ऊचिमहे । उच्यात् । वक्षीष्ट । वक्ता २ । वक्ष्यति, ते । किरादित्वाञ्जिक्ययोरभावे कर्मकर्त्तरि, ब्रूते, अवोचत वा कथा स्वयमेव । विवक्षति, ते । वावच्यते । वाव २ चीति, क्ति ॥ अद्य० ॥ "शास्त्यसू-"॥३।४।६०॥ इत्यत्र तिव्निर्देशान्न अङ्; अवावचीदित्यादि । वाचयति । अवीवचत्, त । ब्रुवन् । ब्रुवती । ब्रुवाणः । उच्यमानम् । वक्ष्य २ न्, माणम् । ऊचिवान्; अनूचिवान् । ऊचानः। उक्तः, २ वान् । उक्त्वा। वक्ता। वक्तुम्॥५६॥

द्विषींक् अप्रीतौ । द्वेष्टि, द्विष्टः, द्विषन्ति, द्वेक्षि, द्विष्ठः, द्विष्ठ, द्वेष्मि;

द्विष्वः, द्विष्मः । द्विष्टे, द्विषाते, द्विषते; द्विड्ढ्वे । द्विष्यते । द्विष्यात् । द्विषीत । द्वेष्टु; द्वौ, द्विड्ढि, द्विष्टम्; द्वेषाणि । द्विष्टाम् । अद्वेट्, अद्विष्टाम् । "वा द्विष-"॥ ४।२।९१॥ इत्यनो वा पुसि, अद्विषुः, अद्विषन्, अद्वेट् । अद्विष्ट, अद्विषाताम्, अद्विषत ॥ अद्य० । "हशिट-"॥३।४।५५॥ इति सकि, अद्विक्ष ३ त्, ताम्, न् । अद्वि २ क्षत, क्षाताम्, "स्वरेऽतः"॥४।३।७५॥ इति सकोऽल्लुक्; अद्वि ७ क्षन्त, क्षथाः, क्षाथाम्, क्षध्वम्, क्षि, क्षावहि, क्षामहि । अद्वेषि । दिद्वेष, दिद्विषतुः, दिद्विषुः, दिद्वेषिथ; दिद्विषिम । दिद्विषे०; दिद्विषिमहे । द्विष्यात् । द्विक्षीष्ट । द्वेष्टा २ । द्वेक्ष्यति, ते । दिद्विक्षति, ते । देद्विष्यते । देद्विषीति, देद्वेष्टि । द्वेषयति । अदिद्विषत्, त । द्विषन् । द्विषती । द्वेक्ष्यन् । द्वेक्ष्यमाणः। "सुग्द्विष-"॥५।२।२६॥ इत्यतृशि, "द्विषो वाऽतृशः"॥२।२।८४॥ इति वा कर्मणि षष्ठ्याम्, चौरस्य चौरं वा द्विषन् । द्विष्टः, २ वान् । द्विष्ट्वा । प्रद्विष्य । द्वेष्टा । द्वेष्टुम् । घ्यणि, द्वेष्यः ॥ ५७ ॥

दुहींक् क्षरणे । दोग्धि, दुग्धः, दुहन्ति, धोक्षि, दुग्धः, दुग्ध, दोह्मि, दुह्वः, दुह्मः । दुग्धे, दुहाते, दुहते, धुक्षे, दुहाथे, धुग्ध्वे, दुहे, दुह्वहे, दुह्महे । दुह्यते । दुह्यात् । दुहीत । दोग्धु, दुग्धाम्, दुहन्तु, दुग्धि । दुग्धाम्, दुहाताम्, दुहताम्, धुक्ष्व, दुहाथाम्, धुग्ध्वम् । अधोक्, अदुग्धाम्, अदुहन्, अधोक् । "हाशिट-"॥३।४।५५॥ इति सकि, अधुक्षत्, अधुक्षताम्० । तथधवादावात्मनेपदे, "दुहदिह-"॥४।३।७४॥ इति सको वा लुकि, अदुग्ध, अधुक्षत, अधुक्षाताम्। "स्वरेऽतः"॥४।३।७५॥ इत्यल्लुकि; "आतामाते-"॥४।२।१२१॥ इति इत्वम्, "अवर्णस्य-"॥१।२।६॥ इत्येत्वं च न भवति; अधुक्षन्त । अल्लुकः स्थानित्वान्न अन्तोऽद्, अदुग्धाः, अधुक्षथाः, अधुक्षाथाम्; अधुग्ध्वम्, अधुक्षध्वम्, अधुक्षि, अदुह्वहि, अधुक्षावहि, अधुक्षामहि ॥ भाक ॥ अदोहि, अधुक्षातामित्यादि । दुदोह; दुदोहिथ; दुदुहिम । दुदुहे, दुदुहाते; दुदुहिमहे । दुह्यात् । धुक्षीष्ट । "सिजाशिष-"॥४।३।३५॥ इति कित्त्वम्, दोग्धा २ । धोक्ष्यति, ते । कर्मकर्त्तरि, "एकधातौ-"॥३।४।८६॥ इति ञिक्यात्मनेपदेषु प्राप्तेषु, "भूषार्थ-" ॥३।४।९३॥ इति किरादित्वाद् ञिट्क्यनिषेधे, दुग्धे गौः स्वयमेव । दुग्धे गौः पयः

स्वयमेव। "स्वरदुहो वा"॥३।४।९०॥ इति वा ञिज्निषेधे, अदुग्ध; अधुक्षत, अदोहि वा गौः स्वयमेव। "न कर्मणा-"॥३।४।८८॥ इति कर्मयोगे नित्यं ञिञ्निषेधे, अदुग्ध, अधुक्षत वा गौः पयः स्वयमेव । "उपान्त्ये"॥४।३।३४॥ इति किक्त्वे, दुधुक्षति, ते । दोदुह्यते । दोदुहीति, दोदोग्धि, दोदुग्धः, दोदुहति, दोधोक्षि, दोदु ३ हीषि, ग्धः, ग्ध, दोदोह्मि, दोदु ३ हीमि, ह्वः, ह्मः,॥ ह्य० ॥ अदोधो २ क्, ग्; अदोदु ३ हीत, ग्धाम्, हुः, अदोधो २ क्, ग्, अदोदु ६ हीः, ग्धम्, ग्ध, हम्, ह्व, ह्म । शेषं पचिस्थाने । दोहयति । अदूदुहत् । दुहन् । दुहती । दुह्यमानम् । धोक्ष्यमाणम् । दुदुह्वान् । दुहानः । दुग्धः, २ वान् । दुग्ध्वा । दोग्धा । दोग्धुम् । दुह्या, दोह्या, गौः । दुह्यम्, दोह्यम् ॥ ५८ ॥

दिहींक् लेपे । देग्धि; सन्देग्धि; "नेर्ङ्मा-"॥२।३।७९॥ इति णिः, प्रणिदेग्धि । सन्दिग्धे । दिह्यते । सकि, अधिक्षत् । वतवर्गे वा तल्लुकि, अधिक्षत, अदिग्ध, अधिक्षाताम्, अधिक्षन्त, अधिक्षथाः, अदिग्धाः, अदिक्षाथाम्, अधिक्षध्वम्, अधिग्ध्वम्, अधिक्षि, अधिक्षावहि, अदिह्वहि । अदेहि । सन्दिदेह । सन्दिदिहे । धेक्ष्यति । दिधिक्षति । देदिह्यते । देदिहीति, देदेग्धि । एष सर्वो दुहींक्वत् ॥५९॥

लिहींक् आस्वादने । लेढि; अवलेढि, लीढः, लिहन्ति, लेक्षि, लीढः, लीढ, लेह्मि, लिह्वः, लिह्मः । लीढे, लिहाते, लिहते, लिक्षे, लिहाथे, लीढ्वे । लिह्यते । लिह्यात् । लिहीत । लेढु, लीढाम्, लिहन्तु, लीढि । लीढाम् । अलेट्, अलेड्, अलीढाम्, अलिहन् । अलीढ, अलिहाताम् । सकि; अलिक्ष ३ त्, ताम्, न् । वतवर्गे वा सक्लुकि, अलीढ, अलिक्षत, अलीढाः, अलिक्षथाः, अलीढ्वम्, अलिक्षध्वम्; अलिह्वहि, अलिक्षावहि, अलिक्षामहि । लिलेह । लिलिहे । लेक्ष्यति, ते । लिलिक्षति, ते । लेलिह्यते । लेलिहीति, लेलेढि, लेलीढः, लेलिहति, लेलिहीषि, लेलेक्षि । लेहयति । अलीलिहत् । लीढः, २ वान् । लीढ्वा । लेढा । लेढुम् । लेढव्यम् । एषोऽपि दुहींक्वत् ॥ ६० ॥

अथ ह्वादयः ।

हुंक् दानादनयोः; दानमत्र हविष्प्रक्षेपः; अदनं भक्षणम् । "हवः शिति" ॥४।१।१२॥ इति द्वित्वे; जुहोति, जुहुतः, "ह्विणोः-"॥४।३।१५॥ इति वत्वे, अन्तो नो लुकि च; जुह्वति, जुहोषि, जुहुथः । हूयते । जुहुयात् । जुहोतु; जुहुताम्, जुह्वतु, "हुधुटोहेर्धिः"॥४।२।८३॥ जुहुधि० । अजुहोत्, अजुहुताम् । "द्व्युक्त-"॥ ४।२।९३॥ इति पुसि, "पुस्पौ"॥४।३।३॥ इति गुणे च; अजुहवुः, अजुहोः, अजुहु २ तम्, त, अजुहवम्० । अहौषीत्, अहौष्टाम्, अहौषुः, अहौषीः । अहावि, अहोषाताम्, अहाविषाताम्० । "भीह्री-"॥३।४।५०॥ इति वा आमि तिव्वद्भावात्, "हवः-"॥४।१।१२॥ इति द्वित्वे, जुहवां ३ चकार, बभूव, आस । जुहवां ३ चक्रे, बभूवे, आहे । पक्षे, जुहाव, जुहुवतुः, जुहुवुः, जुहोथ, जुहविथ०; जुहुविम । जुहुवे । हूयात् । होषीष्ट, हाविषीष्ट । होता २, हाविता । होष्यति, ते; हाविष्यते । जुहूषति । जोहूयते । जोहवीति, जोहोति, जोहु २ तः, वति । हावयति । अजूहवत् । जुहावयिषति । जुह्वत्, जुह्वतौ, जुह्वतः, जुह्वतम् । जुह्वती स्त्री । जुह्व ४ त्, ती, ति, न्ति । होष्यन् । हूयमानम् । होष्यमाणम् । जुहुवान् । जुहुवानम् । हुतः, २ वान् । हुत्वा । आहुत्य । होता । होतुम् । होतव्यम् । हव्यम् ॥ ६१ ॥

ओहांक् त्यागे । जहाति । "हाकः"॥४।२।१००॥ इति वेत्वे; पक्षे "एषाम्-"॥ ४।२।९७॥ इतीत्वे च; जहितः, जहीतः, जहति, जहासि, जहिथः, जहीथः, जहिथ, जहीथ, जहामि, जहिवः, जहीवः, जहिमः, जहीमः । "ईर्व्यञ्ज-"॥४।३।९७॥ इतीत्वे, हीयते । "यि लुक्"॥४।२।१०२॥ इत्यन्तलुकि, जह्यात्, जह्याताम्, जह्युः । जहातु; जहिताम्, जहीताम्, जहतु; "आ च हौ"॥४।२।१०१॥ जहाहि, जहिहि, जहीहि; जहानि । अजहात्, अजहिताम्, अजहीताम्, अजहुः, अजहाः; अजहाम् । अहासीत्, अहासि, २ ष्टाम्, षुः । अहायि, अहासाताम्, अहायिषाताम् । जहौ, जहतुः, जहुः, जहाथ, जहिथ०; जहिम । जहे । "गापास्था-"॥४।३।९६॥ इत्येः; हेयात् । हासीष्ट; हायिषीष्ट । हाता २; हायिता । हास्यति, ते; हायिष्यते । जहाति शब्दं देवदत्तः स एवं विवक्षते, नाहं जहामि, हीयते शब्दः स्वयमेव । जिहा-

सति । जेहीयते । "न हाको-"॥४।१।४९॥ इति न पूर्वस्य आः, जहाति, जहेति, जहीतः, जहति। जहत्। जहि २ त्वा, तः। द्वित्वे पूर्वदीर्घत्वमपीच्छन्त्येके । जाहि २ त्वा, तः। शेषं त्रैङ् स्थाने। हापयति। अजीहपत्। जिहापयिषति। जहत्। जहती। हास्यन्। हास्यन्ती, हास्यती। जहिवान्। जहानम्। ओदित्त्वात् "सूयत्य-"॥४।२।७०॥ इति ने, हीनः, २ वान्। "स्वरात्"॥२।३।८५॥ इति णे, प्रहीणः, २ वान्। परिहीणः, २ वान्। "हाको हिः क्त्वि"॥४।४।१४॥ हित्वा। विहाय। हातुम्। हाता। हेयम्। हातव्यम्। प्रहाणीयम् ॥ ६२ ॥

ञिभींक् भये। बिभेति; "भियो नवा"॥४।२।९९॥ इति वा इः, बिभितः, बिभीतः, बिभ्यति, बिभेषि, बिभिथः, बिभीथः, बिभिथ, बिभीथ, बिभेमि, बिभित्रः, बिभीत्रः, बिभिमः, बिभीमः। भीयते। बिभियात्, बिभीयात्। बिभेतु, बिभितात्, बिभीतात्, बिभिताम्, बिभीताम्, बिभ्यतु, बिभिहि, बिभीहि, बिभितात्, बिभीतात्; बिभिया ३ नि, व, म । अबिभेत्, अबिभिताम्, अबिभीताम्, अबिभयुः, अबिभेः; अबिभयम्। अभैषीत्, अभैष्टाम्, अभैषुः, अभै ६ षीः, ष्टम्, ष्ट, षम्, ष्व, ष्म। अभायि, अभेषाताम्, अभायिषाताम्०। "भीह्री-"॥३।४।५०॥ इति वा आमि, बिभियां ३ चकार, बभूव, आस । बिभियां ३ चक्रे ३। पक्षे, बिभाय, बिभ्यतुः, बिभ्युः, बिभेथ, बिभयिथ०; बिभ्यिर२व, म। बिभ्ये। भीयात्। भेषीष्ट; भायिषीष्ट। भेता २; भायिता। भेष्यति, ते; भायिष्यते। बिभीषति। बेभीयते। बेभयीति, बेभेति, बेभितः, बेभीतः, बेभ्यति । "बिभेतेर्भीष् च"॥३।३।९२॥ इत्यात्वे, भीषि, आत्मनेपदे च; मुण्डो भापयते, भीषयते वा। करणाद्भये तु कुञ्चिकयैनं भाययति । अबीभपत्, अबीभिषत्, अबीभयत्। लिव्निर्देशाद् यङ्लुपि न आत्वादि, बेभाययति । बिभ्यत्। बिभ्यती । भेष्यन्। बिभयांचकृवान्। बिभीवान्। बिभयाञ्चक्राणम्। बिभ्यानम्। भीतः, २ वान्। भीत्वा। भे ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥ ६३ ॥

ह्रींक् लज्जायाम्। जिह्रेति, जिह्रीतः; "संयोगात्"॥२।१।५२॥ इतीयि, जिह्रियति, जिह्रेषि, जिह्री २ थः, थ, जिह्रेमि, जिह्रीवः, जिह्रीमः। ह्रीयते। जिह्रीयात्। जिह्रेतु, जिह्रीताम्, जिह्रियतु, जिह्रीहि। अजिह्रेत्, अजिह्रीताम्, अजिह्रयुः,

अजिह्रेः । अह्रै २ षीत्, ष्टाम् । अह्रायि, अह्रेषाताम्, अह्रायिषाताम् । "भीह्री-"॥ ३।४।५०॥ इति वा आमि, जिह्रयाञ्चकार । जिह्रयाञ्चक्रे । जिह्राय, जिह्रियतुः, जिह्रियुः, जिह्रेथ, जिह्रयिथ; जिह्रियिम । जिह्रिये । ह्रीयात् । ह्रेषीष्ट; ह्रायिषीष्ट । ह्रेता २; ह्रायिता । ह्रेष्यति, ते; ह्रायिष्यते । जिह्रीषति । जेह्रीयते । जेह्रयीति, जेह्रेति, जेह्रीतः, जेह्रियति । "अर्त्तिरी-"॥४।२।२१॥ इति पौ, "पुस्पौ"॥४।३।३॥ इति गुणे, ह्रेपयति । अजिह्रिपत् । जिह्रेपयिषति । जिह्रिय २ त्, ती । ह्रेष्यन् । जिह्रयांचकृवान् । जिह्रीवान् । "ऋह्री-"॥४।२।७६॥ इति वा नः, ह्रीणः, २ वान्; ह्रीतः, २ वान् । ह्रीत्वा । ह्रे ४ ता, तुम्, तव्यम्, यम् ॥ ६४ ॥

पृंक् पालनपूरणयोः । "पृभृ-"॥४।१।५८॥ इति पूर्वस्येत्वे, व्यापिपर्त्ति, पिपृतः, पिप्रति, पिपर्षि, पिपृथः, पिपृथ, पिपर्मि, पिपृवः, पिपृमः । प्रियते । पिपृयात् । पिपर्तु; पिप्रतु । अपिपः, अपिपृताम्, अपिपरुः, अपिपः । अपार्षीत् अपार्ष्टाम्, अपार्षुः, अपार्षीः । अपारि, अपृषाताम्, अपारिषाताम् । पपार, पप्रतुः, पप्रुः, पपर्थ; "ऋतः"॥४।४।७९॥ इति नेट्, "स्क्रसृ-"॥४।४।८१॥ इतीटि; पप्रि २ व, म । पप्रे । प्रियात् । पृषीष्ट; पारिषीष्ट । पर्त्ता २; पारिता । "हनृतः-"॥४।४।४९॥ इतीटि, परिष्यति, ते; पारिष्यते । पुपूर्षति । पेप्रीयते । परि री र् ३ परीति । पर् रि री ३ पर्त्ति, पर्पृतः, पर्प्रति । पारयति । अपीपरत् । पिप्र २ त्, ती । परिष्यन् । प्रियमाणम् । पपृवान् । पप्राणम् । व्यापृतः, २ वान् । पर्त्ता । पर्त्तुम् । पृत्वा । व्यापृत्य । व्यापर्त्तव्यम् ॥ ६५ ॥

ऋंक् गतौ । "हवः-"॥४।१।१२॥ इति द्वित्वे, "पृभृ-"॥४।१।५८॥ इति पूर्वस्येत्वे, "पूर्वस्यास्वे-"॥४।१।३७॥ इतीयि, "नामिनो-"॥४।३।१॥ इति गुणे, इयर्त्ति, इयृतः, इयृति, इयर्षि, इयृथः, इयृथ, इयर्मि, इयृवः, इयृमः । "समोगम्-"॥३।३।८४॥ इत्यात्मनेपदे; समियृते । आप्ये तु सति परस्मैपदे; समियर्त्ति मित्रम् । समियृाते, समियृते, समियृषे । क्ये "क्ययङ-"॥४।३।१०॥ इति गुणे, अर्यते । इयृयात् । समियृीत । इयर्तु; इयृताम्, इयृतु, इयृहि; इयराणि । समियृताम् । ऐयः, ऐयृताम्, ऐयरुः, ऐयः, ऐयरम् । ऐयृत; समैयृत । अद्य० ॥ आरत्, आरताम् । आर्षीत्, आर्ष्टामित्यादि सर्वं ऋं प्रापणे इत्यस्येव ज्ञेयम्, परं शत्रानशोः ।

इयूत्। इयूती । समियूाणः । अर्यमाणम् ॥ ६६ ॥

ओहांङ्क् गतौ । "ह्वः-"॥४।१।१२॥ इति द्वित्वे, "पॄभृ-"॥४।१।५८॥ इति पूर्वस्येत्वे, "एषाम्-"॥४।२।९७॥ इतीत्वे च, जिहीते; उज्जिहीते, उत्पद्यते इत्यर्थः । सञ्जिहीते, जिहाते, जिहते, जिहीषे, जिहाथे, जिहीध्वे, जिहे, जिही २ वहे, महे । "ईर्व्यञ्जने-"॥४।३।९७॥ इत्यत्र हाकोऽनुवृत्तिर्न हाङः; तेनास्य क्ङिति अशिति ईत्वाभावे, हायते । जिहीत, जिहीयाताम् । जिहीताम्, जिहाताम्, जिहताम्, जिहीष्व, जिहाथाम्, जिहीध्वम्, जिहै० । अजिहीत, अजिहाताम्, अजिहत । अहास्त, अहासाताम्, अहासत, अहास्थाः । अहायि, अहासाताम्, अहायिषाताम् । संजहे; संजहिमहे । हासीष्ट; हायिषीष्ट । हाता; हायिता । हास्यते; हायिष्यते । जिहासते । जाहायते । जाहेति, जाहाति, जाहीतः, जाहति । हापयति । अजीहपत् । जिहापयिषति । जिहानः । हायमानम् । जहानः । हास्यमानः । ओदित्त्वात्, "सूयत्य-"॥४।२।७०॥ इति नः; हानः, २ वान् । "स्वरात्"॥२।३।८५॥ इति णे, प्रहाणः, २ वान् । हात्वा । प्रहाय । हाता । हातुम् । हानीयम् । हेयम् ॥ ६७ ॥

मांङ्क् मानशब्दयोः। "पॄभृ-"॥४।१।५८॥ इति पूर्वस्येत्वे, "एषाम्-"॥४।२।९७॥ इतीत्वे च; मिमीते धान्यं चैत्रः । "नेर्ङ्मा-"॥२।३।७९॥ इति णिः, प्रणिमिमीते; प्रमिमीते; निर्मिमीते; अनुमिमीते, मिमाते, मिमते, मिमीषे, मिमाथे, मिमीध्वे, मिमे, मिमीवहे, मिमीमहे । "ईर्व्यञ्जने-"॥४।३।९७॥ इतीत्वे, मीयते । मिमीत । मिमीताम्, मिमाताम्, मिमताम्, मिमीष्व, मिमाथाम्, मिमीध्वम्, मिमै, मिमा २ वहै, महै । अमिमीत । अटो धात्ववयवत्वेन व्यवधायकत्वाभावाण्णत्वे, प्रण्यमिमीत, अमिमाताम्, अमिमत, अमिमीथाः । अमास्त, अमासाताम्, अमासत, अमा ४ स्थाः, साथाम्, द्ध्वम्, ध्वम् । अमायि, अमासाताम्; ञिटि, अमायिषाताम्, अमा २ ध्वम्, द्ध्वम्; अमायि ३ ड्ढ्वम्, ढ्वम्, ध्वम् । ममे, ममाते; ममिमहे । अकित्त्वाद् "गापास्था-"॥४।३।९६॥ इति नैत्वे, मासीष्ट; मायिषीष्ट । माता; मायिता । मास्यते; मायिष्यते । "मिमी-"॥४।१।२०॥ इतीति, प्रमित्सते । "ईर्व्यञ्जने-"॥४।३।९७॥ इति ईः, मेमीयते । मामाति, मामेति, मामीतः, माम-

ति । शेषं स्थास्थाने । मापयति । अमीमपत् । मिमापयिषति । मिमानः; "स्व-राद्-"॥२।३।८५॥ इति कृतो नस्य णत्वे; निर्मिमाणः। मास्यमानः । मीयमानम्; निर्मीयमाणम्; प्रमीयमाणम् । ममानः । किति तादौ, "दोसोमास्थ इः"॥४।४।११॥ प्रमितः, २ वान् । मित्वा । प्रमाय । प्रमा २ ता, तुम् । प्रमेयम् । प्रमाणीयम् । प्रमातव्यम् । प्रमितिः ॥ ६८ ॥

डुदांग्क् दाने । "ह्वः-"॥४।१।१२॥ इति द्वित्वे, ददाति; प्रणिददाति । "एषामीः-"॥४।२।९७॥ इत्यत्र दावर्जनाद् ईत्वाभावे, "श्नश्चातः"॥४।२।९६॥ इत्या-ल्लुकि; दत्तः, "अन्तो नो लुक्"॥४।२।९४॥ ददति, ददासि, दत्थः, दत्थ, ददामि, दद्वः, दद्मः । दत्ते; प्रणिदत्ते। आङ्पूर्वादफलवत्यपि, "दागोऽस्वास्य-"॥३।३।५३॥ इत्यात्मनेपदे, विद्यामादत्ते । स्वास्यप्रसारविकाशे तु परस्मै, उष्ट्रो मुखं व्याददाति, प्रसारयतीत्यर्थः । कूलं व्याददाति। विपादिका व्याददाति, विकसतीत्यर्थः । ददाते, ददते, दत्से, ददाथे, दद्ध्वे, ददे, दद्वहे, दद्महे । "ईर्व्यञ्जने"॥४।२।९७॥ दीयते। दद्यात् । ददीत । ददातु, दत्तात्, दत्ताम्, ददतु; "हौ दः"॥४।१।३१॥ इत्येर्न च द्विः; देहि, दत्तात्, दत्तम्, दत्त, ददानि । दत्ताम्, ददाताम्, ददताम्, दत्स्व, ददा-थाम्, दद्ध्वम्, ददै, ददा २ वहै, महै । अददात्, अदत्ताम्, "द्व्युक्त-" ॥४।२।९३॥ इत्यनः पुसि, अददुः, अद ६ दाः, त्तम्, त्त, दाम्, द्व, द्म । अदत्त, अददाताम्, अददत, अदत्थाः, अददाथाम्, अदद्ध्वम्, अददि, अदद्वहि । अदीयत ॥ अद्य० ॥ "पिबैति-"॥४।३।६६॥ इति सिच्लुपि, अदात्, अदाताम्; "सिज्विद-"॥४।२।९२॥ इत्यनः पुसि, "इडेत्-"॥४।३।९४॥ इत्याल्लुकि; अदुः, अदाः, अदातम्, अदात, अदाम्, अदाव, अदाम । "इश्च स्थादः"॥४।३।४१॥ इति सिचः किच्चे द इत्वे, "धुड्ह्रस्व-"॥४।३।७०॥ इति सिच्लुकि च; अदित, अदिषाताम्, अदिषत, अदि ७ थाः, षाथाम्, ड्ढ्वम्, ढ्वम्; षि, ष्वहि, ष्महि ॥ भाक ॥ अदायि, अदिषाताम्; अदायिषाताम्; अदि २ ड्ढ्वम्, ढ्वम्; अदायि ३ ड्ढ्वम्, ढ्वम्, ध्वम् । ददौ, ददतुः; ददुः, ददाथ, ददिथ, ददथुः, दद, ददौ, ददिव, ददिम । ददे, ददाते, ददिध्वे; ददि-महे । क्ङिति, "गापा-"॥४।३।९६॥ इत्येः, देयात्। दासीष्ट, दायिषीष्ट; दासीध्वम्;

दायि २ षीध्वम्, षीढ्वम्। दाता २; दायिता । दास्यति, ते; दायिष्यते। अदास्यत्, त; अदायिष्यत ।"मिमी-"॥४।१।२०॥ इतीति; दित्सति, ते ।"ईर्व्यञ्जने-"॥४।३।९७॥ देदीयते । दादाति, दादेति; "श्नश्च-"॥४।२।९६॥ इत्याल्लुकि, दात्तः, दादति, दादेषि, दादासि, दात्थः, दात्थ, दादेमि, दादामि, दाद्वः, दाद्मः । क्ये, दादीयते ॥ स० ॥ दाद्यात् । दादातु, दादेतु, दात्ताम्, दादतु, देहि, दात्तात्, दात्तम्, दात्त, दादानि । अदादात्, अदादेत्, अदात्ताम्, अदादुः, अदादाः, अदादेः, अदात्तम्, अदात्त, अदादाम्, अदाद्व, अदाद्म । अद्यतन्यादौ सर्वं स्थावत्, तद्दिग् लिख्यते । अदादात्, अदा २ दाताम्, दुः ॥ भाक ॥ अदादायि; ञिटि, अदादायिषाताम्; इटि, "इडेत्-"॥४।३।९४॥ इत्याल्लुकि, अदादिषाताम् । दादाञ्चकारेत्यादि । "गापा-"॥४।३।९६॥ इत्येः, दादेयात् । दादायिषीष्ट; दादिषीष्ट । दादिता २; दादायिता । दादिष्यति, ते; दादायिष्यते । दादि ६ त्वा, तुम्, ता, तः, २ वान्, तव्यम् । दादत् । दादती । एवं षडपि दासंज्ञा अवगन्तव्याः; विशेषस्तु स्वस्वस्थाने उक्तो, वक्ष्यते च । दापयति । अदीदपत् । शेषं ण्यन्तभूवत् । दिदापयिषति । "अन्तो नो लुक्"॥४।२।९४॥ इति नो लुकि, ददत्, ददतौ । ददती स्त्री । ददत्, ददती, "शौ वा"॥४।२।९५॥ इति नो वा लुकि, ददति, ददन्ति कुलानि । एवमन्यत्रापि । ददानः । आददानः । दास्य २ न्, मानः । दीयमानम् । ददिवान् । ददानः । "प्राद्दागः-"॥४।४।७॥ इति वा त्ते, दातुमारब्धम्, प्रत्तम् । पक्षे, प्रदत्तम् । "निविस्वन्ववात्"॥४।४।८॥ इति वा त्ते; "दस्ति"॥३।२।८८॥ इति दीर्घे च, नीत्तम्; वीत्तम्; सूत्तम्; अनूत्तम्; अवत्तम्, पञ्चस्वपि दत्तमित्यर्थः । पक्षे, निदत्तमित्यादि । "स्वरादुपसर्गाद्-"॥४।४।९॥ इति त्ते, आत्तः; उपात्तः; प्रकर्षेण दीयते स्म प्रत्तः । प्रत्तवान् । परीत्तः, २ वान् । "दत्"४।४।१०॥ इति दति; दत्तः, २ वान् । दत्तिः । दत्त्वा । प्रदाय । दाता । दातुम् ॥ ६९ ॥

डुधांग्क् धारणे च; चादाने । दधाति; श्रद्दधाति । "वा वाप्योः-" ॥३।२।१५६॥ इति अपेः पिर्वा; पिदधाति; अपिदधाति; "नेर्ङ्गा-"॥२।३।७९॥ इति णिः, प्रणिदधाति । एवं अभि, अव, आङ्, उपा, व्यव, वि, नि, परि, सं पूर्वोऽपि । "अध-"॥२।१।७९॥ इत्यत्र भावर्जनात्तथोर्न धत्वे; धत्तः, अत्र

"धागस्तथोश्च"॥२।१।७८॥ इति चतुर्थान्तस्य तथसध्वेषु पूर्वस्य धः, दधति, दधासि, धत्थः, धत्थ, दधामि, दध्वः, दध्मः । धत्ते; अपिधत्ते; पिधत्ते; दधाते, दधते, धत्से, दधाथे, धद्ध्वे, दधे, दध्वहे, दध्महे ।"ईर्व्यञ्जने-"॥४।३।९७॥ धीयते । दध्यात् । दधीत । दधातु, धत्तात्, धत्ताम्, दधतु, धेहि, धत्तात्, धत्तम्, धत्त, दधानि, दधाव, दधाम । धत्ताम्, दधाताम्, दधताम्, धत्स्व, दधाथाम्, धद्ध्वम्, दधै, दधा २ वहै, महै । अदधात्, अधत्ताम्, अदधुः, अदधाः, अधत्तम्, अधत्त, अदधाम्, अदध्व, अदध्म । अधत्त, अदधाताम्, अदधत, अधत्थाः, अदधाथाम्, अधद्ध्वम्, अदधि, अद २ ध्वहि, ध्महि ॥ अद्य० ॥ "पिबैति-"॥४।३।६६॥ इति सिच्लुपि, अधात्, अधाताम्, अधुः, अधाः, अधातम्, अधात, अधाम्, अधाव, अधाम । "इश्च-"॥४।३।४१॥ इतीत्वे, कित्त्वे, "धुट्ह्रस्व-"॥४।३।७०॥ इति सिच्लुपि, अधित, अधि ९ षाताम्, षत, थाः, षाथाम्, ड्ढ्वम्, ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि ॥ भाक ॥ अधायि, अधिषाताम्, अधायिषाताम्, अधि २ ड्ढ्वम्, ढ्वम्; अधायि ३ ड्ढ्वम्, ढ्वम्, ध्वम् । दधौ, दधतुः, दधुः, दधाथ, दाधिथ, दधथुः, दध, दधौ, दधि-२ व, म । दधे, दधाते, दधिरे, दधिषे, दधाथे, दधिध्वे, दधे, दधि २ वहे, महे । "गापा-"॥४।३।९६॥ इत्येः, धेयात् । धासीष्ट; धायिषीष्ट । धाता २; धायिता । धास्यति, ते; धायिष्यते । अधास्यत्, त; अधायिष्यत । "मिमी-"॥४।१।२०॥ इतीति, धित्सति, ते । देधीयते; "ईर्व्यञ्ज-"॥४।३।९७॥ ईः । दाधाति, दाधेति । "श्वश्च-" ॥४।२।९६॥ इत्याल्लुकि, "धागस्तथोश्च"॥२।१।७८॥ इत्यत्र गिन्निर्देशात् पूर्वस्य न धः; दात्तः, दाधति, दाधेषि, दाधासि, दात्थः, दात्थ, दाधेमि, दाधामि, दाध्वः, दाध्मः । क्ये, दाधीयते । दाध्यात् । दाधातु, दाधेतु; हौ, धेहि । अदाधात्, अदाधेत्, अदात्ताम्, अदाधुः ॥ अद्य० ॥ अदाधात्, अदाधाताम्; अदाधुः । अदाधायि, अदाधिषाताम्, अदाधायिषाताम् । दाधाञ्चकार । दाधेयात् । दाधिषीष्ट; दाधायिषीष्ट । दाधिष्यति, ते; दाधायिष्यते, "धागः"॥४।४।१५॥ इत्यत्र गनिर्देशान्न हिः; दाधि ५ त्वा, ता, तुम्, तः, २ वान् । विदाधाय । दाधत् । धापयति; विधापयति; प्रणिधापयति । अदीधपत् । विधापयाञ्चकार ।

विदिधापयिषति । दधत्, दधती, "शौ वा"॥४।२।९५॥ दधति, दधन्ति कुलानि । धास्यन् । धास्यन्ती, धास्यती । दधानः । धीयमानम् । धास्यमानम्; धायिष्यमाणम् । दधिवान् । दधानः । "धागः"॥४।४।१५॥ इति हिः, विहितः, २ वान् । पिहितम्, अपिहितम् । हित्वा । विधाय । "ऊर्याद्य-"॥३।१।२॥ इति श्रच्छब्दस्य गतिसंज्ञायां यबादेशे; श्रद्धाय । हितिः । धातुम् । धाता । धातव्यम् । धेयम् ॥ ७० ॥

डुभृंग्क् पोषणे च; चाद्धारणे । "हवः-"॥४।१।१२॥ इति द्विले, "पृभृ-" ॥४।१।५८॥ इति पूर्वस्य इः; बिभर्त्ति, बिभृतः, बिभ्रति, बिभर्षि । बिभृते, बिभ्राते, बिभ्रते, बिभृषे, बिभ्राथे, बिभृध्वे, बिभ्रे, बिभृ २ वहे, महे । क्ये, भ्रियते । बिभृयात् । बिभ्रीत । बिभर्तु; बिभृताम्, बिभ्रतु, बिभृहि०; बिभरा ३ णि, व, म । बिभृताम्, बिभ्राताम्, बिभ्रताम्, बिभृष्व०; बिभ ३ रै, रावहै, रामहै । अबि ९ भः, भृताम्, भरुः, भः, भरम्० । अबि ९ भृत, भ्राताम्, भ्रत, भृथाः, भ्राथाम्, भृध्वम्, भ्रि, भृवहि० ॥ अद्य० ॥ अभार्षीत्, अभार्ष्टाम्० । "ऋवर्णात्"॥४।३।३६॥ इत्यनिट्सिजाशिषोः कित्त्वाद् गुणाभावे, "धुड्ह्रस्व-" ॥४।३।७०॥ इति सिज्लुकि च; अभृत, अभृ ५ षाताम्, षत, थाः; ड्ढ्वम्, ढ्वम् । अभारि, अभृषाताम्, अभारिषाताम् । "भीह्री-"॥३।४।५०॥ इति वा आमि, बिभराञ्चकार । बिभराञ्चक्रे इत्यादि । पक्षे, बभार, बभ्रतुः, बभ्रुः, "स्क्रसृ-" ॥४।४।८१॥ इत्यत्र भृवर्जनान्नेटि; बभर्थ, बभ्रथुः, बभ्र, बभार, बभर, बभृ २ व, म । बभ्रे; बभृमहे । भ्रियात् । भृषीष्ट; भारिषीष्ट । भर्त्ता २; भारिता । भरिष्यति, ते; भारिष्यते । बुभूर्षति, ते । "इवृध-"॥४।४।४७॥ इत्यत्र भरति ग्रहणान्नास्य सानि वेट्त्वम् । अन्येत्वस्यापि वेटं; कृतगुणभरनिर्देशेन इडभावपक्षे कित्त्वेऽपि गुणं चेच्छन्ति; बिभर्षति, बिभरिषति । बेभ्रीयते । बरि रीर् ३ भरीति, बरि र् री ३ भर्त्ति । भारयति । अबीभरत् । बिभ्रत् । बिभ्रती । भ्रियमाणम् । भरिष्य २ न्, माणम्; भारिष्यमाणम् । बिभरांच २ कृवान्, क्राणः । बभृवान् । बभ्राणः । भृतः, २ वान् । भृत्वा । संभृत्य । भर्त्ता । भर्त्तुम् । भर्त्तव्यम् । शेषं कृग्वत् ॥ ७१ ॥

णिजूंकी शौचे च; चात् पोषणे । नेनेक्ति यशः क्ष्माम्, निर्मलीकुरुते इत्यर्थः । अयं विजूंकीवत् ॥ ७२ ॥

विजूंकी पृथग्भावे । "निजाम्-"॥४।१।५७॥ इति पूर्वस्यैत्वे; वेवेक्ति न यशश्चन्द्रात्, उज्वलत्वेन न पृथग्भवतीत्यर्थः । वेविक्तः, वेविजति, वेवेक्षि । वेविक्ते, वेवि ८ जाते, जते, क्षे, जाथे, ग्ध्वे, जे, ज्वहे, ज्महे । विज्यते । वेविज्यात्। वेविजीत । वेवेक्तु; "इयुक्तोपान्त्य-"॥४।३।१४॥ इति गुणाभावे; वेविजानि । वेविक्ताम् । अवेवेक्, अवेविक्ताम्, अवेविजुः, अवेवेक्; अवेविजम् । अद्य० ॥ "ऋदिच्छ्वि-" ॥३।४।६५॥ इति परस्मैपदे वा अङि, अविज २ त्, ताम् । पक्षे, "व्यञ्जनानाम्-" ॥४।३।४५॥ इति वृद्धौ, अवैक्षीत्, अवैक्ताम् । अविक्त, अविक्षाथाम्, अविक्षत, अविक्थाः । अवेजि । विवेज; विवेजिथ; विविजिम । विविजे; विविजिमहे । विज्यात् । विक्षीष्ट । वेक्ता २ । वेक्ष्यति, ते । विविक्षति, ते । वेविज्यते । वेजयति । अवीविजत् । वेविजत् । वेविजानः । विक्तः, २ वान् । विक्त्वा । प्रविज्य । वेक्ता । वेक्तुम् । वेगः । चान्तोऽयमिति सभ्याः; वेवेक्ति, वेविक्तः, वेविचति । णिगि, वेचयति; विवेचयति । विवेक्तुम् । विवेचनम् । विवेकः ॥ ७३ ॥

विष्लृंकी व्याप्तौ । वेवेष्टि यशः क्ष्माम्, व्याप्नोतीत्यर्थः । वेविष्टः, वेविषति, वेवेक्षि । वेविष्टे, वेविषाते, वेविषते । विष्यते । आनिवि; वेविषाणि । ह्य० ॥ अनि; अवेविषुः । अमि; अवेविषम् ॥ अद्य० ॥ लृदित्त्वादङि; अविषत् । आत्मनेपदेऽलङभावे, "हशिटो-"॥३।४।५५॥ इति सकि; अविक्षत, अविक्षाताम्, अविक्षन्त । अवेषि । विवेष । विविषे । वेक्ष्यति । विविक्षति, ते । विविष्यते । परिवेषयति । पर्यवीविषत् । विष्ट्वा । वेष्टा । वेष्टुम् । विष्टः, २ वान् । शेषं विजूंकीवत् ॥ ७४ ॥

अत्र घृप्रभृतयः ११ अन्यैरुक्ता अपि अलौकिकत्वात्प्रभुभिरुपेक्षिताः ॥

इति तपाचार्यश्रीदेवसुन्दरसूरिशिष्यश्रीगुणरत्नसूरिविरचिते क्रियारत्नसमुच्चयेऽदादिगणः ॥

अथ दिवादयः ।

दिवूच् क्रीडाजयेच्छापणिद्युतिस्तुतिगतिषु । जयेच्छा विजिगीषा; पणिर्व्यवहारः क्रियादिः । "दिवादेः श्यः"॥३।४।७२॥ इति श्ये, "भ्वादेः-"॥२।१।६३॥ इति दीर्घे च, दीव्यति; "उपसर्गाद्दिवः"॥२।२।१७॥ इति विनिमेयद्यूतपणयोः कर्मणो वा कर्मत्वे, शतस्य शतं वा प्रदीव्यति । अनुपसर्गस्य,"न"॥२।२।१८॥ इति कर्मत्वाभावे, शतस्य दीव्यति । "करणं च"॥२।२।१९॥ इति करणस्य कर्मत्वकरणत्वयोः, अक्षान् दीव्यति; अक्षैर्दीव्यति । दीव्यतः, दीव्यन्ति, दीव्य ३ सि, थः, थ, दीव्या ३ मि, वः, मः । क्ये, दीव्यते, दीव्येते० । दीव्येत् । दीव्यतु । अदीव्यत् । अद्य० ॥ अदेवीत्, अदेविष्टाम्० । अदेवि, अदेविषाताम्०; अदेवि ३ ड्ढ्वम्, ढ्वम्, ध्वम् । दिदेव; दिदिविम । दिदिवे; दिदिविमहे । दीव्यात् । देविषीष्ट । देविता २ । देविष्यति, ते । "इवृध-"॥४।४।४७॥ इति वेटि, "अनुनासिके च-"॥४।१।१०८॥ इति वस्योटि च; दिदेविषति, दुद्यूषति; अत्रासिद्धं बहिरङ्गमिति स्वरानन्तर्ये नेष्यते, तेन यत्वं भवति । एवमन्यत्रापि । देदीव्यते । देदिवीति, "अनुनासिके च-"॥४।१।१०८॥ इति वस्योटि, देद्योति । क्ङित्येवोडिति मते तु, "य्वोः-"॥४।४।१२१॥ इति वलुकि, देदेति, देद्यूतः, देदिवति, देदिवीषि, देद्योषि, देदेषि, देद्यूथः, देद्यूथ, देदिवीमि, देद्योमि, देद्यूवः, देदिवः; अत्र वस्य विकल्पेनानुनासिकत्वाद्वा ऊट्; पक्षे "य्वोः"॥४।४।१२१॥ इति व्लोपश्च; देद्यूमः। क्ये, देदीव्यते । देदीव्यात् । ह्य० ॥ अदेदिवीत्, अदेद्योत्, अदेदेत्, अदेद्यूताम्, अदेदिवुः, अदेदेवीः, अदेद्योः, अदेदेः । अद्यतन्यादौ पचिस्थानोक्तवत् । वेत्यनुक्त्वा "करणं च"॥२।२।१९॥ इत्यत्र चकारकरणं संज्ञाद्वयसमावेशार्थम्, तेन करणत्वात्तृतीया । कर्मत्वाच्चानाप्यलक्षणमणिक्कर्तुर्णौ कर्मत्वं, "अणिगि प्राणि-"॥३।३।१०७॥ इति परस्मैपदं च न भवति; अक्षैर्देवयते मैत्रश्चैत्रेण । अदीदिवत् । दीव्यन् । दीव्यन्ती । देविष्य २ न्, माणम् । दीव्यमानम् । "य्वोः-"॥४।४।१२१॥ इति वलुकि, दिदिवान्, दिदिवांसौ । ऊदित्त्वात् क्त्वि वेट्; द्युत्वा, देवित्वा । "वौ

व्यञ्जन-"॥४।३।२५॥ इत्यत्र अय्व इति निषेधाद्वा न कित्त्वम्, किन्तु "क्त्वा" ॥४।३।२९॥ इति कित्त्वाभावस्तेनात्र गुणः; वेट्त्वात् क्तयोर्नेट्; द्यूतः, २ वान् । द्यूतादन्यत्र, "पूदि-"॥४।२।७२॥ इति नः; आद्यूनः, २ वान् । देवि ३ ता, तुम्, तव्यम् । देव्यम् ॥ १ ॥

जॄष् झॄष्च् जरसि; वयोहानौ । जीर्यति । क्ये, जीर्य्यते । जीर्येत् । जीर्यतु । अजीर्यत् । अद्य० ॥ "ऋदिच्छ्वि-"॥३।४।६५॥ इत्यङि, "ऋवर्ण-"॥४।३।७॥ इति गुणे; अजरत्, अजरताम्० । पक्षे, "सिचि परस्मै-"॥४।३।४४॥ इति वृद्धौ; अजारीत्, अजारिष्टाम्० । "इट् सिज-"॥४।४।३६॥ इति वेटि, "वृत-"॥४।४।३५॥ इति वा दीर्घे, "ऋवर्णात्"॥४।३।३६॥ इत्यनिट्सिजाशिषोः कित्त्वे च, अजरिष्ट, अजरीष्ट, अजीर्ष्ट स्वयमेव; एषु "एकधातौ-"॥ ३ । ४ । ८६ ॥ इति कर्मकर्त्तर्यात्मनेपदम्; किरादित्वाच्च, "भूषार्थ-"॥३।४।९३॥ इति न ञिच्ञिट्क्या भवन्ति ॥ भाक ॥ अजारि; ञिटि, अजारिषाताम्; इटि, अजरीषाताम्; अजरिषाताम्; कित्त्वे, अजीर्षाताम् ४ । एवमग्रेऽपि ४, ४ ॥ जजार, "स्कॄच्छॄत-" ॥४।३।८॥ इति गुणे, "जॄभ्रम-"॥४।१।२६॥ इति वैत्वे, द्वित्वाभावे च, जेरतुः, जजरतुः, जेरिथ, जजरिथ । जेरे, जजरे । जीर्यात् । जारिषीष्ट, जरिषीष्ट, जीर्षीष्ट । जरिता २; जरीता २; जारिता । जारिष्यति, जरीष्यति ॥ भाक ॥ जरिष्यते, जरीष्यते, जारिष्यते । "इवृध-"॥४।४।४७॥ इति वेटि, "नामिनोऽनिट्" ॥४।३।३३॥ इति कित्त्वे च; जिजरिषति, जिजरीषति, जिजीर्षति । जेजीर्यते । जाजरीति, जाजर्त्ति । शेषं तॄवत् । "कगे-"॥४।२।२५॥ इति ह्रस्वे, जरयति । अजीजरत् । ञिणम्परे णौ तु वा दीर्घः; अजारि, अजरि । जिजरयिषति । जीर्यन् । जीर्यमाणम् । जरिष्य २ न्, माणम्; जरीष्य २ न्, माणम्; जारिष्यमाणम् । जिजीर्वान् । जजिराणम् । क्वसौ इरि कृते द्वित्वम् । काने तु द्वित्वे कृते इर् स्वरविधित्वात् । किति, "ऋवर्णश्रि-"॥४।४।५७॥ इति नेटि, "गत्यर्थाकर्मक-"॥ ५।१।११ ॥ इति वा कर्त्तरि क्ते, "ऋल्व-"॥४।२।६८॥ इति ने, जीर्णश्चैत्रः । जीर्णं चैत्रेण वा । "ऋवर्णश्रि-"॥४।४।५७॥ इति निषेधात्, "जॄव्रश्चः-"॥४।४।४१॥ इत्यत्र निरनुबन्धजॄग्रहणाच्च नास्य सानुबन्धस्येट्, जीर्त्वा । अस्यैवेच्छन्त्यन्ये,

जरित्वा, जरीत्वा । जरि ३ ता, तुम्, तव्यम्; जरी ३ ता, तुम्, तव्यम् । झॄष् । झीर्यति । अयं जॄष्वत्, नवरं परोक्षायाम्; जझार; जझरिम । जझरे । क्त्वि, झीर्त्वा ॥ २ ॥ ३ ॥

चत्वारोऽनिटः ॥ शोंच् तक्षणे; तनूकरणे । "न शिति"॥४।२।२॥ इत्यात्व निषेधात् "ओतः श्ये"॥४।२।१०३॥ इति ओल्लुकि, श्यति; निश्यति, श्यतः, श्यन्ति । शायते । "टूधेघ्रा-"॥४।३।६७॥ इति वा सिच्लुपि, अशात्, अशाताम्, अशुः, अशाः । पक्षे, "यमिरमि-"॥४।४।८६॥ इतीटि, सेऽन्ते च; अशासीत्, अशासिष्टाम्, अशासिषुः, अशासीः । अशायि, अशायिषाताम्, अशासाताम् । शशौ, शशतुः; शशाथ, शशिथ; शशिम । शशे, शशाते । शायात् । शासीष्ट; शायिषीष्ट । शाता २; शायिता । शास्यति, ते; शायिष्यते । शिशासति । शाशायते । शाशेति, शाशाति । "पाशा-"॥४।२।२०॥ इति ये, निशाययति । अशीशयत् । शिशाययिषति । श्यन् । शास्यन् । शशिवान् । शशानम् । क्तिति ते, "छाशोर्वा"॥४।४।१२॥ इति वेत्वे, निशितः, २ वान्; निशातः, २ वान् । शित्वा; शात्वा । "शो व्रते"॥४।४।१३॥ नित्यं इः; संशितव्रतः साधुः । शाता । शातुम् ॥ ४ ॥

दों, छोंच् छेदने । द्यति; अवद्यति, द्यतः, द्यन्ति । "ईर्व्यञ्जने-"॥४।३।९७॥ ईः, दीयते । "पिबैति-"॥४।३।६६॥ इति सिच्लुपि, अदात्, अदाताम्, अदुः, अदाः । अदायि, अदायिषाताम्, अदिषाताम्, "इश्च-"॥४।३।४१॥ इति इः । ददौ । ददे; ददिमहे । "गापा-"॥४।३।९६॥ इत्येः; देयात् । दायिषीष्ट; दासीष्ट । दाता २; दायिता । दास्यति, ते; दायिष्यते । दित्सति । देदीयते । दादाति । "इडेत्-"॥४।३।९४॥ इति आलोपे, दादितः, २ वान् । दापयति । द्यन् । दास्यन् । ददिवान् । ददानम् । "दोसोमास्थ इः"॥४।४।११॥ दितः, २ वान् । दित्वा । "स्वरात्-"॥४।४।९॥ इति त्त्वे, अवत्तम् । "दस्ति"॥३।२।८८॥ इति नामिनो दीर्घे, परीत्तम् । दाता । दातुम् ॥ छों ॥ अवच्छ्यति । छायते । अच्छात् । अच्छासीत् । चच्छौ । चच्छे । छायात्; अपच्छायात्, अत्र छस्य द्वित्वं लाक्षणिकम्, तेन "संयोगादेर्वा-"॥४।३।९५॥ इति न एः । छास्यति । चिच्छासति ।

चाच्छायते । णौ, छाययति । अचिच्छयत् । शेषं सर्वं शोंचूवत् ॥ ५ ॥ ६ ॥

षोंच् अन्तकर्मणि; विनाशे । अवस्यति; व्यवस्यति; "उपसर्गात्सुग्-" ॥२।३।३९॥ इति षत्वे, "नेर्ङ्मा-"॥२।३।७९॥ इति णिः, प्रणिष्यति । क्ये, "ईर्व्यञ्जने-"॥४।३।९७॥ इति ईः; अवसीयते; विषीयते, न अस्यते इत्यर्थः । अभिषीयते, अपनीयते इत्यर्थः । अड्व्यवायेऽपि षः, अभ्यष्यत् ; व्यष्यत् । "ट्धेघ्रा-"॥४।३।६७॥ इति वा सिजूलुपि, अवा ३ सात्, साताम्, सुः । पक्षे, अवासा ३ सीत्, सिष्टाम्, सिषुः । अवासायि, अवासायिषाताम्; अवासासाताम्० । अवससौ । अवससे । अवसेयात् । सासीष्ट; सायिषीष्ट । सास्यति, ते; सायिष्यते । षपाठात् "नाम्यन्त-"॥२।३।१५॥ इति षः, सिषासति । द्वित्वे निषेधादाद्यस्य न षः, अभिसिषासति । सेषीयते । सासेति, सासाति । शेषं त्रैङ्वत् । "पाशा-"॥४।२।२०॥ इति ये, अवसाययति । अवासीषयत् । अवसिषाययिषति । अवस्यन् । अवसास्यन् । ससिवान् । ससानम् । "दोसो-" ॥४।४।११॥ इति इः, अवसितः, २ वान् । सित्वा । अवसाय । अवसा ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥ ७ ॥

व्रीड्च् लज्जायाम् । व्रीड्यति । ऋफिडादित्वाल्लत्वे, व्रील्यति । व्रीड्यते । अव्री ३ डीत्, डिष्टाम्, डिषुः । अव्रीडि । विव्रीड । विव्रीडे । व्रीड्यात् । व्रीडिषीष्ट । व्रीडिष्यति, ते । वेव्रीड्यते । वेव्री २ डीति, ट्टि । व्रीडयति । अविव्रिडत् । व्रीड्यन् । व्रीडि ५ ता, तुम्, त्वा, तः, २ वान् ॥ ८ ॥

नृतैच् नर्त्तने; नाट्ये । नृत्यति । अणपाठात् "अदुरुप-"॥२।३।७७॥ इति न णः; प्रनृत्यति । क्ये, नृत्यते । अन ३ र्त्तीत्, र्तिष्टाम्, र्तिषुः। अनर्त्ति, अनर्त्तिषाताम्० । ननर्त्त; ननृतिम । ननृते । नृत्यात् । "कृतचृतनृत-"॥४।४।५०॥ इत्यसिचः सादेरादिर्वेट्, नर्त्तिषीष्ट; नृत्सीष्ट । "सिजाशिष-"॥४।३।३५॥ इति कित्त्वम् ; नर्त्तिता २ । नर्त्स्यति, ते; नर्त्तिष्यति, ते । निनृत्सति, निनर्त्तिषति । "नृतेर्यङि" ॥२।३।९५॥ इति णत्वप्रतिषेधे, नरीनृत्यते । नरि, री, र् ३ नर्त्ति । "द्व्युक्तो-"॥४।३।१४॥ इति गुणाभावे, नरी, रि, र् ३ नृतीति । रागमे ईतं नेच्छन्त्यन्ये । नर्नृत्तः, मर्नृताति । अमि, अनर्नृतम् । शेषं वृतूङ्वत । वेट्त्वादेव क्तयोरिडभावे सिद्धे

ऐदित्त्वं यङ्लुबन्तादनेकस्वरादपीडभावार्थम्; नरीनृत्तः, २ वान् । फलवत् कर्त्तरि "अणिगि प्राणि-"॥३।३।१०७॥ इति परस्मै प्राप्तौ, "परिमुह-"॥३।३।९४॥ इत्यात्मनेपदे, नर्त्तयते नटं चैत्रः। "ऋदृ-"॥४।२।३७॥ इति वा ॠः, अनीनृतन्; अननर्त्तन् । नृत्यन् । नृत्यन्ती । नर्त्स्यन्; नर्त्तिष्यन् । ननृत्वान् । ननृतानम्। वेट्त्वान्नेटि, नृत्तः, २ वान् । नर्त्ति ३ ता, तुम्, त्वा। प्रनृत्य ॥ ९ ॥

कुथच् पूतिभावे; दुर्गन्धक्लेदे। कुथ्यति। कुथ्यते। अको २ थीत्, थिष्टाम्। अकोथि। चुकोथ। चुकुथे। कुथ्यात् । कोथिषीष्ट। कोथिता २। कोथिष्यति, ते । चुकुथिषति; चुकोथिषति । चोकुथ्यते । अचूकुथत् । कोथित्वा। अत्र "वौ व्यञ्जन-"॥४।३।२५॥ इति क्त्वो विकल्पेन कित्त्वेऽपि "ऋत्तृष-"॥४।३।२४॥ इत्यत्र न्युपान्त्ये इत्यस्य व्यावृत्तिबलात्, "क्त्वा"॥४।३।२९॥ इत्यनेन नित्यं न कित्त्वम्; कुथितम् । कोथि २ ता, तुम् ॥ १० ॥

गुधच् परिवेष्टने । गुध्यति । जुगोध । गोधिता । गोधितुम् । "क्षुधक्लिश-" ॥४।३।३१॥ इति क्त्वः कित्त्वे, गुधित्वा । गुधितः । शेषं कुथच्वत् ॥ ११ ॥

त्रयोऽनिटः॥ राधंच् वृद्धौ । स्वादिषु पठिष्यमाणस्याप्यस्येह पाठो वृद्धावेव श्यार्थः। राध्यति, वर्द्धत इत्यर्थः। वृद्धेरन्यत्र श्नुरेव; राध्नोति, पचतीत्यर्थः। चुरादेराकृतिगणत्वात्, राधयति; आराधयति। कश्चित्तु राध, साध, संसिद्धाविति पठन् वृद्धेरन्यत्रापि राधेः श्यं, साधिं च धात्वन्तरमिच्छति । राध्यत्यन्नम्; आराध्यति । साध्यति ॥ १२ ॥

व्यधंच् ताडने । "शिदवित्"॥४।३।२०॥ इति श्यस्य ङित्त्वात् "ज्याव्यधः क्ङिति"॥४।१।८१॥ इति य्वृति, विध्यति। विध्यते । अव्यात्सीत्, अव्याद्धाम्, अव्यात्सुः, अव्यात्सीः, अव्याद्धम्, अव्याद्ध, अव्यात्सम्, अव्यात्स्व, अव्यात्स्म । अव्याधि, अव्यत्साताम् । "ज्याव्येव्यधि-"॥४।१।७१॥ इति पूर्वस्येत्वे, विव्याध, विविधतुः, विविधुः, विव्यधिथ, विव्यद्ध, विविधथुः, विविध, विव्याध, विव्यध, विविधि २ व, म। विविधे । विध्यात् । व्यत्सीष्ट। व्यद्धा २ । व्यत्स्यति । अव्यत्स्यत् । विव्यत्सति । वेविध्यते। व्यञ्जनादौ विति, वेवे ३ द्धि; त्सि; ध्मि । शेषे, वेवि ९ धीति, द्धः, धति, धीषि, द्धः, द्ध धीमि, ध्वः, ध्मः। हौ, वेविद्धि ॥ १३ ॥

व्यञ्जनादौ विति; अवे ३ वेत्; वेः, वेत्। शेषे, अवेवि ९ धीत्, द्धाम्, धुः, धीः, द्धम्, द्ध; धं, ध्व, ध्म । शेषं पचिस्थाने । व्याधयति । अविव्यधत्। विध्यन्। व्यत्स्यन्। विद्धः, २ वान्। विद्ध्वा। प्रविध्य। व्यद्धा। व्यद्धुम्। व्यद्धव्यम् ॥१३॥

क्षिपंच्, प्रेरणे । क्षिप्यति । अक्षेप्सीत् । चिक्षेप । क्षेप्ता । क्षिप्तः । शेषं तु क्षिपींत् प्रेरणे इत्यस्येव ॥ १४ ॥

तिम, तीम, ष्टिम, ष्टीमच् आर्द्रभावे । तिम्यति । क्ये, तिम्यते । अतेमीत्, अतेमिष्टाम् । अतेमि, अतेमिषाताम् । तितेम; तितिमिम । तितिमे । तिम्यात् । तेमिषीष्ट । तेमिता २। तेमिष्यति, ते। अतेमिष्यत्, त। तितेमिषति; तितिमिषति । तेतिम्यते । तेतिमीति, तेतेन्ति, तेतीन्तः, तेतिमति । तेमयति । अतीतिमत्। तितेमयिषति । तिम्यन्। तिम्यन्ती । तिम्यमानम्। तेमिष्य २ न्, माणम्। तिमितः, २ वान्। "वौव्य-"॥४।३।२५॥ इति क्त्वासनोर्वा कित्त्वे, तेमित्वा; तिमित्वा। प्रतिम्य । तेमि २ ता, तुम्। तितिन्वान्। तितिमानम्॥ ष्टिम् ॥ स्तिम्यति । स्तिम्यते। अस्तेमीत् । षपाठात् षत्वे; तिष्टेम; तिष्टिमिम । तिष्टिमे । स्तेमिता । स्तेमिष्यति । "णिस्तोरेव-"॥२।३।३७॥ इति न षत्वे, तिस्तिमिषति; तिस्तेमिषति । तेष्टिम्यते । तेष्टेन्ति; तेष्टिमीति । स्तेमयति। अतिष्टिमत्। शेषं तिम्वत् । तीम, ष्टीमौ चाप्रसिद्धत्वादल्पं लिख्येते । तीम्यति । अतीमीत् । तितीम । तीमिता । स्तीम्यति । अस्तीमीत् । तिष्टीम । तिष्टीमे । स्तीमिता । स्तीमितः ॥१५॥१६॥१७॥१८॥

षिवूच् उतौ; उतिर्वानम्; तन्तुसन्तान इत्यर्थः। सीव्यति। क्ये, सीव्यते। असेवीत, असे ३ विष्टाम्, विषुः, वीः । असेवि, असेविषाताम्। सिषेव, सिषिवतुः, सिषिवुः, सिषेविथ, सिषिवथुः, सिषिव, सिषेव, सिषिवि २ व, म । सिषिवे। सीव्यात्। सेविषीष्ट। सेविता। सेविष्यति। असेविष्यत्। परि, नि, वि पूर्वस्य "असोङसिवू-"॥२।३।४८॥ इति षे, परिषीव्यति; निषीव्यति; विषीव्यति। अड्व्यवाये, "स्तुस्वञ्जश्च-"॥२।३।४९॥ इति वा षे, पर्यषीव्यत्, पर्यसीव्यत्; न्यषीव्यत्, न्यसीव्यत्; व्यषीव्यत्, व्यसीव्यत्, षट्स्वपि ऊतवानित्यर्थः। परिषिषेव । परिषिषेवे इत्यादि। "इवृध-"॥४।४।४७॥ इति वेटि, सुस्यूषति; सिसेविषति, अत्र "णिस्तोरेव-"॥२।३।३७॥ इति नियमात् षणि न षत्वम्, "वौ व्यञ्जने-"॥४।३।२५॥ इत्यत्र

अव्व इति निषेधान्न क्त्वासनोः कित्त्वं च। सेषीव्यते। यङ्लुन्तात्सनि; सेषिविषते। लुपि, सेषिवीति, सेष्योति, सेषेति। "असोङ-"॥२।३।४८॥ इत्यत्र सिवोऽनुबन्ध-निर्देशादत्र न षत्वे, परिसेषिवीति, सेष्यूतः, सेषिवति, सेष्योषि, सेषिवीषि, सेषेषि। अग्रे दिवूच्वत्। सेवयति; परिषेवयति। ङे, असीषिवत्। "असोङ-" ॥२।३।४८॥ इति निषेधान्न षत्वे, पर्यसीषिवत्। मा परिसीषिवत्। सिषेवयिषति। सीव्य २ न्, मानम्। सेविष्य २ न्, माणम्। "च्वोः-"॥४।४।१२१॥ इति वलुकि, सिषिवान्। सिषिवाणम्। सेषि २ ता, तुम्। ऊदित्त्वात् क्त्वि वेटि, स्यूत्वा; "क्त्वा"॥४।३।२९॥ इति कित्त्वाभावाद्गुणे, सेवित्वा। वेट्त्वान्नेटि, स्यूतः, २ वान्। सेवितव्यम्। सेव्यम्। "ष्ठिवूसिवोऽनटि वा"॥४।२।११२॥ इति वा दीर्घे; सेवनम्, सीवनम्॥ १९॥

ष्ठिवूच् निरसने। "षः स-"॥२।३।९८॥ इत्यत्र ष्ठिवो वर्जनान्न सः, "भ्वादेः-"॥२।१।६३॥ इति दीर्घे, ष्ठीव्यति। क्ये, निष्ठीव्यते। शेषं भौवादिक-ष्ठिवूवत्॥ २०॥

इषच् गतौ। इष्यति; अन्विष्यति; प्रेष्यति। क्ये, इष्यते। अद्य०॥ ऐषीत्, ऐषिष्टाम्, ऐषिषुः। ऐषि, ऐषिषाताम्। इयेष, ईषतुः, ईषुः; इयेषिथ; ईषिम। ईषे, ईषाते। इष्यात्। एषिषीष्ट। एषिता २। एषिष्यति। प्र, एषिष्यति; "उपसर्गस्यानिण्-"॥१।२।१९॥ इत्यलुकि, प्रेषिष्यति, ते। ऐषिष्यत्, त। एषि-षिषति। एषयति। एष्यते। एषिषत्। इष्यन्। इष्यन्ती। इष्यमाणम्। एषिष्य २ न्, माणम्। ईषिवान्। ईषुषी। ईषाणम्। ईषितः, २ वान्। एषि ३ ता, तुम्, तव्यम्। एषित्वा। प्रेष्य। घ्यणि, एष्यः। "प्रस्यैषैष्य-"॥१।२।१४॥ इत्यैत्वे, प्रैष्यः। अलुकि, प्रेषणम्॥ २१॥

त्रसैच् भये। "भ्रासभ्लास-"॥३।४।७३॥ इति वा श्ये, त्रस्यति। पक्षे, शवि, त्रसति। क्ये, त्रस्यते॥ अद्य०॥ अत्र २ सीत्, सिष्टाम्, सिषुः। अत्रा ३ सीत्, सिष्टाम्, सिषुः। अत्रासि, अत्रसिषाताम्। तत्रास। "जॄभ्रम-"॥४।१।२६॥ इति वैत्वे, त्रेसतुः, त्रेसुः, त्रेसिथ; त्रेसिम। त्रेसे। पक्षे, तत्रसतुः, तत्रसुः; तत्र-सिव, तत्रसिम। तत्रसे। त्रस्यात्। त्रसिषीष्ट। त्रसिता २। त्रसिष्यति, ते।

अत्रसिष्यत, त । तित्रसिषति । तात्रस्यते । तात्र २ सीति, स्ति । त्रासयति । अतित्रसत् । त्रस्यन् । त्रसन् । त्रसिष्यन् । त्रसिष्यमाणम् । त्रेसिवान् ; तत्रस्वान् । त्रेसानम् ; तत्रसानम् । त्रसि ३ ता, तुम्, त्वा । ऐदित्त्वान्नेटि, त्रस्तः, २ वान् ॥ २२ ॥

षहच् शक्तौ । सह्यति । परि, नि, वि पूर्वस्य, "असोङ-"॥२।३।४८॥ इति षत्वे, परिषह्यति । सह्यते । "न श्वि-"॥४।३।४९॥ इति न वृद्धिः, असहीत् । ससाह । "अनादे-"॥४।१।२४॥ इत्येत्वं, न च द्विः, सेहतुः । सहिता । साहिष्यति । सिषहिषति ॥ २३ ॥

अथ पुषादिः ।

पुषंच् पुष्टौ । अकर्मकोऽयं अनिट् च । पुष्यति, पुष्टो भवतीत्यर्थः । क्ये, पुष्यते । परस्मैपदे पुषादित्वादङि, अपुषत्, अपु ८ षताम्, षन्, षः, षतम्, षत, षम्, षाव, षाम । एवमग्रेऽपि । सकि, व्यत्यपु ९ क्षत, क्षाताम्, क्षन्त, क्षथाः, क्षाथाम्, क्षध्वम्, क्षि, क्षावहि, क्षामहि ॥ भावे; अपोषि । पुपोष, पुपुषतुः; पुपोषिथ; पुपुषिम । पुपुषे । पुष्यात् । पुक्षीष्ट, किंत्त्वान्न गुणः । पोष्टा । पोक्ष्यसि । अपोक्ष्यत् । पुपुक्षति । पोपुष्यते । पोपोष्टि, पोपु ३ षीति, ष्टः, षति; पोपोक्षि, पोपु ३ षीषि, ष्ठः, ष्ठ, पोपोष्मि, पोपु ३ षीमि, ष्वः, ष्म । पोपुष्यात् । पोपोष्टु । अपोपोट्, अपोपुषीत्, अपोपुष्टाम्, अपोपुषुः, अपोपोट्, अपोपुषीः; अपोपुषम् । पोषयति । अपूपुषत् । पुष्यन् । पोक्ष्यन् । पुष्यमाणम् । पोक्ष्यमाणम् । पुष्टः, २ वान् । पुष्टिः । पुष्ट्वा । प्रपुष्य । पोष्टा । पोष्टुम् । पोष्टव्यम् । पोष्यम् ॥२४॥

लुटच् विलोटने । लुट्यति । पुष्याद्यङि, अलुट २ त्, ताम् । शेषं भूवादिलुटवत् ॥ २५ ॥

ष्विदांच् गात्रप्रक्षरणे; घर्मस्रुतौ । अनिट् । स्विद्यति; प्रस्विद्यति । क्ये, स्विद्यते । पुष्याद्यङि, अस्विद ३ त, ताम्, न् । अस्वेदि । सिष्वेद, सिष्विदतुः; सिष्वेदिथ । सिष्विदे । स्विद्यात् । "सिजाशिष-"॥४।३।३५॥ इति कित्त्वे,

स्वित्सीष्ट । स्वेत्ता । स्वेत्स्यति । सिष्वित्सति । सेष्विद्यते । स्वेदयति । असिष्विदत् । "णिस्तोरेव-"॥२।३।३७॥ इत्यत्र वर्जनान्न षत्वे, सिस्वेदयिषति । आदित्त्वान्नेट्; स्विन्नः, २ वान् । "नवा भाव-"॥४।४।७२॥ इति वा नेटि, स्विन्नमनेन । प्रस्विन्नः, २ वान् । पक्षे इटि, "न डीङ्-"॥४।३।२७॥ इति कित्त्वाभावाद्गुणे, स्वेदितमनेन । प्रस्वेदितः, २ वान् । स्वेत्ता । स्वेत्तुम् । स्वित्त्वा । प्रस्विद्य ॥ २६ ॥

क्लिदौच् आर्द्रभावे । क्लिद्यति । क्लिद्यते । पुष्याद्यङि, अक्लिदत् । अक्लेदि । चिक्लेद । चिक्लिदे । क्लिद्यात् । औदित्त्वाद्वेटि, क्लित्सीष्ट; क्लेदिषीष्ट । क्लेत्ता; क्लेदिता । क्लेत्स्यति; क्लेदिष्यति । चिक्लित्सति; चिक्लिदिषति; चिक्लेदिषति । चेक्लिद्यते । क्लेदयति । अचिक्लिदत् । क्लिद्यन् । वेट्त्वान्नेट्, क्लिन्नः, २ वान् । क्लेत्त्वा । क्लेत्तुम् । क्लेदि २ ता, तुम् । वेटि, "वौ व्यञ्जन-"॥४।३।२५॥ इति वा कित्त्वे च, क्लित्त्वा, क्लिदित्वा, क्लेदित्वा ॥ २७ ॥

चत्वारोऽनिटः ॥ क्षुधंच् बुभुक्षायाम् । क्षुध्यति । क्ये, क्षुध्यते । अङि, अक्षुध ३ त्, ताम्, न् । अक्षोधि, अक्षु ९ त्साताम्, त्सत, द्धाः, त्साथाम्, द्ध्वम्, द्द्ध्वम्, त्सि, त्स्वहि, त्स्महि । चुक्षोध, चुक्षुधतुः; चुक्षोधिथ । चुक्षुधे । क्षुध्यात् । क्षुत्सीष्ट । क्षोद्धा २ । क्षोत्स्यति । अक्षोत्स्यत् । चुक्षुत्सति । चोक्षुध्यते । चोक्षोद्धि, चोक्षुधीति । क्षोधयति । अचुक्षुधत् । क्षुध्यन् । क्षुध्यमानम् । "क्षुधवसस्तेषाम्"॥४।४।४३॥ इतीटि, क्षुधितः, २ वान् । "क्षुध-"॥४।४।४३॥ इतीटि, "क्षुधक्लिश-"॥४।३।३१॥ इति कित्त्वे च, क्षुधित्वा । क्षोधित्वा इत्यप्यन्ये । क्षोद्धा । क्षोद्धुम् ॥ २८ ॥

शुधंच् शौचे; नैर्मल्ये । शुध्यति; विशुध्यति । क्ये, विशुध्यते । अङि, अशुधत् । भाक । अशोधि, अशुत्साताम् । शुशोध, शुशुधतुः; शुशोधिथ; शुशुधिम । शुशुधे । शुध्यात् । शुत्सीष्ट । शोद्धा । शोत्स्यति । शुशुत्सति । शोशुध्यते । शोशोद्धि, शोशुधीति । शोधयति । अशूशुधत् । शुद्धः, २ वान् । शुद्धिः । शोद्धा । शोद्धुम् । शुद्ध्वा । विशुध्य ॥ २९ ॥

क्रुधंच् कोपे । "क्रुद्द्रुह-"॥२।२।२७॥ इति सम्प्रदानत्वे, मैत्राय क्रुध्यति । क्ये; क्रुध्यते । अक्रुधत् । अक्रोधि । चुक्रोध । चुक्रुधे । क्रुध्यात् । क्रुत्सीष्ट । क्रोद्धा ।

क्रोत्स्यति । चुक्रुत्सति । चोक्रुध्यते । चोक्रोद्धि, चोक्रुधीति । क्रोधयति । अचुक्रुधत् । क्रुद्धः, २ वान् । क्रुद्ध्वा । क्रोद्धुम् । क्रोद्धा ॥ ३० ॥

षिधूंच् संराद्धौ; निष्पत्तौ । सिध्यति; "स्थासेनिसिध-"॥२।३।४०॥ इत्यत्र सिध्यतेरग्रहणादुपसर्गान्न षत्वम्, अभिसिध्यति, सिध्यतः, सिध्यन्ति । क्ये, सिध्यते । अङि, असिधत्, असिधताम् । असेधि । षपाठात् "नाम्यन्त-" ॥२।३।१५॥ इति षत्वे, सिषेध, सिषिधतुः, सिषिधुः, सिषेधिथ; सिषिधिम । सिषिधे । सिध्यात् । सित्सीष्ट । सेद्धा । सेत्स्यति । असेत्स्यत् । सिषित्सति । सेषिध्यते । सेषेद्धि, सेषिधीति । णौ "सिध्यतेरज्ञाने"॥४।२।११॥ इत्यात्वे, मन्त्रं साधयति; तपः साधयति; अन्नं साधयति दातुम् । ज्ञाने तु, आचारः कुलं सेधयति, ज्ञापयतीत्यर्थः । असीषधत्; असीषिधत् । सिषाधयिषति; सिषेधयिषति । साधितः । साधयित्वा । सिध्य २ न्, मानम् । सेत्स्य २ न्, मानम् । सिषिद्ध्वान् । सिषिधानम् । सिद्धः, २ वान् । सिद्ध्वा, सिधित्वा, सेधित्वा; ऊदित्वात् क्त्वि वेट् । सेद्धा । सेद्धुम् । सिद्धिः ॥ ३१ ॥

ऋधूच् वृद्धौ । ऋध्यति; समृध्यति । क्ये, ऋध्यते । पुष्याद्यङि, आर्धत्; माङ्योगे न वृद्धिः, मा ऋधत्, आर्धताम्, आर्धन् । आर्धि । "अनात-"॥४।१।६९॥ इति पूर्वस्यात्वे, ने च, आनर्ध, आनृधतुः, आनृधुः, आनर्धिथ; आनृधिम । आनृधे । ऋध्यात् । आर्धिषीष्ट । अर्धिता २ । अर्धिष्यति । आर्धिष्यत् । "इवृध--"॥४।४।४७॥ इति वेटि, अर्दिधिषति । पक्षे "ऋध ईर्त्"॥४।१।१७॥ इति ईर्त् न च द्विः, ईर्त्सति । णौ, अर्द्धयति । आर्दिधत् । समृध्यन् । समृध्यमानम् । समार्धिष्यन् । आनृध्वान् । आनृधानम् । ऊदित्त्वात् क्त्वि वेट्, ऋद्ध्वा; अर्धित्वा । समृध्य । वेट्त्वान्नेटि, ऋद्धः, २ वान् । अर्धिता । अर्धितुम् ॥ ३२ ॥

गृधूच् अभिकाङ्क्षायाम् । गृध्यति । क्ये, गृध्यते । अङि, अगृधत् । अगर्धि, अगर्धिषाताम् । जगर्ध, जगृधतुः; जगृधिव, जगृधिम । जगृधे । गृध्यात् । गर्धिषीष्ट । गर्धिता । गर्धिष्यति । अगर्धिष्यत् । जिगर्धिषति । जरीगृध्यते । "ह्रयुक्तोपान्त्य-"॥४।३।१४॥ इति गुणाभावे, जरीगृधीति; जरीगर्द्धि ।

रि, री, र् त्रयं प्रत्येकमत्राग्रे च योज्यं सर्वत्र । जरि१०गृद्धः, गृधति, घर्त्सि, गृधीषि, गृद्धः, गृद्ध, गृधीमि, गर्ध्मि, गृध्वः, गृध्मः । क्ये, जरिगृध्यते । जर्गृध्यात् । जरीगृधीतु; जरीगर्द्धु । हौ, जर्गृद्धि ॥ ह्य० ॥ अजरि ५ घर्त्, घर्द्, गृधीत्, गृद्धाम्, गृधुः । "सेः सृद्धाम्-"॥४।३।७९॥ इति सेर्लुकि वा धस्य रुत्वे; आदिचतुर्थत्वे; "रो रे-"॥१।३।४१॥ इति रलुकि, अतो दीर्घे च, अजरी ९ घाः, घर्त्, घर्द्, गृधीः, गृद्धम्, गृद्ध, गृधम्, गृध्व, गृध्म । शेषं पचिस्थाने । णौ, "प्रलम्भे गृधि-"॥३।३।८९॥ इत्यात्मनेपदे; गर्द्धयते श्वानम्, प्रतारयतीत्यर्थः । अन्यत्र गर्द्धयति, प्रलोभयतीत्यर्थः । "ऋदृ-"॥४।२।३७॥ इति वा ऋः, अजीगृधत्, अजगर्धत् । गृध्यन् । गृध्यमानम् । गर्धिष्य २ न्, माणम् । जगृध्वान् । जगृधानम् । गृद्ध्वा, गर्धित्वा; ऊदित्त्वाद्वेट्, "क्त्वा"॥४।३।२९॥ इत्यकित्त्वाद्गुणश्च । वेट्त्वान्नेटि; गृद्धः, २ वान् । गर्धि २ ता, तुम् ॥ ३३ ॥

त्रयो वेटः॥ रधौच् हिंसासंराद्ध्योः; संराद्धिः पाकः । रध्यति । क्ये, रध्यते । पुष्याद्यङि, स्वरादौ प्रत्यये, "रध-"॥४।४।१०१॥ इतीटि ने,"नो व्यञ्जन-"॥४।२।४५॥ इति नलुकि; अरधत्, अरधताम् । अरन्धि; औदित्त्वाद्वेटि, इटि तु परोक्षायामेवेति नियमान्नागमाभावे च; अरधिषातामित्यादि । पक्षे, अरत्साताम्, अरत्सत, अरद्धाः; अरद्ध्वम्, अरद्द्ध्वम् । "रध-"॥४।४।१०१॥ इति ने, ररन्ध; "इन्ध्य-"॥४।३।२१॥ इति संयोगात्कित्त्वाभावे; ररन्धतुः, ररन्धुः, ररान्धिथ, रर ५ न्धथुः, न्ध, न्ध, न्धिव, न्धिम । ररन्धे । रध्यात् । रत्सीष्ट; रधिषीष्ट । रद्धा, रधिता । रत्स्यति; रधिष्यति । अरत्स्यत्; अरधिष्यत् । रिरत्सति; रिरधिषति । रारध्यते । राराद्धि, रारन्धीति, रारद्धः, कित्त्वान्नस्य लुकि; रारधति ॥ ह्य० ॥ अरा ७ रत्, रन्धीत्, रद्धाम्, रधुः, रः, रत्, रन्धीः । रारधत् । रन्धयति । अररन्धत् । रिरन्धयिषति । रध्यन् । रत्स्यन्; रधिष्यन् । "अनादेशादेः-" ॥४।१।२४॥ इत्येत्वे, "घसेक-"॥४।४।८२॥ इतीटि, "रध-"॥४।४।१०१॥ इति ने, क्वसोः कित्त्वान्नलुकि च; रेधिवान् । रेधानम् । वेट्त्वान्नेट्; रद्धः, २ वान् । रद्ध्वा; रधित्वा । रधि २ ता, तुम् । रद्धा, रद्धुम् । रद्धव्यम्; रधितव्यम् ॥ ३४ ॥

तृपौच् प्रीतौ; सौहित्ये। तृप्यति। क्ये, तृप्यते। आङि, अतृपत्। "स्पृशमृश-"॥३।४।५४॥ इति वा सिचि, अताप्र्सीत्; "स्पृशादि-"॥४।४।११२॥ इति स्वरात्परे वा अतिः अत्राप्सीत्। रणे कृतान्तमत्राप्सीत्, तृप्तीचक्रे इत्यर्थः। अन्तर्भूतणिगर्थोऽत्र तृपिः सकर्मकः। औदित्वाद्वेटि, अतर्पीत्, अतृपताम्; अताप्र्ताम्, अत्राप्ताम्, अतर्पिष्टाम्। अतर्पि, "सिजाशिष-"॥४।३।३५॥ इति कित्त्वाद्, अदनागमे, अतृप्साताम्, अतर्पिषाताम्। थासि, अतृप्थाः अतर्पिष्ठाः। ध्वमि, अतृब्ध्वम्, अतृब्द्ध्वम्; अतर्पि २ ध्वम्, ड्ढ्वम्। ततर्प, ततृपतुः; ततर्पिथ; ततृपिम। ततृपे। तृप्यात्। तृप्सीष्ट; तर्पिषीष्ट। तर्प्ता; त्रप्ता; तर्पिता। त्रप्स्यति, तर्प्स्यति, तर्पिष्यति। अत्रप्स्यत्, अतर्प्स्यत्, अतर्पिष्यत्। तितृप्सति, तितर्पिषति। तरीतृप्यते। तरीतर्प्ति, तरीत्रप्ति, तरीतृपीति। रि री र् त्रयं सर्वत्र। तर्तृप्तः, तत्रप्तः, तर्तृपति। तर्तृपत्। तर्पयति। तर्प्यते। अतीतृपत्, अततर्पत्। तृप्यन्। तृप्यमाणम्। ततृप्वान्। ततृपाणम्। वेट्त्वान्नेट्; तृप्तः, २ वान्। तृप्त्वा; तर्पित्वा। प्रतृप्य। तर्प्ता, त्रप्ता, तर्पिता। तर्प्तुम्, त्रप्तुम्, तर्पितुम्। तर्प्तव्यम्, त्रप्तव्यम्, तर्पितव्यम्। तृप्यम्॥ ३५॥

दृपौच् हर्षमोहनयोः; मोहनं गर्वः। दृप्यति। दृप्यते। अदृपत्। अदार्प्सीत्; अद्राप्सीत्; अदर्पीत्। अदर्पि। ददर्प, ददृपतुः। ददृपे। दृप्यात्। दृप्सीष्ट, दर्पिषीष्ट। दर्प्ता, द्रप्ता, दर्पिता। दर्प्स्यति, द्रप्स्यति; दर्पिष्यति। एवं क्रियातिपत्तावपि। दिदृप्सति, दिदर्पिषति। दरीदृप्यते। दरि ६ दृपीति, दर्प्ति, द्रप्ति, दृप्तः, द्रप्तः, दृपति। दर्पयति। अदीदृपत्, अददर्पत्। दृप्तः, २ वान्। दृप्तिः। दृप्त्वा, दर्पित्वा। प्रदृप्य। दर्प्ता, द्रप्ता, दर्पिता। दर्प्तुम्, द्रप्तुम्, दर्पितुम्। दर्प्तव्यम्, द्रप्तव्यम्, दर्पितव्यम्। दृप्यम्। साधनिका तृपिवत्॥ ३६॥

कुपच् कोपे। कुप्यति। कुप्यते। अकुपत्। अकोपि। चुकोप; चुकुपिम। चुकुपे। कुप्यात्। कोपिषीष्ट। कोपिता। कोपिष्यति। अकोपिष्यत्। चुकुपिषति, चुकोपिषति। चोकुप्यते। चोकोप्ति, चोकुपीति, चोकुप्तः, चोकुपति। कोपयति। अचूकुपत्। "व्यञ्जनादेर्नाम्युपान्त्याद्वा"॥२।३।८७॥ इति वा णत्वे, प्रकुप्यमाणम्; प्रकुप्यमानम्। कुपितः, २ वान्। कुपित्वा, कोपित्वा। कोपि

३ ता, तुम्, तव्यम् । कुप्यम्, कोप्यम् । प्रकोपणीयम्, प्रकोपनीयम् ॥३७॥

गुपच् व्याकुलत्वे । गुप्यति; विगुप्यति । गुप्यते । अगुपत् । अगोपि । जुगोप । जुगुपे । गुप्यात् । गोपिषीष्ट । गोपिता । गोपिष्यति । जुगुपिषति, जुगोपिषति । जोगुप्यते । अजूगुपत् । गुपितः, २ वान् । गुपित्वा, गोपित्वा । गोपितुम् ॥ ३८ ॥

लुपच् विमोहने । लुप्यति । अयं कुपच्वत्; परं "गृलुप-"॥३।४।१२॥ इति गर्ह्यार्थाद्यङ्; लोलुप्यते ॥ ३९ ॥

लुभच् गार्द्ध्ये; गार्द्ध्यमभिकाङ्क्षा । लुभ्यति । लुभ्यते । अलुभत् । अलोभि । लुलोभ, लुलुभतुः; लुलुभिम । लुलुभे । लुभ्यात् । लोभिषीष्ट । तादौ "सहलुभ-" ॥४।४।४६॥ इति वेटि, लोब्धा, लोभिता । लोभिष्यति । लुलुभिषति, लुलोभिषति । लोलुभ्यते । लोलुभीति, लोलोब्धि । लोभयति; प्रलोभयति । अलूलुभत् । वेट्त्वान्नेट्; लुब्धः, २ वान् । वेटि, "वौ व्यञ्जन-"॥४।३।२५॥ इति वा कित्त्वे, लुब्ध्वा, लुभित्वा, लोभित्वा । लो ३ ब्धा, ब्धुम्, ब्धव्यम्; लोभि ३ ता, तुम्, तव्यम् । लोभ्यम्, लुभ्यम् ॥ ४० ॥

क्षुभच् सञ्चलने; रूपान्यथात्वम् । क्षुभ्यति । अक्षुभत् । चुक्षोभ । क्षोभिता । "क्षुब्धविरिब्ध-"॥४।४।७०॥ इति क्ते निपातनात्, क्षुब्धो मन्थः । क्षुभितोऽन्यः शेषं कुपच्वत् ॥ ४१ ॥

नशौच् अदर्शने; अनुपलब्धौ । नश्यति; "नशः शः"॥२।३।७८॥ इति णत्वे, प्रणश्यति; परिणश्यति । क्ये, नश्यते ॥ अद्य० ॥ पुष्याद्यङि; "नशेर्नेश्वा-"॥४।३।१०२॥ इति वा नेशादेशे, अनेशत्, अनशत् । भाक । अनाशि । औदित्वाद्वेटि, "नशो धुटि"॥४।४।१०९॥ इति ने, अनङ् ९ क्षाताम्, क्षत, ष्ठाः, क्षाथाम्, ड्ढ्वम्, ग्ड्ढ्वम्, क्षि, क्ष्वहि, क्ष्महि । पक्षे इटि, अनशिषातामित्यादि । ननाश, नेशतुः, नेशुः, नेशिथ, नेशथुः, नेश, ननाश, ननश, नेशिव, नेशिम । नेशे । नश्यात् । नङ्क्षीष्ट, नशिषीष्ट । नंष्टा, नशिता । नङ्क्ष्यति, नशिष्यति; "नशः शः"॥२।३।७८॥ इत्यनेन षान्तस्य न णः; प्रनङ्क्ष्यति; परिनङ्क्ष्यति । शान्तस्य तु णः; प्रणशिष्यति । निनङ्क्षति; निनशिषति । नान-

श्यते। नानश्नीति, नानंष्टि, नानंष्टः, नानशति। णौ "चल्याहार-"॥३।३।१०८॥ इति फलवत्यपि परस्मैपदे, नाशयति। अनीनशत्। मा विनीनशः। "जनशोनि-" ॥४।३।२३॥ इति वा किरवे; नष्ट्वा, नंष्ट्वा, नाशित्वा। प्रणश्य। वेट्त्वान्नेट्, "नो व्यञ्जनस्य-"॥४।२।४५॥ इति नलुक् च, नष्टः, २ वान्, षान्तस्य णत्वाभावे, प्रनष्टः, २ वान्। नंष्टा, नशिता। नंष्ट्री, नशित्री। नंष्टुम्, नशितुम्; प्रनंष्टुम्, प्रणशितुम्। नंष्टव्यम्, नशितव्यम्। नशनीयम्। क्विपि "नशो वा" ॥२।१।७०॥ इति वा गे, "यज-"॥२।१।८७॥ इति षे च; नक्, नट् ॥ ४२ ॥

भृशू, भ्रंशूच् अधःपतने। भृश्यति। क्ये, भृश्यते। अङि, अभृशत्। अभर्शि। बभर्श; बभृशिम। बभृशे। भृश्यात्। भर्शिषीष्ट। भर्शिता। भर्शिष्यति। बिभर्शिषति। बरीभृश्यते। बरिभृशीति, बरिभर्ष्टि। रि री रागमत्रयं सर्वत्र। बरिभृष्टः, बरिभृशति। भर्शयति। अबीभृशत्; अबभर्शत्। भृश्यन्। भृश्यमानम्। भर्शिष्य २ न्, माणम्। बभृ २ श्वान्, शानम्। ऊदित्वाद्वेट्, भृष्ट्वा, भर्शित्वा। वेट्त्वान्नेट्; भृष्टः, २ वान्। भर्शि २ ता, तुम् ॥ भ्रंशू ॥ भ्रश्यति। भ्रश्यते। अभ्रशत्। अभ्रंशि। बभ्रंश, बभ्रंशतुः; "इन्ध्य-"॥४।३।२१॥ इति न कित्त्वं संयोगात्, बभ्रंशिम। बभ्रंशे। भ्रश्यात्। भ्रंशिषीष्ट। भ्रंशिता। भ्रंशिष्यति। बिभ्रंशिषति। "वञ्चस्रंस-"॥४।१।५०॥ इति ध्वंसिसहचरितस्य भ्वादेरेव भ्रंशेर्ग्रहणान्न्यागमाभावे, बाभ्रश्यते। बाभ्रंशीति, बाभ्रंष्टि। भ्रंशयति। अबभ्रंशत्। भ्रश्यन्। भ्रश्यमानम्। भ्रंशिष्य २ न्, माणम्। बभ्र २ श्वान्, शानम्। भ्रष्ट्वा, "क्त्वा"॥४।३।२९॥ इत्यकित्त्वे, भ्रंशित्वा। भ्रष्टः, २ वान्। भ्रंशि २ ता, तुम् ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

कृशच् तनुत्वे। कृश्यति। अकृशत्। चकर्श। कर्शिता। चिकर्शिषति। चरीकृश्यते। चरीकृशत्। अचीकृशत्, अचकर्शत्। "अनुपसर्गाः क्षीव-"४।२।८०॥ इति क्तयोर्निपातनात्; कृशः, २ वान्। परिकृशः, २ वान्। सोपसर्गस्य तु; प्रकृशितः, २ वान्। "ऋत्तृष-"॥४।३।२४॥ इति क्त्वो वा कित्त्वे; कृशित्वा, कर्शित्वा। शेषं भृशूच्वत् ॥ ४५ ॥

त्रयोऽनिटः ॥ शुषंच् शोषणे। शुष्यति। शुष्को भवतीत्यकर्मकः। शुष्कं

करोतीत्यन्तर्णिगर्थविवक्षायां च सकर्मकोऽपि । क्ये, शुष्यते । अशुषत् । अशोषि; साकि, अशुक्षाताम्; ध्वमि, अशुक्षध्वम् । शुशोष; शुशोषिथ; शुशुषिम । शुशुषे । शुष्यात् । शुक्षीष्ट । शोष्टा । शोक्ष्यति । अशोक्ष्यत् । शुशुक्षति । शोशुष्यते । शोशुषीति; शोशोष्टि । शोषयति । अशूशुषत् । शुष्य २ न्, माणम् । शोक्ष्य २ न्, माणम् । शुशुष्वान् । शुशुषाणम् । "क्षैशुषि-"॥४।२।७८॥ इति क्त्वे; शुष्कः, २ वान् । शुष्टिः । शुष्ट्वा । शोष्टा । शोष्टुम् । शोष्टव्यम् । शोष्यम् । शोषणीयम् ॥ ४६ ॥

दुषंच् वैकृत्ये; रूपभङ्गे । दुष्यति । क्ये, दुष्यते । अदुषत् । अदोषि । दुदोष, दुदुषतुः; दुदोषिथ । दुदुषे । दुष्यात् । दुक्षीष्ट । दोष्टा । दोक्ष्यति । अदोक्ष्यत् । दुदुक्षति । दोदुष्यते । दोदोष्टि, दोदुषीति । णौ, "ऊद्दुष-"॥४।२।४०॥ इति ऊत्, दूषयति चित्ते वा; चित्तं दूषयति । प्रज्ञां दूषयति; दोषयति वा । चित्तसहचरितत्वात् प्रज्ञाऽपि चित्तम् । ङे, अदूदुषत् । ङे न ह्रस्व इत्यन्ये, अदुदूषत् । दुदूषयिषति । दुष्य २ न्, माणम्; दोक्ष्य २ न्, माणम् । दुदु २ ष्वान्, षाणम् । दुष्टः, २ वान् । दुष्टिः । दुष्ट्वा । प्रदुष्य । दोष्टा । दोष्टुम् ॥४७॥

श्लिषंच् आलिङ्गने । श्लिष्यति; विश्लिष्यति; आश्लिष्यति । क्ये, श्लिष्यते । श्लिष्येत् । श्लिष्यतु । अश्लिषत् । " श्लिषः "॥३।४।५६॥ इति सकि, आश्लिक्षत कन्यां चैत्रः । क्रियाव्यतिहारे, "हशिट-"॥३।४।५५॥ इति साकि, व्यत्याश्लिक्षत कन्याम् । असत्त्वाश्लेषे तु "नासत्त्वे-"॥३।४।५७॥ इति सको निषेधात् पुष्याद्यङि, समाश्लिषत् जतु च काष्ठं च । अश्लिषत् । आत्मनेपदे सिचि; व्यत्याश्लिष्ट । भाक । आश्लेषि । आश्लि ८ क्षाताम्, क्षन्त, क्षथाः, क्षाथाम्, क्षध्वम्, क्षि, क्षावहि, क्षामहि । असत्त्वाश्लेषे तु सिचि; आश्लि ९ क्षाताम्, क्षत, ष्ठाः, क्षाथाम्, ड्ढ्वम्, ग्ड्ढ्वम्, क्षि, क्ष्वहि, क्ष्महि । शिश्लेष, शिश्लिषतुः, शिश्लिषुः, शिश्लेषिथ; शिश्लिषिम । शिश्लिषे, श्लिष्यात् । श्लिक्षीष्ट । श्लेष्टा । श्लेक्ष्यति । अश्लेक्ष्यत् । शिश्लिक्षति । शेश्लिष्यते । शेश्लेष्टि, शेश्लिषीति । श्लेषयति । अशिश्लिषत् । श्लिष्यन् । श्लेक्ष्यन् । शिश्लिष्वान् । शिश्लिषाणम् । श्लिष्टः, २ वान् । श्लिष्टिः । श्लिष्ट्वा । आश्लिष्य । श्लेष्टा । श्लेष्टुम् । श्लेष्टव्यम् ॥ ४८ ॥

प्लुषूच् दाहे। प्लुष्यति । क्ये, प्लुष्यते। अङि, अप्लुषत्। अप्लोषि, अप्लोषिषाताम् । शेषं प्लुषू दाहे इत्यस्येव ॥ ४९ ॥

ञितृषच् पिपासायाम्। तृष्यति । क्ये, तृष्यते । अतृषत्। अतर्षि। ततर्ष; ततृषिम। ततृषे । तृष्यात् । तर्षिषीष्ट। तर्षिता। तर्षिष्यति । तितर्षिषति। तरीतृष्यते । तरि ४ तृषीति, तर्ष्टि, तृष्टः, तृषति । रि री रः ३ सर्वत्र । तर्षयति । अतीतृषत्, अततर्षत् । तृष्यन्। तर्षिष्यन्। ततृष्वान्। ततृषाणम् । तृषितः, २ वान् । "ऋत्तृष-"॥४।३।२४॥ इति वा किंत्त्वे; तृषित्वा, तर्षित्वा। प्रतृष्य । तर्षि ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥ ५० ॥

तुषं, हृषच्, तुष्टौ; प्रीतौ । आद्योऽनिट्, तुष्यति । अतुषत्। तुतोष । तोष्टा । तुष्ट्वा । शील्यादित्वात्सति क्ते, तुष्टः। तुष्टिः। शेषं दुषंच्वत् ॥ हृष् ॥ हृष्यति । अहृषत् । जहर्ष । हर्षिता । हृषितः, २ वान्। "हृषेः केश-"॥४।४।७६॥ इति वा नेटि, केशाद्युद्धुषणे; हृष्टाः, हृषिताः केशाः । हृष्टानि, हृषितानि लोमानि । हृष्टम्, हृषितं केशैर्लोमभिर्वा । हृष्टः, हृषितश्चैत्रः; विस्मित इत्यर्थः। हृष्टाः, हृषिता दन्ताः; प्रतिहता इत्यर्थः । "क्त्वा"॥४।३।२९॥ इत्यकिंत्त्वे, हर्षित्वा । प्रहृष्य । ऊदिदयमिति नन्दी; हृष्ट्वा, हर्षित्वा । वेट्त्वात् क्तयोर्नेट्; हृष्टः, २ वान्। शेषं तृषच्वत् ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

रुषच् रोषे । रुष्यति । क्ये, रुष्यते। अरुषत्। अरोषि । रुरोष; रुरुषिम । रुरुषे। रुष्यात्। रोषिषीष्ट। तादौ "सहलुभ-"॥४।४।४६॥ इति वेटि, रोष्टा, रोषिता। रोषिष्यति। रुरोषिषति, रुरुषिषति। रोरुष्यते। रोरुषीति, रोरोष्टि। रोषयति। अरूरुषत्। रुष्यन्। रोषिष्यन्। रोषिष्यमाणः। रुरु २ ष्वान्, षाणम्। "श्वसजप-" ॥४।४।७५॥ इति वेटि, शील्यादित्वात्सति क्ते च; रुष्टः, २ वान्; रुषितः, २ वान्। तादौ वेटि; रोष्टा, रोषिता। रुष्ट्वा, रोषित्वा, रुषित्वा। रोष्टुम्, रोषितुम् ॥५३॥

असूच् क्षेपणे । अस्यति; "उपसर्गादस्य-"॥३।३।२५॥ इति वाऽऽत्मनेपदे, विपर्यस्यति, ते; निरस्यति, ते; अभ्यस्यति, ते; अपास्यति, ते; "अकखादि-"॥२।३।८०॥ इति वा णिः, प्रण्यस्यति, प्रन्यस्यति । क्ये, अस्यते। पुष्याद्यङि, "श्वयत्य-" ॥४।३।१०३॥ इत्यस्थः; आस्थत्; आस्थम्; आस्थाम। आत्मनेपदे तु; "शास्त्यसू-"

॥३।४।६०॥ इत्यङि, उदास्थत, उदास्थेताम्; अपा९ स्थत, स्थेताम्, स्थन्त, स्थथाः, स्थेथाम्, स्थध्वम्, स्थे, स्थावहि, स्थामहि । भाक । आसि, आसिषाताम् । "अस्यादेः-"॥४।१।६८॥ इति पूर्वस्यात्वे, आस, आसतुः, आसुः, आसिथ। आसे, आसाते, आसिरे, आसिषे; आसिमहे । अस्यात् । असिषीष्ट। असिता। असिष्यति । आसिष्यत् । असिसिषति; निरसिसिषति, ते । आसयति । आसिसत् । आसयाञ्चकार । ऊदित्त्वात् क्त्वि वेट्, अस्त्वा, असित्वा । निरस्य; अपास्य । वेट्त्वान्नेटि; अस्तः, २ वान् । असि ३ ता, तुम्, तव्यम् । आस्यम् । असनीयम् ॥ ५४ ॥

यसूच् प्रयत्ने । प्रयस्यति; आयस्यति; संपूर्वस्यानुपसर्गस्य च, "भ्रासभ्लास-"॥३।४।७३॥ इति वा श्ये, संयस्यति; यस्यति । पक्षे शवि, संयसति; यसति । क्ये, यस्यते । अङि, अयसत् । अयासि । ययास, येसतुः, येसुः, येसिथ, येसथुः, येस, ययास, ययस, येसि २ व, म । येसे । यस्यात् । यसिषीष्ट । यसिता । यसिष्यति । यियासिषति । यायस्यते । यायस्ति, यायसीति । णौ फलवति, "अणिगि प्राणि-"॥३।३।१०७॥ इति परस्मै प्राप्तावपि, "परिमुह-" ॥३।३।९४॥ इत्यात्मनेपदे, आयासयते शत्रुं मैत्रः । आयीयसत । ऊदित्त्वात् क्त्वि वेट्; यस्त्वा, यसित्वा । आयस्य । आयस्तः, २ वान् । आयासि २ ता, तुम् ॥ ५५ ॥

शमू, दमूच् उपशमे । "शमसप्तकस्य-"॥४।२।१११॥ इति श्ये, दीर्घे; शाम्यति; निशाम्यति; "नेर्ङ्गा-"॥२।३।७९॥ इति णिः, प्रणिशाम्यति । क्ये, शम्यते । पुष्याद्यङि, अशमत् । अशामि, "मोऽकमि-"॥४।३।५५॥ इति न वृद्धिः । एवमग्रेऽपि । अशमिषाताम् । शशाम, शेमतुः, शेमुः, शेमिथ०; शेमिम । शेमे, शेमाते, शेमिरे, शेमिषे । शम्यात् । शमिषीष्ट । शमिता । शमिष्यति । शिशमिषति । शंशम्यते । शंशमीति, शंशान्ति, शंशान्तः, शंशमति, शंशमीषि, शंशंसि, शंशान्थः, शंशान्थ, शंश ४ मीमि, न्मि, न्वः, न्मः ॥ अद्य०॥ "न श्वि-"॥ ४।३।४९॥ इति न वृद्धौ, अशंशमीत्; पुष्यादिगणानिर्देशाच्च न अङ् । शेषं यङ्लुबन्तपाचिवत् । णौ, "शमोऽदर्शने"॥४।२।२८॥ इति ह्रस्वे, शमयति

रोगम्; निशमयति श्लोकान् । अशीशमत् । अशामि, अशमि । शामम् २। शमम् २। दर्शने तु, निशामय २ ति, ते रूपम् । न्यशीशमत्, त । न्यशामि । घटादेर्हृस्वो वा ञिणम्परे इत्येव ह्रस्वविकल्पेन सिद्धे दीर्घग्रहणं णिग्यङ् व्यवहितेऽपि णौ ञिणम्परे दीर्घत्वार्थम् । णिगन्ताण्णिगि; अशामि, अशमि । शामम् २। शमम् २। यङन्ताण्णिगि; अशंशामि, अशंशमि । शंशामम् २। शंशमम् २; अत्र हि योऽसौ णौ णिर्लुप्यते, यश्च यङोऽकारस्तस्य स्थानित्वेन णेर्व्यवहितत्वाद् ह्रस्वविकल्पो न स्यात्; दीर्घग्रहणे तु, "न सन्धिङी-"॥७४।११॥ इति दीर्घविधौ स्थानित्वप्रतिषेधात्तद्विकल्पः सिध्यति। क्ते, "णौ दान्त-"॥४।४।७४॥ इति निपातनात्; शान्तः। पक्षे, "सेट्क्तयोः"॥४।३।८४॥ इति णेर्लुकि, शमितः। शमयित्वा। "लघोर्यपि"॥४।३।८६॥ इत्ययि; प्रशमय्य। शाम्यन्। शमिष्यन्। शेमिवान्। शेमानम्। ऊदित्त्वाद्वेट्; शान्त्वा, शमित्वा। उपशम्य। वेट्त्वान्नेट्; शान्तः, २ वान्। शमि २ ता, तुम्। ये, शम्यम् ॥ दमू ॥ दाम्यति। क्ये, दम्यते। अदमत्। अदमि। ददाम, देमतुः; देमिम। देमे। दम्यात्। दमिषीष्ट। दमिता। दमिष्यति। अदमिष्यत्। दिदमिषति। दन्दम्यते। दन्दमीति; दन्दन्ति, दन्दान्तः, दन्दमति। णौ, "अमोऽकम्यमि-"॥४।२।२६॥ इति हृस्वे, "अणिगि प्राणि-"॥३।३।१०७॥ इति प्राप्तेऽपि परस्मैपदे "परिमुह-"॥३।३।९४॥ इत्यात्मनेपदे; "गतिबोध-"॥२।२।५॥ इत्यणिक्कर्तुः कर्मत्वे च; दाम्यत्यश्वः, दमयतेऽश्वं चैत्रः। "अकख-"॥२।३।८०॥ इति णिः, प्रणिदमयते। अदीदमत। अदामि, अदमि। दमयित्वा। "णौ दान्त-"॥४।४।७४॥ इति वा निपातनात्, दान्तः; दमितः। दाम्यन्। दम्यमानम्। दमिष्य २ न्, माणम्। देमिवान्। देमानम्। दान्त्वा; दमित्वा। दान्तः, २ वान्। दान्तिः। दमि ३ ता, तुम्, तव्यम्। दम्यः। शेषं शमूवत् ॥ ५६ ॥ ५७ ॥

तमूच् काङ्क्षायाम्। ताम्यति। तम्यते। अतमत्। अतमि। तताम, तेमतुः। तेमे। तमिता। तान्तः, २ वान्। तान्त्वा; तमित्वा। एवं सर्वो दमूच्वत्; परं णिगि परस्मै, तमयति। अतीतमत् ॥ ५८ ॥

श्रमूच् खेदतपसोः। श्राम्यति; विश्राम्यति; परिश्राम्यति। क्ये, श्रम्यते। अश्रमत्। "मोऽकमि-"॥४।३।५५॥ इति न वृद्धौ, अश्रमि। "विश्रमेर्वा"

॥४।३।५६॥ इति वा न वृद्धौ; व्यश्रमि, व्यश्रामि । शश्राम, शश्रमतुः; शश्रमिम । शश्रमे । श्रम्यात् । श्रमि ३ षीष्ट, ता, ष्यति । शिश्रमिषति । शंश्रम्यते। शंश्रमीति, शंश्रन्ति, शंश्रान्तः, शंश्रमति०; शंश्र ३ न्मि, न्वः, न्मः ॥ अद्य०॥ अशंश्रमीत् । श्रमयति । अशिश्रमत् । अश्रमि, अश्रामि । श्रमयित्वा । विश्रमय्य । श्राम्यन्। श्रम्यमाणम्। श्रमिष्य २ न्, माणम् । शश्रन्वान् । शश्रमाणम् । श्रान्त्वा, श्रमित्वा । विश्रम्य । श्रान्तः, २ वान्। श्रान्तिः। श्रमि ३ ता, तुम्, तव्यम् । श्रम्यम् ॥ ५९ ॥

भ्रमूच् अनवस्थाने; देशान्तरगमने । "भ्रासभ्लास-"॥३।४।७३॥ इति श्ये शवि च; भ्राम्यति; भ्रमति। एवं वि, सं, परि पूर्वोऽपि। क्ये, भ्रम्यते। अङि, अभ्रमत् । "मोऽकमि-"॥४।३।५५॥ इति न वृद्धौ, अभ्रमि, अभ्रमिषाताम्; ध्वमि; अभ्रमि, २ ध्वम्, ड्ढ्वम् । बभ्राम, "जॄभ्रम-"॥४।१।२६॥ इति वैत्वे, भ्रेमतुः, बभ्रमतुः; भ्रेमिथ, बभ्रमिथ; भ्रेमिम, बभ्रमिम । भ्रेमे, बभ्रमे । भ्रम्यात् । भ्रमि, ३ षीष्ट, ता, ष्यति । बिभ्रमिषति । बंभ्रम्यते । बंभ्र ३ म्यति, मीति, न्ति; यङ्लुपि शमादिगणनिर्देशान्न दीर्घः; श्यस्तु वा भवत्येव, "भ्रासभ्लास-"॥३।४।७३॥ इति प्रतिपदोक्तत्वात् ॥ अद्य० ॥ "न श्वि-"॥४।३।४९॥ इति न वृद्धौ, अबंभ्रमीत् । शेषं यङ्लुबन्तपाचिवत् । भ्रमयति । अबिभ्रमत् । अभ्रामि, अभ्रमि । भ्राम्यन्; भ्रमन्। भ्राम्यमाणम्। भ्रमिष्यन्। भ्रमिष्यमाणम्। बभ्रन्वान्, भ्रेमिवान् । बभ्रमाणम्, भ्रेमाणम् । ऊदित्वात् क्त्वि वेट्; भ्रान्त्वा, भ्रमित्वा । परिभ्रम्य । वेट्त्वान्नेटि; भ्रान्तः, २ वान् । भ्रान्तिः । भ्रमि, ३ ता, तुम्, तव्यम् । भ्रम्यम् ॥ ६० ॥

क्षमौच् सहने । क्षाम्यति, क्षाम्यतः, क्षाम्यन्ति । क्ये, क्षम्यते । पुष्याद्यङि, अक्षमत् । अक्षमि; औदित्त्वाद्वेटि, अक्षंसाताम्, अक्षमिषाताम् । चक्षाम, चक्षमतुः; चक्षमिम । चक्षमे । क्षम्यात् । क्षंसीष्ट, क्षमिषीष्ट । क्षन्ता, क्षमिता । क्षंस्यति, क्षमिष्यति । चिक्षंसति, चिक्षमिषति । चंक्षम्यते । लुपि तु क्षमौषि सहने इत्यस्येव । क्षमयति । अचिक्षमत् । अक्षामि, अक्षमि, अक्षमयिषाताम् । क्षमयाञ्चकार। क्षमयित्वा । प्रक्षमय्य । क्षमितः, २ वान् । क्षाम्यन्। क्षंस्यन्, क्षमि-

ष्यन् । चक्षन्वान् । चक्षमाणम् । क्षान्त्वा, क्षमित्वा । क्षान्तः, २ वान् । क्षान्तिः। क्षं ३ ता, तुम्, तव्यम्; क्षमि ३ ता, तुम्, तव्यम् । क्षम्यम् । क्षमी ॥६१॥

मदैच् हर्षे। माद्यति; प्रमाद्यति; उन्माद्यति। क्ये, मद्यते। अङि, अमदत्। अमादि । ममाद, मेदतुः; मेदिम। मेदे । मद्यात्। मदि ३ षीष्ट, ता, ष्यति। मिमदिषति । मामद्यते । माम ४ त्ति, दीति, त्तः, दति ॥ ह्य० ॥ सिवि, अमा ३ मः, मत्, मदीः। णौ हर्षग्लपनयोर्घटादित्वात् ह्रस्वे, मदयति । अन्यत्र, प्रमादयति; उन्मादयति । मदि ४ त्वा, ता, तुम्, तव्यम् । प्रमद्य । ऐदित्वात् क्तयोर्नेटि, "रदात्-"॥४।२।६९॥ इत्यत्र मदेर्वर्जनान्न नत्वम्; मत्तः, २ वान्। ये, मद्यम् । उपसर्गात्तु घ्यणि; प्रमाद्यम् ॥ ६२ ॥

क्लमूच् ग्लानौ। "भ्रासम्लास-"॥३।४।७३॥ इति वा श्ये शवि च, "ष्ठिवुक्लमू-" ॥४।२।११०॥ इति दीर्घे, क्लाम्यति, क्लामति। क्ये, क्लम्यते । अक्लमत् । अक्लमि । चक्लाम, चक्लमतुः; चक्लमिम । चक्लमे । क्लम्यात् । क्लमिषीष्ट । क्लमि २ ता, ष्यति। चिक्लमिषति। चंक्लम्यते। त्यादौ तु न दीर्घः, चंक्ल २ न्ति, मीति; "अहन्-"॥४।१। १०७॥ इति दीर्घे, चंक्लान्तः, चंक्लमति०; चंक्ल २ न्वः, न्मः। अद्य०। अचंक्लमीत् इत्यादि। "ष्ठिवुक्लमू-"॥४।२।११०॥ इत्यत्र ऊकारनिर्देशाद् यङ्लुपि न दीर्घः, चंक्लमत् । क्लमयति। अचिक्लमत् । अक्लमि, अक्लमिषाताम्। क्लाम्यन्, क्लामन्। क्लमिष्य २ न्, माणम्। चक्लन्वान्। चक्लमानम्। ऊदित्त्वात् क्त्वि वेट्, क्लान्त्वा, क्लमित्वा । परिक्लम्य । वेट्त्वात् क्लान्तः, २ वान् । क्लमि, ३ ता, तुम्, तव्यम् । क्लम्यम् ॥ ६३ ॥

त्रयो वेटः॥ मुहौच् वैचित्त्ये; अविवेके। मुह्यति। क्ये, मुह्यते। अङि, अमुहत् । अमोहि; औदित्वाद्वेटि, अमोहिषाताम्; पक्षे सकि, अमुक्षाताम् । मुमोह, मुमुहतुः; मुमोहिथ; मुमुहिम। मुमुहे। मुह्यात् । मुक्षीष्ट, मोहिषीष्ट। "मुहद्रुह-" ॥२।१।८४॥ इति वा हस्य घत्वे, औदित्वाद्वेटि च; मोग्धा, मोढा, मोहिता । मोक्ष्यति, मोहिष्यति । मुमुक्षति, मुमुहिषति, मुमोहिषति । मोमुह्यते । मोमुहीति, मोमोग्धि, मोमोढि, मोमुग्धः, मोमूढः, मोमुहति, मोमुहीषि, मोमोक्षि, मोमुग्धः, मोमूढः०; मोमुह्वः, मोमुह्मः । हौ, मोमुग्धि, मोमूढि । ह्य० । अमो

१६ मुहीत्, मोक्, मोट्, मुग्धाम्, मूढाम्, मुहुः, मुहीः, मोक्, मोट्०; मुहम्, मुह्व, मुह्म। शेषं पचिस्थानोक्तवत् । णौ फलवति "अणिगि प्राणि-"॥३।३।१०७॥ इति परस्मैपदापवादे "परिमुह-"॥३।३।९४॥ इत्यात्मनेपदे, परिमोहयते शत्रुम् । मोहयति । अमूमुहत् । मुह्यन् । मोक्ष्यन्; मोहिष्यन् । मुमुह्वान् । मुमुहानम् । वेट्त्वान्नेटि, मुग्धः, २ वान्; मूढः, २ वान् । मुग्धिः, मूढिः । मुग्ध्वा, मूढ्वा; मोहित्वा, मुहित्वा । मोग्धा, मोढा, मोहिता । मोग्धुम्, मोढुम्, मोहितुम्। मोहनीयम् । मोह्यम् ॥ ६४ ॥

द्रुहौच् जिघांसायाम् । "क्रुद्द्रुह-"॥२।२।२७॥ इति सम्प्रदानत्वे, मैत्राय द्रुह्यति। क्ये, द्रुह्यते । अद्रुहत् । अद्रोहि । दुद्रोह; दुद्रुहिम। दुद्रुहे । द्रुह्यात् । औदित्वाद्वेटि, ध्रुक्षीष्ट, द्रोहिषीष्ट । द्रोग्धा, द्रोढा, द्रोहिता । ध्रोक्ष्यति, द्रोहिष्यति । दुध्रुक्षति, दुद्रुहिषति, दुद्रोहिषति । दोद्रुह्यते । शेषं मुहौच्वत्; परं सिवि, दोध्रोक्षि । द्रोहयति । अदुद्रुहत् । द्रुह्यन् । ध्रोक्ष्यन्, द्रोहिष्यन् । "मुहद्रुह-"॥२।१।८४॥ इति वा घे; द्रुग्धः, २ वान् । द्रूढः, २ वान् । द्रुग्ध्वा, द्रूढ्वा; द्रुहित्वा, द्रोहित्वा । द्रोग्धा, द्रोढा, द्रोहिता । क्विपि; मित्र २ ध्रुक्, ध्रुट् ॥६५॥

ष्णिहौच् प्रीतौ । स्निह्यति । स्निह्यते । अस्निहत् । अस्नेहि । "नाम्यन्त-"॥२।३।१५॥ इति षः, सिष्णेह; सिष्णिहिम । सिष्णिहे । स्निह्यात् । स्निक्षीष्ट, स्नेहिषीष्ट । स्नेग्धा, स्नेढा, स्नेहिता । स्नेक्ष्यति, स्नेहिष्यति । षणि "णिस्तोरेव-"॥२।३।३७॥ इति नियमात् षत्वाभावे; सिस्निक्षति; सिस्निहिषति, सिस्नेहिषति । सेस्निह्यते । अग्रतो मुहौच्वत् । स्नेहयति । असिष्णिहत्। स्निग्धः, २ वान्। स्नीढः, २ वान्। स्नेग्धा, स्नेढा, स्नेहिता । स्नेग्धुम्, स्नेढुम्, स्नेहितुम् । स्निग्ध्वा, स्नीढ्वा; स्निहित्वा, स्नेहित्वा ॥ ६६ ॥

शमू, दमू, तमू, श्रमू, भ्रमू, क्षमौ, मदै, असू, यसू, प्लुषू, लुट, भृशू, भ्रंशू, कृश, ञितृष्, रुष, हृष, कुप, गुप, लुप, लुभ, क्लिदौ, ऋधू, गृधूच्चां पुष्यादित्वं नेच्छन्त्यन्ये । तन्मते पुष्याद्यङभावे सिचि; अशमीत्; अदमीत्; अश्रमीत्; अलोटीत्; अप्लोषीत्; अकोपीत्, अलोपीत्; अहर्षीदित्यादि ॥ इति पुष्यादिः ॥

अथ सूयत्यादिर्नवकः ।

षूङौच् प्राणिप्रसवे । सूयते, सूयेते, सूयन्ते । क्ये, सूयते । औदित्त्वा-ड्वेटि, असोष्ट, असविष्ट । सुषुवे । सोता, सविता । "ग्रहगुहश्च-"॥४।४।५९॥ इति नेटि, "णिस्तोरेव-"॥२।३।३७॥ इति नियमान्न षः; सुसूषति । "उवर्णात्" ॥४।४।५८॥ इति नेटि, सूत्वा । प्रसूय । "सूयत्यादि-"॥४।२।७०॥ इति क्तयो-स्तस्य नत्वे; सूनः, २ वान् । प्रसूनं कुसुमम् । अतएवायमप्राणिप्रसव इत्यन्ये । शेषं षूङौक्वत् ॥ ६७ ॥

दूङ्च् परितापे; खेदे । दूयते । क्ये, दूयते । अदविष्ट, अदविषाताम्, अदविषत ॥ भाक ॥ अदावि, अदाविषाताम्, अदविषाताम् । दुदुवे, दुदुवाते, दुदुविरे, दुदुविषे । दविषीष्ट २; दाविषीष्ट । दविता २; दाविता । दविष्यते २; दाविष्यते । दुदूषति । दोदूयते । दोदवीति, दोदोति, दोदूतः, दोदुवति । दावयति । अदूदवत् । दावितः । दावयित्वा । दूयमानः । दविष्यमाणः । दुदु-वानः । "सूयत्य-"॥४।२।७०॥ इति नत्वे; दूनः, २ वान् । दैत्यान् दूनवान् सः । इति सकर्मोक्तोऽस्ति ह्याश्रये । दूतिः । दूत्वा । दवि ३ ता, तुम्, तव्यम् । दव्यं; दाव्यम् ॥ ६८ ॥

द्वावनिटौ ॥ दीङ्च् क्षये । अकर्मकोऽयम् । दीयते; उपदीयते, क्षयं न गच्छतीत्यर्थः। क्ये, दीयते। "यबक्ङिति"॥४।२।७॥ इत्यात्वे, उपादास्त। दारूपस्य बहिरङ्गत्वात् दासंज्ञाया अभावे, "इश्च स्था-"॥४।३।४१॥ इति न इः, अदासाताम्, अदासत, अदास्थाः; अदाध्वम्, अदाद्ध्वम् । अदायि, अदायिषाताम्, अदा-साताम् । "दीय् दीङः क्ङिति स्वरे"॥४।३।९३॥ उपदिदीये, उपदिदी ९ याते, यिरे, यिषे, याथे, यिध्वे, यिढ्वे, ये, यिवहे, यिमहे। दासीष्ट २; दायिषीष्ट । दाता २, दायिता। उपदास्यते २, उपदायिष्यते । "दीङः सनि-"॥४।२।६॥ इति वा आत्वे, दिदासते, दिदीषते । उपदेदीयते । उपदे ४ दयीति, देति, दीतः, द्यति । सानु-बन्धनिर्देशान्न आत्वम्, दीय् च । क्ते, उपदेदियितः । उपदापयति । उपादीदपत् । उपदीयमानः । दास्यमानः । दिदीयानः। "सूयत्य-"॥४।२।७०॥ इति नः, दीनः, २ वान् । दीत्वा। उपदाय । दाता । दातुम्। उपदातव्यम्। अनटि, उपदानम्॥६९॥

लींङ्च् श्लेषणे । लीयते; विलीयते; निलीयते । क्ये, लीयते । "यबक्ङि-ति"॥४।२।७॥ "लीङ्लिनोर्वा"॥४।२।९॥ इति वा आत्वे, व्यलेष्ट, व्यलास्त । व्यलायि, व्यलायिषाताम्, व्यलेषाताम्, व्यलासाताम् । विलिल्ये, विलि ४ ल्याते, ल्यिरे, ल्यिषे; ल्यिध्वे । विलेषीष्ट; विलासीष्ट; विलायिषीष्ट । विलेता, विलाता, विलायिता । विलेष्यते, विलास्यते, विलायिष्यते । विलिलीषते । लेली-यते । "लीङ्लिनो-"॥४।२।९॥ इत्यत्र ङिन्निर्देशाद् यङ्लुपि न आः, लेल-यीति, लेलेति, लेलीतः, लेल्यति । णौ, "लियो नोऽन्तः-"॥४।२।१५॥ इति वा ने, घृतं विलीनयति, विलाययति, अत्र वृद्धौ आय् । लिय ई ली इति ईकार प्रश्लेषादात्वे कृते नोऽन्तो न स्यात् । "लो लः"॥४।२।१६॥ इति वा ले, "अर्त्तिरी-"॥४।२।२१॥ इति पौ च; घृतं विलालयति, विलापयति । स्नेहद्रव्या-दन्यत्र, अयो विलाययति, विलापयति । "लीङ्लिनोर्वा"॥४।२।९॥ इत्यात्वे आत्मनेपदे च, जटाभिरालापयते; परैः स्वं पूजयतीत्यर्थः। श्येनो वर्तिकामपलाप-यति, अभिभवतीत्यर्थः । मायावी लोकमुल्लापयते, वञ्चयते इत्यर्थः । एतदर्थ-त्रयादन्यत्र; बालमुल्लापयति, उत्क्षिपतीत्यर्थः । अत्र "लीङ्लिनोर्वा"॥४।२।९॥ इत्यात्वम् । ङे, व्यलीलिनत्; व्यलीलयत्; अलीललत्; व्यलीलपत् । लीय-मानः । लेष्यमाणः; लास्यमानः । लिल्यानः । लीनः, २ वान् । लीत्वा । विलीय, विलाय । विले ३ ता, तुम्, तव्यम्; विला ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥ ७० ॥

डीङ्च् गतौ । डीयते । क्ये, डीयते । "डीयश्वि-"॥४।४।६१॥ इति क्तयो-र्नेटि, "सूयत्यादि-"॥४।२।७०॥ इति नत्वे च; डीनः, २ वान् । अयमपि विहा-यसां गताविलन्ये । शेषं भ्वादिडीङ्वत् ॥ ७१ ॥

इति सूयत्यादिः ।

अथ द्वादशानिटः॥ पींङ्च् पाने । मैत्रो जलं पीयते; निपीयते; आपीयते । क्ये, पीयते । अपेस्त, अपेषाताम् । अपायि, अपायिषाताम्, अपेषाताम् । पिप्ये, पिप्याते, पिप्यिरे, पिप्यिषे । पेषीष्ट, पायिषीष्ट । पेता, पायिता । पेष्यते, पायिष्यते । पिपीषते । पेपीयते । पेपेति, पेपयीति, पेपीतः, पेप्यति । पाययति । अपीपयत् ।

पीयमानः । पेष्यमाणः । पिप्यानः । पीतः, २ वान् । आपीय; निपीय । पीत्वा । पेता । पेतुम् । पयनीयम् । पेयम् ॥ ७२ ॥

ईङ्च् गतौ । ईयते; प्रतीयते; उदीयते; उपेयते । क्ये, ईयते । ऐष्ट, ऐषाताम्, ऐषत, ऐष्ठाः, ऐषाथाम् । ध्वमि; ऐ २ ढ्वम्, ड्ढ्वम् । ऐषि, आयि, आयिषाताम्, ऐषाताम्; "गुरुनाम्य-"॥३।४।४८॥ इत्यामि, अयाञ्चक्रे इत्यादि । आमं नेच्छन्त्येके । ईये, ईयाते, ईयिरे । एषीष्ट २; आयिषीष्ट । एता, आयिता । एष्यते, आयिष्यते । ऐष्यत २, आयिष्यत । ईषिषते । आययति; प्रत्याययति । आयियत् । ईयमानः । एष्यमाणः । ईयानः । ईतः, २ वान् । ईत्वा । उपेय; निरीय । एता । एतुम् । एतव्यम् । उपेयम्; उपायनम् ॥ ७३ ॥

प्रींङ्च् प्रीतौ । प्रीयते । क्ये, प्रीयते । अप्रेष्ट, अप्रायि, अप्रायिषाताम्, अप्रेषाताम् । "संयोगात्"॥२।१।५२॥ इतीयि; पिप्रिये; पिप्रियिमहे । प्रेषीष्ट २, प्रायिषीष्ट । प्रेता २, प्रायिता । प्रेष्यते २, प्रायिष्यते । पिप्रीषते । पेप्रीयते । पेप्रयीति, पेप्रेति, पेप्रीतः, पेप्रियति । प्राययति । अपिप्रयत् । प्रीयमाणः । प्रेष्यमाणः । पिप्रियाणः । प्रीतः, २ वान् । प्रीत्वा । प्रेता । प्रेतुम् । प्रेतव्यम् । प्रेयम् ॥७४॥

युजिच् समाधौ; चित्तवृत्तेर्निरोधे । युज्यते । वि, नि, प्र, समन्वभि, प्राङ् पूर्वोऽपि । वियुज्यते । क्ये, युज्यते । "सिजाशिष-"४।३।३५॥ इति वा कित्त्वे, अयुक्त, अयुक्षाताम्, अयु ८ क्षत, क्थाः, क्षाथाम्, ग्ध्वम्, ग्ड्ढ्वम्, क्षि, क्ष्वहि, क्ष्महि । अयोजि । युयुजे; युयुजिमहे । युक्षीष्ट । योक्ता । योक्ष्यते । युयुक्षते । योयुज्यते । योयुजीति, योयोक्ति । योजयति । अयूयुजत् । युज्यमानः । योक्ष्यमाणः । युयुजानः । युक्तः, २ वान् । "कुशलायुक्त-"॥२।२।९७॥ इति वा सप्तम्याम्; आयुक्तो देवार्चायाम्, देवार्चया वा । युक्त्वा । नियुज्य । योक्ता । योक्तुम् । क्विपि, युजमापन्ना मुनयः । ध्यणि, "क्तेऽनिटः"॥४।१।१११॥ इति गः; योग्यम्; प्रयोग्यम् । "निप्राद्युजः-"॥४।१।११६॥ इति गत्वाभावे, नियोक्तुं शक्यं नियोज्यम् । प्रयोज्यम् ॥ ७५ ॥

सृजिंच् विसर्गे । सृज्यते मालां चैत्रः । उत्सृज्यते । उप, वि, नि, व्युत्सं पूर्वोऽपि । कर्मकर्त्तरि, "एकधातौ-"॥३।४।८६॥ इति क्ये, सृज्यते माला स्वय-

मेव । सिचो लुक्यपि कित्त्वं प्रति स्थानित्वात्, "अः सृजि-"॥४।४।१११॥ इति न अत्; असृष्ट, असृक्षाताम्, असृक्षत, असृष्ठाः; असृ, २ ड्ढ्वम्, ग्ड्ढ्वम्। असर्जि। ससृजे; ससृजिध्वे। सृक्षीष्ट। "अः सृजि-"॥४।४।१११॥ इत्यति, स्रष्टा। स्रक्ष्यते। अस्रक्ष्यत। सिसृक्षते। सरीसृज्यते। सरि री र् ३ सृजीति, सरिस्रष्टि, सारिस्रष्टः, सारिसृजति। एवं दृशवत्। सर्जयति। अससर्जत्। असीसृजत् । सिसर्जयिषति। सृष्टः, २ वान्। सृष्टिः। सृष्ट्वा। स्रष्टा। स्रष्टुम्। स्रष्टव्यम् ॥ ७६ ॥

पदिंच् गतौ; गतिर्यानं ज्ञानं च। पद्यते; प्रणिपद्यते। आ, प्र, उद्, सम्, निरुपपूर्वोऽप्येवम्। क्ये, पद्यते। कर्त्तरि, "ञिच् ते पदस्तलुक् च"॥३।४।६६॥ अपादि, अपत्साताम्, अपत्सत, अपत्थाः, अपत्साथाम्, अप २ द्ध्वम्, द्ध्वम्, अप ३ त्सि, त्स्वहि, त्स्महि। भाक। अपादि। पेदे; पेदिमहे। पत्सीष्ट। पत्ता। पत्स्यते। अपत्स्यत। "रभलभ-"॥४।१।२१॥ इतीति, पित्सते। "वञ्च-"॥४।१।५०॥ इति नीः; पनीपद्यते। पनीप २ दीति, त्ति। उत्पादयति। उदपीपदत्। प्रत्यपादि। पद्यमानः। पत्स्यमानः। पेदानः। प्रपन्नः, २ वान्। पत्त्वा। प्रपद्य। पत्ता। पत्तुम्। पत्तव्यम्। पाद्यम् ॥ ७७ ॥

विदिंच् सत्तायाम्। विद्यते। क्ये, विद्यते। अवित्त, अवि ८ त्साताम्, त्सत, त्थाः; द्ध्वम्, द्द्ध्वम्, त्सि, त्स्वहि, त्स्महि। अवेदि। विविदे; विविदिषे। वित्सीष्ट। वेत्ता। वेत्स्यते। विवित्सते। वेविद्यते। वेवेत्ति, वेविदीति। वेदयति। अवीविदत्। विद्यमानः। वेत्स्यमानः। "रदात्-"॥४।२।६९॥ इति नः, विन्नः, २ वान्। क्ते, "निर्विण्णः"॥२।३।८९॥ इति निपातनात्; निर्विण्णः प्राव्राजीत्, विरक्त इत्यर्थः। क्तवतौ तु न णः, निर्विन्नवान्। वित्त्वा। वेत्ता। वेत्तुम् ॥७८॥

खिदिंच् दैन्ये। खिद्यते; खिद्यामहे। खिद्यते। अखित्त। चिखिदे। खेत्ता। चिखित्सति। खिन्नः। एवं विदिंच्वत् ॥ ७८ ॥

युधिंच् सम्प्रहारे; हनने। युध्यते। क्ये, युध्यते। अयुद्ध, अयु ६ त्साताम्, त्सत, द्धाः; द्ध्वम्, द्ध्वम्, त्सि। अयोधि। युयुधे; युयुधिमहे। युत्सीष्ट। योद्धा। योत्स्यते। युयुत्सते। योयुध्यते। योयोद्धि, योयुधीति।

"चल्याहार-"॥३।३।१०८॥ इति फलवत्यपि परस्मैपदे, चैत्रः काष्ठं योधयति । अयूयुधत् । युध्यमानः । योत्स्यमानः । युयुधानः । युद्धः, २ वान् । युद्ध्वा । प्रयुध्य । योद्धा । योद्धुम् । योद्धव्यम् । योध्यम् ॥ ७९ ॥

अनो रुधिंच् कामे; काम इच्छा । अनुरुध्यते । अन्वरुद्ध । अनुरुरुधे । अनुरोद्धा । शेषं युधिंच्वत् । कामादन्यत्र रुधादित्वात् श्ने, अनुरुणद्धि । अनुरुन्द्धे ॥ ८० ॥

बुधिं, मनिंच् ज्ञाने । बुध्यते; अवबुध्यते; विबुध्यते; प्रतिबुध्यते । क्ये, बुध्यते । "दीपजन-"॥३।४।६७॥ इति कर्त्तरि ते वा ञिचि; अबोधि, अबुद्ध; अत्र वर्णे सकारे परतो विधिरिति वर्णविधित्वेन सिचः स्थानिवद्भावो नास्तीति सिज्लुकि आदेर्न चतुर्थः; क्त्त्वं तु प्रतिवर्णविधेरभावात् स्थानित्वम्, तेनात्र न गुणः । एवमन्यत्रापि । अभु २ त्साताम्, त्सत, अबुद्धाः, अभु ६ त्साथाम्, द्ध्वम्, द्द्ध्वम्, त्सि, त्स्वहि, त्स्महि । भाक् । अबोधि । शेषं कर्तृवत् । बुबुधे, बुबुधाते; बुबुधिमहे । भुत्सीष्ट । बोद्धा । भोत्स्यते । अभोत्स्यत । "उपान्त्ये-" ॥४।३।३४॥ इति क्त्त्वे, बुभुत्सते । बोबुध्यते । बोबोद्धि, बोबु ४ धीति, द्धः, धति, धीषि, बोभोत्सि, बोबु ३ द्धः, द्ध, धीमि, बोबोध्मि; बोबु २ ध्वः, ध्मः ॥ ह्य० ॥ अबोबुधीत्, अबो ६ भोत, बुद्धाम्; बुधुः, बुधीः, भोः, भोत् । शेषं पाचिवत् । "चल्या-"॥३।३।१०८॥ इति फलवत्यपि परस्मैपदे; बोधयति पद्मं रविः । शिष्यं धर्मं बोधयति । अबूबुधत् । बुबोधयिषति । बुध्यमानः । भोत्स्यमानः । बुबुधानः । बुद्धः, २ वान् । "ज्ञानेच्छा-"॥५।२।९२॥ इति सति क्ते, राज्ञां बुद्धः । बुद्ध्वा, अत्र क्त्वास्थानस्य ध्वस्य लाक्षणिकत्वाद्, "गडदबा-"॥२।१।७७॥ इति आदेर्न चतुर्थः । प्रबुध्य । बोद्धा । बोद्धव्यम् । बोद्धुम् । बोध्यम् ॥ मनिंच् ॥ "मन्यस्य-" ॥२।२।६४॥ इत्यतिकुत्सने कर्मणि वा चतुर्थीम्, न त्वां तृणाय तृणं वा मन्यते; अनुमन्यते; अवमन्यते; विमन्यते । क्ये, मन्यते । अमंस्त, अमं ८ साताम्, सत, स्थाः; द्ध्वम्, ध्वम्, सि, स्वहि, स्महि । अमानि । मेने, मेनाते, मेनिरे, मेनिषे । मंसीष्ट । मन्ता । मंस्यते । मिमंसते । मंमन्यते । मंमन्ति, मंमनीति, "यमिरमि-"॥४।२।५५॥ इति नलुकि, मंमतः, मंमनाति । मानयति । अमी-

मनत । मन्यमानः । मंस्यमानः । मेनानः । मतः, २ वान् । "ज्ञानेच्छा-"॥५।२।९२॥ इति सति क्ते, राज्ञां मतः । मत्वा । "यपि"॥४।२।५६॥ इति नलुकि, अवमत्य । मन्ता । मन्तुम् । मन्तव्यम् ॥ ८१ ॥ ८२ ॥

जनैंचि प्रादुर्भावे; उत्पत्तौ । "जा ज्ञा-"॥४।२।१०४॥ इति; जायते । जायेत । जायताम् । अजायत । क्ये, "ये नवा"॥४।२।६२॥ इति क्ङिति ये वा आत्वे; जायते, जन्यते । "दीपजन-"॥३।४।६७॥ इति वा ञिचि, "न जनवधः"॥४।३।५४॥ इति वृद्ध्यभावे, अजनि, अजनिष्ट, अजनि ९ षाताम्, षत, ष्ठाः, षाथाम्, ध्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि । भावे । अजनि । "गमहन-"४।२।४४॥ इत्यल्लुकि, जज्ञे, जज्ञाते, जज्ञिरे, जज्ञिषे । जनि २ षीष्ट; षीध्वम् । जनिता । जनिष्यते । अजनिष्यत । जिजनिषते । वा आत्वे, जाजायते; जञ्जन्यते । त्यादौ तु न जादेशः; जञ्जन्ति, जञ्जनीति । "आः खनि-"४।२।६०॥ इति नस्य आत्वे, जञ्जातः । "गमहन-"॥४।२।४४॥ इत्यल्लुकि, जञ्ज्ञति । जञ्जन्तीति वाक्ये शतरि, "जा ज्ञा-"॥४।२।१०४॥ इति जादेशे, "श्नश्चातः"॥४।२।९६॥ इत्याल्लुकि; जञ्त्; अत्यर्थं जायमान इत्यर्थः । "कगेवनू-"॥४।२।२५॥ इति ह्रस्वे, "चल्या-"॥३।३।१०८॥ इति फलवत्यपि परस्मै; जनयति । अजीजनत् । ञिणम्परे वा दीर्घः; अजानि, अजनि । जानम् २ । जनम् २ । जायमानः । जायमानम्; जन्यमानम् । जनिष्यमाणः । जज्ञानः । ऐदित्त्वात् क्तयोर्नेटि, "गत्यर्थाकर्म-"॥५।१।११॥ इति वा कर्त्तरि क्ते, "आः खनि-"॥४।२।६०॥ इत्यात्वे; जातः, २ वान् । पक्षे भावे क्ते, जातं चैत्रेण । साप्यादपि, "श्लिषशीङ्-"॥५।१।९॥ इति क्ते, अनुजातः कन्यां चैत्रः । पक्षे कर्मणि क्ते; अनुजाता कनी चैत्रेण । विजाता वत्सं गौः । विजातो वत्सो गवा; विजातं गवा । अकर्मका अपि हि सोपसर्गाः सकर्मका भवन्ति । जनित्वा । "ये नवा"॥४।२।६२॥ इति वा आत्वे; प्रजाय, प्रजन्य । जनि ३ ता, तुम्, तव्यम् । जन्यम् ॥ ८३ ॥

दीपैचि दीप्तौ । दीप्यते; प्रदीप्यते । क्ये, दीप्यते । "दीपजन-"॥३।४।६७॥ इति वा ञिचि तलुकि च; अदीपि, अदीपिष्ट, अदीपि ९ षाताम्, षत० । भावे । अदीपि । दिदीपे, दिदीपाते, दिदीपिरे, दिदीपिषे ।

दीपिषीष्ट। दीपिता । दीपिष्यते । दिदीपिषते । देदीप्यते । देदी ४ पीति, प्ति, प्तः, पति । दीपयति । "भ्राजभास-"॥४।२।३६॥ इति वा ह्रस्वे; अदीदिपत्, अदिदीपत् । दीप्यमानः । दीपिष्यमाणः । दिदीपानः । ऐदित्त्वान्नेटि; दीप्तः, २ वान् । दीपि ३ ता, तुम्, त्वा । प्रदीप्य । दीपनीयम् । दीप्यम् ॥ ८४ ॥

तपिंच् ऐश्वर्ये वा। अनिट् । तपं, धूप सन्तापे इत्यस्यैवैश्वर्येऽर्थे दिवादित्व-मात्मनेपदं च वा विधीयते । तप्यते । अतप्त, अतप्साताम्। अतापि । तेपे । तप्ता । तप्स्यते । तितप्सते। तप्तः। पक्षे ऐश्वर्येऽपि भ्वादित्वात्, प्रतपति । अताप्सीत् । प्रततापेत्यादि । एके तु तापिंच् ऐश्वर्ये इति धात्वन्तरं दिवादिमाहुः। अन्ये तु भ्वादेरैश्वर्ये सन्तापे च श्यात्मनेपदे वेच्छन्ति ॥ ८५ ॥

पूरैचि आप्यायने; वृद्धौ । पूर्यते । क्ये, पूर्यते । "दीपजन-"॥३।४।६७॥ इति वा ञिचि; अपूरि, अपूरिष्ट, अपूरिषाताम्। भावे। अपूरि । पुपूरे, पुपूराते। पूरिषीष्ट। पूरिता । पूरिष्यते । पुपूरिषते । पोपूर्यते । पोपू ४ रीति, र्त्ति, र्त्तः, रति । पूरयति । अपूपुरत् । "णौ दान्त-"॥४।४।७४॥ इति वा निपातनात्; पूर्णः, पूरितः । पूर्यमाणः। पूरिष्यमाणः। पुपूराणः । ऐदित्त्वान्नेटि; पूर्णः, २ वान्। पूर्त्तिः । पूरित्वा । प्रपूर्य । पूरि ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥ ८६ ॥

क्लिशिच् उपतापे । क्लिश्यते; संक्लिश्यते । क्ये, क्लिश्यते। अक्लेशिष्ट, अक्लेशिषाताम् । अक्लेशि । चिक्लिशे; चिक्लिशिमहे । क्लेशिषीष्ट । क्लेशिता । क्लेशिष्यते । "वौ व्यञ्जन-"॥४।३।२५॥ चिक्लिशिषते, चिक्लेशिषते। चेक्लिश्यते । चेक्लेष्टि; चेक्लिशीति । क्लेशयति। अचिक्लिशत् । "पूङ्क्लिशि-"॥४।४।४५॥ इति क्तक्त्वासु वेट्; क्लिष्टः, २ वान्; क्लिशितः, २ वान् । क्लिष्ट्वा; "क्षुधक्लिश-"॥४।३।३१॥ इति कित्त्वे, क्लिशित्वा । क्लेशि ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥ ८७ ॥

काशिच् दीप्तौ । प्रकाश्यते । अकाशिष्ट । प्रकाशयति । "उपान्त्यस्य-" ॥४।२।३५॥ इति ह्रस्वे, अचीकशत् । ह्रस्वं नेच्छन्त्यन्ये, अचकाशत् । शेषं काशृङ्वत् ॥ ८८ ॥

वाशिच् शब्दे । वाश्यते पशुः । अवाशिष्ट काकः । अवाशि । ववाशे ।

वाशिता । वाशिष्यते । विवाशिषते । वावश्यते । वाशयति । अवीवशत् । न ह्रस्व इत्यन्ये; अववाशत् । वाशि ४ तः, ता, तुम्, त्वा ॥ ८९ ॥

इत्यात्मनेपदिनः ।

मृषीवर्जास्त्रयोऽनिटः ॥ रञ्जींच् रागे । रज्यति, रज्यते । क्ये, रज्यते । शेषं रञ्जीवत् ॥ ९० ॥

शपींच् आक्रोशे । शप्यति, शप्यते । क्ये, शप्यते । शेषं भ्वादिशपीं वत् ॥ ९१ ॥

मृषींच् तितिक्षायाम्; क्षमायाम् । सेट् अयम् । मृष्यति, मृष्यते । "परेर्मृषश्च" ॥३।३।१०४॥ इति फलवत्यपि परस्मैपदे; परिमृष्यति । क्ये, मृष्यते । अमर्षीत्, अमर्षि २ ष्टाम्, षुः । अमर्षिष्ट, अमर्षिषाताम् । अमर्षि । ममर्ष, ममृषतुः, ममृषुः, ममर्षिथ; ममृषिम । ममृषे; ममृषिमहे । मृष्यात् । मर्षिषीष्ट । मर्षिता २ । मर्षिष्यति, ते । मिमर्षिषति, ते । मरीमृष्यते । मरि री र् ३ मर्ष्टि, मरि री र् ३ मृषीति, मर्मृ २ष्टः, षति । मर्षयति । अमीमृषत्, अममर्षत् । मृष्य २ न्, माणः; मर्षिष्य २ न्, माणः । ममृष्वान् । ममृषाणः । "ऋत्तृष-" ॥४।३।२४॥ इति वा किंत्त्वे; मृषित्वा, मर्षित्वा । परिमृष्य । "मृषः क्षान्तौ" ॥४।३।२८॥ इति क्तयोरकित्त्वे; मर्षितः, २ वान् । क्षान्तेरन्यत्र भूषणादिषु कित्त्वे; मृषितः, २ वान् । मर्षि ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥ ९२ ॥

णहींच् बन्धने । नह्यति, नह्यते; संनह्यति, ते; णपाठात् "अदुरुप-" ॥२।३।७७॥ इति णत्वे, प्रणह्यति, ते । "वाऽवाप्योः-" ॥३।२।१५६॥ इति अपेः पिर्वा; अपिनह्यति, ते; पिनह्यति, ते । क्ये, नह्यते । "नहाहोः-" ॥२।१।८५॥ इति हस्य धे; अनात्सीत्, अनाद्धाम्, अनात्सुः, अनात्सीः । अनद्ध, अनत्साताम्; अनद्धाः; अन २ द्ध्वम्, द्ध्वम् । अनाहि । ननाह, नेहतुः, नेहुः, नेहिथ, ननद्ध, नेहथुः, नेह, ननाह, ननह, नेहि २ व, म । नेहे । नह्यात् । नत्सीष्ट । नद्धा २ । नत्स्यति, ते । सन्निनत्सति । नानह्यते । नान १२ हीति, द्धि, द्धः, हति, त्सि, हीषि, द्धः, द्ध, हीमि, ह्मि, ह्वः, ह्मः । हौ; नानद्धि ॥ ह्य० ॥

अनान १३ त, द्, हीत्, द्धाम्, हुः, त, द्, हीः, द्धम्, द्ध, हम्, ह्व, ह्म । शेषं पचिवत् । नाहयति । अनीनहत् । नद्धः २, वान् । पिनद्धम्, अपिनद्धम् । नद्ध्वा । संनह्य । नद्धा । नद्धुम् । नद्धव्यम् ॥ ९३ ॥

उभयपदिनः ।

इति तपाचार्यश्रीदेवसुन्दरसूरिशिष्यश्रीगुणरत्नसूरिविरचिते क्रियारत्नसमुच्चये दिवादिगणः ॥

अथ स्वादिः ।

तत्रादौ धूगूट् वर्जाः पञ्चानिटः ॥ षुंगूट् अभिषवे । अभिषवः, क्लेदनं सन्धानाख्यम्, पीडनमन्थने वा । स्नानमिति चान्द्राः । "स्वादेः श्नुः" ॥३।४।७५॥ इति श्नौ, "उश्नोः" ॥४।३।२॥ इति गुणे, सुनोति; "उपसर्गात्सुग्-" ॥२।३।३९॥ इति षत्वे; अभिषुणोति, अन्तर्भूतणिगर्थत्वेन स्नपयतीत्यप्यर्थः। सुनुतः, सुन्वन्ति, सुनोषि, सुनुथः, सुनुथ, सुनोमि । "वम्यविति वा" ॥४।२।८७॥ इत्युतो वा लुकि; सुन्वः, सुनुवः, सुन्मः, सुनुमः। सुनुते, सुन्वाते, सुन्वते, सुनुषे, सुन्वाथे, सुनुध्वे, सुन्वे, सुन्वहे, सुनुवहे, सुन्महे, सुनुमहे। क्ये, सूयते; अभिषूयते । सुनुयात् । सुन्वीत । सूयेत् । सुनोतु, सुनुताम्, सुन्वन्तु; "असंयोगादोः" ॥४।२।८६॥ इति हेर्लुकि, सुनु, सुनुतम्, सुनुत, सुनवा ३ नि, व, म । सुनुताम्, सुन्वाताम्, सुन्वताम्, सुनुष्व, सुन्वाथाम्, सुनुध्वम्, सुनवै, सुनवा २ वहै, महै । सूयताम् । अड्व्यवायेऽपि षत्वम्, अभ्यषुणोत् । असु २२ नोत्, नुताम्, न्वन्, नोः, नुतम्, नुत, नवम्, नुव, न्व, नुम, न्म; नुत, न्वाताम्, न्वत, नुथाः, न्वाथाम्, नुध्वम्, न्वि, नुवहि, न्वहि, नुमहि, न्महि । असूयत । एवं स्वादिसर्वधातुष्वपि ४ विभक्तयः ॥ अद्य० ॥ "धूग्सुस्तोः-" ॥४।४।८५॥ इति सिचीटि, असावीत्, असा ८ विष्टाम्, विषुः; विष्म । आत्मनेपदे त्विडभावे, असोष्ट, असो ९ षाताम्, षत, ष्ठाः; ढ्वम्, ड्ढ्वम्० । असावि । अढित्व इत्युक्ते पूर्वस्य षत्वाभावे, उत्तरस्य तु षपाठात्, "नाम्यन्त-" ॥ २ । ३ । १५ ॥ इति

षत्वे, अभिसुषाव; सुषुवतुः, सुषुवुः, सुषविथ, सुषोथ; सुषुविम । अभिसुषुवे; सुषुविमहे । अभिषूयात् । सोषीष्ट । सोता २ । "सुगः स्यसनि" ॥२।३।६२॥ इति न षत्वे, अभिसोष्यति, ते । अभ्यसोष्यत; त । "णिस्तोरेव-" ॥२।३।३७॥ इति नियमादुत्तरस्य षत्वाभावे; सुसूषति, ते । अद्वित्व इति निषेधात् पूर्वस्यापि न षत्वे, अभिसुसूषति, ते । अभ्यसुसूषत्, त । सुसूषतेः क्विपि; सुसूः, अभिसुसूः; अत्र धातोः षणि षत्वं निषिद्धमपि परे रुत्वे षत्वस्यासत्त्वात्, "सो रुः"॥२।१।७२॥ इति रुत्वे कृते, वर्णविधौ स्थानित्वाभावात् षणोऽभावेनानिषेधात् पुनः प्राप्तं सत्, "सुगः स्यसनि"॥ २। ३। ६२ ॥ इति पुनर्निषिध्यते; सोषूयते; अभिसोषूयते । सोषवीति, सोषोति । सावयति; अभिषावयति; अत्र प्रागुपसर्गसम्बन्धः । ण्यन्तस्य पश्चादुपसर्गसम्बन्धे तु, अभिसावयति । असूषवत् । द्वित्वे तु न षः; अभ्यसूषवत् । सुषावयिषति । सुन्वन् । सुन्वती । सुन्वानः । सोष्य २ न्, माणः । सुषुवान् । सुषुवाणः । सुतः, २ वान् । सुत्वा । अभिषुत्य । सो ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥१॥

षिंगृट् बन्धने। सिनोति; विसिनोति, सिनुतः, सिन्वन्ति। सिनुते, सिन्वाते । सीयते । असैषीत । असेष्ट । असायि । षपाठात्, "नाम्यन्त-"॥२।३।१५॥ इति षत्वे, सिषाय, सिष्यतुः; सिषयिथ, सिषेथ; सिष्यिम । सिष्ये । सीयात् । सेषीष्ट, सायिषीष्ट । सेष्यति, ते । सिषीषति, ते । सेषीयते । सेषयीति, सेषेति । साययति । असीषयत् । सिन्वन् । सेष्यन् । सिषिवान् । सिष्याणः । सितः, २ वान् । "सेर्ग्रासे-"॥४।२।७३॥ इति क्तयोस्तस्य नत्वे, सिनो ग्रासः स्वयमेव । "प्रसितोत्सुक-"॥२।२।४९॥ इति आधारे वा तृतीया; केशैः केशेषु वा प्रसितः । परि, नि, वि पूर्वस्य "सयसितस्य"॥२।३।४७॥ इति षत्वे, परिषितः; निषितः; विषितः, त्रिष्वपि बद्ध इत्यर्थः । सित्वा । प्रसित्य । सेता । सेतुम् ॥ २ ॥

डुमिंगृट् प्रक्षेपणे। मिनोति; निमिनोति, प्रक्षिपतीत्यर्थः । प्रमिनोति; प्रनिमिनोति । मिनुते । क्ये, मीयते । यबक्ङिति, "मिग्मीग-"॥४।२।८॥ इत्यात्वे, न्यमासीत्, न्यमासिष्टाम् । न्यमास्त, न्यमासाताम् । न्यमायि । विषयव्याख्यानात् प्रागात्वे पश्चात् द्वित्वे, ममौ । धातुपारायणे तु, मिमायेति यद-

स्ति तत्तु नावबुध्यते, प्रथमादर्शलेखकदोषाद्वा सम्भवति । मिम्यतुः, मिम्युः; वेटि, ममिथ, ममाथ, मिम्यथुः, मिम्य, ममौ, मिम्यिव, मिम्यिम । मिम्ये । मीयात् । मासीष्ट । माता; ञिटि, मायिता । मास्यति, ते; मायिष्यते । "मिमीमा-"॥४।१।२०॥ इतीति; प्रमित्सति, ते । निमेमीयते । निमेमयीति, निमेमेति; "मिग्मीग्-"॥४।२।८॥ इत्यत्रानुबन्धनिर्देशाद्यङ्लुपि न आत्वम् । निमापयति । न्यमीमपत् । मिन्वन् । मिन्वानः । मीयमानम् । मास्यन् । मास्यमानः । मिमिवान् । मिम्यानः । मितः, २ वान् । मितिः । मित्वा । प्रमाय । मा ३ ता, तुम्, तव्यम् । मानीयम् । मेयम् । मानम् ॥ ३ ॥

चिंग्ट् चयने । चिनोति, चिनुते । सं, प्र, उप, अव, परि, उद्, आङ्, निः पूर्वोऽप्येवं; "नेर्ङ्गा-"॥२।३।७९॥ इति णिः, प्रणिचिनोति । क्ये, चीयते । चिनुयात् । चिन्वीत । चिनोतु । चिनुताम् । अचिनोत् । अचिनुत । शेषं धुंग्ट्वत् ॥ अद्य० ॥ अचैषीत्, अचै ८ ष्टाम्, षुः, षीः, ष्टम्, ष्ट, षम्, ष्व, ष्म । "धुट्-ह्रस्व-"॥४।३।७०॥ इति सिच्लुकः परत्वेऽपि नित्यत्वात् प्रागेव गुणे, अचेष्ट, अचेषाताम्, अचेषत, अचेष्ठाः । "सो धि-"॥४।३।७२॥ इति वा सिचोलुकि, "नाम्य-" ॥२।१।८०॥ इति ढे, अचे २ ढ्वम्, ड्ढ्वम् । भाक । अचायि, अचायिषाताम्, अचेषाताम्; अचायि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्; अचे २ ढ्वम्, ड्ढ्वम् । सन्परोक्षयोः, "चेः किर्वा"॥४।१।३६॥ चिकाय, चिचाय, चिक्यतुः, चिच्यतुः; चिकयिथ, चिकेथ, चिचयिथ, चिचेथ; णवि, चिकय, चिकाय, चिचय, चिचाय; चिक्यिम, चिच्यिम । चिक्ये, चिच्ये; चिक्यिमहे, चिच्यिमहे । चीयात् । चेषीष्ट, चायिषीष्ट; चेषीढ्वम्; चायि २ षीढ्वम्, षीध्वम् । चेता २; चायिता । चेष्यति, ते; चायिष्यते । चिकीषति, ते; चिचीषति, ते । चेचीयते । चेचयीति, चेचेति, चेचितः, चेच्यति । क्ये, चेचीयते ॥ सप्त० ॥ चेचियात् । ह्य० ॥ अचे ४ चयीत्, चेत्, चिताम्, चयुः । क्ये, अचेचीयत ॥ अद्य० ॥ अचेचायीत् । भाक । अचेचायि, अचेचायिषाताम्, अचेचयिषाताम् । चेचयाञ्चकार । भाक । चेचयाञ्चक्रे । चेचीयात् । भाक । चेचायिषीष्ट, चेचयिषीष्ट । चेचयिष्यति । भाक । चेचायिष्यते, चेचयिष्यते । अचेचायिष्यत् । भाक । अचेचायिष्यत, अचेचयिष्यत ।

णिगि, "चिस्फुरोः-"॥४।२।१२॥ इति वा आत्वे, "अर्त्तिरी-"॥४।२।२१॥ इति पौ, निश्चापयति, निश्चाययति। अचीचपत्, अचीचयत्। चिचापयिषति, चिचाययिषति। चिन्वन्। चिन्वानः। चीयमानम्। चेष्यन्। चेष्यमाणः। चिचिवान्, चिकिवान्। चिच्यानः, चिक्यानः। चितः, २ वान्। चित्वा। सञ्चित्य। चेता। चेतुम्। चेतव्यम्। चेयम्; परिचेयम्। अन्येत्वेनं चुरादौ पठित्वा अस्य घटादित्वं, "चिस्फुरोः-"॥४।२।१२॥ इत्यात्वाभावं चेच्छन्ति। तन्मते, चययति। आत्वमप्यन्ये; चापयति। णिजभावे तु; चयति, चयते इत्यादि ॥ ४ ॥

धूगृट् कम्पने। धूनोति, धूनुते। क्ये, धूयते। धूनुयात्। धून्वीत। धूनोतु। धूनुताम्। अधूनोत्। अधूनुत। "धूग्सुस्तोः"॥४।४।८५॥ इतीटि, अधावीत्, अधाविष्टाम्। आत्मनेपदे तु, "धूगौदितः"॥४।४।३८॥ इति वेटि, अधोष्ट, अधविष्ट। अधावि, अधाविषाताम्; अधोषाताम्, अधविषाताम्। दुधाव, दुधुवतुः, दुधुवुः, दुधविथ; दुधुविम। दुधुवे। धूयात्। "धूगौदितः"॥४।४।३८॥ इति वेटि, धोषीष्ट, धविषीष्ट, धाविषीष्ट। धोता, धविता; धाविता। धोष्यति, धविष्यति, ते; धाविष्यते। दुधूषति, ते; दुधुविषति, ते। दोधूयते। दोधवीति, दोधोति। णौ, "धूग्प्रीगोः-"॥४।२।१८॥ इति ने, विधूनयति। व्यदूधुनत्। ग्निर्देशाद्यङ्लुपि णौ न नोऽन्तः। दोधावयति। धूतः, २ वान्। "उवर्णात्" ॥४।४।५८॥ इति नेट्, धूत्वा। विधूय। धोता; धविता। धोतुम्; धवितुम्। धोतव्यम्; धवितव्यम्। उदन्तोऽनिट् चायमित्येके; धुनोति, धुनुते। क्ये, धूयते। धुनुयात्। धुनोतु। अधुनोत्। अधोष्ट। अधावि। धोता। विधुतः। धुत्वा। विधुत्य इत्यादि ॥ ५ ॥

स्तृंगृट् आच्छादने। स्तृणोति, स्तृणुते। क्ये, "क्ययङ-"॥४।३।१०॥ इति गुणे, आस्तर्यते। अस्तार्षीत्, अस्तार्ष्टाम्, अस्तार्षुः, अस्तार्षीः। आत्मने सिजाशिषोः; "संयोगादृतः"॥४।४।३७॥ इति वेटि; आस्तरिष्ट, आस्तृत। "ऋवर्णात्"॥४।३।३६॥ इति सिच् कित्। "धुट्-"॥४।३।७०॥ इति लुक्, अस्तारि; ञिटि, अस्तारिषाताम्, अस्तरिषाताम्, अस्तृषाताम्। तस्तार; "संयोगाद्-" ॥४।३।९॥ इति गुणे, तस्तरतुः; "ऋतः"॥४।४।७९॥ इति नेटि, तस्तर्थ, तस्तरथुः;

तस्तरिम । तस्तरे । स्तर्यात् । स्तृषीष्ट, स्तरिषीष्ट, स्तारिषीष्ट । तिस्तीर्षति, ते । तास्तर्येते । तरी रि र् ३ स्तरीति, तर्स्तर्त्ति, तरि २ स्तृतः, स्त्रति । स्तारयति । अतिस्तरत् । स्तृण्वन् । स्तृण्वानः । स्तरिष्य २ न्, माणः । तस्तृवान् । तस्त्राणः । स्तृतः, २ वान् । विस्तीर्णे इति तु स्तृणातेः । स्तृत्वा । आस्तृत्य । स्तर्त्ता । स्तर्तुम् ॥६॥

वृग्ट् वरणे । वृणोति, वृणुते; प्रावृ २ णोति, णुते । आ, सं, परि पूर्वोऽपि । क्ये, व्रियते । अवारीत्, अवारिष्टाम्, अवारिषुः । "इट् सिजाशिषोः-"॥४।४।३६॥ इति वेटि, "वृत-"॥४।४।३५॥ इति वा दीर्घे च, अवृत, अवरिष्ट, अवरीष्ट । अवारि, अवृषाताम्, अवरिषाताम्, अवरीषाताम्; ञिटि, अवारिषाताम्० । ववार, वव्रतुः, वव्रुः; "ऋवृ-"॥४।४।८०॥ इतीटि, ववरिथ, वव्रथुः, वव्र, ववार, ववर; "स्कृसृ-"॥४।४।८१॥ इत्यत्रास्य वर्जनान्नेटि; ववृव, ववृम । वव्रे, वव्राते, वव्रिरे, ववृषे; ववृ २ वहे, महे । व्रियात् । वेटि दीर्घाभावे च, वृषीष्ट, वरिषीष्ट, वारिषीष्ट । वा दीर्घे, वरिता २, वरीता २, वारिता । वरिष्यति, ते; वरीष्यति, ते; वारिष्यते । अवरिष्यत्, त; अवरीष्यत, त; अवारिष्यत । "इवृध-"॥४।४।४७॥ इति वेटि, "नामिनोऽनिट्"॥४।३।३३॥ इति किर्त्वे च; प्राविवरिषति, ते; प्राविवरीषति, ते; प्रावुवूर्षति, ते । वेव्रीयते । वरि री र् ३ वरीति, वरि री र् ३ वर्त्ति, वर्वृतः, वर्व्रति । वर्व्रत् । वारयति । अवीवरत् । वृण्वन् । वृण्वानः । व्रियमाणम् । वरिष्य २ न्, माणः; वरीष्य २ न्, माणः । ववृवान् । वव्राणः । "ऋवर्णश्रि-"॥४।४।५७॥ इति किति नेटि; वृतः, २ वान् । वृतिः । वृत्वा । प्रावृत्य । वरि ३ ता, तुम्, तव्यम्; वरी ३ ता, तुम्, तव्यम् । क्यपि, प्रावृत्यः ॥ ७ ॥

इत्युभयपदिनः ।

अथ सप्तानिटः ॥ हिंट् गतिवृद्ध्योः । हिनोति; "अदुरुपसर्ग-"॥२।३।७७॥ इति णत्वे; प्रहिणोति, प्रहिणुतः, प्रहिण्वन्ति । क्ये, प्रहीयते । हौ, प्रहिणु । दिवि, प्राहिणोत् । अमि, प्राहिणवम् ॥ अद्य० ॥ अहैषीत्, अहैष्टाम्, अहै ७ षुः, षीः, ष्टम्, ष्ट, षम्, ष्व, ष्म । अहायि, अहेषाताम्; ञिटि, अहायिषाताम्, अहेष्ठाः, अहायिष्ठाः; अहे २ ड्ढ्वम्, ढ्वम्; अहायि ३ ड्ढ्वम्,

ढ्वम्, ध्वम् । "अङे हि-"॥४।१।३४॥ इति हो घे; जिघाय, जिघ्यतुः, जिघ्युः, जिघयिथ, जिघेथ, जिघ्यथुः, जिघ्य, जिघाय, जिघय, जिघ्यिव, जिघ्यिम । जिघ्ये, जिघ्याते, जिघ्यिरे, जिघ्यिषे । हीयात् । हेषीष्ट; हायिषीष्ट । हेता २; हायिता । हेष्यति; हायिष्यते । जिघीषति । जेघीयते । जेघयीति; जेघेति, जेघितः, जेघ्यति । जेघ्यत्। शेषं चिवत् । प्रहाययति । ङे न घः, प्राजीहयत् । प्रजिहाययिषति । प्रहिण्वन् । प्रहेष्यन् । प्रहीयमाणम् । प्रहेष्यमाणम् । प्रहितः, २ वान्। "सातिहेति-"॥५।३।९४॥ इति क्तौ भावाकर्त्रोर्निपातनाद्, हेतिः। हित्वा। प्रहित्य । हे ३ ता, तुम्, तव्यम्। हेयम् ॥ ८॥

श्रुंट् श्रवणे । गतावित्यन्ये । "श्रौति-"॥४।२।१०८॥ इति शृः; शृणोति । "प्रत्याङः श्रुवा-"॥२।२।५६॥ इति चतुर्थ्याम्; मैत्राय प्रतिशृणोति; मैत्राय आशृणोति, शृणुतः, शृण्वन्ति, शृणोषि, शृणुथः, शृणुथ, शृणोमि, शृण्वः, शृणुवः, शृण्मः, शृणुमः । "समो गम्-"॥३।३।८४॥ इत्यात्मनेपदे; संशृणुते, संशृ, १० ण्वाते, ण्वते, णुषे, ण्वाथे, णुध्वे, ण्वे, ण्वहे, णुवहे, ण्महे, णुमहे। कर्मणि तु सति परस्मैपदे; संशृणोति हितम्। क्ये, श्रूयते । शिति शेषं षुंग्ट्वत् । अश्रौषीत्, अश्रौष्टाम्, अश्रौ ७ षुः, षीः, ष्टम्, ष्ट, षम्, ष्व, ष्म । समश्रो ६ ष्ट, षाताम्, षत, ष्ठाः; ड्ढ्वम्, ढ्वम् । अश्रावि, अश्राविषाताम्, अश्रोषाताम्। शुश्राव, शुश्रुवतुः, शुश्रुवुः, "स्क्रसृ-"॥४।४।८१॥ इत्यत्र श्रुवर्जनान्नेट्, शुश्रोथ, शुश्रुवथुः, शुश्रुव, शुश्राव, शुश्रव, शुश्रुव, शुश्रुम । शुश्रुवे, शुश्रुवाते; शुश्रुमहे । "श्रुसद-"॥५।२।१॥ इति भूतमात्रे वा परोक्षा; शुश्राव। पक्षे, अश्रौषीत् । अशृणोत्। श्रूयात्। श्रोषीष्ट; श्राविषीष्ट । श्रोता २; श्राविता। श्रोष्यति, ते; श्राविष्यते। "श्रुवोऽनाङ्-"॥३।३।७१॥ इत्यात्मनेपदे; शुश्रूषते गुरून्; संशुश्रूषते शब्दान् । आङ्प्रतेस्तु परस्मैपदे, आशुश्रूषति; प्रतिशुश्रूषति । शोश्रूयते। शोश्रवीति, शोश्रोति, शोश्रु २ तः, वति, शोश्रवीषि, शोश्रोषि, शोश्रु २ थः, थ, शोश्रवीमि, शोश्रोमि, शोश्रु २ वः, मः । "समो गम्-"॥३।३।८४॥ इत्यत्र प्रकृतिग्रहणादात्मनेपदे; संशोश्रुते, संशोश्रु- २ वाते, वते। क्ये, शोश्रूयते। शोश्रुयात्। शेषं भूस्थाने। "श्रौति-"॥४।२।१०८॥ इत्यत्र तिव्निर्देशान्न शृः। यङ्लुप्यपि शृणोतीत्यादीच्छन्त्यन्ये। शोश्रुवत्। यङ्-

लुपि सनि "श्रुवोऽनाङ्-"॥३।३।७१॥ इत्यात्मने; शोश्रविषते । णौ, श्रावयति । सनि "श्रुस्रुद्रु-"॥४।१।६१॥ इति पूर्वस्योतो वेत्वे, शिश्रावयिषति, शुश्रावयिषति । ङे, "असमानलोपे-"॥४।१।६३॥ इति सन्वद्भावे, अशिश्रवत्, अशुश्रवत् । शृण्वन् । संशृण्वानः । श्रोष्यन् । श्रोष्यमाणम् । "तत्र क्वसुकानौ-"॥५।२।२॥ इति परोक्षामात्रविषये क्वसुरेव; शुश्रुवान्, उपशुश्रुवान् । बहुलाधिकारात् कानोऽस्मान्नास्ति । श्रुतः, २ वान् । श्रुत्वा । प्रतिश्रुत्य । श्रोता । श्रोतुम् । श्रव्यम् । श्राव्यम् । श्रोतव्यम् ॥ ९ ॥

टुदुंट् उपतापे । दुनोति । क्ये, दूयते । अदौषीत्, अदौष्टाम्, अदौषुः । अदावि, अदोषाताम्, अदाविषाताम् । दुदाव, दुदुवतुः; दुदोथ, दुदविथ; दुदुविम । दुदुवे । दूयात् । दोषीष्ट; दाविषीष्ट । दोता २; दाविता २ । दोष्यति, ते; दाविष्यते । "स्वरहन्-"॥४।१।१०४॥ इति दीर्घे, दुदूषति । दोदूयते । दोदवीति, दोदोति, दोदुतः, दोदुवति । दावयति । अदीदवत् । दुन्वन् । दोष्यन् । दूयमानम् । दुदुवान् । दुदुवानम् । "दुगोः-"॥४।२।७७॥ इति नत्वं ऊश्च; दूनः, २ वान् । दुत्वा । प्रदुत्य । दोता । दोतुम् ॥ १० ॥

पृंट् प्रीतौ । पृणोति । क्ये, प्रियते । अशिति शेषं सर्वं पृंक्वत् ॥ ११ ॥

शक्लृंट् शक्तौ । शक्नोति, शक्नुतः, शक्नुवन्ति; अत्र उव् । शक्नुवः, शक्नुमः; अत्र संयोगसद्भावान्न उलुक् । क्ये, शक्यते । शक्नुयात् । शक्नोतु, शक्नुताम्, शक्नुवन्तु, शक्नुहि; संयोगान्न हेर्लुक् । अशक्नोत् । शिति शेषं षुंट्वत् । लृदित्त्वादङि; अशक ३ त्, ताम्, न् । अशाकि, अश ९ क्षाताम्, क्षत, क्थाः, क्षाथाम्, ग्ध्वम्, ग्ड्ढ्वम्, क्षि, क्ष्वहि, क्ष्महि । शशाक, शेकतुः, शेकुः, शेकिथ, शशक्थ, शेकथुः, शेक, शशाक, शशक, शेकि २ व, म । शेके । शक्यात् । शक्षीष्ट । शक्ता २ । शक्ष्यति, ते । "रभलभ-"॥४।१।२१॥ इति इत्वे, "शकोजिज्ञासायाम्"॥३।३।७३॥ इत्यात्मनेपदे च; विद्याः शिक्षते, ज्ञातुं शक्नुयामितीच्छतीत्यर्थः । अशिक्षिष्ट । आमादेशो, शिक्षाञ्चक्रे; अत्र धातोः परस्मैपदित्वेऽपि "शको-"॥३।३।७३॥ इति वचनादेव "" आमः कृगः "॥३।३।७५॥ इत्यनेन परस्मैपदं न भवति । जिज्ञासाया अन्यत्र तु परस्मै, शक्तुमिच्छति शिक्षति ।

शाशक्यते । शाश २ कीति, क्ति । शेषं पाचिवत् । शाकयति । अशीशकत् । शाकि २ तः वान्, । शक्नुवन् । शक्यमानम् । शक्ष्य २ न्, माणम् । शेकिवान् । शेकानम् । शक्तः, २ वान् चैत्रः । "शकः कर्मणि"॥४।४।७३॥ इति कर्मणि क्ते वा नेट्, शकितः शक्तो वा घटः कर्तुं चैत्रेण । कर्मणि क्तवतुर्नास्तीति नोदाह्रियते । शक्त्वा । शक्त्वा । शक्तुम् । शक्यम् । शकनीयम् । शक्तव्यम् ॥१२॥

राधं, साधंट् संसिद्धौ; फलसम्पत्तौ । राध्नोति, पचतीत्यर्थः । आराध्नोति । वि, अप, प्रति, पूर्वोऽप्येवम् । "यद्दीक्ष्ये-"॥२।२।५८॥ इति चतुर्थ्याम्; मैत्राय राध्नोति, मैत्रस्य शुभाशुभं पर्यालोचयतीत्यर्थः । राध्नुतः, राध्नुवन्ति; राध्नुवः, राध्नुमः । क्ये, राध्यते । हौ, राध्नुहि ॥ अद्य० ॥ अरात्सीत्, अराद्धाम्, अरात्सुः, अरात्सीः, अराद्धम्, अराद्ध, अरात्सम, अरात्स्व, अरात्स्म । अराधि, अरा ५ त्साताम्, त्सत, द्धाः; द्ध्वम्, द्ध्वम् । रराध, रराधतुः, रराधुः, रराधिथ; रराधिम । रराधे । वधे तु, "अवित्परोक्षा-"॥४।१।२३॥ इति एर्न च द्विः, प्रतिरेधतुः । प्रतिरेधे । राध्यात् । रात्सीष्ट । राद्धा २ । रात्स्यति, ते । "राधेर्वधे-"॥४।१।२२॥ इति इः, प्रतिरित्सति । वधादन्यत्र, आरिरात्सति । राराध्यते । रारा ४ धीति, द्धि, द्धः; धति । राधयति । अरीरधत् । राध्नुवन् । राध्यमानम् । रात्स्य २ न्, मानम् । रराध्वान्, धानम् । राद्धः, २ वान् । राद्ध्वा । आराध्य । राद्धा । राद्धुम् । राद्धव्यम् । राध्यम् ॥ साधं ॥ साध्नोति, साध्नुतः, साध्नुवन्ति०; साध्नोमि, साध्नुवः, साध्नुमः । क्ये, साध्यते । हौ, साध्नुहि । असात्सीत्, असाद्धाम्, असात्सुः । असाधि, असात्साताम् । ससाध, ससाधतुः; ससाधिथ; ससाधिम । ससाधे । साध्यात् । सात्सीष्ट । साद्धा । सात्स्यति । सिसात्सति । सासाध्यते । साधयति । असीसधत् । सिसाधयिषति । षपाठात् "नाम्यन्त-"॥२।३।१५॥ इति षत्वमित्यन्ये । सिषात्सति । असीषधत् । सिषाधयिषति । साध्नुवन् । सात्स्यन् । साध्यमानम् । साद्धः, २ वान् । साद्ध्वा । प्रसाध्य । साद्धा । साद्धुम् । साद्धव्यम् ॥ १३ ॥ १४ ॥

ऋधूट् वृद्धौ । ऋध्नोति । "ऋत्यारुप-"॥१।२।९॥ इत्यारि, प्रार्ध्नोति; परार्ध्नोति । क्ये, ऋध्यते । अशिति शेषं ऋधूच्वत् ॥ १५ ॥

आप्लृंट् व्याप्तौ । अनिट् । आप्नोति । एवं प्र, अव, वि, आङ्, सम्, प्रति पूर्वोऽपि । आप्नुतः, आप्नुवन्ति, आप्नोषि, आप्नुथः, आप्नुथ, आप्नोमि, आप्नुवः, आप्नुमः । आप्यते । प्राप्नुयात् । आप्नोतु, आप्नुताम्, आप्नुवन्तु, आप्नुहि; आप्नवानि ॥ ह्य० ॥ आप्नुवत्; आप्नुव ॥ अद्य० ॥ लृदित्त्वादङि, आपत्, आप २ ताम्, न्, आपः; आपाम। आपि, आप्साताम्, आप्सत, आप्थाः; आब्ध्वम्, आब्द्ध्वम्, आप्सि । आप, आपतुः, आपुः, आपिथ, आपथुः, आप, आप, आपिव, आपिम । आपे । आप्यात् । आप्सीष्ट । आप्ता २ । प्राप्स्यति । "ज्ञप्यापो-"॥४।१।१६॥ इतीपि, ईप्सति । आपयति । "अदुरुपसर्ग-"॥२।३।७७॥ इति णत्वे, प्रापयाणि । आपिपत् । आपितः । "वाऽऽप्नोः"॥४।३।८७॥ इति णेर्वा अयि, प्रापय्य; प्राप्य । प्राप्नुवन् । प्राप्यमाणम् । प्राप्स्यन् । आपिवान् । आपानम् । "गत्यर्था-"॥५।१।११॥ इति कर्त्तरि क्ते, आप्तः, २ वान् । पक्षे, आप्तम्। आप्त्वा। प्राप्य। प्राप्ता । प्राप्तुम् । प्राप्तव्यम्। प्राप्यम् ॥ १६ ॥

तृपट् प्रीणने । क्षुभ्नादित्वाण्णत्वाभावे, तृप्नोति, तृप्नुतः, तृप्नुवन्ति । क्ये, तृप्यते । शिति शेषं आप्लृंट्वत् । अशिति तु तृपौच्वत्, परं नित्येट्त्वं ज्ञेयम् ॥ १७ ॥

दम्भूट् दम्भे । दभ्नोति, दभ्नुतः, दभ्नुवन्ति । दभ्यते । अदम्भीत्, अदम्भिष्टाम् । अदम्भि, अदम्भिषाताम्। ददम्भ। "दम्भः"॥४।१।२८॥ इत्येत्वे नलुकि च, देभतुः, देभुः; "थे वा"॥४।१।२९॥ देभिथ, ददम्भिथ, देभथुः, देभ; देभिम । देभे। दभ्यात्। दम्भिषीष्ट । दम्भिता । दम्भिष्यति । "इवृध-" ॥४।४।४७॥ इति वेटि, दिदम्भिषति । पक्षे, "दम्भो धिप्धीप्" ॥४।१।१८॥ न च द्विः, धिप्सति, धीप्सति। दादभ्यते। दादम्भीति, दादम्भ्धि। दम्भयति। अददम्भत्। दभ्नुवन्। दम्भिष्यन् । देभिवान् । देभानम् । ऊदित्त्वाद्वेटि, दब्ध्वा, दम्भित्वा। वेट्त्वान्नेटि; दब्धः, २ वान् । दम्भि ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥ १८ ॥

धिवुट् गतौ । प्रीणनेऽप्यन्ये । "श्रौति-"॥४।२।१०८॥ इति धिः; धिनोति, धिनुतः, धिन्वन्ति । क्ये, उदित्वान्ने, धिन्व्यते । अधिन्वीत्, अधिन्विष्टाम् । अधिन्वि । दिधिन्व, दिधिन्वतुः, दिधिन्विम । दिधिन्वे। धिन्व्यात्। धिन्विषीष्ट।

धिन्विता । धिन्विष्यति । दिधिन्विषति । देधिन्व्यते । धिन्वयति । अदिधिन्वत् । धिन्वन् । धिन्वि ६ ता, तुम्, तव्यम्, त्वा, तः; २ वान् ॥ १९ ॥

ष्टिघिट् आस्कन्दने । स्तिघ्नुते; आस्तिघ्नुते । आस्तिघ्यते । आस्तेघिष्ट । तिष्टिघे । स्तेघिता । तिष्टिघिषते, तिष्टेघिषते । तेष्टिघ्यते । तेष्टेक्ति, तेष्टिघीति । स्तिघितः । स्तेघित्वा, स्तिघित्वा ॥ २० ॥

अशौटि व्याप्तौ । सङ्घातेऽप्यन्ये । अश्नुते, अश्नुवाते, अश्नु ७ वते, षे, वाथे, ध्वे, वे, वहे, महे । अश्यते । अश्नुवीत, अश्नु ६ ताम्, वाताम्, वताम्, ष्व, वाथाम्, ध्वम्, अश्न ३ वै, वावहै, वामहै । आश्नु ९ त, वाताम्, वत, थाः, वाथाम्, ध्वम्, वि, वहि, महि । आश्यत ॥ अद्य० ॥ औदित्त्वाद्वेट्, आशिष्ट, आशि ९ षाताम्, षत, ष्ठाः; ड्ढ्वम्, ध्वम्, षि० । पक्षे, आष्ट, आक्षाताम्, आक्षत, आष्ठाः, आक्षाथाम्, "सो धि वा"॥४।३।७२॥ इति वा सिच्लुकि, "यज-"॥२।१।८७॥ इति षे, "तृतीयस्तृ-"॥१।३।४९॥ इति डे, "तवर्ग-" ॥१।३।६०॥ इति ढ्वे, आड्ढ्वम्, आग्ड्ढ्वम्, आक्षि, आक्ष्वहि, क्ष्महि । आशि । "अनात-"॥४।१।६९॥ इति पूर्वस्यात्वे नेऽन्ते च; आनशे, आनशाते, आनशिरे, आनशिषे । अक्षीष्ट, अशिषीष्ट । अष्टा, अशिता । अक्ष्यते, अशिष्यते । "ऋस्मि-"॥४।४।४८॥ इति इटि, अशिशिषते । "अट्यर्ति-" ॥३।४।१०॥ इति यङि, अशाश्यते । आशयति, ते । आशिशत् । अश्नुवानः । अक्ष्यमाणः; आशिष्यमाणः । आनशानः । अष्टः २, वान् । अष्ट्वा, अशित्वा । अष्टा; अशिता । अष्टुम्, अशितुम् । अशनीयम् ॥ २१ ॥

इति तपाचार्यश्रीदेवसुन्दरसूरिशिष्यश्रीगुणरत्नसूरिविरचिते क्रियारत्नसमुच्चये स्वादिगणः ॥



अथ तुदादिगणः ।

दशानिटः ॥ तुदींत् व्यथने । “तुदादेः शः”॥३।४।८१॥ इति शे, तस्य ङित्त्वान्न गुणे; तुदति, तुदते । क्ये, तुद्यते । अतौत्सीत्, अतौत्ताम्, अतौत्सुः, अतौत्सीः, अतौत्तम्, अतौत्त, अतौत्सम्, अतौत्स्व, अतौत्स्म । “सिजाशिष-” ॥४।३।३५॥ इति कित्त्वे; अतुत्त, अतु ९ त्साताम्, त्सत, त्थाः, त्साथाम्, द्ध्वम्, द्ध्वम्, त्सि, त्स्वहि, त्स्महि । तुतोद, तुतुदतुः; तुतोदिथ; तुतुदिव । तुतुदे । तुद्यात् । तुत्सीष्ट । तोत्ता २ । तोत्स्यति, ते । “उपान्त्ये” ॥४।३।३४॥ इति किर्त्त्वे, तुतुत्सति । तोतुद्यते । तोतुदीति; तोतोत्ति । तोदयति । अतूतुदत् । तुदन् । “अवर्णादश्न-”॥२।१।११५॥ इति वाऽन्त्, तुदन्ती, तुदती स्त्री कुले वा । तुदमानः । तुद्यमानम् । तोत्स्य २ न्, मानः । तुतु२ द्वान्, दानः । तुन्नः, २ वान् । तुत्त्वा । तोत्ता । तोत्तुम् । तोत्तव्यम् ॥ १ ॥

भ्रस्जींत् पाके । शे, “ग्रहव्रश्च-”॥४।१।८४॥ इति य्वृति, “सस्य शषौ”॥१।३।६१॥ इति शे, “तृतीयस्तृ-”॥१।३।४९॥ इति शस्य जे, भृज्जति, ते । अशिति, “भृज्जो भर्ज्”॥४।४।६॥ इति वा भर्जादेशे, स्थानिवद्भावेन पूर्वेण स्वरेण सह रस्य य्वृति, भृज्यते । पक्षे भ्रस्जो य्वृति, भृज्ज्यते । एवमग्रेऽपि क्ङिति रूपद्वयस्य य्वृत् ज्ञेयम् । अभार्क्षीत्, अभार्ष्टाम्, अभार्क्षुः । अभ्राक्षीत्, अभ्राष्टाम्, अभ्राक्षुः । अभर्ष्ट, अभ्रष्ट, अभर्क्षाताम्, अभ्रक्षाताम्; अभर्ष्ठाः, अभ्रष्ठाः । सो वा लुकि “यज-”॥२।१।८७॥ इति षत्वे, अभर्ड्ढ्वम्, अभ्रड्ढ्वम् । पक्षे, “षढोः कः-” ॥२।१।६२॥ इति षः कत्वे, “नाम्यन्त-”॥२।३।१५॥ इति सः षत्वे, “तृतीय-”॥ ॥१।३।४९॥ इति डत्वे, को गत्वे च, अभर्ग्ड्ढ्वम्, अभ्रग्ड्ढ्वम् । अभर्जि, अभ्रज्जि । बभर्ज; संयोगाकित्त्वाभावान्न य्वृति, बभर्जतुः, बभर्जिथ, बभर्ष्ठ; बभार्जिम । बभर्जे । बभ्रज्ज, बभ्रज्जतुः; बभ्रज्जिथ, बभ्रष्ठ; बभ्रज्जिम । बभ्रज्जे । प्रागुक्त् य्वृति, भृज्यात्; भृज्ज्यात् । भर्क्षीष्ट; भ्रक्षीष्ट । भर्ष्टा; भ्रष्टा । भर्क्ष्यति, ते; भ्रक्ष्यति, ते । “इवृध-”॥४।४।४७॥ इति वेटि, बिभर्जिषति, ते; बिभर्क्षति,

ते; बिभ्रज्जिषति, ते; बिभ्रक्षति, ते। एवं रूपाणि ८। बरीभृज्ज्यते, बरीभृज्ज्य-ते। "भृज्ज-"॥४।४।६॥ इत्यत्र लुप्ततिव्निर्देशाद्यङ्लुपि भर्जादेशाभावे भ्रस्ज एव ऋवृति द्वित्वे च, बरी रि र् ३ भृज्जीति; अत्र अय्वृत्त्वेनदित्युक्तेर्यङ्लुप्यपि ऋवृत् सिद्धम्। बर्भृष्टि; अत्र परे गुणे विधेये "संयोगस्यादौ-"॥२।१।८८॥ इति सलोपस्यासत्त्वेनोपान्त्याभावान्न गुणः। बर्भृ १० ष्टः, ज्जति, ज्जीषि, क्षि, ष्ठः, ष्ठ, ज्जीमि, ज्जिम, ज्ज्वः, ज्ज्मः। क्ये, बर्भृज्ज्यते। हौ, बर्भृड्ढि ॥ ह्य० ॥ अबर्भृ १२ ज्जीत्, ड् ट्, ष्टाम्, ज्जुः, ज्जीः, ट् ड्, ष्टम्, ष्ट, ज्जम्, ज्ज्व, ज्ज्म। ॥ अद्य० ॥ अबर्भृज्जीदित्यादि। यङ्लुपि न ऋवृदित्यन्ये। बाभ्र ४ ज्जीति, ष्टि, ष्टः, ज्जति ॥ ह्य० ॥ अबाभ्रड् इत्यादि। भर्जयति, भ्रज्जयति। अबभर्जत्, अबभ्रज्जत्। भृज्जन्। भृज्जमानः। भक्ष्य २ न्, माणः; भ्रक्ष्य २ न्, माणः। बभृ-ज्वान्, बभृज्ज्वान्। बभृजानः, बभृज्जानः। भ्रष्टः २, वान्। भृष्ट्वा; एषु षत्वे कृते द्वयोः सदृशं रूपम। भर्ष्टा, भ्रष्टा। भर्ष्टुम्, भ्रष्टुम्। भर्ष्टव्यम्, भ्रष्टव्यम्। घ्यणि "क्तेऽनिट-"॥४।१।१११॥ इति गत्वे, भर्ग्यम्। "तृतीयस्तृ-" ॥१।३।४९॥ इति सस्य दत्वे, भ्रद्ग्यम् ॥ २ ॥

क्षिपींत् प्रेरणे। क्षिपति, ते। आ, वि, सम्, प्र, उप, परि, उद्, नि पूर्वोऽप्ये-वम्। फलवत्यपि "प्रत्यभ्यतेः-"॥३।३।१०२॥ परस्मैपदे; प्रतिक्षिपति; अभिक्षिपति; अतिक्षिपति। क्ये, क्षिप्यते। अक्षैप्सीत्, अक्षैप्ताम्, अक्षैप्सुः०; अक्षैप्स्म। अ-क्षिप्त, अक्षि ९ प्साताम्, प्सत, प्थाः, प्साथाम्, ब्ध्वम्, ब्द्ध्वम्, प्सि, प्स्वहि, प्स्महि। अक्षेपि। चिक्षेप, चिक्षिपतुः; चिक्षिपिम। चिक्षिपे। क्षिप्यात्। क्षि-प्सीष्ट। क्षेप्ता २। क्षेप्स्यति, ते। चिक्षिप्सति, ते। चेक्षिप्यते। चेक्षिपीति, चेक्षेप्ति। क्षेपयति। अचिक्षिपत्। क्षिप्तः, २ वान्। क्षिप्त्वा। प्रक्षिप्य। क्षेप्ता। क्षेप्तुम्। क्षेप्यम् ॥ ३ ॥

दिशींत् अतिसर्जने; त्यागे। दिशति, ते। आ, सम्, निर्, उप, अति, प्रति, प्र, समापूर्वोऽपि। क्ये, दिश्यते। सकि, आदिक्षत्, आदिक्षताम्०। आदि ९ क्षत, क्षाताम्, क्षन्त, क्षथाः, क्षाथाम्, क्षध्वम्, क्षि, क्षावहि, क्षामहि। अदेशि। दिदेश, दिदिशतुः; दिदेशिथ; दिदिशिम। दिदिशे। दिश्यात्। दिक्षीष्ट।

देष्टा २ । देक्ष्यति, ते । दिदिक्षति, ते । देदिश्यते । देदिशीति, देदेष्टि । देशयति । अदीदिशत् । दिशन् । दिशमानः । देक्ष्य २न्, माणः । दिदि २ क्षान्, शानः । दिष्टः, २ वान् । दिष्ट्वा । उपदिश्य । देष्टा । देष्टुम् । देष्टव्यम् ॥ ४ ॥

कृषींत् विलेखने । कृषति, ते; आकृषति, ते । कृष्यते । "स्पृश-"॥३।४।५४॥ इति वा सिचि; अकार्क्षीत् । "स्पृशादि-"॥४।४।११२॥ इति वा अः; अक्राक्षीत् । पक्षे सकि, अकृक्षत्, अकार्ष्टाम्, अक्राष्टाम्, अकृक्षाताम्, अकार्क्षुः, अक्राक्षुः; अकृक्षन् । "सिजाशिष-"॥४।३।३५॥ इति किस्त्वान्न अः, अकृष्ट । अकृक्षत; सिचि सकि च; अकृक्षाताम् । भाक । अकर्षि । शेषं कृषंचूवत्, नवरं कर्त्तर्यात्मनेपदमपि ॥ ५ ॥

मुच्लृंती मोक्षणे । शे "मुचादि-"॥४।४।९९॥ इति नेऽन्ते च, मुञ्चति; मुञ्चामः । मुञ्चते; मुञ्चामहे । मुच्यते । लृदित्त्वादङि; अमुचत्, अमुचताम् । अमुक्त, अमुक्षाताम् । अमोचि । मुमोच, मुमुचतुः; मुमोचिथ; मुमुचिम । मुमुचे । मुच्यात् । मुक्षीष्ट । मोक्ता २ । मोक्ष्यति, ते । "अव्याप्यस्य-"॥४।१।१९॥ इति वा मोकि, मोक्षति, ते । मुमुक्षति, ते । व्याप्ये तु, मुमुक्षति वत्सं चैत्रः । "एकधातौ-"॥३।४। ८६॥ इति ञिक्यात्मनेपदेषु प्राप्तेषु "भूषार्थ-"॥३।४।९३॥ इति ञिक्ययोर्निषेधे; मोक्षते, मुमुक्षते । अमोक्षिष्ट, अमुमुक्षिष्ट वा वत्सः स्वयमेव । मोमुच्यते । मोमुचीति, मोमोक्ति ॥ अद्य० ॥ लृदनुबन्धनिर्दिष्टत्वाद् यङ्लुपि न अङ्, अमोमोचीत् । एवमन्यत्रापि । मोचयति । अमूमुचत् । मुञ्चन् । मुञ्चमानः । मुच्यमानम् । मोक्ष्य २ न्, माणः । मुमुच्वान् । मुमुचानः । मुक्तः, २ वान् । मुक्त्वा । विमुच्य । मोक्ता । मोक्तुम् । मोक्तव्यम् ॥ ६ ॥

षिचींत् क्षरणे । "मुचादि-"॥४।४।९९॥ इति ने, सिञ्चति । सोपसर्गस्य "स्थासेनि-"॥२।३।४०॥ इति द्वित्वेऽपि अट्यपि षत्वे, अभिषिञ्चति । सिञ्चते; सिञ्चामहे । सिच्यते ॥ ह्य० ॥ असिञ्चत्; अभ्यषिञ्चत् ॥ अद्य० ॥ "ह्वालिप्सिच-"॥३।४।६२॥ इत्यङि, असिचत् । "वाऽऽत्मने"॥३।४।६३॥ असिचत, असिक्त; असिक्षाथाम् । असेचि । "नाम्यन्त-"॥२।३।१५॥ इति षत्वे; सिषेच; अभिषिषेच । सिषिचे; अभिषिषिचे । सिच्यात् । सिक्षीष्ट । सेक्ता २ ।

सेक्ष्यति, ते; अभिषेक्ष्यति, ते । "णिस्तोरेव-"॥२।३।३७॥ इति नियमात् षत्वाभावे, सिसिक्षति, ते; अभिषिषिक्षति, ते । अभ्यषिषिक्षत, त । "सिचो यङि" ॥२।३।६०॥ इति षत्वनिषेधे, सेसिच्यते; अभिसेसिच्यते । सेसिचीति, सेसेक्ति, सेसि २ क्तः, चति । सेचयति; अभिषेचयति । असीषिचत्; सोपसर्गाण्णौ, अभ्यषीषिचत् । ण्यन्तस्य पश्चादुपसर्गयोगे पूर्वस्य न षत्वम्; अभ्यसीषिचत । सिञ्चन् । सिञ्चमानः । सिच्यमानम् । सेक्ष्यन् । सेक्ष्यमाणः । सिक्तः, २ वान् । सिक्तिः । सिक्त्वा । अभिषिच्य । सेक्ता । सेक्तुम् । सेक्तव्यम् । ण्यानि, "क्तेऽनिटः-"॥४।१।१११॥ इति कत्वे; सेक्यम् ॥ ७॥

विद्लृंती लाभे । नेऽन्ते । विन्दति, ते । विद्यते । लृदित्त्वादङि, अविदत; अविदाम । अवित्त, अवित्साताम् । अवेदि । विवेद; विविदिम । विविदे । "वेत्तेः कित"॥३।४।५१॥ इति वाऽस्याप्यामिल्लन्ये । विदांचकार; विवेदेत्यादि । विद्यात् । वित्सीष्ट । वेत्ता, २ । वेत्स्यति, ते । विवित्सति, ते । वेविद्यते । वेविदीति, वेवेत्ति । वेदयति । अवीविदत् । विन्दन् । विन्दमानः । वेत्स्यन् । वेत्स्यमानः । विद्यमानम् । "गमहन-"॥४।४।८३॥ इति वेटि, विविदिवान्; विविद्वान् । विविदानः । "वित्तम्-"॥४।२।८२॥ इति निपातनात, वित्तं धनं प्रतीतं च । अन्यत्र तु "रदात्-"॥४।२।६९॥ इति नत्वे; विन्नः, २ वान् । क्ते, "निर्विण्णः" ॥२।३।८९॥ इति निपातनात्; निर्विण्णो विरक्तः । क्तवतौ तु न णः, निर्विन्नवान् । वित्त्वा । प्रविद्य । वेत्ता । वेत्तुम् । वेत्तव्यम् । वेद्यम् ॥ ८ ॥

लुप्लृंती छेदने । लुम्पति, ते; विलुम्पति, ते । लुप्यते । लृदित्त्वादङि, अलुपत । अलुप्त, अलुप्साताम् । अलोपि । लुलोप; लुलुपिम । लुलुपे । लुप्यात् । लुप्सीष्ट । लोप्ता २ । लोप्स्यति, ते । लुलुप्सति, ते । "गॄलुप्-" ॥३।४।१२॥ इति यङि; लोलुप्यते । लोलोप्ति, लोलुपीति । लोपयति । "भ्राजभास-"॥४।२।३६॥ इति वा ह्रस्वे, अलूलुपत्; अलुलोपत । लुम्पन् । लुम्पमानः । लुप्यमानम् । लोप्स्य २ न्, मानः । लुलुप्वान् । लुलुपानः । लुप्तः, २ वान् । लुप्तिः । लो ३ प्ता, प्तुम्, प्तव्यम् । लुप्त्वा । विलुप्य ॥ ९ ॥

लिपींत् उपदेहे; वृद्धौ । लिम्पति; आलिम्पति । लिम्पते । लिप्यते ।

"ह्वालिपू-"॥३।४।६२॥ इत्यङि; आलिपत्। "वाऽऽत्मने"॥३।४।६३॥ अलिपत, अलिपेताम्। अलिप्त, अलिप्साताम्। अलेपि। लिलेप। लिलिपे। लिप्यात्। लिप्सीष्ट। लेप्ता २। लेप्स्यति, ते। लिलिप्सति, ते। लेलिप्यते। लेलेप्ति, लेलिपीति। लेपयति। अलीलिपत्। लिम्पन्। लिम्पमानः। लिप्यमानम्। लेप्स्य २ न्, मानः। लिलिप्वान्। लिलिपानः। लिप्तः, २ वान्। लिप्त्वा। विलिप्य। लेप्ता। लेप्तुम्। लेप्तव्यम्। लेप्यम्॥ १०॥

कृतैत् छेदने। "मुचादि-"॥४।४।९९॥ इति ने; कृन्तति, कृन्ततः, कृतन्ति। कृत्यते। "कृतचृत-"॥४।४।५०॥ इत्यत्र सिचो वर्जनान्नित्यमिटि, अकर्त्तीत्, अकर्त्तिष्टाम्। अकर्त्ति, अकर्त्तिषाताम्। चकर्त्त; चकृतिम। चकृते। कृत्यात्। सादावशिति "कृतचृत-"॥४।४।५०॥ इति वेटि, कृत्सीष्ट, कर्त्तिषीष्ट। कर्त्तिता २। कर्त्स्यति, ते; कर्त्तिष्यति, ते। चिकृत्सति; चिकर्तिषति। चरीकृत्यते। चरीरि २ ३ कृतीति, चर्कर्त्ति। वेट्त्वेऽप्यैदित्त्वं यङ्लुबन्तादनेकस्वरादपि क्तयोरिडभावार्थम्। चरीकृत्तः, २ वान्। कर्त्तयति। अचीकृतत्; अचकर्त्तत्। कृन्तन्। कर्त्तिष्यन्; कर्त्स्यन्। चकृत्वान्। चकृतानम्। वेट्त्वान्नेटि; कृत्तः, २ वान्। कर्त्तित्वा। प्रकृत्य। कर्त्ति ३ ता, तुम्, तव्यम्॥ ११॥

इति मुचादिः।

मृंत् प्राणत्यागे। अनिट्। शिदद्यतन्याशीःषु, "म्रियतेरद्यतन्या-"॥३।३।४२॥ इति आत्मनेपदे, "रिः शक्य-"॥४।३।११०॥ इति रौ; "धातोरिवर्ण-"॥२।१।५०॥ इतीयि; म्रियते; अनुम्रियते भर्त्तारम्; म्रियेते, म्रियन्ते, म्रियसे, म्रियेथे, म्रियध्वे, म्रिये, म्रियावहे, म्रियामहे। क्ये, म्रियते। म्रियेत। म्रियताम्। अम्रियत॥ अद्य०॥ अमृत, अमृषाताम्। अमारि, अमारिषाताम्; अमृषाताम्। शिदादेरन्यत्र परस्मैपदे; ममार, मम्रतुः, मम्रुः, ममर्थ, मम्रथुः, मम्र, ममार, ममर, मम्रिव, मम्रिम। मम्रे। मृषीष्ट, २। मारिषीष्ट। मर्त्ता २। "हनृतः-"॥४।४।४९॥ इतीटि, मरिष्यति, ते। मारिष्यते। अमरिष्यत्। मुमूर्षति। मेम्रीयते। "म्रियतेः-"॥३।३।४२॥ इत्यत्र तिवृनिर्देशाद्यङ्लुपि परस्मैपदे;

मरी रि र् ३ मरीति, मर्मर्त्ति, मर्मृतः, मर्म्रति । कृग्वत् । मारयति । अमीमरत् । मारयांचकार । मिमारयिषति । म्रियमाणः । मरिष्य २ न्, माणम् । मम्रिवान् । मम्राणम् । मृतः, २ वान् । म २ र्त्तो, र्त्तुम् । मृत्वा । मृतिः । मर्त्तव्यम् ॥१२॥

कॄत् विक्षेपे । किरति; उत्किरति सूत्रधारः पुत्रिकाम् । किरामः, "अपस्किरः"॥३।३।३०॥ इत्यात्मनेपदे, "अपाच्चतुष्पाद्-"॥४।४।९५॥ इति स्सटि, अपस्किरते वृषभो हृष्टः । अपस्किरते कुक्कुटो भक्ष्यार्थी । अपस्किरते श्वा आश्रयार्थी । "एकधातौ-"॥३।४।८६॥ इति ञिक्यात्मनेपदेषु प्राप्तेषु "भूषार्थ-"॥३।४।९३॥ इति क्यञ्योः प्रतिषेधे; अवकिरते पांशुः स्वयमेव । क्ये, कीर्यते । अकारीत्, अकारिष्टाम्० । "इट्सिज-"॥४।४।३६॥ इति वेटि, "वॄतो नवा-"॥४।४।३५॥ इति वेटो दीर्घे, अनिट्सिचः "ऋवर्णात्"॥४।३।३६॥ इति कित्त्वे, अवाकीर्ष्ट, अवाकरिष्ट, अवाकरीष्ट वा पांशुः स्वयमेव । भाक । अकारि; ञिटि, अकारिषाताम्, अकीर्षाताम्, अकरीषाताम् । चकार, "स्कॄ-"॥४।३।८॥ इति गुणे, चकरतुः, चकरुः, चकरिथ । चकरे । कीर्यात् । कीर्षीष्ट, करिषीष्ट, कारिषीष्ट । कारिता २; करीता २ । ञिटि; कारिता । करिष्यति, ते; कारिष्यते । "ऋस्मि-"॥४।४।४८॥ इतीटि, चिकरिषति; चिकरीषति । चेकीर्यते । चाकर्त्ति । कारयति । अचीकरत् । विचिकीर्वान् । चिविकिराणम् । काने स्वरविधित्वाद् द्वित्वे कृते इर् । किति "ऋवर्णाश्रि"॥४।४।५७॥ इति नेट्, "ऋल्वादेः-"॥४।२।६८॥ इति ने, कीर्णः, २ वान् । कीर्त्वा । अवकीर्य । करि ३ ता, तुम्, तव्यम्; करी ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥ १३ ॥

गॄत् निगरणे; भोजने । गिरति; उद्गिरति । "नवा स्वरे"॥२।३।१०२॥ इति लत्वे; गिलति; उद्गिलति । प्रतिज्ञायां "समः-"॥३।३।६६॥ इत्यात्मने, सङ्गिरते । "अवात्"॥३।३।६७॥ अवगिरते । कर्मकर्त्तरि "भूषार्थ-"॥३।४।९३॥ इति किरादित्वात् क्यञ्योः प्रतिषेधे; निगिरते ग्रासः स्वयमेव । क्ये, गीर्यते । अगारीत्, अगारिष्टाम् । न्यगीर्ष्ट, न्यगरीष्ट वा ग्रासः स्वयमेव ॥ भाक ॥ अगारि, अगारिषाताम्; अगीर्षातामित्यादि । जगार; जगरिम । जगरे । गीर्यात् । गीर्षीष्ट, गरिषीष्ट, गारिषीष्ट । गारिता २; गरीता २। गारिता । गारिष्यति, ते; गरीष्य-

ति, ते। गारिष्यते। जिगरिषति, जिगरीषति; जिगलिषति, जिगलीषति । गार्हितं निगिरतीति वाक्ये "गॄलुप-"॥३।४।१२॥ इति यङि, अय्वृल्लेनादित्युक्तेर्यङ्लुप्यपि च "ग्रो यङि"॥२।३।१०१॥ इति लत्वे, निजेगिल्यते । निजागलीति, निजागल्ति । तॄवत् । निगारयति, निगालयति । न्यजीगरत्, न्यजीगलत् । गिरन् । गीर्यमाणम् । गारिष्य २ न्, माणम्; गरीष्य २ न्, माणम्। शेषं कॄत्वत्॥१४॥

लिखत् अक्षरविन्यासे । लिखति । अव, वि, आ, उद्, सम्, परिपूर्वोऽप्येवम्। लिख्यते। लिखेत्। लिखतु । अलिखत् । अले ३ खीत्, खिष्टाम्, खिषुः । अलेखि, अलेखिषाताम् । लिलेख; लिलिखिम। लिलिखे । लिख्यात् । लेखिषीष्ट । लेखिता २। लेखिष्यति; ते । लिलिखिषति; लिलेखिषति। अलिलिखिषत्; अलिलेखिषत् । लेलिख्यते। लेलिखीति, लेलेक्ति, लेलिक्तः, लेलिखति। लेखयति । क्ये, लेख्यते । अलीलिखत् । लिखन्। लिखती, लिखन्ती। लिख्यमानम् । लेखिष्य ४ न्, ती, न्ती, माणम् । लिलिख्वान् । लिलिखानम्। लिखि ३ तिः, तः, २ वान् । "वौ व्य-"॥४।३।२५॥ इति सन्क्त्वोर्वा कित्त्वे; लिखित्वा, लेखित्वा । विलिख्य । लेखि ३ ता, तुम्, तव्यम् । लेखनीयम् । लेख्यम् । लेखनम् । कुटादिरयमित्येके । लिखनीयम् । लिखनम् । लिखितव्यम् ॥ १५ ॥

ओव्रस्चौत् छेदने । "सस्य शषौ"॥१।३।६१॥ इति सस्य शे, "ग्रहव्रश्च-" ॥४।१।८४॥ इति य्वृति, वृश्चति । क्ये, वृश्च्यते । औदित्वाद्वेटि, अव्रश्चीत्, अव्रश्चिष्टाम् । अव्रश्चि, अवृश्चिषाताम् । पक्षे, अव्राक्षीत्, अव्राष्टाम् इत्यादि प्रच्छवत् । वव्रश्च । संयोगादकित्त्वे न य्वृत् । वव्रश्चतुः; वव्रश्चिथ । वव्रश्चे । वृश्च्यात् । व्रश्चिषीष्ट; व्रक्षीष्ट । व्रश्चिता, व्रष्टा। व्रश्चिष्यति, व्रक्ष्यति । विव्रश्चिषति, विव्रक्षति। वरीवृश्च्यते। वरि री र् ३ वृश्चीति। "संयोगस्यादौ-"॥२।१।८८॥ इति शस्य लुकि, "यज-"॥२।१।८७॥ इति चस्य च षत्वे, परे गुणे विधेये शलोपस्यासत्त्वाद् गुणाभावे; वरिवृ ३ ष्टि, ष्टः, श्चति । यङ्लुपि न य्वृदित्यन्ये । वाव्र ३ ष्टि, ष्टः, श्चति । व्रश्चयति । अवव्रश्चत् । वृश्चन् । व्रश्चिष्यन्; व्रक्ष्यन् । ववृश्च्वान् । ववृश्चानम् । वेट्त्वान्नेटि, "सूयत्य-"॥४।२।७०॥ इति नत्वे,

"क्तादेशोऽपि"॥२।१।६१॥ इति नस्यासिद्धत्वेन, सस्य लुकि चस्य कत्वे च; वृक्णः, २ वान् । षत्वे कर्तव्ये नत्वं सिद्धमेवेति धुडभावान्न "यज-"॥२।१।८७॥ इति षत्वं, "जृव्रश्च-"॥४।४।४१॥ इति इटि, "क्त्वा"॥४।३।२९॥ इत्यकित्त्वे न य्वृत्। व्रश्चित्वा । प्रव्रश्च्य । व्रष्टा, व्रश्चिता । व्र २ ष्टुम्, ष्टव्यम्; व्रश्चि २ तुम्, तव्यम् । व्रश्चनीयम् । व्रश्च्यम् । मूलवृट् ॥ १६ ॥

त्रयोऽनिटः॥ प्रछंत् ज्ञीप्सायाम्; ज्ञीप्सा जिज्ञासा । "स्वरेभ्यः"॥१।३।३०॥ इति छस्य द्वित्वे, "ग्रहव्रश्च-"॥४।१।८४॥ इति य्वृति, पृच्छति । कर्मण्यसति, "समो गम्-"॥३।३।८४॥ इत्यात्मनेपदे, संपृच्छते । आङ्पूर्वस्य, "नुप्रच्छः"॥३।३।५४॥ आपृच्छते गुरून् । क्ये, पृच्छ्यते; क्यस्य सानुनासिकत्वं नादृतमिति "अनुनासिके-"॥४।१।१०८॥ इति शो न भवति। "अनुनासिके चच्छ्वः-"४।१।१०८॥ इत्यत्र छस्य द्विःपाठात् द्वयोरपि शत्वे, "यज-"॥२।१।८७॥ इति षत्वे, "षढोः-" ॥२।१।६२॥ इति कत्वे च; अप्राक्षीत्, अप्राष्टाम्, अप्राक्षुः, अप्रा ६ क्षीः, ष्टम्, ष्ट, क्षम्, क्ष्व, क्ष्म । आप्रष्ट, आप्र ९ क्षाताम्, क्षत, ष्ठाः, क्षाथाम्, ड्ढ्वम्, ग्ड्ढ्वम्, क्षि, क्ष्वहि, क्ष्महि । अप्रच्छि, अप्रक्षाताम् । पप्रच्छ । संयोगात् कित्त्वाभावे न य्वृत्; पप्रच्छतुः, पप्रच्छुः, पप्रच्छिथ, पप्रष्ठ; पप्रच्छिम । आपप्रच्छे; सम्पप्रच्छिमहे। पृच्छ्यात । आप्रक्षीष्ट । प्रष्टा; आप्रष्टा । प्रक्ष्यति; आप्रक्ष्यते । "ऋस्मि-"॥४।४।४८॥ इतीटि, "रुदविद-"॥४।३।३२॥ इति सनः कित्त्वे, पिपृच्छिषति; सम्पिपृच्छिषते । परीपृच्छ्यते । "लुप्यय्वृल्लेनत्"॥७।४।११२॥ इत्यत्र य्वृद्वर्जनात् यङ्लुप्यपि य्वृति; परि री र् ३ पृच्छीति । य्वृति द्वित्वे "स्वरेभ्यः" ॥१।३।३०॥ इति छस्य द्वित्वे, "अनुनासिके च-"॥४।१।१०८॥ इति छशब्दस्यापि शत्वे, उपान्त्यगुणे, "यज-"॥२।१।८७॥ इति षत्वे, परिपर्ष्टि, परि २ पृष्टः, पृच्छति। न य्वृदित्यन्ये । पाप्र ३ ष्टि, ष्टः, च्छति। णौ, प्रच्छयति। पृच्छ्यते। अपप्रच्छत्। पृच्छन् । आपृच्छमानः। पृच्छ्यमानम् । प्रक्ष्यन्। सम्प्रक्ष्यमाणः । पपृच्छ्वान् । संपपृच्छानः । पृष्टः, २ वान्। पृष्टिः । पृष्ट्वा । आपृच्छ्य । प्र ३ ष्टा, ष्टुम, ष्टव्यम । प्रच्छनीयम् । प्रच्छ्यम्। प्रच्छनम् ॥ १७ ॥

सृजंत् विसर्गे । सृजति; उत्सृजति । एवं व्युद्; वि, समुपा, नि,

पूर्वोऽपि । सृज्यते । "अः सृजि-"॥४।४।१११॥ इति अति, अस्राक्षीत्, अस्राष्टाम्, अस्राक्षुः; अस्राक्ष्म । असर्जि, असृक्षाताम् । सिजाशिषोः कित्वान्न अत् । ससर्ज, ससृजतुः; "सृजिदृशि-"॥४।४।७८॥ इति वेटि, सस्रष्ठ, ससर्जिथ; ससृजिम । ससृजे । सृज्यात् । सृक्षीष्ट । स्रष्टा । स्रक्ष्यति । "सृजः श्राद्धे-" ॥३।४।८४॥ इति जिक्यात्मनेपदेषु; असर्जि, सृज्यते, स्रक्ष्यते वा मालां धार्मिकः । श्राद्धादन्यत्र, अस्राक्षीत्, सृजति; स्रक्ष्यति वा मालां मालिकः । कर्मकर्त्तरि तु; असर्जि, सृज्यते; स्रक्ष्यते वा माला स्वयमेव । सिसृक्षति । सरीसृज्यते । सृजती, सृजन्ती स्त्री कुले वा । शेषं सृजिंचूवत् ॥ १८ ॥

टुमस्जोंत् शुद्धौ; शुद्ध्या स्नानं ब्रुडनं च लक्ष्यते । "सस्य शषौ"॥१।३।६१॥ इति शे, "तृतीयस्तृ-"॥१।३।४९॥ इति शस्य जे, मज्जति; निमज्जति; उन्मज्जति । मज्ज्यते । "मस्जेः सः"॥४।४।११०॥ इति धुटि सस्य नत्वे, अमाङ्क्षीत्, अमाङ्क्ताम्, अमाङ् ७ क्षुः, क्षीः, क्तम्, क्त, क्षम्, क्ष्व, क्ष्म । अमज्जि । ममज्ज, ममज्जतुः, ममज्जुः, ममज्जिथ, ममङ्क्थ; ममज्जिम । ममज्जे । मज्ज्यात् । मङ्क्षीष्ट । मङ्क्ता २ । मङ्क्ष्यति, ते । मिमङ्क्षति । मामज्ज्यते । मामज्जीति, मामङ्क्ति; "नो व्यञ्जन-" ॥४।२।४५॥ इति न्लुकि, मामक्तः; मामज्जति । मज्जयति । अममज्जत् । मज्जन् । मज्ज्यमानम् । मङ्क्ष्यन् । ममज्ज्वान् । ममज्जानम् । "मस्जेः-" ॥४।४।११०॥ इति सो ने, ओदित्त्वात् "सूयत्य-"॥४।२।७०॥ इति नत्वे, "नो व्यञ्जन-"॥४।२।४५॥ इति न्लुकि, मग्नः, २ वान् । सो नत्वे "जनश-"॥४।३।२३॥ इति वा कित्त्वे; मक्त्वा, मङ्क्त्वा । म ३ ङ्क्ता, क्तुम्, क्तव्यम् । मङ्क्री । ध्याणि, "क्तेऽनिटः-"॥४।१।१११॥ इति जो गे, "तृतीयस्तृ-"॥१।३।४९॥ इति सो दे, मद्ग्यः ॥ १९ ॥

उद्झत उत्सर्गे । दोपान्त्यः । "तवर्गस्य-"॥१।३।६०॥ इति दो जे; उज्झति । क्ये, उज्झ्यते । औज्झीत्; औज्झिष्टाम्, औज्झिषुः । औज्झि, औज्झिषाताम् । "गुरुनाम्य-"॥३।४।४८॥ इत्यामि; उज्झाञ्चकार; उज्झाञ्चकृम । उज्झाञ्चक्रे । उज्झ्यात् । उज्झिषीष्ट । उज्झिता । उज्झिष्यति । उज्जिझिषति । उज्झयति । "न बदनम्-"॥४।१।५॥ इति द्निषेधात् झेर्द्वित्वे, औज्झिझत् । उज्झन् । उज्झती,

उज्झन्ती स्त्री कुले वा । उज्झिष्यन् । उज्झाञ्चकृवान् । उज्झाञ्चक्राणम् । उज्झि ५ तः, २ वान्, ता, तुम्, तव्यम् । उज्झित्वा । प्रोज्झ्य । उज्झनीयम् ॥२०॥

घुण, घूर्णत् भ्रमणे । घुणति । अघोणीत् । जुघोण । घोणिता । घुणितः । ॥ घूर्ण ॥ घूर्णति । घूर्ण्यते । अघूर्णीत् । जुघूर्ण । घूर्णिता । घूर्णन् । घूर्णती, घूर्णन्ती स्त्री कुले वा । घूर्णितः ॥ २१ ॥ २२ ॥

णुदंत् प्रेरणे । अनिट् । नुदति; णपाठाद् "अदुरुप-"॥२।३।७७॥ इति णत्वे, प्रणुदति । नुद्यते । अनौत्सीत् । अनोदि, अनुत्साताम् । नुनोद; नुनुदिम । नुनुदे । नुद्यात् । नुत्सीष्ट । नोत्ता । नोत्स्यति । नुनुत्सति । नोनुद्यते । नोदयति; विनोदयति । अनूनुदत् । "ऋह्री-"॥४।२।७६॥ इति वा नत्वे, नुन्नः, २ वान्; नुत्तः, २ वान् । नुत्त्वा । प्रणुद्य । नोत्ता । शेषं तुदींत्वत् । ईदिदयमित्येके । नुदति, नुदते । अनुत्त । नुनुदे । नोत्स्यति, ते ॥ २३ ॥

विधत् विधाने । विधति । विध्यते । अवेधीत् । अवेधि । विवेध । विविधे । वेधिष्यति । विविधिषति, विवेधिषति । विधितः, २ वान् । विधित्वा, वेधित्वा । वेधिता ॥ २४ ॥

छुपंत् स्पर्शे । छुपति । छुप्यते । "व्यञ्जनानाम्-"॥४।३।४५॥ इति वृद्धौ, अच्छौप्सीत्, अच्छौप्ताम्, अच्छौ ७ प्सुः, प्सीः, प्तम्, प्त, प्सम्; प्स्व, प्स्म । अच्छोपि, अच्छुप्साताम्; "सिजाशिष-"॥४।३।३५॥ इति कित्त्वम् । चुच्छोप । चुच्छुपे । छुप्यात् । छुप्सीष्ट । छोप्ता । छोप्स्यति । चुच्छुप्सति । चोच्छुप्यते । छोपयति । अचुच्छुपत् । छुपन् । छुप्तः । छोप्ता । छुप्त्वा ॥ २५ ॥

गुफ, गुंफत् ग्रन्थने । "मुचादि-"॥४।४।९९॥ इति ने, गुम्फति । गुफ्यते । अगोफीत् । अगोफि । जुगोफ, जुगुफतुः । जुगुफे । गुफ्यात् । गोफिषीष्ट । गोफिता । गोफिष्यति । गुफितः । "ऋत्तृष-"॥४।३।२४॥ इत्यत्र न्युपान्त्यव्यावृत्तिबलाद्वा न कित्त्वे; किन्तु नित्यं "क्त्वा"॥४।३।२९॥ इति कित्त्वे, गोफि ३ ता, तुम्, त्वा ॥ गुंफ ॥ "नो व्यञ्ज-"॥४।२।४५॥ इति नलुकि; गुफति । गुफ्यते । अगुम्फीत् । अगुम्फि । जुगुम्फ, जुगुम्फतुः; जुगुम्फिम; अत्र संयोगान्न कित्त्वम् । जुगुम्फे । गुफ्यात् । गुम्फिषीष्ट । गुम्फिता । गुम्फिष्यति । जुगुम्फिषति ।

जोगुफ्यते । गुम्फयति । अजुगुम्फत् । गुफितः, २ वान् । "ऋत्तृष-"॥४।३।२४॥ इति वा कित्वे, गुफित्वा; गुम्फित्वा । गुम्फि ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥२६॥२७॥

शुभ, शुंभत् शोभार्थे। "मुचादि-"॥४।४।९९॥ इति ने, शुम्भति। शुभ्यते। अशोभीत् । अशोभि । शुशोभ; शुशुभिम । शुशुभे । शुभ्यात् । शोभिषीष्ट । शोभिता । शोभिष्यति । शुशुभिषति, शुशोभिषति । "न गृणा-"॥३।४।१३॥ इत्यत्र शोभतेर्वर्जनादस्य यङि; शोशुभ्यते । शोभयति । अशूशुभत् । शोभितः, २ वान् । शुभित्वा; शोभित्वा । शोभि ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥ शुंभ ॥ "नो व्य-"॥४।२।४५॥ इति नलुकि; शुभति। शुभ्यते। अशुम्भीत् । अशुम्भि। शुशुम्भ; शुशुम्भिम । शुशुभे। शुभ्यात् । शुम्भिष्यति । शुम्भितः । शुम्भित्वा। शुम्भि ३ ता, तुम्, तव्यम् । भ्वादौ शुंभभाषणे च; चाद्धिंसायाम् । तालव्यादिः । शुम्भति; निशुम्भति। शुभ्यते । शुशुम्भ इत्यादि ॥ २८ ॥ २९ ॥

दृभैत् ग्रन्थे। दृभति, संदृभति। दृभ्यते। दृभेत् । दृभतु। अदृभत्। अदर्भीत्, अदर्भिष्टाम्। अदर्भि । ददर्भ, ददृभतुः; ददृभिम। ददृभे । दृभ्यात्। दर्भिषीष्ट । दर्भिता । दर्भिष्यति । दिदर्भिषति । दरीदृभ्यते । दर्भयति । अदीदृभत्; अददर्भत् । ऐदित्त्वान्नेट्; दृब्धः, २ वान् । "क्त्वा"॥४।३।२९॥ इत्यकित्त्वे गुणे, दर्भि ४ त्वा, ता, तुम्, तव्यम् ॥ ३० ॥

स्फलत् स्फुरणे । चलन इत्येके। स्फलति; आस्फलति । स्फल्यते। आस्फालीत्, आस्फालिष्टाम्। आस्फालि, आस्फालिषाताम् । पस्फाल; पस्फलिम । पस्फले । स्फल्यात् । स्फलि ३ षीष्ट, ता, ष्यति । पिस्फलिषति। वाऽनुनासिकान्तत्वे; पंस्फल्यते; पास्फल्यते । आस्फालयति । आपिस्फलत् । आस्फलितः । आस्फालनम् । स्फलि ६ त्वा, तुम्, ता, तव्यम्, तः, २ वान् ॥ ३१ ॥

मिलत् श्लेषणे । मिलति । मिल्यते । अमेलीत्, अमेलिष्टाम् । अमेलि । मिमेल; मिमिलिम। मिमिले । मिल्यात्। मेलि ३ षीष्ट, ता, ष्यति । मिमेलिषति, मिमिलिषति । मेमिल्यते । मेलयति । अमीमिलत् । मिलितः । मिलित्वा, मेलि ४ त्वा, ता, तुम्, तव्यम् ॥ ३२ ॥

अथ त्रयोऽनिटः॥ स्पृशंत् संस्पर्शे । स्पृशति । स्पृश्यते । "स्पृशमृश-"

॥३।४।५४॥ इति वा सिचि वृद्धौ, अस्पार्क्षीत्, अस्पार्ष्टाम्, अस्पार्क्षुः । "स्पृशादि-"॥४।४।११२॥ इति वा अः, अस्प्राक्षीत्, अस्प्राष्टाम्, अस्प्राक्षुः । पक्षे साकि, अस्पृक्ष ४ त, ताम्, न्, ः; अस्पृक्षाम । अस्पर्शि । सिचि "सिजाशिष-"॥४।३।३५॥ इति सिजाशिषोः कित्त्वान्न अः; अस्पृ ९ क्षाताम्, क्षत, ष्ठाः, क्षाथाम्, ड्ढ्वम्, ग्ड्ढ्वम्, क्षि, क्वहि, क्ष्महि । साकि, "स्वरेऽतः"॥४।३।७५॥ इत्यल्लुकि, अस्पृ ८ क्षाताम्, क्षन्त, क्षथाः, क्षाथाम्, क्षध्वम्, क्षि, क्षावहि, क्षामहि । पस्पर्श, पस्पृशतुः; पस्पर्शिथ; पस्पृशिम । पस्पृशे । स्पृश्यात् । स्पृक्षीष्ट । स्पर्ष्टा २; स्प्रष्टा २ । स्पर्क्ष्यति; स्प्रक्ष्यति । पिस्पृक्षति । परीस्पृश्यते । परि, र्, री ३ स्पृशीति, पर्स्पर्ष्टि, पर्स्प्रष्टि, पर्स्पृष्टः, पर्स्प्रष्टः, पर्स्पृशति । शेषं दृश्वत् । स्पर्शयति । "ऋद्वर्णस्य"॥४।२।३७॥ इति वा ऋः; अपिस्पृशत्, अपस्पर्शत् । स्पृशन् । स्पृशती, स्पृशन्ती । स्पर्क्ष्यन्, स्प्रक्ष्यन् । पस्पृश्वान् । पस्पृशानम् । स्पृष्टः, २ वान् । स्पृष्टिः । स्पृष्ट्वा । संस्पृश्य । स्पर्ष्टा; स्प्रष्टा । स्पर्ष्टुम्, स्प्रष्टुम् । स्पर्ष्टव्यम्, स्प्रष्टव्यम् । स्पर्शनीयम् । स्पर्श्यम् । क्विपि "ऋत्विग्-"॥२।१।६९॥ इति स्पृक् ॥ ३३ ॥

विशंत् प्रवेशने । विशति; प्रविशति । एवं आङ्, सम्, उप, समा पूर्वोऽपि । "निविशः"॥३।३।२४॥ इत्यात्मने, निविशते । "वाऽभिनिविशः" ॥२।२।२२॥ इत्याधारस्य कर्मत्वे, ग्राममभिनिविशते । क्ये, विश्यते । साकि, अविक्षत, अवि ८ क्षताम्, क्षन्, क्षः, क्षतम्, क्षत, क्षम्, क्षाव, क्षाम । अवेशि; "स्वरेऽतः"॥४।३।७५॥ इति अल्लुकि, अवि ८ क्षाताम्, क्षन्त, क्षथाः, क्षाथाम्, क्षध्वम्, क्षि, क्षावहि, क्षामहि । विवेश, विविशतुः; विविशिम । विविशे । विश्यात् । विक्षीष्ट । वेष्टा २ । वेक्ष्यति, ते । विविक्षति । निविविक्षते । वेविश्यते । अवेविशिष्ट । वेविशांचक्रे । वेविशिषीष्ट । वेविशिष्यते । लुपि, वेवेष्टि, वेविश्शीति, ष्टः, शति । प्रकृतिग्रहणाद्यङ्लुप्यपि आत्मनेपदे, निवेविष्टे ॥ ह्य० ॥ अवेवेट्, अवेवि ४ शीत्, ष्टाम्, शुः, शीः; अवेवेट् ॥ अद्य० ॥ अवेवे २ शीत्, शिष्टाम् । वेविशांचकार । वेवेशिष्यति । प्रवेशयति । क्ये, प्रवेश्यते । प्रावीविशत् । विशन् । विशती, विशन्ती । वेक्ष्यन् । निवेक्ष्यमाणः । "गमहन-"

॥४।४।८३॥ इति वेटि; विविशिवान्, विविश्वान् । विविशानम् । प्रविष्टः, २ वान् । विष्ट्वा । प्रविश्य । प्रवे ३ ष्टा, ष्टुम्, ष्टव्यम् ॥ ३४ ॥

मृशंत् आमर्शने; स्पर्शे । मृशति; विमृशति; परामृशति; प्रत्यवमृशति; आमृशति । क्ये, मृश्यते । अमार्क्षीत्, अम्राक्षीत्; अमृक्षत् । अमर्शि, अमृक्षाताम् । ममर्श; ममृशिम । ममृशे । मृश्यात् । मृक्षीष्ट । मर्ष्टा; म्रष्टा । मर्क्ष्यति, म्रक्ष्यति । मिमृक्षति । मरीमृश्यते । मरी, रि, र् ३ मृशीति, मर्मर्ष्टि, मर्म्रष्टि, मर्म्रष्टः, मर्मृशति । मर्शयति । अमीमृशत्, अममर्शत् । मिमर्शयिषति । मृशन् । म्रक्ष्यन्, मर्क्ष्यन् । मृष्टः, २ वान् । मृष्टिः । मृष्ट्वा । विमृश्य । मर्ष्टा, म्रष्टा । मृश्यम् । शेषं स्पृशंत्वत् ॥ ३५ ॥

इषत् इच्छायाम् । "गमिषद्-"॥४।२।१०६॥ इति छे, इच्छति; प्रतीच्छति; अन्विच्छति; व्यतीच्छते । इष्यते । इच्छेत् । इच्छतु । ऐच्छत् । ऐष्यत । ऐषीत्, ऐषिष्टाम्, ऐषिषुः । ऐषि, ऐषिषाताम् । इयेष, ईषतुः, ईषुः, इयेषिथ; ईषिम । ईषे । इष्यात् । ईषिषीष्ट । तादौ "सहलुभ-"॥४।४।४६॥ इति वेटि, एष्टा, एषिता । एषिष्यति । ऐषिष्यत् । एषिषिषति । एषयति । ऐषिषत् । इच्छती, इच्छन्ती । एषिष्यन् । इष्यमाणम् । ईषिवान् । ईषाणम् । वेट्त्वान्नेट्; इष्टः, २ वान् । इष्टिः । इष्ट्वा । "क्त्वा"॥४।३।२९॥ इत्यकित्त्वाद्गुणे; एषित्वा । प्रेष्य । ए ३ ष्टा, ष्टुम्, ष्टव्यम् । एषि ३ ता, तुम्, तव्यम् । "ऋवर्ण-"॥५।१।१७॥ इति घ्यणि, एष्यः । "प्रस्यैष-"॥१।२।१४॥ इत्यैत्वे, प्रैष्यः ॥ ३६ ॥

मिषत् स्पर्द्धायाम् । मिषति; उन्मिषति; निमिषति । अमेषीत् । मिमेष । मेषिता । उन्मिमिषिषति, उन्मिमेषिषति । उन्मिषितम् ॥ ३७ ॥

अथ कुटादिः ।

कुटत् कौटिल्ये । कुटति; सङ्कुटति । कुट्यते । "कुटादेः-"॥४।३।१७॥ इति ङित्त्वाद् गुणाभावे; अकुटीत्, अकुटिष्टाम्, अकुटिषुः, ञ्णिति तु, ङित्त्वाभावाद्गुणे; अकोटि, अकुटिषाताम् । चुकोट, चुकुटतुः, चुकु ४ टुः, टिथ, टथुः, ट, णवो वा णित्त्वाद् कुटादीनां गुणविभाषा; चुकोट, चुकुट, चुकुटि २ व, म ।

चुकुटे। कुट्यात्। कुटिषीष्ट। कुटिता २। कुटिष्यति। "वौ व्यञ्जन-"॥४।३।२५॥ इति वा कित्त्वेऽपि ङित्त्वाद्गुणाभावे, चुकुटिषति; प्रत्यासत्तेर्न्यायात् यत्कार्यं कुटादेर्ङिद्द्वारा प्राप्नोति तस्मिन्नेव कार्ये ङित्त्वं, न आत्मनेपदादौ। तेन सन्नन्तस्यास्य ङित्त्वादात्मनेपदं न भवति। चोकुट्यते। चोकुटीति, "कुटादेः-"॥४।३।१७॥ इति गणनिर्देशाद्गुणे, चोकोट्टि। उत्कोटयति। अचूकुटत्। कुटन्। कुटिष्यन्। कुट्यमानम्। चुकुट्वान्। चुकुटानम्। कुटितः, २ वान्। कुट्टिः। कुटिला। प्रकुट्य। कुटि ३ ता, तुम्, तव्यम्॥ ३८॥

णूत् स्तवने। नुवति। नूयते। णपाठात् "अदुरुप-"॥२।३।७७॥ इति णत्वे, प्रणुवति। प्रणूयते। "कुटादेः-"॥४।३।१७॥ इति ङित्त्वात् "सिचि परस्मै-"॥४।३।४४॥ इति वृद्ध्यभावे, अनुवीत्, अनुवि २ ष्टाम्, षुः। अनावि, अनुविषाताम्, अनाविषाताम्। नुनाव, नुनु ५ वतुः, वुः, विथ, वथुः, व। "णिद्वान्त्यो णव्" ॥४।३।५८॥ इति वा णित्त्वाद्वा न वृद्धिः; नुनाव, नुनुव, नुनु २ विव, विम। नुनुवे। नूयात्। नुविषीष्ट; नाविषीष्ट। नुविता २; नाविता। नुविष्यति, ते; नाविष्यते। नुनूषति। "ग्रहगुहश्च-"॥४।४।५९॥ इति नेट्, नोनूयते। नोनवीति, नोनोति। नावयति। अनूनवत्। नुवन्। नुविष्यन्। नुनूवान्। नुनुवानम्। किति; "उवर्णात्"॥४।४।५८॥ इतीडभावे, नूतः, २ वान्; प्रणूतः, २ वान्। नूत्वा। अन्ये तु ङित्त्वेन कित्त्वस्य बाधनादिट्निषेधं नेच्छन्ति। नुवितः, प्रणुवितः। नुवित्वा। प्रणूय। नुवि ३ ता, तुम्, तव्यम्। नुवनीयम्। नूयम्। नाव्यम्॥ ३९॥

धूत् विधूनने। धुवति; निधुवति। धूयते। अधुवीत्। अधावि। दुधाव; दुधुविम। दुधुवे। धूयात्। धुवि ३ षीष्ट, ता, ष्यति। ञिटि, धावि ३ षीष्ट, ता, ष्यते। दुधूषति। दोधूयते। धावयति। अदूधुवत्। धुवन्। धुविष्यन्। धूतः, २ वान्। धूत्वा। मते नेटि, धुवितः। धुवित्वा। विधूय। धुवि ३ ता, तुम्, तव्यम्। शेषं नूतवत्॥ ४०॥

कुचत् सङ्कोचने। कुचति; सङ्कुचति। कुच्यते। अकुचीत्। अकोचि; अकुचिषाताम्। चुकोच; अहं चुकुच, चुकोच, चुकुचिम। चुकुचे। कुच्यात्। कुचि ३ षीष्ट, ता, ष्यति। चुकुचिषति। चोकुच्यते। चोकुचीति, चोकोक्ति।

सङ्कोचयति । अचूकुचत् । कुचन् । कुचती, कुचन्ती । कुचिष्यन् । चुकुच्वान् । कुचि ६ ता, तुम्, त्वा; तः २ वान्; तव्यम् । कुचनीयम् । सङ्कुच्यम् ॥४१॥

घुटत् प्रतीघाते । घुटति; व्याघुटति; निघुटति । लज्जायाम्, व्याघुटीत् । ञिणति तु ङित्त्वाभावाद्गुणे; अघोटि । जुघोट; जुघुटतुः । कुटादित्वाद्गुणाभावे, घुटिता । घुटितुम् । घुटितः । शेषं कुटतवत् ॥ ४२ ॥

छुट, त्रुटत् छेदने । छुटति; विच्छुटति । छुट्यते । अच्छुटीत् । अच्छोटि, अच्छुटिषाताम् । चुच्छोट; चुच्छुटिम । चुच्छुटे । छुट्यात् । छुटि ३ षीष्ट, ता, ष्यति । चुच्छुटिषति । चोच्छुट्यते । छोटयति । अचुच्छुटत् । छुटि ६ ता, तुम्, त्वा, तः, २ वान्, तव्यम् । विच्छुट्यम् ॥ त्रुट ॥ "भ्रास-म्लास-"॥३।४।७३॥ इति वा श्ये, त्रुट्यति, त्रुटति । त्रुट्यते । अत्रुटीत्, अत्रुटिष्टाम् । अत्रोटि, अत्रुटिषाताम् । तुत्रोट, तुत्रुटिम । तुत्रुटे । त्रुट्यात् । त्रुटि ३ ३ षीष्ट, ता, ष्यति । तुत्रुटिषति । तोत्रुट्यते । तोत्रुटीति, तोत्रोट्टि, तोत्रु २ ट्टः, टति । त्रोटयति । अतुत्रुटत् । त्रुटन् । त्रुटती; त्रुटन्ती । त्रुटिष्यन् । तुत्रुट्वान् । तुत्रुटानम् । त्रुटितः, २ वान् । त्रुटित्वा । प्रत्रुट्य । त्रुटि ३ ता, तुम्, तव्यम् । त्रुटनीयम् । त्रोट्यम् । साधनं कुटतवत् ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

मुटत् आक्षेपप्रमर्दनयोः । मुटति । मुट्यते । अमुटीत् । अमोटि । मुमोट । मुटिष्यति । मोटयति । अमूमुटत् । मुटि ४ तः, ता, तुम्, त्वा । मुट प्रमर्दने । मोटति । मुटण् संचूर्णने । मोटयति ॥ ४५ ॥

स्फुटत् विकसने । स्फुटति । अस्फुटीत् । पुस्फोट । स्फुटिष्यति । पुस्फुटिषति । पोस्फुट्यते । स्फोटयति । अपुस्फुटत् । स्फुटि ४ ता, तः, तुम्, त्वा । स्फुटि विकसने । स्फोटते ॥ ४६ ॥

लुठत् संश्लेषणे । लुठति । लुठ्यते । अलु ३ ठीत्, ठिष्टाम्, ठिषुः । अलोठि, अलुठिषाताम् । लुलोठ, लुलुठतुः । लुलुठे । लुठ्यात् । लुठि ३ षीष्ट, ता, ष्यति । लुलुठिषति । लोलुठ्यते । लोलुठीति, लोलोट्टि । लोठयति । अलूलुठत् । लुठन् । लुठती, लुठन्ती । लुठिष्यन् । लुलुठ्वान् । लुलुठानम् । लुठि ५ तः, ता, तुम्, त्वा, तव्यम् । विलुठ्य ॥ ४७ ॥

कृडत् घसने; भक्षणे । कृडति । अकृडीत् । अकर्डि । चकर्ड । चकृडे । कृडिष्यति । चिकृडिषति । कर्डयति । अचीकृडत्, अचकर्डत् । कृडि ६ ता, तुम्, त्वा, तः, २ वान्, तव्यम् ॥ ४८ ॥

गुडत् रक्षायाम् । गुडति हस्तिनम् । अगुडीत् । अगोडि । जुगोड । गुडिता । जुडत् बन्धने । जुडति, अजुडीत् । अजोडि । जुजोड; जुजुडे । जोडयति । जुडि ४ ता, तः, तुम्, त्वा । तुडत् तोडने; भेदे । तुडति । अतुडीत् । अतोडि । तुतोड । तोडयति । तुडि ४ ता, तुम्, त्वा, तः । गुडादीनां शेषं लुठतवत् ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥

स्फुरत् स्फुरणे । स्फुरति । परि, प्र, सम्, पूर्वोऽपि । "निर्नेः-"॥२।३।५३॥ इति वा षत्वे, निःष्फुरति, निःस्फुरति । "वेः"॥२।३।५४॥ विष्फुरति, विस्फुरति । स्फूर्यते । अस्फुरीत्, अस्फुरिष्टाम्० । अस्फोरि, अस्फुरिषाताम् । पुस्फोर, पुस्फुरतुः; पुस्फुरिम । पुस्फुरे । स्फूर्यात् । स्फुरि ३ षीष्ट, ता, ष्यति । पुस्फुरिषति । पोस्फूर्यते । पोस्फुरीति, पोस्फोर्त्ति । "चिस्फुरोर्नवा"॥४।२।१२॥ इति वा आत्वे; स्फारयति, स्फोरयति । अपिस्फुरत्; अपुस्फुरत् । णौ यत्कृतमिति न्यायात् पूर्वस्य उः । पुस्फारयिषति; पुस्फोरयिषति । स्फुरन् । स्फुर २ ती, न्ती । स्फुरिष्यन् । पुस्फूर्वान् । स्फुरि ५ ता, तुम्, तव्यम्, तः, त्वा । विस्फूर्य । स्फुरणीयम् । स्फूर्त्तिः ॥५२॥

इति परस्मैपदिनः ।

अथ कूङ् वर्जास्त्रयोऽनिटः ॥ कुंङ्, कूङ्त् शब्दे । कुवते । कूयते । ङित्त्वान्न गुणे, "धुट्-"॥४।३।७०॥ इति सिच्लुकि, अकुत । अकावि । चुकुवे । कुता । कुष्यते । चोकूयते । कु ५ ता, तुम्, त्वा, तः, तव्यम् ॥ कूङ् ॥ कुवते । कूयते । अकुविष्ट । अकावि । चुकुवे । कुविता । किति "उवर्णात्"॥४।४।५८॥ इति नेटि, कूतः, २ वान् । कुवितुम् । कूत्वा ॥ ५३ ॥ ५४ ॥

इति कुटादिः ।

पृंङ्त् व्यायामे, उद्योगे । "रिः शक्य-"॥४।३।११०॥ इति रौ, इयि च; व्याप्रियते । क्ये, व्याप्रियते । व्यापृत, व्यापृषाताम्, व्यापृषत । व्यापारि; व्यापृषाताम्; व्या-

पारिषाताम् । व्यापप्रे; व्यापप्रिमहे । व्यापृषीष्ट २; व्यापारिषीष्ट । व्यापर्त्ता २; व्यापारिता । "हनृतः-"॥४।४।४९॥ इतीटि, व्यापरिष्यते २। व्यापारिष्यते । पुपूर्षते । पेप्रीयते । पारि, री, र् ३ परीति, पर्पर्त्ति, परिपृतः, परिप्रति । व्यापारयति । व्यापीपरत् । व्याप्रियमाणः । परिष्यमाणः । पप्राणः । व्यापृतः, २ वान् । व्यापृतिः । व्यापृत्य । पृत्वा । व्याप ३ र्त्ता, र्तुम्, र्तव्यम् । व्यापरणीयम् । व्यापार्यम् ॥५५॥

दृङ्त् आदरे । आद्रियते । क्ये, आद्रियते । आदृत, आदृषाताम्, आदृषत, आदृष्ठाः । आदारि, आदारिषाताम्, आदृषाताम् । दद्रे, दद्राते, दद्रिरे, दद्रिषे । आदृषीष्ट, आदारिषीष्ट । आदर्त्ता, आदारिता । आदरिष्यते; आदारिष्यते । "ऋस्मि-"॥४।४।४८॥ इतीटि, दिदरिषते । देद्रीयते । दरि, री, र् ३ दरीति, दर्दर्त्ति, दर्दृतः, दर्द्रति । आदारयति । आदीदरत् । आद्रियमाणः । आद्रियमाणम् । आदरिष्यमाणः । आदद्राणः । आदृतः, २ वान् । दृतिः । दृत्वा । आदृत्य । आद ३ र्ता, र्तुम्, र्तव्यम् । आदरणीयम् । क्यपि, आदृत्यम् ॥५६॥

ओविजैति भयचलनयोः । उद्विजते । उद्विज्यते । "विजेरिट्"॥४।३।१८॥ इतीटो ङित्त्वान्न गुणः। उदविजि ३ ष्ट, षाताम्, षत । उदवेजि । उद्विविजे; उद्विविजिमहे । उद्विजि ३ षीष्ट, ता, ष्यते । विविजिषते । उद्वेविज्यते । उद्वेविजीति, उद्वेवेक्ति । उद्वेजयति । उद्वेज्यते । उदवीविजत् । क्ते, उद्वेजितः । उद्विजमानः । उद्विज्यमानम् । उद्विजिष्यमाणम् । ऐदित्त्वात् क्तयोर्नेटि "सूयत्य-"॥४।२।७०॥ इति नत्वे, उद्विग्नः, २ वान् । उद्विजि ३ ता, तुम्, तव्यम् । उद्विज्य ॥५७॥

ओलस्जैति व्रीडे । "सस्य शषौ"॥१।३।६१॥ इति शे, "तृतीय"॥१।३।४९॥ इति जे, लज्जते । लज्ज्यते । अलज्जिष्ट, अलज्जिषाताम्; अलज्जिध्वम्, ड्ढ्वम्, अलज्जिषि । अलज्जि । ललज्जे; ललज्जिमहे । लज्जि ३ षीष्ट, ता, ष्यते । लज्जमानः । लज्ज्यमानम् । लज्जिष्यमाणः । ललज्जानः । ऐदित्वात् क्तयोर्नेटि, ओदित्वात् "सूयत्य-"॥४।२।७०॥ इति नत्वे, "संयोगस्यादौ-"॥२।१।८८॥ इति सूलुकि, लग्नः, २ वान् । लज्जि ४ ता, त्वा, तुम्, तव्यम् ॥ ५८ ॥

ष्वंजित् सङ्गे । "स्वञ्जश्च"॥२।३।४५॥ इति द्वित्वेऽपि अट्यपि षत्वे "नो व्यञ्जनस्य-"॥४।२।४५॥ इति नलुकि, परिष्वजते; अभिष्वजते । परिष्वज्यते ।

अभ्यष्वजत। परि, नि, विपूर्वस्य तु, "स्तुस्वञ्जश्चाटि-"॥२।३।४९॥ इति वा षत्वे, पर्यष्वजत, पर्यस्वजत ॥ अद्य० ॥ अनुस्वारेत्वान्नेट्; परं नञा निर्दिष्टस्यानित्यत्वादिटि; अस्वञ्जि ५ ष्ट; षाताम्; ध्वम्, इ्ढ्वम्, षि। अस्वञ्जि। परोक्षायां त्वादेरेव षत्वे, "स्वञ्जेर्नवा"॥४।३।२२॥ इति परोक्षाया वा कित्त्वे, परिषस्वजे; परिषस्वञ्जे; अभिषस्वजे, अभिषस्वञ्जे; परिषस्वजिमहे; परिषस्वञ्जिमहे। स्वज्यात्। स्वङ्क्षीष्ट। स्वङ्क्ता। स्वङ्क्ष्यते। सिस्वङ्क्षते; अभिषिष्वङ्क्षते। अत्र "णिस्तोरेव-"॥२।३।३७॥ इति नियमे सत्यपि स्पर्द्धे पर इति न्यायात् "स्वञ्जश्च"॥२।३।४५॥ इत्यनेनैव पूर्वोत्तरयोः सकारयोः षत्वं सिद्धम्। अभिषाष्वज्यते। स्वञ्जयति। असस्वञ्जत्; अभ्यषष्वञ्जत्। स्वजमानः। सस्वजानः, परिषस्वजानः। परिष्वक्तः, २ वान्। "जनशो-"॥४।३।२३॥ इति क्त्वो वा कित्त्वे, स्वक्त्वा, स्वङ्क्त्वा। परिष्वज्य। स्वङ्क्ता; परिष्व ३ ङ्क्ता, ङ्क्तुम्, ङ्क्तव्यम्। क्तौ, परिष्वक्तिः ॥ ५९ ॥

जुषैति प्रीतिसेवनयोः। जुषते। जुष्यते। अजोषिष्ट। अजोषि। जुजुषे; जुजुषिमहे। जुष्यात्। जोषि ३ षीष्ट, ता, ष्यते। जुजुषिषते; जुजोषिषते। जोजुष्यते। जोजुषीति, जोजोष्टि। जोषयति। अजूजुषत्। जुषमाणः। जोषिष्यमाणः। जुष्टः, २ वान्। ऐदित्वान्नेट्, जोषि ३ ता, तुम्, तव्यम्। जुषित्वा, जोषित्वा ॥ ६० ॥

इति श्रीतपागच्छेशश्रीदेवसुन्दरसूरिशिष्यश्रीगुणरत्नसूरिविरचिते क्रियारत्नसमुच्चये तुदादिगणः ॥

अथ रुधादिगणः ।

आदौ सप्तानिटः॥ रुधृंपी आवरणे; व्याप्तौ। "रुधां स्वरात्-"॥३।४।८२॥ इति श्ने, रुणद्धि। अप, उप, सम्, वि, अव, पूर्वोऽपि। "श्नास्त्योः-"॥४।२।९०॥ इति श्नोऽल्लुकि म्नां इति बहुवचनाण्णत्वापवादे ने, रुन्द्धः; अत्र "अधश्चतु-"॥२।१।७९॥ इति तो धः; "तृतीय-"॥१।३।४९॥ इति धो दः, रुन्धन्ति, रुणत्सि, रुन्द्धः, रुन्द्ध,

रुणध्मि, रुन्ध्वः, रुन्ध्मः । रुन्द्धे, रुन्धाते, रुन्धते, रुन्त्से, रुन्धाथे, रुन्द्ध्वे; रुन्ध्महे । रुन्ध्यात् । रुन्धीत । रुध्येत । रुणद्धु, रुन्द्धाम्, रुन्धन्तु, रुन्द्धि, रुणधानि । रुन्द्धाम्; रुन्त्स्व; रुन्द्ध्वम् । रुध्यताम् । अरुणत्, अरुन्द्धाम्, अरुन्धन्, अरुणः, अरुणत् वा; अरुन्द्धम्, अरुन्ध, अरुणधम्, अरुन्ध्व, अरुन्ध्म । अरुन्द्ध । अरुध्यत ॥ अद्य० ॥ "ऋदिच्छ्वि-"॥३।४।६५॥ इति वा अङि, अरुधत्, अरुधताम्, अरुधन् । पक्षे, "व्यञ्जनानाम्-"॥४।३।४५॥ इति वृद्धौ, अरौत्सीत्; "धुड्ह्रस्वात्" ॥४।३।७०॥ इति सिज्लुकि, अरौद्धाम्; अरौत्सुः, अरौ ६ त्सीः, द्धम्, द्ध, त्सम्, त्स्व, त्स्म । अरु १० द्ध, त्साताम्, त्सत, द्धाः, त्साथाम्, द्ध्वम्, द्ध्वम्, त्सि, त्स्वहि, त्स्महि । अरोधि । शेषं कर्तृवदेव । कर्मकर्त्तरि, "रुधः"॥३।४।८९॥ इति ञिच्निषेधे, अरुद्ध गौः स्वयमेव । रुरोध, रुरुधतुः, रुरुधुः । रुरोधिथ, रुरुधथुः; रुरुध, रुरोध, रुरुधि २ व, म । रुरुधे, रुध्यात् । रुत्सीष्ट । रोद्धा २ । रोत्स्यति, ते । रुरुत्सति, ते । रोरुध्यते । रोरुधीति; रोरोद्धि, रोरुद्धः, रोरुधति, रोरोत्सि० ॥ ह्य० ॥ अरोरोद्, त्; अरो ११ रुधीत्, रुद्धाम्, रुधुः, रोः, रुधीत्, रोत्, रुद्धम्० ॥ अद्य० ॥ अरोरो ९ धीत्, धिष्टाम्० । रोधयति । अरूरुधत् । रुरोधयिषति । रुन्धन् । रुन्धानः । रुन्धती । रुध्यमानम् । रोत्स्यन् । रोत्स्यमानः । रुरुध्वान् । रुरुधानः । रुद्धः, २ वान् । रुद्धिः । रुध्वा । संरुध्य । रोद्धा । रोद्धुम् । रोद्धव्यम् । रोध्यम् । रोधनीयम् ॥ १ ॥

रिचूंपी विरेचने; निःसारणे । रिणक्ति; व्यतिरिणक्ति । रिङ्क्ते । व्यतिरिच्यते । ऋदित्वाद्वा अङि, अरिचत्; व्यत्यरिचत । अरैक्षीत्; व्यत्यरैक्षीत् । अरिक्त, अरिक्षाताम् । अरेचि । रिरेच । रिरिचे । रिच्यात् । रिक्षीष्ट । रेक्ष्यति । रेक्ता । रेक्तुम् । रिक्तः । शेषं विचूंपीवत् ॥ २ ॥

विचूंपी पृथग्भावे । विनक्ति, विङ्क्तः, विञ्चन्ति; विनक्षि, विङ्क्थः, विङ्क्थ, विनच्मि, विञ्च्वः, विञ्च्मः । विङ्क्ते, विञ्चाते, विञ्चते, विङ्क्षे, विञ्चाथे, विङ्ग्ध्वे, विञ्चे, विञ्च्वहे, विञ्च्महे । विच्यते । विञ्च्यात् । विञ्चीत । विनक्तु । विङ्क्ताम् । अविनक्, ग्; अविङ्क्ताम्, अविचन्, अविनक्, ग्, अविङ्क्तम्, अविङ्क्त, अविनचम्, अविञ्च्व, अविञ्च्म । अविङ्क्त । अविच्यत ॥ अद्य० ॥ ऋदित्वाद्वा

अङि, अविचत्, अविचताम्; अविचाम । अवैक्षीत्, अवैक्ताम्, अवैक्षुः, अवैक्षीः, अवैक्तम्०; अवैक्ष्म । "धुट्-"॥४।३।७०॥ इति सिज्लुकि, अविक्त, अवि ९ क्षाताम्, क्षत, क्थाः, क्षाथाम्, ग्ध्वम्, ग्ड्ढ्वम्, क्षि, क्ष्वहि, क्ष्महि । अवेचि । विवेच, विविचतुः, विविचुः, विवेचिथ, विविचथुः, विविच, विवेच, विविचि २ व, म । विविचे, विविचाते; विविचिमहे । विच्यात् । विक्षीष्ट । वेक्ता २ । वेक्ष्यति, ते । विविक्षति, ते । वेविच्यते । वेविचीति, वेवेक्ति । वेचयति । अवीविचत् । विञ्चन् । विञ्चती । विञ्चानः । विच्यमानम् । वेक्ष्यन् । वेक्ष्यमाणः । विविच्वान् । विविचानः । विक्तः, २ वान् । विक्तिः । विक्त्वा । विविच्य । वेक्ता । वेक्तुम् । वेक्तव्यम् । विवेकः ॥ ३ ॥

युजृंपी योगे । युनक्ति; निर्युनक्ति; संयुनक्ति; उत्स्वराभावादत्र परस्मैपदम् । युङ्क्तः, युञ्जन्ति, युनक्षि, युङ्क्थः, युङ्क्थ, युनज्मि, युञ्ज्वः, युञ्ज्मः । युङ्क्ते । "उत्स्वरात्"॥३।३।२६॥ इत्यात्मनेपदे, उद्युङ्क्ते; उपयुङ्क्ते; प्रयुङ्क्ते; नियुङ्क्ते; वियुङ्क्ते; अनुयुङ्क्ते सिद्धान्तम्; पर्यनुयुङ्क्ते वादिनम्; युञ्जाते, युञ्जते, युङ्क्षे, युञ्जाथे, युङ्ग्ध्वे, युञ्जे, युञ्ज्वहे, युञ्ज्महे । युज्यते । युञ्ज्यात् । युञ्जीत । युज्येत । युनक्तु, युङ्क्ताम्, युञ्जन्तु, युङ्ग्धि, युङ्क्तम्, युङ्क्त, युनजानि । युङ्क्ताम्, युञ्जाताम्, युञ्जताम्, युङ्क्ष्व, युञ्जाथाम्, युङ्ग्ध्वम्, युनजै । युज्यताम् ॥ ह्य० ॥ अयुनक्, ग्, अयुङ्क्ताम्, अयुञ्जन्, अयुनक्, ग्, अयुङ्क्तम, अयुङ्क्त, अयुनजम्, अयुञ्ज्व, अयुञ्ज्म । अयुङ्क्त; प्रायुं १० क्त, जाताम्, जत, क्थाः, जाथाम्, ग्ध्वम्, ग्ड्ढ्वम्, जि, ज्वहि, ज्महि । अयुज्यत ॥ अद्य० ॥ ऋदित्त्वाद्वा अङि, अयुजत्, अयुजताम्, अयुजन्; अयुजाम । पक्षे, अयौक्षीत्, अयौक्ताम्, अयौक्षुः, अयौक्षीः । अयुक्त; प्रायुक्त, अयु ९ क्षाताम्, क्षत, क्थाः, क्षाथाम्, ग्ध्वम्, ग्ड्ढ्वम्, क्षि, क्ष्वहि, क्ष्महि । अयोजि; प्रायोजि । युयोज, युयुजतुः, युयुजुः, युयोजिथ०; युयुजिम । युयुजे । युज्यात् । युक्षीष्ट । योक्ता २ । योक्ष्यति, ते । युयुक्षति, ते । योयुज्यते । योयुजीति, योयोक्ति । योजयति । योज्यते । अयूयुजत् । युयोजयिषति । युञ्जन् । युञ्जती । युञ्जानः । योक्ष्यन् । योक्ष्यमाणः । युयुज्वान् । युयुजानः । युक्तः, २ वान् ।

युक्तिः । युक्त्वा । प्रयुज्य । योक्ता । योक्तुम् । योक्तव्यम् । योजनीयम् । योग्यम् । घ्यणि "क्तेऽनिटः-"॥४।१।१११॥ इति गः । "निप्रात्-"॥४।१।११६॥ इति न गत्वे, नियोक्तुं शक्यः नियोज्यः । प्रयोज्यः ॥ ४ ॥

भिदूंपी विदारणे । भिनत्ति, भिन्त्तः, भिन्दन्ति, भिनत्सि, भिन्थः, भिन्थ, भिनद्मि, भिन्द्वः, भिन्द्मः। भिन्त्ते, भिन्दाते, भिन्दते, भिन्त्से, भिन्दाथे, भिन्द्ध्वे, भिन्दे, भिन्द्वहे, भिन्द्महे । भिद्यते । भिन्द्यात् । भिन्दीत । भिनत्तु, भिन्त्ताम्, भिन्दन्तु, भिन्द्धि; भिनदानि । भिन्त्ताम्, भिन्दाताम्, भिन्दताम्, भिन्त्स्व । अभिनद्, अभिन्त्ताम्, अभिन्दन्, अभिनः, अभिनत्, अभिन्त्तम्, अभिन्त्त, अभिनदम्, अभिन्द्व, अभिन्द्म । अभिन्त्त ॥ अद्य० ॥ ऋदित्त्वाद्वा अङि; अभिद ३ त्, ताम्, न्; अभिदाम । अभैत्सीत्, अभैत्ताम्, अभैत्सुः, अभैत्सीः, अभैत्तम्, अभैत्त, अभैत्सम्, अभैत्स्व, अभैत्स्म । अभित्त, अभित्साताम्, अभि ८ त्सत, त्थाः, त्साथाम्, द्ध्वम्, द्ध्वम्, त्सि, त्स्वहि, त्स्महि । अभेदि । बिभेद, बिभिदतुः; बिभेदिथ; बिभिदिम। बिभिदे; बिभिदिमहे । भिद्यात् । भित्सीष्ट। भेत्ता २ । भेत्स्यति, ते । बिभित्सति, ते । बेभिद्यते । अबेभिदिष्ट । अबेभिदि । बेभिदांचक्रे । बेभिदिषीष्ट । बेभिदिष्यते । यङन्ताण्णिगि, प्रबेभिदय्य; "लघोर्यपि"॥४।३।८६॥ इति अय् । लुपि, बेभिदीति, बेभेत्ति । क्ये, बेभिद्यते॥ सप्त०॥ बेभिद्यात् ॥ पञ्च० ॥ बेभेत्तु, बेभिदीतु ॥ ह्य० ॥ अबे १२ भिदीत्, भेत्, भित्ताम्, भिदुः, भेः, भेत्, भिदीः, भित्तम्, भित्त, भिदम्, भिद्व, भिद्म ॥ अद्य० ॥ अबेभेदीत् ॥ भवि० ॥ बेभेदिष्यते । शेषं पचिस्थानोक्तवत् । भेदयति । भेद्यते । अबीभिदत् । कर्मकर्त्तरि, "एकधातौ-"॥३।४।८६॥ इति ञिक्यात्मनेपदानि, अभेदि । भिद्यते । बिभिदे । भेत्ता, भेत्स्यते वा कुशूलः स्वयमेव । भावे तु, भिद्यते कुशूलेन । सन्नन्त । बिभित्सति, अबिभित्सीत् कुशूलं चैत्रः । बिभित्सते, अबिभित्सिष्ट कुशूलः स्वयमेव । ण्यन्त । भेदयते, अबीभिदत, भेदयिष्यते वा आसाधु मैत्री स्वयमेव । "भूषार्थ-"॥३।४।९३॥ इति ञिच्ञिट्क्यनिषेधादात्मनेपदम् । ण्यन्तस्य तु "णिस्नु-"॥३।४।९२॥ इति ञिच्निषेधात् ञिड् भवत्येव, पृथग्योगात् । भेदिता, भेदिषीष्ट कुमैत्री स्वयमेव । भिन्दन् । भिन्दती । भिन्दानः । भिद्यमानम् ।

भेत्स्यन् । भेत्स्यमानः । बिभिद्वान् । बिभिदानः । "रदात्-"॥४।२।६९॥ इति नत्वे, भिन्नः, २ वान् । भित्वा । प्रभिद्य । भेत्ता । भेत्तुम् । भेत्तव्यम् । भेदनीयम् ॥ ५॥

छिदृंपी द्वैधीकरणे; अद्वैधस्य पृथक्त्वे। छिनत्ति; व्यव, परि, अव पूर्वोऽपि। आच्छिनत्ति । अत्र "अनाङ्माङ्-"॥ १ । ३ । २८॥ इति आङ्वर्जनान्नित्यं छस्य द्वित्वम् । छिन्त्तः, छिन्दन्ति । छिन्त्ते, छिन्दाते, छिन्दते । छिद्यते । छिन्द्यात् । छिन्दीत । छिनत्तु । हौ, छिन्द्धि । छिन्त्ताम् । अच्छिनत्, अच्छिन्त्ताम्, अच्छिन्दन्, अच्छिनः, अच्छिनत् ॥ अद्य० ॥ अच्छिदत् । अच्छै९ त्सीत्, त्ताम्, त्सुः, त्सीः, त्तम्० । अच्छित्त, अच्छि ९ त्सताताम्, त्सत, त्थाः; द्ध्वम्० । अच्छेदि । चिच्छेद, चिच्छिदतुः; चिच्छिदिम । चिच्छिदे, चिच्छिदाते; चिच्छिदिमहे । छिद्यात् । छित्सीष्ट । छेत्ता । छेत्स्यति, ते । चिच्छित्सति, ते । चेच्छिद्यते। चेच्छिदीति, चेच्छेत्ति । शेषं भिदृंपीवत् । छेदयति । अचिच्छिदत् । छिन्दन् । छिन्दानः । छेत्स्यन् । छेत्स्यमानः । चिच्छिद्वान् । चिच्छिदानम् । छिन्नः, २ वान् । छित्तिः । छित्त्वा । परिच्छिद्य । छेत्ता । छेत्तुम् । छेत्तव्यम् । छेद्यम् । छेदनीयम् ॥ ६ ॥

क्षुदृंपी संपेषे । क्षुणत्ति, क्षुन्त्तः, क्षुन्दन्ति । क्षुन्त्ते, क्षुन्दाते । क्षुद्यते । ऋदित्वाद्वा अङि, अक्षुदत् । अक्षौत्सीत्, अक्षौत्ताम्, अक्षौत्सुः । अक्षुत्त, अक्षुत्साताम् । अक्षोदि । चुक्षोद; चुक्षुदिम । चुक्षुदे । क्षुद्यात् । क्षुत्सीष्ट । क्षोत्ता । क्षोत्स्यति, ते । चुक्षुत्सति, ते । चोक्षुद्यते । चोक्षुदीति, चोक्षोत्ति । क्षोदयति । अचुक्षुदत् । क्षोत्ता । क्षोत्तुम् । क्षुण्णः, २ वान् । क्षुत्त्वा ॥ ७ ॥

इत्युभयपदिनः ।

पृचैप् सम्पर्के । पृणक्ति; संपृणक्ति शाकम् । पृच्यते । "व्यञ्जनादेः-" ॥४।३।७८॥ इति दिवो लुकि, अपृणक् । शिति शेषं भञ्जोंप्वत् ॥ अद्य० ॥ अपर्चीत । पपर्च; पपृचुः । सम्पर्चिता । शेषं पृचैङ्वत् ॥ ८ ॥

द्वावनिटौ ॥ भञ्जोंप् आमर्दने । "रुधाम्-"॥३।४।८२॥ इति श्ने, नलुकि च, भनक्ति, भङ्क्तः, भञ्जन्ति, भनक्षि, भङ्क्थः, भङ्क्थ, भनज्मि, भञ्ज्वः, भञ्ज्मः ।

भङ्क्ते, भञ्जाते, भञ्जते, भङ्क्षे, भञ्जाथे, भङ्ग्ध्वे, भञ्जे, भञ्ज्वहे, भञ्ज्महे । क्ये, भज्यते। भञ्ज्यात्। भञ्जीत। भनक्तु, भङ्क्ताम्, भञ्जन्तु; भङ्ग्धि, भङ्क्ताम्। अभनक्, ग्, अभङ्क्ताम्, अभञ्जन्, अभनक्। अभङ्क्त॥ अद्य० ॥ "व्यञ्जनानाम्-"॥४।३।४५॥ इति वृद्धौ, अभाङ्क्षीत्, अभाङ्क्ताम्, अभाङ्क्षुः, अभाङ्क्षीः । "भञ्जेर्ञौ वा"॥४।२।४८॥ इति वा नलुकि, अभाजि, अभञ्जि, अभङ् ९ क्षाताम्, क्षत, क्थाः, क्षाथाम्, ग्ध्वम्, ग्ड्ढ्वम्, क्षि, क्ष्वहि, क्ष्महि। बभञ्ज, बभञ्जतुः; बभञ्जिथ, बभङ्क्थ; बभञ्जिम । बभञ्जे। भज्यात् । भङ्क्षीष्ट । भङ्क्ता २। भङ्क्ष्यति । बिभङ्क्षति । "जपजभ-"॥४।१।५२॥ इति मौ अन्ते, बम्भज्यते। बम्भजीति, बम्भक्ति, बम्भङ्क्तः, बम्भजति। बम्भजन्। बम्भजितः। भञ्जयति । अबभञ्जत् । कर्मकर्त्तरि, भञ्जयते निगडः स्वयमेव । भञ्जन् । भञ्जती । भज्यमानम् । भङ्क्ष्यन् । भङ्क्ष्यती । क्त्वान्नलुकि, बभज्वान् । बभजानम् । भग्नः, २ वान्; औदित्त्वात् "सूयत्य-"॥४।२।७०॥ इति नत्वम् । भक्तिः । "जनश-"॥४।३।२३॥ इति क्त्वो वा क्त्वे, भक्त्वा, भङ्क्त्वा । भङ्क्तुम् । भङ्क्तव्यम् । भञ्जनीयम् । भङ्ग्यम् ॥ ९ ॥

भुजंप् पालनाभ्यवहारयोः; अभ्यवहारो भोजनम्। पालने तु, भुनक्ति भुवम्। भुङ्क्तः, भुञ्जन्ति। भोजनादौ तु,"भुनज-"३।३।३७॥ इत्यात्मनेपदे, भुङ्क्ते अन्नम्; उपभुङ्क्ते; परिभुङ्क्ते। एवमग्रेऽपि परस्मैआत्मनेपदे विभक्तव्ये। उभयपद्यमित्येके। भुञ्जाते, भुञ्जते, भुङ्क्षे; भुङ्ग्ध्वे। क्ये, भुज्यते। भुञ्ज्यात्। भुञ्जीत । भुनक्तु, भुङ्क्ताम्, भुञ्जन्तु, भुङ्ग्धि । भुङ्क्ताम्; भुङ्क्ष्व। अभुनक्, अभुङ्क्ताम्, अभुञ्जन् । अभुङ्क्त ॥ अद्य० ॥ अभौक्षीत्, अभौक्ताम्, अभौक्षुः, अभौक्षीः । अभुक्त, अभु ९ क्षाताम्, क्षत, क्थाः, क्षाथाम्, ग्ध्वम्, ग्ड्ढ्वम्, क्षि, क्ष्वहि, क्ष्महि । अभोजि, अभुक्षाताम्। शेषं कर्तृवत् । बुभोज, बुभुजतुः; बुभुजिम । बुभुजे; बुभुजि २ ध्वे; महे । भुज्यात् । भुक्षीष्ट । भोक्ता २ । भोक्ष्यति, ते । बुभुक्षति, ते । बोभुज्यते । बोभुजीति, बोभोक्ति। "गतिबोध-"॥२।२।५॥ इत्यणिक्कर्तुः कर्मत्वे; "चल्याहार-"॥३।३।१०८॥ इति फलवत्यपि परस्मैपदे, भोजयति चैत्रं पयो मैत्रः। अबूभुजत्। भुञ्जन्। भुञ्जती। भुञ्जानः। भुज्यमानम्।

भोक्ष्यन् । भोक्ष्यमाणः । बुभुज्वान् । बुभुजानः । "गत्यर्थ-"॥५।१।११॥ इति वा कर्त्तरि क्ते, भुक्तश्चैत्रः । भुक्तं चैत्रेणान्नम् । भुक्तवान् । भुक्तिः । भुक्त्वा । उपभुज्य । भोक्ता । भोक्तुम् । भोक्तव्यम् । घ्यणि "क्तेऽनिटः-"॥४।१।१११॥ इति गे, भोग्या भूः । "भुजो भक्ष्ये"॥४।१।११७॥ इति गत्वाभावे, भोज्यमन्नम् ॥ १० ॥

अंजौप् व्यक्तिम्रक्षणगतिषु । व्यक्तिः प्रकटता; म्रक्षणं घृतादिसेकः । तत्र केवलस्य म्रक्षण एव वृत्तिः; सोपसर्गस्य तु शेषयोरिति विवेकः । अनक्ति; व्यनक्ति; अभ्यनक्ति, अङ्क्तः, अञ्जन्ति । क्ये, अज्यते । "सिचोऽञ्जेः"॥४।४।८४॥ इतीटि; आञ्जीत्, आञ्जिष्टाम्, आञ्जिषुः, आञ्जीः । आञ्जि, आञ्जिषाताम् । "अनात-"॥४।१।६९॥ इति पूर्वस्यात्वे नेऽन्ते च; आनञ्ज, आनञ्जतुः; आनञ्जिथ; आनञ्जिम । आनञ्जे । अज्यात् । औदित्त्वाद्वेटि; अङ्क्षीष्ट, अञ्जिषीष्ट । अङ्क्ता, अञ्जिता । अङ्क्ष्यति, अञ्जिष्यति । "ऋस्मि-"॥४।४।४८॥ इतीटि, अञ्जिजिषति । अञ्जयति । "न बदनम्-"॥४।१।५॥ इति नस्य द्वित्वाभावे जेर्द्वित्वे, आञ्जिजत् । व्यञ्जिजयिषति । अञ्जन् । अज्यमानम् । अङ्क्ष्यन्, अञ्जिष्यन् । कित्त्वान्नलुकि, आजिवान् । आजानम् । अक्तः, २ वान्; व्यक्तः, २ वान् । "जनश-"॥४।३।२३॥ इति वा कित्त्वे; अक्त्वा, अङ्क्त्वा; इटि, अञ्जित्वा । अङ्क्ता, अञ्जिता । अङ्क्तुम्, अञ्जितुम् । अङ्क्तव्यम्, अञ्जितव्यम् । घ्यणि "क्तेऽनिटः-"४।१। १११॥ इति गे, अङ्ग्यम् ॥ ११ ॥

ओविजैप् भयचलनयोः । विनक्ति; उद्विनक्ति, विङ्क्तः, विञ्जन्ति, विनक्षि, विङ्क्थः, विङ्क्थ, विनज्मि, विञ्ज्वः, विञ्ज्मः । विज्यते । विञ्ज्यात् । विञ्ज्येत । विनक्तु । अविनक्, अविङ्क्ताम् ॥ अद्य० ॥ "विजेरिट्"॥४।३।१८॥ इति ङित्त्वान्न गुणः । उदवि ३ जीत्, जिष्टाम्, जिषुः । उदवेजि, उदविजिषाताम् । विवेज; विविजिम । विविजे । विज्यात् । विजिता । उद्विजिष्यति । उद्विजन् । उद्विजिष्यन् । शेषं ओविजैतिवत् ॥ १२ ॥

द्वौ अनिटौ ॥ शिष्लृंप् विशेषणे । शिनष्टि; विशिनष्टि, विशिंष्टः, विशिंषन्ति, शिनक्षि, शिंष्ठः, शिंष्ठ, शिनष्मि, शिंष्वः, शिंष्मः । शिष्यते । शिंष्यात् ।

शिष्येत । शिनष्टु, शिष्टाम्, शिंषन्तु, शिण्ड्ढि; अत्र श्नस्याकारलोपो "श्नाम्-" ॥१।३।३९॥ इति वर्गान्त्ये कर्त्तव्ये "न सन्धि-"॥७।४।१११॥ इति स्थानी न भवति । एवमन्यत्रापि । शिनषाणि । अशिनट्, अशिंष्टाम्, अशिंषन्, अशिनट्; अशिनषम्, अशिंष्व, अशिंष्म ॥ अद्य० ॥ लृदित्त्वादङि, अशिषत्; अशिषाम । अशेषि; "हशिट-"॥३।४।५५॥ इति सकि, अशिक्षाताम्, अशि ७ क्षन्त, क्षथाः, क्षाथाम्, क्षध्वम्, क्षि, क्षावहि, क्षामहि । विशिशेष, शिशिषतुः; शिशेषिथ; शिशिषिम । शिशिषे; शिशिषिमहे । शिष्यात् । शिक्षीष्ट । शेष्टा २ । विशेक्ष्यति । शिशिक्षति । शेशिष्यते । शेशिषीति, शेशेष्टि, शेशि २ ष्टः, षति । शेषयति । व्यशीशिषत् । विशिंषन् । शिंषती । शिष्यमाणम् । शेक्ष्यन् । शिशिष्वान् । शिशिषाणम् । शिष्टः, २ वान् । शिष्टिः । शिष्ट्वा । विशिष्य । शेष्टुम् । शेष्टा । शेष्टव्यम् । शेषणीयम् । शेष्यम् ॥ १३ ॥

पिष्लृंप् संचूर्णने । "जासनाट-"॥२।२।१४॥ इति वा कर्मणः कर्मत्वे, चौरस्य चौरं वा पिनष्टि । हिंसार्थादन्यत्र; धानाः पिनष्टि । षान्तत्वात् "अकखादि-" ॥२।३।८०॥ इति न नेर्णिः, प्रनिपिनष्टि, पिंष्टः, पिंषन्ति । पिष्यते । हौ; पिण्ड्ढि । अपिनड्, ट्, अपिंष्टाम्, अपिंषन् ॥ अद्य० ॥ अपिषत्; अपिषाम । अपेषि; सकि, अपिक्षाताम् । पिपेष; पिपिषिम । पिपिषे । पिष्यात् । पिक्षीष्ट । पेष्टा २ । पेक्ष्यति । पिपिक्षति । पेपिष्यते । पेपिषीति, पेपेष्टि । पेषयति । अपीपिषत् । पिंषन् । पिंषती । पिष्यमाणम् । पेक्ष्यन् । पेक्ष्यन्ती, पेक्ष्यती । पिष्टः, २ वान् । पिष्टिः । पिष्ट्वा । सम्पिष्य । पेष्टा । पेष्टुम् । पेष्टव्यम् । पेषणीयम् । पेष्यम् ॥ १४ ॥

हिसु, तृहप् हिंसायाम् । उदित्त्वान्ने, "रुधाम्-"॥३।४।८२॥ इति श्ने नलुकि च, हिनास्ति; प्रहिनस्ति, हिंस्तः, हिंसन्ति, हिनस्सि, हिंस्थः, हिंस्थ; हिनस्मि, हिंस्वः, हिंस्मः । हिंसार्थवर्जनात् क्रियाव्यतिहारेऽपि नात्मनेपदे; व्यतिहिंसन्ति । हिंस्यते । हिंस्यात् । हिनस्तु, हिंस्ताम्, हिंसन्तु, हिन्ध्दि; हिन्धि । अत्र "हुधुट-" ॥४।२।८३॥ इति हेर्धौ, "सोधि वा"॥४।३।७२॥ इति सो वा लुकि, अहिनत्, द् । क्रियाव्यतिहारे तु, व्यत्यहिनत; अहिंस्ताम्, अहिंसन्, अहिनः, अहिनद्; "सेः स्द्धाम्-"॥४।३।७९॥ इति सिच्लुकि, सो वा रुः ॥ अद्य० ॥ अहिं ५

सीत्, सिष्टाम्, सिषुः, सीः, सिष्टम् । अहिंसि, अहिंसिष्टाम् । जिहिंस, जिहिंसतुः; जिहिंसिथ । जिहिंसे । हिंस्यात् । हिंसि ३ षीष्ट, ता, ष्यति । जिहिंसिषति । जेहिंस्यते । जेहिंसीति । हिंसयति । अजिहिंसत् । हिंसयाञ्चकार । हिंसन् । हिंसती । हिंस्यमानम् । हिंसिष्यन् । जिहिंस्वान् । जिहिंसिषुः । जिहिंसानः । हिंसि ५ तः, २ वान्, त्वा, ता, तुम् । हिंसनीयम् । हिंस्यम् ॥ तृह ॥ "तृहः श्नादीत्"॥४।३।६२॥ इति विति व्यञ्जनादौ ईत्; तृणेढि, तृण्ढः, तृंहन्ति, तृणेक्षि; तृणेह्मि; तृंह्मः । तृह्यते । तृंह्यात् । तृणेढु । हौ, तृण्ढि; तृणहानि । अतृणेट्, अतृण्ढाम्, अतृंहन्, अतृणेट्; अतृणहम् । अतर्हीत्, अतर्हिष्टाम् । अतर्हि, अतर्हिषाताम् । ततर्ह; ततृहिम । ततृहे । तृह्यात् । तर्हि ३ षीष्ट, ता, ष्यति । तितर्हिषति । तरीतृह्यते । तरि री र् ३ तृहीति, तर्तर्ढि, तर्तृढः, तर्तृहति । तर्हयति । अतीतृहत्; अततर्हत् । तृहितः, २ वान् । तर्हि ४ त्वा, ता, तुम्, तव्यम् ॥ १५ ॥ १६ ॥

अनिटौ द्वौ ॥ खिदिंप् दैन्ये । खिन्त्ते, खिन्दाते, खिन्दते । खिद्यते । खिन्दीत । खिन्त्ताम् । अखिन्त्त, अखित्त । अखेदि । चिखिदे । खेत्ता । खिन्नः । शेषं खिदिंचुवत् ॥ १७ ॥

विदिंप् विचारणे । विन्त्ते, विन्दाते । विद्यते । अवित्त । अवेदि, अवित्साताम् । विविदे । वित्सीष्ट । वेत्ता । वेत्स्यते । विवित्सते । वेविद्यते । वित्त्वा । "ऋह्री-"॥४।२।७६॥ इति वा नत्वे, विन्नः, २ वान्; वित्तः २ वान् । क्ते, "निर्विण्णः"॥२।३।८९॥ इति निपातनात्, निर्विण्णो विरक्त इत्यर्थः । क्तवतौ तु णत्वाभावे, निर्विन्नवान् । वेत्ता ॥ १८ ॥

ञिइन्धैपि दीप्तौ । इन्द्धे; "धुटो धुटि-"॥१।३।४८॥ इति वा द्लुकि; इन्धे; समिन्द्धे; तेजस्वी भवतीत्यर्थः । इन्धाते, इन्धते, इन्त्से, इन्धाथे, इन्ध्वे, इन्द्ध्वे वा । इन्धे, इन्ध्वहे, इन्ध्महे । इध्यते । इन्धीत । इन्द्धाम्, इन्धाम् वा । ऐन्द्ध, ऐन्ध वा ॥ अद्य० ॥ ऐन्धिष्ट, ऐन्धिषाताम् । "जागृुष-"॥३।४।४९॥ इति वा आमि; समिन्धाञ्चक्रे । पक्षे, "इन्ध्यसंयोग-"॥४।३।२१॥ इति कित्त्वान्नलुकि, द्वित्वे च; समीधे; समीधिमहे । इन्धि ३ षीष्ट, ता, ष्यते । इन्दिधिषते । समि-

न्धयति । ऐन्दिधत् । ऐदित्त्वान्नेटि ञीत्त्वात्सति क्ते; समिद्धः, २ वान् । इन्धि २ त्वा, ता, तुम् । समिध्य ॥ १९ ॥

इति तपागच्छेशश्रीदेवसुन्दरसूरिशिष्यश्रीगुणरत्नसूरिविरचिते क्रियारत्नसमुच्चये रुधादिगणः ।



अथ तनादिः ।

तनूयी विस्तारे। "कृग् तनादेः-"॥३।४।८३॥ इति उः, तनोति; व्या, सम्, वि, प्राङ्, पूर्वोऽपि । तनुतः, तन्वन्ति, तनोषि, तनुथः, तनुथ, तनोमि; "वम्यऽविति-"॥४।२।८७॥ इति वा उलुकि, तनुवः, तन्वः, तनुमः, तन्मः। तनुते, तन्वाते, तन्वते, तनुषे, तन्वाथे, तनुध्वे, तन्वे, तनुवहे, तन्वहे, तनुमहे, तन्महे। "तनः क्ये"॥४।२।६३॥ इति नस्य वा आत्वे; तायते, तन्यते । तनुयात् । तन्वीत । तनोतु । हौ, तनु । तनुताम् । अतनोत् । अमि, अतनवम् । अतनुत ॥ अद्य० ॥ "व्यञ्जनादेर्वो-"॥४।३।४७॥ इति वा वृद्धौ; अतनीत्, अतानीत्, अतनिष्टाम्, अतानिष्टाम्, "तन्भ्यो वा-"॥ ४ । ३ । ६८॥ इति तथासोर्वा सिचो लुप्, ण्णोश्च, न चेट् । अतत, अतनिष्ट, अतनिषाताम्, अतनिषत, अतथाः, अतनिष्ठाः, अतनि ६ षाथाम्, ड्ढ्वम्, ध्वम्, षि, ष्वहि० । अतानि। ततान, तेनतुः, तेनुः, तेनिथ, तेनथुः, तेन, ततान, ततन, तेनिव, तेनिम । तेने, तेनाते; तेनि २ ध्वे; महे । तन्यात् । तनि २ षीष्ट; षीध्वम् । तनिता । तनिष्यति, ते । "इवृध-"॥४।४।४७॥ इति वेटि, "तनो वा"॥४।१।१०५॥ इति वा दीर्घे; तितांसति, ते; तितंसति, ते । पक्षे, तितनिषति, ते । तन्तन्यते । तन्तनीति, तन्तन्ति; "अहन्पञ्चम-"॥४।१।१०७॥ इति दीर्घे, तन्तान्तः, "यमिरमि-"॥४।२।५५॥ इत्यत्र तनादेरिति गणनिर्देशाद् यङ्लुपि नात्र अन्तलुक् । तन्तनाति ॥ अद्य० ॥ अतन्तनीत्, अतन्तानीत् । अतन्तानि, अनन्तनिषाताम् । तन्तनत् । यङ्लुबन्तात्सनि, "इवृध-"॥४।४।४७॥ इति वेटि,

तन्तनिषति, तन्तांसति, तन्तंसति । तानयति । अतीतनत् । तन्वन्, तन्वन्तौ । तन्वती । तन्वानः । तायमानम्; तन्यमानम् । तनिष्य २ न्, माणः । तेनिवान् । तेनुषी । तेनानः । ऊदित्त्वात् क्त्वि वेटि; तनित्वा, "यमिरमि-"॥४।२।५५॥ इति नलुकि, तत्वा । "यपि"॥४।२।५६॥ इति नलुकि, वितत्य । प्रतत्य । वेट्त्वान्नेटि, ततः, २ वान् । तनि ३ ता, तुम्, तव्यम् । तननीयम् ॥ १ ॥

षणूयी दाने । सनोति । सनुते । क्ये "ये नवा"॥४।२।६२॥ इत्यात्वे; सायते, सन्यते ॥ अद्य० ॥ असानीत्; असनीत् । "तन्भ्यो वा-"॥४।३।६८॥ इति सिज्नयोर्वा लुकि; "सनस्तत्र-"॥४।३।६९॥ इति वा आत्वे, असात, असत, असनिष्ट ३, असनिषाताम्, असनिषत, असाथाः, असथाः, असनिष्ठाः ३, असनिषाथाम् । ससान, सेनतुः । सेने । "ये नवा"॥४।२।६२॥ इत्यत्र अदन्तयग्रहणादिहात्वाभावे; सन्यात् । अन्यथा यि नवा इति कुर्यात् । सायादित्यप्यन्ये । सनि ४ षीष्ट, ता, ष्यति, ष्यते । "इवृध-"॥४।४।४७॥ इति वेटि "णिस्तोरेव-"॥२।३।३७॥ इति नियमान्न षत्वम्; सिसनिषति, ते । पक्षे, "नाम्यन्तस्था-"॥२।३।१५॥ इति षत्वे, "सनि" ॥४।२।६१॥ इत्यात्वे, सिषासति, ते । "ये नवा"॥४।२।६२॥ इति वा आत्वे; सासायते; संसन्यते । संस २ नीति, न्ति । "आः खनि-"॥४।२।६०॥ इति नस्यात्वे; संसातः, संसनति । सानयति । असीषनत् । सिषानयिषति । ऊदित्त्वात् क्त्वि वेट्; सानित्वा; पक्षे, "आः खनि-"॥४।२।६०॥ इत्यात्वे; सात्वा । प्रसाय, प्रसन्य, प्रसत्य । वेट्त्वान्नेटि; सातः, २ वान् । क्तौ, सातिः । सनि २ ता, तुम् । शेषं तनूयीवत् ॥ वन, षण भक्तौ; भक्तिर्भजनम् । सनति, सनतः, सनन्ति ॥ २ ॥

क्षणूग्, क्षिणूयी हिंसायाम् । "रषृवर्णात्-"॥२।३।६३॥ इति नो णे, क्षणोति । क्षणुते । क्षण्यते । अक्षणीत् । अक्षत, अक्षणिष्ट, अक्षणिषाताम्, अक्षणिषत, अक्षथाः, अक्षणिष्ठाः । चक्षाण; चक्षणिथ । चक्षणे । क्षण्यात् । क्षणि ४ षीष्ट, ता, ष्यति, ष्यते । चिक्षणिषति, ते । चङ्क्षण्यते । चङ्क्ष २ णीति, न्ति । क्षाणयति । अचिक्षणत् । ऊदित्त्वाद्वेटि, "यमिरमि-"॥४।२।५५॥ इति नलुकि; क्षणित्वा, क्षत्वा । वेट्त्वान्नेटि, क्षतः, २ वान् । क्तौ, क्षतिः । क्षणि २ ता, तुम् ॥ क्षिणू ॥ "रषृवर्ण-"॥२।३।६३॥ इति नो णे, उपान्त्यगुणं

नेच्छन्त्येके । क्षिणोति, क्षिणुतः, क्षिण्वन्ति । क्षिणुते, क्षिण्वाते, क्षिण्वते । क्ये, क्षिण्यते । अक्षेणीत्, अक्षेणिष्टाम् । अक्षित, अक्षेणिष्ट, अक्षेणिषाताम् । अक्षेणि । चिक्षेण । चिक्षिणे । क्षिण्यात् । क्षेणि ४ षीष्ट, ता, ष्यति, ष्यते । चिक्षेणिषति, ते; चिक्षिणिषति, ते । चेक्षिण्यते । चेक्षि २ णीति, न्ति । "म्नाम्-" ॥१।३।३९॥ इति बहुवचनात् प्रागेव नः, नतु णः; चेक्षीन्तः, चेक्षिणति । क्षेणयति । अचिक्षिणत् । क्षिण्वन् । क्षिण्वानः । क्षिण्वती । क्षेणि २ ष्यन्, ष्यमाणः । चिक्षिण्वान् । चिक्षिणानः । ऊदित्त्वाद्वेटि, "वौ व्यञ्जन-"॥४।३।२५॥ इति वा कित्त्वे; क्षिणित्वा, क्षेणित्वा । "यमिरमि-"॥४।२।५५॥ इति नलुकि; क्षित्वा । प्रक्षित्य । वेट्त्वान्नेटि; क्षितः, २ वान् । क्षेणि ३ ता, तुम्, तव्यम । क्षेणनीयम् ॥ ३ ॥ ४ ॥

इत्युभयतोभाषाः ।

वनूयि याचने । वनुते, वन्वाते । वन्यते । अवत, अवनिष्ट । अवानि, अवनिषाताम् । "न शस-"॥४।१।३०॥ इति न एः; ववने; ववनिमहे । वनि ३ षीष्ट, ता, ष्यते । विवनिषते । वंवन्यते । वंव २ नीति, न्ति, वंवान्तः, वंवनति । "कगेवनू-"॥४।२।२५॥ इति ह्रस्वे, अववनयति; संवनयति । समवीवनत् । ञिणम्परे तु वा दीर्घः; समवानि, समवनि; अवानि, अवनि । संवानम् २, संवनम् २; वानम् २, वनम् २ । अनुपसर्गस्य तु, "ज्वलह्वल-"॥४।२।३२॥ इति वा ह्रस्वे; वानयति, वनयति । अवीवनत् । अत्र सूत्रे वा ह्रस्वविधानाद् ञिणम्परे इति नानूद्यते । ऊदित्त्वाद्वेटि; वनित्वा, वत्वा । वेट्त्वान्नेटि; वतः, २ वान् । वनि २ ता, तुम् ॥ वन, षन भक्तौ । वनति । णिगि, वानयति । अनटि; संवननम् । शेषस्यापि तुल्यम् ॥ ५ ॥

मनूयि बोधने । मनुते, मन्वाते, मन्वते, मनुषे, मन्वाथे, मनुध्वे, मन्वे, मनुवहे, मन्वहे, मनुमहे, मन्महे । क्ये, मन्यते । मन्वीत । मनुताम् । अमनुत । "तन्भ्यो-"॥४।३।६८॥ इति न्सिचोर्वा लुकि, नचेद् । अमत, अमनिष्ट, अमनिषाताम्, अमनिषत, अमथाः, अमनिष्ठाः, अमनिषाथाम् । मेने; मेनिमहे ।

मनि ३ षीष्ट, ता, ष्यते । मिमनिषते । मंमन्यते । मंमनीति, मंमन्ति, मंमान्तः, मंमनति । मानयति । अमीमनत् । मानयांचकार । मन्वानः । मन्यमानम् । मनिष्यमाणः । मेनानः । ऊदित्त्वाद्वेटि, "यमि-"॥४।२।५५॥ इति नलुकि; मत्वा, मनित्वा । अवमत्य । वेट्त्वान्नेटि; मतः, २ वान् । मनि ३ ता, तुम्, तव्यम् । मननीयम् । मान्यम् ॥ ६ ॥

इति श्रीतपाचार्यश्रीदेवसुन्दरसूरिशिष्यश्रीगुणरत्नसूरिविरचिते क्रियारत्नसमुच्चये तनादिगणः ॥

अथ क्र्यादयः ।

तत्र त्रयोऽनिटः ॥ डुक्रींग्श् द्रव्यविनिमये; द्रव्यपरिवर्त्ते । "क्र्यादेः"॥३।४।७९॥ इति श्ना; क्रीणाति; विक्रीणाति । "एषाम्-"॥४।२।९७॥ इतीत्वे; क्रीणीतः, क्रीणन्ति "श्नश्च-"॥४।२।९६॥ इत्याल्लुक्; क्रीणासि, क्रीणीथः, क्रीणीथ, क्रीणामि, क्रीणीवः, क्रीणीमः । क्रीणीते, क्रीणाते, क्रीणते, क्रीणीषे, क्रीणाथे, क्रीणीध्वे, क्रीणे, क्रीणीवहे, क्रीणीमहे । फलवतोऽन्यत्र "परिव्यवात्-"॥३।३।२७॥ इत्यात्मनेपदे; परिक्रीणीते; विक्रीणीते; अवक्रीणीते । क्ये, क्रीयते । क्रीणीयात् । क्रीणीत । क्रीयेत । क्रीणातु, क्रीणीताम्, क्रीणन्तु, क्रीणीहि । क्रीणीताम्; क्रीणीष्व; क्रीणै । क्रीयताम् । अक्रीणात् । अक्रीणीत । अक्रीयत ॥ अद्य० ॥ अक्रैषीत्, अक्रै ३ ष्टाम्, षुः, षीः । अक्रेष्ट; अक्रे २ ढ्ढ्वम्, ढ्वम् । अक्रायि, अक्रायिषाताम्, अक्रेषाताम्, अक्रे २ ढ्ढ्वम्, ढ्वम्; अक्रायि ३ ढ्ढ्वम्, ढ्वम्, ध्वम् । चिक्राय, चिक्रियतुः, चिक्रियुः, चिक्रयिथ, चिक्रेथ, चिक्रियथुः, चिक्रिय, चिक्राय, चिक्रय, चिक्रियिव, चिक्रियिम । चिक्रिये, चिक्रियाते; चिक्रियिषे; चिक्रियि २ ढ्वे, ध्वे । क्रीयात् । क्रे ५ षीष्ट; षीढ्वम्, ता, ष्यति, ष्यते । ञिटि, क्रायि ६ षीष्ट, षीढ्वम्, षीध्वम्, ता, ष्यति, ष्यते । चिक्रीषति, ते । चेक्रीयते । चेक्रयीति, चेक्रेति, चेक्रीतः, चोक्रियति । "णौ क्रीजी-"॥४।२।१०॥ इत्यात्वे; क्रापयति । अचिक्रपत् । क्रापितः ।

चिक्रापयिषति । क्रीणन् । "अवर्णादश्नः-"॥२।१।११५॥ इति श्नावर्जनान्न अन्त् । क्रीणती । क्रीणानः । क्रीयमानम् । क्रेष्यन् । क्रेष्यन्ती, क्रेष्यती । क्रेष्यमाणः । चिक्रीवान् । चिक्रियाणः । क्रीतः, २ वान् । "परिक्रयणे"॥२।२।६७॥ इति करणाद्वा चतुर्थ्याः शताय शतेन वा परिक्रीतः । क्रीत्वा । विक्रीय । क्रेता । क्रेतुम् । "क्रय्यः क्रयार्थे"॥४।३।९१॥ इति निपातनात्; क्रय्यो गौः । क्रय्यः कम्बलः; क्रयाय प्रसारित इत्यर्थः । क्रयार्थादन्यत्र, क्रेयं नो धान्यम्, नचास्ति प्रसारितम् । क्रेतव्यम् ॥ १ ॥

प्रींग्श् तृप्तिकान्त्योः; कान्तिरभिलाषः । प्रीणाति, प्रीणीतः, प्रीणन्ति, प्रीणासि० । प्रीणीते, प्रीणाते, प्रीणते० । प्रीयते । प्रीणीयात् । प्रीणीत । प्रीणातु । प्रीणीताम्, प्रीणाताम्, प्रीणताम् ॥ ह्य० ॥ अप्री ९ णात्, णीताम्, णन्, णाः, णीतम्, णीत, णाम्, णीव, णीम । अप्रीणीत ॥ अद्य० ॥ अप्रैषीत्, अप्रैष्टाम् । अप्रेष्ट, अप्रेषाताम्; अप्रे २ ड्ढ्वम्, ढ्वम् । अप्रायि, अप्रायिषाताम्, अप्रेषाताम् । पिप्राय, पिप्रियतुः, पिप्रियुः, पिप्रयिथ, पिप्रेथ, पिप्रियथुः, पिप्रिय, पिप्राय, पिप्रय, पिप्रियि २ व, म । पिप्रिये । प्रीयात् । प्रे ४ षीष्ट, ता, ष्यति, ष्यते । ञिटि, प्रायि ३ षीष्ट, ता, ष्यते । पिप्रीषति, ते । पेप्रीयते । पेप्रयीति, पेप्रेति । "धूग्प्रीगोः-"॥४।२।१८॥ इति ने; प्रीणयति । अपिप्रिणत् । गिन्निर्देशाद् यङ्लुपि न नोऽन्तः; पेप्राययति । प्रीणन् । प्रीणती । प्रीणानः । प्रेष्यन् । प्रेष्यमाणः । पिप्रीवान् । पिप्रियाणः । प्रीतः, २ वान् । प्रीत्वा । अभिप्रीय । प्रे ४ ता, तुम्, तव्यम्, यम् ॥ २ ॥

मींग्श् हिंसायाम् । मीनाति; मीनीते । "अदुरुप-"॥२।३।७७॥ इति णे; प्रमीणाति; प्रमीणीते । क्ये, मीयते । यबक्ङिति "मिग्मीग-"॥४।२।८॥ इत्यात्वे, अमासीत्; अमास्त; अमायि । विषयव्याख्यानात् प्रागात्वे, पश्चाद् द्वित्वे; ममौ, मिम्यतुः, मिम्युः, ममाथ, ममिथ०; मिम्यिम । मिम्ये । मीयात् । मा ४ सीष्ट, ता, स्यति, स्यते । ञिटि, मायि ३ षीष्ट, ता, ष्यते । "मिमी-"॥४।१।२०॥ इति इति, प्रमित्सति, ते । प्रमेमीयते । प्रमे २ मेति, मयीति । प्रमापयति । अमीमपत् । मीतः, २ वान् । मीत्वा । प्रमाय । माता । मातुम् । मातव्यम् ॥३॥

ग्रहीश् उपादाने; स्वीकारे । "ग्रहव्रश्च-"॥४।१।८४॥ इति य्वृति, "रषृ-वर्णे-"॥२।३।६३॥ इति णे च; गृह्णाति; आगृह्णाति । एवं वि, नि, परि, अव, अभि, उप, प्रति, अनु पूर्वोऽपि । गृह्णीतः, गृह्णन्ति, गृह्णासि, गृह्णीथः, गृह्णीथ, गृह्णामि, गृह्णीवः, गृह्णीमः। गृह्णीते, गृह्णाते, गृह्णते, गृह्णीषे, गृह्णाथे, गृह्णीध्वे, गृह्णे, गृह्णीवहे, गृह्णीमहे । गृह्यते । गृह्णीयात् । गृह्णीत । गृह्णातु, गृह्णीताम्, गृह्णन्तु । "व्यञ्जनाच्छ्न-"॥३।४।८०॥ इति आनः; गृहाण; गृह्णीतम्, गृह्णीत, गृह्णानि । गृह्णीताम्, गृह्णाताम्, गृह्णताम्, गृह्णीष्व, गृह्णीथाम्, गृह्णीध्वम्, गृह्णै, गृह्णावहै, गृह्णामहै । अगृह्णात्, अगृह्णीताम्, अगृह्णन्, अगृ ४ ह्णाः, ह्णीतम्, ह्णीत, ह्णाताम् ॥ अद्य० ॥ अग्रहीत् । "न श्वि-"॥४।३। ४९॥ इति न वृद्धिः, "गृह्ण-"॥४।४।३४॥ इतीटो दीर्घः, दीर्घस्य स्थानिवद्भा-वात् "इट ईति"॥४।३।७१॥ इति सिचो लुक्; अग्रहीष्टाम्, अग्रहीषुः, अग्रहीः, अग्रही ५ ष्टम्, ष्ट, षम्, ष्व, ष्म । अग्रहीष्ट, अग्रहीषाताम्; अग्रही २ ध्वम्, ढ्वम्; "हान्तस्था-"॥२।१।८१॥ इति वा ढः; अग्रहीड्ढ्वम्, अग्रही ३ षि, ष्वहि, ष्महि। अग्राहि, "स्वरग्रह-"॥३।४।६९॥ इति वा ञिटि; अग्राहिषाताम्। इटि तु, अग्रही-षाताम्; अग्राहि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्; अग्रही ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्। जग्राह, जगृहतुः, जगृहुः, जग्रहिथ, जगृहथुः, जगृह, जग्राह, जग्रह, जगृहि २ व, म । जगृहे, जगृहाते; जगृहिध्वे, ढ्वे; जगृहिमहे । गृह्यात्। इटि, ग्रही ६ षीष्ट; षीढ्वम्, षीध्वम्, ता, ष्यति, ष्यते । ञिटि, ग्राहि ५ षीष्ट; षीढ्वम्, षीध्वम्, ता, ष्यते । "ग्रहगुहश्च-"॥४।४।५९॥ इति नेटि; जिघृक्षति, ते । जरीगृह्यते । "गृह्ण-"॥४।४।३४॥ इत्यत्र विहितविशेषणाद् यङि इटो न दीर्घः; अजरीगृहिष्ट । जरीगृहि ३ ता, तुम्, तव्यमित्यादि । लुपि तु, जरी, रि, र् ३ गृहीति । अत्र "लुप्यय्वृत्-"॥७।४।११२॥ इत्यत्र य्वृद्वर्जनाद् यङ्लुप्यपि य्वृत्-सिद्धम् । जरि ११ गर्ढि, गृढः, गृहति, घर्क्षि, गृहीषि, गृढः, गृढ, गर्ह्मि, गृहीमि, गृह्वः, गृह्मः । जर्गृह्यते । जरिगृह्यात् । जर्गर्ढु; जर्गृ ५ हीतु, ढाम्, हतु, ढि, हाणि । अजरी ६ घर्ट्, घर्ड्, गृढाम्, गृहुः, घर्ट्, घर्ड् ॥ अद्य० ॥ अजरिगर्हीत्; "गृह्ण-"॥४।४।३४॥ इत्यत्र लुप्ततिव्निर्देशान्न दीर्घे; अजरिग-

८ र्हिष्टाम्, र्हिषुः० । जरिगर्हाञ्चकार । जरिगर्हिष्यति । जरिगर्हि ३ ता, तुम्, तव्यम् । जरिगृहितः । उद्ग्राहयति । अजिग्रहत् । ग्राहयांचकार, चक्रे वा णिगन्तभूवत् । जिग्राहयिषति । गृह्णन् । गृह्णती । गृह्णानः । गृह्यमाणम् । ग्रही ४ ष्यन्, ष्यन्ती, ष्यती, ष्यमाणः । जगृह्वान् । जगृहाणः । गृहीतः, २ वान् । निगृहीतिः । "रुदविद-"॥४।३।३२॥ इति क्त्वासनोः कित्त्वे; गृहीत्वा । सङ्गृह्य । ग्रही ३ ता, तुम्, तव्यम् । ग्रहणीयम् । ग्राह्यम् ॥ ४ ॥

अथ प्वादिः ।

पूगृश् पवने; पवनं शुद्धिः । "प्वादेः-"॥४।२।१०५॥ इति ह्रस्वे; पुनाति, पुनीतः, पुनन्ति० । पुनीते, पुनाते, पुनते । क्ये, पूयते ॥ अद्य० ॥ अपा २ वीत्, विष्टाम् । अपविष्ट, अपविशाताम् । अपावि, अपविषाताम्, अपाविषाताम् । पुपाव, पुपुवतुः, पुपुवुः, पुपविथ, पुपुवथुः, पुपुव, पुपाव, पुपव, पुपुवि २, व, म । पुपुवे, पुपुवाते । पूयात् । पविषीष्ट, पाविषीष्ट; पविषीढ्वम्, ध्वम् । पविता, पाविता । पविष्यति, ते; पाविष्यते । "ग्रहगुहश्च-"॥४।४।५९॥ इति नेट्, पुपूषति, ते । पोपूयते । अचि, पोपूया । पोपोति, पोपवीति, पोपूतः; अत्यादावित्यधिकारात् "प्वादेः-"॥४।२।१०५॥ इति न ह्रस्वः; पोपुवति । क्ते, पोपुवितः । शेषं यङ्लुबन्तभूवत् । पावयति । पाव्यते । अपीपवत् । णौ सनि "ओर्जान्त-"॥४।१।६०॥ इति ओः इः, पिपावयिषति । पुनन् । पुनती । पुनानः । पूयमानम् । पविष्य २ न्, माणः । पवि २ ष्यन्ती, ष्यती । पुपूवान् । पुपुवानः । किति "उवर्णात्" ॥४।४।५८॥ इति नेट्; पूतः, २ वान् । पूतिः । नाशे "पूदिवि-"॥४।२।७२॥ इति नत्वे, पूना यवाः । नाशादन्यत्र, पूतं धान्यम् । पूत्वा । पवि ३ ता, तुम्, तव्यम् । ये, पव्यम् । घ्यणि; पाव्यम् । पूङ् पवने । पवते । पिपविषते ॥ ५ ॥

अथ प्वाद्यन्तर्गणो ल्वादिः । लूगृश् छेदने । लुनाति । लुनीते । लूयते । अलावीत्, अलाविष्टाम् । अलविष्ट; अलवि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम् । लुलाव; लुलविथ । लुलुवे; लुलुविध्वे, ढ्वे । लवि २ षीध्वम्, षीढ्वम् । लविष्यति, ते । "एकधातौ-"॥३।४।८६॥ इति ञिच्ञिट्क्यात्मनेपदेषु; लूयते ।

अलावि । लाविता, लविता । लाविष्यते, लविष्यते वा केदारः स्वयमेव । लुलूषति, ते । लोलूयते । सनि, लोलूयिषते । लुपि तु, लोलवीति, लोलोति ॥ अद्य० ॥ अलोलावीत्। लोलवाञ्चकार । लोलविष्यति ॥ भाक ॥ लोलाविष्यते, लोलविष्यते। लावयति। लाव्यते। अलीलवत्। णिगन्तात्कर्मकर्त्तरि; "णिस्नु-" ॥३।४।९२॥ इति ञिच्, "भूषार्थ-"॥३।४।९३॥ इति ञिट्क्यौ च निषिद्धाः । लावयते; अलीलवत वा रम्भा स्वयमेव। णिगन्तात्सनि; लीलावयिषति।लुनन्। लुनानः । लूत्वा । एवं सर्वः पूग्श्वत्; नवरं "ऋल्वादेः-"॥४।२।६८॥ इति क्त-क्तवान्तस्य नत्वे; लूनः, २ वान् । लूनिः ॥ ६ ॥

धूग्श् कम्पने । प्वादित्वात् ह्रस्वे; धुनाति । धुनीते । क्ये, धूयते । धुनीयात्। धुनीत । धुनातु । धुनीताम् । अधुनात्। अधुनीत । शेषं सर्वं धूग्ट्वत्; नवरं "ऋल्वादेः-"॥४।२।६८॥ इति ने; धूनः, २ वान् । धूनिः । धूग्ट् कम्पने । धूनोति। धूनुते । धूत् विधूनने । धुवति। धूग्ण् कम्पने । युजादित्वाद्वा णिचि, धूनयति । धवति। धवते ॥ ७ ॥

स्तॄग्श् आच्छादने । प्वादित्वात् ह्रस्वे; स्तृणाति । वि, सम्, प्र, आङ्, निःपूर्वोऽप्येवम्। स्तृणीतः, स्तृणन्ति । स्तृणीते, स्तृणाते, स्तृणते । आस्तीर्यते । व्यस्तारीत्; आस्तारीत्, आस्तारि २ ष्टाम्, षुः । "इट् सिजाशिषो-"॥४।४।३६॥ इति वेट्, "वृतो नवा-"॥४।४।३५॥ इति वेटो दीर्घः, आस्तरिष्ट, आस्तरीष्ट; "ऋवर्णात्"॥४।३।३६॥ इति सिचः कित्त्वे, आस्तीर्ष्ट । आस्तारि, आस्तरिषाताम्, आस्तरीषाताम्, आस्तीर्षाताम् । ञिटि, आस्तारिषाताम् । तस्तार, "स्कृच्छ्रृत-"॥४।३।८॥ इति गुणे; तस्तरतुः, तस्तरुः, तस्तरिथ, तस्तरथुः, तस्तर, तस्तार, तस्तर, तस्तरि २ व, म । तस्तरे । स्तीर्यात् । स्तरिषीष्ट, स्तीर्षीष्ट, स्तारिषीष्ट । स्तरिता २, स्तरीता २, स्तारिता । स्तरिष्यति, ते; स्तरीष्यति, ते; स्तारिष्यते । "इवृध-"॥४।४।४७॥ इति वेटि, "नामिनोऽनिट्" ॥४।३।३३॥ इति कित्त्वे च; आतिस्तारिषति, ते; आतिस्तरीषति, ते; आतिस्तीर्षति, ते । तेस्तीर्यते । तास्तरीति, तास्तर्त्ति । विस्तारयति । "स्मृदृत्वर-" ॥४।१।६५॥ इति पूर्वस्यात्वे, व्यतस्तरत् । स्तृणन्। स्तृणानः । आतिस्तीर्वान् ।

आतिस्तिराणः। काने प्राग् द्वित्वं पश्चादिर्, स्वरविधित्वात्। किति "ऋवर्णश्रि-"॥४।४।५७॥ इति नेटि, "ऋल्व-"॥४।२।६८॥ इति नत्वे; आस्तीर्णः, २ वान् । आस्तीर्णिः । स्तीर्त्वा । आस्तीर्य । स्तरि ३ ता, तुम्, तव्यम् । स्तरणीयम् । घ्यणि, आस्तार्यः ॥ ८ ॥

वृग्श् वरणे । "प्वादेर्ह्रस्वः"॥४।२।१०५॥ वृणाति । वृणीते। क्ये, वूर्यते । अवारीत्, अवारिष्टाम् । अवरिष्ट, अवरीष्ट, अवूर्ष्ट ३ । अवारि, अवरिषाताम्, अवरीषाताम्, अवूर्षाताम्; अवारिषाताम् । ववार; "स्कृच्छृत-"॥४।३।८॥ इति गुणे; ववरतुः । वव्रे । वूर्यात् । वरिषीष्ट, वूर्षीष्ट, वारिषीष्ट । वरिता, वरीता । वारिता । वरिष्यति, ते; वरीष्यति, ते; वारिष्यते । विवरिषति, ते; विवरीषति, ते; वुवूर्षति, ते । वोवूर्यते । वावरीति, वावर्त्ति, वावूर्त्तः, वावुरति । वावुरत् । वारयति । अवीवरत् । वृणन् । वृणती । वृणानः । वरिष्यन्; वरीष्यन् । वुवूर्वान् । वुवुराणः । वूर्णः, २ वान् । वूर्णिः । वूर्त्वा । प्रवूर्य । वरि ३ ता, तुम्, तव्यम्; वरी ३ ता, तुम्, तव्यम् । वरणीयम् । वार्यम् । ह्रस्वान्तोऽयमिति नन्दी ॥ ९ ॥ इत्युभयपदिनः ।

अनिटौ द्वौ ॥ ज्यांश् हानौ । वयोहानाविलेके । "ज्याव्यध-"॥४।१।८१॥ इति य्वृति, "दीर्घमव-"॥४।१।१०३॥ इति दीर्घे, "प्वादेः-"॥४।२।१०५॥ इति ह्रस्वे; जिनाति, त्यजतीत्यर्थः । जिनीतः, जिनन्ति । क्ये, जीयते । अज्या ३ सीत्, सिष्टाम्, सिषुः । अज्यायि, अज्यासाताम्, अज्यायिषाताम् । "ज्याव्येव्याधि-"॥४।१।७१॥ इति पूर्वस्येत्वे; जिज्यौ, जिज्यतुः, जिज्युः; "सृजिदृशि-"॥४।४।७८॥ इति वेटि; जिज्यिथ, जिज्याथ, जिज्यथुः, जिज्य, जिज्यौ, जिज्यि २ व, म । जिज्ये । जीयात् । ज्यासीष्ट, ज्यायिषीष्ट । ज्याता २, ज्यायिता । ज्यास्यति, ते; ज्यायिष्यते । जिज्यासति । जेजीयते । जेजेति, जेजयीति । ज्यापयति । अजिज्यपत् । जिनन्, जिनन्तौ। जिनती । जास्यन् । जिजीवान् । जिज्यानम् । "ऋल्व-"॥४।२।६८॥ इति ने; जीनः, २ वान् । जीत्वा । "ज्यश्च यपि"॥४।१।७६॥ इति य्वृदभावे; प्रज्याय । ज्याता । ज्यातुम् ॥ १० ॥

लींश् श्लेषणे। "प्वादेर्ह्रस्वः"॥४।२।१०५॥ लिनाति । क्ये, लीयते। यबक्ङिति, "लीङ्लिनोर्वा"॥४।२।९॥ इति वा आत्वे; व्यलासीत्, व्यलैषीत्। अलायि, अलासाताम्, अलेषाताम्; अलायिषाताम् । लिलाय, लिल्यतुः । लिल्ये । लीयात् । लासीष्ट, लेषीष्ट; लायिषीष्ट । विलास्यति, ते; विलेष्यति, ते; लायिष्यते । लिलीषति । लेलीयते । लुनातिवन्निर्देशात् यङ्लुपि न आः; लेलेति, लेलयीति। णौ "लीङ्लिनः-"॥३।३।९०॥ इत्यात्मनेपदे आत्वे च; जटाभिरालापयते। आत्मानं पूजां प्रापयतीत्यर्थः। श्येनो वर्त्तिकामुल्लापयते; अभिभवतीत्यर्थः। "लोलः" ॥४।२।१६॥ इति ले; विलालयति। पक्षे, "अर्त्तिरी-"॥४।२।२१॥ इति पौ; विलापयति। "लिय-"॥४।२।१५॥ इति ने, घृतं विलीनयति। पक्षे, "नामिन-"॥४।३।५१॥ इति वृद्धौ; घृतं विलाययति। लिनन्। लेष्यन्; लास्यन्। विलाय; विलीय। विलाता; विलेता। विलातुम्, विलेतुम्। "ऋल्व-"॥४।२।६८॥ इति ने; लीनः, २ वान्॥११॥

कॄ, मॄ, शॄश् हिंसायाम्। कृणाति। अयं वक्ष्यमाणशॄश्वत्, परं परोक्षायाम्, "स्कृच्छृत-"॥४।३।८॥ इति गुण एव कार्यः। चकार, चकरतुः, चकरुः, चकरिथ० । चकरे ॥ मॄः पुनर्वॄग्श्वत् ॥ शॄ ॥ प्वादेर्ह्रस्वे; वज्रं गिरीन् शृणाति, शृणीतः, शृणन्ति । क्ये, शीर्यते; विशीर्यते । व्यशारीत्। व्यशारि। "इट् सिज-"॥४।४।३६॥ इति वेटि, "वॄत-"॥४।४।३५॥ इति इटो वा दीर्घे; व्यशरिषाताम्, व्यशरीषाताम्, व्यशीर्षाताम्; ञिटि, व्यशारिषाताम्। विशशार; "ऋः शॄदॄप्रः"॥४।४।२०॥ इति वा ऋः; विशश्रतुः, विशश्रुः। पक्षे, "स्कृच्छृ-" ॥४।३।८॥ इति गुणे; विशशरतुः, विशशरुः; शशरिथ०; शशरिम, शश्रिम। शशरे, शश्रे। शीर्यात्। शरिषीष्ट; शीर्षीष्ट; शारिषीष्ट । शरिता, शरीता; शारिता। शरिष्यति, ते; शरीष्यति, ते; शारिष्यते। शिशरिषति, शिशरीषति, शिशीर्षति। शेशीर्यते। शाशरीति, शाशर्त्ति। विशारयति। व्यशीशरत्। विशशृवान्; विशश्राणम्। पक्षे, विशिशीर्वान्; विशशिराणम्। काने पूर्वं द्वित्वं पश्चादिर्, स्वरविधित्वात्। "ऋवर्णश्र्यू-"॥४।४।५७॥ इति नेटि, "ऋल्व-" ॥४।२।६८॥ इति ने; शीर्णः, २ वान्। शीर्णिः। शीर्त्वा। विशीर्य। शरि ३ ता, तुम्, तव्यम्; शरी ३ ता, तुम्, तव्यम्॥ १४॥

पॄश् पालनपूरणयोः। "प्वादेर्ह्रस्वः"॥४।२।१०५॥ मेघः सरांसि पृणाति, पृणीतः, पृणान्ते। क्ये, पूर्यते॥ अद्य०॥ अपारीत्, अपारिष्टाम्। अपारि, अपरिषाताम्; अपरीषाताम्, अपूर्षाताम् । ञिटि, अपारिषाताम् । पपार; "ऋः शॄदॄप्रः"॥४।४।२०॥ "स्कृच्छॄ-"॥४।३।८॥ इति गुणश्च; पप्रतुः, पपरतुः, पप्रुः, पपरुः, पपरिथ०; पप्रिम, पपरिम। पप्रे, पपरे। पूर्यात्। परिषीष्ट, पूर्षीष्ट; पारिषीष्ट। परिता २, परीता २; पारिता। परिष्यति, ते; परीष्यति, ते; पारिष्यते। पिपरिषति, पिपरीषति, पुपूर्षति। पोपूर्यते। पापरीति, पापर्त्ति, पापूर्त्तः, पापुरति, पापरीषि, पापर्षि, पापूर्थः, पापूर्थ, पापरीमि, पापर्मि, पापूर्वः, पापूर्मः। क्ये, पापूर्यते। पापूर्यात्। पापरीतु। अपापः, अपापरीत्, अपापूर्त्ताम्, अपापरुः, अपापः, अपापरीः । पारयति। अपीपरत्। अस्य पूरेश्च "णौ दान्त-"॥४।४।७४॥ इति क्ते वा निपातनात्; पूर्णः। पक्षे, पारितः। पृणन्। पृणती। परिष्यन्; परीष्यन्। निपपृवान्। निपप्राणम्। पक्षे, पुपूर्वान्; द्वित्वे कृते उरि, पपुराणम्। "ऋल्व-"॥४।२।६८॥ इत्यत्र वर्जनान्नत्वाभावे; पूर्त्तः, २ वान्। पूर्त्वा। प्रपूर्य। परि ३ ता, तुम्, तव्यम्; परी ३ ता, तुम्, तव्यम्। परणीयम्। शेषं तॄवत्, नवरं कर्मकर्त्तरि अद्यतन्यां, अतीर्ष्टस्थाने अपूर्ष्टेति रूपं ज्ञेयम्॥ १५॥

दॄश् विदारणे। भय इत्यन्ये। इन्द्रोऽद्रीन् वज्रेण दृणाति। विदीर्यते। अदारीत्। ददार। "ऋः शॄदॄप्रः"॥४।४।२०॥ "स्कृ-"॥४।३।८॥ इति गुणश्च; दद्रतुः; ददरतुः, दद्रुः, ददरुः। दद्रे, ददरे। दीर्यात्। दरिता, दरीता, दारिता। दरिष्यति, ते; दरीष्यति, ते; दारिष्यते। विदारयति; अवदारयति। "स्मृदॄ-"॥४।१।६५॥ इति पूर्वस्य अत्वे; अददरत्। दीर्णः, २ वान्। दीर्णिः। दरिता, दरीता। शेषं सर्वं स्तॄग्श्वत्॥ १६॥

जॄश् वयोहानौ। "प्वादेः-"॥४।२।१०५॥ ह्रस्वे, जृणाति। जीर्यते। जृणीयात्। जृणातु। अजृणात्। णौ, जारयति। अजीजरत्। अजारि। शेषं सर्वं जॄष्च्वत्, नवरं क्त्वि "जॄव्रश्च-"॥४।४।४१॥ इतीटि; जरित्वा, जरीत्वा इति स्यात्॥ १७॥

गॄश् शब्दे। गृणाति। गीर्यते। अगारीत्। अगारि। जगार; "स्कॄ-"

॥४।३।८॥ इति गुणे; जगरतुः । जगरे । गीर्यात् । गरिता, गरीता, गारिता । जिगीर्षति, जिगरिषति, जिगरीषति । गीर्णः, २ वान् । गीर्णिः । शेषं शॄवत्, परं "न गृणाशुभरुचः"॥३।४।१३॥ इति निषेधात् न यङ्; गर्हितं गृणाति ॥१८॥

इति प्वादिर्ल्वादिश्च ।

ज्ञांश् अवबोधने । अनिट् । "जा ज्ञा-"॥४।२।१०४॥ इति जादेशे; जानाति; "एषाम्-"॥४।२।९७॥ इतीत्वे, जानीतः, जानन्ति, जानासि, जानीथः, जानीथ, जानामि, जानीवः, जानीमः । फलवत्कर्त्तरि, "ज्ञोऽनुपसर्गात्"॥३।३।९६॥ इत्यात्मनेपदे, धर्मं जानीते । "पदान्तरगम्ये वा"॥३।३।९९॥ स्वां गां जानीते, जानाति वा । उपसर्गात्तु, "शेषात्-"॥३।३।१००॥ इति परस्मैपदे, प्रत्यभिजानाति; अनुजानाति शिष्यम्; अवजानासि माम् । "निह्नवे ज्ञः"॥३।३।६८॥ शतमपजानीते, अपह्नुत इत्यर्थः । संप्रतेरस्मृतौ; "समो ज्ञो-"॥२।२।५१॥ इति व्याप्ये वा तृतीयायाम्; मात्रा मातरं वा सञ्जानीते, अवेक्षत इत्यर्थः । नित्यं शब्दं प्रतिजानीते, अभ्युपगच्छतीत्यर्थः । स्मृतौ तु; मातुः सञ्जानाति, स्मरतीत्यर्थः । कर्मण्यसति, "ज्ञः"॥३।३।८२॥ इत्यात्मनेपदे, "अज्ञाने ज्ञः-"॥२।२।८०॥ इति करणे षष्ठ्याम्; सर्पिषो जानीते; नात्र सर्पिर्ज्ञेयत्वेन विवक्षितं, किं तर्हि प्रवृत्तौ करणत्वेन; सर्पिषा करणेन भोक्तुं प्रवर्त्तत इत्यर्थः । जानाते, जानते, जानीषे, जानाथे, जानीध्वे, जाने, जानी २ वहे, महे । क्ये, ज्ञायते । जानीयात् । जानीत । जानातु; जानीहि; जानानि । जानीताम् । अजानात्, अजानीताम्, अजानन्, अजा ६ नाः, नीतम्, नीत, नाम्, नीव, नीम । अजानीत । अज्ञासीत्, अज्ञासिष्टाम्, अज्ञा ७ सिषुः, सीः, सिष्टम्, सिष्ट, सिषम्, सिष्व, सिष्म । अज्ञास्त, अज्ञासाताम्, अज्ञासत, अज्ञास्थाः, अज्ञा ६ साथाम्, ध्वम्, द्ध्वम्, सि, स्वहि, स्महि । अज्ञायि, अज्ञासाताम्, अज्ञायिषाताम् । जज्ञौ, जज्ञतुः, जज्ञुः; "सृजिदृशि-"॥४।४।७८॥ इति वेटि; जज्ञिथ, जज्ञाथ, जज्ञथुः, जज्ञ, जज्ञौ, जज्ञि २ व, म । जज्ञे, जज्ञाते । संयोगादेर्वाशिष्येः"॥४।३।९५॥ ज्ञेयात्, ज्ञायात् । ज्ञासीष्ट, ज्ञायिषीष्ट । ज्ञाता २, ज्ञायिता । ज्ञास्यति, ते; ज्ञायिष्यते । "अननोः सनः"॥३।३।७०॥ इत्यात्मनेपदे;

धर्मं जिज्ञासते; अवजिज्ञासते । अनोस्तु; पुत्रमनुजिज्ञासति पाठाय । जाज्ञायते । त्यादौ तु न जा; जाज्ञाति, जाज्ञेति, जाज्ञीतः, जाज्ञति । एवं यङ्लुपि त्रैङ्वत् । शतरि तु यङ्लुपि, जाज्ञातीति वाक्ये 'जा ज्ञाजन-" ॥४।२।१०४॥ इति जादेशे, "श्नश्चातः"॥४।२।९६॥ इत्याल्लुकि; जत्, अत्यर्थं जानन्नित्यर्थः । णौ, आदेशादागम इति न्यायात् प्राग् प्वागमे पश्चात् "मारणतोषण-"॥४।२।३०॥ इति ह्रस्वे; मारणे, संज्ञपयति पशुम् । तोषणे, विज्ञपयति राजानम् । ज्ञपयति गुरुम् । निशाने; प्रज्ञपयति शस्त्रम् । अन्यत्र, ज्ञापयति; आज्ञापयति । ङे, व्यजिज्ञपत् । ञिणम्परे तु वा दीर्घः; व्यज्ञापि, व्यज्ञपि; आज्ञापि । ञिटि, व्यज्ञापिषाताम्, व्यज्ञपिषाताम्; आज्ञापिषाताम्, इटि तु, व्यज्ञपयिषाताम्, आज्ञापयिषाताम् । "णौ दान्त-"॥४।४।७४॥ इति क्ते वा निपातनात्; संज्ञप्तः; विज्ञप्तः; प्रज्ञप्तः; आज्ञप्तः; पक्षे, "सेट्क्तयोः" ॥४।३।८४॥ इति णेर्लुकि; संज्ञपितः; विज्ञपितः; प्रज्ञपितः । आज्ञापितः; अत्र मारणाद्यर्थाभावान्न ह्रस्वः । तेर्ग्रहादिभ्य एवेति नियमान्नेटि; ज्ञप्तिः । "इवृध-" ॥४।४।४७॥ इति सनि वेटि; जिज्ञपयिषति । पक्षे, "ज्ञप्याप-"॥४।१।१६॥ इति ज्ञीप् नच द्विः; ज्ञीप्सति । "इवृध-"॥४।४।४७॥ इत्यत्र ज्ञपीति कृतह्रस्वस्योपादानात्, ज्ञापेर्जिज्ञापयिषतीत्येव भवति । "लघोर्यपि"॥४।३।८६॥ इति अयि; विज्ञपय्य; आज्ञाप्य । शेषं णिजन्तज्ञाणूवत् । जानन् । जानती । जानानः । ज्ञायमानम् । ज्ञास्यन् । ज्ञास्यती । ज्ञास्यमानः । जज्ञिवान् । जज्ञानः । "ज्ञानेच्छा-"॥५।२।९२॥ इति साति क्ते; ज्ञातः, २ वान् । ज्ञातिः । ज्ञात्वा । विज्ञाय । ज्ञा ३ ता, तुम्, तव्यम् । ज्ञेयम् ॥ १९ ॥

मन्थश् विलोडने । मथ्नाति, मथ्नीतः, मथ्नन्ति । मथ्यते । हौ "व्यञ्जनाच्छ्नाहेरानः"॥३।४।८०॥ मथान ॥ अद्य० ॥ अमन्थीत्; अमन्थिष्टाम् । अमान्थि, अमन्थिषाताम् । ममन्थ । "इन्ध्यसं-"॥४।३।२१॥ इति कित्त्वाभावे; ममन्थतुः, ममन्थुः, ममन्थिथ । ममन्थे । मथ्यात् । मन्थिषीष्ट । मन्थिता । मन्थिष्यति । मिमन्थिषति । मामथ्यते । मामन्थीति । "अघोषे प्रथमो-"॥१।३।५०॥ इति थस्ते, मामन्ति । मन्थयति अममन्थत् । मथ्नन् । मथ्नती । मन्थिष्यन् । कित्त्वान्नलुकि एलम्;

मेथिवान् । मथितः, २ वान् । "ऋत्तृष-"॥४।३।२४॥ इति क्त्वो वा किन्त्वे; मथित्वा, मन्थित्वा । प्रमथ्य । मन्थि ३ ता, तुम्, तव्यम् । मन्थनीयम् । मन्थ्यम् ॥ २० ॥

ग्रन्थश् सन्दर्भे; बन्धने । ग्रथ्नाति । ग्रथ्यते । हौ, ग्रथान ॥ अद्य० ॥ अग्रन्थीत्, अग्रन्थिष्टाम् । अग्रन्थि, अग्रन्थिषाताम् । जग्रन्थ । "वा श्रन्थ-" ॥४।१।२७॥ इति वा एर्नलुक् च; ग्रेथतुः, जग्रन्थतुः; ग्रेथुः, जग्रन्थुः; "स्क्रसृ-" ॥४।४।८१॥ इतीटि, ग्रेथिथ, जग्रन्थिथ । ग्रेथे, जग्रन्थे । ग्रथ्यात् । ग्रन्थिषीष्ट । ग्रन्थिता । ग्रन्थिष्यति । कर्मकर्त्तरि, "एकधातौ-"॥३।४।८६॥ इति ञिक्यात्मनेपदेषु, "भूषार्थ-"॥३।४।९३॥ इति क्यञ्योरभावे; ग्रथ्नीते माला स्वयमेव । अग्रन्थिष्ट माला स्वयमेव; जग्रन्थे वा । जिग्रन्थिषति । जाग्रथ्यते । जाग्रं २ थीति, त्ति । ग्रन्थयति । अजग्रन्थत् । ग्रथ्नन् । ग्रथ्नती । ग्रन्थिष्यन् । ग्रन्थिष्यन्ती, ग्रन्थिष्यती । जग्रथ्वान्; ग्रेथिवान् । ग्रेथानम्; जग्रथानम् । ग्रथितः, २ वान् । "ऋत्तृष-"॥४।३।२४॥ इति क्त्वो वा किन्त्वे; ग्रन्थित्वा, ग्रथित्वा । प्रग्रथ्य । ग्रन्थि ३ ता, तुम्, तव्यम् । ग्रन्थनीयम् ॥ २१ ॥

मृदश् क्षोदे । मृद्नाति, मृद्नीतः, मृद्नन्ति । क्ये, मृद्यते ॥ अद्य० ॥ अमर्दीत्, अमर्दिष्टाम् । अमर्दि, अमर्दिषाताम् । ममर्द, ममृदतुः, ममृदुः, ममर्दिथ; ममृदिम । ममृदे । मृद्यात् । मर्दिषीष्ट । मर्दिता । मर्दिष्यति । मिमर्दिषति । मरीमृद्यते । मरी, रि, र् ३ मृदीति; मरी, रि, र्, मर्त्ति । मर्दयति । अमीमृदत्, अममर्दत् । ममृद्वान् । ममृदानम् । मृदितः, २ वान् । "क्षुधक्लिश-"॥४।३।३१॥ इति किन्त्वे; मृदित्वा । प्रमृद्य । मर्दि ३ ता, तुम्, तव्यम् । मर्दनीयः । मर्द्यम्, मृद्यम् ॥ २२ ॥

बन्धंश् बन्धने । अनिट् । बध्नाति; उपनिबध्नाति; सम्बध्नाति । एवं वि, अनु, अभि, प्रति, निपूर्वोऽपि । बध्यते । हौ, बधान । "व्यञ्जनानाम्-"॥४।३।४५॥ इति वृद्धौ; "गडदबादेः-"॥२।१।७७॥ इति बस्य भे; अभान्त्सीत् । "धुड्ह्रस्व-"॥४।३।७०॥ इति सिचूलुकि भत्वाभावे च, अबान्द्धाम्, अभान्त्सुः; अभान्त्सीः, अबान्द्धम्; अबान्द्ध, अभान्त्सम्, अभान्त्स्व, अभान्त्स्म । अब-

न्धि, अभन्त्साताम्, अभन्त्सत, अबन्द्धाः, भत्से, अभन्द्ध्वम्, अभन्द्ध्वम् । "सो धि वा"॥४।३।७२॥ इति वा स्लुक्; अभान्त्सि । बबन्ध; "इन्ध्य-"॥४।३।२१॥ इति कित्त्वाभावे; बबन्धतुः, बबन्धुः; "सृज-"॥४।४।७८॥ इति वेटि, बबन्धिथ, बबन्त्थ; बबन्धिम । बबन्धे; बबन्धिध्वे । बध्यात् । भन्त्सीष्ट । बन्द्धा । सम्भन्त्स्यति । अभन्त्स्यत् । बिभन्त्सति । बाबध्यते । बाब २ न्धीति, न्त्ति । बन्धयति । अबबन्धत् । बध्नन् । भन्त्स्यन् । कित्त्वान्नलुकि, बेधिवान् । बेधानम् । बद्धः, २ वान् । बद्ध्वा । निबध्य । सम्बं ३ द्धा, द्धुम्, द्धव्यम् । बन्ध्यः ॥ २३ ॥

क्षुभश् सञ्चलने । "क्षुभ्नादीनाम्"॥२।३।९६॥ इति न णः, क्षुभ्नाति, क्षुभ्नीतः, क्षुभ्नन्ति । क्षुभ्यते । हौ, क्षुभाण । अक्षोभीत् । अक्षोभि, अक्षोभिषाताम् । चुक्षोभ, चुक्षुभतुः; चुक्षोभिथ । चुक्षुभे । क्षुभ्यात् । क्षोभिषीष्ट । क्षोभिता । क्षोभिष्यति । चुक्षुभिषति; चुक्षोभिषति । चोक्षुभ्यते । क्षोभयति । अचुक्षुभत् । क्षुभ्नन् । "क्षुब्ध-विरिब्ध-"॥४।४।७०॥ इति क्ते निपातनात्; क्षुब्धो मन्थः; क्षुभितोऽन्यः । "वौ व्यञ्जन-"॥४।३।२५॥ इति क्षुभित्वा; क्षोभित्वा । क्षोभि ३ ता, तुम्, तव्यम् । क्षुभि सञ्चलने । क्षोभते । क्षुभच् सञ्चलने । क्षुभ्यति । पुष्याद्यङि; अक्षुभत् ॥ २४ ॥

क्लिशौश् विबाधने । "तवर्गस्य-"॥१।३।६०॥ इति नो ञस्य, "न शात्"॥१।३।६२॥ इत्यभावे; क्लिश्नाति परं अकारणम् । अकर्मकोऽप्ययं दृश्यते, 'सूत्रार्थे क्लिश्नतश्चैवं दूरे तत्त्वार्थनिर्णयः' ॥ क्लिश्यते । हौ, क्लिशान । औदित्त्वाद्वेटि; अक्लेशीदित्यादि । पक्षे "हशिट-"॥३।४।५५॥ इति साकि; "यज-"॥२।१।८७॥ इति शः षे; "षढोः कः-"॥२।१।६२॥ इति के, सस्य षत्वे; अक्लिक्षत्, अक्लि ८ क्षताम्, क्षन्, क्षः, क्षतम्, क्षत, क्षम्, क्षाव, क्षाम । अक्लेशि, अक्लिशाताम्, अक्लिक्षन्त । चिक्लेश । चिक्लिशे । क्लिश्यात् । क्लेशिषीष्ट, क्लिक्षीष्ट; अत्र "सिजाशिष-"॥४।३।३५॥ इति कित्त्वम् । क्लेष्टा, क्लेशिता । क्लेशिष्यति, क्लेक्ष्यति । चिक्लिक्षति; "उपान्त्ये"॥४।३।३४॥ इति कित्त्वम्; चिक्लिशिषति, चिक्लेशिषति । चेक्लिश्यते । चेक्लेष्टि, चेक्लिशीति । क्लेशयति । अचिक्लिशत् । क्लिश्नन् । क्तक्तवासु, "पूङ्क्लिशि-

भ्य-"॥४।४।४५॥ इति वेटि, क्लिष्टः, २ वान्; क्लिशितः, २ वान्। क्लिष्ट्वा; "क्षुध-क्लिश-"॥४।३।३१॥ इति किंत्त्वे; क्लिशित्वा । क्ले ३ ष्टा, ष्टुम्, ष्टव्यम्; क्लेशि ३ ता, तुम्, तव्यम् । क्लेशनीयम् । क्लिशिच् उपतापे । क्लिश्यते । क्लिश्यतीति त्वात्मनेपदस्यानित्यत्वज्ञापनात् ॥ २५ ॥

अशश् भोजने । अश्नाति, अश्नीतः, अश्नन्ति । अश्यते । हौ, अशान । अद्य० ॥ आशीत्, आशिष्टाम्, आशिषुः, आशीः । आशि, आशिषाताम्। आश, आशतुः; आशिथ। आशे। अश्यात्। अशिषीष्ट। अशिता। अशिष्यति । अशिशिषति । "अट्यर्त्ति-"॥३।४।१०॥ इति यङि, "स्वरादेः-"॥४।१।४॥ इति श्यद्विले, अश्याश्यते । लुपि तु, अश्द्विले; आशीति, आष्टि। आशयति चैत्र-मन्नम्; अत्र फलवत्यपि "चल्या-"॥३।३।१०८॥ इति परस्मैपदम् । आशिशत् । णिगन्तात्सनि; आशिशायिषति । अश्नन् । अश्नती । अश्यमानम् । अशिष्यन् । "वेयिवद्-"॥५।२।३॥ इति वा निपातनाद् भूतमात्रे क्वसुर्नञ्चेट्; अनाश्वान् । पक्षेऽद्यतन्याम्; नाशीत् । आशानम्। आशितः, २ वान् । "भावे चाशितात्"॥५।१।१३०॥ इति निर्देशात्; आशितस्तृप्तः । अशित्वा। प्राश्य । अशि ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥ २६ ॥

मुषश् स्तेये। मुष्णाति, मुष्णीतः, मुष्णन्ति। मुष्यते। मुष्णीयात्। मुष्येत। मुष्णातु। हौ, मुषाण । मुष्यताम्। अमुष्णात्। अमुष्यत । अमोषीत्, अमोषिष्टाम् । अमोषि, अमोषि ९ षाताम्, षत, ष्ठाः, षाथाम्, ध्वम्, ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि । मुमोष, मुमुषतुः, मुमुषुः, मुमोषिथ; मुमुषिम। मुमुषे। मुष्यात् । मोषिषीष्ट। मोषि २ ता, ष्यति। "रुदविद-"॥४।३।३२॥ इति क्त्वासनोः किंत्त्वे; मुमुषिषति । मोमुष्यते । मोमुषीति, मोमोष्टि, मोमु २ ष्टः, षति । मोमुषिषति । मोषयति । मोष्यते। अमूमुषत् । मुष्णन् । मुष्णती । मोषिष्यन् । मोषिष्यमाणम् । मुमुष्वान् । मुमुषाणम् । मुषितः, २ वान् । मुषित्वा। प्रमुष्य। मोषि ३ ता, तुम्, तव्यम् । मोषणीयः ॥ २७ ॥

पुषश् पुष्टौ । पुष्णाति । पुष्यते । हौ, पुषाण । अपोषीत्, अपोषिष्टाम्

पुपोष । पोषिता । एवमयं मुषश्वत्, नवरं क्त्वासनोः "वौ व्यञ्ज-"॥४।३।२५॥ इति वा किच्त्वम्; पुपुषिषति, पुपोषिषति । पुषित्वा; पोषित्वा ॥ २८ ॥

कुषश् निष्कर्षे; बहिष्कर्षणे । कुष्णाति; निकुष्णाति दाडिमम्, तद्बीजानि पृथक् करोतीत्यर्थः। कर्मकर्त्तरि शिद्विषये, "कुषिरञ्ज-"॥३।४।७४॥ इति वा परस्मैपदे श्ये च, कुष्यति पादः स्वयमेव। पक्षे, "एकधातौ-"॥३।४।८६॥ इति क्ये, आत्मनेपदे च; कुष्यते पादः स्वयमेव । ह्यौ, कुषाण । अकुष्णात् । अकोषीत् । निरःपरात् "निष्कुषः"॥४।४।३९॥ इति वेटि साकि; निरकुक्षत् । पक्षे सिचि; निरकोषीत् । चुकोष । कोषिता । कोषिष्यति । निष्कोक्ष्यति । निष्कोषिष्यति । "वौ व्यञ्जन-"॥४।३।२५॥ इति सनो वा किच्त्वे; चुकुषिषति, चुकोषिषति । "उपान्त्ये"॥४।३।३४॥ इति किच्त्वे; निश्चुकुक्षति । इटि तु, निश्चुकुषिषति, निश्चुकोषिषति । निश्चोकुष्यते । निष्कोषयति । निरचूकुषत् । "क्षुधक्लिश-"॥४।३।३१॥ इति किच्त्वे; कुषित्वा । निष्कुष्य । निष्को २ ष्टा, ष्टुम्; निष्कोषि २ ता, तुम् । "क्तयोः"॥४।४।४०॥ इतीटि; निष्कुषितः, २ वान् ॥ २९ ॥

वृङ्श् सम्भक्तौ; सम्भक्तिः संसेवा । "एषाम्-"॥४।२।९७॥ इतीत्वे; वृणीते । व्रियते । "इट् सिजाशिषोः-"॥४।४।३६॥ इति वेटि, "वृत-"॥४।४।३५॥ इतीटो वा दीर्घे; अवरिष्ट; अवरीष्ट । पक्षे, "ऋवर्णात्"॥४।३।३६॥ इति सिचः किच्त्वे, अवृत । वव्रे । वरिषीष्ट, वृषीष्ट । वरिता, वरीता। वरिष्यति, वरीष्यति । "इवृध-"॥४।४।४७॥ इति वेटि; विवरिषते, विवरीषते, वुवूर्षति । वृतः, २ वान् । वृत्वा । एवमयमात्मनेपद एव वृग्वत् ज्ञातव्यः ॥ ३० ॥

इति तपागच्छेशश्रीदेवसुन्दरसूरिशिष्यश्रीगुणरत्नसूरिविरचिते क्रियारत्नसमुच्चये क्र्यादिगणः ।



अथ चुरादिः ।

चुरण् स्तेये। "चुरादिभ्यः-"॥३।४।१७॥ स्वार्थे णिचि, "शेषात्-"॥३।३।१००॥ इति परस्मैपदे, चोरयति। णिचो गित्त्वाभावात्फलवत्कर्त्तर्यात्मनेपदं नास्ति। चन्द्रस्तु णिच्यप्युभयपदित्वमाम्नासीत्, णिज्विकल्पं च। क्ये, चोर्यते। चोरयेत्। चोरयतु; चोरयाणि। अचोरयत् ॥ अद्य० ॥ "णिश्रि-"॥३।४।५८॥ इति ङे; अचूचुरत्, अचूचुरताम्, अचूचुरन्; अचूचुराम। ञिचि, अचोरि; ञिटि, अचोरिषाताम्; इटि, अचोरयिषाताम्, अचोरिषत, अचोरयिषत; अचोरि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, अचोरयि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्। "धातोरनेकस्वर-"॥३।४।४६॥ इत्यामि; चोरयाञ्चकार; कृग उभयपदित्वेऽपि, "आमः कृगः"॥३।३।७५॥ इत्यत्र प्राच्यधातुवदिति भणनान्नात्रात्मनेपदम्। चोरयाम्बभूव, चोरयामासेत्यादि ॥ भाक ॥ चोरयां ३ चक्रे, बभूवे, आहे। हं नेच्छन्त्येके॥ चोरयामासे। चोर्यात्। चोरयिषीष्ट, चोरिषीष्ट। चोरयि २ ता, चोरिता। चोरयिष्यति, ते; चोरिष्यते। कर्मकर्त्तरि "एकधातौ-"३।४।८६॥ इति ञिक्यात्मनेपदेषु प्राप्तेषु; "णिस्नु-"॥३।४।९२॥ इति ञिचो, "भूषार्थसन्-"॥३।४।९३॥ इति क्यस्य च निषेधादात्मनेपदे, चोरयते। अचूचुरत्। इटि, चोरयिषीष्ट, चोरयिष्यते वा गौः स्वयमेव। ण्यन्ताञ्ञिच एव प्रतिषेधात् ञिट् भवत्येव। चोरिषीष्ट; चोरिष्यते गौः स्वयमेव। सनि, चुचोरयिषति। णिजन्तस्यानेकस्वरत्वान्न यङ्। णिजन्ताण् णिगि, चोरयति द्रव्यं पत्तिभिः। ङे, "णेरनिटि"॥४।३।८३॥ इति णिजो लुक्यपि णिजात्याश्रयणात् समानलोपित्वाभावात् "उपान्त्यस्य-"॥४।२।३५॥ इति ह्रस्वे, "लघोर्दीर्घः"॥४।१।६४॥ इति पूर्वस्य दीर्घे च, अचूचुरत्। चोरयन्। चोरयन्ती। चोर्यमाणम्। चोरयिष्यन्। चोरयि २ ष्यन्ती, ष्यती। चोरिष्यमाणम्; चोरयिष्यमाणम्। चोरयां ३ चकृवान्, बभूवान्, आसिवान्। चोरयां ३ चक्राणम्, बभूवानम्, आसानम्। "सेट्क्तयोः"॥४।३।८४॥ इति णेर्लुकि; चोरितः, २ वान्। चोरयि ४ त्वा, ता, तुम्, तव्यम्। चोरणीयम्। चौर्यम्। इह पचुण् चितुण् प्रभृतीनां सनकारनिर्देशमकृत्वोदित्करणं चुरादिणिचोऽनित्यत्वज्ञापकम्, तेन चोरति चिन्ततीत्यादि सिद्धम्। तथा घुषेरविशब्दे इत्यत्रैकस्वरादित्यधिकारेण चुरादिपठितस्य विशब्दनार्थस्य

घुषेर्णिजन्तस्यानेकस्वरत्वादेव इट्प्रतिषेधाभावे सिद्धेऽपि, घुषेरविशब्दे इत्यत्र विशब्दप्रतिषेधाज्ज्ञाप्यते अनित्यश्चुरादिणिजिति; तेन "महीपालवचः श्रुत्वा जुघुषुः पुष्यमाणवाः" ॥ स्वाभिप्रायं नानाशब्दैराविष्कृतवन्त इत्यर्थः इत्यपि सिद्धम्। "चुरादिभ्यो णिच्"॥३।४।१७॥ इत्यत्र बहुवचनमाकृतिगणार्थम्; तेन संवाहयतीत्यादि सिद्धम् । अत्र चुरादौ सर्वत्र सर्वविभक्तिषु सर्ववचनविस्तरो णिगन्तभूवदुदाहार्यः ॥ १ ॥

पॄण् पूरणे । पारयति । क्ये, पार्यते । अपीपरत् । अपारि, अपारिषाताम्, अपारयिषाताम् । पारयां ३ चकार । पार्यात् । पारयिषीष्ट, पारिषीष्ट । पारयिता २, पारिता । पारयिष्यति, ते; पारिष्यते । सनि, पिपारयिषति । णिगि, पारयति । अपीपरत्। पारयन्। पारयिष्यन्। पारितः, २ वान् । पारयि ४ ता, तुम्, तव्यम्, त्वा । प्रपार्य ॥ २ ॥

पचुण् विस्तारे। नेऽन्ते । प्रपञ्चयति । ङे, प्रापपञ्चत् । शेषं चुरण्वत् ॥३॥

पूजण् पूजायाम् । पूजयति, पूजयतः, पूजयन्ति । पूज्यते । अपूपुजत्। अपूजि, अपूजिषाताम, अपूजयिषाताम् । पूजयाञ्चकार ३ । पूज्यात् । पूजयिषीष्ट; पूजिषीष्ट। पूजयिता २; पूजिता । पूजयिष्यति, ते; पूजिष्यते । पुपूजयिषति । णिगि णिजन्तसदृशमेव रूपं ज्ञेयम्। एवमग्रेऽपि सर्वत्र। पूजयन्। पूजयिष्यन् । पूजितः, २ वान् । "ज्ञानेच्छा-"॥५।२।९२॥ इति सति क्ते, "क्तयोरसद-" ॥२।२।९१॥ इति सदर्थस्य वर्जनात्प्रतिषेधाभावे "कर्त्तरि" ॥२।२।८६॥ इति षष्ठ्याम् ; राज्ञां पूजितः; "ज्ञानेच्छा-" ॥५।२।९२॥ इति प्रतिषेधान्नात्र षष्ठीसमासः । पूजयि ४ त्वा, तुम् , ता, तव्यम् । पूज्यम् ॥ ४ ॥

गजण् शब्दे । गाजयति । अयं तडण्वत् ॥ ५ ॥

तिजण् निशाने । तेजयति; उत्तेजयति । अतीतिजत् । तेजयामास ॥६॥

नटण् अवस्यन्दने; भ्रंशे । "जासनाट-"॥२।२।१४॥ इति वा कर्मत्वे, "शेषे"॥२।२।८१॥ इति षष्ठ्याम्; चौरस्योन्नाटयति । शेषं तडण्वत् ॥ ७ ॥

चुट्ठ, छुटण् छेदने । नेऽन्ते । चुण्टयति । अचुचुण्टत्॥ छोटयति। आछोटयति । आचुच्छुटत्। आच्छोटयामास ॥ ८ ॥ ९ ॥

कुट्टण् कुत्सने च; चाच्छेदने । कुट्टयति । अचुकुट्टत् । कुट्टयामास । कुट्टयिष्यति ॥ १० ॥

मुटण् संचूर्णने । मोटयति । मोट्यते । अमूमुटत् । मोटयामास ॥११॥

लुंटण् स्तेये च, चादनादरे । लुण्टयति । क्ये, लुण्ट्यते । अत्र णिलुकः स्थानित्वेनोपान्त्यत्वाभावान्नलुकोऽप्रसङ्गः । अलुलुण्टत् । लुलुण्टयिषति ॥१२॥

घट्टण् चलने । घट्टयति; सङ्घट्टयति । घट्टयते । अजघट्टत् । घट्टयामास । जिघट्टयिषति ॥ १३ ॥

स्फिटण् हिंसायाम् । स्फेटयति । स्फेट्यते । अपिस्फिटत् । स्फिटण् अनादरे इत्यन्ये ॥ १४ ॥

गुठुण् वेष्टने । नेऽन्ते । गुण्ठयति । गुण्ठ्यते । अजुगुण्ठत् । क्ते, अवगुण्ठितः ॥ १५ ॥

लडण् उपसेवायाम् । लाडयति । डस्य लत्वे, उपलालयति । अलील-लत् ॥ १६ ॥

ओलडुण् उत्क्षेपे । उदित्त्वान्ने; ओलण्डयति । ओलण्ड्यते । औललण्डत् ; "स्वरादेः-"॥४।१।४॥ इति द्वितीयस्य द्वित्वम् । "सेट्क्तयोः"॥४।३।८४॥ इति णेर्लुकि; ओलण्डितः, २ वान् ॥ १७ ॥

पीडण् गहने; गहनं बाधा । पीडयति; उत्पीडयति । डलयोरैक्ये; पीलयति; उत्पीलयति; उपपीडयति । क्ये, पीड्यते ॥ अद्य० ॥ "भ्राजभास-" ॥४।२।३६॥ इति वा ह्रस्वे, अपीपिडत्, अपिपीडत् । अपीडि; ञिटि, अपीडिषाताम्; इटि, अपीडयिषाताम् । पीडयाञ्चकार ३ । पीड्यात् । पीडिषीष्ट; पीडयिषीष्ट । पीडयिष्यति, ते; पीडिष्यते । सनि, पिपीडयिषति । पीडयन् । पीडयन्ती । पीडयिष्यन् । पीडयाञ्चकृवान् । पीडितः,२ वान् । पीडयित्वा । प्रपीड्य । पीडयि ३ ता, तुम्, तव्यम् । पीडनीयम् । पीड्यम् ॥ १८ ॥

तडण् आघाते । ताडयति । ताड्यते । अतीतडत् । अताडि, अताडिषाताम्, अताडयिषाताम् । ताडयाञ्चकार ३ । ताड्यात् । ताडिषीष्ट, ताडयिषीष्ट । ताडयिष्यति, ते; ताडिष्यते । तिताडयिषति । ताडितः, २ वान् । ताडयित्वा । प्रताड्य । ताडयि ३ ता, तुम्, तव्यम् । ताड्यः ॥ १९ ॥

उदितः पञ्च॥ खडुण् भेदे। खण्डयति । अचखण्डत् । खण्डयिष्यति ॥२०॥

कडुण् खण्डने च; चाद्भेदे । कण्डयति तण्डुलान् । कण्ड्यते । अचकण्डत् ॥ २१ ॥

गुडुण् वेष्टने च; चाद्रक्षणे। गुण्डयति। अवगुण्ड्यते। अजुगुण्डत ॥२२॥

मडुण् भूषायाम् । मण्डयति। मण्ड्यते । अममण्डत् । मण्डयाञ्चकार ३ । मण्डयिष्यति, ते; मण्डिष्यते । कर्मकर्त्तरि, "एकधातौ-"॥३।४।८६॥ इति ञिक्यात्मनेपदेषु प्राप्तेषु ण्यन्तत्वेऽपि भूषार्थत्वेन "भूषार्थ-"॥३।४।९३॥ इति ञिक्ययोर्निषेधात्; अममण्डत् कन्यां छात्रः ।अममण्डत । मण्डयिष्यते मण्डयते वा कन्या स्वयमेव। मिमण्डयिषति ॥ २३ ॥

पिडुण् सङ्घाते । पिण्डयति । पिण्ड्यते । अपिपिण्डत् ॥ २४ ॥

ईडण् स्तुतौ। ईडयति। ईड्यते। ङे, ऐडिडत्। ईडयामास ३। ईडयिष्यति, ते; ईडिष्यते । ऐडयिष्यत्, ऐडिष्यत । ईडिडयिषति । ईडितः, २ वान् । ईडयि ३ त्वा, ता, तुम् ॥ २५ ॥

चूर्णण् प्रेरणे; दलने । चूर्णयति । अचुचूर्णत् ॥ २६ ॥

श्रणण् दाने। श्राणयति; विश्राणयति । विश्राण्यते । अशिश्रणत्; अशश्राणत्; "भ्राजभास-"॥४।२।३६॥ इति वा ह्रस्वः । अश्राणि, अश्राणिषाताम्, अश्राणयिषाताम् । श्राणयाञ्चकार ३ । श्राण्यात् । श्राणयिषीष्ट, श्राणिषीष्ट । श्राणयिता २; श्राणिता । श्राणयिष्यति, ते; श्राणिष्यते । विशिश्राणयिषति । श्राणयन् । श्राणयिष्यन् । विश्राणितः, २ वान् । श्राणयित्वा । विश्राण्य । श्राणयि ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥ २७ ॥

चितुण् स्मृत्याम् । नेऽन्ते । चिन्तयति । चिन्त्यते । अचिचिन्तत्। अचिन्ति, अचिन्तिषाताम्, अचिन्तयिषाताम् । चिन्तयाञ्चकार ३ । चिन्त्यात्। चिन्तयिषीष्ट, चिन्तिषीष्ट । चिन्तयिता २; चिन्तिता । चिन्तयिष्यति, ते; चिन्तिष्यते । चिचिन्तयिषति । चिन्तयन् । चिन्तयिष्यन् । चिन्तयांबभूवान् ३। चिन्तितः, २ वान् । चिन्तयित्वा । विचिन्त्य । चिन्तयि ३ ता, तुम्, तव्यम् । चिन्त्यम् ॥ २८ ॥

कॄतण् संशब्दने; ख्यातौ। "कॄतः कीर्त्तिः"॥४।४।१२२॥ कीर्त्तयति; सङ्कीर्त्तयति; परिकीर्त्तयति, कीर्त्तयतः, कीर्त्तयन्ति । कीर्त्यते । कॄत ॠदुपदेशो ङे ऋकार श्रवणार्थः, तेन "ऋद्दवर्णस्य" ॥४।२।३७॥ इति कीर्त्यादेशापवादे ॠतो वा ऋति, अचीकृतत्, अचिकीर्त्तत् । चन्द्रमतेन णिजन्तस्य कर्त्तर्यात्मनेपदे; अचीकृतत, अचिकीर्त्तत० ३ । अचीकृते, अचिकीर्त्ते । अकीर्त्ति, अकीर्त्तिषाताम्, अकीर्त्तयिषाताम् । कीर्त्तयाञ्चकार ३ । कीर्त्यात् । कीर्त्तयिषीष्ट, कीर्त्तिषीष्ट । कीर्त्तयिता । कीर्त्तयिष्यति । चिकीर्त्तयिषति । कीर्त्तितः, २ वान् । कीर्त्तयि ४ त्वा, ता, तुम्, तव्यम् ॥ २९ ॥

पथुण् गतौ । ने, पन्थयति; परिपन्थयति । पन्थ्यते । पर्यपपन्थत् ॥३०॥

प्रथण् प्रख्याने । प्राथयति । प्राथ्यते । "स्मृदॄत्वर-" ॥४।१।६५॥ इति पूर्वस्यात्वे; अपप्रथत् । अप्राथि । प्राथयाञ्चकार । शेषं श्रणण्वत् ॥ ३१ ॥

छदण् संवरणे । छादयति गृहं तृणैः । छाद्यते । अचिच्छदत् । अच्छादि । चिच्छादयिषति । "णौ दान्त-"॥४।४।७४॥ इति क्ते वा निपातनात्, छन्नः; छादितः । शेषं श्रणण्वत् । अदन्तोऽप्ययमित्येके । छदयति ॥ ३२ ॥

चुदण् संचोदने; नोदने । चोदयति । "य एच्च-"॥५।१।२८॥ इति ये; चोद्यम् ॥ ३३ ॥

छर्दण् वमने । छर्दयति । अचछर्दत् ॥ ३४ ॥

बन्ध, बधण् संयमने । बन्धयति ॥ बधण् ॥ बाधयति । ङे, अबीबधत् ॥३५॥३६॥

यमण् परिवेषणे । यामयत्यतिथीन् । अयीयमत् । यामयामास । परिवेषणादन्यत्र तु, "यमोऽपरि-"॥४।२।२९॥ इत्यत्र णिचि च इति ह्रस्वे, यमयति; नियमयति; संयमयति । अयीयमत् । ञिणम्परे तु वा दीर्घः; अयामि, अयमि । यमयामास ॥ ३७ ॥

यत्रुण् सङ्कोचने । उदित्त्वान्ने; यन्त्रयति; नियन्त्रयति । न्यययन्त्रत् । न्ययन्त्रि । नियन्त्रयामास ॥ ३८ ॥

क्षलण् शौचे; शौचकर्मणि । क्षालयति; प्रक्षालयति । क्षाल्यते । अचिक्षलत् । अक्षालि । क्षालयामास । क्षालितम् । क्षालयित्वा । शेषं श्रणण्वत् ॥३९॥

तुलण् उन्माने । तोलयति; चुरण्वत् । तुलयतीति तु तुलाशब्दाद् "णिज्बहुलम्-"॥३।४।४२॥ इति णिजि रूपम् ॥ ४० ॥

दुलण् उत्क्षेपे । दोलयति। शेषं चुरण्वत् । अन्दोलयतीति तु रूढेः; यथा प्रेङ्खोलयति; वीजयति ॥ ४१ ॥

मूलण् रोहणे । मूलयति; उन्मूलयति । पूजण्वत् ॥ ४२ ॥

बुलण् निमज्जने । बोलयति । बोल्यते । अबूबुलत् । बोलितम्। बोलयि-३ त्वा, ता, तुम् ॥ ४३ ॥

पलण् रक्षणे । पालयति । प्रतिपर्यनुपूर्वोऽपि वाच्यः । अपीपलत् । अयं तडण्वत् ॥ ४४ ॥

इलण् प्रेरणे । एलयति । "उपसर्गस्यानिण्-" ॥१।२।१९॥ इत्यवर्णलोपे, प्रेलयति, परेलयति । प्रेल्यते। ङे ऐलिलत । प्रेलयामास ३ । प्रेलयिष्यति ॥४५॥

साँत्वण् सामप्रयोगे । सान्त्वयति । अससान्त्वत् । अषोपदेशात् "णिस्तो-रेव-"॥२।३।३७॥ इति षत्वाभावे; सिसान्त्वयिषति । षोपदेशोऽयमित्येके । सिषा-न्त्वयिषति ॥ ४६ ॥

पुंसण् अभिमर्दने । पुंसयति । क्ते, उत्पुंसितम् ॥ ४७ ॥

जसण् हिंसायाम् । "जासनाट-"॥२।२।१४॥ इति कर्मणो वा कर्मत्वे, चौरस्य चौरं वोज्जासयति ॥ ४८ ॥

भक्षण् अदने । भक्षयति । णिगि "भक्षेर्हिंसायाम्"॥२।२।६॥ इत्यणिक्कर्त्तुः कर्मत्वे, भक्षयति गौर्यवान् । भक्षयति गां यवान् मैत्रः; अत्र यवानां प्ररोहधर्म-त्वेन हिंसाऽस्त्येव । हिंसाया अन्यत्र, "गतिबोध-"॥२।२।५॥ इति प्राप्तमपि कर्मत्वं न भवतीति "हेतुकर्तृ-"॥२।२।४४॥ इति तृतीयायाम्; भक्षयति पिण्डीं शिशुना मैत्रः ॥ ४९ ॥

लक्षीण् दर्शनाङ्कनयोः; अङ्कनं चिह्नम् । फलवत्कर्त्तर्यात्मनेपदे; लक्षयते। फलवतोऽन्यत्र; लक्षयति; उपलक्षयति । लक्ष्यते । अललक्षत् ॥ ५० ॥

इतोऽर्थविशेषे आलक्षिणः ।

इतः परं प्रायः प्रागुक्ता अप्यर्थविशेषे ये लक्षिण् पर्यन्तास्चुरादयस्ते प्रस्तूयन्ते ॥

ज्ञाण् मारणादिनियोजनेषु। "मारणतोषण-"॥४।२।३०॥ इति ह्रस्वे; मारणे, संज्ञपयति पशुम् । तोषणे, विज्ञपयति गुरुम्; ज्ञपयति । निशाने, प्रज्ञपयति शस्त्रम् । नियोजने, आज्ञापयति भृत्यम्; अत्र मारणाद्यर्थाभावान्न ह्रस्वः । उक्तार्थेभ्योऽन्यत्र तु, क्र्यादित्वाच्छ्ना; जानाति। क्ये, विज्ञप्यते; आज्ञाप्यते। व्यजिज्ञपत्; आजिज्ञपत्। व्यज्ञपि; व्यज्ञापि, अज्ञापि। इटि, व्यज्ञपयिषाताम्; आज्ञापयिषाताम्। ञिटि, व्यज्ञपिषाताम्, व्यज्ञापिषाताम्, आज्ञापिषाताम्। विज्ञपयाञ्चकार ३; आज्ञापयाञ्चकार ३। विज्ञप्यात्; आज्ञाप्यात्। ज्ञपयिषीष्ट, ज्ञापयिषीष्ट; ज्ञपिषीष्ट, ज्ञापिषीष्ट । ज्ञपयिता, ज्ञापयिता; ज्ञपिता, ज्ञापिता । विज्ञपयिष्यति, ते; आज्ञापयिष्यति, ते । ञिटि, विज्ञपिष्यते; आज्ञापिष्यते । "इवृध-"॥४।४।४७॥ इति वेटि, जिज्ञपयिषति। पक्षे, "ज्ञप्याप-"॥४।१।१६॥ इति ज्ञीपि, ज्ञीप्सति । ज्ञापेस्तु; जिज्ञापयिषति । "णौ दान्त-"॥४।४।७४॥ इति वा निपातनात्; ज्ञप्तः, २ वान्; विज्ञप्तः,२ वान्; आज्ञप्तः, २ वान्; ज्ञपितः, २ वान्; विज्ञपितः,२ वान्; आज्ञापितः,२ वान्। विज्ञपय्य। आज्ञाप्य। विज्ञपयि ३ ता, तुम्, तव्यम्; आज्ञापयि ३ ता, तुम्, तव्यम्। संज्ञपयतीत्यत्र ज्ञाण्ज्ञांशोर्णिचि णिगि च रूपसाम्येऽप्यर्थभेदोऽस्ति, एकत्र स्वार्थोऽन्यत्र प्रयोक्तृव्यापारः। ज्ञाण् हि प्रथममेव स्वार्थे मारणे वर्त्तते; अन्यस्तु प्रथमं मरणे ततो मारणे इत्यर्थः । एवं विज्ञपयतीत्यादावपि ॥ ५१ ॥

भूण् अवकल्कने; मिश्रीकरणे । दध्नौदनं भावयति । अवकल्पन इत्यन्ये । भावयति साधुः समयम् । क्ये, भाव्यते॥ अद्य० ॥ अबीभवत् । अयं सर्वोऽपि णिगन्तभूवत् ॥ ५२ ॥

लिगुण् चित्रीकरणे । नेऽन्ते । लिङ्गयति शब्दम्। स्त्रीपुंनपुंसकलिङ्गैश्चित्रीकरोतीत्यर्थः । उल्लिङ्गयति । उदलिलिङ्गत् ॥ ५३ ॥

चर्चण् अध्ययने । चर्चयति शास्त्रम् । अचचर्चत् । अन्यत्र चर्च्परिभाषणे इति केचित् । चर्चति ॥ ५४ ॥

चट, स्फुटण् भेदने। चाटयति; उच्चाटयति। अयं तडण्वत्। णिचोऽनित्यत्वाच्चटति दोलायाम्; उच्चटति चित्रम्; विचटति ॥ स्फोटयति । स्फोट्यते । अपुस्फुटत् । आस्फोटयाञ्चकार। अर्थान्तरे तु स्फुटृ विशरणे। स्फोटति। स्फुटि विकसने । स्फोटते । स्फुटत् विकसने । स्फुटति ॥ ५५ ॥ ५६ ॥

घटण् सङ्घाते । घाटयति; उद्घाटयति । उद्घाटितः कपाटः । उद्घाटनम् । अयं तडण्वत् । अर्थान्तरे तु, घटिष् चेष्टायाम् । घटते । णिगि घटादित्वात् ह्रस्वे, घटयति ॥ ५७ ॥

हन्त्यर्थाश्च येऽन्यत्र हिंसार्थाः पठ्यन्ते तेऽप्यत्र चुरादौ वेदितव्याः; तेन णिज्शवादिकं कार्यं भवति ॥ हनंक् हिंसागत्योः । घातयति । हिसु, तृहप् हिंसायाम् । हिंसयति । तर्हयति । तत्तद्गणपाठसामर्थ्यात्तु हन्ति; हिनस्ति; तृणेढीत्यादयोऽपि अनेनैव सिद्धेऽन्येषां हिंसार्थानां चुरादौ पाठ आत्मनेपदादिगतरूपभेदार्थः ॥ ५८ ॥

यतण् निकारोपस्कारयोः; निकारः खेदनम् । यातयत्यरिम् । निर्यातयति वैरम् । "णिवेत्ति-"॥५।३।१११॥ इत्यने; यातना तीव्रव्यथा । उपस्कारे, यातयति दरिद्रो नरः परस्य धनम् । यातयति छिद्रं राजा; प्रच्छादयतीत्यर्थः । प्रतियातयति, प्रतिबिम्बयतीत्यर्थः । अर्थान्तरे, यतैङ् प्रयत्ने । यतते ॥ ५९ ॥

निरश्च प्रतिदाने । निरः परो यतिः प्रतिदानेऽर्थे चुरादिः । निर्यातयति ऋणं, शोधयतीत्यर्थः ॥ ६० ॥

ष्वदण् आस्वादने । स्वादयति । स्वाद्यते । षपाठात् "नाम्यन्त-"॥२।१।१५॥ इति षे, असिष्वदत् । सिष्वादयिषति । अर्थान्तरे तु, ष्वदि आस्वादने । मैत्राय स्वदते दधि ॥ ६१ ॥

आस्वदः सकर्मकात् । आङ्पूर्वात् स्वदतेः सकर्मकात् णिज् भवति न पुनरकर्मकात्; आस्वादयति यवागूम् ॥ ६२ ॥

मुदण् संसर्गे । मोदयति सक्तून् सर्पिषा । मोदयत्युष्णा आपः शीताभिरद्भिः, उभयत्र संसृजतीत्यर्थः ॥ ६३ ॥

कृपण् अवकल्कने; अवकल्कनं मिश्रीकरणम् सामर्थ्यं च । कल्पयति । अवकल्पन इत्यन्ये । कल्पयति वृत्तिं राजा । अर्थान्तरे तु, कृपौङ् सामर्थ्ये । कल्पते ॥ ६४ ॥

चरण् असंशये । विचारयति अर्थान् । अन्ये तु, चरण् संशये इति पठन्ति; सति हि संशये विचारणेत्याहुश्च । विचार्यते । व्यचीचरत् । व्यचारि, व्यचारिषाताम्; व्यचारयिषाताम् । विचारयाञ्चकार ॥ ६५ ॥

घुषृण् विशब्दने; विशिष्टशब्दकरणे, नानाशब्दने वा । घोषयति । अविशब्दन इत्येके । अपघोषयति पापम्, अपह्नुत इत्यर्थः । ऋदित्करणं चुरादिणिचोऽनित्यत्वे लिङ्गम्; तेन "ऋदिच्छ्वि-"॥३।४।६५॥ इति वा अङि, अघुषत् । पक्षे, अघोषीत् । घोषति; जुघुषुः इति विशब्दनेऽपि भवति । अर्थान्तरे तु, घुषृ-शब्दे । घोषति ॥ ६६ ॥

भूष, तसुण् अलङ्कारे । भूषयति कन्याम् । अबूभुषत्कन्यां चैत्रः । अबूभुषत । भूषयिष्यते; भूषयते कन्या स्वयमेव । अत्र ण्यन्तत्वेऽपि भूषार्थत्वेन, "भूषार्थ-" ॥३।४।९३॥ इति ञिच्ञिट्क्यानां निषेधादात्मनेपदमेव ॥ तसु ॥ नेऽन्ते । तंसयति; उत्तंसयति ॥ ६७ ॥ ६८ ॥

त्रसण् वारणे । त्रासयति मृगान्; निराकरोतीत्यर्थः ॥ ६९ ॥

अर्हण् पूजायाम् । अर्हयति । ङे, आर्जिहत् ॥ ७० ॥

अथ वर्णक्रमेण भासार्थाः॥ लोकृ, तर्क, लघु, लोचृ, अजु, पिजु, भजु, लुट, वृत, वृध, गुप, धूप, कुप, दशु, वृहुण् भासार्थाः । एते १५ भासार्थाः । लोकयति; विलोकयति । ऋदित्त्वादुपान्त्यस्य ह्रस्वाभावे, अलुलोकत्०; अलुलोकाम । अन्यत्र लोकृङ् दर्शने । लोकते ॥ तर्क ॥ तर्कयति । क्ते, तर्कितः । गणान्तरेष्वपठिता अप्यत्र दण्डके पाठात् धातव एवेत्यर्थान्तरे; तर्कयति ॥ लघु ॥ नेऽन्ते । लङ्घयति; उल्लङ्घयति । अन्यत्र लघुङ् गतौ । लङ्घते ॥ लोचृ ॥ लोचयति; आलोचयति; पर्यालोचयति । ऋदित्त्वान्न उपान्त्यह्रस्वः । अलुलोचत् । अन्यत्र, लोचृङ् दर्शने । लोचते ॥ अथ त्रय उदितः ॥ अजु ॥ अञ्जयति । अन्यत्र, अञ्जौप् व्यक्त्यादौ । व्यनक्ति० ॥ पिजु ॥ पिञ्जयति । अस्य चुरादौ पिजुण् हिंसाबलदाननिकेतनेष्विति प्राग् पाठेऽप्यत्र पुनः पाठोऽर्थविशेषार्थः, आत्मनेपदार्थः, सकर्मकार्थश्च । पिञ्जयते । अन्यत्र, पिजुकि संपर्चने । पिङ्क्ते ॥ भजु ॥ भञ्जयति । अन्यत्र, भञ्जोप् आमर्दने । भनक्ति । ॥ लुट् ॥ लोटयति । अन्यत्र, लुटि प्रतीघाते । लोटते । लुटच् विलोटने । लुट्यति ॥ वृत ॥ वर्त्तयति । अनेकार्थत्वे तु, वर्त्तयति कुटुम्बं वाणिज्येन । प्रवर्त्तयति स्वेच्छया । परिवर्त्तयति वस्त्रम् । उद्वर्त्तयति अङ्गम् । अन्यत्र, वृतूङ् वर्तने । वर्त्तते ॥ वृध ॥ वर्द्धयति । अन्यत्र, वृधूङ् वर्द्धने । वर्द्धते ॥ गुप ॥ गोपयति ।

अन्यत्र, गुपौ रक्षणे । गोपायति ॥ धूप ॥ धूपयति । अन्यत्र, धूप सन्तापे । धूपायति ॥ कुपू ॥ कोपयति । अन्यत्र, कुपच् कोपे । कुप्यति ॥ द्वावुदितौ ॥ दशु ॥ दंशयति । अन्यत्र, दंशं दशने । दशति ॥ वृहु ॥ वृंहयति; उपवृंहयति । अन्यत्र, वृहु शब्दे च । वृंहति । लोकृतर्कादयः स्वार्थे णिचमुत्पादयन्ति । भासार्थश्चेति पारायणम् । भासयति दिशः; दीपयति; इन्धयति; प्रकाशयति । गणान्तरपाठस्त्वेषामात्मनेपदादिकार्यार्थः ॥७१॥७२॥७३॥७४॥७५॥७६॥७७॥७८॥७९॥८०॥८१॥८२॥८३॥८४॥८५॥

इति परस्मैपदिनः ।

वंचिण् प्रलम्भने; मिथ्याफलाख्याने । वञ्चयते । अववञ्चत । अन्यत्र, वञ्चू गतौ । वञ्चति । इदित्त्वादेव णिजन्तादात्मनेपदे सिद्धे, "प्रलम्भे गृधिवञ्चेः" ॥३।३।८९॥ इति तद्विधानं णिगन्तादफलवत्कर्त्रर्थम् ॥ ८६ ॥

विदिण् चेतनाख्याननिवासेषु । वेदयते सुखम्, चेतयत इत्यर्थः । आवेदयते धर्मम्, आख्यातीत्यर्थः । वेदयते गृहम्, निवासं करोतीत्यर्थः । विवादेऽप्यन्ये । प्रवेदयते वादिना । अन्यत्र, विदक् ज्ञाने । वेत्ति । विदिंच् सत्तायाम् । विद्यते । विद्लृंती लाभे । विन्दति । विन्दते । विदिंप् विचारणे । विन्ते ॥ ८७ ॥

मनिण् स्तम्भे; गर्वे । मानयते; विमानयते; अपमानयते । पक्षे, मनतीति चन्द्रः ॥ ८८ ॥

भलिण् आभण्डने; निरूपणे । भालयते; निभालयते; संभालयते । अन्यत्र, भलि परिभाषणहिंसादानेषु । भलते । बभले । भलिता ॥ ८९ ॥

कुत्सिण् अवक्षेपे । कुत्सयते । अचुकुत्सत ॥ ९० ॥

लक्षिण् आलोचने । लक्षयते । अन्यत्र, लक्षीण् दर्शनाङ्कनयोः । लक्षयति, ते । णिचोऽनित्यत्वात्, लक्षते ॥ ९१ ॥

इत्यर्थविशेषे चुरादयः ।

तर्जिण् संतर्जने । तर्जयते । यत्तु लक्ष्ये, तर्जयति; भर्त्सयति; निशाम-

यति; भालयति; कुत्सयति; निवेदयतीत्यादिपरस्मैपदं दृश्यते; तद् भ्वादौ राजृग्, टुभ्राजीत्यत्रात्मनेपदस्यानित्यत्वज्ञापनात् सिद्धम् ॥ ९२ ॥

त्रुटिण् छेदने । त्रोटयते रज्जुम् । डान्तोऽयमित्येके । उत्त्रोडयते तृणम् । त्रुटत् छेदने । त्रुट्यति, त्रुटति ॥ ९३ ॥

चितिण् संवेदने । चेतयते । अचीचितत ॥ ९४ ॥

गन्धिण् अर्दने । गन्धयते ॥ ९५ ॥

शमिण् आलोचने । "यमो परिवेषणे-"॥४।२।२९॥ इत्यत्र णिचि चेति वचनात् यमोऽन्येषां णिचि न ह्रस्वः । शामयते; निशामयते । न्यशीशमत । न्यशामि । "णौ दान्त-"॥४।४।७४॥ इति क्ते वा निपातनात्, शान्तः; "सेट्क्तयोः"॥४।३।८४॥ इति णेर्लुकि, शामितः । शमूच् उपशमे । शाम्यति । णिगि, "शमोऽदर्शने" ॥४।२।२८॥ इति अदर्शने; शमयति रोगम् ॥ ९६ ॥

गूरिण् उद्यमे । गूरयते; उद्गूरयते खड्गम्; आगूरयते ॥ ९७ ॥

मन्त्रिण् गुप्तभाषणे । मन्त्रयते; आमन्त्रयते; निमन्त्रयते ॥ ९८ ॥

ललिण् ईप्सायाम् । लालयते ॥ ९९ ॥

दंशिण् दशने । दंशयते ॥ १०० ॥

भर्त्सिण् संतर्जने । भर्त्सयते । आत्मनेपदानित्यत्वे तु, भर्त्सयतीत्यपि । अबभर्त्सत ॥ १०१ ॥

इत्यात्मनेपदिनः ।

इतोऽदन्ताः ॥ अदन्तत्वे हि सुखयति, रचयति इत्यत्राल्लुकः स्थानित्वाद्गुणवृद्ध्यभावः । अररचत् । असुसुखत्; अत्र समानलोपित्वात्सन्वद्भावदीर्घयोरभावः । असुसूचत्; अत्रोपान्त्यह्रस्वाभावः । अङ्कादीनां तूक्तफलाभावेऽपि पूर्वाचार्यानुरोधेनादन्तेषु पाठः । णिजभावेऽनेकस्वरत्वात् यङ्निवृत्त्यर्थं इत्येके । द्रमिलास्त्वेवंप्रकाराणामदन्तत्वविधानसामर्थ्यादल्लोपाभावं मन्यन्ते । ततश्च "ञ्णिति"॥४।३।५०॥ इति वृद्धौ प्वागमे च; दुःखापयति; वण्टापयति; रंहापयति; अर्थापयते; सत्रापयते; गर्वापयते इत्याद्युदाहरन्ति; ते हि "ञ्णिति"॥४।३।५०॥ इति वृद्धिं स्वरमात्रस्येच्छन्ति ॥ १०२ ॥

अङ्कण् लक्षणे । अङ्कयति । ङे "स्वरादेः-"॥४।१।४॥ इति केर्द्वित्वे, आञ्चिकत् । सनि, अञ्चिकयिषति । अकुङ् लक्षणे । अङ्कते ॥ १०३ ॥

सुख, दुःखण् तत्क्रियायाम्; सुखनं दुःखनं च, तत्क्रिया । सुखयति । असुसुखत् । दुःखयति । अदुदुःखत् ॥ १०४ ॥

रचण् प्रतियत्ने । रचयति; विरचयति । क्ये, रच्यते । अररचत्, अररचताम्, अररचन् । अरचि । ञिटि, अरचिषाताम् । इटि, अरचयिषाताम् । रचयाञ्चकार ३ ॥ भाक ॥ रचयाञ्चक्रे ३ । रच्यात् । रचिषीष्ट; रचयिषीष्ट । रचयिता २, रचिता । रचयिष्यति, ते; रचिष्यते । रिरचयिषति । रचयन् । रचयन्ती । रच्यमानम् । रचयिष्यन् । रचिष्यमाणम्; रचयिष्यमाणम् । रचयाञ्चकृवान्, बभूवान्, आसिवान् वा ॥ भाक ॥ रचयाञ्चक्राणम्, बभूवानम्, आसानं वा । रचितः, २ वान् । रचयित्वा । "लघोर्यपि"॥४।३।८६॥ इति णेरयि; विरचय्य । रचयि ३ ता, तुम्, तव्यम् । रचनीयम् । रच्यम् । एवं सर्वेऽप्यदन्ताः ॥ १०५॥

सूचण् पैशुन्ये । सूचयति । सूच्यते । अषपाठान्न षः । असुसूचत । असूचि । सूचयाञ्चकार ३ । सुसूचयिषति । "अट्यर्त्ति-"॥३।४।१०॥ इति यङि, सोसूच्यते । अषोपदेशान्न षत्वम् । एवं सूत्रादीनामपि । संसूच्य । सूचयित्वा ॥ १०६ ॥

भाजण् पृथक्कर्मणि । भाजयति; विभाजयति; अवभाजयति । भाज्यते । अबभाजत् । अभाजि । भाजयामास । भाजितम् । भाजयि ३ ता, तुम्, त्वा । विभाज्य ॥ १०७ ॥

सभाजण् प्रीतिसेवनयोः । प्रीतिदर्शनयोरित्यन्ये । सभाजयति । क्ये, सभाज्यते । ङे, अससभाजत् । असभाजि । सभाजयामास । सभाजयिष्यति ॥ १०८॥

खोटण् क्षेपे । खोटयति । ङे, अचुखोटत् । डान्तोऽयमिति देवनन्दी । खोडयति । दान्त इत्यन्ये । खोदयति ॥ १०९ ॥

दण्डण् दण्डनिपातने । दण्डयति । दण्डादेर्नाम्नो णिचि, दण्डयत्यादिसिद्धौ दण्डण् प्रभृतीनां पाठो यथाविधानं णिचं विनाऽपि प्रयोगार्थः ।

अत एवादन्तत्वस्याप्यनेकस्वरत्वेन परोक्षामादेशो यङ्निवृत्त्यादि च फलम् ॥ ११० ॥

वर्णण् वर्णक्रियाविस्तारगुणवचनेषु । वर्णक्रिया वर्णनम्, वर्णकरणं वा । कथं वर्णयति कविः । सुवर्णं वर्णयति । विस्तारे वर्णनेयम् । गुणवचनं स्तुतिः, शुक्लाद्युक्तिर्वा । राजानमुपवर्णयति । ङे, अववर्णत् ॥ १११ ॥

कर्णण् भेदे । कर्णयति; आकर्णयति । आचकर्णत् ॥ ११२ ॥

गणण् संख्याने । गणयति; अवगणयति; परिगणयति । गण्यते । ङे, "ई च गणः"॥४।१।६७॥ इति पूर्वस्यात्वे, ईति च; अजगणत्; अजीगणत्। अगाणि। गणयित्वा । प्रगणय्य । शेषं रचण्वत् । अदन्तत्वं च सुखादीनां णिचूसन्नियोग एवान्ते वक्ष्यते, ततोऽनित्यत्वेन णिजभावे, जगणतुः; जगणिथेत्यत्रानेकस्वरत्वाभावादाम् न भवति ॥ ११३ ॥ ११४ ॥

गुण, केतण् आमन्त्रणे; आमन्त्रणं गूढोक्तिः । गुणयति । अजुगुणत् । अगुणि । गुणयाञ्चकार ३ । गुण्यात् । गुणयिषीष्ट; गुणिषीष्ट । गुणयिष्यति, ते; गुणिष्यते । जुगुणयिषति । एवं रचण्वत् ॥ केतयति; सङ्केतयति । ङे, अचिकेतत् । सङ्केतितः । सङ्केत्य । अयं निःस्रावणनिमन्त्रणयोरपीत्येके ॥ ११५ ॥

पतण् गतौ वा । वा शब्दो णिजदन्तत्वयोर्युगपद्विकल्पार्थः । पतयति । ङे, अपपतत् । पक्षे, पतति । "व्यञ्जनादेः-"॥४।३।४७॥ इति वा वृद्धौ, अपातीत्, अपतीत् ॥ ११६ ॥

कथण् वाक्यप्रबन्धे । कथयति; संकथयति । क्ये, कथ्यते । ङे, अचकथत् । कथं अचीकथदिति । ये गणयतेरन्येषामपि च पूर्वस्य यथादर्शनमीत्त्वमिच्छन्ति तन्मते भविष्यति; प्रकृत्यन्तरं वाऽन्वेष्यम् । अकथि, अकथिषाताम्; अकथयिषाताम् । कथयाञ्चकार ३ । कथयिष्यति, ते; कथिष्यते । कथयित्वा । "लघोः-"॥४।३।८६॥ इति णेरयि, संकथय्य । एवं रचण्वत् ॥ ११७ ॥

छेदण् द्वैधीकरणे । छेदयति; विच्छेदयति । छेद्यते । अचिच्छेदत् । अच्छेदि, अच्छेदिषाताम्, अच्छेदयिषाताम् । छेदयाञ्चकार । छेदयिष्यति, ते; छेदिष्यते । चिच्छेदयिषति । छेदितम् । छेदयित्वा । विच्छेद्य ॥ ११८ ॥

रूपण् रूपक्रियायाम्; रूपक्रिया राजमुद्रादिरूपस्य करणम् । रूपयति ।

रूपदर्शनं वा रूपक्रिया । निरूपयति; प्ररूपयति । निरूप्यते । प्रारुरूपत् । प्रारूपि । प्ररूपयामास ३ । प्ररूपितः । प्ररूप्य ॥ ११९ ॥

क्षपण् प्रेरणे । क्षपयति । क्षप्यते । अचक्षपत् । अक्षपि, अक्षपिषाताम्; अक्षपयिषाताम् । क्षपयामास । क्षप्यात् । क्षपयिष्यंति, ते; क्षापिष्यते । चिक्षपयिषति । क्षपितः । क्षपयित्वा ॥ १२० ॥

व्ययण् वित्तसमुत्सर्गे; त्यागे । व्यययति । व्यय्यते । ङे, अवव्ययत् । अव्ययि, अव्ययिषाताम्; अव्यययिषाताम् । व्यययामास । विव्ययिषति ॥१२१॥

सूत्रण् विमोचने; विमोचनं मोचनाभावो ग्रन्थनमिति यावत् । सूत्रयति । सूत्र्यते । ङे, असुसूत्रत् । असूत्रि । सुसूत्रयिषति । "अट्यर्त्ति-"॥३।४।१०॥ इति यङि, सोसूत्र्यते ॥ १२२ ॥

मूत्रण् प्रस्रवणे । मूत्रयति । अमुमूत्रत् । "अट्यार्त्ति-"॥३।४।१०॥ इति यङि, मोमूत्र्यते ॥ १२३ ॥

पार, तीरण् कर्मसमाप्तौ । पारयति । पार्य्यते । अपपारत् । अपारि । पिपारयिषति । पारितम् ॥ तीरयति । तीर्य्यते । अतितीरत् ॥ १२४ ॥ १२५ ॥

चित्रण् चित्रक्रियाकदाचित्दृष्ट्योः । चित्रयति; आलेख्यं करोति, कदाचित्पश्यति चेत्यर्थः । वैचित्र्यकरणार्थोऽयं, न चित्रक्रियार्थ इत्यन्ये । चित्रयति; वैचित्र्यं सम्पादयतीत्यर्थः । अचिचित्रत् । चित्रितम् ॥ १२६ ॥

छिद्रण् भेदे । छिद्रयति । ङे, अचिच्छिद्रत् ॥ १२७ ॥

मिश्रण् संपर्चने; श्लेषे । मिश्रयति । ङे, अमिमिश्रत्, अमिश्रि । मिश्रयाञ्चकार ३। मिमिश्रयिषति ॥ १२८ ॥

कलण् सङ्ख्यानगत्योः । कलयति; सङ्कलयति; आकलयति । कल्यते । ङे, अचकलत् । रचण्वत् ॥ १२९ ॥

शीलण् उपधारणे, अभ्यासे, परिचये वा । शीलयति; परिशीलयति । ङे, अशिशीलत् । शील समाधौ । शीलति । णिगि ङे, अशीशिलत् ॥ १३० ॥

गवेषण् मार्गणे । गवेषयति । गवेष्यते । ङे, अजगवेषत् । अगवेषि, अग-

वेषिषाताम्, अगवेषयिषाताम् । गवेषयाञ्चकार । गवेषितः । गवेषयित्वा । गवेषणम् ॥ १३१ ॥

मृषण् क्षान्तौ; तितिक्षायाम् । मृषयति । णिचोऽनित्यत्वे, मृषति । क्ये, मृष्यते । ङे, अममृषत् । अमृषि, अमृषयिषाताम्, अमृषिषाताम् । मृषयाञ्चकार । मृषयिष्यति । मिमृषयिषति । मृषितः । मृषयिता । मृषयित्वा ॥ १३२ ॥

रसण् आस्वादनस्नेहनयोः । रसयति । अररसत् । रस शब्दे । रसति । णिगि, रासयति । अरीरसत् ॥ १३३ ॥

महण् पूजायाम् । महयति । ङे, अममहत् । अमहि ॥ १३४ ॥

रहुण् गतौ । नेऽन्ते । रंहयति । अदन्तत्वबलात् "अतः" ॥४।३।८२॥ इति लुकं बाधित्वाऽनुपात्यस्याप्यतो "ञ्णिति" ॥४।३।५०॥ इति वृद्धौ, "अर्त्तिरी-" ॥४।२।२१॥ इति पौ, रंहापयति । ङे, अररंहत् ॥ १३५ ॥

स्पृहण् ईप्सायाम् । "स्पृहेर्व्याप्यं वा" ॥२।२।२६॥ इति व्याप्यस्य वा सम्प्रदानत्वे, पुष्पेभ्यः पुष्पाणि वा स्पृहयति । क्ये, स्पृह्यते । स्पृहयेत् । स्पृहयतु । अस्पृहयत् ॥ अद्य० ॥ अपस्पृहत् । अस्पृहि, अस्पृहिषाताम्, अस्पृहयिषाताम् । स्पृहयाञ्चकार ३ ॥ भाक ॥ स्पृहयां ३ चक्रे, बभूवे, आहे । स्पृह्यात् । स्पृहिषीष्ट; स्पृहयिषीष्ट । स्पृहयिता, २ स्पृहिता । स्पृहयिष्यति, ते; स्पृहिष्यते । पिस्पृहयिषति । अकर्मकत्वाद् "गत्यर्थ-" ॥५।१।११॥ इति कर्त्तरि क्ते, पुष्पेभ्यः स्पृहितो मैत्रः । पक्षे, पुष्पाणि स्पृहयति । कर्मणि क्ते, पुष्पाणि स्पृहितानि मैत्रेण । स्पृहयि ४ त्वा, ता, तुम्, तव्यम् । क्त्वो यपि, संस्पृहय्य । स्पृहणीयम् । स्पृह्यम् । "शीङ्श्रद्धा-" ॥५।२।३७॥ इत्यालौ, "आमन्त-" ॥४।३।८५॥ इति णेरयि; स्पृहाशीलः स्पृहयालुः ॥ १३६ ॥

रूक्षण् पारुष्ये । रूक्षयति; विरूक्षयति । ङे; अरुरूक्षत् । यपि, विरूक्ष्य । रूक्षितम् । णिजभावेऽप्यदन्तत्वार्थोऽस्य पाठः, तेनानेकस्वरत्वात् यङ् न भवति । एवं गर्विप्रभृतीनामपि ॥ १३७ ॥

इति परस्मैपदिनः ।

मृगणि अन्वेषणे । मृगयते । क्ये, मृग्यते । ङे, अममृगत, अममृगेताम् ॥ भाक ॥ अमृगि, अमृगिषाताम्, अमृगयिषाताम् । मृगयाञ्चक्रे । मृगयिष्यते । मिमृगयिषते । मृगयमाणः । मृग्यमाणम् । मृगयिष्यमाणः । मृगयां ३ चक्राणः, बभूवानः, आसानो वा । मृगितः । मृगयि ४ त्वा, ता, तुम्, तव्यम् । क्त्वो यपि, विमृगय्य ॥ १३८ ॥

अर्थणि उपयाचने । अर्थयते; प्रार्थयते । पूर्वाचार्यानुरोधाददन्तेष्वस्य पाठः । एवं गर्वेरपि । केचिददन्तपाठबलादतोलुकं बाधित्वाऽनुपान्त्यस्यापि "ञ्णिति"॥४।३।५०॥ इति वृद्धौ, "अर्त्तिरी-"॥४।२।२१॥ इति पौ, अर्थापयते; गर्वापयते इत्याहुः । क्ये, अर्थ्यते । ङे, आतिर्थत । आर्थि, आर्थिषाताम्; आर्थयिषाताम् । अर्थयाञ्चक्रे ३ । अर्थयिष्यते । अर्तिथयिषते । अर्थितः । अर्थयित्वा । प्रार्थ्य । अर्थयि ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥ १३९ ॥

सङ्ग्रामणि युद्धे । सङ्ग्रामयते शूरः । क्ये, सङ्ग्राम्यते । असङ्ग्रामयत । ङे, अससङ्ग्रामत । अषपाठान्न षः । सिसङ्ग्रामयिषते । क्त्वि, सङ्ग्रामयित्वा । सङ्ग्रामितः । अयं परस्मैपदीत्येके । सङ्ग्रामयति ॥१४० ॥

गर्वणि माने । गर्वयते । गर्व्यते । ङे, अजगर्वत । गर्व दर्पे । गर्वति ॥१४१॥

गृहाणि गृहणे । गृहयते । क्ये, गृह्यते । ङे, अजगृहत । यपि, संगृहय्य । क्ते, गृहितम् । गृहयालुः । शेषं मृगण्वत् । अदन्तत्वं च सुखादीनां णिच्संनियोग एव द्रष्टव्यम् । ततोऽनित्यत्वेन णिजभावे, जगणतुरित्यादि सिद्धम् ॥१४२॥

इत्यदन्ताः समाप्ताः ।

अथ युजादिः ।

युजण् सम्पर्चने । "युजादेः-"॥३।४।१८॥ इति वा णिचि; योजयति । पक्षे शव्, योजति । क्ये, योज्यते; युज्यते ॥ अद्य० ॥ ङे, उपान्त्यह्रस्वे, अयूयुजत । अयोजीत, अयोजिष्टाम्, अयोजिषुः । अयोजि । इटि, अयोजयिषाताम् । ञिटि, णिजभावे इटि च, अयोजिषाताम्, अयोजयिषत, अयोजिषत । योजयाञ्चकार । युयोज, युयुजतुः, युयुजुः, युयोजिथ० । योज्यात्; युज्यात् ।

योजयिषीष्ट; योजिषीष्ट । योजयिता; योजिता । योजयिष्यति, ते; योजिष्यति, ते । युयोजयिषति, "वौ व्यञ्जन-"॥४।३।२५॥ इति क्त्वासनोर्वा कित्त्वे, युयोजिषति; युयुजिषति; णिजभावे यङ् भवति; योयुज्यते । योयुजीति, योयोक्ति, योयुक्तः, योयुजति । णिगि, योजयति । अयूयुजत् । योजयन्; योजन् । योज्यमानम्; युज्यमानम् । योजयिष्यन्; योजिष्यन् । योजयाञ्चकृवान्; युयुज्वान् । प्रयोजितः, २ वान्; प्रयुजितः, २ वान् । योजयित्वा; योजित्वा; युजित्वा । प्रयोज्य; प्रयुज्य । योजयिता; योजिता ३ । योजनीयम् । योज्यम् । युजिंच् समाधौ । युज्यते । युजूंपी योगे । युनक्ति । युङ्क्ते । इह युजादीनां नियतो णिजविकल्पः, चुरादीनां तु णिजानित्य इति ॥ १४३ ॥

लीण् द्रवीकरणे । "लियो नोऽन्तः-"॥४।२।१५॥ इति नेऽन्ते; घृतं विलीनयति । पक्षे, "नामिन-"॥४।३।५१॥ इति वृद्धौ; विलाययति । "लीङ्लिनोर्वा" ॥४।२।९॥ इति वाऽऽत्वमस्यापीत्येके; तन्मते "लो लः"॥४।२।१६॥ इति वा लेऽन्ते, घृतं विलालयति; विलापयति । "लीङ्लिनोर्वा"॥४।२।९॥ इत्यात्मनेपदमात्वं चास्यापि णिच्यपीत्येके । कस्त्वामुल्लापयते; आलापयते । णिजभावे, विलयते । क्ये, विलीन्यते; विलाय्यते । अन्यमते, विलाल्यते; विलाप्यते; विलीयते । व्यलीलिनत्; व्यलीलयत्; व्यलीललत्; व्यलीलपत् । व्यलायीत् । व्यलीनि, व्यलायि । व्यलालि, व्यलापि, व्यलायि । इटि, व्यलीनयिषाताम्; व्यलाययिषाताम्; व्यलालयिषाताम्; व्यलापयिषाताम्; व्यलयिषाताम्; ञिटि णेर्लुकि, व्यलीनिषातामित्यादि । व्यलायिषाताम् । विलीनयाञ्चकारेत्यादि । विलिलाय, विलिल्यतुः० । विलिलीनयिषति; विलिलाययिषति० । विलिलयिषति । अणिचि यङि, विलेलीयते । विलेलयीति; विलेलेति, विलीनितः; विलायितः; विलयितः । विलीन्य, विलाय्य, विलीय । विलीनयिता, विलायिता, विलयिता । लीङ्च् श्लेषणे । लीयते । लींश् श्लेषणे । लिनाति ॥ १४४ ॥

प्रीगृण् तर्पणे । गित्त्वं णिजभावे उभयपदार्थम् । णिचि परस्मैपदे; "धूग्प्रीगोः-"॥४।२।१८॥ इति नेऽन्ते; प्रीणयति । क्र्यादेरेव नमिच्छन्ति; तन्मते "नामिन-"॥४।३।५१॥ इति वृद्धौ, प्राययति । पक्षे, प्रयति; प्रयते । क्ये,

प्रीण्यते; प्राय्यते; प्रीयते । ङे, अपिप्रिणत्, अपिप्रियत् । अप्रायीत् । शेषं लीण्वत् ॥ १४५ ॥

धूगण् कम्पने । "धूग्प्रीगोः-"॥४।२।१८॥ इति ने, धूनयति । नं नेच्छन्त्येके । धावयति । पक्षे, गित्त्वादुभयपदे; धवति; धवते । शेषमशिति णिजभावे धूगट्वत् ॥ १४६ ॥

वृगण् आवरणे । वारयति; निवारयति; आवारयति । पक्षे गित्त्वादुभयपदे, वरति; वरते । शेषमशिति णिजभावे वृग्ट्वत् ॥ १४७ ॥

जॄण् वयोहानौ । जारयति । णिजभावे जॄष्चवत् ॥ १४८ ॥

मार्गण् अन्वेषणे । मार्गयति । मार्गति; विमार्गति । मार्ग्यते । अमार्गीत् । ममार्ग । ममार्गे । मार्गिष्यति । मिमार्गयिषति; मिमार्गिषति । णिजभावे यङ्; मामार्ग्यते ॥ १४९ ॥

पृचण् संपर्चने । संपर्चयति । संपर्चति । यङि; परीपृच्यते ॥ १५० ॥

रिचण् वियोजने च । चात्संपर्चने । रेचयति; विरेचयति । रेचति । व्यरीरिचत् । व्यरेचीत् ॥ १५१ ॥

वचण् भाषणे । संदेशन इत्येके । वाचयति । वचति । क्ये, वाच्यते; वच्यते । "यजादि-"॥४।१।७९॥ इत्यत्रास्याग्रहणान्न य्वृत् । अवीवचत्; अवीवचाम । अवाचि, अवाचयिषाताम्, अवाचिषाताम् । पक्षे, अवाचीत्, अवचीत्, अवाचिष्टाम्, अवचिष्टाम्, अवाचिषुः, अवचिषुः; अवाचिष्म, अवचिष्म । अवाचि, अवचिषाताम्, अवचिषत । वाचयाञ्चकार । वाचयाञ्चक्रे । पक्षे, ववाच, ववचतुः; ववचिथ । ववचे । वाच्यात्; वच्यात् । वाचयिषीष्ट; वाचिषीष्ट; वचिषीष्ट । वाचयिता; वचिता । वाचयिष्यति, ते; वचिष्यति, ते । विवाचयिषति; विवचिषति । यङि, वावच्यते । वावचीति, वाव ३ क्ति, क्तः, चति । वाचितम्; वचितम् । वाचयित्वा; वचित्वा ॥ १५२ ॥

अर्चिण् पूजायाम् । अर्चयति । इदित्त्वादात्मनेपदे; अर्चते ॥ अद्य० ॥ आर्चिचत् । आर्चिष्ट । आर्चि, आर्चयिषाताम्, आर्चिषाताम् । अर्चयाञ्चकार । आनर्चे । अर्चयिष्यति; अर्चिष्यते । अर्चिचयिषति; अर्चिचिषते । अर्चितः ।

अर्चयि ४ त्वा, ता, तुम्, तव्यम्; अर्चि ४ त्वा, ता, तुम्, तव्यम्॥१५३॥

वृजैण् वर्जने । वर्जयति; परिवर्जयति; आवर्जयति । वर्जति । वर्ज्यते; वृज्यते । अववर्जत् । अवीवृजत् । अवर्जीत्, अवर्जिष्टाम्। अवर्जि, अवर्जयिषाताम्, अवर्जिषाताम् । वर्जयाञ्चकार । ववर्ज, ववृजतुः; ववर्जिथ; ववृजिम । ववृजे। वर्ज्यात्, वृज्यात्। वर्जयिष्यति; वर्जिष्यति। विवर्जयिषति; विवर्जिषति। वरीवृज्यते । वरि, री, र्, ३ वर्क्ति; वरि, री, र्, ३ वृजीति। वर्जितम्; वृजितम्। वर्जयित्वा; वर्जित्वा ॥ १५४ ॥

मृजौण् शुद्धौ । "मृजोऽस्य-"॥४।३।४२॥ इति वृद्धौ; मार्जयति; परिमार्जयति । पक्षे शवि; मार्जति । मार्ज्यते । अममार्जत् । अमीमृजत् । पक्षे औदित्त्वाद्वेटि, अमार्जीत्। अमार्क्षीत् । णिचि शेषं चुरण्वत् । णिजभावे, मृजौवत् ॥ १५५ ॥

कठुण् शोके । नेऽन्ते । कण्ठयति; उत्कण्ठयति । उत्कण्ठति प्रियाम् । उदचकण्ठत् । उदकण्ठीत् । कठुङ् शोके । कण्ठते; उत्कण्ठते ॥ १५६ ॥

ग्रन्थण् सन्दर्भे; बन्धने । ग्रन्थयति । ग्रन्थते । शेषं ग्रन्थशवत् ॥१५७॥

अर्दिण् हिंसायाम् । अर्दयति । णिजभावे इदित्त्वादात्मनेपदे, अर्दते । ङे, आर्दिदत् । आर्दिष्ट । परस्मैपद्ययमित्येके । अर्दति । आर्दीत् ॥ १५८ ॥

वदिण् भाषणे । संदेशन इत्यन्ये । वादयति; संवादयति । पक्षे इदित्त्वादात्मनेपदे, वदते । क्ये, वद्यते । अस्य यजादित्वाभावान्न य्वृत् ॥१५९॥

छदण् अपवारणे । छादयति । छदति । प्रच्छादयति । प्रच्छदति शय्याम् । उच्छादयति । उच्छदति ॥ १६० ॥

आङः सदण् गतौ । आङः परः सद् गतावर्थे युजादिः । आसादयति । आसीदति । आसदतीत्येके । आङोऽन्यत्र, सीदति । गतेरन्यत्रासीदति ॥१६१॥

मानण् पूजायाम् । मानयति । मानति ॥ १६२ ॥

तपिण् दाहे । तापयति । इदित्वादात्मनेपदे; तपते ॥ १६३ ॥

तृपण् प्रीणने । संदीपन इत्येके । तर्पयति । तर्पति । क्ते, तर्पितम्, तृपितम् ॥ १६४ ॥

आप्लृण् लम्भने; प्राप्तौ । आपयति; प्रापयति । आपति । आपिपत् । लृदित्त्वादङि; आपत् । आपयिष्यति; आपिष्यति । क्ते, आपितम् । "वाप्नोः" ॥४।३।८७॥ इति यपि णेर्वाऽय् अस्यापीत्येके; प्रापय्य; प्राप्य ॥ १६५ ॥

ईरण् क्षेपे; प्रेरणे । गताविल्येके । ईरयति; प्रेरयति । ईरति । ऐरिरत् । ऐरीत् । ईरयिष्यति, ईरिष्यति ॥ १६६ ॥

मृषिण् तितिक्षायाम् । मर्षयति । पक्षे इदित्त्वादात्मनेपदे, मर्षते । अमीमृषत्; अममर्षत् । अमर्षिष्ट । अमर्षि, अमर्षयिषाताम्, अमर्षिषाताम् । मर्षयामास । ममृषे । मर्षयिष्यति; मर्षिष्यते । मिमर्षयिषति, मिमर्षिषते । मरीमृष्यते । अर्चि, अर्दि, तर्पि, वदि, मृषयः परस्मैपदिन इति भीमसेनीयाः॥१६७॥

शिषण् असर्वोपयोगे; अनुपयुक्तत्वे । शेषयति; शेषति ॥ १६८ ॥

विपूर्वोऽतिशये; उत्कर्षे । शिषिरतिशये युजादिः । विशेषयति । विशेष्यते । व्यशीशिषत् । विशेषयामास । क्ते, विशेषितः । पक्षे, विशेषति । क्ये, विशिष्यते । सिचि, व्यशेषीत् । विशिशेष । विशिशिषे । विशेषिष्यति । विशिषितः । विशिष्य ॥ १६९ ॥

धृषण् प्रसहने; अभिभवे । धर्षयति । धर्षति । अदीधृषत्; अदधर्षत् । अधर्षीत् । "न डीङ्-"॥४।३।२७॥ इति सेट्क्तयोः किच्वाभावे; धर्षितः, २ वान् । क्यपि, प्रधृष्यम् । धर्षित्वा ॥ १७० ॥

हिसुण् हिंसायाम् । हिंसयति । हिंसति ॥ १७१ ॥

गर्हण् विनिन्दने । गर्हयति । गर्हति ॥ १७२ ॥

षहण् मर्षणे । साहयति । सहति भारं धौरेयः ॥ १७३ ॥

"बहुलमेतन्निदर्शनम्" । यदेतद्भ्वत्यादिधातुपरिगणनं तद्बाहुल्येन निदर्शनत्वेन ज्ञेयम् ॥ तेनात्रापठिता अपि क्लविप्रभृतयो लौकिकाः, स्तम्भूप्रभृतयः सौत्राश्चुलुम्पादयश्च वाक्यकरणीया धातव उदाहार्याः ॥ विक्लवन्ते दिवि ग्रहाः; विच्छायीभवन्तीत्यर्थः । उपक्षपयति प्रावृट्; आसन्नीभवतीत्यर्थः । उत्तभ्नाति; निस्कुभ्नाति ।

निपानं दोलयन्नेष प्रेङ्खोलयति मे मनः ।
पवनो वीजयन्नाशा ममाशामुच्चुलुम्पति ॥ १ ॥

तावत्खरः प्रखरमुल्ललयाञ्चकार । यद्वा । भूवादिगणाष्टकोक्ताः स्वार्थे णिजन्ता अपि बहुलं भवन्ति । चुरादिपाठस्तु निदर्शनार्थः ॥ यदाहुः॥ "निवृत्तप्रेषणाद्धातोः प्राकृतेऽर्थे णिजिष्यते"। रामो राज्यमकारयद्; अकरोदित्यर्थः। रञ्जयति वस्त्रम्; रजतीत्यर्थः । भेदयति भृत्यान्, भिनत्तीत्यर्थः । तापयति, वाचयति, वाहयति, घातयति; तपति, वक्ति, वहति, हन्तीत्यर्थः । प्रयोज्यव्यापारेऽपि प्रयोक्तृव्यापारानुप्रवेशो णिगं विनाऽपि बुद्ध्यारोपाद्बहुलं भवति । जजान गर्भं मघवा; इन्द्रोऽजीजनदित्यर्थः । एकं द्वादशधा जज्ञे; जनितमित्यर्थः । षड्भिर्हलैः कृषति; कर्षयतीत्यर्थः ।

वान्ति पर्णशुषो वाता वान्ति पर्णमुचोऽपरे ।
वान्ति पर्णरुहोऽप्यन्ये ततो देवः प्रवर्षति ॥ १ ॥

अथवा णिज्बहुलमित्येव सिद्धे सूत्रमूत्रच्छिद्रान्धादय उदाहरणार्थाः; तेनादन्तेष्वनुक्ता अपि बहुलं द्रष्टव्यास्तेन, स्कन्ध समाहारे । स्कन्धयति । ऊष च्छुरणे । ऊषयति । स्फुट प्रकटभावे । स्फुटयति । वस निवासे । वसयतीत्यादयोऽपि भवन्ति । तथा । तडित् खचयतीवाशाः । पांशुर्दिशां मुखमतुच्छयदुत्थितोऽद्रेः ॥ ओजयत्योजः ॥१७४॥

विस्मृत्याऽवज्ञया वाऽपि भूवादिषु नवस्वपि ।
धातवो नोचिरे येऽत्र ज्ञेयाः पारायणात्तु ते ॥ १ ॥

इति तपाचार्यश्रीदेवसुन्दरसूरिशिष्यश्रीगुणरत्नसूरिविरचिते क्रियारत्नसमुच्चये चुरादिगणः ।

एवमुक्ता नवादिभवा गणजा धातवः ।

अथ सौत्रा उच्यन्ते केचन ।

"धातोः कण्ड्वादेर्यक्"॥३।४।८॥ द्विविधाः कण्ड्वादयः; धातवो नामानि च । कण्ड्वादिभ्यो धातुभ्यः स्वार्थे यक् स्यात् । कण्डूग् गात्रविकर्षणे । कण्डूयति, कण्डूयते । महीङ् वृद्धौ पूजायाञ्च । महीयते । हृणीङ् रोषलज्जयोः। हृणीयते । मन्तु रोषवैमनस्ययोः । मन्तूयति । वल्गु माधुर्यपूजयोः । वल्गूयति । असु मानसोपतापे । अ-

सूयति । अन्ये तु, असूङ् दोषाविष्कृतौ रोगे । असूयते इत्याहुः ॥ वेङ्, लाङ्, वेट्, लाट् एते धौर्त्ये, पूर्वभावे, स्वप्ने च । आद्ययोर्ङे आत्मनेपदार्थः । लिट् अल्पार्थे कुत्सायां च । लिट्यति । लोट् दीप्तौ । उरस् ऐश्वर्ये । उरस्यति । इरस्, इरज् ईर्ष्यार्थौ । तिरस् प्रसिद्धार्थः । दुवस् परितापपरिचरणयोः । भिषज् चिकित्सायाम् । भिषज्यति । भिष्णज् उपसेवायाम् । एला, केला, खेला, विलासार्थाः । केलायति । मेधा आशुग्रहणे । मगध परिवेष्टने । मगध्यति । "अतः"॥४।३।८२॥ इत्यल्लुक् । इषधु शरधौ रणे । कुरुरु क्षेपे । सुख, दुःख, तत्क्रियायाम् । सुख्यति; दुःख्यति । तरण प्रसिद्धार्थः । गद्गद वाक्यस्खलने । गद्गद्यति । गद्गदङ् इत्येके । गद्गद्यते । भरण गतौ । तुरण त्वरायाम् । पुरण गतौ । भुरण धारणपोषणयुद्धेषु । भुरण्यति । चुरण मतिचौर्ययोः । भरण प्रसिद्धार्थः । भरण्यति । तन्तस, पम्पस दुःखार्थौ । अरर आराकर्मणि । समर युद्धे । समर्यति । सपर पूजायाम् । सपर्यति । अनुक्तार्थत्वात् शेषा नोक्ताः ॥ क्ये, कण्डूय्यते ॥ अद्य० ॥ अकण्डूयीत् । अकण्डूयिष्ट । "अतः"॥४।३।८२॥ इत्यल्लुकि; "योऽशिति"॥४।३।८०॥ इति यलुकि, अभिषजीत् । अकण्डूयि । अभिषजि । अत्राल्लुकः स्थानित्वान्न वृद्धिः । कण्डूयाञ्चकार, चक्रे वा । भिषजाञ्चकार । कण्डूयिता । भिषजिता । "क्यो वा"॥४।३।८१॥ इत्यत्र यकोऽपि लुगित्यन्ये । भिषजिता; भिषज्यिता । "कण्ड्वादेस्तृतीयः"॥४।१।९॥ इति तृतीयस्य द्वित्वे; कण्डूयियिषति, ते । असूयियिषति । णिगि, कण्डूययति । ङे, अकण्डूयियत् । अत्र "अतः"॥४।३।८२॥ इत्यनेन विषयेऽप्यकारलोपात् "स्वरस्य"॥७।४।११०॥ इति स्थानित्वाभावात् यि इत्यस्य द्वित्वं नतु य इत्यस्य । एवमासूयियत् । कण्डूयि ३ त्वा, ता, तुम् ॥ इति कण्ड्वादिः ॥ १ ॥

अन्दोलण्, प्रेङ्खोलण् अन्दोलने ॥ वीजण् वीजने । एते त्रयोऽप्यदन्ताः । बहुलवचनात् स्वार्थे णिचि, अन्दोलयति । क्ये, अन्दोल्यते । ङे, आन्दुदोलत् । प्रेङ्खोलयति । वीजयति । वीज्यते । अवीजयत् । राजहंसैरवीज्यत । ङे, अविवीजत् ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥

रिखिर्लिखेः समानार्थः । रेखति चित्रकृत् । रिख्यते । अरेखीत् । अशिति सर्वं लिखित् वत् ॥ ५ ॥

चुलुम्प इति सौत्रः । चुलुम्पति; उच्चुलुम्पति । चुलुम्पाञ्चकार ॥ ६ ॥

स्तम्भू, स्तुम्भू स्तम्भे। "स्तम्भूस्तुम्भूस्कम्भूस्कुम्भूस्कोः श्ना च"॥३।४।७८॥ इति श्नाश्नू। शित्त्वाद् ङित्त्वे नो लुकि; स्तभ्नाति; स्तभ्नोति। उपसर्गाद्, "अङ्प्रतिस्तब्ध-"॥२।३।४१॥ इति षत्वे, विष्टभ्नाति; प्रतिष्टभ्नोति । "उदः स्था-"॥१।३।४४॥ इति स्लुकि, उत्तभ्नाति; उत्तभ्नोति पताकाम् । "अवाच्चाश्रयोर्जाविदूरे" ॥२।३।४२॥ इति द्विलेऽप्यट्यपि षत्वे; आश्रये, दुर्गमवष्टभ्नाति; अवष्टभ्नोति । और्जित्ये; अहो वृषलोऽवष्टभ्नाति । अवष्टभ्नोति रिपुं शूरः । अविदूरेऽनतिविप्रकृष्टे; अवष्टभ्नोति शरत्; आसन्नीभवतीत्यर्थः । क्ये, स्तभ्यते, अवष्टभ्यते। हौ, उत्तभान, उत्तभ्नुहि । व्यष्टभ्नात्; प्रत्यष्टभ्नात्; अवाष्टभ्नात्। "ऋदिच्छ्वि-" ॥३।४।६५॥ इति वा अङि, अस्तभत्, अस्तम्भीत्; अवाष्टभत्; अवाष्टम्भीत् । अस्तम्भि, अस्तम्भिषाताम् । तस्तम्भ; अवतष्टम्भ; प्रतितष्टम्भ । स्तम्भिष्यति; अवष्टम्भिष्यति । तिस्तम्भिषति; अभितिष्टम्भिषति । तास्तभ्यते; प्रतिताष्टभ्यते; अवताष्टभ्यते। स्तम्भयति; अवष्टम्भयति । ङे तु निषेधान्न षः; अवातस्तम्भत्; प्रत्यतस्तम्भत्; अतस्तम्भत्। स्तभ्नन्; स्तभ्नुवन् । ऊदित्वात् क्त्वि वेट्; स्तब्ध्वा, स्तम्भित्वा; अत्र "क्त्वा"॥४।३।२९॥ इति न क्त्वा कित्। दुर्गमवष्टभ्यास्ते । वेट्त्वान्नेट्; स्तब्धः, २ वान्; प्रतिस्तब्धः; निस्तब्धः; अवष्टब्धः, २ वान् । "अवाच्च-"॥२।३।४२॥ इत्यत्र चोऽनुक्तसमुच्चयार्थः; तेनोपष्टब्धः, उपष्टम्भ इत्यादावुपादपि षो भवति । उपावादित्यकृत्वा चकारेण सूचनमनित्यार्थम्; तेनोपस्तब्ध इत्यपि भवति । स्तम्भिता; अवष्टम्भिता ॥ स्तुम्भू ॥ श्नाश्नू । स्तुभ्नाति; स्तुभ्नोति । क्ये, स्तुभ्यते । अस्तुम्भीत् । तुस्तुम्भ । तुस्तुम्भे । अषपाठान्न षः ॥ ७ ॥ ८ ॥

स्कम्भू, स्कुम्भू बन्धने । स्कभ्नाति; स्कभ्नोति । वेः "स्कभ्नः"॥२।३।५५॥ इति षत्वे, विष्कभ्नाति; अत्र क्षुभ्नादित्वाण्णत्वाभावः । "स्कभ्नः"॥२।३।५५॥ इति श्नानिर्देशात् सश्नोः षो मा भूत्; विस्कभ्नोति, विष्कभ्नीतः, विस्कभ्नुतः, विष्कभ्नन्ति, विस्कभ्नुवन्ति । विष्कभ्यते । हौ, विष्कभाण; विस्कभ्नुहि ॥ ह्य० ॥ द्विलेऽप्यट्यपीत्यधिकारस्य निवृत्तत्वात् षत्वाभावे; व्यस्कभ्नात्; व्यस्कभ्नोत् ॥ अद्य० ॥

व्यस्कम्भीत् । विचस्कम्भ । विष्कम्भिता । विष्कम्भिष्यति । विचिस्काम्भिषति । विचास्कम्भ्यते । विचास्कम्भीति । विष्कम्भयति । व्यचस्कम्भत् । ऊदित्त्वाद्वेटि, स्कब्ध्वा; स्कम्भित्वा । विष्कम्भ्य । वेट्त्वान्नेटि, विष्कब्धः, २ वान् । विष्कम्भि ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥ स्कुम्भू ॥ स्कुभ्नाति; स्कुभ्नोति । अस्कुम्भीत् ॥९॥१०॥

लुल कम्पने । लोलति । लुल्यते । लुलितम्, धुतमित्यर्थः ॥ ११ ॥

इति श्रीतपाचार्यश्रीदेवसुन्दरसूरिशिष्यश्रीगुणरत्नसूरिविरचिते क्रियारत्नसमुच्चये सौत्रा धातवः ॥

अथ नामधातवः ।

"द्वितीयायाः काम्यः"॥३।४।२२॥ इति वा; पुत्रमिच्छति पुत्रकाम्यति । स्त्रीकाम्यति । वस्तुकाम्यति । "चजः कगम्-"॥२।१।८६॥ इति कत्वे, वाक्काम्यति; गोधुक्काम्यति; राट्काम्यति । अनडुत्काम्यति; अत्र "स्रंसुध्वंस्-"॥२।१।६८॥ इति हो दः । "उः पदान्ते-"॥२।१।११८॥ इति व उत्वे, द्युकाम्यति । श्रेयस्काम्यति; तेजस्काम्यति; अत्र "रोः काम्ये"॥२।३।७॥ इति सः। हविष्काम्यति; सर्पिष्काम्यति; धनुष्काम्यति; "नामिनस्तयोः-"॥२।३।८॥ इति षः। अव्ययस्य वर्जनात्सषयोरभावे; अधःकाम्यति; बहिःकाम्यति । रोरभावे रेफस्य तु न सः षो वा । वाःकाम्यति; गीःकाम्यति; धूःकाम्यति । राजकाम्यति; गुणिकाम्यति; एतत्काम्यति; अदस्काम्यति; इदङ्काम्यति; किंकाम्यति; भवत्काम्यति । त्वत्काम्यति; मत्काम्यति; "त्वमौ प्रत्ययोत्तर-"॥२।१।११॥ इति मान्तयोस्त्वमौ । युवां युष्मान्वेच्छति युष्मत्काम्यति; अस्मत्काम्यति; स्वःकाम्यति; स्वस्तिकाम्यति । "सर्वादयोऽस्यादौ"॥३।२।६१॥ इति पुंवत्त्वे; सर्वामिच्छति सर्वकाम्यति; भवत्काम्यति; एककाम्यति । एवं क्यन्यापि पुंवत्त्वं ज्ञेयम् । काम्येनैव कर्मण उक्तत्वादात्मनेपदं भावे; पुत्रकाम्यते; धनकाम्यते । अत्र "योऽशिति"॥४।३।८०॥ इति यस्य न लुक्, धातोर्व्यञ्जनात्परस्य योऽभावात् ॥ अद्य० ॥ अपुत्रका ३ म्यीत्, म्यिष्टाम्, म्यिषुः । भावे, अपुत्रकाम्यि ॥ परो० ॥ पुत्रकाम्यां ३ चकार, बभूव, आस वा । कुकारमियेष, क्का-

स्याश्चकारः; काम्यस्यादन्तत्वादाम् सिद्धः । पुत्रकाम्यात् । पुत्रकाम्यिष्यति । णिगि, घटकाम्ययति । ङे, "अन्यस्य"॥४।१।८॥ इति प्रथमादारभ्य यथेच्छं द्वित्वे; अजघटकाम्यत्; अघटटकाम्यत्; अघटचकाम्यत्; अघटकामम्यत् । एवं अपुपुत्रकाम्यत्; अपुतत्रकाम्यत्०; अत्र सस्वरस्य काम्यस्य फलं समानलोपात् न सन्वद्भावः । पुत्रकाम्यन् । पुत्रकाम्यि ५ त्वा, ता, तुम्, तः, २ वान् । पक्षे तु वाक्यं सिद्धम् ॥ इति काम्यः ॥ १ ॥

"अमाव्ययात् क्यन् च"॥३।४।२३॥ इति क्यन्, चात्काम्यश्च; तेन क्यना काम्यो न बाध्यते । पक्षे च वाक्यमपि । पुत्रमिच्छति; "क्यनि"॥४।३।११२॥ इति ईकारे; पुत्रीयति, पुत्री ८ यतः, यन्ति, यसि० । द्रविणीयति । खट्वीयति । मालीयति । "दीर्घश्च्वि-"॥४।३।१०८॥ इति दीर्घे; निधीयति । दधीयति । अग्नीयति । औषधीयति । पटूयति । वस्तूयति । दात्रीयति । "ऋतो रीः"॥४।३।१०९॥ पित्रीयति । मात्रीयति । भ्रात्रीयति । स्वस्रीयति । रायमिच्छति रैयति । गव्यति । नाव्यति; "य्यक्ये"॥१।२।२५॥ इति ओदौतोरवावौ । गार्ग्यमिच्छति, "आपत्यस्य क्यच्व्योः" ॥२।४।९१॥ इति यलोपे; गार्गीयति । वात्सीयति । विद्वांसमिच्छति विद्वस्यति । राजीयति; अत्र "नं क्ये"॥१।१।२२॥ इति पदान्ते; "नाम्नो नो-"॥२।१।९१॥ इत्यत्र असत्पर इत्याधिकारस्यानागमनात् क्यविधौ नलुकः सत्त्वात् "क्यनि"॥४।३।११२॥ इति ईकारः सिद्धः । शमीयति । पथीयति । अहर्यति; अत्र "रो लुप्यरि" ॥२।१।७५॥ इति रः । "नाम सिद्-"॥१।१।२१॥ इत्यत्र अयिति प्रतिषेधेन पदान्ताभावात् क्रमेण उत्वगत्वकत्वाद्यभावे; दिवमिच्छति दिव्यति; दृश्यति; वाच्यति । समिधमिच्छति समिध्यति । गोदुह्यति । योषित्यति । महत्यति । तद्यति । यद्यति । एतद्यति । अदस्यति । भवत्यति । त्वद्यति । मद्यति । युष्मद्यति । अस्मद्यति । चतुर इच्छति चतुर्यति । अनुडुह्यति । गीर्यति । धूर्यति; "भ्वादेः-"॥२।१।६३॥ इति दीर्घः । नेत्यन्ये; गिर्यति; धुर्यति । एवं क्यङ्यपि । पुंस्यति । सर्पिष्यति । अर्चिष्यति । धनुष्यति । "क्षुत्तृड्गर्द्धेऽशनाय-"॥४।३।११३॥ इति निपातनात्; अशनमुदकं धनमिच्छति अशनायति; उदन्यति; धनायति । क्षुत्तृड्गर्द्धेभ्योऽन्यत्र तु; अशनीयति; उदकीयति; धनीयति दातुम् ।

मैथुनतृष्णायां; "वृषाश्वाद्-"॥४।३।११४॥ इति स्सेऽन्ते; वृषमिच्छति वृषस्यति गौः । अश्वस्यति वडवा । वृषस्याश्वस्यशब्दौ मैथुनेच्छापर्यायौ मनुष्यादावपि प्रयुज्येते । लक्ष्मणं सा वृषस्यन्ती । तं साऽश्वस्यति । मैथुनादन्यत्र, वृषीयति; अश्वीयति ब्राह्मणी । दध्याद्यदनतृष्णायां "अश्व-"॥४।३।११५॥ इति असि स्सेऽन्ते च; दध्यस्यति; दधिस्यति । स्स इति द्विसकारनिर्देशान्नात्र षत्वम् । मध्वस्यति; मधुस्यति । क्षीरस्यति । लवणस्यति । दधिस्यतीत्यादि प्रयोगदृष्टेः प्रसिद्धस्यैव "नाम्यन्तस्था-"॥२।३।१५॥ इति षत्वस्य निषेधो नत्वप्रसिद्धस्य; तेन सर्पिष्ष्यतीत्यादावागमसकारस्य, "सस्य शषौ"॥१।३।६१॥ इत्यनेन षत्वं सिद्धम् । पय इच्छति, क्यनि; "नाम सिद्-"॥१।१।२१॥ इति नियमेन पदसंज्ञाकार्याणां व्यावर्त्तितत्वात्; पयसस्यति । चर्मणस्यति । स्सेऽन्ते तु व्यञ्जनादित्वात्पदसंज्ञायां; पयस्स्यति । चर्मस्यति । मान्ताव्ययनिषेधात् इदमिच्छति, किमिच्छति, स्वस्तीच्छति, स्वरिच्छतीति वाक्यमेव । अत्र प्रतिनियतकर्मसम्बन्धे हि कर्मान्तराऽयोगादकर्मकत्वम्, तेन भावे आत्मनेपदम् । पुत्रीय्यते । अशनाय्यते । समिध्य्यते; समिध्यते; अत्र "क्यो वा"॥४।३।८१॥ इति व्यञ्जनान्तात् क्यस्य वा लुक् । एवमग्रेऽप्याशिति ज्ञेयम् ॥ स० ॥ पुत्रीयेत् । समिध्येत् ॥ पं० ॥ पुत्रीयतु, समिध्यतु ॥ ह्य० ॥ महापुत्रमैच्छत् अमहापुत्रीयत् । असमिध्यत् । इन्द्रं, ऐश्वर्यं, औषधं वा ऐच्छत् ऐन्द्रीयत्, ऐश्वर्यीयत्, औषधीयत् । उस्रां गां ऐच्छत् औस्रीयत् । विषयमैच्छत्, अडागमे; "सयसितस्य"॥२।३।४७॥ इत्यनेन षत्वाप्राप्तौ, व्यसयीयत् ॥ अद्य० ॥ अपुत्रीयीत्, अपुत्रीयिष्टाम् । असमिधीत्; असमिध्यीत् । भावे, अपुत्रीयि; असमिधि; असमिध्यि ॥ परो० ॥ पुत्रीयाञ्चकार । कीयाञ्चकार; क्यनः सस्वरत्वेनात्राम् सिद्धः । समिधाञ्चकार; समिध्याञ्चकार । पुत्रीयात् । समिध्यात्; समिध्यात् । पुत्रीयिता । पटमेष्टा पटीयिता । समिधिता; समिध्यिता । पुत्रीयिष्यति । समिधिष्यति; अल्लुकः स्थानित्वान्न गुणः । समिध्यिष्यति । अपुत्रीयिष्यत् । सनि "अन्यस्य"॥४।१।८॥ इति प्रथमादेर्द्वित्वे; पुपुत्रीयिषति; पुतित्रीयिषति; पुत्रीयियिषति; पुत्रीयिषिषति । एवं सिसमिधिषति; सिसमिध्यिषति । इन्दिद्रीयिषति; अत्र नकारस्य संयोगादित्वाद् "न बदनम्"

॥४।१।५॥ इति न द्वित्त्वम् । आजिह्वायकीयिषति । णिगि, पुत्रीययति । समिधयति; सामिध्ययति । ङे, अपुपुत्रीयत; अपुतित्रीयत; अपुत्रीयियत; अत्र "अतः"॥४।३।८२॥ इत्यनेन विषयेऽप्यकारलोपात् परनिमित्तत्वाभावात्, "स्वरस्य-"॥७।४।११०॥ इति स्थानित्वाभावात् यि इत्यस्य द्वित्वं नतु य इत्यस्य । एवं क्यङ्ङादिष्वपि ज्ञेया साधनिका । पुत्रीययाञ्चकारेत्यादि । पुत्रीयन् । पुत्रीयि ५ त्वा, ता, तुम्, तः, २ वान् । सामिध्यन् । सामिधि ५ त्वा, ता, तुम्, तः, २ वान् । सामिध्यि ५ त्वा, ता, तुम्, तः, २ वान् । एवमन्योदाहरणेष्वपि सर्वं वाच्यम् ॥ "आधाराच्चोपमान-"॥३।४।२४॥ इति आचारक्यनि तु, पुत्रमिवाचरति मन्यते पुत्रीयति शिष्यम् । पित्रीयति श्वशुरम् । "ऋतो रीः"॥४।३।१०९॥ इति रीः; मात्रीयति परदारान् । शत्रूयति बन्धून् । पायसीयति कदन्नम् । वस्त्रीयति कम्बलम् । कर्मण्यात्मनेपदम्; पुत्रीय्यते गुरुणा शिष्यः । स्वजनीय्यते परः साधुना । सनि तु, अशिश्वीयिषति; अश्वीयियिषति; अश्वीयिषिषति । कथं ॐ नमः पार्श्वनाथाय विश्वचिन्तामणीयते इति चतुर्थ्यन्तम् । उच्यते । चिन्तामणिमिवात्मानमाचरन् चिन्तामणीयन् तस्मै; अत्र वृत्तावन्तर्भावान्न कर्मणः पृथग् प्रयोगः, क्विप्स्थाने वक्ष्यमाणपरमतप्रयोगे इव । एवं अलीयते इत्यादिप्रयोगेष्वपि ज्ञेयम् । आधारादपि क्यन् । प्रासाद इवाचरति व्यवहरति प्रासादीयति कुट्याम् । सौधीयति कुटीरे । खट्वीयति भूमौ । क्ये, प्रासादीय्यते ॥ ह्य० ॥ प्रासादीयत् । प्रासिसादीयिषति । "न प्रादि-"॥३।३।४॥ इत्यनेन प्रादेरुत्तर एव धातुरिति तस्याडागमो द्विर्वचनं च भवतः । सौधीयित्वा । प्रासादीय्य गतः । शेषं प्राग्वत् ॥ इति क्यन् ॥ २ ॥

"कर्तुः क्विप्-"॥३।४।२५॥ अश्व इवाचरति अश्वति । गर्दभति । पुत्रति । कलत्रति । दरिद्रति कृपणः । अर्कति विधुः । मालाति सर्पः । अरयति भ्राता । नारयति पुमान् । रिपवति । विधवति । वधवति । भ्रातरति; एषु गुणः । रायति । गवति । नावति । गोधुग्, मधुलिड् वा इवाचरति गोदोहति; मधुलेहति; अत्रोपान्त्यगुणः । नाम्नो धातुत्वेऽप्युपान्त्यस्य धातुनिष्पन्नत्वाभावाद्गुणाभावे; अनडुहति । गिरति । पुरति । "रो लुप्यरि" ॥२।१।७५॥ इति रत्वे; अहरति । राजेवाचरति राजनति; अस्य क्विपो व्यञ्जनादित्व-

किस्त्वपित्त्वफलं नेष्यते; तेन "नाम सिद्-"॥१।१।२१॥ इति पदसंज्ञाया अभावान्नात्र न लोपः। प्राग्दर्शितेषु अरयतीत्यादिषु गुणः। अयामिवाचरति इदमति। किमतीत्यादौ "अहन्पञ्चम-"॥४।१।१०७॥ इति न दीर्घश्च। अन्ये तु क्विपः कित्त्वाद्दीर्घमिच्छन्ति; इदामति। कीमति। कम्, कामति। शम्, शामतीत्यादि। गल्भ क्लीब होडात्तु ङित्। ङित्त्वादात्मनेपदम्। गल्भ इवाचरति गल्भते; प्रगल्भते। क्लीबते। होडते। होडो मूर्खः। भावे; अश्व्यते एडकेन। गर्दभ्यते किशोरेण। "दीर्घश्च्वि-"॥४।३।१०८॥ इति दीर्घे, अरीयते बन्धुना। विधूयते मुखेन। "रिः शक्य-"॥४।३।११०॥ इति रित्वे; पित्रियते श्वशुरेण। "य्यक्ये"॥१।२।२५॥ इति क्यवर्जनादवादेशाभावे; गोयते रासभ्या; अत्र "आत्सन्ध्यक्षरस्य"॥४।२।१॥ इति न आः; गव्यतीति क्यन्नन्तप्रयोगे आत्वादर्शनात्। "नं क्ये"॥१।१।२२॥ इत्यत्र क्यस्याग्रहणात्पदान्ताभावान्नस्य लुगभावे; राजन्यते सेवकेन। अश्वेत्। अश्वतु। आश्वत्॥ अद्य०॥ आश्वीत्, आश्विष्टाम्, आश्विषुः, आश्वीः। एवं अगर्दभीत्, अगर्दभिष्टाम्०। अमालासीत्। अवादेशे कृते "व्यञ्जनादेर्वोपान्त्य-"॥४।३।४७॥ इति वा वृद्धौ; अगावीत्, अगवीत्। विः पक्षी, स इवाचारीत् अवायीत्, अवयीत्; अयादेशे पश्चात् वृद्धिः। भावे; आश्वि। अमालायि। अगावि॥ प०॥ प्राचः पूर्वस्माद्विधिरित्याश्रयणे, "स्वरस्य परे-"॥७।४।११०॥ इति अल्लुकः स्थानित्वेन "धातोरनेक-"॥३।४।४६॥ इत्यामि; अश्वाञ्चकार ३। हंसाञ्चकार। गल्भाञ्चक्रे; प्रगल्भाञ्चक्रे। द्वित्वेऽपि च कृते वृद्धौ; जुगाव, जुगवतुः; जुगविम। कश्चित्तु प्रत्ययान्तादेकस्वरादप्यामादेशमिच्छति। गवाञ्चकार ३। स्वाञ्चकारेत्यादि। भावे, अश्वाञ्चक्रे। जुगवे। अश्व्यात्। गव्यात्। राजन्यात्। अश्विषीष्ट। अश्विता। अश्विष्यति। गाविष्यति। आश्विष्यत्। अगविष्यत्। श्वेर्द्वित्वे; अशिश्विषति; अश्विषिषति। एवं जिहंसिषति। जुगविषति। अश्वन्तं प्रयुङ्क्ते अश्वयति। ङे, आशश्वत्; अत्र श्वद्वित्वम्। गावयति। अजूगवत्। उरुरिवाचरतीति क्विब्लोपे णौ, उरावयति। ङे, औरिरवत्। द्वित्वे कृते पूर्वस्य "लघोः-"॥४।१।६४॥ इति न दीर्घः स्वरादित्वात्। अश्वन्। अश्वन्ती। अश्वत्। अश्विष्यन्। अश्वि ६ त्वा, ता, तुम्, तः, २ वान्, तव्यम्। गवितः। एके तु

कर्तुः सम्बन्धिन उपमानात् द्वितीयान्तात् क्विप्क्यङाविच्छन्ति; अश्वमिवात्मानमाचरति गर्दभः अश्वति । श्येनमिवात्मानमाचरति काकः श्येनायते । तन्मतसंग्रहार्थं "कर्तुः-"॥३।४।२५॥ इति षष्ठी व्याख्येया, "द्वितीयायाः-"॥३।४।२२॥ इति चानुवर्त्तनीयम् ॥ इति क्विप् ॥ ३ ॥

"क्यङ्"॥३।४।२६॥ इति आचारे क्यङि, पुरुष इवाचरति पुरुषायते स्त्री । राजायते । श्येनायते काकः । भारायते नेपथ्यम् । सन्ध्यायतेऽलक्तकः । गार्ग्य इवाचरति गार्गीयते । वात्सायते, अत्र "आपत्यस्य क्यच्च्योः"॥२।४।९१॥ इति यञो लोपः । चिन्तामणीयते । वाङ्मीयते । ग्रामणीयते । प्रभूयते सेवकः । विधूयते । पित्रीयते । भ्रात्रीयते । रैयते । गव्यते । नाव्यते । दधृष्यते । मित्रद्रुह्यते । मरुत्यते । जलमुच्यते । भिषज्यते । सम्राज्यते । दिव्यते । तद्यते । यद्यते । एतद्यते । इदम्यते । किम्यते । भवत्यते । लद्यते सुतस्ते । मद्यते मद्भृत्यः । "सो वा लुक्-"॥३।४।२७॥ इति वा सलोपे, सरायते, सरस्यते । चन्द्रमायते, चन्द्रमस्यते । विद्वायते, विद्वस्यते । पय इवाचरति पयायते, पयस्यते । "ओजोऽप्सरसः"॥३।४।२८॥ इति नित्यं सलोपे, ओज इवाचरति ओजायते; ओजस्वीवाचरतीत्यर्थः । ओजः शब्दस्य तद्वति वृत्तिः । अप्सरायते । ओजस्यते । अप्सरस्यते इत्यप्यन्ये । "क्यङ्मानिपित्तद्धिते"॥३।२।५०॥ इति पुंस्त्वे; युवतिरिवाचरति युवायते । तरुणी, तरुणायते । श्येनी, श्येतायते । एनी, एतायते । एवं हरिण्यादयोऽपि । तत्र श्येनी शुभ्रा । एनी कर्बुरा, शुभ्रा वा । हरिणी नीला । भारिणी पाटला धूसरा घृतवर्णा वा । रोहिणी रक्ता । एवं पट्वी, पटूयते । "तद्धिताककोपान्त्य-"३।२।५४॥ इति न पुंवत्; धार्मिकायते । एकिकायते । पाचिकायते । पाठिकायते । कारिकायते । एकादशीयते । चतुर्थीयते । पञ्चमीयते । "तद्धितः स्वरवृद्धिहेतुः-"॥३।२।५५॥ इति न पुंस्त्वम्; माहेश्वरीयते । सौगतीयते । रक्ते तु स्यात्; कौङ्कुमायते । "स्वाङ्गान्ङीर्जातिश्चामानिनि"॥३।२।५६॥ इति पुंवद्भावाभावः; चारुकेशीयते । सुगात्रीयते । वानरीयते । ब्राह्मणीयते ॥ भाक ॥ पुरुषाय्यते कुटिलाभिः । राजाय्यते ॥ ह्यस्त० ॥ उत्सुक इवाचरत् औत्सुकायत ॥ अद्य० ॥ औत्सुकायिष्ट । दृषदिवाचारीत् अदृषदिष्ट; अदृषयिष्ट; अत्र "क्यो वा"॥४।३।८१॥ इति क्यङो वा लुक् ॥ भाक ॥ अदृ-

षदि; अदृषाधि। क इवाचचार कायाञ्चक्रे; अत्र क्यङः सस्वरत्वेन आम् सिद्धः। दृषदिषीष्ट; दृषद्यिषीष्ट । स्वरान्तात्तु क्यङो न लुक् । पटायिता । दृषदिष्यते; दृषद्यिष्यते । सनि, पुपुरुषायिषते; पुरुरुषायिषते; पुरुषिषायिषते; पुरुषायियिषते; पुरुषायिषिषते । एवं जिहंसायिषते । शिश्येनायिषते । उत्सुसुकायिषते । उत्सु-कायि ५ तः, त्वा, तुम्, ता, तव्यम् ॥ शेषं क्यन्वत् ॥ इति आचारक्यङ् ॥४॥

"च्व्यर्थे भृशादेः स्तोः"॥३।४।२९॥ इति च्व्यर्थे वा क्यङ्; स्तोः सम्भवे लुक् च। अभृशो भृशोभवति भृशायते । शीघ्रायते । उन्मनायते । वेहायते गौः । संश्वायते; विस्मापकीभवतीत्यर्थः । अनोजस्वी ओजस्वी भवति ओजायते; अत्र तद्वद्वृत्तेरेव च्व्यर्थ इति, धर्ममात्रवृत्तेर्न भवति; अनोज ओजोभवति । पक्षे तु च्विः, भृशीभवति । भृश, उत्सुक, शीघ्र, चपल, पण्डित, आणुर, कणुर, फेन, शुचि, नील, हरित, मन्द, मद्र, भद्र, संश्वत्, तृपत्, रेफत्, रेहत्, वेहत्, वर्चस्, ओजस्, उन्मनस्, सुमनस्, दुर्मनस्, अभिमनस् ॥ ह्यस्त० ॥ अनभिमना अभिमना अभवत् अभ्यमनायत । औत्सुकायत ॥ अद्य० ॥ अभ्यमनायिष्ट । अभिमिमनायिषते; अभिमनिनायिषते; अभिमनायियिषते; अभिमनायिषिषते । णौ; अभिमनाययति । ङे; अभ्यममनायत; अभ्यमनना-यत्; अभ्यमनायियत्; अत्र विषयेऽप्यल्लोपात् परनिमित्तत्वाभावेनाल्लुकः स्था-नित्वाभावात् यिद्वित्वम्। क्त्वि, अभिमनाय्य गतः॥ इति च्व्यर्थक्यङ् ॥ ५ ॥

"डाच्लोहितादिभ्यः-"॥३।४।३०॥ इति क्यङ् । डाचन्त; अपटत् पटत् भवति पटपटायति; पटपटायते। "क्यङ्षो नवा"॥३।३।४३॥ इति वाऽऽत्मनेपदम्। अत्र "अव्यक्तानुकरणादनेकस्वरात्कृभ्वस्तिनानितौ द्विश्च"॥७।२।१४५॥ इति डाच् द्वित्वं च, "डाच्यादौ"॥७।२।१४९॥ इति पूर्वस्य तो लुक् च। एवं दमदमा, घटघटा, झणझणा, मदमदा, छमछमा, कमकमा, बणबणा, फरफरा इत्यादयः। अलोहितो लोहितो भवति लोहितायति, ते । लोहित, जिह्म, श्याम, धूम, चर्मन्, हर्ष, गर्व, सुख, दुःख, मूर्च्छा, निद्रा, कृपा, करुणा, धूमादीनां स्वतन्त्रार्थवृत्ती-नां च्व्यर्थाभावात् तद्वद्वृत्तिभ्य एव प्रत्ययो भवति। अधूमवान् धूमवान् भवति धूमायति, ते । बहुवचनमाकृतिगणार्थम्; तेनामृतं यस्य विषायतीति सिद्धम्।

तथा लम्ब,* शोभा, लीला, शब्द, बिभ्रमादयोऽपि शब्दा ज्ञेयाः। तत्र च शोभादयस्तद्वति वर्त्तमाना एवावगन्तव्याः; तेन लम्बायमानं, शोभायमानमित्यादि सिद्धम् ॥ इति क्यङ् ॥ ६ ॥

"कष्टकक्षकृच्छ्रसत्रगहनाय पापे क्रमणे"॥३।४।३१॥ कष्टादिभ्यश्चतुर्थ्यन्तेभ्यः पापवृत्तिभ्यः क्रमणेऽर्थे वा क्यङ् । कष्टाय कर्मणे क्रामति प्रवर्त्तते कष्टायते । कक्षायते । कृच्छ्रायते । सत्रायते । गहनायते । "रोमन्थाद्व्याप्यादुच्चर्वणे"॥३।४।३२॥ रोमन्थमुच्चर्वयति रोमन्थायते गौः; उद्गीर्य चर्वयतीत्यर्थः। "फेनोष्मबाष्पधूमा-"॥ ॥३।४।३३॥ फेनमुद्वमति फेनायते। ऊष्मायते । "नं क्ये"॥१।१।२२॥ इति पदत्वान्नलोपः । बाष्पायते । धूमायते । "सुखादेरनुभवे"॥३।४।३४॥ सुखमनुभवति सुखायते। दुःखायते। सुख, दुःख, तृप्र, कृच्छ्र, अस्र, आस्र, अलीक, करण, कृपण, सोढ, प्रतीप। "शब्दादेः कृतौ वा"॥३।४।३५॥ शब्दं करोति शब्दायते। वैरायते । कलहायते। "शब्दादेः कृतौ वा"॥३।४।३५॥ इत्यत्र वाशब्दो व्यवस्थितविभाषार्थः; तेन पक्षे यथादर्शनं णिजपि। शब्दयति । वैरयति । वाऽधिकारस्तु वाक्यार्थम्। शब्द, वैर, कलह, ओघ, वेग, युद्ध, अभ्र, कण्व, मम, मेघ, अट, अट्टा, अटाट्या, सीका, सोटा, कोटा, पोटा, प्रुष्वा, सुदिन, दुर्दिन, नीहार ॥ इति क्रमणाद्यर्थक्यङ् ॥ ७ ॥

"तपसः क्यन्"३।४।३६॥ इति करणेऽर्थे क्यन् । तपः करोति तपस्यति यती; अत्र व्रतार्थस्तपःशब्दः । सन्तापार्थे तु, शत्रूणां तपः करोति तपस्यति शत्रून् । णिगि "अतः"॥४।३।८२॥ इत्यल्लुकि, "क्यो वा"॥४।३।८१॥ इति वा क्यलुकि; तपस्ययति; तपसयति; अत्राल्लुकः स्थानिलान्नान्त्यस्वरादिलोपः ॥ अद्य० ॥ ङे, अततपस्यत; अतपपस्यत; अतपसस्यत; अत्र "अन्यस्य"॥४।१।८॥ इति तृतीयावयवस्य द्वित्वेऽदन्तक्यनः फलम्। क्यलुकि तु; अततपसत, अतपपसत, अतपसिसत; अत्राल्लुको न स्थानित्वम् । "नमोवरिवश्चित्रङोऽर्चासेवाश्चर्ये"॥३।४।३७॥ नमः करोति नमस्यति देवान्। वरिवस् अव्ययः। वरिवः करोति वरिवस्यति गुरुम् । चित्रं करोति चित्रीयते । कस्य चित्रीयते न धीरित्यकर्मकः । चित्रमाश्चर्यं करोति जनस्येति विवक्षायां चित्रीयते जनमिति सकर्मकः । ङ आत्मनेपदार्थः ।

आश्चर्यादन्यत्र तु, चित्रं करोति; आलेख्यमित्यर्थः ॥ भाक ॥ नमस्यते देवः । नमस्यते; अत्र "क्यो वा"॥४।३।८१॥ इति वा क्यलुक् । अनम ४ स्यीत्, सीत्, स्यिष्टाम्, सिष्टाम् । नमस्याञ्चकार ३; नमसाञ्चकार ३ । नमस्यि ४ तः, त्वा, ता, तुम्; नमसि ४ तः, त्वा, ता, तुम् । इति करणाद्यर्थक्यन् ॥८॥

अथ णिङ् ॥ "अङ्गान्निरसने णिङ्"॥३।४।३८॥ हस्तौ निरस्यति हस्तयते । पादयते । ग्रीवयते । "पुच्छादुत्परिव्यसने"॥३।४।३९॥ पुच्छमुदस्यति उत्पुच्छयते । पर्यस्यते परिपुच्छयते । व्यस्यति विपुच्छयते । अस्यति पुच्छयते । "भाण्डात्समाचितौ"॥३।४।४०॥ समाचयनं समा परिणा च द्योत्यते। भाण्डानि समाचिनोति सम्भाण्डयते; परिभाण्डयते । "चीवरात्परिधानार्जने"॥ ३।४।४१॥ चीवरं परिधत्ते परिचीवरयते । चीवरमर्जयति चीवरयते । क्ये, हस्त्यते । पाद्यते ॥ ९ ॥

अथ णिच् ॥ "णिज्बहुलं नाम्नः कृगादिषु"॥३।४।४२॥ मुण्डं करोति मुण्डयति छात्रम् । एवं मिश्रयत्योदनम् । श्लक्ष्णयति वस्त्रम् । लवणयति सूपम् । "सम्प्रोन्नेः सङ्कीर्णप्रकाशाधिकसमीपे"॥७।१।१२५॥ इति प्राक् प्रकाशेऽर्थे कटप्रत्यये प्रकटः, तं करोति प्रकटयति स्वाभिप्रायम् । प्रमाणयति साक्षिणम् । कृतार्थयति । छिद्रं करोति छिद्रयति । कर्णयति । दण्डयति । अन्धयति । अङ्कयति । व्याकरणस्य सूत्रं करोति व्याकरणं सूत्रयति । प्रत्यये उत्पन्ने व्याकरणसूत्रयोः सम्बन्धो निवर्त्तते । सूत्रयति । क्रियासम्बन्धात्तु द्वितीयैव नतु षष्ठी । एवं द्वारस्योद्घाटं करोति द्वारमुद्घाटयति । पर्यन्तयति कृत्यम् । चिह्नयति दृष्टचरम् । संवर्गयति बन्धून् । खट्वयति दारु । पाप्मिनामुल्लाघं करोति पाप्मिन उल्लाघयति । त्रिलोकीं तिलकयतीत्याद्यपि द्रष्टव्यम् । पटुमाचष्टे करोति वा "नामिनोऽकलि-"॥४।३।५१॥ इति वृद्धौ अन्त्यस्वरलोपे, पटयति । पट्वीमाचष्टे करोति वा "जातिश्च णि-"॥३।२।५१॥ इति पुंवत्त्वे वृद्धौ अन्त्यस्वरलोपे च; पटयति । एवं लघुं लघ्वीं वा लघयति । एवं सुखिनं सुखयति । दुःखिनं दुःखयति । कुशलयति । वार्त्तयति । एवं प्रियं प्रापयति। स्थिरं स्थापयति । स्फिरं स्फापयति । उरुं वरयति । गुरुं गरयति । बहुलं बंहयति । तृप्रं त्रपयति । दीर्घं द्राघयति । वृद्धं वर्षयति । वृन्दारकं वृन्दयति । "प्रियस्थिर-

स्फिरोरुगुरुबहुलतृप्रदीर्घवृद्धवृन्दारकस्येमनि च प्रास्थास्फावरगरवंहत्रपद्राघवर्षवृन्दम्" ॥७।४।३८॥ इत्यनेन प्राद्यादेशाः। एवं "पृथुमृदुभृशकृशदृढपरिवृढस्य ऋतो रः" ॥७।४।३९॥ प्रथयति, म्रदयति, भ्रशयति, क्रशयति, द्रढयति। द्रढयित्वा। परिद्रढय्य गतः। परिव्रढयति। पृथ्वीं, प्रथयति। मृद्वीं, म्रदयति; पुंवद्भावः। स्थूलदूरयुवह्रस्वक्षिप्रक्षुद्रस्यान्तस्थादेर्लुग् गुणश्च नामिनः स्थूलमाचष्टे करोति वा स्थवयति। एवं दूरं, दवयति। युवानं, यवयति। ह्रस्वं, ह्रसयति। क्षिप्रं, क्षेपयति। क्षुद्रं, क्षोदयति। स्रग्विणमाचष्टे स्रजयति। एवं ओजस्विनं, ओजयति। गोमन्तं, गवयति। त्वग्वन्तं, त्वचयति। कुमुद्वन्तं, कुमुदयति। अत्र "विन्मतोर्णीष्ठेयसौ लुप्"॥७४।३२॥ इति विन्मत्वोर्लुप्। कर्तृमन्तमाचष्टे करयति। कर्त्तारमाचष्टे करयति। पयस्विनं, पययति। वसुमन्तं, वसयति; एषु पूर्वेण विन्मत्वोर्लुपि पश्चात् "त्र्यन्त्यस्वरादेः"॥७।४।४३॥ इति तृशब्दस्यान्त्यस्वरस्य च लुक्। एवं संक्रामन्तं करोति संक्रामयति। मातरं, भ्रातरं वाऽऽचष्टे मातयति, भ्रातयति; इत्यत्र त्व्युत्पन्नत्वात् तृशब्दस्य न लोपः। स्त्रीमाचष्टे स्त्रापयति। रै, राययति। गो, गवयति। नौ, नावयति। गिर्, गिरयति। पुर्, पुरयति। एषु "नैकस्वरस्य" ॥७।४।४४॥ इति न अन्त्यस्वरादिलोपः। "अल्पयूनोः कन् वा"॥७।४।३३॥ अल्पं युवानं वाऽऽचष्टे कनयति। पक्षे, अल्पयति; यवयति। प्रशस्यमाचष्टे करोति वा श्रयति; "प्रशस्यस्य श्रः"॥७।४।३४॥ एवं वृद्धं, ज्ययति; "वृद्धस्य च ज्यः" ॥७।४।३५॥ बाढं साधयति; अन्तिकं नेदयति; "बाढान्तिकयोः साधनेदौ" ॥७।४।३७॥ बहुमाचष्टे करोति वा भूययति; "बहोर्णीष्ठे भूय्"॥७।४।४०॥ चिरमाचष्टे विलम्बते वा चिरयति दूतः। वृक्षमाचष्टे रोपयति वा वृक्षयति। कृतं गृह्णाति कृतयति। एवं वर्णयति। त्वां मां वाऽऽचष्टे त्वदयति,मदयति; अत्र नित्यत्वादन्त्यस्वरादिलोपात् प्रागेव अदं विश्लेष्य त्वमादेशौ; पश्चादपि अन्त्यस्वरादिलोपो न; लोपात्स्वरादेश इति न्यायात् लुगस्येत्येव प्रवर्त्तते। तस्मिन्नपि कृते न "नैकस्वरस्य"॥७।४।४४॥ इति निषेधात्। "ञ्णिति"॥४।३।५०॥ इति वृद्धिरपि न, अधातुत्वात्। युवां युष्मान् वाऽऽचष्टे युष्मयति। एवं अस्मयति। त्वचं गृह्णाति त्वचयति। त्वचशब्दोऽदन्तस्त्वक्पर्यायः। व्यञ्जनान्तस्य तु "ञ्णिति"

॥४।३।५०॥ इति वृद्धौ त्वाचयतीति रूपं स्यात्, तच्चानिष्टमिति न कृतम् । अत्र व्यञ्जनान्तं त्वक्शब्दं परित्यज्य स्वरान्तपाठेन ज्ञाप्यते नाम्नोऽप्यतोऽन्त्यस्योपान्त्यस्य च; अतो "ञ्णिति"॥४।३।५०॥ इति सूत्रेण वृद्धिर्भवतीत्युत्पलमतं स्वस्यापि क्वचित्संमतमस्तीति । यथा त्वां मां वाऽऽचष्टे; अत्र परत्वात्पूर्वमन्त्यस्वरादिलोपे त्वमादेशेऽन्त्यस्वराकारस्य वृद्धौ प्वागमे; त्वापयति, मापयतीति । ननु कथं कारापयति, वन्दापयति, कथापयति, लेखापयतीत्यादि । उच्यते । महाकविप्रयुक्ता एते प्रयोगाः क्वापि न दृश्यन्ते । यदि च क्वचन सन्ति तदैवं समर्थनीयाः । करणं कारस्तमनुयुङ्क्ते; त्वं कुरुष्वेति प्रेरयतीत्यर्थः । उत्पलमतेन अतो "ञ्णिति"॥४।३।५०॥ इति वृद्धौ प्वागमे; भृत्येन कारापयति । एवं वन्दापयतीत्यादिष्वपि । रूपं दर्शयति रूपयति । रूपं निध्यायति निरूपयति । लोमान्यनुमार्ष्टि अनुलोमयति । तूस्तानि विहन्ति उद्धन्ति वा वितूस्तयति, उत्तूस्तयति केशान्; विजटीकरोतीत्यर्थः । वस्त्रं वस्त्रेण वा समाच्छादयति संवस्त्रयति । वस्त्रं परिदधाति परिवस्त्रयति । तृणानि उत्प्लुत्य शातयति उत्तृणयति । हस्तिनाऽतिक्रामति अतिहस्तयति । एवमत्यश्वयति । वर्मणा सन्नह्यति संवर्मयति । तुलां रोपयति तुलयति कनकम् । वीणया उपगायति उपवीणयति । सेनयाऽभियाति "स्थासेनि-"॥२।३।४०॥ इति षत्वे, अभिषेणयति । चूर्णैरवध्वंसयति अवकिरति वा अवचूर्णयति । वास्या छिनत्ति वासयति । एवं परशुना परशयति । असिना असयति । श्लोकैरुपस्तौति उपश्लोकयति । हस्तेनापाक्षिपति अपहस्तयति । अश्वेन संयुनक्ति समश्वयति । गन्धेनार्चयति गन्धयति । एवं पुष्पयति । बलेन सहते बलयति । शीलेनाचरति शीलयति । एवं सामयति । सान्त्वयति । छन्दसा उपचरति उपमन्त्रयते वा उपच्छन्दयति । पाशेन संयच्छति संपाशयति । पाशं पाशाद्वा विमोचयति विपाशयति । शूरो भवति शूरयति । वीरं उत्सहते वीरयति । कूलमुल्लङ्घयति उत्कूलयति । कूलं प्रतीपं गच्छति प्रतिकूलयति । कूलमनुगच्छति अनुकूलयति । लोष्टानवमर्दयति अवलोष्टयति । पुत्रं सूते पुत्रयतीत्यादि । अत्रोत्पुच्छयते इत्यादाविव, विपाशयति संपाशयतीत्यादौ यत्रैक-

शब्देन नानाक्रियार्थानामाभिधानं तत्र युक्तौ विविधोपसर्गप्रयोगः; यत्र त्वेक एव क्रियार्थस्तत्र स न युक्तः; श्येनायते इत्यादिवत् अतिहस्तयतीत्यादौ तु णिचः करोत्याचष्टेऽतिक्रामतीत्याद्यनेकार्थत्वात्सन्देहे तद्व्यक्तये युक्त उपसर्गप्रयोगः ॥ भाक ॥ मुण्ड्यते; प्रकट्यते इत्यादि ॥ ह्यस्त० ॥ अभ्यषेणयत् ॥ अद्य० ॥ अमुमुण्डत् । "अन्यस्य"॥४।१।८॥ इति यथेच्छं द्वित्वे, अपप्रकटत्; अप्रचकटत्; अप्रकटिटत् । स्वापमकरोत् असस्वापत् । नाम्नोपि "स्वपेर्यङ्ङे च"॥४।१।८०॥ इति य्वृतमिच्छन्त्यन्ये । असुषुपत् । अर्यमाख्यत् आरर्यत; अत्रान्त्यस्वरलोपः । "स्वरादेः-"॥४।१।४॥ इति र्यद्वित्वे कार्ये स्थानिनिमित्तापेक्षयापि प्राग्विधिरिष्यते । शूरं मालां वाऽऽख्यत् अशुशूरत्; अममालत । दृषदमाख्यत् अदहषत् । राजानमतिक्रान्तवान् अत्यरराजत् । लोमान्यनुमृष्टवान् अन्वलुलोमत् । स्वामिनमाख्यत् असस्वामत् । तादृशमाख्यत् अततादृत् । मातरमाख्यत् अममातत् । कलिं हलिं वाऽग्रहीत् अचकलत्, अजहलत्; एषु समानलोपान्न सन्वद्भावः । कलिहलिवर्जनान्नाम्नोऽपि वृद्धिः स्यात्; तेन वास्या परिच्छिन्नवान् पर्यवीवसत् । स्वादु कृतवान् असिस्वदत् । पटुं लघुं कपिं हरिं वाऽऽख्यत्; अपीपटत्; अलीलघत्; अचीकपत्; अजीहरत्; अत्रेकारोकारयोः पूर्वमेव वृद्धौ कृतायामन्त्यस्वरादिलोपे समानलोपाभावात् "उपान्त्यस्यासमान-"॥४।२।३५॥ इति यथासम्भवमुपान्त्यह्रस्वो "असमानलोपे सन्वद्-"॥४।१।६३॥ इति सन्वद्भावश्च सिद्धः। अन्ये तु नाम्नो वृद्धिमनिच्छन्त उइकारयोरेव लोपमिच्छन्तः समानलोपित्वात्सन्वद्भावाभावेऽपपटत्; अललघत्; अचकपत् इत्याद्येवाहुः। इं उं वाऽऽख्यत्; वृद्धौ "स्वरादे-ः"॥४।१।४॥ इति द्वितीयस्य द्वित्वे च; आयियत्, आविवत् । ओतुमाख्यत्; स्वरलोपस्य स्थानित्वेन तु द्वित्वे, औतुतत् । गोनौर्यद्वा गोसहिता नौः गोनौः, "मयूरव्यंसक-"॥३।१।११६॥ इति मध्यपदलोपी समासः; तामाख्यत्, "त्र्यन्त्यस्वर-"॥७।४।४३॥ इति औलोपे; अजूगुनत् । औतः स्थानित्वेनोपान्त्यत्वाभावान्न ह्रस्व इति केचित् । अजुगोनत् । वहेः क्ते ऊढः, तमाख्यत्, औजढत्; अत्र परे द्वित्वे "हो धुट्पदान्ते"॥२।१।८२॥ इत्यस्यासत्त्वे तदाश्रितत्वात् "अघश्चतुर्थात्तथोर्धः"॥२।१।७९॥ इत्यस्याप्यसत्त्वे ढत्वघत्वयोरसत्त्वात्, अन्त्यस्वरादिलोपस्य च

द्वित्वे स्थानित्वादकारेण सह "नाम्नो द्वितीय-"॥४।१।७॥ इत्यनेन ढेति द्विर्वचनम्; एवमूढिमाख्यत् औजिढत्। केचित्तु अन्त्यस्वरादिलोपस्य स्थानित्वमनिच्छन्तो ढि इति द्वित्वे, ऊढमूढिं वाख्यत् औजिढदिति मन्यन्ते ॥ भाक ॥ अमुण्डि। ञिटि, अमुण्डिषाताम् । इटि, अमुण्डयिषाताम्; अमुण्डि २ ध्वम्, ड्ढ्वम्; अमुण्डयि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम् । एवं अप्रकटि । अकलि । अहलि । अपटि । अलघि । अकपि । अहरि। अगोनि । कर्मकर्त्तरि; अमुमुण्डत स्वयमेव पोतः॥ परोक्षा ॥ मुण्डयां ३, चकार, बभूव, आस वा । प्रकटं दृषदं पटुं कलिं लघुं कपिं चाचख्यौ चकार वा प्रकटयाञ्चकार ३; दृषदयाञ्चकार ३; पटयाञ्चकार ३; कलयाञ्चकार ३; लघयाञ्चकार ३; कपयाञ्चकार ३ ॥ भाक ॥ मुण्डयाञ्चक्रे ३; बभूवे; आहे इत्यादि ॥ आशीः ॥ मुण्ड्यात्; दृष्यात्; पट्यादित्यादि ॥ भाक ॥ इटि, मुण्डयिषीष्ट । ञिटि, मुण्डिषीष्ट । एवं दृषयिषीष्ट; दृषिषीष्टेत्यादि ॥ श्वस्त०॥ मुण्डयिता; दृषयिता; पटयिता ॥ भाक ॥ मुण्डायिता; मुण्डिता ॥ भविष्य० ॥ मुण्डयिष्यति; दृषयिष्यति; पटयिष्यतीत्यादि ॥ भाक ॥ मुण्डयिष्यते; मुण्डिष्यते । दृषयिष्यते; दृषिष्यते । पटयिष्यते; पटिष्यते । एवमन्येऽप्युदाहार्याः ॥ सनि, मुमुण्डयिषति । शुशूरयिषति । स्वापञ्चिकीर्षति सिष्वापयिषति; अत्र "स्वपो णावुः" ॥४।१।६२॥ इति न पूर्वस्य उः णेर्घञा व्यवधानात् । इं उं चाख्यातुमिच्छति आयिययिषति; आविवायिषति । उतुं उडुं चाख्यातुमिच्छति उतुतयिषति उडुडयिषति; अत्रान्त्यस्वरलोपस्य स्थानित्वेन तुड्ड द्वित्वम् । प्रकटं कर्तुमिच्छति पिप्रकटयिषति; प्रचिकटयिषतीत्यादि । एवं कवलं धवलं च कर्तुमिच्छति चिकवलयिषति; दिधवलयिषति । सेनयाऽभियातुमिच्छति अभिषिषेणयिषति । अभ्यषिषेणयिषीत् । णिगि तु मुण्डयन्तं पटयन्तं वा प्रयुङ्क्ते णेर्लुकि मुण्डयति पटयतीत्याद्येव प्राग्वत् । मुण्डयित्वा । सप्रत्ययस्य प्रादेर्धातुत्वात् यबभावे; प्रकटयि ४ त्वा, ता, तुम्, तव्यम् । "सेट्क्तयोः"॥४।३।८४॥ इति णेर्लुकि; प्रकटितः, २ वान् ॥

"व्रताद्भुजितन्निवृत्त्योः"॥३।४।४३॥ पय एव मया भोक्तव्यमिति व्रतं करोति गृह्णाति वा पयोव्रतयति । सावद्यान्नं मया न भोक्तव्यमिति व्रतं करोति गृह्णाति वा

सावद्यान्नं व्रतयति । "सत्यार्थवेदस्याः"॥३।४।४४॥ सत्यमाचष्टे करोति वा सत्यापयति । एवमर्थापयति; वेदापयति ।"श्वेताश्वाश्वतरगालोडिताह्वरकस्याश्वतरेतकलुक्" ॥३।४।४५॥ श्वेताश्वमाचष्टे करोति वा; श्वेताश्वेनाऽतिक्रामति वा श्वेतयति । एवमश्वयति । गालोडितं गोदोहनं विलोडनं वा, तदाचष्टे करोति वा गालोडयति । एवमाह्वरयति; आह्वरकं कुटिलं वाक्यं, कुटिलः पुरुषो वा ॥ अद्य० ॥ ङे, अवव्रतत् । विषयेऽप्यतो लोपस्य परनिमित्तत्वाभावेन स्थानित्वाभावे तु तिद्वित्वे; अव्रातितत् । अससत्यपत् । असातित्यपत् । ओणेरादित्करणज्ञापकात्पूर्वं उपान्त्यह्रस्वे पश्चाद् द्वित्वे, असत्यपिपत् । अर्तीथपत् । उपान्त्यह्रस्वे द्वित्वे च; अर्थापिपत् । एवं अविवेदपत्; अशिश्वेतत्; आशश्वत् ॥ परोक्षा ॥ अर्थापयां ३ चकार; बभूव; आस वा । अर्थाप्यात् । अर्थापयिष्यति । अर्तिथापयिषति; अर्थापिपयिषति; अर्थापयियिषति; अर्थापयिषिषति । एवं सिसत्यापयिषति । णिगि, अर्थापयतीत्याद्येव मूलप्रकृतिवत् । अर्थापितः । अर्थापयित्वा । अर्थापयिता ॥

इति श्रीमत्तपाचार्यश्रीदेवसुन्दरसूरिशिष्यश्रीगुणरत्नसूरिविरचिते क्रियारत्नसमुच्चये नामधातवः ॥



॥ अर्हम् ॥

अथ गुरुपर्वक्रमवर्णनाधिकारः ।

अनन्तं तज्ज्ञानं स हि निरुपमो दोषविलयो
नतिः शक्रादीनामहमहमिकापूर्वमिह सा ।
विसंवादातीतं तदपि च वचो दैवतगणे
न यस्मादन्यस्मिन् स जयतितरां वीरजिनपः ॥ १ ॥
जयति विजितदोषः श्रीसुधर्मा गणेशो (१)
जनितजनकजायाचौरबोधोऽथ जम्बूः (२) ।
प्रभवविभुरथो यश्चौर्यलब्धत्रिरत्नो (३)
मखगतजिनबुद्धः सूरिशय्यम्भवोऽतः (४) ॥ २ ॥
यशोभद्रः सूरिस्तदनु समभूद्विश्वविदितः (५)
ततः सूरिः ख्यातोऽजनि जगति सम्भूतिविजयः ।
तथा भद्राद्बाहूरचितवरनिर्युक्तिततिको
वराहाऽमर्त्यत्थं ह्यशिवमहरद्यः स्तवनतः (६) ॥ ३ ॥
योगीन्द्रः स्थूलभद्रोऽभूदथान्त्यः श्रुतकेवली ।
सिंहं स्वं दर्शयामास भगिनीविस्मयाय यः (७) ॥ ४ ॥
तस्मान्महागिरिरभूज्जिनकल्पिकल्पः
श्रीसम्प्रतेर्नरपतेश्च गुरुः सुहस्ती (८) ।
शिष्योत्तमावथ सुहस्तिविभोरभूतां
श्रीसुस्थितस्थविरसुप्रतिबद्धसूरी ॥ ५ ॥
तदा च सूरिमन्त्रस्य ध्याता ज्ञानचतुष्कवान् ।
सर्वज्ञदृष्टद्रव्याणां कोट्यंशमवलोकते ॥ ६ ॥
तेन तौ कौटिकौ ख्यातौ ततोऽभूत्कौटिको गणः (९) ।
तत्रेन्द्रदिन्न (१०) दिन्नर्षी (११) सूरिः सिंहगिरिस्ततः (१२) ॥ ७ ॥

जातिस्मृतिर्जृम्भकदत्तविद्ये श्रीसङ्घवात्सल्यमनीहता च ।
यस्मिन्नतुल्यान्यभवंस्ततोऽभूद् विभुः स वज्रो दशपूर्ववेदी (१३) ॥ ८ ॥
श्रीवज्रशाखाधुरिवज्रसेना (१४) न्नागेन्द्रचन्द्रादिकुलप्रसूतिः (१५) ।
चान्द्रे कुले पूर्वगतश्रुताढ्यः सामन्तभद्रो विपिनादिवासी (१६) ॥ ९ ॥
ततोऽपि वृद्धोऽजनि देवसूरिः (१७) प्रद्योतनः सूरिरथो शमाढ्यः (१८)।
श्रीमानदेवोऽथ पदस्य काले यदंसयोर्वीक्ष्य रमागिरौ द्वे ॥ १० ॥
भ्रष्टोह्ययं ही भवितेति खिन्ने गुरौ विधिज्ञः किल योऽभ्यगृह्णात् ।
भक्ताङ्गिभक्तिं विकृतीश्च सर्वा आजन्म भोक्ष्ये न हि सर्वथेति ॥ ११ ॥
पद्माजयादिदेवीभिर्नतो नड्डूलपूःस्थितः ।
शाकम्भरीपुरे मारिं जह्रे शान्तिस्तवाच्च यः (१९) ॥ १२ ॥

त्रिभिर्विशेषकम् ।

भक्तामराद्यद्भुतकाव्यसिद्धिः श्रीमानतुङ्गोऽथ बहुप्रसिद्धिः (२०) ।
श्रीवीरसूरि (२१) र्जयदेव (२२) देवानन्दौ (२३) क्रमेण प्रभुविक्रमश्च (२४) ॥१३॥
नरसिंहपुरे बोधिताहिंसकयक्षोऽथ सूरिनरसिंहः (२५) ।
नागहृदतीर्थकृते क्षपणकजेता समुद्रोऽथ (२६)॥ १४ ॥
ख्यातः श्रीहरिभद्रमित्रमभवत् श्रीमानदेवस्ततो
मान्द्याद्विस्मृतसूरिमन्त्रमिह यो लेभेऽम्बिकाया मुखात् (२७) ।
तस्मात् श्रीविबुधप्रभोऽजनि (२८) जयानन्दस्ततः संयमी (२९)
भव्याम्भोजरवी रविप्रभगुरुर्जज्ञेऽथ विज्ञेश्वरः (३०) ॥ १५ ॥
सरस्वतीकण्ठसुवर्णभूषणख्यातिर्यशोदेवयतीश्वरोऽमुतः (३१) ।
प्रद्युम्नसूरिर्जिनशासनाम्बरप्रद्योतनैकद्युमणिस्ततोऽभवत् (३२) ॥ १६ ॥
श्रीमानदेवोऽप्युपधानवाचकग्रन्थप्रणेताऽजनि विश्वपावकः (३३) ।
वादे जिते गोपगिरीशपूजितः सत्स्वर्णसिद्धिर्विमलेन्दुरप्यतः (३४) ॥१७॥
युगाङ्कनन्दप्रमिते ९९४ गतेऽब्दे श्रीविक्रमार्कात्सह सङ्घलोकैः ।
पूर्वावनीतो विहरन् धरायामुद्द्योतनः सूरिरथार्बुदाधः ॥ १८ ॥

आगत्य टेलीपुरसीमसंस्थपद्मासमासन्नवृहद्वटाधः ।
शुभे मुहूर्त्ते स्वपदेऽष्टसूरीनतिष्ठिपत्सौवकुलोदयाय ॥ १९ ॥

॥ युग्मम् ॥

ततो गणोऽयं वटगच्छसंज्ञोऽप्यभूद् वृहद्गच्छ इति प्रसिद्धः (३५) ।
श्रीसर्वदेवो विदितोऽतिभूरिप्रशस्यशिष्यः प्रथमोऽत्र सूरिः (३६)॥ २० ॥

रूपश्रीबिरुदख्यातो देवसूरिस्ततोऽभवत् (३७)।
श्रीसर्वदेवसूरीन्द्रः पुनरासीद्गुणोदधिः (३८) ॥ २१ ॥

तस्माद्यशोभद्रयतीशचन्द्रः श्रीनेमिचन्द्रश्च विनिद्रभद्रः (३९) ।
ततोऽजनि श्रीमुनिचन्द्रसूरिः प्रज्ञापराभूतसुपर्वसूरिः ॥ २२ ॥

नित्यं पपौ काञ्जिकमेकमम्भस्तत्याज सर्वा विकृतीश्च सम्यग् ।
जिगाय यो भावरिपूंश्च सोऽयं श्लाघ्यो न केषां मुनिचन्द्रसूरिः (४०) ॥२३॥

तस्याभवन्नजितदेवमुनीन्द्रवादि-
श्रीदेवसूरिवृषभप्रमुखा विनेयाः (४१) ।
आद्यादभूद्विजयसिंहगुरुर्गरीयान्
निरसङ्गतादिकगुणैरनिशं वरीयान् (४२) ॥ २४ ॥

ततः शतार्थिकः ख्यातः श्रीसोमप्रभसूरिराट् ।
सूरिः श्रीमणिरत्नश्च भारत्यास्तनयाविव (४३)॥ २५ ॥

मणिरत्नगुरोः शिष्याः श्रीजगच्चन्द्रसूरयः ।
सिद्धान्तवाचनोद्भूतवैराग्यरसवार्द्धयः ॥ २६ ॥

विधोश्चैत्रगणाम्भोधौ तपोज्ञानक्रियानिधेः ।
वाचकानामलङ्कारात् देवभद्रगणीश्वरात् ॥ २७ ॥

चारित्रमुपसम्पद्य यावज्जीवमभिग्रहात् ।
आचामाम्लतपस्तेनुस्तपागच्छस्ततोऽभवत् (४४) ॥ २८ ॥

त्रिभिर्विशेषकम् ।

तत्पट्टोदयभूधरे शशिरवी वागीश्वरीमन्दिरे
सेनान्यौ वृषभूपतेः शमरमाकर्णावतंसावुभौ ।

श्रीदेवेन्द्रमुनीश्वरोऽमलमना आद्यो द्वितीयः पुनः
सूरीशो विजयेन्दुरुत्तमगुणः सेव्यावभूतां सताम् (४५) ॥ २९ ॥
श्रीदेवेन्द्रगुरोः शिष्यौ तमस्तौमैकभेदकौ ।
महाप्रभावजायेतां जम्बूद्वीपरवी इव ॥ ३० ॥
विद्यानन्दमुनीन्दुरादिम इह प्रह्लादने पत्तने
यस्याचार्यपदेऽमुचन् दिविषदो गन्धोदकं मण्डपात् ।
दुष्टस्त्रीदमनः सुशास्त्ररचनः श्रीधर्मघोषः पुनः
पाथोधिप्रकटीकृताद्भुतमणिःश्रीगोमुखोद्बोधकृत् (४६) ॥३१॥

॥ तदा च ॥

योगी कश्चन शिष्यवृन्दकलितोऽवन्त्यां स्थितो गर्वभृ-
न्नानासिद्धिबहुप्रसिद्धिहृतहृद्भूपप्रजाऽभ्यर्चितः ।
तत्र स्थातुमयं न जैनयतिनां दत्ते कदाऽपि क्वचि-
च्चेदागच्छति कोऽपि साधुरिह यस्तं प्रत्यसौ मत्सरात् ॥ ३२ ॥
आसन्नोऽप्यथ दूरगोऽपि सहसा सौवप्रभावोद्धुरो
हुङ्कारात्तृणतन्तुधूलिकणिकाक्षेपात्तथा स्वाङ्कतः ।
मार्जाराच्चकुलोन्दुराहिसरटान् गोधावृकान् वृश्चिकान्
फेरण्डप्रभृतींश्च मुञ्चतितमां लक्षादिसङ्ख्यान् क्षणात् ॥३३॥

॥ युग्मम् ॥

अन्याश्चापि बिभीषिकाः प्रकटयत्युच्चैः स नानाविधा-
स्तद् दृष्ट्वा भयविप्लुताँश्छलयति क्षुल्लान् स पापः क्षणात् ।
साधुः कोऽपि न तत्र तिष्ठति ततः श्रीधर्मघोषोऽन्यदा
सूरिस्तत्र समीयिवान् बहुपरीवारो विहारक्रमात् ॥ ३४ ॥
साधूनध्वनि सङ्गतान् स सहसा दृष्ट्वाऽथ दुष्टो रुषा
दन्तैर्दष्टरदच्छदोऽवददऽदः श्वेताम्बराः किंधराः ।
शून्यास्ते सकलाऽपरा यदिह भोः प्राप्ता विशङ्का हठात्
दृष्टोऽहं यदि नो, श्रुतोऽपि किमु रे नात्र स्थितो नन्वहम् ॥ ३५ ॥

बाहुभ्यां जलधिं तराणि यदि वा तं शोषयाणि क्षणा-
दाकाशं विपुलं प्रयाणि खगवद्रात्रौ च कुर्यां दिनम् ।
शेषाहिं दृढयोगपट्टतुलया बध्नानि सौवासने
फूत्कृत्यापि गिरीन् नयानि गगने वायूरजोवद् रयात् ॥ ३६ ॥
॥ युग्मम् ॥

भो भो यात पलाय्य दृष्टिपथतो मां माऽवमन्ध्वं हठा-
न्नो चेत्स्थेयमिह स्थिरैर्भवति यत्तदृश्यतां सम्प्रति ।
व्याहार्षुर्मुनयो मुधाऽऽत्मनि मदं धत्से विधत्से न किं
क्षान्तिं ब्रूम इदं हिताय भवतो जानासि चेत्किंचन ॥ ३७ ॥
नोचेद्यन्ननु रोचते प्रकुरु तत् तावत् स्थिताः स्मो वयं
योगिन्नुच्छलितोऽपि यन्न चणको भाण्डं प्रभेत्तुं क्षमः ।
क्रुद्धस्तद्वचसा विधाय विकृतं वक्त्रं स भीत्यावहं
दन्तान् स्थूलतरानदीदृशदथो जान्वग्रजाग्रन्मुखान् ॥ ३८ ॥
किं नो भीषयसे तृणाय न वयं मन्यामहे त्वादृशं
व्याहृत्येति भयोज्झिता मुनिवरास्तत्पातसंसूचनीम् ।
उद्गीर्य्य स्वकफोणिमुन्नततरां जग्मुस्ततः श्रीगुरो-
रभ्यर्णे जगदुश्च तद्गुरुरथो प्रोवाच सर्वान् यतीन् ॥ ३९ ॥
चेद्योगीह बिभीषिकां विकुरुते माभैष्ट तद्भो मनाक्
त्राताऽहं वरिवर्त्मि वोऽथ वसतौ दोषागमे लक्षशः ।
शूच्याख्या अतिवज्रतुण्डनखरा अन्यान्यदेहोर्द्ध्वगाः
कल्लोला इव वारिधेर्दशदिगुद्भूताः प्रसस्रुः क्षणात् ॥ ४० ॥
अङ्गारोहणवस्त्रपात्रवलकस्तम्भादनैकादरान्
दृष्ट्वा तान् वसतेर्बहिश्च परितः श्वानौतुसर्पध्वनीन् ।
श्रुत्वा रौद्रतमान् प्रकंप्रतनवो भीतेर्भरात्साधवो-
ऽन्योन्याह्वानपराश्च नालमभवन् स्थातुं प्रनष्टुं तथा ॥ ४१ ॥
वस्त्रच्छन्नमुखे घटे प्रथमतः सज्जीकृते श्रीगुरु-
र्दत्वा हस्तमथाजपद्गतभयो यावत्स तावच्छठः ।

सर्वाङ्गेऽप्युदितं व्यथासमुदयं हर्तुं विषोढुं प्रणि-
हन्तुं वाऽप्यसहस्ततोऽनुगजनानूचे म्रिये भो म्रिये ॥ ४२ ॥
धिग् मामनात्मज्ञमदीर्घदर्शिनं येनाभिमानादपमानितो गुरुः ।
क्वाणुः क्व मेरुः क्व सरः क्व सागरः क्वाहं हहा क्वैष च सर्वसिद्धिभृत् ॥ ४३ ॥
भीतः सोऽविकलं निजं विलसितं संहृत्य पीडावशा-
दाक्रन्दंश्च क्षणंश्च तत्र वसतौ गत्वा मुखात्ताङ्गुलिः ।
ऊचेऽज्ञानवशाद्यदत्र विहितं तत्क्षम्यतां क्षम्यतां
नातो वो विदधामि किञ्चिदशुभं साक्षी जनोऽत्राखिलः ॥४४॥
निरीक्ष्य दीनं स्वपदोर्विलीनं तं योगिराजं सुसमाधिभाजम् ।
चकार शान्तः प्रभुधर्मघोषः पुण्यप्रभायाश्च बभूव पोषः (४६) ॥ ४५ ॥
श्रीसोमप्रभसूरयो ऽजनिषतार्थैकादशाङ्गीस्फुर-
त्सूत्रार्थाः किल कार्त्तिके समधिके कृत्वा चतुर्मासकम् ।
अन्याचार्यगणे निषेधति भृशं ये भीमपल्या ययु-
र्भङ्गं भाविनमेक्ष्य मन्त्रनिवहं नालुर्गुरुभ्यश्च ये (४७) ॥ ४६ ॥
तेषां विनेया वरभागधेयाश्चत्वार आसन् स्वगुणैरमेयाः ।
चतुर्गतिभ्योऽसुमतां सुखेनोद्धाराय धर्मस्य वपूंषि किं नु ॥ ४७ ॥
श्रीविमलप्रभसूरिः श्रीपरमानन्दसूरिगुरुराजः ।
वचनातिगयतनावान् सूरिः श्रीपद्मतिलकगुरुः ॥ ४८ ॥
श्रीसोमतिलकाख्याश्च सूरयो यद्यशोऽर्णवे ।
ज्योत्स्ना जलं ग्रहाः फेनपिण्डा वेलावलिर्दिशः ॥ ४९ ॥
॥ युग्मम् ॥
विश्वख्याततपागणाधिपतयः सार्वत्रिकख्यातयः
सद्वैराग्यपयोधयस्त्रिजगतीदीव्यद्गुणश्रेणयः ।
आसन् ग्रन्थकृतः सदागमभृतश्चारित्रलक्ष्मीवृतः
सद्भाग्याभ्यधिकाश्च सोमतिलकाः सूरीशवृन्दारकाः (४८) ॥५०॥
तेषां शिष्यास्त्रयः ख्याता अभूवन्नद्भुतैर्गुणैः ।
ज्ञानदर्शनचारित्रत्रयी मूर्त्तिमती किल ॥ ५१ ॥

संक्षुब्धसागरगभीररवेण नित्यमावर्जिताखिलजगज्जनमानसालिः ।
श्रीचन्द्रशेखरगुरुर्गरिमैकधाम विद्याविलासवसतिः प्रथमो बभूव ॥ ५२ ॥

भव्यप्राणिशिवश्रियोः परिणये सांवत्सराधीश्वराः
गाम्भीर्यादिगुणैर्निजैरुदधिवत्केनाप्यलब्धान्तराः ।
ते ऽजायन्त यतीश्वरायिह जयानन्दा द्वितीयाः क्रमात्
येषां देवतया करेण निहतो भ्राताऽनुमेने व्रतम् ॥ ५३ ॥

वैराग्यं विमलं शमोऽतिविशदः शास्त्रज्ञता चाद्भुता
सिद्धान्तैकरुचिर्मनोहरतरा भव्योपकारः परः ।
चारित्रं त्रिजगत्यनुत्तरतमं भाग्यं ह्यसाधारणं
येषां श्रीयुतदेवसुन्दरवराः ख्यातास्तृतीयास्तु ते ॥ ५४ ॥

एकद्वित्रिमुख्यैर्गुणैः कृतमदा देहेऽपि गेहेऽपि ये
नो मान्ति प्रचुरा नरा जगति ते सन्तु प्रकामं परे ।
ये सर्वेषु गुणेषु सत्स्वपि मदं कुर्वन्ति नो कर्हिचित्
तेऽमी श्रीयुतदेवसुन्दरवराः सन्त्येक एवावनौ ॥ ५५ ॥

न यन्निन्दास्तुती कर्त्तुं शक्येते खलसज्जनैः ।
असद्भावेन दोषाणां गुणानां चाप्रमाणतः (४९) ॥ ५६ ॥

तच्छिष्याः सूरयः पञ्च मेरुपञ्चकसन्निभाः ।
सुवर्णभरविख्याता विद्यन्ते गरिमास्पदम् ॥ ५७ ॥

यद्वैराग्यमखण्डितं बहुविधं नित्यं तपो यत्परं
बाहुश्रुत्यमुदारविस्मयकरं यच्च शान्तं मनः ।
योऽन्यो वाऽप्यभवद्गुणो गुरुवरे श्रीज्ञानतः सागरे
तत्सर्वं नहि वीक्ष्यते गणिगणेऽन्यस्मिन् कदाऽपि क्वचित् ॥५८॥

दाक्षिण्यैकपयोधयश्चतुरसच्चेतश्चमत्कृद्गुणाः
सिद्धान्तार्णवगाहनैकरसिका उत्सर्गमार्गाध्वगाः ।
प्रागल्भ्यप्रवरास्तपोविधिरताः सन्मत्युदाराशयाः
आसन् श्रीकुलमण्डनाह्वयगुरूत्तंसा द्वितीया इमे ॥ ५९ ॥

भूतभाविभवत्सूरिक्रमरेणुकणोपमः ।
सूरिः श्रीगुणरत्नाह्वस्तृतीयः समजायत ॥ ६० ॥

श्रीसोमसुन्दर इति प्रथिताभिधानाः सौभाग्यभाग्यविशदाः क्षमया प्रधानाः ।
तुर्याः सुधामधुरिमाञ्चितवाग्विलासाः सूरीश्वरा गणिगुणैः कृतनित्यवासाः ॥६१॥

श्रीसाधुरत्नाश्च ततो मुनीन्द्रास्तदद्भुतं यत्सुगुणा यदीयाः ।
नान्यत्र सन्तोऽपि जगज्जनानां सर्वत्र कर्णातिथयो भवन्ति ॥६२॥

काले षड्रसपूर्व १४६६ वत्सरमिते श्रीविक्रमार्काद्गते
गुर्वादेशवशाद्विमृश्य च सदा स्वान्योपकारं परम् ।
ग्रन्थं श्रीगुणरत्नसूरिरतनोत्प्रज्ञाविहीनोऽप्यमुं
निर्हेतूपकृतिप्रधानजननैः शोध्यस्त्वयं धीधनैः ॥ ६३ ॥

प्रत्यक्षरं गणनया ग्रन्थमानं विनिश्चितम् ।
षट्पञ्चाशच्छतान्येकषष्ट्याधिकान्यनुष्टुभाम् ॥ ६४ ॥

वाछासङ्घपतेरियद्दरविभोर्मान्यस्य धन्यः सुतः
शश्वद्दानविधिर्विवेकजलधिश्चातुर्य्यलक्ष्मीनिधिः ।
अन्यस्त्रीविरतः सुधर्मनिरतो भक्तः श्रुतेऽलेखयत्
साधुर्वीसलसंज्ञितो दश वरा अस्य प्रतीरादिमाः ॥ ६५ ॥

श्रीमत्सङ्घनृपस्य वासवगणैर्नम्यक्रमाम्भोरुहो
विश्वास्थानजुषो बिभर्त्ति हि नभो नीलातपत्रं सदा ।
तारामौक्तिकशोभि यावदमलं मेरुं च दण्डं विधि-
स्तावन्नन्दतु शास्त्रमेतदनिशं सम्प्रेक्ष्यमाणं बुधैः ॥ ६६ ॥

**इति तपाचार्यश्रीदेवसुन्दरसूरिशिष्यश्रीगुणरत्नसूरिविरचिते
श्रीहैमव्याकरणानुसारिणि क्रियारत्नसमुच्चये
श्रीगुरुपर्वक्रमवर्णनाधिकारः ।**

अथ ग्रन्थस्य बीजकम् ।

दशविभक्तिविभागः ॥ भू १ पां २ घ्रां ३ ध्मां ४ ष्ठां ५ म्नां ६ दाम् ७ जिं, ज्रिं ९ क्षिं १० इं, दुं, द्रुं, श्रुं, स्रुं १५ सुं १६ स्मृं १७ सृं १८ ऋं १९ तॄ २० ट्धें २१ दैव् २२ ध्यैं २३ ग्लैं, म्लैं, द्रैं, ध्रैं २७ कैं, गैं, रैं ३० पैं ३१ रिखु, इखु, वल्ग, रिगु, तगु, लिगु ३७ शिघु ३८ लघु ३९ शुच ४० कुञ्च ४१ लुञ्च ४२ अर्च ४३ अञ्चू ४४ वञ्चू, चञ्चू ४६ लाछु ४७ वाछु ४८ मुर्च्छा ४९ व्रज ५० अज ५१ अर्ज ५२ एजृ ५३ ट्वोस्फूर्जा ५४ कूज ५५ गुजु ५६ तर्ज ५७ गर्ज ५८ त्यजं ५९ षञ्जं ६० कटे ६१ शट ६२ खिट ६३ णट ६४ लुट ६५ अट, पट, कट ६८ लुट्ठ ६९ स्फट, स्फुट्ट ७१ रट ७२ पठ ७३ हठ ७४ क्रीड़ृ ७५ लड ७६ अड्ड् ७७ रण, भण, कण, क्वण ८१ ओणृ ८२ चितै ८३ अत ८४ च्युतृ, चुतृ, श्चुतृ, श्च्युतृ ८८ अतु ८९ कित ९० खाद्द ९१ गद ९२ अदु ९३ इदु ९४ णिदु ९५ टुनदु ९६ क्रदु ९७ स्कन्दृं सर्वधातूनां वेट्त्वमतं ९८ षिधू ९९ ध्वन, स्वन १०१ गुपौ १०२ तपं, धूप १०४ लप, जल्प १०६ जप १०७ सृप्लृं १०८ चुप १०९ चुबु ११० चमू, जिमू ११२ क्रमू ११३ यमूं ११४ णमं ११५ अम ११६ गम्लृं ११७ ईर्ष्य ११८ चर ११९ दल, ञिफला १२१ मील १२२ मूल १२३ फल १२४ फुल्ल १२५ वेल्ठ, खेल्ठ, स्खल १२८ गल, चर्ब १३० गर्व १३१ ष्ठिवू १३२ जीव १३३ अव १३४ दृशृं १३५ दंशं १३६ घुषृ १३७ तूष १३८ लुष १३९ कृषं १४० भष १४१ विषू, वृषू १४३ मृषू १४४ उषू, प्लुषू १४६ घृषू १४७ पुष १४८ भूष १४९ रस १५० लस १५१ हसे १५२ शंसू १५३ दहं १५४ वृहु १५५ अर्ह, मह १५७ उक्ष १५८ रक्ष १५९ तक्षौ १६० काक्षु १६१ ॥ इति परस्मैपदिनः ॥ गाङ् १६२ ष्मिङ् १६३ डीङ् १६४ कुंङ् १६५ च्युंङ्, प्रुंङ्, प्लुंङ् १६८ पूङ् १६९ मेंङ् १७० देंङ्, त्रैंङ् १७२ लोकृङ् १७३ रेकृङ्, शकुङ् १७५ चाकि १७६ ढौकृङ्, त्रौकृङ्, टीकृङ्, लघुङ् १८० श्लाघृङ् १८१ लोचृङ् १८२ पचुङ् १८३ भ्राजि १८४ ऋजि १८५ भृजैङ् १८६ तिजि १८७ चेष्टि १८८ वेष्टि १८९ कठुङ् १९० पिडुङ् १९१

खड्डुङ् १९२ भड्डुङ् १९३ हेभृङ् १९४ हिड्डुङ् १९५ घुणि, घूर्णि १९७ पणि १९८ यतैङ् १९९ नाथृङ् २०० ग्रथुङ् २०१ वदुङ् २०२ स्पदुङ् २०३ मुदि २०४ ददि २०५ ह्रदिं २०६ ष्वदि, स्वादि २०८ कुर्दि २०९ ह्लाँदङ् २१० पर्दि २११ एधि २१२ स्पर्द्धि २१३ बाधृङ् २१४ दाधि २१५ बाधि २१६ पनि २१७ मानि २१८ टुत्रेपृङ्, कपुङ् २२० त्रपौषि २२१ गुपि २२२ लबुङ् २२३ कवृङ् २२४ लभुङ् २२५ ष्टभुङ् २२६ जृभुङ् २२७ रभिं २२८ डुलभिंष् २२९ क्षमौषि २३० कमूङ् २३१ अयि २३२ दयि २३३ ऊयैङ् २३४ स्फायैङ्, ओप्यायैङ् २३६ तायृङ् २३७ वलि २३८ कलि २३९ तेवृङ्, देवृङ् २४१ षेवृङ्, सेवृङ् २४३ काशृङ् २४४ भाषि २४५ एषृङ् २४६ हेषृङ् २४७ कासृङ् २४८ भासि २४९ आङः शसुङ् २५० ग्रसूङ् २५१ ईहि २५२ गर्हि २५३ द्राहृङ् २५४ ऊहि २५५ गाहौङ् २५६ धुक्षि २५७ शिक्षि २५८ भिक्षि २५९ दीक्षि २६० ईक्षि २६१ ॥ इत्यात्मनेपदिनः ॥ श्रिग् २६२ णींग् २६३ हृंग् २६४ भृंग् २६५ धृंग् २६६ डुकृंग् २६७ डुयाचृग् २६८ डुपचींष् २६९ राजृग्, टुभ्राजि २७१ आत्मनेपदानित्यत्वं; भजीं २७२ रञ्जीं २७३ बुधृग् २७४ खनूग् २७५ दानी २७६ शानी २७७ शपीं २७८ धावूग् २७९ लषी २८० चषी २८१ गुहौग् २८२ म्लक्षी २८३ ॥ इत्युभयपदिनः ॥ द्युति २८४ रुचि २८५ शुभि २८६ क्षुभि २८७ स्रम्भूङ् २८८ भ्रंशूङ्, स्रंसूङ् २९० ध्वंसूङ् २९१ वृतूङ् २९२ स्यन्दौङ् २९३ वृधूङ् २९४ शृधूङ् २९५ कृपौङ् २९६॥ इति द्युतादिः ॥ ज्वल २९७ कुच २९८ पत्ल २९९ मथे ३०० षद्लृं ३०१ शद्लृं ३०२ बुध ३०३ टुवमू ३०४ भ्रमू ३०५ क्षर ३०६ चल ३०७ शल ३०८ क्रुशं ३०९ कस ३१० रुहं ३११ रमिं ३१२ षहि ३१३ इति ज्वलादिः ॥ यजीं ३१४ वेंग् ३१५ व्येंग् ३१६ ह्वेंग् ३१७ टुवपीं ३१८ वहीं ३१९ ट्वोश्वि ३२० वद ३२१ वसं ३२२ ॥ इति यजादिः ॥ घटिष् ३२३ व्यथिष् ३२४ प्रथिष् ३२५ ऋदुङ् ३२६ ञित्वरिष् ३२७ स्मृं ३२८ दॄ ३२९ लगे ३३० ष्ठगे, स्थगे ३३२ णट ३३३ मदै ३३४ ध्वन ३३५ चल ३३६ ह्वल ३३७ ज्वल ३३८ ॥ इति भ्वादिगणः ॥

अदं, प्साक् २ भांक् ३ यांक् ४ वांक् ५ ष्णांक् ६ द्रांक् ७ पांक् ८ लांक् ९

रांक् १० दांबूक् ११ ख्यांक् १२ मांक् १३ इंक् १४ इण्क् १५ षुंक् १६ तुंक् १७ युक् १८ णुक् १९ क्ष्णुक् २० स्नुक् २१ टुक्षु, रु, कुंक् २४ रुदृक् २५ ञिष्वपंक् २६ अन, श्वसक् २८ जक्षक् २९ दरिद्राक् ३० जागृक् सर्वधातुभ्यो यङ्ङिति मतं; ३१ चकासृक् ३२ शासूक् ३३ वचंक् ३४ मृजौक् ३५ विदक् ३६ हनंक् ३७ वशक् ३८ असक् ३९ यङ्लुक् ४०॥ अथात्मनेपदिनः॥ इंङ्क् ४१ शीङ्क् ४२ ह्नुंङ्क् ४३ षूङौक् ४४ पृचैङ्क् ४५ ईडिक् ४६ ईरिक् ४७ ईशिक् ४८ वसिक् ४९ आङः शासूकि ५० आसिक् ५१ णिसुकिं ५२ चक्षिक् ५३ ॥ अथोभयपदिनः॥ ऊर्णुग्क् ५४ ष्टुंग्क् ५५ ब्रूग्क् ५६ द्विषींक् ५७ दुहींक् ५८ दिहींक् ५९ लिहींक् ६० ॥ अथ ह्वादयः॥ हुंक् ६१ ओहांक् ६२ ञिभींक् ६३ ह्रींक् ६४ पृंक् ६५ ऋंक् ६६ ओहांङ्क् ६७ मांङ्क् ६८ डुदांग्क् ६९ डुधां-ग्क् ७० डुभृंग्क् ७१ णिजृंकी ७२ विजृंकी ७३ विष्लृंकी ७४ ॥ इत्यदादिगणः॥

दिवूच् १ जृष्, झृष्च् ३ शोंच् ४ दों, छोंच् ६ षोंच् ७ व्रीड्च् ८ नृतैच् ९ कुथच् १० गुधच् ११ राधंच् १२ व्यधंच् १३ क्षिपंच् १४ तिम, तीम, ष्टिम, ष्टीमच् १८ षिवूच् १९ ष्ठिवूच् २० इषच् २१ त्रसैच् २२ षहच् २३॥ अथ पुषादिः॥ पुषंच् २४ लुटच् २५ ष्विदांच् २६ क्लिदौच् २७ क्षुधंच् २८ शुधंच् २९ क्रुधंच् ३० षिधूंच् ३१ ऋधूच् ३२ गृधूच् ३३ रधौच् ३४ तृपौच् ३५ दृपौच् ३६ कुपच् ३७ गुपच् ३८ लुपच् ३९ लुभच् ४० क्षुभच् ४१ नशौच् ४२ भृशू, भ्रंशूच् ४४ कृशच् ४५ शुषंच् ४६ दुषंच् ४७ श्लिषंच् ४८ प्लुषूच् ४९ ञितृषच् ५० तुषं, हृषच् ५२ रुषच् ५३ असूच् ५४ यसूच् ५५ शमू, दमूच् ५७ तमूच् ५८ श्रमूच् ५९ भ्रमूच् ६० क्षमौच् ६१ मदैच् ६२ क्लमूच् ६३ मुहौच् ६४ द्रुहौच् ६५ ष्णिहौच् ६६॥ इति पुषादिः॥ षूङौच् ६७ दूङ्च् ६८ दीङ्च् ६९ लीङ्च् ७० डीङ्च् ७१ ॥ इति सूयत्यादिः॥ पीङ्च् ७२ ईङ्च् ७३ प्रीङ्च् ७४ युजिंच् ७५ सृजिंच् ७६ पदिंच् ७७ विदिंच् ७८ खिदिंच् ७९ युधिंच् ८० अनो रुधिंच् ८१ बुधिं, मनिंच् ८३ जनैचि ८४ दीपैचि ८५ तपिंच् ८६ पूरैचि ८७ क्लिशिच् ८८ काशिच् ८९ वाशिच् ९० रञ्जींच् ९१ शपींच् ९२ मृषींच् ९३ णहींच् ९४॥ इति दिवादिगणः॥

षुंग्ट् १ षिंग्ट् २ डुमिंग्ट् ३ चिंग्ट् ४ धूग्ट् ५ स्तृंग्ट् ६ वृग्ट् ७ ॥ इत्युभयपदिनः ॥ हिंट् ८ श्रुंट् ९ टुदुंट् १० पृंट् ११ शक्लृंट् १२ राधं, साधंट् १४ ऋधूट् १५ आप्लृंट् १६ तृपट् १७ दम्भूट् १८ धिवुट् १९ ष्टिघिट् २० अशौटि २१ ॥ इति स्वादिगणः ॥

तुदींत् १ भ्रस्जींत् २ क्षिपींत् ३ दिशींत् ४ कृषींत् ५ मुच्लृंती ६ षिचींत् ७ विद्लृंती ८ लुप्लृंती ९ लिपींत् १० कृतैत् ११ ॥ इति मुचादिः ॥ मृंत् १२ कृत् १३ गृत् १४ लिखत् १५ ओव्रस्चौत् १६ प्रछंत् १७ सृजंत् १८ टुमस्जोंत् १९ उद्झत् २० घुण, घूर्णत् २२ णुदंत् २३ विधत् २४ छुपंत् २५ गुफ, गुंफत् २७ शुभ, शुंभत् २९ दृभैत् ३० स्फलत् ३१ मिलत् ३२ स्पृशंत् ३३ विशंत् ३४ मृशंत् ३५ इषत् ३६ मिषत् ३७ ॥ अथ कुटादिः ॥ कुटत् ३८ णूत् ३९ धूत् ४० कुचत् ४१ घुटत् ४२ छुट, त्रुटत् ४४ मुटत् ४५ स्फुटत् ४६ लुठत् ४७ कुडत् ४८ गुडत्, जुडत्, तुडत्, ५१ स्फुरत् ५२ ॥ इति परस्मैपदिनः ॥ कुंङ्, कूङ्त् ५४ ॥ इति कुटादिः ॥ पृंङ्त् ५५ दृंङ्त् ५६ ओविजैति ५७ ओलस्जैति ५८ ष्वंजित् ५९ जुषैति ६० ॥ इति तुदादिगणः ॥

रुधृंपी १ रिचृंपी २ विचृंपी ३ युजृंपी ४ भिदृंपी ५ छिदृंपी ६ क्षुदृंपी ७ ॥ इत्युभयपदिनः ॥ पृचैप् ८ भञ्जोंप् ९ भुजंप् १० अञ्जौप् ११ ओविजैप् १२ शिष्लृंप् १३ पिष्लृंप् १४ हिंसु, तृहप् १६ खिदिंप् १७ विदिंप् १८ ञिइन्धैपि १९ ॥ इति रुधादिगणः ॥

तनूयी १ षणूयी २ क्षनूग्, क्षिनूयी ४ ॥ इत्युभयपदिनः ॥ वनूयि ५ मनूयि ६ इति तनादिगणः ॥

डुक्रींग्श् १ प्रींग्श् २ मींग्श् ३ ग्रहींश् ४ ॥ अथ प्वादिः ॥ पूग्श् ५ । ॥ अथ ल्वादिः ॥ लूग्श् ६ धूग्श् ७ स्तृग्श् ८ वृग्श् ९ ॥ इत्युभयपदिनः ॥ ज्यांश् १० लींश् ११ कृ, मृ, शृश् १४ पृश् १५ दृश् १६ जृश् १७ गृश् १८ इति प्वादिर्ल्वादिः । ज्ञांश् १९ मन्थश् २० ग्रन्थश् २१ मृदश् २२ बन्धंश् २३ क्षुभश् २४ क्लिशौश् २५ अशश् २६ मुषश् २७ पुषश् २८ कुषश् २९ वृङ्श् ३० ॥ इति क्र्यादिगणः ॥

चुरण् १ पृण् २ पचुण् ३ पूजण् ४ गजण् ५ तिजण् ६ नटण् ७ चुट्ट, छुटण् ९ कुट्टण् १० मुटण् ११ लुंटण् १२ घट्टण् १३ स्फिटण् १४ गुठुण् १५ लडण् १६ ओलडुण् १७ पीडण् १८ तडण् १९ खडुण् २० कडुण् २१ गुडुण् २२ मडुण् २३ पिडुण् २४ ईडण् २५ चूर्णण् २६ श्रणण् २७ चितुण् २८ कृतण् २९ पथुण् ३० प्रथण् ३१ छदण् ३२ चुदण् ३३ छर्दण् ३४ बन्ध, बधण् ३६ यमण् ३७ यत्रुण् ३८ क्षलण् ३९ तुलण् ४० दुलण् ४१ मूलण् ४२ बुलण् ४३ पलण् ४४ इलण् ४५ सांत्वण् ४६ पुंसण् ४७ जसण् ४८ भक्षण् ४९ लक्षीण् ५० ॥ इतोऽर्थविशेषे आलाक्षिणः ॥ ज्ञाण् ५१ भूण् ५२ लिगुण् ५३ चर्चण् ५४ घट, स्फुटण् ५६ घटण् ५७ हन्त्यर्थाः ५८ यतण् ५९ निर्यतण् ६० ष्वदण् ६१ आस्वदण् ६२ मुदण् ६३ कृपण् ६४ चरण् ६५ घुषृण् ६६ भूष, तसुण् ६८ त्रसण् ६९ अर्हण् ७० लोकृ, तर्क, लघु, लोचृ, अजु, पिजु, भजु, लुट, वृत, वृध, गुप, धूप, कुप, दशु, वृहु ८५ ॥ इति परस्मैपादिनः ॥ वंचिण् ८६ विदिण् ८७ मनिण् ८८ भलिण् ८९ कुत्सिण् ९० लक्षिण् ९१ तर्जिण् ९२ त्रुटिण् ९३ चितिण् ९४ गान्धिण् ९५ शामिण् ९६ गूरिण् ९७ मन्त्रिण् ९८ ललिण् ९९ दंशिण् १०० भर्त्सिण् १ ॥ इत्यात्मनेपदिनः ॥ इतोऽदन्ताः ॥ अदन्तवृद्धिप्वागममतं अङ्कण् २ सुख, दुःखण् ४ रचण् ५ सूचण् ६ भाजण् ७ सभाजण् ८ खोटण् ९ दण्डण् १० वर्णण् ११ कर्णण् १२ गणण् १३ गुणण्, केतण् १५ पतण् १६ कथण् १७ छेदण् १८ रूपण् १९ क्षपण् २० व्ययण् २१ सूत्रण् २२ मूत्रण् २३ पारण्, तीरण् २५ चित्रण् २६ छिद्रण् २७ मिश्रण् २८ कलण् २९ शीलण् ३० गवेषण् ३१ मृषण् ३२ रसण् ३३ महण् ३४ रहुण् ३५ स्पृहण् ३६ रुक्षण् ३७ ॥ इति परस्मैपदिनः ॥ मृगणि ३८ अर्थणि ३९ सङ्ग्रामणि ४० गर्वणि ४१ गृहणि ४२ ॥ इत्यदन्ताः ॥ अथ युजादिः ॥ युजण् ४३ लीण् ४४ प्रीगण् ४५ धूगण् ४६ वृगण् ४७ जृण् ४८ मार्गण् ४९ पृचण् ५० रिचण् ५१ वचण् ५२ अर्चिण् ५३ वृजैण् ५४ मृजौण् ५५ कठुण् ५६ ग्रन्थण् ५७ अर्दिण् ५८ वदिण् ५९ छदण् ६० आङः सदण् ६१ मानण् ६२ तपिण् ६३ तृपण् ६४ आप्लृण् ६५ ईरण्

६६ मृषिण् ६७ शिषण् ६८ विपूर्वः ६९ धृषण् ७० हिसुण् ७१ गर्हण् ७२ षहण् ७३ बहुलं ७४; एवं १७४ ॥ चुरादिगणः ॥

एवं नवगणजा धातवः सर्वे ८१६ ॥

अथ सौत्राः ॥ कण्ड्वादयः १ अन्दोलण्, प्रेङ्खोलण्, वीजण् ४ रिखिः ५ चुलुम्प ६ स्तम्भू ७ स्तुम्भू ८ स्कम्भू ९ स्कुम्भू १० लुल ११ ।

अथ नामधातवः । काम्यः १ क्यन् २ क्विप् ३ आचारक्यङ् ४ च्व्यर्थ-क्यङ् ५ क्यङ्ष् ६ क्रमणाद्यर्थक्यङ् ७ करणाद्यर्थक्यन् ८ णिङ् ९ णिच् १० णिजन्तविभक्तयः । प्रशस्तिः ॥

इति सम्पूर्णोऽयं क्रियारत्नसमुच्चयो नाम ग्रन्थः सबीजकम् ।

ग्रन्थमानम् ५७७८ ॥





अथ क्रियारत्नसमुच्चयस्थधातूनां सूची ।

पृष्ठम् धातवः

—o—

॥ इति ॥



शुद्धिपत्रम् ।

पृष्ठम्	पङ्क्तिः	अशुद्धम्	शुद्धम्
८	१९	लुनिही	लुनीहि
,,	२०	-वायम-	-व वयम-
१०	२	युगान्तप्र-	युगान्तःप्र-
१२	३	अहनम्	जघान
१३	११	धातोवु-	धातावु-
१५	१३	अभोक्ष्यत्	अभोक्ष्यत
,,	१४	पासिष्यत्	पासिष्यत
,,	२६	-राभ्य-	-रभ्य-
१८	१०	विचिक्रियरे	विचिक्रियिरे
१९	२१	व्याति-	व्यति-
२७	७	विवक्षिते	विवक्षते
२९	४	वोभूय-	बोभूय-
३५	१३	पिपीय्यते	पेपीय्यते
३७	७	-भावत्	-भावात्
,,	१९	प्रास्थिषतं	प्रास्थिषत
,,	२६	षत्वे	इत्वे
३९	४	तास्थीव	तास्थाव
,,	,,	तास्थीम	तास्थाम
,,	९	अतास्थीताम्	अतास्थाताम्
४०	४	पदस्मै-	परस्मै-
,,	७	अवा-	असा-
४१	२२	विजिगि-	विजिग्यि-
४४	५	ईः	इः
,,	११	द्रुद्रोथ	दुद्रोथ
४५	११	स्मर्यात्, ९	स्मर्या९त्,
,,	१९	आशीर्येव	आशीर्ये च
४७	२६	सिवल्लुक्	सिच्लुक्
५०	२७	तातर्यिते	तातीर्यते
५१	२७	इश्व-	इश्व-
५३	२	-वर्जना-	-वर्जनात्-
५५	१०	कित्त्वान्न लु-	कित्त्वान्नलु-
५६	४	न लुक्	नलुक्
,,	९	-न्न लुकि	-न्नलुकि
,,	१७	उदित्वात्	ऊदित्त्वात्
६०	१९	-वर्णयोः	-वरणयोः
६१	६	-मतेन	-मते न
,,	१८	-ऋादित्-	-ॠदित्-
६२	१४	ठिष्ठव्	ठिष्ठम्
,,	,,	ठिष्ठ	ठिष्ठ
६४	११	आणिता	ओणिता
,,	१५	डीयश्वै-	डीयश्व्यै-
६६	१७	स्कन्दत्	स्कन्दन्
७२	७	ञिणम् प-	ञिणमुप-
,,	१२	ऊदित्वात्	ऊदित्त्वात्
७३	८	ऊदित्वात	ऊदित्त्वात्
,,	२३	नंनमी-	नंनम्मी-
७४	२	प्राणीनमत्	प्राणीणमत्
,,	२५	कित्वे-	कित्त्वे
७४	२६	कित्वे	कित्त्वे
७५	१५	छः	च्छः
७७	८	चरति समा-	चरतिसमा-
,,	१४	प्रफुल्ला	प्रफुलता
,,	१७	प्रफुल्ल-	प्रफुल्त-
८०	८	दार्शिप्यते	दार्शिष्यते
८१	७	दंदशे	ददंशे
८२	१६	ऊदित्वात	ऊदित्त्वात्

पृष्ठम्	पङ्क्तिः	अशुद्धम्	शुद्धम्
,,	२०	,,	,,
,,	२३	,,	,,
,,	,,	कित्वम्	कित्त्वम्
,,	२७	ऊदित्वात	ऊदित्त्वात्
८३	५	ऊदित्वात्	ऊदित्त्वात्
,,	२४	,,	,,
८६	२२	ङीङ् च	ङीङ्च्
८७	१३	कित्वे	कित्त्वे
,,	१८	कित्वा-	कित्त्वा-
९०	२०	गिध	ङ्गधि
९४	२१	कित्वे	कित्त्वे
९५	८	हदि	हर्दि
९९	२७	धुगौदितः	धूगौदितः
१०९	८	बिभ्रीयते	बेभ्रीयते
१११	८	निणर्यति	निर्णयति
१११	१५	ऋमता	ऋमतां
११६	१८	जृभ्रम	जृम्भ्रम-
,,	२४	जृभ्रम-	जृम्भ्रम-
१२१	१६	द्वम्	ह्ढवम्
१२२	१२	-सास्रंरम्भी-	-सास्रम्रभी-
१२३	१४	-षीष्ट	-षिष्ट
१२४	११	द्ध्वम्,	न्द्ध्वम्,
,,	,,	ह्ध्वम्,त्सि	नह्ध्वम्,न्त्सि.
,,	१२	स्यन्ता	स्यन्त्ता
,,	१६	न्त्तः	त्तः
१२५	९	भृध्वा	भृध्वा-
१२६	१०	वो	वौ
१२८	२१	न शम-	न शस-
१३१	९	आरुरुहत	आरूरुहत
१३२	२४	ईयाथे	ईजाथे
१३८	२४	वासार्थ-	वासार्थो-
१४३	२३	पपृच्छच्य	प्रपृच्छय
१४४	२७	वाऽन्त्	वाऽन्त
१४५	११	स्नात्	स्नान्
,,	२६	व्यात्यलात्	व्यत्यलात
१५०	१७	क्ष्णूतः	क्ष्णुतः
१५३	१९	-ताम्	-ताम्
१५६	१३	नाम्यत-	नाम्यन्त-
,,	२४	शासि	शाशि
,,	२४	ष्ठः ष्ठ	ष्ठः ष्ठ
१५८	१८	वेत्मि	वेत्सि
१६१	२१	थमि	थसि
१६८	११	णिमुर्कि	णिमुकि
१६९	१०	आख्यात्	आख्यायात्
,,	१३	आच	आचा
,,	२२	प्रोर्णुवति	प्रोर्णुन्वति
१७०	७	प्रौर्णोनोति	प्रोर्णोनोति
,,	२१	स्तूयात	स्तुयात्
१७१	२	अस्ताविषाताम्	अस्ताविष्टाम्
,,	१५	ब्रवीत्	ब्रुवीत
१७३	१३	आदिक्षाथाम्	अधिक्षाथाम्
१७५	१३	बिभिया	बिभया
,,	१६	बिभियां	बिभयां
,,	१७	बिभियां	बिभयां
२४९	२	तन्त-	तित-
,,	२	तन्तां-	तितां-
,,	२	तन्तं-	तितं-
२५१	११	विक्रीणाति	विक्रीणीते
२६४	१९	वरिष्याति	वरिष्यते
,,	२०	वरीष्यती	वरीष्यते
२६५	१५	अचूचुरत्	अचूचुरत
३१५	१०	सबीजकम्	सबीजकः

[Under the general title of *Anecdota Oxoniensia*, it is proposed to publish materials, chiefly inedited, taken direct from MSS., those preserved in the Bodleian and other Oxford Libraries to have the first claim to publication. These materials will be (1) unpublished texts and documents, or extracts therefrom, with or without translations; or (2) texts which, although not unpublished, are unknown in the form in which they are to be printed in the *Anecdota*; or (3) texts which, in their published form, are difficult of access through the exceeding rarity of the printed copies; or (4) collations of valuable MSS.; or (5) notices and descriptions of certain MSS., or dissertations on the history, nature, and value thereof. The materials will be issued in four Series:—

I. *The Classical Series.*
II. *The Semitic Series.*
III. *The Aryan Series.*
IV. *The Mediaeval and Modern Series.*]